

॥ गणेशाय नमः ॥ अथ गुप्तोद्गी कायद लिखते रागो
 ॥ गुरमेराग्यो नीरेग्यो नी ॥ अहो जिनि अरुगति की
 गति जो नी ॥ टेका ॥ सारवसन सब हिरदे धारी ॥ चार बि
 धे बिसरा नी ॥ निरति श्रुति अति अंतरि पीव स्पे ॥ १ ॥ श्री
 तिसह तिलिषटानी ॥ अंजनमंजन सबे बिसारे म
 नमनसा गहि आनी ॥ अरतिसहिति आत्मा सांही
 १ ॥ मात्मप्रधानी ॥ थापांचपची सौयगतलहरो ॥ त्रिगुन
 सौदीका नी ॥ कहतुरसी चो थापदमा ही ॥ नयायक
 गलतानी ॥ २ ॥ ताहि मेगा नरेणा इगइसचपां नरे ॥
 टेका ॥ पतित उधारन ॥ उतरतारन ॥ नरक निवारन
 कलविषटारन कलंक उतारन ॥ कारिज सारन
 ॥ १ ॥ सब सुषहरा है नरहरा ॥ निरमल नूरा रो ॥ जाके
 बाजे वरा सदा हजरा ॥ आनंद मूरा रो ॥ अंतरजो
 मी सब कास्वामी ॥ सब सिरना मी रे ॥ तारन तिबन
 रमकषकी निधि है निहंका मी रो ॥ ३ ॥ परमयकासा
 हरन आसा ॥ नंजननासारे ॥ तुरसी दासा दे बिसवा
 सा ॥ राधे पासा रो ॥ ४ ॥ अ सरन सरन गरी बनिवा
 जा ॥ सब सिधिसब ही सारन काजा ॥ टेका ॥ अधम
 उधारन तारन सिंधु बंधन मो छिकरन निरबं
 धा ॥ १ ॥ कलविषहरन परम सुषकारी ॥ जनमंम
 रनतै राधे टारी ॥ २ ॥ जनतुरसी ताहि निसिदि
 तिगाइ ॥ सुषसागर मै लेस माशा ॥ ३ ॥ ३ ॥ अरु

मोहितारोसाहिवमेरा दीनउषीबूडतनवमांही क
 रऊसहाइसवेराटेका मायाअगमअथाहअधिक
 जल॥ त्रिस्रोतरंगअपारायाहअनंगकालकैलाग
 गहियाअंनहंमारा॥ १॥ ममतामीनरलोतमसरमिति
 मोहिसतावेनारी॥ मोहनवरमैपद्यापरबसकर
 गहिकाटिसुरारी॥ २॥ अकिरहेबीचिविषमनवमां
 ही॥ कहौकहाबलमेरा॥ जननुरसीकैअोरनको
 ई॥ एकनरोसानेरा॥ ३॥ धैनेतिरामजीकोनाम
 प्रानीकहानृलौफिरे॥ टेकाचामत्यागिरामहीचित
 लाईये॥ कुनिबरतीएनदांमबादविवाटबिसरि
 मजिमाधो॥ निसिदिनआवोंजाम॥ १॥ नहीजीति
 मनकेरपरहरि॥ उलटिगहीविश्राम॥ जननुरसी
 सुमिरतसुषसागर॥ साहिसरैसबकांम॥ २॥ ५॥ हग
 मगहरिकरिनरकूरकाइर॥ साहिसरनहरिकरो॥
 मन॥ क्रमबचनसरहिसबकारिज॥ जनमसुफ
 लहोइनेरो॥ टेकाअंनंदसहितिअरपितनअनु
 कौंखितवरनोलिपटाई॥ निरनेहोइनिरंतरिनिस
 दिन॥ सुमरिसुमरिसुषदाई॥ पंचततगुणतीनि
 कीबाजी॥ यामैरचिकारहिए॥ इहलोकृतमरु
 पसकलसठ॥ उलटिअनेपदगहिये॥ २॥ रामनो
 महिरदेजपिहितसो॥ बिसरिनजईएनाईजननु
 रसीकहेकालनेबुटे॥ सुषमैश्रुतिसमाई॥ ३॥ ६

सोई जपिए जंजार त्यागि जुगति स्यो जि एमांही ॥ जाके
 जपि जनम मरन ॥ सकल मैलन सांही ॥ टिक ॥ दीनबंधु
 पतित पावन ॥ घगट विरट जाको ॥ नाशहि चक्रम
 नेका ॥ गावते जस ताको ॥ १ ॥ कलंकहरन कृपा करन
 अधम उधारन सांही ॥ जिनि लिए समाइ सकल संत
 परम जोतिष काशुण ॥ जनतुर सीषसिता सा ॥ मेटि आं
 न आसा ॥ ३ ॥ ७ ॥ भजन करि भाई बिलंबन की जौ ॥
 तौ कया वैपद नृवाना टिका ॥ मनिषा जनम डुल नहै
 शैल मति हीइ अचेत ॥ मन क्रम वचन जो हरि भजे
 तेरा मिटि जादि क्रम अनेक ॥ १ ॥ यऊ अरु सरब
 कस्यो नहीरे ॥ करिले हनिहंचल सेव ॥ मनकी भेट
 देवासना ॥ तौ मिलही निरंजन देव ॥ २ ॥ अपनासा
 दिवसु मिरिरे ॥ जिन जाइ जनम ठगाइ ॥ जनतुर सी
 हरि एक है ॥ तूता हीस्यो ल्योलाइ ॥ ३ ॥ ६ ॥ बकुरिक
 तपाय वैशेरि नर न्नीसी कंचन देदा ॥ सो कित बादिरां
 मबिन घोवै ॥ करिकरि अनंत संनेदा टिका ॥ इ नपट
 नके उदि ममा तो ॥ कादे कौइ तउत जाइ ॥ गए बकुरि
 रिह जुगति नये है ॥ जै है जनम सिराइ ॥ १ ॥ चारिदि
 साचौरा सी भमिकै ॥ पाई है बड भागि ॥ सोइ हदेहत
 नक सुषमांही ॥ मत घोवै तूलागि ॥ २ ॥ बार बार तो
 दिक कुसंमकिरे ॥ सुमरिले हकि ननांवा ॥ इह अरु
 सरय हदा वव न्यो है ॥ इहै मोचिसु भवांवा ॥ ३ ॥ अ
 वातिपद आराधि अंघंडिता उलटि अति अंतरि

अपने
 अगम
 ही २५

आइ जनतुरसी सुषमै होइ बासा जनमपरनमिदि
 जाइ ध॥ १ ॥ रतनतनपायारे सोले अरथिलगाइ
 अरथिलगाये विनां अज्ञानी कौडी बदले जाइ ॥ २ ॥
 क॥ अवनकथा सुनि अनहदवांनी प्रेमपीतिले
 लाइ नैननिरिगिनि सिदिन निरमल रूप अघा
 इ॥ १ ॥ केहारसनरसनां कुं बिनकदा जेनिकेनिके
 हिभाइ ज्योरीके त्योही अबबोरे अपनौरामरिका
 इ॥ २ ॥ ज्यो कूरम कुं जी सुत अंडनि सेवतती छन
 भाइ ॥ असे सुमरिमन सावाचा ॥ अपने ही उर अ
 इ॥ ३ ॥ तनमनघान अरपिदेषचुकौ ॥ कारही
 याहिलुभाइ ॥ अरथिविनां कितेपंडितमुनी ॥
 कितकुगएविलाइ ॥ ध॥ जोगजुगतिकरिनिर
 तिष्णुतिले ॥ उलटिउरही बसाइ ॥ जनतुरसी म
 जिरंम रांम रोमहोइ ॥ नि संकनि सांन बजाइ ॥
 ॥ ५ ॥ १ ॥ बडुरिकतयाई येरे ॥ असे सोडुल नदाव
 तातें बेगि विलंबत जिबोरे ॥ मजिले त्रिभुवनरा
 वटेक ॥ षाडिसिधलतासा वधानहोइ ॥ दुषसु
 प्रधारबहाव ॥ सदा एकरस मन सावाचा ॥ प्रचुके
 चरनचितलाव ॥ १ ॥ भागि बडे मनि यातनपायो
 नमि भ्रमि बडुते वाव ॥ सोलकाच सटे मतयोवे ॥
 करिकरि विषेन भाव ॥ यद अवलंब उरधारि अ
 होनि सि ॥ १ ॥ भरमकांमनां नसाव ॥ निरतिष्णुति
 उलटि अमि अंतरि ॥ निजपद नित्य निरताव ॥ ३ ॥ ६

रागगहिददियंचौरिया॥ याययुनिविसराव॥
 रसीअरसय रसपदमांही॥ लैकैंधानमिला
 ॥४॥२१॥ ते रोषमहिः ललहेरे॥ औरस्वारथी॥
 घनेरे॥ टेका॥ केते रोषमहित्ते रंमा॥ इयमो
 नदैंताकोनामा॥ १॥ आदितजिकादेकोइतउतजा
 ॥ इतउतगपबनिदैनही नार्दी॥ २॥ त्यागिपीतिवा
 लीसंगाशी॥ इदिवादिनेबसौजुगजार्दी॥ ३॥ अन
 होइअविनासी नजिरे॥ एविनसुरसब विषे
 तजिरे॥ ४॥ जनतुरसी कीट चंगकी नार्दी॥ केर॥
 नपरमयदमांही॥ ५॥ १॥ मतकोउपरौसने
 कीफांसी॥ कालबधिकमारेतकिगांसी॥ टेका॥
 यसुमेरसुषमनकुजुरार्दी॥ तहांश्रीसीजानौमेरेन
 ॥ १॥ कबहुइतकबहुउतश्रीचै॥ श्रुतिदिमंत्रक
 रदियेचै॥ २॥ ज्ञानध्यानसुधिरदननपावै॥ सो
 तसोचंतअबधिविदावै॥ ३॥ जनतुरसी जगअ
 नहितहोइअज्ञेसुरांसुषीहोइसोई॥ ४॥ १॥
 तांनमतांकबआवैगा॥ तबघांनीसुषपावैगा॥
 टे॥ योचौइडीकाबलबुटै॥ मनवाउलटिसमा
 वैगा॥ मायासोहभरमकाबादला॥ परदासवैबि
 लावैगा॥ १॥ चारविचारमितेजीयकेरा॥ आया
 परिविसरावैगा॥ जनतुरसीसुषसागरमांही॥
 मिलिकरिमंगलगावैगा॥ २॥ १॥ गलतांनम
 एतेज्ञानीजी॥ औरइतरअज्ञानीजी॥ टेका॥ राग

दोषरेखनरहीकोऊ॥निरतिश्रुतिवहशंनीजी॥मनक्र
त्पदमांदिहिसमांनो॥जौंपालागलियांनीजी॥१॥जनदु
रसीप्रदश्रकथकथादो॥बिरलेकाऊजांनीजी॥
श्रीरवीचिहीरहेऊलिकें॥अहंकारीअभिमानीजी
॥२॥१५॥मनमेरेसाचीवातसुनाउरे॥रजगुनबाडि
रंकहोइहरिनजि॥तौपऊचैनिजवांऊरे॥टेका॥ज
बलगकामक्रोधघटमांही॥तबलगसचनहीयाऊ
रे॥मायामोहतजिदूजीआसा॥तौआनंदपददरस
उरे॥१॥यांचौंचूरिदूरिकरिइविधा॥त्रिगुण
भावमिटाउंरे॥तबतुरसीसुषसागरमांही॥दि
लमिलघांनसमाउंरे॥२॥१६॥मनरेजोतुश्रीसी
बूकैरे॥तौतौदिनेरौहीनिरमलपद॥नैनबिना
हीसकैरे॥टेका॥तामसत्यागिजागिजगपतिभजि
रंगनराचीदूजेरे॥श्रीसीकरहतौसुभटसूरव॥ज
नममरनजाइऊजेरे॥१॥सीरीसीरीसीरत्यागि
दे॥त्पतहूनीरनपीजेरे॥तातौनसीरौसीरौनता
तौ॥सोसुषउरधरिलीजेरे॥२॥सबसंतनकोसा
रसुमतिगदि॥भ्रममांदिनचितदीजेरे॥जनदुर
सीआनंदकंदभजि॥जावतजगमैजीजेरे॥यादे
हीजुधरेकालाहा॥श्रीसैनिजकरिलीजेरे॥३॥१७
संतौभाईसतगुरसाचसुहावैरे॥जीवअबुधी
कपटनबाडे॥तौकैसैंदरसनयावैरे॥टेका॥जप
तपसंजंमपूजापातीवाहरिकरिदिषलावैरे॥अ
तादोघृतप्येरीहीनीकौ॥कालेकीटीकीजेरे॥३॥

कपटनहरिसौंदिताद्वेनाडनीपुटिषावैरे॥१॥ क
 पाडुडकेलाई॥ गीतासारसुनावैरे॥ भीतरिचु
 वृशीबादशिायलगदिध्यानलगावैरे॥२॥ परद
 ऊव नौलेप्ररुलालचा॥ दरिचरनौचितलावैरे ॥ न
 जनतुरसीसोइसाधुदरसाचा॥ अमरलोकपद
 वैरे॥३॥ ॥१८॥ अरेभाईसुनिसतगुरकीवांनी
 ॥ ताहिचीन्हिहममएत्रैरगी॥ परहरिकुलकी
 नीलौ॥ टिका॥ पदलदीबहुतदिवसहमअट
 ॥ सुनिसुनिवातविरांनीलौ॥ अबककुसम
 रीअंतरिगति॥ आडूकघाषमानीलौ॥१॥
 तेंगईघगटभईसंमतांमितासुरुचिसानीलौ
 लालचलोत्तमोहमायाकी॥ मिदिगईअैचातानी॥
 ॥३॥ चंचलतैमननिदंचलहूवा॥ निरतिश्रुतिव
 रांनीलौ॥ जनतुरसीसतगुरपरसादौ॥ लयीअच
 लरजध्यांनीलौ॥३॥ ॥१९॥ संतोसोद्वैरंमहमारो
 नादविविर्जितविंदविविर्जिता॥ नदितस्यद्वारनपा
 येटिका॥ सकलवियायीसबतैन्यारा॥ सबकैसि
 जनदारारे॥ सबडुषषंडनसबभवभंजन॥ वेजपु
 निरकारारे॥३॥ सबसुषसागरसबसुषदाता॥
 लसरोमनिसारा॥ सबगुनहूँदितअक ॥ २
 अबिनासी॥ तरनविरधनदिदारा॥३॥ विस्त
 हंमहादेवनारदा॥ सबहीकरेंविचारा॥ पा
 . अगमबतावै॥ नावैलेहिएकतारा॥३॥

आवै न जाइ मरे न ही जनमें ॥ अब गति अलख अपारै
 जनतुर सी जैसे सारं महं मारा ॥ ताहि सुमिरो बारं बाए
 रे ॥ ४ ॥ २० ॥ चेतन राम जयौ रै जिए रा ॥ है दिरदै अतिंत
 हीने रा ॥ टेक ॥ उठत बैठत स्वासनि सोई ॥ सोहं सोहं
 जापजू होई ॥ सो सोहं उलटिके उचारौ ॥ नां भिदि रदै
 धिरि बैठि विचारौ ॥ २ ॥ विन जिम्पा विन ही करमा
 ला ॥ सुमरो अपनो दीन दया ला ॥ ३ ॥ यद्गद्गद्गी जय
 जू कहवै ॥ जपे सुजोगी नाम धरावै ॥ ४ ॥ जनतुर सी
 धनि जिनिग्रह जपकी नां ॥ जपि जपि मय अजमेली
 नां ॥ ५ ॥ २१ ॥ संतो मुखमाही मुखनाही रे ॥ सकल
 शास्त्रटे रिपुकारै ॥ करि करि ऊंची बांहारै ॥ टेक
 प्रथम दुष अंगीकार करावै ॥ गृहतजिबनको
 जाही रे ॥ तहां धिरि होइ ए रांग दोषमल तप आ
 गनिमें जराही रे ॥ १ ॥ आसन बांधे निद्रासाधे ॥ सु
 तखस वैसहां ही रे ॥ सीत उसन संमिकरि हरि
 सुमरै ॥ निहं कामी होइ मां ही रे ॥ २ ॥ सुधभोमिका
 करै संतजन ॥ सुध दरपनकी नाही रे ॥ तबचित
 में चिद्रूपकासे ॥ ज्यो चंदाजल मां ही रे ॥ ३ ॥ जन
 तुरसी ये हषरी कथा है ॥ घोटकी धौनाही रे ॥ कूं
 रमलौ उलटा उर आवौ ॥ तौ आत्म सुषमां ही रे ॥
 ॥ ४ ॥ २२ ॥ संतो सो आत्म सुषपावै रे ॥ जो विषया
 ए बिसरि बदनलौ ॥ उलटि अपूठा आवै रे ॥ टेक
 रचै न ही संसार सुषनिमें ॥ इषदे विन दहलावै रे

संभान्त्रपनौ॥ निजस्वरूपनिरता

पानीपावकउ

नमावैरे॥ औसैंइहतातीसीलीमायाताहिजुगति
करिसिरावैरे॥ १॥ रहैसमानसबहीनऊपरैरा
गदोषनदील्यारै॥ निरवैरीनिरघंटीतरसी॥ सो
सतिरूपसमावैरे॥ ३॥ २३॥ इषसुषकसकजो
लौंजीयन्नाही॥ एईगडलगडिरहीरैनिदिना॥ क
सक्योकरिहिजुमांही॥ टिका॥ इनदीकोउरध्यान
कीयोकरै॥ परपदकौनहीजानै॥ नबप्रपदके॥
ध्यानदिवांनै॥ तबएअनंतदीतांनै॥ १॥ जेकदाहि
इषसुषकौत्यागै॥ तोइषसुषनदीत्यागै॥ जुगजुग
तकेवासितहोइरहे॥ धरिधारिदेहजुआगै॥ २॥
एईकोटपहारहोइरहेहै॥ दिलतैहरिहोदिना
ही॥ बडेबडेसुरपंडितपचिहारि॥ करिकरिउ
पायजुमांही॥ ३॥ जनतरसीपरदाइदेनागै॥ ज्यो
पवनाजलकाई॥ संपूरनमनलगेनावस्यो॥ तब
भलहोइसिराई॥ ४॥ २४॥ रामेरात्रैसारे॥ कोउ
जानैजानसुजाना॥ जाकेहिरदैत्रोरनआनाटेकार
गहामेंगारंगिरहा॥ तारंगहीनचिन्हैकोशवार
गकीसोईचिन्है॥ जाकेधरपरसीसनहोइ॥
जिहिरंगरंगिएरंगबधै॥ रंगकबहुबुटिनजाइ
रंगसरीयाहोइरहै॥ रंगजेकोउपरसैआइ॥ २॥
आनरंगसबपरहरै॥ रंगतनमनरहैसंभोइ॥ ज

नतुरसीरंगरामकौ ॥ भाईरमैसुरामदीहोई ॥ ३ ॥ २५ ॥
उलटिअमीरसपीजिए ॥ आतमअंतरिआइटेक
कहाबिबिधिव्याकरनपठेरे ॥ कापटेबेदपुरान
तनमनकौभरमनामिटे ॥ बिनभजीएभगवानेरे ॥
काजपतपतीरघकीरे ॥ कापूजाव्रतदान ॥ सब
परहरिहरिनावले ॥ तुसाहिसुदृष्टिगुरग्यांनरे
॥ २ ॥ इहैजोगइहैजुगतिहै ॥ इहैभगतिइहैभावे ॥
पांचपचीसौफेरिकै ॥ परापरीपदधावरे ॥ ३ ॥ परा
परीपदपरसिकै ॥ भरमकरमकटिजाहि ॥ जनतु
रसीतनउधरे ॥ मनमिलेपरमसुषमांदि ॥ ४ ॥ २६ ॥
जुगतिविचारैजोगकी ॥ बुटिगयौजंजालरेटेक
चंचलबुधिनिहंचलभई ॥ भरमनागईबिलाइ ॥
निहंकरमीसौमनलग्यो ॥ आत्मअंतरिआइरे ॥ १ ॥
कूरमकलाविचारिकै ॥ लीएंचपचीसौफेरि
आइवसतपानैपरी ॥ बागीअनहदभेरिरे ॥ २ ॥
नयसयअतिआनंदभयोरे ॥ मिटीजुसंसैपास
जनतुरसीपरमपकासमे ॥ मिलिआत्मकरैबिला
इ ॥ ३ ॥ २७ ॥ रागपबांहीगौरी ॥ करिलेकृपावक
काकोकपांनी ॥ अत्रैसंउलटपलटकरकुरे ॥ तौतु
मबडेबिनानीटेक ॥ औमांनैअमृतकरिजा
ने ॥ मानमहाविषमांनै ॥ अत्रैसंउलटिजुविचारै
आदिअतिषवांनी ॥ तातीसीरीआदिअग्रिए ॥
इनिदादेवकृपांनी ॥ ब्रह्मादिकरुद्रादिककेतेक

५ ३॥ २६॥ ॐ

जानी॥ श्रीरश्मिबंधूवादिदीकहावता॥ बालेबेदजु
बानी॥ टेका॥ आपा मांही आपा जाना॥ ज्यो रिब चंदा पा
नी॥ निवावनी रलौ र हेत हां धिरि होइ॥ धीति ब्रह्म
सो बानी॥ १॥ दोदयो ही यद है पुनि दोदी॥ ता में सं
से ना नी॥ जो जगति स्यो उलटि पहि चानै॥ दिइ जगत
स्यो कानी॥ २॥ गदि गुरग्यांन पंच कौ धूने॥ ब्रह्म
कौ उर आनी॥ अति इ सु बुधिसंमिक रि राये॥ आ
दि अति इ कतानी॥ ३॥ तन ही में त्रिभुवन पति प
ले इतत पहि चानी॥ जनतुर सी श्री साजन जो गी
बहु रि नजन में आनी॥ ४॥ २॥ प्रकृतिको अरथ
इतो ही आदी॥ ये कोऊ जान ही मल जानै॥ अर्या
नी नल हादी॥ टेका॥ वाचक ग्यांन सी धिसु निकै
सठ॥ ब्रह्म होइ बेटे मांही॥ अन अ धिकारी कामी
को धी॥ मारय रे गीता ही॥ १॥ जावत जीव देह अ
धासी॥ तावत क्तिकं रां ही॥ भात बिना बुटिन
ही बोरे॥ बन बसती बसो कां ही॥ २॥ गदि गुरग्यां
न अ ज्ञान ही नूले॥ कूले आत्म मां ही॥ तब ज्यो र
हे त्यो ही ब्रह्म देरे॥ कृतं करन र ह्या कबु ना ही॥
॥ ३॥ ताहि कृत करै नै न र ह्या कोऊ॥ सुषपतिकी
सी नांइ॥ जनतुर सी थो जाग्रत ही र दिगया अय

नेसुधसरूपकैमांही॥४॥३॥ ल्योलागीवावस्यो
 जाकेरूपनरेयरे॥ विसरिगएविषवदनलो॥ विषे
 वासनावेयरे॥ टेक॥ कामक्रोधज्वालाकुती॥ जरावती
 जुसांदिरे॥ सोपलटिरयांनीनई॥ तेफिरिबहुसू
 नांदिरे॥ २॥ धनिवैजोगीधनिजती॥ धनिवैज्ञानीसा
 धरे॥ जागतसौवतंजनकैलगी॥ यहनिजपरमसंसा
 धिरे॥ २॥ जनतुरसीबाजीलंघिगए॥ त्रिगुनपरैजु
 सोइरे॥ चतुरथपदबासाकीया॥ रदेजुधेसहोइ
 रे॥ ३॥ ४॥ ३॥ रागजंलीगौरी॥ रंमईयातुमबिन
 रहानजाइ॥ दयामयाकरिअंदरिमेरे॥ बेगिनमि
 लकुआइ॥ टेक॥ दीनडुषीदरसनबिनदिनदि
 न॥ अतिगतिरहेहोउदास॥ करमकपाटयोलि
 सबस्वामी॥ बेगिनकरकुप्रकाश॥ १॥ जैसेहोतै
 सेतुमप्रगटौ॥ प्रगटिदरसनदेकु॥ बिनदरसन
 मेरेक्योंमनमानै॥ पलपलबीजैदेह॥ २॥ तनमन
 मेरातुमहीतांही॥ काककुंबहुतबनाइ॥ जनतु
 रसीकौमिलौकृपाकरि॥ बेगिबिलंबनलाइ॥
 ३॥ १॥ रंमईयासोदरहमहीदिआइ॥ जिदिदर
 पकुचैसंतजन॥ सुषमैरहेसमाइ॥ टेक॥ जहांउ
 पतिषपतिसंतापनकोई॥ कालनपरसैआइ
 बिबुरनमिलनमिलनफिरिबिबुरन॥ एकबुत
 हांनआंदि॥ १॥ जहांएकरसनहीदुराजी॥ घटत
 बढतनहीकाइ॥ तहांतेजअनंतस्वांतिअतिसीत

ल। आनंद सदा विहाइ ॥ २ ॥ ज हांधरनिगिगनपव
 विशिसहनहीजाइ ॥ सोदरदेकदया
 करिमाधौ ॥ जनतुरसीबलिजाइ ॥ ३ ॥ ॥ कैसैनेह
 लगाऊरामस्यौ ॥ मनविचरैनांहीकांसस्यौ ॥ टेक ॥
 विषयास्यौंघीतिलंगावै ॥ हरिकागुनकव हंनगा
 वै ॥ १ ॥ सतगुरकासबदनमानै ॥ नहीनगतिरंम
 कीजांनै ॥ २ ॥ तुरसीमनबडाबिकारी ॥ हरिबिन
 होसीडुषभारी ॥ ३ ॥ ३ ॥ सतगुरसमजावैसुनिमना
 नदीजईएहरितजिबिषबनां ॥ टेक ॥ तजाइज
 हाचितलावै ॥ लावैतहांबहुतडुषपावै ॥ १ ॥ यहदी
 सैरूपसुरंगां ॥ तामैदियरिपरिमरदियतेगां ॥ २ ॥
 यामैसुषनाहीभाई ॥ तसमकिरामगुनाई ॥ जन
 तुरसीइहैबिचारी ॥ सुषसागररंमसंभारी ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥ सैरंमनामजपिलीजीए ॥ विषयाकांसंग
 नकीजीएटेक ॥ लैतनमनहरिजीकूंदीजीए ॥ १ ॥
 जनतुरसीसैकीजीए ॥ नजिगोबिदजुगजुगजी
 जीए ॥ २ ॥ ५ ॥ सोईदासबबेकीहोरंमां ॥ चितसै
 रनआनैतुमबिनां ॥ टेक ॥ औरज्वकरिजांनै ॥
 तुमहीसेतीरूचिमानै ॥ १ ॥ तीनौगुनतजैबिकारा
 निरनैपदतजैसंभारा ॥ २ ॥ जनतुरसीपतिस्यौंम
 नलावै ॥ लावैमिलितहांसंभावै ॥ ३ ॥ ६ ॥ ३ ॥ ॥
 यरांरामकली ॥ अबतुआवरेआवमनउलटि
 अपवा ॥ नजिलैरंमनामअमृतमीवा ॥ टेक ॥ य

हसकलसंसारभार॥आषथापीराहमार॥दोजि
 गीदोजिगकमावे॥सरमकौनांदीतहांनदीविश्रां
 मकोई॥समकिदेविबिचारिमांदी॥सुषकीनिधि
 रंमरटिलैआपदीमांदी॥२॥बाडिनरमबिकार
 माया॥मोहनीसबजीवषाया॥उबस्याजनत्रा
 दिकरि॥जिनिसेईयास्वांमी॥कालकाडरदूरि
 कीया॥अभैपुरीमेंवासदीया॥असादीनदयाल
 देवअंतरजांमी॥२॥जाकेनाहिनदूजीअंत॥अ
 सोहरिसुषकौनिधांन॥परमप्रकाशपूरननि
 कटिहैनेरा॥जनतुरसीसोईसंभारिलीजै॥से
 वतांनदीबिलंबकीजै॥बुटैआवागवनप्रांती
 सकलदुष्टतेरा॥३॥१॥सोजोगीजौमनकौमारै॥
 मनकौमारिमनौर्यजारै॥टेक॥ग्यानबहगसंभा
 हिअबधू॥यांचौपिसननिवारिरे॥निरमैहोइनि
 संकनिसिदिननिरमलतावउचारिरे॥१॥सिव
 नगरीमेंआसनधारे॥उलटिअगमबिचारैरे॥त्रि
 वेणीतटिधरैताली॥परमजोतिनिहारैरे॥२॥का
 लकल्पनांनिकटिनआवे॥गलितहोइगुणगा
 वैरे॥जन॥तुरसीअसाजोनिजोगी॥परमपद
 पावेरे॥३॥२॥हैकोउसूरसधीरसंतजनमनकी
 ममिताषोवैरे॥उलटिआपमैआसनमारै॥ना
 वनदीमलधोवैरे॥टेक॥कालकामकामऊ
 डामोडे॥इबिधादूरिनिवारैरे॥आत्मकैअस्था

॥हरिभक्तिकारिजसारेरे॥१॥अत्र
रिअचलदीचीने॥पदमांदिममदि

॥जलिआवेरे॥२॥३॥

तनासिरतां
बघटिरांमदिजांने॥१॥आसाविसनांतजकल
पतां॥बुरीनलीसबत्यागो॥रहेअडोलचलैनिम
ब्रासुथि॥सोवैसदानित्तजागो॥२॥सतरजतमती
नोंगुनपरहरि॥चौथेचितबितलावे॥कहितु
रसीपूरनपदये॥सुषमेजाइसमावे॥३॥४॥
सोवैरागीरांमका॥मनसागदिआंने॥अबग
तिदेवनिरेजनां॥तादिउलटिपिबाने॥टेक॥
अंतरिगतिआसनकरै॥निजततनिरतावेया
चौकोपमोधिके॥मिलिमंगलगावे॥१॥रजगु
नकासंगपरदरे॥तमहंबिसरावे॥तोजामे
धिरिहोइके॥चौथेचितलावे॥मंगनहोइमन
कोंगहे॥सबकरमनिसावे॥जनतुरसीहरिप
दचीनिके॥पदमांदिसमावे॥३॥५॥रामनाम
जपिबावरो॥बकबादनकरनां॥बकबादेबुधि
बलघटे॥बहीजेमनपवनां॥टेक॥समकिमहा
पदध्यायले॥जबलगतनतरुनां॥जबतनज

जरहोइगा॥ तब थकै सुमिरना॥ १॥ इमजुकहैसम
जायकै॥ तुमसुनौजुसरवना॥ बितहरिसुमिरन
नामिटे॥ नामनअरुमरना॥ २॥ इदेज्ञानादिग
लितहोइ॥ इदेध्यानजुधरना॥ जनतुरसीतनम
नसौ॥ पिकै॥ निजनावउचरना॥ ३॥ इदरिभ
जिहरिभजिषाणीया॥ अबबिलमनकीजे॥ आव
घटैजौवनधिसै॥ पलपलतनकीजे॥ टेक॥ वा
रवारनहीवावरे॥ मनिषातनपावै॥ भजिभगव
तनबिलंबकरि॥ सतगुरसमजावै॥ १॥ जबलग
जुरानआवई॥ तनकालनघाई॥ तबलगसेवा
गमकी॥ निदचेकरिभाई॥ २॥ इदत्रोसरअब
कैबन्यौ॥ तोकहूसमजाई॥ जनतुरसीहरिकौ
भजौतनमनचितलाई॥ ३॥ ७॥ कलिमेंकेव
लनावहे॥ सोईउरिधारै॥ औरउपायअन
तपरेताहिचितांदबिसारौ॥ टेक॥ आनउपा
इअनंतकरत॥ कबुपईएनाही॥ रंकाररंच
ऊरटै॥ तौसबसिधिमांदी॥ १॥ आनजुगतिमें
आनधरमकौ॥ हौअधिकारा॥ अबकलिमेंम
धिरामनाम॥ कात्रोचितसारा॥ २॥ वेदपुरान
सबदिनमिलिनामहीदिहायौ॥ कोटिपति
तपावनम॥ जिनिमुमिह्योगायौ॥ ३॥ सकल
सरोवनिसकलपति॥ सबदिनमेंसारा॥ त्रिभु
वनमांदीबहिरहो॥ ताकौजैकारा॥ ज्यौरवि

जुगतिमाहीरहौ। टेक परसीएनकुसंगकब
कालिमांसबदहौ। निहंकामहोइनितिही। जुग
धिमधि। रांगनांमरविरहौ। १। कोउनिदौकउंब
दौ। कोउंकबुकहो। दुषसुषकीत्रासअपने। सी
सऊपरिसहौ। २। ज्योसिलाजुनिरमनजुवनक
असैंहोइनृबहौ। जनतुरसीयसारसब कुटक
बचनकाहंनकहौ। ३। ११। बृधनबोलीएमुखवै
न। कैकथाकैसुजसपमुको। उचरीएयेहअैन।
टेक गहेरदीएबुधियहै। कीएजुमनसामैन। कि
नदेधोकाहधौ। सुमौ। आकवौरतामैचैन। १। ता
तीतजिसीरीतजो। पुनिधिरिजुगधौनेन। पंचौप
तिलौमीकरौ। करिसांतिइविधादहन। २। जनक
रसीयहमूलसबनको। आतमधरमअगहैन।
सीईउरधिरगहिरहो। कदांघोजतफिरहकैन।
३। १३। हरिबिनकर्मब्याधिनजाइ। षटदरसन
जोगीजती। सबधकेकरतउपाइ। टेक। एकजप
तपतीरधकरै। एकपुस्याबैसैजाइ। एकजोग
जुगिकरहिपूजा। एकटगध्यानलगाइ। १। एक
पढैगुनैसीबैसुनै। इकरहैमौनसंसाइ। इकवन
वनफिरहिनिसिदिन। अंगभसमलगाइ। २। इ
कअनदीपरहरियेपीवै। इकरहैकंददीयाइ।
इकसुकरिनएपंजर। तउंपिरवैआइ। आदिअं

स्यौं॥ जे रवेत नमूलाइ ॥ जनतुरसीतिन

॥ लीपचरनसैरनसमाइ ॥ ४ ॥ १३ ॥

बंदे बंदगी चितलाइ ॥ परहरिमानं अयमानजी
एके ॥ दीनहोइ गुनगाइ ॥ टेका ॥ कामक्रोधकलेस
परहरि ॥ आपदाबिसराइ ॥ राजारंमसंभारिति
सिदिना ॥ उलटिअंदरिआइ ॥ १ ॥ कहांइतउता
फिरैषानी ॥ फिरैकबुनसिराइ ॥ समकिचेति
चितायचितबिता ॥ हरिचरनौचितलाइ ॥ ३ ॥ त
नमनआतमांयांचौ ॥ पलटिप्रभुसौलाइ ॥ जन
तुरसीकारिजसरेसबा ॥ मिलेंत्रिभुवनराइ ॥ ३ ॥
१४ ॥ वंदेतादीकीकरिसेवा ॥ जिनितेरीसेवाक
री ॥ ग्रनमांऊनजिसोईदेवा ॥ टेका ॥ जिनियांनी
तैयैदाकीए ॥ सुषकरनासानैना ॥ नषसषसुंदर
संवारिदीए ॥ अंगअंगआबेअंन ॥ १ ॥ उदरभीतर
उदरबाहरि ॥ आदिअंतिनिरबादि ॥ जिनिते
रीप्रतिपालकीनौ ॥ कौंनसंभारैतादि ॥ २ ॥ उठ
हरनदालिदुबिहंडन ॥ सुषकेदातासोइ ॥ त
रनतारनत्रिभुवनपति ॥ रदेसकलबापकहो
आ ३ ॥ अधमउधुनअसरनसरन ॥ अयनौपा
वतदेनाव ॥ तुरसीततकालअतिरभौतारै
अैसेसमरषरंम ॥ ४ ॥ १५ ॥ नारीनैनदेखी
ए ॥ सुनीएमनभा

तास्योतिलोत्तरिहंनरचौरे ॥१॥ निरतिश्रुतिदोउ
 संभिकरि रास्यो ॥ नोदविंदकी नावसजौरे तापरिश्रु
 टिनवसिंधपार होइ परमजोतिमिलिकेंग्रजौरे
 ॥२॥ निरभेहोइ निरतरिद्विचरो ॥ तिरगुनबाजी ॥
 ताहितजौरे ॥ जनतुरसीकहेचौधैचितलावो ॥ ज्यो
 बडरिनजगुमेंजनमारे ३ ॥२॥ त्रिगुनपरेश्वर
 रूपन्नविनासी ॥ साईमेरासाईजी ॥ भावैमानत्रो
 मानकरोकोऊ ॥ औरनहूजाकोजी ॥ टिकनाही
 दोइम ॥ जौमैताको ॥ अपनैहीउरमाहीजी ॥ ज
 दोजहांहै बहूतेरा ॥ नाहीताहांजुनाहीजी ॥ इहै
 बेलाइबटिरही सकलघटिहंबडहूबडहोईजी
 जहांयहतहांबहनप्रकासे ॥ दोहतहायहनही
 कोईजी ॥३॥ छिष्टिमुष्टिबाजीजुब्रह्मविचि हो
 इरहीदोउपहाराजी ॥ यहविसरजननएदोहन
 लपइए ॥ औरनहीउपचाराजी ॥४॥ गहिगुरम्या
 नजुआपायावै ॥ लेसहरहैनकोईजी ॥ ताउरके
 निश्चैत्रिविधिइय ॥ एएपुलायजुरेईजी ॥४॥
 जनतुरसीयहन्नर्तितगतम ॥ जिनिजिनितगति
 प्रवांनीजी ॥ तिनकीचंद्रकारकीपावक ॥ पलटि
 होईगईयांनीजी ॥५॥२२॥ तावतफोकटज्ञानरे
 जौलौबियैनत्यागे ॥ एकाग्रहोइरंमस्यो ॥ चित्रचि
 कटिनलागे ॥ टिक ॥ बिदपहोबाकरनपहो ॥ प
 होसुभिरतघुरंन ॥ सकलसाखसोधिकें ॥ सम

मंतनां॥१॥ कथोबदोकेतेको॥अङ्ककरो॥
॥मनइं डीउलटेबिना॥नहीहोतसिराई॥२॥
कनिदेखाकिंनघोंसुन्या॥कसरमधिघां॥अ
डीकोज्ञानरो॥सोसोजां॥३॥चितदरपन
धनाजयो॥मलमिटो॥नभादीपहलेहीसुनक
त्यागीया॥तिनिषताजूवाई॥धपअंतहंकरनव
करना॥अपनेबसिकीजे॥तबअधिकारजुगांन
॥श्रुतिमांदिमुनीजे॥५॥जनतुरसीकहैबिचा
॥समजीमैरेभाई॥पहलेतालघुदाईरो॥तो
पीबैजलवहराई॥६॥२॥असेजगपतिहीजां
ओरजांनिबोजगुचतुराहीतादिनउरअनो
का॥ज्योदारमेंदहनइधमेंघृतापरमलयकु
निमांहीघोंघटिघटिचेतनअविनासी॥धीन्दि
लेऊक्योंनाही॥१॥जेमेंदंसधीरकोगहिलोनीरनने
राजाई॥असेंउरमेंलघोआपनो॥अलघनिरंजन
राई॥२॥पूरबपरहरिपबिमआवेप्रजाफेरिब
साबो॥तोतयसयउरअघटचैनहोइ॥आनेदमं
॥३॥इहैसारसुधर्मसबदिनको॥श्रुति
भिरतंभिलिगायो॥जनतुरसीश्रुइहोइसुमिहो
जिनिधतिनिदिनेदयहपायो॥४॥२॥अकररीसा
सूरिवै॥कीयाबनबासां॥जोगीहूवामरधरी
तजिराजबिलासा॥टेका॥सुषसंघेधनअतिघेन
बलाबऊनारी॥सकलस्वादरसत्यागीया॥तडि
अधिसारी॥१॥अत्रसिंघासनराजपाटा॥

स्रगजबहुतेरा ॥ सबपरहरिकारिजकीया ॥ भजि
 स्वांमिसवेरा ॥ २ ॥ पूरागुरपूरा मता ॥ पूरनंपदपा
 या ॥ जनममरनका नैमिद्रा ॥ फिरिधरैनकाया
 ॥ ३ ॥ अबिहरपदभ्रा राधिकै ॥ काटीजमपासी ॥
 जनतुरसीजोगीभरथरी ॥ हवाअबिनासी ॥ ४
 ॥ २५ ॥ अबगतिअंगमनिरंजनन्यारा ॥ अकलरूप
 सति सोई ॥ एाकेब्रह्माबिष्णुमैहेश्वर ॥ पारन
 यावैकोई ॥ टेक ॥ स्वरनरपीरअवलीया ॥ षठ
 दरसनबहुतेरा ॥ बिरलागतिजानैनिरगुनकी
 इनगुनमैकीयाबसेरा ॥ २ ॥ सबगुनरहतसकल
 सुषसागर ॥ निराकारनिजदेवा ॥ अबगतिवा
 रपारकबुनांही ॥ त्रैसाअलषअपेवा ॥ ३ ॥ आवै
 नजायमरेनहीजनमै ॥ सोसाहिवसतिपूरा ॥
 जनतुरसीउनघरिउलिगांनो ॥ गोरघदासकबी
 रा ॥ ३ ॥ २६ ॥ बाबायाहगतिबुनैबिरलाकोई ॥
 जापरिकृपाकरहिकृपानिधि ॥ सुधिपावैजन
 सोई ॥ टेक ॥ गृदिधरधरमधसैदरियामहि ॥ जह
 जायथिरिहोई ॥ बिननेनौपूरनपदयेये ॥ पाप
 पुनिमलषोई ॥ १ ॥ जलमैपैसिजगावैज्वालाता
 भैहोमैलोई ॥ निरभैहोइनिरंतरिषेलै ॥ परसि
 परमसुषसोई ॥ २ ॥ उरमाहीआरामबिचारे ॥
 धुनिमैध्यानसंजोई ॥ जनतुरसीत्रैसाजनजोगी
 वक्रिनजनमैसोई ॥ ३ ॥ २७ ॥ घांनीपरचैपद
 ध्यायरे ॥ मतबहियरेबदावनिमांही ॥ हमजुक

हैसमसाइरे। टेक ॥ आसनसाधिययाधिद्वरिंकरि
 निदानेहनसाइरे। इहसाधनसाधिनितिदितस्यो।
 निरतिश्रुतिउलटाइरे। १॥ इलाघारअन्नइयवना
 जला। पिंगलरेचसुजाइरे। सुषमनमधिसंचारजु
 गतिस्यो। दशवैद्वारिचदोरे। २॥ विनश्रव
 नोसुनिनादअखंडिता। विनरसनांगुनगाइरे
 विननैनौनिहारिजगजीवन॥ जगमगजोतिज
 गाइरे। ३॥ श्रेयीविधिआरधिअनैयदा। नैन।
 हीव्यापैकाइरे। जनतुरसीसुषसागरमादी॥
 प्रचैप्रांनसमाइरे। ४॥ २॥ बाबाप्रचैप्रांनलगे
 जुजाको। अचलहोइचित्रकीबेलिलो। चलि
 नसकेचितताको। टेक। नांनारंगउपजेनहीक
 बहे। रुचैनरसउराकोरे। श्रुतिसदासचरेसलि
 ललो। परसैसिंधसुधाकोरे। ५॥ तिलतिलतप
 तिमिटैयातनकी। मलनासैमतसाकोरे। मनमै
 साइपरैनकाई। दोइसरूपदीराकोरे। ६॥ प
 रमजोतिपरमतेजउदितहोइ। परगठैनूरप
 राकोरे। परमअनाददसुनिसचषावै। बिलस
 सुषसिराकोरे। ७॥ प्रमसथानसुबासाहोवै।
 जहानमैडरकाकोरे। जनतुरसीपदमादिसमा
 वै। ८॥ घेघेघरतुरीयाकोरे। ९॥ २॥ बाबाप्रचै
 वैजिनिप्रमोनदप्राणे। जिनकीजुगतिअंगाल।
 चिना। आसाफदनपराए। १०॥ जजजीजोटेका। वि
 चरेसदाउदासआसतजा। आयापरविसराए

मनकौबसिकीएमनसाउरिलीए॥अनहदधुनि
लयटाए॥१॥प्रमजोतिपिंडमादिषगटिरही॥
वारपारनहीकाए॥प्रसिप्रसिआनंदसुषवि
लसै॥अंतरिध्यानलगाए॥२॥निरतैनिडरनिर
मलरूपीजन॥लोकलाजविसराए॥तुरसीत
वतुरीयाकैराते॥मानोमत्तगजआए॥३॥३०॥
बाबाप्रचैतएकीअहसद्वनानी॥मनलग्णोउल
टिअनाहदधुनिस्वो॥चित्तचपलताबिलोनी
टिक॥उठिगयोकासनिजरहोइउरस्वो॥फिरि
व्यापतिनहीगानी॥कोपअगनिकायावनद
हती॥सोपलटिअरजईयोनी॥१॥लोत्तउल
हिसंतोषसंमानो॥मोहनज्जोसैमानो॥सोउरमे
फिरिबहुरिनआयो॥द्वैगयोकितहकांनी॥
॥२॥घारसमदसुकसेजाफुट्या॥निकस्यनिर
मलपानी॥ताअघाहअमृतजलमाही॥मनस
फरीरूचिमांनी॥३॥नेषसषनिजआनंदसुष
उपनो॥अनंतआपदानसांनी॥जनतुरसीताआ
नंदसिंधुमे॥सुरतिसलिलहोइसमांनी॥४॥३१
हरिसमातेजेजाना॥त्रैसैबिचराही॥जैसेसूक
पतवापवनबसि॥कहंआसानांही॥टिक॥देह
ग्रेहविसरेफिरै॥मनसाबसिकीयेनांकहंर
चैनविरंचिही॥आनदितहीए॥१॥नाइषनांसु
षतैकही॥नाकबुमानआमांनो॥लोहाकंचनमृ
तिका॥जिनकैजुसमांनो॥२॥अरधउरधमधि

कृकी जावनानकोई॥अकिंचन आत्मजता॥हो
हैजुसोई॥३॥अपनेहीशुद्धसंरूपमें॥होइर
लतां॥४॥जनतुरसीब्रह्मसंरूपमें॥जोगीजन
नां॥५॥इशुवाबापुरीनबसेप्रमपदपदए॥तो
दयावनसुदेला॥तोकाहेकूकरैजुकोअ॥कठि
जोगकायेला॥टेक॥आदिबासएबेहचंडाल
लोसबकोउपुरीबसांही॥अपनेअपनेपापसु
निफल॥बिनभुगतैनरहांही॥१॥कांमीकोधीलोमी
मौही॥ऊवरबसोकिकांसी॥दरिकीनिजनिहक
मत्तगतिबिना॥कटेनजमकीपासी॥२॥कायाका
सीबुधिबानारसी॥गंगात्रयजुषान॥जीवतमरत
पमुक्तिपलैए॥बसीएजोतीअसथांन॥३॥गंगागय
ज्ञानजलमांही॥जेअसनानकरांही॥४॥तुरसीतेअ
नंदीजोगी॥कबहुअग्निनजरांही॥५॥३॥७१
रागआसावरी॥सोईसत्यसतगुरकाचैला॥पूर
बतजिपचिमकरैमेला॥टेक॥नौसेनदीकूपमेंअ
नै॥बाराहसोलाहसंमिकरिजांनै॥दखिनतजिब
तरकरैबासा॥तबपचिमसूरैकरैप्रकासा॥१॥
गंगावलटिमेरकौल्यावै॥धरतीउलटिअसिमांन
संसावै॥२॥जनतुरसीयापददिविचारे॥आपति
रेसोओरहीतां॥३॥१॥भाईरसोसतगुरकीजा
नै॥मनबजवक्रमअपनेउरअंतरी॥अनपहं
अहंनआभै॥टेक॥मानबडाईधरेवडाईदीन
दीददिलमांही॥हरधिहरधिहरिकागुनगावै

पलक बिसरै नाही ॥ १ ॥ जा सुख में दृढ़ जु गुलप
 टांता ॥ तां हि देखिन हि चूले ॥ नौ कना लफेरिया ॥
 बिमकौ ॥ त्रिवेणी संगि चूले ॥ २ ॥ तन मन आत मजी
 ति जु गति स्यौ ॥ गहै सिंध सरनाई ॥ जनतुरसी पू
 रन सुषपादौ ॥ जनम मरन मिटि जाई ॥ ३ ॥ २ ॥ स
 तगुर श्रै सा भेद बतवै ॥ जाका नाग बडा सोई पा
 वौ ॥ टिक ॥ बारा मांस पलटि बट भाई ॥ अन सुति ॥
 कै घरि रहौ समाई ॥ १ ॥ पबिम कंवल मै करिले
 बासा ॥ तब प्रगटे जोति होइ प्रकासा ॥ २ ॥ तहां अ
 नां हद बाजै बाजा ॥ हरि के नांय मगन मन राजा
 ॥ ३ ॥ जनतुरसी श्रै सी गति पाई ॥ सतगुर आप
 दई समजाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ नात्र बिना सुषना ही रनाई
 सतगुर साधक हें समजाई ॥ टेक ॥ भावै श्रव सवि
 तीर्षन्हावौ ॥ भावै नौषंड नूफिरि आवौ ॥ भावै जप
 तप संजमसाधौ ॥ भावै सकल देव आराधौ ॥ १ ॥ भा
 वै आसौ बंद बंधानौ ॥ भावै नाना जगि प्रवांनौ
 भावै पूजा करहं अपारा ॥ हरि बिन कूबा सक
 लपसारा ॥ २ ॥ भावै घर बन मै करि बासा ॥ भावै
 सबतै फिर ऊदासा ॥ भावै नगन रहौ गहिवांनी
 भावै अनतजिकंद प्रविषांनी ॥ ३ ॥ कैवल रामना
 मततसारा ॥ सकल सिरोमनि सबतै न्यारा ॥ जन
 तुरसी तातै ल्यौ लावौ ॥ सब दुष जाइ परम सुष
 पावौ ॥ ४ ॥ ४ ॥ जब लग जुग मै जीजै ॥ रामना
 जपिलेह ॥ चारि वेद शास्त्र सब हिनकी ॥ अर ॥

।मालास्वासउसासकीरे।।

श्रीरक्तपत्नीश्यांसा।तास्योधिरीहोइहिरद्वैना
मजयि।।त्यागिक्रोधअरूकांम।।१।।सतजुगवेता
पपरकलिजुग।।चारिजुगंकेमांदि।।सारभूतसु
मिरनहिगाये।।सबसंतनमिलिआदि।।२।।ज्यौंचा
त्रिगधनचकोरचंदहि।।ज्यौंनिरधनधनप्रीति।।
श्रीसीधीतिउरधारिअंघडितचरनकवलहीची
ति।।दींकरमलौइहीआपबसिकशि।।उलटिअ
पूगआवा।।जनतुरसीनिजनिरगुनभजियौ।।ब
करिनश्रीसोडाव।।घ।।५।।श्रीसाकहिएनामतुह
रा।।सुमरतकटिजांहिकोटिबिकारा।।टेक।।राइ
मानवैसांदरएता।।जाइकावनसमकरेकेता।।जै।
संधगतसूरतंसजाइ।।श्रीसैनामलेतअघजादि
बिलाई।।२।।तुरसीदासबिलंबनकीजै।।केवल
रामनामजायलीजै।।३।।६।।श्रीसैरामजयौरेना
इ।।आडौंमायामोहबडाई।।टेक।।साधसंगतिमि
लिहरिगुनगावौ।।मनकीमनसासनहिसंमा
वौ।।नरिनरिघेमपयालायीवौ।।मरकनकब
हजुगजुगजीवौ।।१।।कामक्रोधकामोहडामो
रौ।।जमसोतोरिरामस्यौंजोरौ।।अहनिसिध्या
वौअलअविनानी।।तोबुटैनरमआवाजांनी
।।२।।तुरसीदाससोईजनसारा।।भजैनिरेजनत
जैबिकारा।।उनमनितारीरहेलगाई।।आयात

जिहरिमां हि संमार्द्ध ॥ ३ ॥ ७ ॥ गोविंद गोविंद गोविं
द नजीए ॥ माया मोह नम सबत जीए ॥ टेक ॥ बिंब
ल साधकी संगतिकरीये ॥ राम सुमिरि दूतरयो
तिरीये ॥ १ ॥ निसबासुरि गोविंद गुनगईए ॥ अ
बिंदर अजर अमर पद पईए ॥ २ ॥ जनतुरसी
असौ गति गहिए ॥ तन मन सोपि राम रसरहि
ए ॥ ३ ॥ ६ ॥ हरि विमुषन का संगनकी जै ॥ तन म
न सोपि राम रसपी जै ॥ टेक ॥ साच ऊव को संमि
करि धावै ॥ आपन नूला औ रनूलावै ॥ १ ॥ इं
द्री खार घये लै साच ॥ माने नही साधकी बात
॥ २ ॥ दया दीनता ज्ञान न ध्यान ॥ निर भै होइ नुग
तै विषयान ॥ ३ ॥ तुरसी इनका संग निवारि ॥
साचा साहिब लेहि विचारि ॥ ४ ॥ ७ ॥ विषया
नदी बहै अति गाढी ॥ ब्रह्म जीव विचि होइ रही
आडी ॥ टेक ॥ जो रूप सो नैन उलटावै ॥ तौ बें नन
की बाट बहावै ॥ बें न ऊ बसि करि बें संधानां तौ
बचन दौर आइ परै जु कानां ॥ १ ॥ युनिना सार
सनां कामी इंद्री ॥ रदन न पावै नै कन रंद्री ॥ अप
ने अपने रस कै लीला ॥ तिन हूकूं उप जावै छोला
॥ २ ॥ भांति तांति जीवन बह कावै ॥ कोऊ मुकति मघ
जान न पावै ॥ घेरि घेरि रावै जुइ हांही ॥ लै जगु
कै जगही कै मांही ॥ ३ ॥ कोऊ हनन पावै पार क
रि करि थके बडुत उप चारा ॥ जनतुरसी लंघि

द्विष यानदीलंघैजनग्यानी॥ नैकनप्रसैताकौपांनी
 टेका॥ रूपधारमैनेननदेई॥ श्रवनहंश्रपनेबसि
 करलेई॥ नासारसनांतुकरसत्यागे॥ कबडुनफे।
 रिधरेतापारो॥ १॥ एपंचौरसबिरसजुजानै॥ अति
 तहिमिथ्याकरिमंनै॥ मिथ्याजानिमिटावैरागा
 कबुनराथैतूतागा॥ २॥ अंसौएहवैरागुरधरई
 ताजिहाजआरौहंनकरई॥ करिआरौहंनउत
 रैपारागुरकेवटसमरथउपगारा॥ ३॥ बिनवै
 रागबंबेकबिनांही॥ किनहंपारागतिलहीजु
 नाही॥ जिनिपायोयदप्रमविचारा॥ तरसीतेई
 नवैगएपारा॥ ४॥ १॥ कैसेसुमरोनामतुम्हा
 रा॥ यहमनचंचलंचपलहंमारा॥ टेका॥ यहमन
 दहदिसकौउविधावै॥ याक्योघेरततहांधिर
 नआवै॥ १॥ यहमनकामीकुटिलबिकारी॥ नां
 नारंगउपजावैभारी॥ २॥ यहमनमाताहसती
 आही॥ जाइविषैवनरहैजुनांही॥ ३॥ यहमनमे
 मंतहैबलबीरा॥ मारेसुरनरमुनिजनपीरा॥ ४॥
 मनकौमारिकरैचकचूरा॥ कहतुरसीसोईजन
 सरा॥ ५॥ १॥ धिग्रधिगरेनरनामबिंखो॥ १॥
 बादिहिजनमश्रमोलिकहारो॥ टेका॥ नां नां देह
 सुषनमेंरातो॥ मायासोदुखवमदमातो॥ १॥
 अषगतितजिआयंदाविसाही॥ कंचनदेहइ

बनिमैंदाही ॥३॥ परमनां वयदल कनध्यायौ ॥ निसि
 दिनकीयौ आपनो मनसायौ ॥३॥ तरसी दासक हैस
 मजाइ ॥ हरिबिनमुकतिनदीरेमाई ॥ ध ॥ ॥३॥ रि
 नरनिसिदिनहरिगुनगाइ ॥ वैस्यो कहां करे अपरा
 धी ॥ तेरौ जनम श्रमोलिक जाइ ॥ टेक ॥ पांचौ फे
 रि ॥ रिघटमां दी ॥ मनमनसाजलटाइ ॥ निरतिश्रु
 तिअभिअंतरिपीवस्यौ ॥ नषसषरकुलपटाइ
 ॥१॥ पांचौं मारेते हरितारे ॥ सूतेलीऐजगाइ ॥ अ
 रसपरस आपनसुषमां दी ॥ जनतुरसीलीए ॥
 मिलाइ ॥ २ ॥ १ध ॥ दिनदशगायलैगो बिंदगुनां
 अंतिकोऊ छिरिनारहै ॥ तूसमजिरेमेरेमना ॥ टे
 क ॥ बचकवैमंडलीक द्वादश ॥ करते भोगबिला
 सतेऊपरिमाटीमिले ॥ बडुतेसहीतनत्रंस ॥
 असिछिरकोउनजानीए ॥ बिनभजेपदअबिन
 स ॥ १ ॥ रावरंकसुलाननउबरे ॥ केतेखानवदान
 राजनकेसंबूदहोते ॥ सुंदरसुनटसुजान ॥ सार
 सुधिकबुनारही ॥ सहीनदीएपयांन ॥ २ ॥ बिन
 भेगरहैदेहसवनकी ॥ कास्यो करीएनेह ॥ नेहकरि
 करिअनंतलय ॥ मिलेमाटीषेह ॥ तातेतरकिदैती
 रिबतगासौ ॥ रामजपिकिनलेह ॥ ३ ॥ जेउपजेते
 तेबते ॥ सबहीजुगएबिलाइ ॥ अजरअंमरको
 उनही ॥ बिनभजेरघुपतिराइ ॥ जनतुरसीयह
 गतिजानिरहौ ॥ हरिचरनसरसमाइ ॥ ध ॥ १५

कि

बोद्धेयीवके॥फूटौनहीयहदीया॥अजहंजी
 क्यौरहो॥महावज्रयहजीया॥टेक॥वक्रत
 दिनबिबुरेनपसजनी॥सुहायनधनधाम
 लकपलकबीततकलपजुमोदि॥विनिदे॥
 वैराम॥१॥धिगमेरौजीवनजुजनमधिगर॥धि
 मतियेदी॥बिबुरेप्रमसनेहीपीतमादेधो
 नईकेही॥२॥सज्यासिंघसिंघारसपसमि॥ २
 मोदिनाई॥बिरहअग्निदारनदोंलागी
 नरहीबुजाई॥शुद्धदिनकहौकबआइ
 मोदिहंसिनेटिहैजुराम॥जनतुरसीमेरजनम
 को॥सरदिसकलईकाम॥ध॥१॥ध्यात्रो
 जनहरिसयीबोरे॥वीबोजुगिजुगिजीवी
 ॥टेक॥निरतिसुरतिमनपवनफेरिकै॥उल
 रहीबोरे॥आत्मकेअसथांनिबैसिकरि॥
 मरहीबोरे॥१॥अरधउरधमधिमनसाबाव
 धजुदीबोरे॥ब्रह्मअग्निप्रजारिअनिअंत
 अमीअचईबोरे॥२॥पांचपचीसोंत्यागि
 डरमतिसबा॥सुमतिगहिबोरे॥जनतुरसी
 रामरसायनपीयकै॥आनंदकेबोरे॥३॥१०
 तूदेखैसौतनाही॥यहकृतमतदेअवि
 सी॥अरघइतौहोआहो॥टेक॥तूतौद्रिष्टि
 गोचरकहीए॥मुष्टिमांजनहिआबो॥असौ
 सबसाधवषोनता॥अरुंवेदहंबतावै॥१॥

तूतौचेतनयंचतवकौ॥पदस्याउपरिबागा॥फारे
पहरैपहरैफारे॥तनकगुननकैरागा॥२॥इंद्रीवि
धैभोगचितवनतजि॥उलटिअपूगअवै॥तौ॥
अपनौसरूपसुधनिरगुन॥निहचैनिजकरि
यावै॥३॥होइजातिकीजातिमलेंही॥भरमबिजाती
मलरहैनकोई॥जनतुरसीपरसतपूरागूर॥पल
टिअैसीगतिहोइ॥४॥१८॥आनीकापदजोरि॥
सिहाया॥तनमनमैपलनहीसबुरी॥नजैमायाही
माया॥टेक॥भीतरिअौरबाहरिकबुअौरै॥तब
लगसरेनकाई॥बाहरिभीतरिहोइएकराजी॥तौ
यावैसचभाई॥१॥जबलगत्रमबिधैतनमाही॥त
बलगरुहीसेवा॥भरमबिलायबिधैनीत्यागै॥
तबमानैगुरदेवा॥२॥कहणीकहेकबुनहीबो
रे॥जोरदानीनहीआवै॥जैसेकहेरदेपुनितैसै
तौसाईमनिभावै॥३॥तुरसीदासकहेसमजाई
अैसीकरिरेभाई॥मैतैलुबधिनिवारिरामजपि
तौमिलिहैहरिआई॥४॥१९॥इहबैरागबदों
नहीभाई॥तनगरीबमनमांदिबडाई॥टेक॥त
नजोगीमनइनीयादार॥बुरीभलीविसरेनल
गार॥मुषाहसाधकरनीकबुनाही॥निरति
सुरतिसबमायामांही॥१॥तनबैरागीमनकरि
नाहि॥बाहरिहंसकागघटमांदि॥नरकीजीव
नरकसौप्यार॥मुकताहेलतजैमधैविकार॥२॥

रागी सो बधु विस्सही वै ॥ नरमक्रमस बधु
 रिनसावै ॥ अननैपदमेरहेससा ॥ तुरसी दा
 तासबलिजा ॥ ३ ॥ २० ॥ देषी रेगो विदगति
 त्रीसी ॥ षडेधार अगनिमले जैसी ॥ एक
 किरुकिरुनरउलटा आवै ॥ पैलीपा रन
 कुं नयावै ॥ पैलीपारवसेमरासा ॥ सुषसा
 गरडुषहरनगुसाई ॥ १ ॥ इकपंडितगुनीपवि
 हारे ॥ प्रकृतिपु रुषकेरन्यारेन्यारे ॥ प्रकृति
 रुषन्यारेनहीहोही ॥ तातेरहे अपानज्योकेहे
 त्योंही ॥ २ ॥ एकजोगसाधेनिहंकारन ॥ अजर
 हेनकेकारन ॥ एकबै रागलियेनरममाही
 रागदोषमलबाडेनाही ॥ ३ ॥ निहकामदोइत्या
 सबकांम ॥ निसदिनजयै रामकोनाम ॥ मन
 डीउरफेरिअपूठा ॥ तुरसीतिनकीसंसेबु
 ॥ ४ ॥ २ ॥ कामयौमोनिगदेमनिबोले ॥ यलन
 हैधिरिददिसिडोले ॥ टेक ॥ कामयौनांगार
 अकेला ॥ संगिसंतावैयांचौंचेला ॥ नादसूदिमन
 सामकलाई ॥ नादविनासचनाहिरैभाषी ॥ का
 मयोजटाकेशररबायो ॥ नषसषअगबचूतिच
 टायौ ॥ कामयोरनिबनिफिरैवदासा ॥ जबलगन
 हरिचरननिवासा ॥ २ ॥ मनमनसागदिसब
 विचारै ॥ यांचौंचेलासंगनिवारै ॥ जनतुरसी

सोई मुनि सारा ॥ उन मनिला गिर है निरधारा ॥ ३ ॥ २ ॥
माया याया सब संसारा ॥ जे उब स्याति निरो म संभार
टेक ॥ बल बल सहित जीव बसिकी या ॥ चतुर बि
कारा चनु निचु निली या ॥ मीर मुल कर राजा एना मा
रे धाइ सकल विष वाना ॥ १ ॥ काम क्रोध का गोला
बाहे ॥ काचा कोट चोट सौं लावे ॥ बुटिन सकै को
उन रखांती ॥ सब जीव सारिकी एधु कधीनी ॥ २ ॥
पंडित गुनी सर सब हारे ॥ सुर नर मुनि जन पीर
सिंघारे ॥ महा देव कामेता डिगाया ॥ श्री सी अपर
बल तेरी माया ॥ ३ ॥ रचि रचि नांना ते वचना वे
नि सिदिन मोहि बो होत इ ब्यावे ॥ तुरसी
दास जन करै पुकारा ॥ राधिराधि साई इ दिवा
रा ॥ ध ॥ ३ ॥ माया मन द कु गां विपरी ॥ बुटतना
ही अधिक घुरी ॥ टेक ॥ जो माया को मन बिटका
वै ॥ तो माया नही बाडै ॥ जो माया अरी मही इ मन
सौं ॥ तो मन वासिर आ डै ॥ १ ॥ माया बिन मन रहै
नयल मरि ॥ मन माया न बिसारै ॥ अति गति ॥
गां विपरी ॥ अ भि अतरि ॥ कै सैं कै निरवारै ॥ ३ ॥
सै ही मिलिर हे पर सपर ॥ कहै भिन क्यो होई
बडे बडे पंडित मुनि ग्याता ॥ प्रोजत घाके सो
ई ॥ ३ ॥ सोई सत सोई जोगी सर ॥ यो या गां वि
निवारै ॥ कहै तुरसी सोई गुर मेरा ॥ आपतिरै

मोहितारै॥१॥२॥ सोई जगतामेरै मनितावै॥ बा
 रिजातां नीतरित्यावै॥ टेका॥ बाहरका सबतजे
 सारा॥ अंतरिसुमरै रामपिया रा॥१॥ बिनजिह
 कागुनगावै॥ बिनकरै अनहदबैनबजावै
 जनक, रसी सोई जनसाचा॥ यांचोमेटिएकर
 माता॥३॥२५॥ सोई साधसिरिमोरहमारै॥ ए
 गहै सबहजिनिवारै॥ टेका॥ रहै अरीकसकल
 न्यारा॥ अंतरिसुमिरे रामपिया रा॥१॥ नाघरि
 हैनबनमें जाशउलटिआपमैरहै समाश॥२
 तुरसीपतिस्पोमनलावै॥ लावैपावैतहीसं
 मावै॥३॥६६॥ जुगियासोईबाबाजुगतियि
 बानै॥ बाहरिजातानीतरिआने॥ टेका॥ सिव
 ग्रीमैआसनलावै॥ सबदअनाहदसीगीब
 ॥१॥ कंथाषिमांअषडअधारी॥ सहैजेमु
 अगमबिचारी॥२॥ निजसरूपउलटिरय
 चांनै॥ अगटजोतितहामनगंनै॥३॥ यांचो
 एकरसभोगी॥ कदतुरसीसोईजनजोगी
 ॥४॥२॥ आयाषोजिअनंतकितजाहि॥ अन
 हीपावैनाहीताहि॥ टेका॥ आयाषोजिअनं
 कितंजांदि अंनंतहीपावैनांहीतांहि अ
 तंभरमतसबजुगपस्याली॥ किनऊन
 यात्रेव॥ केउजयकेउतपकेउतीरषवरत
 ऊआनकीसेवा॥ ५॥ केउवेदपुरांनोबिलंबे
 उषटकरमआचारा॥ यावैनहीआपबिनघे

जे॥ निकटहिनाघहंमारा॥२॥ आयात्रंतरिषो
जिनिरंतरिमनपवनाजुमिलाई॥ तुरसीदास
त्राससबबुटै॥ पदमैयांनसंमाई॥३॥ २६॥
प्रांणीकाहेकूइतउतजाहि॥ इतउतपावैनाही
ताहि॥ टेक॥ इतउतचरमतवलकवटंदरसन
हेरिहेरिहरिहारे॥ उतरदधिनपूरबपबिम
फिरिफिरिप्रांनप्रहारे॥१॥ कायाकासीमेंत्र
विनासी॥ मौबिमुकतिकेदाता॥ ताहिसुमरिउ
लटिअसिअंतरि॥ मनकममनसावाचा॥२
तनमेंमनमनमेंधरिपवना॥ पवनफेरिवंद
लाई॥ अरधउरधमधिजोतिजगमगौ॥ तहांप्रा
नविरमाई॥३॥ नउधारजरिजोगजुगतिष्यो
बलिदसवैघरिजईए॥ जनतुरसीप्रभुपसिप्र
मपद॥ कालकरमडुषदहीए॥ ध॥२७॥ अत्र
धूअवनरहंग्रिहवनमें॥ गुरगंमियाचौफे॥
रिअपूवा॥ रामरमौयातनमें॥ टेक॥ ग्रहव
सिएजोगोबिंदपइए॥ तौसदगतिसबलोई॥
वनमेंजीववसेबहुतेरा॥ पारनपहंचाको
ई॥१॥ अत्रननैननासिकारसना॥ यिबली
बाटचलाऊ॥ आत्मकेअस्थानिवेसिकरि॥
निजपदनेदलगाऊ॥२॥ आसात्रिआंधंडिग्या
नगहि॥ मनमनसागदिआनौ॥ अस्वरमारि
स्वरफेरिवसाऊ॥ प्रमहंसप्रमानौ॥३॥ जन
तुरसीगुरक्याते॥ अमरपयालापीऊ॥

सपरममिलिरहौंरंममै॥ मिलिकैजुगिजु
आ॥ध॥३॥ सेत हो सो है रामहंमारा॥ जोधरे
दसअवतारा॥ टेका॥ दुषसुखरहतरहसबदिन
॥ पापघुनितै न्या राअडिगअचलबपबरणवि
रजित॥ वारनपारअपारा॥ १॥ सबसुषपूराहैत
पूरा॥ अबगतिअंतरजोमी॥ आवैत जाइमरेन
जनमै॥ औसासमरथखांमी॥ २॥ कालकरम
कैकबुनाही॥ नाहीरूपअरूपा॥ सकलवि
पीसबतै न्यारा॥ औसाततअन्या॥ ३॥ अ
मअगाध॥ सकलविधिपूरन॥ निराकारनि
देवा॥ तुरसीऔसारामहमारा॥ करोंएकरस
सेवा॥ ४॥ ३॥ सेतोहैऔसारामहमारा॥ कोऊ
जाननहारा॥ टेका॥ ज्येजलमेंप्रतिबिंबदे
ये॥ दरपनमांहीबाया॥ हूधैघितकाएजिमि
बकी॥ ज्येसबघटिरामराया॥ ५॥ कांसेनाद
सपहुयमै॥ ज्येतिलतेलसमान॥ पिंडेजी
सीवअसैसबमै॥ जानेजानसुजानं॥ २॥
रपारजाकोकबुनाही॥ पूररहोसबमा
॥ गुणातीतअखिलअभिनासी॥ उपजेवि
सेनाही॥ ३॥ आदिअतिमधिअसधिरजुगि
॥ पूरनपरमानंदा॥ तुरसीदासताससेवता
रायादुषहुंदा॥ ४॥ ३॥ वैदेहाजराहज
॥ वूमतिजानैसादिवहरि॥ टेका॥ हेहजुरि
जानसबविधि॥ निरषिबारबारा॥ पच

तसकरवेगिबसिकरि॥ दोइज्योदीदार॥ १॥
नयसिषांश्रौजुदमांही॥ सकलव्यापकसोई
उलटिदेविपिबांनिदिलमें॥ आपश्रौरनकोइ
॥२॥सनमुषांदोइसुमरिसादिब॥ आनआसमि
टाइ॥तुरसीदासकुलासहितस्यो॥ यरसियीरषु
दाइ॥ ३॥ ३३॥ बंदेबंदगीकरिलेह॥ इतउतअन
तचितनदेह॥ टेकानोवौघारोनेमदिठकरि॥ उ
लटिश्रंदरआव॥ रिदामधितजिरांमअपनो
वेगिबिलंबनलाव॥ १॥ माहीलागाजुरकुनिति
जैसेचंदचकोर॥ अपनेअलादरामस्योइकता
रनिसअरुभोर॥ २॥ जनतुरसीकहेजाइबीतो
बहुकहांधौबीर॥ निवावदीपकलौजुहेर
हो॥ आतमामेधीर॥ ३॥ ३४॥ उलटिमटीमेंआ
सनमाडो॥ पांचौंचेलाकासंगबाडो॥ टेक॥ ए
काएकीआरंभलागो॥ नीदनिवारिएकरसिला
गो॥ १॥ बिनजिह्वाहरिकारुनगावो॥ बिनकर
अनरुदबेनबजावो॥ २॥ जनतुरसीअनमनर
सपीवो॥ मरकुनकबहजुगिजुगिजीवो॥ ३
॥ ३५॥ जाहिकहाइहाहीहैराम॥ पईएजोइइह
निहकांम॥ टेक॥ जनिहकांमभयातिनिया
या॥ सकामीनअरुतहोगमाया॥ १॥ ज्योदा
रमेंदहनदधमैधीव॥ योनयसंघव्यापकमे
रेपीव॥ २॥ जिनिमंतकायायास्वाव॥ तेइत
उतकहनकरैभरमाव॥ ३॥ मनयवनातनमें

हीइरहेज्योनिबावकौनीरा॥धा॥जनतु

रसीधनिधनिवेसाध॥जिनिपाईयहनागतिअगा
ध॥५॥॥३६॥यांडेकहाजुझानतुस्यारा॥भरमकरम
कांमनीकनकसुखा॥बुटतनाहिलगाराटेका॥देजि
गकाजिउनीपरमोधत॥करिबहुअरथविचारा
आकस्नीकरमादिकबुटै॥सोमतरहानियारा॥
॥१॥कागीताभागवतबषांने॥कबुनपरीयोपांने
तनमनमायासाहिअलक्षौ॥साचरहोसबकांने
॥२॥संध्यातरपनअरुषटकरमां॥लागरहेयह
आसा॥इदिआसासौंलागिअंधदौ॥कौनभयानि
जदासा॥३॥तुरसीदासकहेसमजाई॥आनआस
तेजिभाई॥मनक्रमनजिलैरामनिरंजन॥तौमिलि
हेहरिआई॥४॥३०॥यांडेकौनकथावदसारा॥जा
सुनिसंतउतरिगाएपारा॥टिका॥अबयहाकथासु
नतसबकोऊ॥ज्योकैत्योहीआंही॥वदआरतिउ
पजनिकोऊअौरा॥जासुनिबनकौंजोही॥१॥वि
षबबनलौजुफीकेलागे॥सबदादिविषयेसा
ही॥सोईकथासुमरनसोईसाचा॥जामाहीयोहीई
॥२॥हृदपरैवेददमे॥तहांजाइमनलागे॥जनम
मरनकासंसाबुटै॥सुतीसुमृतजागे॥३॥जनतुर
सीसोईपडितपूरा॥जोअैसेसमजावै॥जोसमजे

॥असमजलेसनआवे॥४॥३६॥
जबलरामनधि

रिनां ही ॥ निरंगुन सरगुन एक बघा नौ ॥ तूराचि
रसौ परम मां दी ॥ टेक ॥ कहै सु नै कबु समजै
नां ही ॥ मन की दौ रन बूटै ॥ कनक का मनी के ब
सिपरी यौ ॥ ताते त्रिष्ठा दिन दिन बूटै ॥ १ ॥ सब
गुन रहत अकल अविनासी ॥ देपन सब तै न्या
रा ॥ ताको सुमरि बाडि सब डुरमति ॥ यह निज
ग्यान विचारा ॥ २ ॥ कहै नीकौ हंम मां नत ना ही ॥
रहनी रहै तो सारं ॥ तुरसी दास कहै संमजाई ॥
तुहरि भजित तरे पारं ॥ ३ ॥ ३ ए ॥ यह क्यो सुदु
ग्रह क्यो पांडे एक ही मां टी के संब भांडे ॥ टेक ॥
एक ही चका एक ही गार ॥ एक कुलाल उपाव
न हार ॥ १ ॥ एक ही ब्रह्मा शिष्टि उपाई ॥ जुदे ॥
जुदे कही एक्यो भाई ॥ २ ॥ एक ही ज्योनि बाट स
ब आए ॥ कहां ब्राह्मन कहां सुदर सबाए ॥ ३ ॥
एक ही जननी जनकें जु सोई ॥ एक उदु उपने सब
कोई ॥ ४ ॥ उत्तम धि म करणी की न्ही ताते न ए जु नि
ना भिनी ॥ ५ ॥ देवो और कारन न ही कोई ॥ त्रौ रमनि
यमात्र है सोई ॥ ६ ॥ सब घट अंध एक ब्रह्म विचा
रे ॥ सोई ब्राह्मन यो वेद पुकारे ॥ ७ ॥ निरदोषी नि
रवैरी होई ॥ जनतुरसी ब्राह्मन कही ए सोई ॥ ८ ॥
॥ १० ॥ सतो सोपंडित अधिकारी ॥ धरम गहे अध
रम सब बागै ॥ निसि दिन जपे मुरारी ॥ टेक ॥ का
म क्रोध तजलो न हिषं डै ॥ त्रिष्ठांतर गन सावै

वृत्तिनिर्दिष्टनि करियांती ॥ निजपदनेहल
 ॥ १ ॥ नरमकरमहिरदै नहि धोरै ॥ बादवि बाद
 वरनेनहीवरनकी सोभा ॥ अवरनजस
 बिसतारै ॥ २ ॥ पांचपंचीसअनंतअघपरहरिअत्रि
 पुनदिसैनध्यावै ॥ कदेतुरसीचौघापदमांही ॥ सन
 मुषहोइसमावै ॥ ३ ॥ ४ ॥ परनिदांमुषतैनकरक
 रि ॥ परनिदांविषतैजुमहाविष ॥ करिकरिदौजिग
 कांइपरैरे ॥ टिका ॥ मजौनिरंजननिरतिसुरतिग
 हि ॥ सीलसंतोषउरमांऊधरकरै ॥ यदैधरमअधर
 मकौसोचक ॥ कथेंबदेमवजलनतिरकरै ॥ १ ॥ दोष
 सत्रकरवतलौबेहरे ॥ हिरदैबैशिवसैअधिकबुरै
 शाताबुडकौसपृसकरिकरितुमा ॥ करणांसिंधु
 मुषकं बिसरैरे ॥ २ ॥ सबस्योसमद्विष्टीकैचिच
 रैरे ॥ रागदोषकाहूनकरैरे ॥ इहैसारसबग्रेघन
 कौ ॥ सोअपनेउरमांऊधरैरे ॥ ३ ॥ नानांपषनानां
 पघनमै ॥ नानामतनमैमतहिपरैरे ॥ जनतुरसी
 कदैमजौएकब्रह्मही ॥ आदिअतिइहमघसेचरै
 रै ॥ ४ ॥ ५ ॥ आवेधूआतमततअएद ॥ लेहपदचै
 निमलताकौरदे बिसरजनदेह ॥ टिका ॥ प्रकासी
 तिमरस्यारहैजुन्यारामाही ॥ पंचततत्रि

॥ १ ॥ जगमगजो
 रजत ॥ जनममरननहीहोवै ॥ क
 वर ॥ ताकेकलमषधोवै ॥ ३ ॥ चि

दानं दयत्यसि तिस्रसि तिक बु ॥ दरस पूरिननेरा
 विलसे सु बहंससाधु जन ॥ तास सरोवरतीरा ॥ उ
 सकलदियापीसबतै न्यारा ॥ सबकोई ष्वरजु
 सोई ॥ सकलदेवताकै तरहरीया ॥ ताउपरिन
 हिकोई ॥ ४ ॥ अनहदकर अषंडितबाजे ॥ तहां
 जुताकाबासा ॥ उलटिआवउरमांदि सक्त ॥ त
 रसीदेषितमांसा ॥ ५ ॥ ४ ॥ इहा ही गंगाइ हां
 हीकासी ॥ इहां ही आपनाथ अविनासी ॥ टेक
 जोबइलीकं उलटील्यवे ॥ पिंगुलाहंफेरिकै
 बहावै ॥ उभै प्रवाहसुषमनिमधिदेइ ॥ गुरप
 सादत्रैसीकरिलेइ ॥ १ ॥ तीनऊकाभेलाकर
 जहां ॥ पबिमदेशघागहैतहां ॥ जहांतैउवत
 वैठतपवनां ॥ पैकबहनकरेपूरबतनगव
 नां ॥ २ ॥ यात्रिवेनीन्होवैकोइ ॥ कोटिजिगि
 कोफलताहिजुहोइ ॥ मनक्रमबचनसत्यहै
 सोई ॥ यामैनहीसनेहजुकोई ॥ ३ ॥ यहकाया
 कासीरैभाई ॥ मुक्तिपुरीकरिसंतनिगाई ॥ यावा
 दरजिनिबांधीप्रीति ॥ तेवदपरलोककीरीति ॥ ४
 याहीमांऊपुरीसबजानौ ॥ याहीमैउषरप्रदानौ
 याहीमैतीरथसबदेव ॥ यामैरहंसपावैनेव ॥ ५
 याहीमांऊआत्माध्यान ॥ याहीमांहीब्रह्मगियान
 याहीमैध्यावैजगदीस ॥ सोजोगेसुरनरकाइस
 ॥ ६ ॥ जनतुरसीयहउतमउयाइ ॥ घटहीमैगुरदी

यावताइ॥ सो कूरमलौ उलटा आवै॥ सोई नले
नेदयह पावै॥ ७॥ ध॥ ११५॥ रागसि० धौ० रो॥
सोई सरसांवतसुमटसोई॥ निरतिगहि श्रुतिको॥
उलटिआनै॥ उनैमिलाइउरमांहिएकांतरकरै॥ तत
रूपदकीपदिचानै॥ टेक॥ मनमातंगमदगलित
ऊबटकिरै॥ घिरतनदिघेसोबऊघेरिहारे॥ इ
नआंकूसकरगहिजुउलटाधरै॥ लैजुरिदका
रिदमाऊधरै॥ १॥ कामकोदलमलैनिपटकरी
निरदरै॥ कोधपावकपांनजुकेवै॥ सुधाजलसी
बिलैस्वातिअैकेरै॥ ज्योबऊरिनऊलकिअकू
रलेवै॥ २॥ लोभअरुमोहमतसरजुमांमदमार
के॥ सकलअरिजीतिदुखबंघमिटावै॥ नरसी॥
आनंदपदसुमरिआवोपहर॥ जाइअपनेप्र
भुकोवैसीसनावावै॥ ३॥ ११६॥ रागसौरवि॥
मनरेहरिमारिगगहिनाई॥ तोहिकहबारबार
समऊई॥ टेक॥ मनप्रथमजहांतुराताविषेअ
मृतकरिकरिषाता॥ विषअमृतकरिकरिषा
या॥ अबतजिनजिनिपुवनराया॥ १॥ परहरिवि
भववनकीवाटा॥ लेघिजईएअघटघाटा॥
तंघियेबिनयहगतिहोवै॥ लखचौरसीफिरि
फिरिजोवै॥ २॥ हरिमारिगकीअधिकाई॥ जेव
सुपडुचेजाई॥ बुटाजामनअरुमरना॥ वि
मामकीआहरिचरना॥ ३॥ मनमजिलैरामस॥

नही॥ ज्यौं बड्डरिनधरी ए देही॥ सुषसागर में होइ
 वासा॥ जुगिजुगिजनतुरसी दासा॥ ४॥ १॥ मनरेह
 रमरिग है चैसा॥ घडाधार अग्रिऊलैसा॥ टेक
 कायरकं पै चंतिभारी॥ बलिसकै न एक लगारी॥
 कककिऊककिर देवारा॥ ड्यसुषदरियावसंज
 रा॥ जो कब हंजगबिडकावै॥ तौ जत्रमत्रमनला
 वै॥ लालचलो नन बुटै॥ तातें यकरिपकरिजमल
 है॥ १॥ माया मीवी लागै॥ तिनको कहा चलनजुआ
 गै॥ आगै बलि दे जनु सोई॥ जिनि अहंममत बुधि
 सोई॥ ३॥ जिनि छाडीत न मनकी आसा॥ धरि रदेह
 रिमो बिसवासा॥ जनतुरसी पडुचेयदमा ही॥
 जे में सलितमिधुसमांही॥ ३॥ २॥ मनरे मैतें नही
 बिसारी॥ तब लग आदितु संसारी॥ टेक॥ कहा न
 ज्यौ बड्ड मैषजुकीए॥ खोपा तिलक अरु माला॥ का
 मक्रोधलोभा दित जे बिन होइ न उर उजाला॥ १॥
 ज बलौ उर कै सुरति॥ लालो॥ का न्यो नीर जु
 न्हाये॥ मनव गोरया धान रूप लौ॥ तौ का सतसं
 गति आइ॥ २॥ तुरसी में ए रूप होइ रतौ॥ रागा॥
 दोषमलत्यागि॥ तौ सीतलसदगति सुषयावै॥
 साति होइ ड्य आगि॥ ३॥ ३॥ मनरे आव कदा
 जाइ नाइ॥ धरि होइ भजि त्रिभुवन एइ॥ टे
 क॥ जोई जोई तू देवत यह बाजी॥ नैन निरूप
 युसाला॥ सोई ड्य मूल जांनियह जीएमें वि

नाम जत गोपाला ॥१॥ बभूव क जी ए ड ह के या मा या
 कोऊ न उ ब र न पा या ॥ उ ब स्या सो ई त्रा हि त्रा हि क रि
 सर निराम की आ या ॥२॥ जि नि जि नि जि न्य रा म अ
 वि ना सी ॥ ये म प्री ति म न ला ई ॥ तुर सी पा रं ग त न ए ते
 ई ते ॥ सु य मे र हे स मा ई ॥३॥ ध ॥ म न रे ह रि न जि वि
 लं म न क र नां ॥ ज ब ल ग त न दै य ह त र नां ॥ टे क ॥ ज ब
 नु रा बु ठा यौ आ वैं ॥ त ब नां ना रोग सं ता वैं ॥ ब ल घ
 टै बू धि दो इ ना सां ॥ उ प जै ब कू ये ह र या सां ॥१॥ ज
 ब नै नौ ना र ब हा ई ॥ अ व नौ हं सु न्यौ न जा ई ॥ सु ष
 सु ध व च न न आ वैं ॥ त ब सु कृ त की यो न जा वैं ॥ २ ॥
 ज ब ध र ह कं पे का या ॥ क बू दो इ न न ज न उं पा या
 ता तै अ व चे ति अ ज्ञा नी ॥ स म का वे सं त सु जां ती ॥ ३ ॥
 तु क रि उ पा य अ ब डू हा ॥ प र ह रि दे ना ना ने हा ॥ ना
 व नि रू पि किं न ले ही ॥ ज्यौ सु फ ल हो इ ए ह हीं हा ॥ ध
 ल स डि य ल क की आ सा ॥ क रि उ ल टि अ नि अ त
 रि वा सा ॥ तुर सी नि ति र टि ह रि नां मा ॥ नि सि वा सु रि
 आ वैं जां मं ॥ ५ ॥ ५ ॥ म न रे नि य रौ सु ष व ता ऊ ॥
 वि घ न त जै तो वे गि लं घां ऊं ॥ टे क ॥ ज ब ल ग वि
 ष त जै न भा ई ॥ त ब ल ग मि त्यो न हि जा ई ॥ वि ष प र
 ह रि उ ल टि सं मा वैं ॥ तो नि ह चै स ब सु ष पा वैं ॥ १ ॥ त
 जि कां म क्रो ध कु टि ला ई ॥ न जि लै त्रि मु व न प ति रा
 ई ॥ वि न न जे ने द न ही पा वैं ॥ जो स क ल लो क फि रि
 ॥ २ ॥ ज हो रा म त हां न ही कां मां ॥ अे सा क चू

हे विश्रामां सोत्रादि जुलु मही पासा ॥ बिन भजेन
 यावैतासा ॥ ३ ॥ तू समकिस रोतरि बांनी ॥ हमक ही
 साधिप्र बांनी ॥ ये सी करती करिली जे ॥ जनतुर
 सी सुष विल सी जे ॥ ४ ॥ ६ ॥ मनरे आत मरत हो
 छर ही ए ॥ आदि अंति मध्य मनसा वाचा ॥ इहे जे
 गडुग दिए टेक ॥ नां नां क घानिग मंमंत नां नां
 त हो वहि किन वहि ए ॥ निहचौ परचौ प करि नां
 वको ॥ इर मति दीष यौ द दिए ॥ १ ॥ कोटिक ग्यां
 नंघ्यां नमत कोटिक ॥ कोटिक मारिग क दिए ॥
 षो जत बुकत सुनित सुनावत ॥ परमित पारन
 लहिए ॥ ३ ॥ के ऊना सतिके ऊ आसति भाये ॥ के
 ऊ जनमके ऊ न दिये ॥ ये से या ऊ क जो ल मां हि
 परि ॥ काहे कौ रोग बढाये ॥ ३ ॥ राग दोष विस
 राय विकल बुधि ॥ भरम लै धार बहाये ॥ जनतुर
 रसी उर में आर म करि ॥ परमातम पद ग दिए ॥
 ॥ ४ ॥ ७ ॥ मनरे सब घटिक रता क हिये ॥ के से प्र
 तीति जु ल हिए ॥ टेक ॥ जो सब ट कर ता हो ई तो
 इष पावै किन लो ई ॥ यह जनम मरन की त्रासा
 क्यो हो ई सकै पियासा ॥ १ ॥ जो क हिए सब तै ह
 रा ॥ तौ यह भी मंतन पूरा ॥ पूरा मंत जै यह हो ई
 तौ हल न चलन क्यो हो ई ॥ २ ॥ वैरा तीति निरंका
 रा ॥ सब व्यापक सब तै न्यारा ॥ जनतुर सी ये
 से जांनी ॥ सब साधक है प्रवांनी ॥ ३ ॥ ८ ॥ मन

घ

करता

टिका ज्यो

यो सब घटि परमानदाये
नाही ॥ दुष सुष जीयनुगताही ॥ १ ॥
नांदी ॥ सोई व्यापिर सासब

तिषपति तैभारा ॥ अपजै विनसे व्या

कारा ॥ २ ॥ वै जोति सरूपी पूरा ॥ सब मोहि जु सब

तै दूरा ॥ जनतुर सी उलटि पि बानौ ॥ चितचरन ॥

कवल लपटानौ ॥ ३ ॥ ॥ मनरे मतचू लैया माही

यामे सुषले सबनाही ॥ टिका ॥ यहु हित करि जि

निजिनि जोरी ॥ लैगाडी लाय करी ॥ अरबषर

बबक साथा ॥ तिगएज लावत हाथा ॥ १ ॥ जिनके

असगज बकतेरा ॥ गठ गूंडर गोव घनेरा ॥ बहूपा

यक बक त्रिय संग ॥ तेजै मडे बचौरे दगा ॥ थय

ऊना ना दुषकी रासी ॥ यामे सुषनाही ॥ अविनास

अविनासी सुषदेताही ॥ संतोषी संतनमोही ॥

तूतोरिजु ताव्याकौ ॥ सिर ज्यो गहिसरन बता

कौ ॥ अबता प्रभुकी सरनाही ॥ तेरो जनम मरन ॥

मिटि जाई ॥ ४ ॥ जहां तेज पूजयकासा ॥ सब ॥

साधू करे बिलासा ॥ तुरसी तजि आन बत्रासा

बलिकरितहां निवासा ॥ ५ ॥ १० ॥ मन विन जाय

रे भाई ॥ दिना दश ब्योपारक शिगुर ग्यान लेसा

ई ॥ टिका ॥ नरा रायन देह पूर बधुनिते पाई ॥

मजन विना पबितादिगो ॥ जब समे चलि जाई ॥
संसार सहर बजारमो ॥ तू सुलिमत जाई ॥ धकाध

कीतदांपाईए। हरिनां विसराई। १०। जाकारनि।
 बड्क करसकीये। निदिनधाई। संगिकोउनआ
 यदे। जसपकरिलेजाई। ३। समकिसौजसंवारी
 अपनीरेनपरिजाई। पत्रचौरमहाबली तोहि
 दरेहगेआई। ४। चेतनियेदरे। जागिनिसिदिन
 सोइसतजाई। यदआवसरबहस्योनही। तो
 दिकेहसमजाई। ५। ब्रह्मनामविसारके। ह
 मलदिचलेधाई। जनतुरसीबिनजारीया। जिनि
 त्रविपकुचाईया। ६। ११। हरिविनकौजीवो
 मारी। निसिवासुरिकलिनापरै। मेरोजीवतर
 सांहीटेक। बासपक्षिप्रतियालकीनो। जोति
 दरसाई। एकसेजसदाहीरदे। पियसोननवि
 सराई। १२। रादादरकमवजलचरा। जलदि।
 उपजाई। मीनपलमरिबीसरे। तोतलफिमरि
 जाई। बपुविरहैकेवसियस्यो। जैसेकावघुनघ
 श्रीइतीवेरनआइहो। तोकरकरदिजाई। ३।
 योयबिनपियरीनई। सर्वविघातनबाई। वे
 षदिकबुनआचरे। मोहिलगीबौराई। ४।
 बिकलकैवनवनफिरी। होटेरमुनिधाई। ज
 नतुरसीप्रभुमिलेहंसिकै। सकलसुषदाई।
 ५। गोबिदानिकटिठुमारोनामरो। ताकीम
 बलिहारीजावरो। टेक। ताहिबाडितहिमस्य
 इतउता। सोजंतघालीगवरो। मनसाबाचा
 लटिअभिअंतरि। रामहिरामजयावरे। १२

एवरे॥तनमेव

॥चित्तं रनौलिपटां वीरे॥शांजहाते

धुनि॥तधुनिमांजरहा वीरे॥ज

दहिमांहिसमा वेरात्र

।तोविंहागरकम एतममांहीहौ।विजनव कुंसीं।

हीहौ।टिका।आपापरडविधासबजुलाड

हीहौ।दरिसुषमांहिसचल हैवैसी।

हो॥१॥जनममरनमत्रबंधनबुटे।ब

समांहीहौ।चरनकंवलकी बायातरहरि

हीहौ॥२॥जैसैनदीयासमदि

उलटीनउलटांहीहौ।तुरसीयोहरिजनहरि

॥१॥धा।भाईरे

दिनमेला॥भिनिरहेपौनीजिमितेला।टिका।

उतरकौअनदिना।जगुदधिनकौजाइ

कस

॥१॥जनपारसजगुपांहनरूपी॥जनचंदनजगुव

हेसजगुकागकुबुधी॥दहनअंतरत्रे

।जनकंचन

मलैनमनसावाचा॥३॥जनराताअभिअंतरिधि

जनजुमिलेय

जुगजमहाधिबिकानां॥४॥१॥पीभग

रिपहेरे॥दिरणांकुसप्रदलादकीसु

।टिका।निहकारणहीकरेयां

ॐ॥ संबरता उपजाई ॥ दास निरभै क्यों डरें ॥ जाके
 जु राम सदाई ॥ १॥ साच कों कहे ऊब है ॥ इ है ॥ ऊ
 ब कों करै पोष ॥ अति अज्ञान असौ च अ समऊ ॥ अ
 होय लावै होय ॥ २॥ काब बाचार देनि कलंक ॥ होइ
 रत निरखान ॥ सो जन सिंघ संसार जु बका ॥ फर
 कइ तोय खान ॥ ३॥ जनतुर सी जगुप स्याधरती ॥
 दास अ भै आकास ॥ कोटिक लपना करि मरो ॥ लेप
 नला गै तस ॥ ४॥ १६॥ हरि विन चूले बडुत अणो
 नी ॥ अब गति गति विरला जानी ॥ टेक ॥ जोगी जंग
 म सेव संन्यासी ॥ पया यषी सौं गता ॥ निरपष होइ
 राम नही जांन्या ॥ काम क्रोध मद मांता ॥ १॥ सुषसा
 गर अ विना सी राजा ॥ नहित स्पवार नपार ॥ तासं
 रचिन सक्यान रसुं ॥ राचि विषे भया बार ॥ २॥
 तजै विकार मोह मद मेबर ॥ हरि पद दृढ करि
 सा है ॥ रहे संमां मगन के मांही ॥ आं न दिसानही
 चा है ॥ ३॥ सुगहाग है ॥ लहे सुष सोई ॥ पद मै जाइ
 संमावै ॥ जनतुर सी वौ साध सरो वनि ॥ बडु रि नब
 कुज लि आवै ॥ ४॥ १७॥ राम राइ भर मचूले सब लो
 ई ॥ तेरा जन विरला कोई ॥ टेक ॥ जल अ सनान क
 रै बडु तेरा ॥ अंतरि मै लसवाया ॥ सत गुर मिल्या
 न न्दिम लडुवा ॥ तातें कर मऊ हाथि बिकाया ॥ १॥
 पांदन पुजियु जिगु गयी नो ॥ तुरसी तोरितोरि ड
 यदीया ॥ अह पूजा हरि कूं नहि भावै ॥ जो लोचित
 निरविषै नकीया ॥ कलिका कीटक हागति जा

नै ॥ रुचि रुचिरे ॥ बनाव्या ॥ अंतरक पट द्विषे स्पे
ता ॥ रमता रामनहि गाया ॥ ३ ॥ कहै हंसक कवागा
चालौ यद अचिर न मोहि नारी मुकता थटन जि नरे
दनरक विद्या ॥ रदी रामगति न्यारी ॥ ४ ॥ तज ड रामस
दल पटाती ॥ रमता रामपि बाने ॥ सत गुर मिलै तोय
रगति पईए ॥ ओर जीय कहा जानै ॥ ५ ॥ नावपेमकी पू
जा करि ले ॥ रदे एकर समांता ॥ जनतुरसी अे माजनके
ई ॥ अविनासी रगिराता ॥ ६ ॥ १६ ॥ सरो सोई साधक
हावै ॥ निति सोई कै मनि तावै टेक ॥ ज्ञान घड गले म
न कौ मारे ॥ यां चो पिसन निवारै र ॥ सी सधि हना लरे
काल स्यो ॥ चो रे येत बुहा रै रे ॥ १ ॥ पाचा पावन देइ प्र
लन शि ॥ सन मुख दोइ सतारै ॥ गुर परसादि मै वासा
तोरै ॥ अे साकारि जसारे ॥ २ ॥ तन मन सी सखा भिको सी
ये ॥ हरि नजि जनम सुधारे ॥ जनतुरसी सोई गुर मै रा ॥
आपति रै मोहि ता रे ॥ ३ ॥ १७ ॥ जुगति विन जोग जानि
नईया अे सा ॥ सकल शास्त्र मत ब्रवांनै ॥ लौन विना
अनतै सा ॥ टेक ॥ काया कसे उपरित पकरि करि ॥ जुग
ति जु जानै नाही ॥ बावपी टेकाल रूप मदा ॥ सरं मरे ॥ प
क्यो माही ॥ १ ॥ मुखाने को रडो नाम उच्यारै ॥ मना हषे
मन ही कोइ ॥ धन विन बीज धरनि मडोरै ॥ कै से ब्रध
जु होई ॥ २ ॥ जनतुरसी यद अक अक दानी जाता
दे परे न जानी ॥ जोग जुगति प्रवनी ॥ पार न एते प्रा
॥ ३ ॥ २० ॥ बंचलचितके से दो बिपानो ॥ डरी
अिलौ दा विराधीया ॥ तऊ न रहै ऊतका नी ॥ टे

जौ नैन नि स्यौं उल टि आनी ॥ दै जु रूप स्यौं कां नौं ॥
 तौ ना सार सना प्रवृत्त न होइ ॥ अनंत ही करे पयां नौं
 ॥ १ ॥ कर म इं द्री न कौ संज सकरि ॥ ज्ञान इं द्री को ऊ
 आ नौं ॥ हठ निग्रह करि रो कि जु रायौ ॥ तऊ नर दै
 पिरां नौं ॥ २ ॥ अग्नि धूम लौं उग्यो करे उर ॥ ज्योसलि
 ता कौ पा नौं ॥ ईश्वर तैं और बडा कौ जोगी ॥ घेरत ता
 दि हि रां नौं ॥ ब्रह्मा दिक सन का दिक सुर नरा ॥ रि
 षि मु नि किते ब्रह्मा नौं ॥ रहे च पाय च प्यो न दि य ह
 चित ॥ जै सौं हो तैं सौं नौं ॥ ४ ॥ वेद पठौं अथ ब्रापठौं ॥
 सुरत ॥ अथ ब्रापठौं पुरां नौं ॥ करौं अथेन ने म स्यौं
 नि रि प्र ति ॥ चित विन मु क ति न मा नौं ॥ ५ ॥ उप जे
 ब्र ह्म विचार अ क ल म थ ॥ त व चित आ वै षां नौं
 कै बा स ना या ग स्यौं पिरि होइ ॥ कै पिरि जोगा धि
 यां नौं ॥ ६ ॥ कै पिरि होइ नि दं का म भ ग ति स्यौं ॥ ओ
 र उ पा य न आ नौं ॥ जन क र सी प द मा हि स मा वै ॥ हो
 इ प्र क ग ल तां नौं ॥ ८ ॥ २ ॥ ता व त न हि रे वै रा ग ॥ जा
 व त रा ग ब्र ह्म शेरि द तै ॥ होइ न आ व त या ग ॥ टे का उ
 परि भे य अ ले य ॥ भी त रि का म ना कौ द मा ॥ सोई दा
 ग जु ग ति म र वि न ॥ उप जे न ही अ नु रा ग ॥ १ ॥ क हा
 म यौ त न त जे मा या ॥ त टै न म न को ता ग ॥ जा ग त सौं
 व त त हां ही कौं ॥ संच रे य ल का ग ॥ २ ॥ को म को ध लो
 मन बु टा ॥ मि ट्यौं न मो ह वि ना ग ॥ त्रि श्रां त रं ग न
 बिलानी ॥ पं नै न म न सा वा ग ॥ ३ ॥ नि र म ल हो दि
 वा स ना म न की ॥ सं म म स क सं म ना ग ॥ इ हें वै रा ग

उदित होइ उर, का सीतव बडनागः॥४॥ २२॥ राम
यमनसादा धिन आवे॥ तातें जनमि जनमि ड्यपाटे
॥६॥ आसन बां निडा साधे॥ उलटा पवन चढावे,
मनमन सादो उधिरि नोही॥ हण रोग उवावे॥ १॥ केई
मौनी केई म, धुग बोले केई कथे आशा॥ जपरि
जलमां हिका लिमा थायान हितत सारा २ मनसा
फेरि प्रपती आने॥ त्यागो बिषे बिलारा॥ जनतुर सीक
दे सब आसा बाहे॥ तोसत गुरू दमारा॥ ३॥ २३॥ राम
राइ करनी कदा बिचारी॥ जब लगन दी कृपा जु तु म्हारी
॥६॥ ज्यो किरि सी बड किरि थिक मांवे॥ सातों तर निपा
वे॥ जौ घनवर येन हिय म गिकरि॥ तौ क बुदा धिन आ
वे॥ ॥ जीवक माई करे को टिएका॥ तऊ सरै क बुनांही॥
दया मया करित गपा वधारे॥ तब ही सकल विधि मांही
॥१॥ जापरि कृपा कर हतु म माधो॥ सोई सुहाग निना
री॥ श्रीर उपाय करे बडु तेरा॥ गति न हिल ये तु म्हारी॥ २॥
दास भावतुर सी यो जाये॥ कहै सरो तरि माची॥ जौ
॥३॥ अब गतिकी गतिको पावे हो॥ श्रीर बात सब काची॥ ४॥
दिक स्वरनरा॥ केसे हपारन पावे हो॥ श्रीर देव ह्सा
री उर बाऊ जाको॥ पारब कदिको धावे॥ थकिर देस
रत पुरांन सकल ही॥ निगमने तिक दिगावे हो॥ १॥
पति अथा हग हरो॥ विविर्जित॥ अकल कल्पौ न ही जा
ही॥ अति अगहन अति ही गतिकी नो॥ निरनामी क
हावे हो॥ १॥ ब्रज्यो का हिक हूमे कायों॥ यह संका

सद्वृज रावे हो ॥ गावन गंध नावन ही जाके ॥ ताहि
के सें को सुमि रावे हो ॥ ३ ॥ ए सुप्रक भएता मां ही
जुं द शि या बंद संमा वे हो ॥ मनि संदेह बूजौ मै को
सनि ॥ को उ उ ल टा फि रि न दि या वे हो ॥ ४ ॥ आपा मे
टि हो इ उ र अ स धि रि ॥ नि ज प्र द नि ति नि र ता वे
हो ॥ सो र च क सु ख ल हे तो ल हे भ ल ॥ ओ र दे रां न
दि रा वे हो ॥ ५ ॥ जन तु र सी य हे अ क थ क था हे
को उ बि र ला ज न पा वे हो ॥ स त गुर कृ पा पू र न न
ई जा परि ता के य ह सु ख आ वे हो ॥ ६ ॥ २५ ॥ रा म र
इ कर ह स हा इ हं मारी तु म दी न द या ल मु रा री टे
क ॥ बै री सं गि स दा मो हि पि र वै ॥ क हो क हा ब ल
मे रा ॥ तु म द या ल सि र उ प रि स्वा मी ॥ क र कु स हा
सं वे रा ॥ १ ॥ मै अ ना थ क थि का दि षु का रो ॥ ह त स
ब ल घ ट मां ही ॥ म र द हि मो हि क रे अ प नै व सि ॥ क
म बि न बू टै नां दी ॥ २ ॥ पां च प ची स मो ह सं च र ॥ मो हि
तु सं ता वै ता री ॥ अ नं त न ही बू टै सी ज न ॥ आ सा ए व
तु कं मं हा री ॥ ३ ॥ २६ ॥ रा म रा य मे ष अ ने क ब ना या
तु म सा सा दि व क हं न पा या ॥ टे क ॥ मा या के म दि
ह म न मां तो ॥ इ वि धा ब डु त उ वा ई ॥ नि रा का र वि
र ले प नि रं ज न ॥ म जे न ही र घु रा ई ॥ १ ॥ य ह म न
अ प रा धी का मी ॥ चै ते न ही ग वा रा ॥ रा म श्रु ति क
ह न हि आ ने ॥ ओ रे क रे प सा रा ॥ २ ॥ तु रे म दि
को न उ वा रे ज न को ॥ तु म मे रे घां न अ धा रा ॥ त
सी दा स क है ज न ते रा ॥ मे टो स क ल वि का रा ॥ ३ ॥

॥२०॥ कौंकुप्रीतमत्रानिमिलावैहौ ॥ व्यासल
वात्रगलौ सजनी ॥ इजाकबुनसुहावैहौ ॥ टेव
सेजसिंगारभएपावकसमि ॥ बिनबिनविरहज
रावैहौ ॥ त्रैसोयौहब्योहारदमारौ ॥ कोईदरिजी
कूंजाइसुनावैहौ ॥ १ ॥ सोईसाधसोईउपगारी ॥
यहउरसालमिटावैहौ ॥ स्वांतिबूंदलौसीचिसंने
ही ॥ अबसोहिमरतजीवावैहौ ॥ २ ॥ कहाकहंक
रणामेंस्वामी ॥ अबकबुकदैननआवैहौ ॥ जन
तुरसीविरहनिव्याकलता ॥ बिनदरसनुइय
यावैहौ ॥ ३ ॥ २६ ॥ धनिधनिगुरदेवहंमाराहौ ॥
जिनिकृपाकरिकाटिलीयौहं ॥ बूडतयहसंसा
राहो ॥ टेका ॥ अनेकजनमकीअरजिनिवारी ॥ सब
ददीयाततसाराहौ ॥ नावजिहाजचढायजुग ॥
तिस्यो ॥ खेयउतारेपाराहौ ॥ १ ॥ गुपतवस्तुघगट
दिषलाई ॥ घगटकीयापरहाराहौ ॥ अबतनमन
फेरिभएजुपावनापरसिपरसिपीवप्याराहौ ॥
१ ॥ अबिचलबरकीबांहगहाईदेकैबकबि
धिभाराहौ ॥ जनतुरसीपूरनसुषयायो ॥ सतगु
रकैउपगाराहौ ॥ ३ ॥ २६ ॥ धनिधनिपीवकीर
जधांनीहौ ॥ सुरनरमुनिजाकैउलिगाना ॥ इंड
धुरैनीसांनीहौ ॥ टेका ॥ अबनीआपजमायजु
तिस्पू ॥ मारतमांऊसंमानीहौ ॥ अबरअधर
स्योबितषनै ॥ चंदसूरअगिवांनीहौ ॥ १ ॥ बसा
कलालकमेरभंडारी ॥ चित्रगुपतलिषंदांनी

हो॥ धर्म गय जाके कुटवाला॥ बयनको डि नरै पानी
हो॥ २॥ से सम हं समुधि की रति गां वै॥ नारद से रि
षि ज्ञानी हो॥ मन का दिक जाके ब्रह्म चारी॥ से क
र से मुनि ध्यानी हो॥ ३॥ सब देवन में देव गु सां ई
सब के अंतर जां मी हो॥ अरध अरध म धि तु म ही
व्यां का ती निलोक सिरि नामी हो॥ ४॥ जैसे नदी यां
स म दि सं मानी॥ ब हरि न उ लं घे पानी हो॥ जन तु
रथी मिलि र दे पर स पर॥ सब दर दे सह नानी हो
५॥ ३०॥ ३॥ से सो वो द घर दे रे॥ ज हां ज म दू त न।
को नै क ह न ड र दे रे॥ टे क॥ ज हां अ न द द ब जै वा
जे॥ अ षं ड आ वें जां म॥ वि न ही दी प क त हं जो ति
च मं कै॥ आ त्मा वि प्राम॥ ॥ ज हां अ न त धा रा हो
इ ब रि या॥ सु धा प्र वै सो इ॥ आ दि अं ति म धि नि ज
ज न॥ र दे ति हि सु ष भो इ॥ २॥ त हां चं द सू र को।
ना हि नै अ ल प आ ना स॥ त हां उ दि ति जो हो इ र।
हो म हा ते ज पुं ज प्र का स॥ ३॥ स त गुर कृ पा।
हो इ जा प रि॥ न ए सं त स हा इ॥ ल र सी ते न ल गे
ता च रि॥ ओ र ना हि नै उ पा इ॥ ४॥ २॥ ॥ ३॥ से उ न
घ रि गे वै सं त॥ आ पा मै आ पा ग लि त क रि॥ प व
रि उ र कं त टे क॥ का म नू ले क्रो ध नू ले॥ लो न हं
या पु वा इ॥ मो द की सं न्यां सं म द ति रि॥ प द प हं
जा इ॥ १॥ ज हां बा द न म म त न म ल॥ म न सा न उ प जे
को इ॥ ३॥ से सु ष सं मा धि घ र मे॥ र दे धि रि हो इ
सो इ॥ २॥ प च त त कै प रै व द घ र॥ त्रि गु न र ह त स

॥जनममरुतजुडुषतहां॥स्वपनहंनहिदरसांन
 ॥ज्यौसलिलसिंधेमिलै॥श्रीसैभयाउनमांन।।रुस
 फुनिबिबुरैनही॥होइरहैबहुसमान॥ध॥३२॥
 बाजीज्ञानविसरजनकैहै॥तबगोविंदनलपैहै॥
 टेकाउरैकहैसोनांही॥याकथनीबदनीमांही॥ती
 रथवरतकीआसा॥करिकरिगएबहुतनिरासा
 ॥१॥जावतसुषकीआसा॥बूटतनहीयहअध्या
 सा॥इषकुतावतहोइ।।सबसंतकहैदोसोइ।।२॥
 एउमैकसकउरआंही॥कसक्योकरैमांहीमांही॥
 कावतचैनजुनांही॥बसतीबसोमलवनमांही॥३
 जबविसरैबाजीज्ञाना॥कबुनरहैनसुधिसहन
 ना।।रुसीश्रीसाहोइआवै॥तबकहैआत्मसुष
 पावै॥४॥३३॥लोभकोषुत्रदंभहैरे॥याआस्वर
 संपदामांही॥बडोषंभहैरे।।टेका।।इसकलयह
 जगतबाह्यै॥नांनान्नातिउपाइ॥षटदरसनहैब
 हाइ॥गएभरमविकाइ॥१॥सोकारिजंकारणमि
 टेबिन॥मिटतनाहिनबीर॥याकोअरथइतोही
 जानै॥औरसबकथाबहीर॥२॥प्रथमसंगहि
 लोभत्यागो।।देकुनिपटनिपटजुनांषि॥तौघुलै।
 निहचैजुनिजवै॥ज्ञानवरकीआधि॥३॥पांचअ
 रूतीनोंअष्टए॥अविद्यापरवार॥यहअपरवै
 परप्रभु॥नीकैजुलेकुनिरवारि॥४॥ज्ञानवर
 वैरागसंडगगदि॥करकुनिपटनिरहर॥तौत
 रसीआत्मवकासो॥मान्कोटिउदैभएहर॥५॥

॥३॥ जौ तुम सब का कुकी सहि हो ॥ तौ तुम ब्रह्म
 रथे हो ॥ टेक ॥ जिहि घरिनाम कबीराप ऊचेतनम
 न करि थीरा ॥ अतिही सुखिम होई ॥ जाइ मिले ब्रह्म
 कौ सोई ॥ १ ॥ जिहि घरि गोरखगंणी ॥ दत्त देवदि
 गबर ध्यानी ॥ त्यागि त्रिगुणी माया ॥ अपनै सुध
 स रूप समाया ॥ २ ॥ सुकाहि संत बकुतेरे ॥ आ
 इ दीये अगाऊ डेरे ॥ मिलिरहे महापदमांही ॥
 बिबरे हंन ही बिबुराइ ॥ ३ ॥ वा घर है प्रबस्यो
 न्यारा ॥ गरिगप किते अदंकारा ॥ मन इंद्रि सदित
 बरतांही ॥ कोऊपकुं च्यादे ध्यानाही ॥ ४ ॥ त्यागि
 है कोध अरु काम निहं काम होइ नजिराम ॥ स
 बकी सहवुरी भलाई ॥ निरदोष क्वारही भाई ॥
 ॥ ५ ॥ तुलिनिदां अस्तुति जांनो ॥ दुष सुष कसक
 नकोऊ मानो ॥ कंचन मृत्यगापघांनो ॥ सब स्पृह
 वारही समानां ॥ ६ ॥ वा घरकी महसदनानी ॥ हं
 मकही तौहि जगति बघांनी ॥ तुरसी अतितहीइ
 नाही ॥ मिलिरहो परम पदमांही ॥ ७ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ५१ ॥
 रागधना श्री ॥ रामजी कहास सौहमस्य ॥ जनम
 अमोलिक पाइरे निसिदिन ॥ रात्रि रह्यो बिषस्यो
 टेक ॥ कामी ऊटिल कल्पतदिन बीते ॥ परनदा
 करते ॥ ज्ञान ध्यान की बवरिन जानी ॥ विमुष
 भयो तुमतै ॥ १ ॥ पांचौ इंद्रि नकै मदिमातौ ॥ लीन
 नयो नतु मस्यो ॥ मन मन सागहि निमग्रमरे ॥ स
 नमुषन नयातु मस्यो ॥ २ ॥ जाकरनी हंसादिक

सुरतिलगैतुमस्यौ ॥ सोकरनीहमकबुनकीनी
 १मस्यौ ॥ ३ ॥ लमपावतमैपतितबूडतनूव
 काहिलेककरस्यौ ॥ जनतुरसीकैआसतुसारी ॥ क
 जनकौपरस्यौ ॥ ४ ॥ १ ॥ कैसैकरूकसारीसेवा ॥ तु
 मनिरगुनहरिअलषअनेवा ॥ टेका ॥ ज्ञानध्यानमेंक
 बुनजानौ ॥ अगमअगाधकैसैजुबयेनौ ॥ १ ॥ तुम
 अपारपरमितनहीकोई ॥ धकितनपसुरनरमुनि
 जोई ॥ २ ॥ तुमरेरंगरूपनदिकाया ॥ काकदिवरनौ
 होहरियाया ॥ ३ ॥ तुरसीदासजनसरनितुसारी ॥ सेव
 नजानौहोदेवसुरारी ॥ ४ ॥ २ ॥ माधोजीहमअपराध
 मेरे ॥ जनमपायसुकितनदिकीना ॥ इकतबकृतक
 री ॥ टेका ॥ जेतेपापकृतेसुबकपरा ॥ तेहमसकलक
 रे ॥ जाकरनीनवसागरतिरिए ॥ सोचितवैबिसरे ॥ १ ॥
 कामक्रोधअरुलोभमोहसबा ॥ अगुनअनतकरै ॥
 पावननामलस्यारो ॥ जिकौ ॥ पापघुनिसुमिरे ॥ २ ॥ सो
 साईफिरिलेधामाग्या ॥ तीजीवनरकिपरै ॥ दयाम
 याकरिसबफिलकीये ॥ तौतुरसीउबरे ॥ ३ ॥ ३ ॥ माधो
 जीकरमाकरियोजीवा ॥ नावनजानौतेरौ ॥ कामक्रोधलो
 भमोह ॥ इनिमोहोमनमेरौ ॥ टेका ॥ नखसषमेंअपरा
 धमैमन ॥ हलिरहोगदा ॥ हिरदेनिजरूपसाई ॥
 सोईतजिनयाअंधा ॥ १ ॥ विषयाकैरगिरतौ ॥ राम
 नामनजानौ ॥ असीमेरीमंदमति ॥ तुमसौनहीबानौ
 ॥ २ ॥ जनतुरसीअपराधीजीवा ॥ कहुनदिविरियाई ॥
 नाहिनाहिसादिवमेरा ॥ अबराघोसइरनाई ॥ ३ ॥ ४ ॥

माधो जी हो हृदयाल मेटि माल ॥ अब कै मो दिउ ॥
 वारौ ॥ काम को धविषे विकार ॥ सकल हरिनि
 वारौ ॥ टेक ॥ करूं सहाइ वेगि आइ ॥ मेठ हंडुष
 छांमी ॥ अब की बेर पार उतारि ॥ तुम हो अंतर जो
 मी ॥ १ ॥ जनम ते यधरे ॥ अनेक ॥ क कुं न ही सच पा
 या ॥ अब कै जीव चरन सरन ॥ राघोर घुराया ॥ शत
 मदी नदयाल करे निहाल ॥ कोटे दुष मेरा जन
 दर सी दास करे कुलास ॥ दर सदे कुतेरा ॥ ३ ॥ ५ ॥
 नाथ जी अब कै हो हृदयाल ॥ आयो सरनि धरनि
 गुन व्यापै ॥ कूबू टै उर साल ॥ टेक ॥ पांच चोर सं
 गिर है सदा ही ॥ श्री गुन कर दि अपारा ॥ तुम
 म अट को तो बड रि न व्यापै ॥ सारा न दि हं मा
 रा ॥ ५ ॥ तुम दी नदयाल परम सुष दाता ॥ यह ड
 ष हरिनि वारौ ॥ नव सागर में बूडत है जीव ॥ कर
 ग हियार उतारौ ॥ २ ॥ जोगी जती तपी संन्यासी ॥ कि
 न हं मर मन पाया ॥ ऐसी माया बाघ नीतरी ॥ ति
 निचु निचुनि सब जुग याया ॥ ३ ॥ करम व्याधि
 लागी करणामै ॥ जीव दुषी अति भारी ॥ जन दर
 सी कै आस तुमारी ॥ मेठ कु विपति हं मारी ॥ ४ ॥
 ६ ॥ सो सुष दे कु जगत गुर मोही ॥ जो सुष सं स
 व ही दुष नायै ॥ आइ मिलै प्रभु तोही ॥ टेक ॥ जा सुष
 सुत्र मा दि कबु टै ॥ करम न व्यापै को ई ॥ तन मन आ
 तमां मां हिराम जी ॥ अति गति आनंद हो ई ॥ १ ॥ जा
 सुष सं जम जु रान ग्रासे ॥ दुष सुष नासै दो ई ॥ स

तरजतंमतीत्यौगुनआगौ॥आत्मत्रस्थिरदोर्शा॥जा
 सुषस्योसबहीनररदिके॥पारपकुंतेसोशासोसुषम
 गतदेजनरसी॥देऊकृपावंतहोर्शा॥७॥रसनार
 मनामजपिलीजै॥सोचिबिचारिदेधिमैरेजीएरा॥ब
 ऊबकवादनकीजै॥टेक॥कूवातनकीकहाबडाई
 पलएकमांदिजरिबीजै॥तातैसावधानहोइप्रांनी
 रटनरामकौकीजै॥१॥गुरपसादसाधकीसंगति॥द
 रिहितलागाजीजै॥मनेयादेहभागबडपाई॥हरिन
 जिविलंबनकीजै॥जनरसीआरतिस्योनिमिदिन
 रामरसायनपीजै॥३॥धीभगतिबिनजनमसिराने
 जाइ॥रंमनामकीषबरीनजानी॥तोकहाकीयोजगु
 आइ॥टेक॥वारवारतोहिकहिसमजाउ॥यहत्र
 वसरचलिजाइ॥समकिनसरनगादिगोबिंदकी॥बि
 थमैहिरदोमुलाइ॥५॥जोबिनजायसुबहूरिनअ
 वै॥तौहिकहंसतिनाइ॥आवघटेतनबीजैदिनदि
 दिना॥पलमैजाइबिलाइ॥शोरमूढनरचेतिअग्यांनो
 साधकहैसमजाइ॥जनरसीकरिएहरिसेवातन
 मनप्रीतिलगाइ॥३॥ए॥प्रीतिबिनापीवकिंनहू॥
 नपाए॥उतरदधिनपूरबपछिमके॥सबमंतबूकि
 बूफाए॥टेक॥केउजटाभगवेकरिवसतरातीरथ
 कौउविधाए॥बिनाभजनबिसवासबादिरे॥फिरि
 फिरिप्रांनपिराण॥१॥कोऊजाइपुशियनेमैवैसे॥ब
 हंतकेकष्टउपाए॥पावकमाहीउरधपाइकरि॥ले
 लेसीसऊलाइ॥१॥केऊलुंचितमुडितफुनिकेऊ

केऊनिकंदयनिषाए॥केऊजाइगुफावनवैसे॥
 येथीतिबिनापबिताए॥३॥थीतिबिनासबहीम
 तकात्रे॥वेदपुरांननगारे॥तुरसीथीतिकरीजि
 निपीवस्यतेपीवमाहिसंभाए॥४॥१०॥रोमबिन
 रुदसकलकरिजांनि॥सुतकदोइमजोअबि
 नासी॥त्रैसोज्ञानपिबांनि॥देक॥चौदलोकसमा
 नएकहमा॥त्रैसीमहगीजांनि॥सोकितबादिराम
 बिनसोवै॥सायिसबदपरवांनि॥१॥स्वामैस्वा
 सिसुमरिजगजीवनि॥अबजिनकरहुजुधीर
 आवैकालकरैअपनेबसि॥ज्योमखाकौकीर॥२
 तनमनपदंनअशोलिकतीनौ॥सिरजनकोदेंवी
 र॥तौबुटेनमआवाजांती॥मिलेसिधनंदिनीर
 ॥३॥त्रैसीकरनीकरैजुजोगी॥भगतसोइतलजा
 नि॥तुरसीदासकहैसतिवांनि॥कालकरैनही
 हानि॥४॥१॥धरीरहेगीयहदेह॥तातैभजिभग
 वतमुगधा॥त्यागियाकौनेह॥टेक॥पाइहैबड
 भागते॥धमिकैजुगव्यास्योयांनि॥सोवृषामता
 हिजुषोवै॥कसौहंमारोमांनि॥१॥अतितीव्रहो
 इसुमरिआपनो॥सुषसिधरामअदेह॥दिह
 कीआसकतितजि॥सुधरुपसबकोयह॥२॥
 हंसवीरवनीरलौ॥नीकैजुलैनिरवारि॥यहवदे
 हदेहीवयह॥त्रैसोजुज्ञानबिचारि॥३॥जनतुर
 सीकहैसमकिरेनर॥निरतिगहिउलटाआव॥
 सुतिअहोनिमचित्यमाधो॥काकरिहोविरमावे

च

।ध॥ ॥ १२॥ भगमुषगवनकरैजनकोईदाकेसहीपा
 पावकमै॥ जलिवलि कौलाहोई।टेक॥ छत्रपतिर
 रांजारनां।मीरमूलकसुलतांना।तेसबजरेबिषै
 वकमै॥हीतेत्रतरसुजांना॥१॥कितेमुएमीरंद्गकेते
 सकांमनिस्पूलागि।जेजनजांनिजुगतिसेत्यागों॥
 केमोटेभाग॥२॥चेतनहोइभजौअबिनाइ॥त
 संग॥तुरसीदोसघानहोइअस्थिर
 कालकरैनहीभंग॥३॥१३॥वाघनिमारीयोरेसाधी
 सबजुगधाइ॥कोऊकोऊजनउबस्था॥ज्याहसुमि
 घुराघाटेकानेनबैनकरिमोहेंघांनी॥नानाने
 नाइ॥सरपनिसिंघारैसकलाआपनमारैघाइ
 ॥षटदरसनकैसंगिभई॥करिअनहीकारंगाभागी
 ही॥मारिकीएसंतषंडा॥२॥पंडितगुनीस्वर
 बिंता॥सुरनरमुनीजनपीरा॥सकलबिनासेबा
 घनी॥कांमक्रोधकैतीरा॥३॥आदिअंतिअबगति
 राधा॥परहरिपांचपचीसा॥कदितुरसीतेउबरे
 धूबिसवाबीसा॥४॥१४॥लेनसकैकोऊनामतु
 रा॥अरकिरदेसबमायामोहमै॥परहरियाप
 तिज्ञानविचारटेका॥मीवेलागैस्वादबादरसास्वा
 सेतीअधिकपियारा॥परमारथनावैनहीपल
 भशा॥बिषैमैंगलितभएजुगंदार॥१॥सुतदारा
 नदेखिनुलोने॥लालबलोतरदेउरधारिपा
 डऊवदेनस्योराचे॥लीनभएजीवबिषैबि
 ॥जेसबतजिकरिभएबैरागी॥तिनहूंअह

वही अधिकार ॥ ३ ॥ मैं तैं मानि मनी सब सारो ॥ बा
दिये सब जगु बोहार ॥ जनतुरसी सोई सुमिरे हा
रि को ॥ जो सिर हू कौ धरे गतारि ॥ ४ ॥ १५ ॥ राम दया
न हैरे जीवन जाने गंद ॥ बरम द्विष्टसु जैन ही ॥ ब्या
ह्यो लोचन अंधा टेका ॥ जैसे घ गट जान नु वरु परि
दह दिस करै प्रकाश ॥ कल कौ सु जैन ही ॥ तो दोस
किसा कौ हताश ॥ १ ॥ चारि मां सरन बन कौ पोषे ॥
हरी दोह बन राइ ॥ जवा सो विरधे नही ॥ बरस तैं कु
मिलाइ ॥ ३ ॥ आप सरीया करै सबन कूं ॥ बांस निदे
वन मां हि ॥ पापी वासन मैई ॥ तो चंदन दूसन ना
हि ॥ ३ ॥ कहि तुरसी सब ऊपरि स्वांमी ॥ मेहर वां नु
र घु राइ ॥ विमुष जीव जाने नही ॥ विषम हिर दू
मुलाइ ॥ ४ ॥ १६ ॥ का करै राम कौ हो ॥ कोमी कटिल
कुजांन ॥ काम निही चित प्रो करै ॥ उर धरि धरि अ
ज्ञान ॥ टेक ॥ सत गुर प्रुम चिंता मणि दीनी ॥ सो
कार कब हू जलै ॥ कै करै कोडी का च संभुले ॥ तहां
तहां चित देइ ॥ १ ॥ मुष सागर कौ परदरे ॥ ज्यो मा
डक मटी मये ॥ पस्यो कंवल कै नारि ॥ २ ॥ घात पीत
जागत अरु सो वत ॥ उर मै ई है जु ध्यान ॥ कै काम
निकै कामनी ॥ और न दू जौ न्यान ॥ ३ ॥ त्रिगुन अ
तीतराम अने स्पू ॥ सन मुष कब हूं न होइ ॥ ज
नतुरसी रचि कै र ह्यो ॥ बाजी ही मै सोइ ॥ ४ ॥ १७ ॥
कोधी बापु राहो ॥ हैर सा तातै त वास माने ॥ वू
दूकै हं निदे नही ॥ सीतल गुर कौ ग्यान ॥ टेक ॥

क्रूरद्विष्टिकुटीषुंतिट्टी॥रहेरहेअंगअंग॥बिन
 गिजसौकरै॥रातिदिवसएकतान॥बिनै॥परनि
 परधनपरत्रियरत॥परउदोअसहनअगपाना॥पर
 बिदुहीतकीकरै॥दोषनदीकोध्यान॥शुभपदेसीए
 अनकूलआपको॥आतमधरमसमाना॥तऊअबिद्या
 पाइको॥मृदिरदेसबकांन॥शाचिंतामनिलेकाकरै॥
 काचहीस्योपदिचानि॥जनतुरसीयालीचल्या॥बिन
 जननगवांन॥ध॥१८॥तामसत्यागिरे॥तामसदेअ
 ज्ञानकोमूर॥महाज्ञेइषकोजुदाता॥करैजुहुतिति
 मूर॥टिका॥जतमजनमकीइरीमलितता॥वासता
 इजगाडी॥कामकोधलोत्तप्राइउरा॥नरकमुर
 शा॥दीरघसूत्राइराचारी॥असोचअनम
 अदीता॥जीवैजडमारगपरेरे॥चेतनताकरिचीन
 ॥१॥आतमकोआबांदई॥ज्योघंटाआबांदेना
 नाआलसनिद्रादिलिंगउदैकरि॥जीवहिकरेअस
 वधाना॥३॥जनतुरसीयहतामसीबिधि॥बरनीवे
 नमादि॥जहांयहतहांस्वप्नह॥सुषसंजुनेटा
 हि॥४॥१॥देबुधिबावरीमतचूलेगोबिंदाअ
 बगतिसुमरिसुमरिअवगतिको॥केतादोइअंग
 टिका॥भागिबडेमनिआतनपायो॥पूरबलेप्रस
 ॥तातैरामसुमरिलेलाह॥सतरंगमात्रैवादि
 ॥१॥जबलगजुरारोगनदीआवै॥कालनकरैबि
 ना॥तबलगसावधानहोइसुमिरो॥होइ
 रतरिबासा॥बारंबारतोहिकहिसमजाउं

यह अत्र सरफि रिमांदि ॥ जनतुरसी हरिकौ नजौं
 आरति स्यौं घट मांदि ॥ ३ ॥ २० ॥ नजौं रे अपनौ के व
 लरंम ॥ कहा लोक स्युं काम ॥ यह म हा दुय कौ धां
 म ॥ टेका ॥ लोकारे जन बुरौ अति तही ॥ नायै वेद पु
 रंन ॥ जती सती मो हारै धी निकौं ॥ उय जावन अ
 ग्यंन ॥ १ ॥ त्यागौ मो ह द्रोह पुनि त्यागौ ॥ त्यौं गौ कन
 क अरु लोह ॥ राग दोष सेव जग कौ त्यागौ ॥ ज्यौं
 मिटि जाइ सकल अंदोह ॥ २ ॥ कहा लोक के निदे वि
 दे ॥ कहा कीये मान श्री मान ॥ राम भगति स्यौं बिमु
 प्रजु होइ बौ ॥ इहे जु मांठी दांन ॥ ३ ॥ रंजन या वा
 उनै लोक कौ ॥ बिय लौं धरौ बिसारि ॥ जनतुर
 सी मन क्रम नजौ निरंजन ॥ इहे मो हि कौ हार
 ॥ ४ ॥ २१ ॥ बलौ जीव मां हरा चलि रे जां हिं अपने देस
 तहा सुष हि सुय आदि अति मधि ॥ नहि दुष कौ अ
 हले सा टेका ॥ जागी होइ तै फेरी दीनी ॥ आरि दिसा व
 रिमांदि ॥ लष चौ रसी कै फिस्यौ ॥ कह सच पायौ ना
 दि ॥ १ ॥ कहं चतुर पद कहइ इपदा एक पद ॥ कहइ व
 कप दतन पाइ ॥ ब्रह्म बिबौ है तैय दइ इष भुगतौ
 धरि धरि नाना काइ ॥ २ ॥ अज हे सम कि सा वधान हो
 का जगु कौ मो दमि टाइ ॥ अनल सुतन लौं उलटि ग
 गन घर ॥ रहि एवा सुय संमां ॥ ३ ॥ या ऊवे अंज
 मांदि निरंजन ॥ का करि र हौ अं ज्ञान ॥ अपनौं सु
 इ स रूप क्यौं न संभारै ॥ निगव रौ निरवान ॥ ४ ॥
 होइ स जांती मिलौ ब्रह्म सौं ॥ विजाती मलषो ॥ ५ ॥ ज

में

उ

मरु सी जु घे सी ही इर है ॥ ज्यों बहोरि बिबोहन होइ ॥
॥ ५ ॥ २२ ॥ काया काय ररो ताके नरसिन नू लोको प्रः न
मिले ते बहि परो पारन लागे सो डाटे का न व सागर ॥
मां ही पचे ॥ करि करि दे ही रगा ते बिषया ऊ लमें नये जे
जोति पतंग ॥ १ ॥ पंडित गुनी सूरक बिदाता ॥ सां वत
चटफु जाया दे ही सुषदरी या मां ही ॥ बूडे छिं बि
बिचारा ॥ अंतकाल थिरिनार है ॥ देखौ कि न नि
ताइ ॥ बिधाकि रमन सम होइ प्रांनी ॥ माठी मै मि
जाइ ॥ शिं बिन संग हबिन हिमें बिनसे ॥ बिन
जाइ बिलाया ॥ अत्रे साबिन कय दूँ न निको ॥ लमक
कौरहे नू लाइ ॥ ४ ॥ अनहित होइत जो संग याको
नजहं ज्ञात माग मा ॥ जनतुर सी कहै ॥ श्री सी करौं तो
सिधि होइ सब काम ॥ ५ ॥ २३ ॥ क हा कौ ऊ जा
पीरप राई ॥ जाके लपो ब्रह्म कौ नालो ॥ सो सुस
मा डाटे का ॥ हरि बिबुरे दम स्यो सुनि सजनी
करवत बहि बहि जाहि ॥ देखे को उपगारी श्री सो बहुरि
इदिष राइ ॥ १ ॥ दिव सजाइ मोहि हरि मग जो वता ॥ नि
सतल फते बिहाइ ॥ पीवपर दे सडल नम्यो दरसन
बिरह बिघातन बांइ ॥ २ ॥ बिन दीदार डुषित नई अ
गति ॥ बिन बिन अत्रे धिसि राइ ॥ तुरसी बिरहनि
बसच पावै ॥ मिलहि परम सुष दई ॥ ३ ॥ २४ ॥ कहै
जे कौन बिचारा ॥ तव जल अगम पारत सना
॥ क्यौं उतरि वी पा राटे का ॥ तामें मंबकाल साकेत
प्रांतरेग अपारातर से जीव अधिक नै मां नौरहे

वीचिबहूहाशि॥१॥ लखचौरासीजीवजंतकौ॥ मोहि
 अंदेसोनांदि॥ स्वरनरमुनीजनपीरअवलीया॥ थ
 कितभएतामांदि॥ २॥ गहौषंबेकमिलौकेवटकौ॥
 ३॥ अबजिनकरकुधीर॥ भावतगतिनौकाचटि
 घांनी॥ इसकेंलेविधितरोतीर॥ ३॥ उतरेयारतिनौ
 सचयाया॥ सकलभरमभवभागा॥ तुरसीदासन
 एजनसदगति॥ जहांकांतहांजाइलागा॥ ध॥ २५
 अबमैआयोसरनितुसारी॥ भाजनकीमोहिरा॥
 मडहाई॥ मडीयोचरनसुरारी॥ टेक॥ यदसंसार
 ऊहमदेष्पा॥ तामैसचनहीकाई॥ रामभजनवि
 चित्रंतरयारैविषमैदेइनुलाई॥ १॥ भ्रमकर
 मकामतादिदावै॥ भरमावैअतिभारी॥ नावबु
 डाइनकंमैबोवै॥ अंसैजीवविकारी॥ २॥ ऊवीमा
 याऊवीकाया॥ ऊवापरपंचपसारा॥ जमकीत्रा
 सअधिकतामांही॥ तातेंकीयायहारा॥ ३॥ वो
 बीआवअल्पजीवनघनु॥ बिनसतनांदि
 नवारा॥ जनतुरसीसरनाईआयो॥ देऊदेऊ
 दीदारा॥ ध॥ २६॥ हीनताहरिकरऊजीवकेरी॥
 मरहोइसुमिरोसाईकौ॥ मनमनसाख्येघेरीटे
 क॥ कायरऊवांकाजकौनांही॥ हंजकहतहंटेरी
 पांचौंजीतिप्रीतिगदिघनुकी॥ कौरतिरहसंवेरी
 १॥ तनमनसीसत्रौंपिसघांनी॥ हरिमारिगल्यौ
 देरी॥ जनतुरसीकहैबिलसौसुषजुगजुरा॥ बुटि
 जाइजमफेरी॥ २॥ २०॥ अंसैमनराषोतनहीव्यं॥

मंही निमयन न्यारा होइ ना वस्यो ॥ राखिर देनि जवां दी
टेका ॥ जो मागै सोपनै हि आयो ॥ अनमो ग्पा कबु दीन
जहां जाइत हां जॉन न देखं ॥ फिरि करो अधीन ॥ १ ॥ उ
तर दिन दी उदिस परहरि ॥ यच्चिम रायो चूरि ॥ असु
रमारि सुरफेरि बसांऊ ॥ रामर मो नर पूरा ॥ शयांच
पची सौं पगत लचूरो ॥ मन सा लेउ ऊप राई ॥ जनतुर
सी आनंदन जि कौ ॥ पदमै र हो संमाई ॥ २ ॥ १२ ॥ धि
राखिर रे नर तो हिका कहं ॥ निरमल ना व बिसास्यो
रि ॥ नि सदिन बिययं नमैं फिस्यो ॥ नैक नमं नी हारी
रोटे कारत न जनम पायो ॥ कुतौ ॥ कोऊ पूर बलेना
गरो ॥ सोतै यो या का च गहि ॥ कनक कामनी लागे
रे ॥ ॥ वेदनि हूं संमऊ ईयो ॥ फुनिसमऊ वें साधो
रे ॥ सोतै कबु जां न्यो नही ॥ घाटे बहं अपराधो रे ॥
॥ थोया मन कै नाये च ल्यो ॥ मनसा दी सुकला ईरे
ई दी पोयी आपनी ॥ विषया प्रीतिल गा एरे ॥ ३ ॥
बादी नहकी सुधिराई ॥ जु नरमों हो बडु वा मोरे ॥
सो दिन अज हूं आईयो ॥ तू क्यो बिसस्यो हरिना
मोरे ॥ धाजा सुमै सुख ऊप जे ॥ इषको होई बि
ना मोरे ॥ प्रानमिलै नृ बांनमैं ॥ तू उलटि सुमरिनि ॥
तिता सोरे ॥ ॥ ॥ स बतजि नजि एक रामजी ॥ अपन
ही उर वां मोरे ॥ जनतुर सी कहै कारिज सोरे ॥ सि
ध होइ सब कामोरे ॥ ६ ॥ २ ॥ ॥ आ राधो रे एक रामजी
जो चाहो उतम वां मोरे ॥ मनसा बाचा करमनां ॥ प
वरि आन सुना मोरे ॥ टेका ॥ मन वजन मतन पाए

॥ कहाकीयौजुगआइरे ॥ जौ हरिनावनजानीयो ॥ तो ॥
 बादिविगोईकाइरे ॥ मृतपितरबहुसेईया ॥ करिक
 रिआसपियासोरे ॥ अतिकालियालीपरे ॥ योईअव
 धिनिरासोरे ॥ २ ॥ सोदिनकादेनसमऊऊ ॥ औधुं
 इयनवासोरे ॥ गोबिंदगुणागाएबिना ॥ बहुरिहो
 इबहुनासोरे ॥ ३ ॥ सुषकेसागररामहो ॥ इषके
 मेंजनहारोरे ॥ ताहिसंनारोधीतियो ॥ पलपल
 बारंवारोरे ॥ ४ ॥ सबतजिकाहिनसुमरिऊ ॥ हिरदे
 हरिकोनासोरे ॥ जनतुरसीकहैइषसबमिते ॥ सुष
 मैहोइआरामोरे ॥ ५ ॥ ३० ॥ गगनिमेंबाजेअनह
 दबीन ॥ मधुरमधुरमाहीहीमांही ॥ मनमृगनयोतहो
 लीन ॥ टेक ॥ पांचौषकेजकिरहेतहांही ॥ फिरिन
 पयांनोकीन ॥ नांनानादआनदफंदमें ॥ परिनएवि
 श्रेविहीन ॥ १ ॥ इतवतकीचितवनिसबचुकी ॥
 चितनादेतयोलीन ॥ बिसरैयाबिंदकीजुबाजी
 जिनिजीगीनअसकीन ॥ २ ॥ जनतुरसीवासुषकी
 बातें ॥ जहांजहांपरतकहीन ॥ जेपूरबतजिपवि
 मआरि ॥ जिनिहीमलैयसचीन्हं ॥ ३ ॥ ३१ ॥ १८२ ॥
 रागजैतश्री ॥ मेरेसबलसंनेहीरामजीहो ॥ अब
 दीवतुमबिनरहोनजाइ ॥ अबलाकरैदरस
 कोजी ॥ चलभरिमुषदियलाइ ॥ टेक ॥ अतिआ
 धीनमईव्याकुलता ॥ घरअंगुनानसुहाइ ॥ ऊवत
 वेवतकबहनसोवै ॥ जागतरेनिबिहाइ ॥ १ ॥ अति
 आकरताविरहनी ॥ सुनिसाईरुधुराइ ॥ सूनीसे

जन आलगी ॥ तुम कबर मिलौ दगो आइ ॥ १ ॥ पं धनिदां
रीप ल गिने ॥ आरति द्वि ए रै मां दि ॥ तुम मिलि बे कौं जी य
तपै ॥ बिन देखे जक नां दि ॥ २ ॥ बिलंबन की जै राम जी ॥ आसा
परवौ आइ ॥ आत्म कौं मिलि मे हरि मया करि ॥ तन की तप
ति बुझाइ ॥ ३ ॥ जाके सि रपरि तुम धनी ॥ सो क्यो डषी
यानारि ॥ कृपा कर कृमे रे समर थसाई ॥ अंतर वै निवा स
रि ॥ अंग संग मिलि दरसन दी जै ॥ अंतर जांमी आवा तन
मन लरुपरि वारनै ॥ जन लुर सी दा सब लिजाव ॥ ४ ॥
॥ १ ॥ जाउं ते रै वारनै जी ॥ अब मोहि दरसन दी जै आइ
॥ टिका ॥ अंतर जांमी सब विधि जानौ ॥ आसा घरवो
आसा ॥ आत्म कौं सुष देऊ दया करि ॥ तन की तपति
बुझाइ ॥ १ ॥ बुरी न लेरी तो हरितेशी ॥ और न सो नदी
काजा ॥ हम घरि आवो सब सुष ल्यावो ॥ तुम सकल दे
बनि सिरिताजा ॥ २ ॥ सब गुन रहिता सकल बियापी ॥
सकल सिरो वनि राइ ॥ मोहि मया करि दरसन दी जै ॥
जन लुर सी दा सब लिजाव ॥ ३ ॥ २ ॥ राम ईया आवो घ
रि ॥ अब पीष तुम बिन डषी या देहा ॥ टिका ॥ अब लाऊ
रै दरस कौं ॥ दरसन देऊ दया ल ॥ तुम अंतरा गतिकी स
ब जानौ ॥ परम मने ही लाल ॥ १ ॥ तुम सब सुष सागर
सब सुष दाता ॥ सब सुष पूरन देवा ॥ सेज हं मारी आ
इ करि ॥ अरस परस सुष देऊ ॥ १ ॥ बिलंबन की जै
दरसन दी जै ॥ आतम आस्थि ल आवो ॥ लुर सी दा स
जन वारनै ॥ बे र बे र बलि जाशा ॥ २ ॥ १ ॥ बिलंबन की
बरे जी ॥ अब पीष क्यं करि आऊ पार ॥ टिका ॥ बहै वि

चलै नदी अथ खल ॥ श्री डी ग दर गं नी र ॥ मै अत्र
 ला विरि ना सकौ ॥ ग हं कि सी वि धि ती र ॥ १ ॥ तामै म
 गरं ब व डं ते रा ॥ के ती उ वें तरं ग ॥ ये ली पार मे रा पी
 व व सै ॥ दो इ क दो कौ संग ॥ २ ॥ दे को ऊ प्या रू त व व
 ता ॥ पा र उ ता रे मो हि ॥ सां ई सं मे ला क रे ॥ ये व ड उ पा
 री सा ह ॥ ३ ॥ कां मी त ल फे कां म कौ ॥ ज्यो नि र ध न ध न
 की पा हि ॥ ज न तु र सी त ल फे द र स कौ ॥ जै सै चा त्र ग घ
 की चा हि ॥ ४ ॥ ४ ॥ दो स तु म कौ न दी जी ॥ अ दो पी व घे
 ट घ नौ ह म मा हि ॥ टे क ॥ व ह म न लो नी लाल ची ॥ अ
 ध अ द्वां नी सो ध ॥ ता ते रं म दे याल कौ ॥ ना ई क्यौ करि
 दर स न दो इ ॥ १ ॥ का म क्रो ध अ रु वि धे वा स ना ॥ अ
 ह नि ति व र तै जी व ॥ सां ई सं स न म ष न ही ॥ तो कै सै द
 र वै पी व ॥ २ ॥ गु न ही चो र सा ह तो ते रा ॥ अ नंत हि
 क हां स मा व ॥ ज न तु र सी दा स कर ना क रे ॥ पी व रा ॥
 षि स र णि ब लि जां व ॥ ३ ॥ ५ ॥ दो स न ही तु म कौ गु
 र दे वा ॥ मै गु न हीं च लौ ते री सै वा ॥ टे क ॥ का म क्रो ध
 अ र वि धे वि कार ॥ जा क स्ती न व सा ग र ति री ए ॥ सो
 ह म पे नां दि न ल गार ॥ १ ॥ श्री गु न कौ क बु अ त नां
 ही ॥ न य स यान रि र द्यौ मा ही ॥ भा व ना ति वं द गी ते
 री ॥ वि स स्यौ स म र घे सां ई ॥ २ ॥ तु म ही ना ना थ द या
 ल स्वो मी ॥ मै कर मी क टिल का मी ॥ वि र द जां नि उ
 वारि अ व कौ ॥ आ य कैं अ तर जां मी ॥ ३ ॥ गु न ही सा
 ह तो ते रा ॥ आं के जै अंत रं हों मी ॥ सि रा न ही श्री र के र
 ज न तु र सी कौ सर नि रा यो ॥ पा व न सा हि व मे रा ॥ ४

न

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ गोपाल ही गाय लै ॥ क हार ह्यौ अल ॥
 सा श्री ॥ घरी घरी गोविंद जन ॥ तेरो जनम सिरा नौ जा
 इ ॥ टेका ॥ जावत है आरोगि वय दतन ॥ कंचन रूपी
 काइ ॥ तावत जुरा रोग नहि नेरो ॥ जनम नहि देत दि
 याइ ॥ १ ॥ ही राहारि तु बकौ डी सुष ॥ गहिमत लेहि
 सुभाई ॥ अमल परे नबु टि है विष ह है ॥ फिरि पीछे
 यच्छिताइ ॥ २ ॥ चित दृति उले टिक रि ब ए काग्र ॥ उर
 धरि ह है उपाइ ॥ इ है जोग इ है जु गति सकल वि
 धि ॥ विसरि यता मति याइ ॥ ३ ॥ इ है औ सरय है दाव
 अमोलिक ॥ कौ ऊपर वलै सुनिपाइ जनतुर सी ज
 नम मर नवंता हरि ॥ तता ही स्यो ल्यो लाइ ॥ ४ ॥ १० ॥
 अज्ञानी आवरे कस्यो हं पारो मानि ॥ बह्यो की फिरै विष
 यन संगि ॥ एतौ डमकी योनि टेक ॥ सकल शास्त्र संत
 पुकारै दे दे अगुरी कांनि ॥ घतिलो ममन न ए विनतन
 की ॥ होत दिने दिने हांनि ॥ १ ॥ है अर अन रथ जु औ
 र सब ॥ भावै जानि मजांनि ॥ जे न के न तं न की म विपरमा
 त्पद उलटि अति अ ॥ तरि अंनि ॥ २ ॥ इ है करनी करि
 करि किते जन ॥ पार्य हूते न्यानि ॥ या विन औ र सकल म
 ग त्रि छां ॥ सो सिध्या करि जांनि ॥ ३ ॥ आतमी कधर मस
 बकौटी कौ ॥ सो किन लै ऊप्र वांनि ॥ जनतुर सी तात का
 लतन मां ही ॥ होइ तुरपद पदं चांनि ॥ ४ ॥ १ ॥ रामजी कौ
 नां व जु ली ए ॥ उर के अरं घ जरि जाहि टेक ॥ जे सैं चिनगी
 परै अगनि की रुई जु मां ही ॥ जारि मसम करै ताहि ॥ र है रज
 मां क बुनां हि ॥ औ सैं ही धौं पाइ ए ॥ जपत पराम कौ जाप धू द

इ
 इ

रिलोकटिजांबदी॥रदिजाइआतमांआप॥७॥ज्यौरिवि
 कैआयेरजनिकैसैजुरहाई॥द्यौजुगंमकौनामजपत
 काकैरहेकाई॥कोटिकरमकटिजांबदी॥निहचैनज
 करिसोइ॥आमाहीशंसेनही॥साधकहेसबकोई
 ॥१॥प्रस्वायारसरूपनामनिहंकांमजुसोई॥जनि
 सावनजललौंउरकीवासनाजुघोई॥इहोइमिलेता
 एकनकलौं॥वापूरनपदमांदि॥जनतुरसीमनक्रम
 बचनतेईजन॥बहुस्यौंबिबुरैनांदि॥३॥१॥श्री
 सैहरिआवेदगे॥श्रीरुपायजुनादि॥टेकाज्यौ
 वात्रगघनघीतिबांधिकेबचनउचारी॥चकोरचितते
 दिष्टिइतउतनदिटारै॥श्रीसैहीनिरघ्योकरैरामरू
 पघटमांदि॥घरीघरीपलहीपलबिनबिन॥निम
 यबिसारेनांदि॥७॥ज्यौंमचरीजलबिनतलफिकैत्या
 गेदेहा॥करमअंडकूरकटीसुतनिसुकरैसंभेदा
 श्रीसीसुरतिधरिरामकौ॥नितिहीनिरूपैनांम॥निसि
 बासुरिलागारहौं॥तौक्यौंनमिलैवैराम॥१॥कोमनि
 कंतबिदेसलागिरहीनैनवगौरी॥चित्तमैपरैनचैन
 होइरहीबिकल्पबौरी॥उरअंतरकरवतवहै॥
 बिनदेवेवैनांदा॥श्रीसैरामजयैजनअपनौ॥तौमितै
 जनमइषदाह॥३॥तीबरवेगसंजुक्तप्रभुकोंपा
 थनिहारौं॥नाहनाहिजुकरिकरिरामकौनामउ
 चारौंएकायलागारहौं॥अपनेहीउरअस्थानतु
 रसीवाहिमिलैवैपावन॥हंसिहंसिसुपानिधान
 ॥४॥१॥आवेगेवैरामहंमारे॥उपजावनउतसा

हा॥ निवस्य मम इय हरिकरदिगे॥ अवसिवनिर
ननां हा॥ टेक॥ निमिवापुरिवाठीमघजोऊ॥ करिक
रिषीतिउमाहा॥ जोनूजोयूमिलौपीवको॥ जूसमु
कोवाहा॥ १॥ जीवपीवसंधिरहेनकोई॥ गलेकनकले
कहा॥ जनमजनमअरुजुगजुगंतके॥ कटिदिहेमा
रेहाहा॥ २॥ इहेअमिलायाअंतरिहंसारे॥ औरन
कौउचोहा॥ औरचादिचितवनिसबत्यागी॥ तुम
आवोउरमाहा॥ ३॥ तुमतेजपूजषकासा॥ अपर
मितिहोसुषासिंधअथाहा॥ जनतुरसीकूमिलौ
महाषनु॥ अरपूयऊलनेलाहा॥ ४॥ १४॥ ताव
तअज्ञानहो॥ बेदपढोकिशुरांन॥ टेक॥ अचिर
अचिरकोअरधभिनिभिनि सबनिसुनावे॥ शा
स्त्रनिकेनेहजुगतिविधिस्योव्यावै॥ उरअंतरिअ
नरघवसे॥ इहेअचंनौआहि॥ मिष्णालोममोदमा
यामे॥ रसोहेलावचीलाहि॥ ५॥ औरनस्योकहैटे
रिमयायेभटेबयारे॥ आपनकोअतिहाजुल
गै॥ इहेबडोहेरांन॥ तिलभरिताहिनत्या
कधिकथिसदरूपज्ञान॥ तिलभरिताहिनत्या
गई॥ इहेबडोहेरांन॥ २॥ विद्याविधिपढेअवि
याबाडेनाहि॥ मुयांदरांममनचितवसेमायाके
साहि॥ ब्रौतपोतयात्रममे॥ होइरहाआटैलौन॥
मनिविद्यारनसमऊई॥ धिरकोअचिरकौन
३॥ कहांतेआएआहिजांदिगेकहावभाई॥ इहे
केकउरनाहि॥ औरवऊतेंचतुराई॥ कंनतु

एकही आंधी ॥ निरगुन सरगुन सोई ॥ कुरसी त्रि
 अतीत न जे बिना ॥ मुकति न कब हू होइ ॥ धा ॥
 ॥ ५ ॥ गाढ मन को गदौ ॥ कापट निरदेला गि ॥ टिका ॥
 दिन आए बालि जे बदिन कदती माता ॥ हो सुत बू
 होऊ येमनि बज्ज कसलाता ॥ १ ॥ तातें सुमरो रामजी
 तीबर वेगि उपाइ ॥ आलसी कदोइ कारहे ॥ तिरो
 श्रीसंबी तो जाइ ॥ पटे गुने को फल बयेइ ॥ आदि सु
 नाई ॥ गहि मन गोविंद न जौ उलटि अत्रि अंतरि
 आई ॥ पाघो पसर निरका ॥ सारइ तो ही गाना ॥ इदें
 माध्यांन है ॥ तुमका योजत फिरो आन ॥ २ ॥ ज
 नन दी जै जहां तेहां वेवे नर नारी ॥ गएतहां दोइ जा
 पलटि सिधतें संसारी ॥ औ सी प्रबल माया वयकु
 पल परसी एन जाइ ॥ तुलकंचन तुलकाच सकल
 करि रदी ए संतोष संसाई ॥ ३ ॥ इदें सब सतनिक ही
 है सुमृति कहां ही ॥ इदें आय ही वैद सार सार बक
 इदें आंही ॥ करि प्रतीति उर धारका ॥ मन कम बच
 बसोई ॥ जन कुरसी रिदें राम आयने स्युं ॥ एदो अ
 धरत होई ॥ ४ ॥ १६ ॥ इतौ ही सार है ॥ और ग्रंथ
 बिस्तार ॥ टिका ॥ संपूरन मन लेह उलटि अयने उर
 ही ॥ जेन के न राय कु उवत है फेरित हां ही ॥ नि सि
 सुरि लागारं ही ॥ इदि आरंभ इदध्यांन चिततें
 लनं बिसारीण ॥ निज स रूप निरवान ॥ १ ॥ ए वि
 या परह रौ ॥ ज दो ज दो ज गुल पटाना ॥ निपट

करक निरमूर ॥ गहिजु ॥ राखगुरगंनो ॥ विषवत्र
नलो विसरहं ॥ अत्रसिजुउरते ॥ एदि ॥ एहबंधएहि
मुकतिको ॥ हेकारनयह देह ॥ २ ॥ काहेको पटिप
टिग्रंण ॥ करक विसतार घनेरा ॥ करमलोउलटि
इवितरसो राघोउरदेरा ॥ हिरदेकं वेल थिरिथा
पिकोरहो अचलयो सोइ ॥ ज्योनिवावदीपक
कीवाती ॥ लोइनइतउतहोइ ॥ बाजीज्ञानमुलाइ
ब्रह्मस्योतालीलावै ॥ असीधोअरनीरत्रोसैहोइ ॥
केदियावै ॥ लैकहसंचरनारहै ॥ जीवसीवविधि
सोइ ॥ जनतुरसीपरमसमाधियइ ॥ जबत्रोसैय
होइ ॥ ४ ॥ १७ ॥ तेरोओसररेवीत्योजाइ ॥ रेहंतोहि
कहंसंमजाइ ॥ टेक ॥ तालावेलिसुपरिपमुअपनी
उलटिअनिअंतरिआइ ॥ चात्रगघनपुनिचंदव
कोरलो ॥ लागरइएकभाइ ॥ १ ॥ काचाहैपटिवेगु
निवेये ॥ लैसवधारबहाइ ॥ इकचितकैरहोए
करामस्यो ॥ तीबरवेगिउयाइ ॥ २ ॥ जनतुरसीक
हैसमकिमनबोरे ॥ वेगिविलंबनलाइ ॥ मिलियो
चाहैरामअपनेको ॥ तोसुमिरनहीचितलाइ ॥ ३ ॥
॥ १८ ॥ बडुरिकतपएरेयहदेह ॥ रेहंतोहिउपदेस
यह ॥ वरामनामजपिलह ॥ टेक ॥ नांनोजोन्यनर
मिडुषपाइ ॥ पूरबलेपुनिरेह ॥ औसीसोजअप
लमतयोवै ॥ करिकरिअनंतसंनेह ॥ १ ॥ विनसि
जाइभीमेकागदलो ॥ अरुज्योवारुग्रेह ॥ याइ ॥

इच्छिनकमें॥ अतिषेदकीषेहा॥ २॥ रागदोष
रामजपि॥ कार होबिलंबकरेह॥ जनतु
॥ तनधरियुऊडलनलेड

॥ ३॥ ॥ १॥ रेनरओसरपायौनीको॥ रामसुमरिनिहं
कामआपनो॥ काडिकपटयाजीवको॥ टिकायेविष
याविषलौबत्यागिदो॥ यहसुषअतितफीको॥ आत
मचितवनिस्योलागारऊ॥ सारइहेसबहीको॥ १॥ य
ऊतनरतनब्रधामेतयोवो॥ होइआशक्तिडनीको॥
यामिष्यामरीचकेजलमें॥ कहोकिनयांनीपीतो॥ आ
तिहीतीबरहोइतगासो॥ त्यागिसंगत्रिगुनीको॥ जन
तुरसीकहैनिरेनिसेकनजि॥ तुरयदसबकौटीको
॥ ३॥ २॥ रेनरयाओसरकेकाजा॥ सुरअसुरादि
सकलजीवबांछें॥ ब्रह्मविधिकरेंइलाजा॥ टिका॥
ओअब्रसरयोहीमंतयोवो॥ नरामनरमिकीडीका॥
जा॥ हरिजितेंहीगतनपायो॥ सकलजोनिसिरि
ताजा॥ १॥ येविष्यानिरहलत्यागिदो॥ येईदुषकोसम
जा॥ येईत्यागेअबसिकैजुपाईए॥ महामोबिकोरा
जा॥ १॥ नजिमंतवीतिकरिउयाअतिहीआतु
रहोइआजा॥ पछितावैगौकाटिहनेतौ॥ बीतिजाइ
गोसाजा॥ ३॥ जनतुरसीकहैसमजिरेतिवुरनयाअब
कैजिनकरेअकाजा॥ अषंडहरिचरननरातारऊ
परहरिलौकालाजा॥ १॥ २॥ १॥ पाइगाइगाइगोबिंद
गाइरेगाइ॥ गोबिंदकेगुनगायेबिनतेरो॥ अमोलि
कयऊतनबीत्योजाइ॥ टिका॥ अबधिदिनातेरेअ

व त घटतनेरे ॥ घौरे घौरे पांनी जैसैं बाडत आवपा
लि ॥ इहै जानि उरमैं आनि ॥ राम नाम ही बयांनि विषव
वन लों विसारि रे ॥ या जगु कौ गू वौ जं जाल ॥ १ ॥ का करि
रहौ कूरनेह ॥ अयन इयह कृतमदेह ॥ तातै सुमरिसां ई
अतिही अही आठुरमाही ॥ सुयको सागर राम ॥ दुषको
हरनएह ॥ २ ॥ औ सोन औ वस रपावै ॥ स्वराह जौ वसि
आवै ॥ सो बृथा मतही गंवावै ॥ सेइ सुय बांम ॥ जनतुर
सी कहै यदवांनी ॥ अतिही ये मजु सांनी ॥ काटिकै फं
दक बुधी ॥ मजिरे आयनौ राम ॥ ३ ॥ ३३ ॥ जीया राम सु
मरिम ॥ सुमरि राम सुमरि रे ॥ रामनांम विना जायच
ल्यो तेरो ॥ आब्यो अवसर रे ॥ टेक ॥ बाबा कर कृ बि
चार ॥ हनहि समकृतगंवार ॥ राम रूप विसारि के
रहौ सोइ असुरे ॥ आय है जब अंतर ॥ जंम स्पूप
रिहे निबेर ॥ यबितावै गौ न्यान ॥ तातै हरि ध्यान ध
रि रे ॥ १ ॥ अज हं चेति अग्यान ॥ बी लौ जाय अवधि
यान ॥ च ल्यो आवै काल कहर परें दरे ॥ जनतुर
सी कहै समजिएह ॥ मैतै मल त्यागि देह ॥ आरति
स्ये नजि राम आयनौ ॥ जनंम सुफल करे ॥ २ ॥ २३ ॥
रमया आवौ जु ॥ आवन इहै जुवार ॥ तुमही अबै
आनंद सुष हता ॥ दुषको भेजनहार ॥ टेक ॥ निस
वासुरि नैन नमघ जोउं ॥ करि करि घीतिसनेहं ॥ प्र
गट हं राम अब केइ हि औ सरपलपल बीजतदे
ह ॥ १ ॥ जै ये होतै सेतु मपूरन ॥ प्रगट कर कूपरका
स ॥ होइरही आवरन अवि द्यारजनी ॥ ताहिरति

॥ शानततुरसी निजदास तुम्हारी ॥ कर जो
राम देह दरसन तुम्हारी ॥ अत्र सब

तुही लेऊ ॥ ३ ॥ २४ ॥ रमईया आ वीजु ॥ रिदसं द्विरि मेरे
हं जाववा रने तेरे ॥ टेक ॥ अपनी जो तिजु जगा वी ॥ नख
सख सब ति मरन सा वी ॥ आ ईये जे सैं अब आ वी ॥ ती मो
मनि ना वी ॥ थाय गढी मां ही ही मां ही ॥ बाहि जिकी मो हि
धी ति नां ही ॥ उपजे बिन सै जेता मो मन नय तिया ॥ २
दीन वं परि दया की जौ ॥ निहं चै निज अपना इली जे
सरम अपनो दरसही जौ ॥ तो सुषमै जी जौ ॥ ३ ॥ अतन वि
विधि ताप निवारौ ॥ बिगि आइ प्रचुपा वधारौ ॥ जन
तुरसी को निरंत से नी कपार नै तारौ ॥ ४ ॥ २५ ॥ आएं
ही बने गी हो कता अब के धौ इहि वारा ॥ बकरि ब
गिजु मिलन नां ही ॥ बीतत अब धिक रा ॥ टेका वी ॥
जल लो जाव दे ही ॥ दिन ही दिन घटती जु ऐ ही यहै ॥
जानि मिलि सने ही ॥ मो प्रांन के प्रे ही ॥ १ ॥ बिरहनी म
रिग जु जो वै ॥ मन ही मन जागी अरु रो वै ॥ जो बघरु
को दरसन हो व ॥ तो ही सुषमो वै ॥ २ ॥ तुम आये इ य
हं हनां सै ॥ नख सख आवे आनंद प्रकासै ॥ निरमल
हरिकी जो तिना सै ॥ रहै नतं म आसै ॥ ३ ॥ मधुर मधुर जु
बीना बांजे ॥ बिन ही घंन मा नौ ग ग निगा जौ ॥ तुम अ
रे यहरा ज रजौ ॥ काल नै न जौ ॥ ४ ॥ जनतुरसी धां ना जा
दते रा ॥ जुगि जुगि जनम जनम को चेरौ ॥ अपनो जा नि
दरसन देऊ ते रो ॥ तो ही जीवन मे रो ॥ ५ ॥ २६ ॥ रमई
या आव आव आव अहो मुजितु जदेष न दीचा वि

हिसनमुषदरसदियावटेक॥ तुमहीतुमरदौरैनि
देनाउरधारेयहनाद देसौदेवनैयनतरितुमको॥
बसोहिसुमहीबिहाव॥ १॥ ज्यौचात्रिगघनचको
चंद्रही॥ इकटगबन्योवनाव॥ योममप्रीतिटरत
नहीदारी॥ तुमसोत्रिचुवनराव॥ २॥ जनतुरसीगरी
बगुलांमहरितेरो॥ हैनिजतुमसरनाव॥ अगटोरंग
पूरनतुममेरो॥ अरमलरकुकिजाव॥ ३॥ २०॥ २०॥
रगमालप्री॥ निराधारसुंमनलप्येमाई॥ कैसैंधोंवद
गावै॥ विनमायनकैसैंपंथिजुचलांना॥ तातैंकंपा
आवै॥ टेक॥ विनहीकरनप्रीचविरतिकरिकैं
विनजिहागुनगावै॥ विनमालाकरविनहरिसुमि
रन॥ कैसैंधोंहोइआवै॥ १॥ यपीलहंकैपाइजुफि
सलैपंबीहनतहांधावै॥ घंडैधारहतेमघडलन
जागविनाकेपावै॥ २॥ जहांरबिचंद्रतेजनहीतारा
सुतहसकासकहावै॥ अतिहीअगहनगसौनही
परई॥ निगमहअगमबतावै॥ ३॥ पंचतीनिआव
रणबिबर्जित॥ दृष्टिकुमुष्टिनआवै॥ सतअसत
असतसतकबु॥ कहौकसौनहीजावै॥ ४॥ जन
तुरसीअकुअकथकहांनी॥ कहतनकबुबनिआ
वै॥ पूरनब्रह्मगुरकृपाहोइ॥ सोमलपकुमुषया
वै॥ ५॥ १॥ देवतुमहीतुमहोमेरे॥ औरकोऊनांही
तुमहीआदितुमहीअंति॥ मधिहंतुमआही॥ टे
क॥ तुमहीघानतुमहीपीडा॥ तुमहीनैननासा॥ तु
महीनैकरनसीसपाइ॥ तुमहोमेरेखांसा॥ १॥ तु

मही नावत मही न गति ॥ मंडु मही ग्पां न ध्यानां ॥ तुम
 गतु मही जु गति ॥ तुम बिन नही आं नों ॥ १ ॥ तुम
 समुंदी दिसा ॥ तुम ही देव देवा ॥ तुम ही सर्व मेरो
 म्पारी सेवा ॥ २ ॥ तुम ही मोक्षि ॥ तुम ही मुक्ति
 तुम ही बल बिसवासा ॥ तुम बिनो मन कम बचना
 आसा ॥ ३ ॥ नि रकार निज सरूप ॥ राम अ
 जांमी ॥ जनतुर सी निज गुलां म तेरो ॥ राषि सर नि
 मी ॥ ५ ॥ १२ ॥ चलि मेरे मन मित जाहि जहां ॥ सुषके
 गर र मि रहे राम जहां ॥ टिका ॥ क हार हौ इहां बाइ
 देखि इंडी सुषका ई ॥ ऐ सकल जै है विलाइ ॥ ना वै जां
 म जां नि ॥ ततिंक हौ सुनिमां नि मेरो ॥ हौं आषी होइ
 हित तेरो ॥ सुमरि लेषतु आपनो सव ॥ बाडि जी एवो नि
 ॥ १ ॥ काम क्रीध सत्र लौ त्यागि ॥ लोभ कै लगाइ आगि
 मदं गलस्य नागि ॥ गहि जु दिट बै रागा ॥ ए प्रबल
 प्रदा जु आं ही ॥ होइ र देष बत दोट मोही ॥ इन अ बत उ
 जै जु नां ही ॥ उन चरन अनु राग ॥ २ ॥ धनि जो व करै अ
 ॥ सेत जनन जु कही ते सी ॥ तोरि अ बि द्या जाल तत
 नीकें ॥ जुई लै निरवाइ ॥ जहां न धर अंबर नु बाया ॥ प
 वन जल ते जो न काया ॥ मोह ह न ही जु माया ॥ तहां छि
 होइ जाइ ॥ ३ ॥ जहां जग मग जो ति राजै ॥ अति ही
 दस्यं विराजै ॥ कोटि अन ह द नां द बाजै ॥ होइ
 हौ जै जै कारा ॥ जनतुर सी वा सुष सिंध मां ही ॥ आ
 दि अति र मंध्य सहां ही ॥ पर सपर मिलि एक होई रहि
 जु चरन मंकार ॥ ४ ॥ ३ ॥ जहा वै राम तहां नही कां

ना ॥ अरु अक्षरमहंकी जुगति नही ॥ महाडलम व
कुंधाम ॥ टेक ॥ पंडित कुंकी पंडु चनां ही ॥ अपंडि
त कामे जुआं ही ॥ गुणी हं गुणगुणिस हो ही ॥ यकि
रहे उरधार ॥ पारधों को बन पावै ॥ गया सब कुस्यो
नही आंवे ॥ तातें रहे दे रत होइ ॥ पंघनिहारि निहा
रि ॥ १ ॥ जोगी जंगम जे न जेते ॥ संन्यासी हक कुकेते
याज गुही वदे देतेते ॥ रहे तन ही सुकाइ करि ॥ क
रित पस्या जु दारन ॥ मन को समजै न कारन ॥ वि
नकी एत को निवारन ॥ तहां धों को न जाइ ॥ २ ॥
होइ ना ही है मिटावै ॥ हे मिटे मै कु बिलावै ॥ मै वि
लेन ये अमै होइ ॥ मन लागे आत्म ध्यान ॥ चले न दे
हुष का चलाया ॥ सुष कुस्यो बांधे न माया ॥ असा
इ तो लहे वह घर ॥ और को न ही जान ॥ ३ ॥ आपार
त अतीत होवै ॥ गलित होइ बासनां घोवै ॥ असे
पने अंक धोवै ॥ जु मजु गंत के सोइ ॥ जन तर सी
मन क्रम बचन आं ही ॥ रलि मिले वा बहम सां ही ॥
बहु रिधों बिबुरै जु नां ही जो असाको होइ ॥ ४ ॥
सहसां न घोइ रै असी सों ज अग्यान ॥ सुमरिले
मुआपनो ॥ जीव को जीवन प्रांन ॥ टेक ॥ पर व
नितें पाई ॥ नागि बडे ते रै जु आइ ॥ सोरत न ब्रघ
गंवा वई ॥ बिना आतम ध्यान ॥ एकाग्र होइ रहौ ज
लागा ॥ तो रिभ्रम तां त जु तागा ॥ पर पर पर सने व
हे ॥ इ तो ही उन मान ॥ १ ॥ मां निधों क ह्यो जु मे रो
बां लों निजहित जु तेरो ॥ त्यागि एक दरज बिषै

पनहंन करी एपांन ॥ बधमुकतिकरनकों देही ॥
 वां आषीजु एही ॥ सकलशास्त्रनिसनेही ॥ और
 नाहिन आंन ॥ २ ॥ तीनिलोकनत्रयंडमांही ॥ सारज
 इतौही आंही ॥ औरअसारजगतयज्ञ ॥ भाषजुवे
 पुरांन ॥ तासूंलागिमतिअवधियोवै ॥ काहेनअप
 अंकधीवै ॥ सुमरिसुमरिनिहंचैजुअपनो ॥ नि
 रूपनिरवांन ॥ ३ ॥ जनतुरसीकहैयहैब्रह्मवा
 हंसषीरनीरलोधवांनी ॥ जानिरेजानेतौजानी ॥ का
 रहीअजाना ॥ तीवरहोइजनिआपनोसांई ॥ अ
 नेदिरहाकंवलमांही ॥ कीटजंगकीनाही ॥ होइ
 लतांन ॥ ४ ॥ ५ ॥ जडबुधीमनाउलटिअपूवा
 रे ॥ अपनेसाहिवस्यैल्योलावरे ॥ टिका ॥ आ
 मध्यांनमाऊरहंलागा ॥ तोरिजगतकाताहसागा
 रीएवहीअतरावरे ॥ एकाग्रहूकैरहुलागा ॥ दरि
 केचरनसिरनावरे ॥ १ ॥ सुनियजुसीषबीनतीमेरी
 गिममतमिथ्याहुटेरी ॥ कौकनगयोसुषपावरे
 हैदिनकैमानिमोदही ॥ अतिब्रलेखिकावरे ॥ या
 वालोककैभोगजुषांनी ॥ यजुसुषसुपनांकोसो
 नी ॥ मतहीकरैकैलावरे ॥ याअभिलाषामांहिय
 पशिबहुतनिषोइविरथआवरे ॥ ३ ॥ यजुजुगु
 वदेशिजननूले ॥ यहतीनोतापनकोमूला ॥ यामे
 नेजनावरे ॥ यहमिथ्यामरीचकोजली ॥ किनपी
 न्यौचावरे ॥ ४ ॥ निसिवासुरिअपनेउरमांही
 मरिअपनोसमरथसांही ॥ नलोबन्योयहदावरे

यह नगकाच सटै मत बोवै ॥ तोहिक हं समजावरे ॥
 ५ ॥ यह अक्षर अक्षर कै मतिहारो ॥ पार कुनकी जुग
 ति विचारो ॥ मत उरही करै अटकावरे ॥ रामनामनो
 काच विषांनी ॥ येइयां रले जावरे ॥ ६ ॥ जनतुरसी मत
 गुरयो ताये ॥ आद्योइ है उपदेश जु आवै ॥ अपनो
 मजै निरंजन रावै ॥ कोटि ग्रंथ को अरथइ तोही
 त्रौरकहां लौक हं बनावरे ॥ ७ ॥ ४ ॥ मेरे आवै मनव
 काये नाव स्यो नंदरे ॥ बडुरिन त्रौर सरय करे ॥ टेका
 यह डनी थां कले को कारन ॥ याको अवसिके करौ ॥
 निवारन ॥ शमी एन लो वले सरै ॥ तन धन आदि सक
 ल अरथ न करौ ॥ जाकाता कौ देकरे ॥ १ ॥ सकल सा
 सुनिको मत एही ॥ संतह आवै सुनिरे संने ही ॥ सोई
 उरधरिले करे ॥ २ ॥ यकुतन रतन बडुरिन दियावै
 ली मतिकोडी सटै गमावै ॥ करिकरि विषय न घेहरे ॥
 यह उपदेश मानिनि जमेरे ॥ त्यागिवा सनाएहरे ॥
 ३ ॥ जनतुरसी जुगति जु एही ॥ मज हं अपनो रोम संने
 ही ॥ मगति उरधरि जु एहरे ॥ जनम मरन डष जीति
 महानै ॥ परमलाभ एहलेहरे ॥ ४ ॥ ७ ॥ मन मितहां
 मारे ॥ इहां नही थिराउको इरे ॥ बल्पा जाइ सब लो
 इरे ॥ टेका ॥ एकबंधी राजा कैं बीते ॥ रामनजन बि
 न गएजुरीते ॥ हाथ मूलावत सोइरे ॥ इहैं जांनिजग
 ममति निवारो ॥ रहौ नां मरत होइरे ॥ १ ॥ रावण कुं
 न कर्ण सेकैते ॥ या नव उपरि नएजुतेते ॥ काहे नदे
 यो जोइरे ॥ मिथ्या तन धनिको यब करिकरि ॥ वैअ

तिगएहै रोइरे ॥२॥ कैरूपांडौं जुजहां लौं ॥ मनधरि धा
आएतेते जुतहां लौं ॥ तीनिं नवन सब लोइरो ॥ सोई सोई
निमृत्पनियाए ॥ बिंच्या ज्विरलाकोइरो ॥ दिनदिन
बहुबीतततनतेरो ॥ कहा करि रह्यो अंध अरऊरो ॥
करमबासनां सोइरे ॥ तीबरहोइमजराम आपनो ॥
जौचाहै सुष सोइरे ॥ ४॥ मनगदियवन अप्रवा आव
कूर्मलौं उलटिके समादो ॥ आपनही उर थिरिहोइरे
की टन्नंग कै कौलागोरहो ॥ वासाहिवसों सोइरे ॥ ५
यहसब संतनकी बानी ॥ श्रुतिस्मृतिहंनिइहै बधा
नी ॥ सबकोनिहचो सोइरे ॥ जनतुरसी ब्रह्मगतता
नहोइरहो ॥ ज्योबहु रिबिबोहनहोइरे ॥ ६॥ ट ॥
॥२१७॥ राग सारग ॥ समजायोर मनके बरी ॥ मान्यो नही
सबदतै मेरो ॥ सीषसबैही फिलिकारी ॥ टेक ॥ नोनमोह
अरू बिषैबासनां ॥ दोजिगगतिहिरदै धरी ॥ भावतग
तिअरूदयादीनता ॥ सदगतिमुगधापरहरी ॥ १॥ रा
मबिसारिकामरसिमातौ ॥ सेयो नही हरितरहरी ॥
औगुनकंकी एअघाइरैनदिना ॥ क्यां पावै सुषकी उ
री ॥ १॥ चैतिचैतिबहुस्यो समजाकं ॥ मानिसीषसुनि
लैषरी ॥ तरसी दास रामनजिप्रांनी ॥ नहीतरजमक
रिहैबुरी ॥ १॥ १॥ निरमलजसगायरे मना ॥ संतजा
हिअंनंतरामनजिरांप्रांनी ॥ कहै संतहरिकेजनां ॥
टेक ॥ यहसंसारभारबिषसागरातामैडुषदोजिग
घनां ॥ रूपरंगरसदेषिपतंगज्यो ॥ बहुतबिगुचे
मुनीजनां ॥ १॥ परहरिकामक्रोधमदमंखंयागव

नूनकी जैविषवनां॥ यामांदि ड्यपावै सुषनाही॥ नदि
लैराम निरंजनां॥ २॥ निरभै निराकार अमितासी
सुषसागर ड्यषडनां॥ जनतुरसीतांदि संभारिरे॥
नदिन॥ मनसा वाचा करमनां॥ ३॥ ३॥ नरकर कुनि
रंजनसेदरे॥ मनसा वाचा कहंकरमनां॥ औरनदू
जादेवरे॥ ठेक॥ त्रैसीसोंज बक्रु रि नदिपावो॥ को
दिधरै॥ जोदेहरे॥ भागि बडे मनिघातनपायोताहि॥
सुफल करिले करे॥ १॥ ऋगीकाया ऋगीमायातासों
किसो संनेहरे॥ मातपिता सुत संगीतेरे॥ अतिबिबु
टैयहरे॥ २॥ वेदपु रांन सकलयों जायै॥ साधिकहै
सुषदेवरे॥ जनतुरसीदास कहै संतहौ॥ तन मनहरि
कौदेकरे॥ ३॥ ३॥ नरंजनमसि रांनौजाइरे॥ तातैरा
मसुमरि अमिअंतरि॥ क हारहो सु रजायरे॥ ठेक॥
ग्रहमाया सुषदिनस च्यारिकौ॥ समजिबैगिबिसराइ
रे॥ यामैयुचिरहीएनहीक बुधी॥ यऊतौपरतिछला
इरे॥ १॥ सुमति संमादिकु मति सबपरहरि॥ निर
तिसुरतिउलटाइरे॥ आदिअंतिहि रंदै सुषनिस
दिन॥ हरिहरिउचरिअघाइरे॥ २॥ यऊतेराअवस
रयऊतेरीवरीया॥ यऊतनबहरिनयाइरे॥ जनतु
रसीदास रामजिघांनी॥ एकचितइकहीनाइरे॥
३॥ ४॥ राजघोरै देखिलुत्तानेरे॥ ऋगीमायाकेमदि
मातै॥ हिरदैरामनआनेरे॥ ठेक॥ सकबंधीमंडली
कचकवै॥ चौदाविद्यानिधानेरे॥ दिवस च्यारिमेमे
रीकरिकरि॥ सबदिन दीएपयांनेरे॥ १॥ कंचनको

दसमदशी की है ॥ मां हि वै विग्रवानो रे ॥ वी सनु जा
 दशमसतगजाके ॥ द्विनमें वेदमिलां नो रे ॥ राज
 काजं सब बंध स धारे ते कथिरि निरहं ने रे ॥ आग्या नई
 हिंवाले की जब जलमे जाइ मिलां ने रे ॥ २ ॥ मनिषदे
 हृधरि गं मन जान्यो ॥ ते न र ब हूप द्वितां ने रे ॥ तुरसी दा
 स सतगुर पर सां दे ॥ अऊ जुग ऊ ग जा ने रे ॥ धा ॥ पाते
 न गति न जां नी घां नी या ॥ आदि अंति अक्षिर पद प
 र हरि ॥ कृत म रूप पहचानिया ॥ टेका ॥ इत उत हे रत
 हरि घट मां दी ॥ कब हउ लटिन जानी या ॥ उतर द
 विन पूर ब प द्विम ॥ फिरि फिरि पां न पिया नी यो ॥
 पार ब्रह्म संमिकरि पूजो ॥ कै पाहन कै पां नी यां ॥ अत
 की बेर सै वर के फूल लो ॥ चांत बूर उडानी या ॥ ३ ॥ क
 यनी कथि कथि कर म लगाए ॥ चितुराई चित सां नी
 या ॥ न्र म व्यागि कै जागि जुग ति ग दि ॥ मन स्यो मन ल
 पटो नी यां ॥ ३ ॥ अजहं चेति मुग्ध म ति ही नां ॥ मां नि
 सुष सुनिकां नी यां ॥ ये म धी ति स्यो न जि अवि ना सी
 त जि विन सर बे गां नी यां ॥ ४ ॥ इ है जो ग इ है जुग ति
 न ग ति क रि ॥ उ ल टि आ त म न्र स थां नी यां ॥ जन तु
 र सी क है सब दी डुष ना से ॥ मिलि हि प र म सुष दां नी
 या ॥ पा ॥ ६ ॥ त त कै सै ल है त मी गु नी ॥ जि न सौ व त ॥
 सब रें नि वि हा वैं ॥ दिन ट म ट म चो घ त ड नी ॥ टेक ॥
 प र नि दा प र दोष न पू र ता ॥ इ है अ वि द्या उ र घं नी
 ब क्यो क रै थाली जु ऊं न लो ॥ क रि न स कै सु नी अ न
 सु नी ॥ १ ॥ अंति परमाद आलसी अगिनरा अति

४

॥

त ज्ञेधी कृत घं नी ॥ दयाही न क्षीर घनु सूती ॥ सोक मो
 हे मे र हे सं नी ॥ १ ॥ उल टिन सु मि रै रां म श्राप नौ ॥ व्या
 गि मो ह मा या म नी ॥ तु र सी ते क ब हं न ही पा वौ ॥ अं य
 ड अ न ह र की धु नी ॥ ३ ॥ १ ॥ बां बा द र स न की क र
 नी ॥ श्रौ र बां बां श्रै सैं त जि प्रां नी ॥ ज्यौ र बि ल्या गै र
 ज नी ॥ टे क ॥ हरि द र स न दै घ न के का र न ॥ ग हि अ ॥
 का श्र म त ध र नी ॥ क रि क र नी सु न ल्या य सु र ति म नु
 च टि रे नां व नि स र नी ॥ १ ॥ सु र ग मृ ल्य पा तौ ल लो क
 लौ ॥ बि ष या स वै बि स र नी ॥ सा हि सु द ट वै रा ग अ
 मि अं त रि ॥ ए क ही स्यो ध रि ध र नी ॥ २ ॥ ज्यौ चा त्रि ग
 चि त वै नि ति घ न को ॥ च कौ र अ शि की क र नी ॥ श्रै
 सैं चि तै चि तै चि त मा ही ॥ च र न कं व ल की स र नी ॥ ३
 ज्युं क र म अं ग अं ग उ ल टा वै ॥ यो चि त बि र ति स र
 क र नी ॥ तु र सी ह रि द र स न च हि ले मे ॥ त व आ त म
 गो क र नी ॥ ४ ॥ २ ॥ म म कि रे इ तौ ही अ र थ त त स
 रा सु र ति स बा हि नि र ति कौ उ र ध रि ॥ ग टि ल रा म
 पि यार ॥ टे क ॥ कौ हे कौ व कि व कि अ ज्ञा नी ॥ या
 ली क र त क पार ॥ का या की कि द ला प क रि कै ॥ यो ज
 किं न क र तार ॥ १ ॥ ब सैं स हे स ड क ई स अ हौ नि स
 स्वा स न को नि र धार ॥ श्रै सी सौ ज अ मो लिक ॥ हरि
 बि न क्यौं घो व धार ॥ २ ॥ प ल टे यां च प्रां न म न उ
 टे र टै रा म इ क तार ॥ श्रै सी क र हि तो ही इ प र म ग
 ति ॥ ब के न या वै पार ॥ ३ ॥ क र म लौ अं ग अं ग
 टि कै ध रि उ र ग्यो न बि चार ॥ तु र सी ज न म म र न

धु

इव बुद्धे। सुषमै होइ संचार ॥४॥ ॥१॥ ताहि सुमरि म
 ननि सिदि नहारी। अ परे पार अ नंत अ घ मो चन
 बसै सपीय सदा सुषकारी ॥ टेक ॥ जनम मरन चक्र
 हरन गु संई। परम करन घनुर ब्राकारी ॥ आदि
 अतिमधि असधिरि राये। मेदि आपदा विपति ह
 हारी ॥ १ ॥ ही नदया लक्ष्म्या सिंधसागरा। तारन ति
 रत परमहितकारी ॥ भंजन पापताप त्रिय मोचना
 वरन सरन राषन बनवारी ॥ २ ॥ प्रमते जपर कां पर
 मपदा प्रमजौ तिषगट अधिकारी ॥ जनतुर सीता ॥
 दिपर सपर ॥ होइ अपंग आत्मां संजारी ॥ ३ ॥ १० ॥
 क्लटि चल कुमन हरिजूकी बाहि ॥ जहां इव सुष ॥
 त्रियतापन व्यापै ॥ रे मिरहि एसी तल सुषमो दि ॥
 टेका ॥ जहां उतपति प्रलोक बुना ही ॥ उदै अस्त पदो
 उनाहि ॥ निरमल अकलपद पूरना परसत चरन
 सकल दुष जोहि ॥ १ ॥ विविधिरहित अथे अवि त
 रवर ये बीके लिकरै तामो हि ॥ २ ॥ गुना अतीत अं
 परमपदा परमते जयं डित कहूं नाहि ॥ ठरसी दा
 सकलास हेत स्यो ॥ निसिदिन चलिवसी एता मो
 दि ॥ ३ ॥ १ ॥ चल कुमन जहां जई एतहां रोमा ॥ अव
 गति नाथ निरे जन पूरेना ॥ संतनिको विष्णोम टेक
 चाडि अलप सुष गहो परम सुषा ॥ अ सो ज्ञान विचा
 रि ॥ बिषई चोर संगि बटवारे ॥ इनको संग निवारि ॥
 १ ॥ सबद विचारि चल कुमन मेरा ॥ समकिटी जन
 हीकी जौ ॥ सुषकी सीर सिरो वनिमा धौ ॥ जहां अष्ट

स

तरसयीजै॥ २॥ जहांउदैनअसुसूरनही चंदा॥ पाप
 पुनिदोकनांदि॥ तहांनिरमलरूपअनूपअबं-
 डिता॥ रमिरहिएतामांदि॥ ३॥ कालकरमतहांकबु
 नब्यापै॥ चलिजईएतहांधाइ॥ जनतुरसीनोब
 हसरोवर॥ ताहिमिलऊसुतिनाइ॥ ४॥ १२॥ वे
 हहोइगीदेहतुमारी॥ कारेकौयवगुमानकरत
 नर॥ सुनऊसुचितदेसीषहंमारी॥ टेक॥ यादे
 हीकौगरवईये॥ अंतकालनहीततुमारी॥ तुमबप
 रऊकीकौनचलावै॥ छाडिगाएबडेबडेअधिकारी॥
 ॥१॥ जारेनसमहोइबिनमांही॥ डारेकिरमपरतअ
 तिनारी॥ सुकरखानभबितयसुपंषी॥ इहैजांनि
 गतिसमकिबिकारी॥ २॥ नीतरिनरीमैलमलसूत
 रि॥ नोउंघारकरतदिनहारी॥ ऊवीकायाऊवीमाया
 ऊवीचालचलतनरनारी॥ साचीनिधिहरिदेअनि
 अंतरि॥ ताहिउलटिकिनजयौरेजंजारी॥ ४॥ मनी
 त्यागिमैतैजुनिवारी॥ मनपदनागबोउरधारी॥ का
 लनषायकरमनहीब्यापै॥ जनतुरसीसुमिरैजुमु
 रारी॥ ५॥ ॥३॥ रीकौनकेरहौकलंक॥ भजतांगम
 राजा॥ भवजलतिरिपारगए॥ सरेसकलकाजा॥ टे०
 पुनिकोपवाहबठौ॥ पापप्रचंडनाजा॥ दोतेमहा
 अधमजीव॥ सुगगनिजाइबिराजा॥ १॥ कठेकर
 मन्त्रमनांसे॥ मिटेइषडराजा॥ पऊंचेमहापदसुया
 न॥ सुपकरिषीतियाजा॥ २॥ परमजोतिदेषिजा
 इ॥ तहांबजैअनांहदवाजा॥ जनतुरसीएआनं

दरूप अनंत नैत्रमना जा ॥ ३ ॥ १५ ॥ दो वीर औ सो गो
 विंदना व। त्रिचुवन तत सारा ॥ मो हें सुमिरा इ सो
 ५ ॥ सुक्यो न करौ पारा ॥ टेका ॥ पापके समुहरना ॥
 त्रिविधितापनिवारा ॥ इंद्रीनके पदारपलमो ॥ जा
 रिकरै छारा ॥ १ ॥ कोटिपतितयावनकरना ॥ अनं
 तअधमउधारा ॥ आत्मा आनंदरूपा ॥ अनापनि
 अधारा ॥ ३ ॥ सुबुधिदेसे तीष अरपि ॥ सपनसुबि
 चारा ॥ सद्गति सुषको निधान ॥ सो कडषप्रहारा
 ॥ ३ ॥ अनहदधुनिप्रगटकरना ॥ परमजोतिवजा
 रा ॥ जनतुरसी आदि अंतिगयो ॥ अपनेरूपमंजा
 रा ॥ ४ ॥ १५ ॥ मेरे परमसनेदीरंमजी ॥ तुमजीवन
 खानअधारो ॥ टेका ॥ अनेकजनमबिबुरेक्षणमें
 बहतलीए अवतारो ॥ अबकै मनमै यो बसी ॥ धरि
 हो रामनरतारो ॥ १ ॥ घरीमहरतसोधिकै ॥ ब्रह्माल
 नविचारो ॥ मै अबलावारद्वरसकी ॥ मै योरसस
 जेसिंगारो ॥ ३ ॥ लगनजाइ हरिकुंदीयो ॥ तबव्याह
 नचल्यो मुरारो ॥ सुरतेती सुसंगिनयो ॥ तहां मुनि
 जनजुरे अपारो ॥ ३ ॥ डलहनिमत आनंदनयो ॥
 हरिआएवागमंजारो ॥ तहांपंचसषी देषनगइ ॥
 तहांडल्ले अलषअपारो ॥ ४ ॥ आनंदआगोनीन
 दी ॥ तहांतोरनततविचारो ॥ आरतिकलसबंदाइ
 करि ॥ तहांप्रेमधीत ज्यो निवारो ॥ ५ ॥ मोतीमनवो
 कपुराईयो ॥ तहां अनहदवेदउचारो ॥ अबगति
 संगिभावरिकैरी ॥ सषीगावैमंगलचारो ॥ ६ ॥ अ

बिनासीस्यौषेलतां तहांप्रेमनयोअधिकारो॥जन
 ठुरसीहिलिमिलिरहे॥अबधुंनिरिपजनमनिवारो
 ७॥ १६॥ तुमहीस्योहैपतिव्रतमेरो॥मनक्रमव
 चनसुनसुषसाई॥औरनआसोकाहकेरो॥टेक
 भावैनरकसुरगदेसाई॥भावैलषचौरसीफेरो॥
 जोवैसकलसुहागदेकहेरि॥राधौनिजचरननक
 रिधेरो॥मकुतमिलैबकुतैमिलिबिबुंरे॥काहं
 स्यूनलगतचितमेरो॥मेरोचिततुमहीतनराच्यो॥
 चाडिदीयोअंगसंगजुगुकेरो॥२॥तुममेरेमातपि
 ताबंधुजन॥तुमहीसुरसंतपतिमेरो॥जनठुरसी
 केऔरनकोई॥एकनरोसोअंतरितेरो॥३॥ १७॥
 देवतुमहीतुमटेरतसुषपायो॥तुमबिनजन्मअ
 नेकगुसाई॥इनिऊवीसायानरमायो॥टेक॥अव
 तुमसरनिसकलडषनासे॥प्यासोडुतोसुपीयत्रि
 पतायो॥अजहंप्यासअधिकतनसांही॥अमृतसे
 तीकौनअघायो॥४॥मिटीआपदाआनदेमारी
 मनउलुटिरहरिचरनसंमायो॥जनठुरसीसतगु
 रप्रसादे॥मनिषजनमनौफलपायो॥२॥ १८॥प्रा
 ननाथसूंघीतिहंमारी॥कोउरिसाइकरैकहामे
 रो॥हमजुगहैहैमूरतजिडारी॥टेक॥कौऊनिंदो
 बिंदोभलकौऊ॥कौऊदेऊनिधरकहोइगारी॥
 बैरभावउपजतनहीअंतरि॥तनमनरतभयोव
 रनसुररी॥१॥कौऊकहोयेसंतसुसीतल॥कौऊ
 कहोइहअंतिअहकारी॥बुरीनलीदीवतजिजगु

की॥ गुरगमिउलटी जुगतिविचारी १ सबैदोषदिल
 तैजुनिवारी॥ निरिधिनिरिधिजुपद्वनवारी जनतुर
 सीसुमरतसुषपायो अरसपरसुआतमामजारी
 ॥३॥ १६॥ रगलागौरमतासमस्यो जामनमरनदोउन
 रमनागा बूटा आवा ज्ञानस्यो टेक हरिरगलागात्रो
 शाभागा पोली जारेणानस्यु निरने दोइ प्रजो अ
 विनासी॥ कालनकु वैधानस्यु १ मनवसिकीया
 अतनदीया एतामातानामस्यु सबसुषपायाकरम
 नसाया तनमनस्येप्यास्योमस्यु २॥ आदिअतिअब
 गतिआराध्या राच्यानाहीअनस्यु जनतुरशीमि
 लिरदेयरसपर हासकबीरसुजानस्यु ३ २० व्याधि
 रेइहे जुनेई पदचानि परमात्मपदषोजिसुराना
 लेदजुगतिस्सुजानि टेक यजनकीपदचानिजुमा
 ही॥ होतब दोकीहानि सातई जुबुधिकिनकिनदोदो
 सोधिरिदोइनआत्स १॥ बारबारतोहिकहं जुबोरे
 तूनही सुनतबकानि यावा जीमेही रत्रिपत्रिकेको
 कोअरजेआलि २॥ एकउपजे एकदिनसेयामे ॥
 होइरही अचानि जकसंकबहनेटानाही या
 डनीया इषयानि ३॥ गुरकोम्यानगहिआनिअपू
 ता॥ यकुमनमनसातानि अचलजुकरियाहीतन
 माही॥ लैजुब्रह्मस्युवांनि ध॥ नानितरमत्यागिदे
 करमसब अरुतनिलोकाकांनि॥ जनतुरसीनिर
 नेनिसंकनजि॥ अपनो सारंगयानि॥ ५॥ ३१
 गोविंदनामतुहंरौदेकु तनमनआदिस्यो जस

ब्रह्मचरि ॥ सो तु म अ प नी ले ऊं ॥ टे क ॥ य ऊ वां चा यु र
 नो पर मा न द ॥ जा व त हे य ह दे ह ॥ घ न चां च ग लो नि ब
 दे ज न कौ ॥ तु म सौ नि ज क रि ने ह ॥ १ ॥ ना व वि ना क बु
 औ र न मा गो ॥ रा ज पा ट ध न मे द ॥ धू र रि लो नि ब र त द
 म दे ये ॥ जि नि जि न जा चे ये ह ॥ २ ॥ ब हू त क हा तु म स्ये
 क ह के शो ॥ सौ की ऐ क ही ए ह ॥ ज न तु र सी दे नां म रां म
 ता हि म जि के र हो वि दे ह ॥ ३ ॥ १२ ॥ मो हि आ र ति वा
 द र स की उ र ॥ अ ति ग ति जा रे मा ई री ॥ चि त च कौ र चा
 त्रि ग लो के र हो ॥ दे व न कौ पी व पा ई री ॥ टे क ॥ गो पी
 ए का द श इं डी ये ॥ वार वार स्यु आ ई री ॥ पर स न कौ प
 द पा प ता प व र ॥ घ न वा द र लो धा ई री ॥ १ ॥ मी न क
 हो ज ल वि न क्यो जी वै ॥ अ रु कं व ला कु मि ला ई री ॥
 उ र बि र हा क र व त लो वि ह र त ॥ वि न सुं द र सु ष दा ई
 री ॥ २ ॥ हरि वि न हि ये रो फां टे स ज नी ॥ ने न न ती र ब ह
 ई री ॥ पी य वि दे सि द्द रि द र स न ना ही ॥ अ व धि व
 ही ती जा ई री ॥ ३ ॥ अ ति त आ तु र दे वि रां म वे ॥ द र
 ये त्रि भु व त रा ई री ॥ ज न तु र सी द र स न दी या ॥ आ नं
 द व जी व धा ई री ॥ ४ ॥ १३ ॥ रा म रं ग जां नो रे ॥ स व रं ग
 नि कौ रं ग ॥ प्र भु मे रो अ व ग ति अ ल ष अ नं ग टे क
 रो म रो म न ष स ष स व घ ट मे ॥ प ऊ प वा स लो सो इ
 स सि ज ल कुं म सू त्र म णि म ण लो ॥ र हा जु अ ये सै हो
 इ ॥ १ ॥ ता रं ग कौ पर स त ही य ऊ रं ग विली मां न हो इ
 जा इ ॥ ज्यो सु ब द र प न मे सु ष नि ष त ॥ लो ह नि ज रि
 न हि आ इ ॥ २ ॥ पंच त त के रं ग मि ला वी ॥ कु नि त्रि

गुनरंग सोइ ॥ सब हीरंग करौ इक वीरे ॥ तापटंतर
हीकोइ ॥ ३ ॥ प्रेम प्रीति उर मां द्विब सावौ ॥ धर ऊरें नि
दन ध्याना ॥ जनतर सी तारंग कौ तब पावौ ॥ करह न
गति निरवांन ॥ ४ ॥ २ ॥ चलि चलि मेरे जी यत हांज
ईये हो ॥ जहां जगत सिरो मनि राम ॥ जनके सकल म
नोरथ पुरवन ॥ सुंदर सुषको धाम ॥ टिका ॥ जहा बिन
ही करहं वेजू तनु बिन मुधुर मधुर धुनि होइ ॥ नां नां
नांदव जै बंहा वै ॥ आनंद व ठिर हौ सोइ ॥ १ ॥ जहां
बिन ही पाव कते जतु ल्य बिन ॥ दीपक बलै सुनाइ
अंघ डउ जा रो होइ र हौ ॥ तहां ति मरन पर सै आइ ॥ २ ॥
जहां विविधि गान वा जा विविधित हां ॥ विमलि
रही हरि जोति ॥ महा सुमंगल होइ र हौ ॥ तहां निर
ति वरन बिन होति ॥ ३ ॥ जहां बिन ही देवल देव वि
राजै ॥ बिन ही सेवनिति सेव ॥ मन ही मन मां ही ॥ ४ ॥
मां ही ॥ तजि बौ आतम देव ॥ ५ ॥ जहां बिन ही तर
वर पडु प फूलि रहै ॥ बिन ही वास सुवास ॥ बिन ही
कंवको किला बौ लै ॥ बचन सुहावै तास ॥ ६ ॥ जहां
बिन तीर सरोवर सुनरा ॥ अमित वार न ही पार ॥ ज
हां बिन ही कंवल कंवल जु षिलि रहै ॥ मधुकर कर
हिं गुंजार ॥ ७ ॥ जहा बिन ही पवन पवन सीतल ब
बिन घन वरिया होइ ॥ जहां बिन ही बीज बिडल
भाव मकै तेज पुंज की सोइ ॥ ८ ॥ जहां न जन मजु
जम को नै ॥ त्रिविधितापक बुनाहि ॥ विबुरन
नेलन मितन छनि विवरन ॥ से विवै पनहिता माहि

जहं रवि चंद्र ते जन ही तारा ॥ उदै अस्त न ही होश ॥ ज
नतुर सी प्रकृति पुरव कुमुषा ये संत लये जल को छ
॥ ६ ॥ २५ ॥ २४ ॥ तारा मलार ॥ संत हो सो है राम हे मा
सा ॥ पिंड ब्रह्मंड निरंतरि पुरन ॥ परमानंद पियारा ॥ वे
अनेत लोकता मां हि बसत है ॥ रहत सकल तै न्यारा
सि वसन का दिक षो जि परे है ॥ कोह अवि गति वार
नयारा ॥ १ ॥ आदि अंति उभे पय निरमल ॥ रहत बर
ल आका रा जनतुर सी बहरो महे मारा ॥ आदि सुमि
रो बारं वारा ॥ २ ॥ १ ॥ सोई जन पावे दर सतु हारा ॥
मनसा वाचा औ र कर मता ॥ ना वले इ एक तारा ॥ टेक
प्रेम प्रीतियों मारि ग जो वै ॥ पल पल वारं वी रा ॥ इत
वत नित वै न ही नित यत्तरि ॥ तुम ही से ती प्यारा ॥ १ ॥
चात्रि ग ज्यो चित वै निसि वा सु रि ॥ पिय प्रिय करे
मुकारा ॥ मुक ति बै कुंठ क बु न ही बां बे ॥ बां बे नि
ज ही दारा ॥ २ ॥ कनक को मनी सब सु य त्यागे ॥ त
न मन ती करे वारा ॥ जनतुर सी ता हि मिल हि पर
स पर ॥ सोई सिर जन हारा ॥ ३ ॥ १ ॥ हरि बिन ए दि
न जात इ ध्यारे ॥ सकल सिंगार से ऊ सु य त्यागे ॥
जा दिन तै न ए न्यारे ॥ टेक ॥ मुनि शी प्री सां वन स
ति आइ ॥ बरषि सबै न पारे ॥ हमारे तन अजहं
ही उलहत ॥ बिरह अग निके जारे ॥ १ ॥ का स्यो
कहं को न य हमाने ॥ अंतरि करवत सारे ॥ मन
हि मन विस्तरि बिरहनी ॥ मु र छि नै न जल ग
रे ॥ ३ ॥ आरति वलि आसचा न ग लौ ॥ सारी रै नि

करे॥ जनतुरसी घनुषीनिजांनिकें॥ घंनलों आंनि
गलारे॥ ३॥ ३॥ बादलवरषंनलागेदोई॥ ररौममो
उरमांदिउमगपके॥ जलयलडारेबोई॥ टेक॥ उनै
आईघटाज्ञानकी॥ दामनिदमकतसोइ॥ प्रीतिपत्र
नबलिहरिजलबूठो॥ अंमृतधारसजोइ॥ १॥ तप
तिमिटीतनमननयोसीतल॥ सुरतिसुधारसजोइ
नषसषतग्रीआनंदउपनौ॥ सुषखिलसैसबकोइ
॥ २॥ डुरनबिमिटिसुनबिकुपनौ॥ दुषदलिदुगा
एषोइ॥ तुरसीआदिअतिनदुअनैता॥ मंगलगा
वैलोइ॥ ३॥ ४॥ नलीईग्यानप्रकासनयो॥ मित्यो जु
तिमरतनमनसुरऊनौ॥ कालप्रिसायइगयो॥
॥ ५॥ टिक॥ पापपुनिकोउदिमथाक्यो॥ निरउदिमहोइ
रहो॥ जुशमरनजमजीतिजुगतिस्पू॥ हरिमारिग
निबहो॥ १॥ साचकृवनिनकरिदिषलायो॥ तरम
तजिकरमदह्यो॥ निरगुनधितमधिलीयोजुग
तिस्पू॥ छाउसैरगुनसह्यो॥ २॥ यंचततगुनतीनि
विविजित॥ सोईपदउलटिगहो॥ जनतुरसीगु
रकवीरकृपास्पू॥ सकलसुहागलह्यो॥ ३॥ ४॥
रामगयसोईसंतजनसारे॥ प्रेमप्रीतिअनुरागस
हिति॥ नितिनिरयेनिजरूपतुम्यारौ॥ टेक॥ काम
क्रोधतनिलोतद्विषडे॥ मोहकौकरैप्रहारौ॥ यतर
जतंमतीन्तगुनआगे॥ माडैअचलअधारौ॥ १॥
सीतउसनदुषसुषसंमिजांनै॥ हरषसोगस्यौ
न्यारौ॥ मानिअमानिसमानिविचारे॥ पारबह

को प्यारै ॥ २ ॥ रहै अरीऊनरिऊवैकाह ॥ हरि दरसनमं
 तिवाये ॥ जनतुरसीजाकेदरसतंमनासे ॥ परसनि
 होइउजियारै ॥ ३ ॥ ६ ॥ २४६ ॥ रामटोटी ॥ माधौजी
 निरमलनाम तुहांरा ॥ सुमरिसुमरिजनउतरेपा रा ॥
 टेक ॥ नावलतपरदाहोइहरि ॥ अविनासीपीवमि
 लहिदहरि ॥ १ ॥ नावलतसबकटहिविकार ॥ काया
 कंचनमनहोइसार ॥ २ ॥ ततमहिततसारमहिसा
 रा ॥ जनतुरसीकेनाव्रअधार ॥ ३ ॥ १ ॥ देवनिरंजनदे
 वनिरंजन ॥ देवनिरंजनदुषकेभंजन ॥ टेक ॥ श्री
 रदेवसबहीमनरंजन ॥ कोउनसमरथकालहि
 गजन ॥ १ ॥ जामनमरनत्रासतनमेंघन ॥ तुमबि
 नकौनकरैप्रभुषंडन ॥ २ ॥ तुमरेमातमातपितावै
 धूपन ॥ तुम्हारेलाउलडैतुरसीजन ॥ ३ ॥ २ ॥ हरिह
 रिहरतहंमारेपाप ॥ हरिहरिकहतमितेनियता
 प ॥ टेक ॥ हरिहरिकहत रहतमनधीरा ॥ हरिहरि
 कहतमितेसबपीरा ॥ १ ॥ हरिहरिकहतजुभरमवि
 लांही ॥ हरिहरिकहतकरमकटिजांही ॥ २ ॥ हरि
 हरिकहतमिलैहरिप्रांती ॥ बुटिजाइसबआवाग
 वनी ॥ ३ ॥ जनतुरसीहरिहरिजपिलीजे ॥ जपेही
 जुगिजुगिआनदकीजे ॥ ४ ॥ ३ ॥ सैंद्रीहाप्रांती
 स्वांमियो ॥ रुचिमांतीकांमनिकांमसूं ॥ टेक ॥ क
 नककांमनीकासंगजावै ॥ रामभगतिहिरदैन्हि
 आवै ॥ १ ॥ पांषडकपटरहैमनमांही ॥ साचासा
 हिवसौरुचिनांही ॥ २ ॥ स्वादबादकरतासच

पावै॥ साधसंगतिदेव्यांमुरबावै॥३॥ तजिअमृत
विषयांदिनिकारी॥ जासेजमखरिहोसेनारी॥
॥४॥ जनतुरसीहनकासंगनकीजै॥ रामरसाइन
नरिनरिपीजै॥५॥ ४॥ आवहोपीव आवहो॥ वि
रहनिऊरैदरसनिकारनि॥ संईयांदरसदिया
वहो॥ टेक॥ सेरुसंवारैपंथनिहारै॥ तलफतरे
निबिहावहो॥ १॥ षरीउदासीदरसपियासी॥ मेह
रवानदिषलावहो॥ २॥ दमघरिआवौबिलमन
लावौ॥ प्रेमपयालाप्यावहो॥ ३॥ तुरसीदासदरस
पियासा॥ तुऊमिलनेदाचावहो॥ ४॥ ५॥ प्रानना
थतिनिपाया॥ जिनिकीपीतिलगीअनिअंतरि
बिमलेबिमलिजसगाया॥ टेक॥ नयेबिसरजनआ
तआलंबन॥ रामनामल्योलाया॥ गयेउलेधिया
कृतबाजीकौ॥ बऊरिनइतजुगिआया॥ १॥ तन
मनघोनअरपिमहाप्रभुकौ॥ पाचौरिषपलटा
या॥ जनतुरसीसुषसागरमाही॥ सनमुषहोइसं
माया॥ २॥ ६॥ धनिधनितेघानी॥ जेहरिनामजपे
हिरदैमुधि॥ बोलैअमृतवांनी॥ टेक॥ परनिदाप
रपचनहीनावै॥ साधसंगतिरुचिमांनी॥ जासुष
मैयऊजगुलपटांना॥ तासुषसूदीकांनी॥ १॥ का
मनव्यापेनहीकलपनां॥ मुकतिसबैबिसरांनी॥
मुमतिसषीकौसादिसंगा॥ जिनिमुरतिअगम
गौतांनी॥ २॥ अनहदधुनिमेंजाइसंमाने॥ परम
गौतिपरवांनी॥ जनतुरसीतिनकी॥ बलिहारी॥

जिनि त्रैसीमतिगंनी ॥ ३ ॥ ७ ॥ म नारे उलटि आव
उलटि आव उलटि आव अपने उरमा ही ॥ उलटे बि
न अरध उरध ती निलोकन वषंड सुव ॥ वीर वीर नर
मेतौ लहैन अपनौ साई ॥ टेक ॥ यहु संसार नर मरू
प ॥ मरगत्रिसनां कौ सो जल ॥ आदि अति मधिजा कौ
देधी एजुनां ही ॥ तामै कलिके ते जीव ॥ बीसरे अप
नौ पीव ॥ ग ए विलाइ कहत ह ॥ सुर योज हन आ ही
॥ ॥ ब्रह्मलोक इड लोक ह लौ जु फिरि आवै ॥
ओ रह जु गति उपाइ अने कहें जु बनावै ॥ तो
हउ रधि रिन ए बिन अपनौ स्वध आत्म स रूप ॥ सुनि
र सवधौ बताहि सुपन कन पावै ॥ ३ ॥ प्रीतिलाइ पंग
होइ ॥ अपनै रिदा कंवल माक ॥ इते ही में उलटि दे
षिसम जिहै सवा ई ॥ जनतुर सी आपनौ सुमरि राम
षंडिको धलौ नकां मजिनि जिन सुमस्या अपनी ॥
तिन आत्म गति पाई ॥ ३ ॥ ६ ॥ निरख्यो करै निजरूपने
मस्य ॥ बार बार घीति अरूपे मस्य ॥ टेक ॥ अपने हि
रदा कंवल के मा ही ॥ ओ सी वीर ओर कहें ना ही ॥ १
चित प्रवाह उलटो करिली जै ॥ इत उत कहें जानन ॥
हि दी जै ॥ २ ॥ कूरम लौ उलटा उर आ ई ॥ जनतुर सी
नजि त्रिसुवन गई ॥ ३ ॥ ए ॥ इहैन गति मगवंत हि
भावत जो जिए जेन के न होइ आवत ॥ टेक ॥ इंद्री ॥
उलटि अपु वी ल्या वै ॥ कूरम लौ होइ के जुरहा वै ॥ १
आपन हि रै कंवल के मा ही ॥ अपनारांम विसारे
नो ही ॥ ३ ॥ उर सी तन धरिले न लेवै ॥ अन्य न होइ न

जैव्यात्मदेवै ॥ २ ॥ १० ॥ इहै जुन गति तुम्हारी जी ॥ काजा
नैयेसं सारी जी ॥ टेके ॥ जउ अस्थूल मन्य गति विसरा
वै ॥ चेतन्य धागे सौ मन लावै ॥ १ ॥ धागा रूपी केवल
राम ॥ ताहि न तै त्यागे सब काम ॥ २ ॥ जनतुर सी सा
चो जन सोई ॥ त्रैसै राम मंत मै ता होई ॥ ३ ॥ ११ ॥ २५
राग बस ता ॥ राम इक डुष हरि निवारि मोरा ॥ मै व
दी जन सरनितोर ॥ टेके ॥ कविन व्याधि घट मै अ
नंत ॥ तुम बिधि बजं अंतर पारे नंग ॥ मै अनाथ ब
लना ही मोरा ॥ गुन इ दी व्यापे अधिक जोर ॥ १ ॥ मन सा
सरय नीस गिही लार ॥ निस वा सु रिलागे बार बार
रोम रोम विष जटै धाइ ॥ तातै मुर बिमु र बिजिय
जाय ॥ २ ॥ तुर सी दा सजन करै पुकार ॥ विष हरि
निवार कं अब की वारा ॥ दीन डषी सरनाई लेइ ॥ तु
म सुष सागर देवाधि देव ॥ ३ ॥ १ ॥ अब मै आयो सरनि
तुम्हारी ॥ तुम्हो क दया ल मुरारी ॥ टेके ॥ यक संसा
र नार विष सागर ॥ डष संताप घने रा ॥ नमकी त्रा
स अधिक मोहि व्यापै ॥ तहो न मनै मन मेरा ॥ १ ॥ जो नि
अनेक जीव जल थल मै ॥ ककन ही सच पाया ॥ सुक
र सोन पतंग कीट होइ ॥ बहू तै नै बवनाया ॥ २ ॥ तुम
दीनानाथ दयाल दयानिधि ॥ कृपा सिंधु मुरारी ॥
नारनतिर न परम सुष दाता ॥ सु रवो कं आ सहं मा
री ॥ ३ ॥ मन सावा ना आन आसत जि ॥ साही आसतु
हारी ॥ जनतुर सी कोइ है क्रिया करि ॥ आवागवन
नवारी ॥ १ ॥ १ ॥ धरि आ वही सोई यावे गि मोरा ॥ मै

वेरवेरबलिजात्रंतोर॥टेक॥जैसैंचात्रिगपियपियक
 रैपुकारा॥घनविनजकनहिंजियलगा॥जैसैंबिर
 हनिकरैदरसनिकाजि॥प्रभुतुमविनमेरौजनमुवा
 हि॥१॥तेरौपेयनिहारौपीव॥विनदरसनतलफेमो
 रजीव॥अवपीवत्रैसीकरहूआइ॥जैसैंउगैस्तर
 तंमजाइ॥२॥जनतुरसीकेआसतौर॥विनदेषेजी
 वजाइमोरा॥डषीयासुषदीजैबेगिआइ॥पीवनैतौ
 लागौतोरयाइ॥३॥३॥मजिरामनामआधारहोइ
 विनारामनहीहोओरकोइ॥टेक॥साधसंगतिमिलि
 करिबिचार॥दुषनाहीव्यापेसुषत्रपार॥१॥सुष
 सागरअनंतअपारदेव॥मनताहिसंभारऊकऊसे
 व॥२॥जनतुरसीत्रैसैलाइरेग॥कबहनअंतरहोइ
 भंग॥३॥४॥अबतूआवरेआवमननजिलैरामजी
 राम॥सबसुषसागरसबसुषदाता॥सबविधिपूरन
 कोम॥टेक॥यऊंसंसारभारविषसागरतामेंजकन
 हीकोइ॥आतमेंकैअसथालेबेसिकरि॥निरमल
 हरिपद॥३॥१॥जनमजनमकासबदुषनासै॥ज
 तमजुराभवजाइ॥जनमजनमकीविपतिनिवारै
 त्रैसाहैरघुराइ॥२॥अगमअघाधअनंतअघमो
 घन॥निगकारनिजदेव॥जनतुरसीसंभारिरैनि
 दिन॥विमलिविमलिकरिसेव॥३॥५॥अबतूआ
 वआवरेआवमनघीतमकरिएसोइ॥षंडब्रह्मंडअ
 नंतलोकमेंतासमिओरनकोइ॥टेक॥निगलंव
 निजदेवसुसाई॥भवभजनभगवत॥सबगुनरहि

जो

तसकलकीजीवति॥सबसाधोंकाकंत॥१॥सकलवियापीर
बतैन्पारा॥सबदेवोसिरिदेव॥जामेंमरेनसंकटिआवे॥
३॥सौलथअमेव॥१॥सबसुखसागरसबसुखदाता॥सब
कासिरजनहार॥जनतुरसीआवागोंनमेटिमव॥रावेच
रनमेजारा॥३॥६॥नरमिलियौचाहैरामको॥तौप्रथमप्र
हरिकामको॥६॥टेक आसनसाधिउपाधिहरिकरिया
चौपवनाफेरि॥आत्मकैअस्थांनिबैसिकै॥हरिमघ
हितस्योहैरि॥१॥मनबसिकीजेअंतनदीजे॥लीजेहरि
कानाव॥पलमांहिपरगटहोहियरमानेदा॥जोमनराखे
गोव॥१॥निरतिसुरतिसमिसमिससिसरा॥नादहिवि
दमिलाइ॥जनतुरसीमनक्रमबचनसहीस्यो॥पदमेंपां
नसमाइ॥३॥७॥नरअसैतरहरिध्याये॥जोचाहैसुख
आइरे॥टेक घूरबदेसपरहरि॥पछिमघरिआसन
कीजेआइ॥तहावास्वासहिस्वाससुमरिहरि॥ररेममे
चितलाइ॥१॥तहोबिनकरमालाफेरिशीतिस्यो॥मनम
साउलटाइ॥बिनहीपायननिरतिगंमकी॥बिनर
नांगुनगाइ॥१॥नवसैनंदीयासांबिकूपमें॥उलटा
रचटाइ॥जनतुरसीदशवेदिनलीनके॥परसि
भुकेपाइ॥३॥६॥सषीआनंदकीरितिआई॥उ
टिलगोवाउनमनीस्योमन॥तनकीविधागंवाई
॥पांचसषीमिलिमंगलगावे॥उडतबग्यानगुला
॥१॥एनततग्वालगोपीइंदीजन॥आइएइका
॥बेल्तफागअनिअंतरिपीयस्यो॥आनंदबयो

पूया रा ॥ १ ॥ जैत्रे कारक रेसवकोर्क ॥ गनगंधरबसुर
 वा ॥ दीनलीत आनंद विनोद सु ॥ जागिरदेहरिसे
 ॥ २ ॥ आनंद ही आनंद रात्रितसयी ॥ जहांतहांजि
 तं कित सोई ॥ जनतुरसी वासुषकी महि मा ॥ वरनि
 स कैका कोई ॥ ३ ॥ ॥ सयी आ ज अनूप बन्धो बसंत
 आनंदसुं म औ आपनो कंत ॥ टेक ॥ जहां सत संगिति ॥
 सो भा अनंग ॥ ताहि देषि आनंद पावै न अंग ॥ बेसे ॥
 गुनगा वै श्री गोपाल ॥ तहां बाजे विविधिव जहिरसा
 ल ॥ १ ॥ तहां उडत श्री र गुलाल अंग ॥ तहां अरसय
 रस आनंद रंग ॥ जहां कौलव ठिर हो अपार ॥ तहां जै
 जै सव करहि उचार ॥ २ ॥ जहां जित कित साधु संत
 सोई ॥ गुनगा वै नाचै मगन होई ॥ मानूं उ मुगिसुधा
 सिंधु आइ सोई ॥ सब सभारही सुख मै सं सोई ॥ ३ ॥
 जहां सीतलनी र सुंग धवास ॥ तहां कंवल फूलिकरि
 रहे बिगास ॥ जहां मधुप साधु ब सोई ॥ हरिचरन कं व
 लुरसरहे मोई ॥ ४ ॥ जोई जोई म विधिव रनी ब सोई
 सो सब घट में जनलये कोई ॥ तुरसी जोलये सु सुष
 समाई ॥ जुगि जुगि जम ड्य दर सैन आई ॥ ५ ॥ १०
 यह सब देखी स्वारथ की डनी ॥ तातैं त्यागि गए मुनी
 टे ॥ तमे राहें ते व ड संत ॥ करि जु मिले सब लोई ॥ ज
 ब स्वारथ की कोर घटै ॥ तब कोऊ नहि कोई ॥ १ ॥ जब
 लगले बदेव लालि व क बु ॥ तब लग घी तिसगाई ॥
 वोहवा के वोहवा के आवै ॥ यू खै कुसल स वाई ॥ २ ॥
 ऊपर मिथ्यां हां जी हां जी ॥ पंतंग को सौरंगा ॥ करिक

रि के जु मिले सबको ॥ ॐ ॥ अंतिकालिनहिसंगा ३ म
 कुब्यो हार देषिया जगको उलटि अरु वा आया जन
 तुरसी चित चात्रि गचको रलो लै हरि चरनो लाया ४
 ॥ ११ ॥ २०० ॥ गर्कफी कलि मै निकलंक हरि गाइ एही
 केवल हरिको नांव सुष रूपी मतनिके संगि मिलि ज
 हांत हां सब वाव टेक कोटिक मतकोटिक चतुराई को
 टिक करनी आन सब परवरि ने म सु सु म रि रे रामना
 म नृवांन ॥ १ ॥ ता आ रा ध त श्रु च अ मु न की सक न क
 शी ए को २ जेत के न जहां उर वा हरि सु मिर त होइ स
 होइ ॥ २ ॥ सतजुग सत त्रेता तप रूप र पूजा को परना
 वा अब कलि मे एक राम नाम संसि नां दिन आन उ
 पाव ॥ ३ ॥ पतित पावन फुनि दीन बंधु प्रनु असरन
 सरन सब वाव अधम उधारन अनेत लोकपति ।
 अे सो है हरि नांव ४ सुष सरूप सदगति पहंचाव
 ना ५ सु सं मुद्र की नाव जे वै से ते ते व उतरि गये बि
 न न तयो विरमाव ॥ ५ ॥ अरथ धरम अरु को म मो
 बिकी है अटनि जषांनि ताहि मुनत मुमृत अ
 रूगावत पने गट होवै आनि ६ कही कही लौ बर
 नौ महिमा बरने बरन निजाइ कोटि पतित पावन
 नये जुगि जुगि अरधना म गुन गाइ ७ वेदपुरा
 न मुमृत सतनि मिलि मथिका टो धित यहु जन
 तुरसी क है सु मरिताहि निसिदिन जनम सुफलक
 रिलेक ॥ ८ ॥ १ ॥ हरिको अमृत सगावते हो का कैर ॥ ज
 ही है कलंक ॥ जनम जुरा ५ षतें व उ बरि गये मिटी

हे मरन नै संकटे कहीते अधम अधमन के राजा प
 तितन के सिरिताज ॥ अधना वृते देव उधरि गये की
 यो है श्रापनो काज ॥ १ ॥ जनम ही न करम ऊही न फु
 निजाति पांति कुल ही न ॥ न एजी वस्यो सी वसु मरिह
 रि ॥ गुगजु गकिते वहीत ॥ १ ॥ ती बरता संगये तही
 बलि ॥ जहां दी न दया ल ॥ आ रि च्छंति आंन द सु म वि
 लसे ॥ क ब ह न न सै गौ काल ॥ ३ ॥ जो थे फिरि कै मये
 सोई ॥ करम काट मलयोइ ॥ जै सी विधि पारस के पर
 मत ॥ लोहा क च न होइ ॥ ४ ॥ कहा जु बल रजनी वपु
 री को ॥ जहां उ दै नयो नान ॥ यों बना म उ च र त ही है
 गये ॥ पाप पट ल विली मान ॥ ५ ॥ जनम मरन न व
 काटि फंदये ॥ मिले महाय द मांदि ॥ जनतुर सी ज्यो
 यलिता सागर मिलि ॥ ब हू स्यो वि बुरै नादि ॥ ६ ॥ २
 कलि मे उपासना नावकी हो ॥ संत मिदई है दिषाइ
 ताहि पर हरि बहियरे ॥ जु बा हरि ॥ ते न र म्प गये है वि
 काइ ॥ टेक ॥ नाम ही जय नो मत यती र थ ॥ नाम ही वि
 धि विरत दोन ॥ नाम ही अति युनी त करि गायो ॥ जु
 गि जु गि वेद पुरांन ॥ १ ॥ नाम ही जोग जि गि युनि ना
 म ही ॥ नो म ही ग्यांन अरू ध्यांन ॥ जे निज के नाम ही
 स्यो रता ॥ पार नये तेषांन ॥ २ ॥ नो म ही देव देहरा नां
 म ही ॥ नाम ही न गति रत्ना व ॥ नाम ही पूजा नो म ही
 पावा ॥ नो म सिरो म निराव ॥ ३ ॥ सकल विधि जिनि न
 महिं ज्यो न्यो ॥ पर हरि आ न उपाइ ॥ मन क्रम बचन
 नाम हि स्यं राते ॥ ते निज दास कहाइ ॥ ४ ॥ अधम

धारदीनबंधू पतितनकोयावननोम॥निकलनकोक
 ल॥निबलनकोबल॥निरधेनकोधनरंम॥५॥नामही
 नवसमुद्रलंघनको॥सफरीनावजुसोइ॥आरोहनक
 रिकरिकेतेजीवा॥पारपकुंतेलोइ॥६॥जेनिकेनिजेसे
 तैसै॥सुधचितहोइसुमिरोरंम॥तेषांनीपलटिकेव्रह्म
 नए॥उस्योजीवकौनाम॥७॥श्रुतिसमृत्यशास्त्रसब
 हिमिलि॥मधिकारोद्वितसार॥जनतुरसीततना
 मरंमको॥उरधरिउरोपार॥८॥३॥२०३॥गग
 शोड॥डनीयासंकामेराजी॥मेदरसनचाहतेराजी॥दे
 जलहरनस्योवारनहीपार॥वात्रिगघंचनवोरैल
 मार॥१॥निसिदिनपियपियकरतबिहाइ॥घनवि
 नतनकीतपतिनजाइ॥२॥दयाकरकुदरवोरघु
 वीर॥बरसिबुजावोमेरेतनकीपीर॥३॥जनतुर
 सीकेआसतुम्हारी॥दरसनदेकुदयालमुरारी॥४
 ॥१॥पाचौअपरबलनारीजी॥यकुमेठोविपति
 वमारीजी॥देका॥कैसेनामजयोमैतोर॥पांचपची
 सौबापैमोर॥१॥भवसागरअतिवारनपारपा
 रिउतारहंसिरजनदार॥२॥तुरसीदासजनक
 रेखकारा॥सबहुषमैटिदेकुदीदारा॥३॥२॥रा
 मसुमरिमनमैरा॥दरिसबहुषनजनतेरा॥
 टेक॥तजिउरमतिजिगंमअंधार॥सनमुखसा
 रिसिरजनदारी॥१॥जनमजनमकेमिटदिजजा
 ला॥ऐसासादिवदीनदयाल॥२॥जनतुरसीताकी
 करिसेव॥सुषकोसागरपूरनदेव॥३॥३॥देनर

तैमोमनमानतताही १ अरधउरधमधिलोकं तहां २
 जजनविनाडुयसोकं ताधैगुरजनवताया करिन
 जनप्रमसुषयाया ३ यकृदिष्टिमुष्टिकीबाजी तहां
 बरततसदाडुग जी कृकरजीसुषकुमपासा ता
 तैकुमस्योमंडोविसवासा ४ जैतेसुषयाजगुमांही
 तेतेमबदकैजांही वाअघटमुषसंम
 करसीतहांरतनयेघांनो ५ ६ देवाकुमदरसनके
 काजाहो अऐरकसमिराजाहो टेक टगरडरघोरहाथी ७
 बहंपायकसगिसाथी सुतवित वनितासुषरासी
 सवत्यागिनावनवासी १ ऊंचेअतिकनकअवास
 विचिविचिमनिनकेउजास हीरेघनमानिकमांती
 तिनिगांविनवाधीयोती २ सुषयेकसिघांनपान । स
 ऊपरितानीयेबितांनं करतेबऊनोगविलासा ति
 निक्काडिटईसवअसा ३ दरिबजतेबहेबाजामा
 नौघोरिरहेघनराजा सुनीयोनपरतौकान तेजा
 यमंडेमेदान ४ ससिद्विमलनसनअनवास रसरा
 गरंगकविलासं होतेनोपतिअधिकारी तेपरतिब
 नऐनियारी ५ सबकुलअतिमाननिवारे नजिगो।
 बिंदकारिजयारै जाइमिलेपरमसुषमाही जन-
 तरसीबकुस्योमांही ६ ६ देवाकुमदरसनकेरा
 तेहो तेमतिवारेमातेहो टेक विसरेबाजीब्योहा
 राकबुरहीनतनसुधिसारा रसिनारूचिअमृत
 पीवै पीवैनितिअगिजुगिनीदेहो १ उलटिकी
 याविश्राम जहाकोलकंबलनिजधामं तहाउव

३॥ तहां आरति सुं सुरतिसंमाइ ॥ ३॥ आरति अहित न
गति जो करै ॥ प्रभू कौ नावनपलवी सरै ॥ तुरसी सुषमै
रहा संमाइ ॥ बहरिन इत जु राजनीं आइ ॥ ४॥ १२॥
देवा अरथी अरथी मांही हो ॥ पूहन भगति पलता ही
हो ॥ टेक ॥ तु बकटं बतजिबन कं जाही ॥ बनमै बैसिजु
तयही कराही ॥ स्वर्ग सुषनि सुं लो नत होइ ॥ करमइ
द्वीन कौ रहे संजोइ ॥ १॥ ज्ञानइ द्वीज हांत हां चलि जां ही
रोके रोकी हं नर हां ही ॥ अपने अपने सुषके काजा ॥ वम
डिचलै जू संत राज राज ॥ २॥ येक अरथ अरथै एक वा
हो ॥ यकूपन आदि अति निरवा हो ॥ तातै परै न गति सुं
इरि ॥ काम नो निगये यलु चुरि ॥ करमइ द्वीनिको
संनम करै ॥ ग्यानइ द्वी उर तै परे रहे ॥ होइ निव काम ल
इ हरिना मातौ पावै पूरन विप्राम ॥ ४॥ अहि निसि नजे
निरंजन देव ॥ त्यागि देइ अंजन की सेवा ॥ तुरसी सुष
बिल सै भगवत ॥ ता सुष कौ नहि आदि न अंत ॥ ५॥
॥ १॥ देवा जग्यासी जन तरे हो ॥ तेक लस सुं नरे ही ॥ टे
॥ प्रथम सब दब्रह्म अंगो गा है ॥ श्री रनी रलो जां नो वा
हो ॥ यक माया यक ब्रह्म जु सोइ ॥ या जु गति मै रहे मन
गोइ ॥ १॥ दीन लीन होइ सत गुर सेवै ॥ बिन कहन चित
इत उत देवै ॥ गुर के चरन कंवल सरनाइ ॥ तरवेली ॥
लौरहे लपटाइ ॥ २॥ आलस मंखरता मसव्या गो ॥
सत सुष सदा रहे गुर आगो ॥ सा रासा रजनत के का
जा ॥ अहि निसि सुं मिरे करै इलाजा ॥ ३॥ तप करिका
रतन के मलदह ही ॥ मन हे की विरति उलटी गहि ही ॥

रमति हरिके निवारि ॥ १ ॥ दीन दयाल कल अविनासी
सनमुष सांई सि रजन हार ॥ तारनतिरनपरमसुष
दाता ॥ ताको तू कवहन बिसारि ॥ १ ॥ मनिषा जनम
व करिन दीपावै ॥ अबकै करिले सुकृत सारि ॥ जन
तुरसीक गए हरि सेवा ॥ तालावेली राम संभारि ॥ ३ ॥ २
रे मन भजिले राम अधार ॥ राम भजे नही तो मुषि चार
टेक ॥ जब षष्ठे डन होइ निज देव ॥ ताकी तू निदं चल
करि सेवा ॥ ॥ हरि हरि देक त चांत हरि ॥ तजि डर मति
पीवमिलहिद हरि ॥ १ ॥ जन तुरसीकै इ दे गुरग्यां निरा
मसु मरि तजि ह जीवांनि ॥ ३ ॥ ३ ॥ तामनके मसत गपरि
धरि ॥ जा मे उवै बिषे अकुरा ॥ टेका ॥ लाये कुं हरि नायन
लागे ॥ नीतर तै बाहर कौ जागे ॥ विषय न सेती लावै घी
ति ॥ लाडै राम भजन ररीति ॥ १ ॥ ग्यांन ध्यानकी सुधि
दीन जो नै ॥ अदिनि सिसारि गफिरै अमानै ॥ मानै नही
सत गुरकी बाचा ॥ पर हरिकनक गद मणिकाचा ॥ ३ ॥
काम दामके मुष दिवचा है ॥ वही जाइ विषयाकै बाहै
भजे नही सुष सागर राम ॥ तुरसी उर मधि एक ह जो म ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ नाव जपत ते रौक दाला गौ जाहि जपे जम कौ डरना
गै ॥ टेका ॥ नाव जपत उर होइ उजीया रौ ॥ सोईनां मजपि
मांडि अहारौ ॥ १ ॥ पूंजी घटै न होवै हांनि ॥ हरि सुष अघ
टउदै होइ अंनि ॥ १ ॥ रोम रोम उपजे अानदा संसे सोक मि
टै षष्ठ दंदा ॥ ३ ॥ जन तुरसी जपत निरंजन नांवा ॥ तनम
नसफल होइ सब काम ॥ ४ ॥ पा जपि रे जीय रामनाम
दारी ॥ जाहि जपे नव सागर तिरी ॥ टेका ॥ जोग जिगिसव
होको ठीको ॥ सोई नाव जपि जीवन जिय कौ ॥ १ ॥ सक

लसतजनसुमरैतासा॥ होइ रहेअजरअमरअविनास
॥३॥ जोतिजगतेअमृतपावै॥ नावनिरूपतइहसुषत्र
वै॥ परापरीपदमेंहोयतावा॥ करसीसुमृतनमलेनावा॥
॥४॥ ६॥ सोहहंसाजापजयंत॥ सोईजनपरमजोतिप
संत॥ टेक॥ अनिलमदिरमेंअनिलअस्थाये॥ अनिलज
गाइजुगतिष्यो जाये॥ १॥ गंगजमुनसुरस्वतीमिलावै॥ सु
नमुषहोइसुषसागरध्यावै॥ २॥ तहोअनहदवजैगजै
ब्रह्मंडा॥ तेजचमकैमहाप्रचंडा॥ ३॥ निरसिधनूरनिरंत
रिवासा॥ तुरसीनिजनपरसेतासा॥ ४॥ ७॥ रामनामदिर
हैधरिलीजै॥ जगसौंप्रीतिकहौकाकीजै॥ टेक॥ मनिघात
नयायोबडिभागि॥ मतघोवैडुनीयांसगितागि॥ कन
ककांमनीतजौहविकार॥ मनसावाचारांमसंनार॥ १॥
३॥ वैमप्रीतियोंराघोलाइ॥ त्रैसैउनमतिरहोसमाइ
॥ २॥ ६॥ जगसौंप्रीतिकरौजनकोइ॥ हंसमुवोकऊवांसंगि
होइ॥ टेक॥ कनककांमनीविषफलहोइ॥ जिनदेष्णांवि
षव्यापैसोइ॥ यायेतैतनकोहोइनाश॥ इनकासंगतजै
सोइदास॥ १॥ अदिनिसरहैएकस्यौलीन॥ जैसैपांनीपां
हीमीन॥ तवसंसानहीव्यापैकोइ॥ निहचैसबसुषपा
वैसोइ॥ २॥ जनतुरसीत्रैसाजनकोइ॥ रामनामजपि
निरतैहोइ॥ विनमनैलीरहैलगाइ॥ आयातजिहरिसां
दिसमाइ॥ ३॥ ७॥ त्रैसीचोखनिहालकरै॥ मविचिंत्या
सबकारिजसरे॥ टेक॥ कनककांमनीपरहरिकंदा॥
निरदंदन्याराहोइरहै॥ रामरसैएकवारयेकरसि॥ कां
मक्रोधअहंकारदहै॥ १॥ हरषसोगडुषसुषसबत

कैं॥ त्रिशांके संगिय लन बं है॥ ग्यांन ध्यांन गदिगुरका
नी॥ अनहदधुनि स्यं ला गिर है॥ १॥ पांचपची स्यं व
करि रायै॥ तन मन सौ पिनां वउ चारै॥ जनतुर सीतादि
लहिनिरंजन॥ जो मन मरन संतापटै॥ ३॥ १०॥ ॐ
हरिगुनगाइ प्रांनी॥ ज्यौ बुटै नरम आवाजांनी
टेका॥ मनपवनाउलटाइ अरूपा॥ हरिस्यं हितजगुस्यं रू
रूवा॥ १॥ पांचौ इं डी कामे टिय सा रा॥ सबही त्यागि सुमरि
रिष्यारा॥ २॥ गुणारहित निरगुण निज देवा॥ ता देवाकी
रिले सेवा॥ ३॥ परम नूर प्रमते जघकासा॥ परमजोति
तुरसी दासा॥ ४॥ ११॥ सोई निरंजन अंजन मांदि॥
कबूनां हि॥ टेका॥ मनउलटा घटतीतरि
आंनि॥ अविनांसी पीवले दिखि बांनि॥ १॥ जाके गुनइ
रसनां हि॥ सोई राम व्यापिरहा सब मांदि॥ २॥ जनत
सीता सौं ल्योलाइ॥ जोनी फिरै न आवै जाइ॥ ३॥ १२॥
हरिहरि देकि तचाहौ आंन॥ मूले आपुनी स्यो ग्यान
टेका॥ न्यापर मोधलगावै तीरी॥ पटिपटिलोग सुनावै॥
आपनबे ध्याकर मके फंदमै॥ और निवे पिबु झवै॥ १॥
उदरुपाइ करै बहेते रा॥ स्वार्थ स्यौं रूचिमांनी॥ फूवा
आपकूठ संगिलागा॥ साच देखि दीकांनी॥ २॥ घटै मं अ
इअघट कौ जा नै॥ पांचौ करै परहारा॥ जनतुर सीर
चिरहै राम स्यं॥ सोसत गुरु दे मारा॥ ३॥ १३॥ एक ही रा
म आरौ धौरे॥ एक ही मन बसिक रो आपनौ॥ काबहब
तनि साधौ रो॥ टेका॥ एं मनतौ एक कहां लावौ रो॥ एक व
ह एक माया॥ उचैनां व आरौ ह ए करतौ॥ क हौ पा र

॥१॥ ॥२॥ ततजानैकेयहसहानं॥ जादिकनककी
बलौबलागो॥ कामनिमानौसिलापघाना॥ टेका॥ निवाव
नीरलौअऊलकहिरदौ॥ पायौअतिसीतलगुरज्ञान
यावरजंगमसबजीवनिमै॥ होइरहातुल्यएकसमान
॥१॥ बहतबातकौधौबिस्तारै॥ इहैपरषपरतबिपरवा
ना॥ तुरसीजिनिरगुनरसअचयौ॥ तैगदेकेसैंबोई
गुणआना॥ २॥ ॥२॥ तनकीगुहाआदिधरअंबरा
नकीगुहाआदिधरअंबरा॥ मनकीगुहाकायाकौअं
हरा॥ टेका॥ राधरअंबरागुहाजुमांही॥ साधुबिचरैमुक्ति
सहोही॥ १॥ कहागिरतरमूलनिवासा॥ जहांतहाबि
चरैकरैबिलासा॥ २॥ काहेंसैतीकरैनदोहा॥ नाकाहें
सुंबोधैमोहा॥ ३॥ समिकंचनसंमिकाचबिचरै॥ अ
धेबिचरैमनसापारै॥ ४॥ तनगुहामेहितनकरिषले
मनकीगुहामोहिंमनमेले॥ ५॥ मनगुहामेमनदिहरा
थै॥ अचलरहेअमरतरसचाधै॥ ६॥ तबसिधिहोतनल
भौबारा॥ सहजैउतरिजाइभवपारा॥ ७॥ असेउनेगुहा
मेनाई॥ रमेसुरांसस्यहोइजाई॥ ८॥ जनतुरसीय
ऊपरमबिचारा॥ समजैगाकोउसाधुसारा॥ ९॥ ॥२॥
जैसीसुरतिसुमरिहरिनामा॥ जोतुचोहैमोहिंसुधा
मा॥ टेका॥ जैसीसुरतिचंहेहिजुचकोरा॥ चात्रिाचित
घनकीवौरा॥ १॥ जैसीसुरतिव्यासैकीपाणी॥ अन
अनजयैदुचितप्राणी॥ २॥ जैसीसुरतिसमद्रीनि
आहि॥ सुरतिबसैसुतअपननिमांहा॥ ३॥ जैसी
रतिकूरमअंडनिधरै॥ विदगघनकीजोगीकरै॥

शोऽप्रांती॥ निहं चैकरिलेदं मसंनेह॥ शायं य ऊ
 व सरश्चकेन लपायो॥ करनां द सोई करिलेद
 नतुरसीतजिसारंगप्रांती॥ फिरिपी बौदरिसन देह
 ॥ ३॥ ताहिसुमरिसन बारंवार॥ करम व्याधिकां टैस
 शी॥ त्रैसा समरथ सिरजन हाराटेक॥ निरलंबनि
 बगुसांई॥ संतनिजीवनप्रांनुअधारा॥ सबसुष
 गरसबसुषदाता॥ सकलसिरोमनि सबमैसार
 ॥ १॥ जनम मरनका सब दुषनासै॥ जनम जनमका
 मिटैजं जाल॥ जनम जनमकी बिपतिनिवारै॥ त्रैसा
 सोहिबदीनदयाल॥ शायं गमत्रगाधसकलबि
 धिपूरन॥ केवलब्रह्मवारनहीपार॥ जनतुरसीता
 करियेवा॥ माया मोहतजियेसंसार॥ ३॥ ४॥ जो
 यहरिगुनगावैगा॥ जनम जनमकी फेरी बुटे
 मतबे बितफलपावैगा॥ टेक॥ कामक्रोधअनिमां
 नआपदा॥ हरिनाज करमनसावैगा॥ निरमलनि
 कारपीसको नजि॥ बऊ रिननवंजलिआऊगा॥
 ॥ १॥ दुषसुष जा मनमरनसवैतंजि॥ जनमकीत्रा
 यवैगा॥ परमजोतिपरकासपरसिकै॥ जुग
 जुगंतसचपावैगा॥ शायं चपचीसतीनि दोइसंमि
 करि॥ चौथैवितबितलावैगा॥ जनतुरसीसुषसाग
 सांही॥ मनमुषदोइसंसावैगा॥ ३॥ ४॥ तनमाऊसुस
 रिमतसोईहो॥ निरमलअमलअकलपदपूरन
 तामें सुरतिसोईहो॥ टेक॥ काजपतपती रथब
 रतकीए॥ काजगजोगहिदोईहो॥ निरमलनाम

लेपदमांही ॥ १॥ जौगमूलजुगतिमूलनगतिमूलसोही ॥ ग्यांन
 ध्यानसकलमूल ॥ सुगाइगलितहोई ॥ गाइगाइकेतेपतित
 पावननगरेनाई ॥ सोईजसुगाइबिमलरसीमनलाई
 ॥ ४ ॥ ॥ १ ॥ ॥ श्रीसोग्यांनविचारकरे ॥ तीतुमआपातारहरे
 ॥ टेको ॥ मांनअंमृतसंसारमौ ॥ श्रीमांनजुयारैरे ॥ श्रीमाने
 अमृतगिनै ॥ सोसाधुसारैरे ॥ १ ॥ मानश्रीमानकीअगति
 मांका ॥ दाऊतसबलोईरे ॥ ताऊरमेंसतहूजरे ॥ तोअधिका
 रतकोईरे ॥ २ ॥ समलोष्टसमकंचना ॥ इषसुषसंमिजांनो
 रे ॥ सीतवष्णकीविधामांनि ॥ मनमेंमतआनोरे ॥ ३ ॥
 कोऊनिदेंदुषपाइके ॥ सुषपायजुकोऊरे ॥ दरषिदर
 यिअस्ततिकरै ॥ तुल्यजांतोहोऊरे ॥ ४ ॥ लषचोरासी
 जीवजंत ॥ जलपलजितेजानोरे ॥ निरवैरीहोइसकलमा
 ऊ ॥ एकवसुपिबांतोरे ॥ ५ ॥ सकलशास्त्रकोसाररुता ॥
 एतोहीआहीरेजनरसीसुधसरूपमौ ॥ मिलिरहोके
 नांहीरे ॥ ६ ॥ ॥ १ ॥ ॥ रागकल्याण ॥ काहेरेमनफिरदि
 गंवार ॥ यामायामेंजकनलोर ॥ टेक ॥ जहोजहांजाइ
 तहांसचनोही ॥ सबहैसाचेसादिवमोही ॥ १ ॥ परमसिंध
 सुषवारनपारा ॥ ताहिसुमरिरेवारंबारा ॥ २ ॥ जनरु
 रसीकहैइऊअमृतवांनी ॥ ममितातजिनजिसारंगया
 नी ॥ ३ ॥ ॥ १ ॥ रेमनजपिलेगमदिनांमा ॥ रोमबाडिरचीयेन
 हीवोमा ॥ टेक ॥ रूपरंगरसदेखिनबदिए ॥ अपनेसाई
 सोसुनसुखरदिए ॥ १ ॥ जिनिजिनिजण्योतिनोसचपाये
 लैकैअनेपुरीपकुंजाए ॥ २ ॥ नांमकबीयअररेदा
 सा ॥ तिनकीमिटीजपेजमनासा ॥ ३ ॥ सबइषहरन

विदितं न तदा मनसकादंदा ७ जनत
समाहृतं तस्मिन् समारहाइ ननारैरुशियजे ५
... १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

जेजगुको॥ जगतिविचारिजगतिचितलावता॥ तुरसा
मघानपतिआगे॥ बिनबिनमैसिरनावता॥ ३॥ १॥ म
मैरोउलटिवस्योवरआइ॥ अबनचलेनिमिवासरि
तउता॥ रहा रामह्योलाइ॥ यासंशारतनोसुषवा
डो॥ रागदोषदोउधरोउवाइ॥ अबतुमसरनेमंडोमग
नहोइ॥ इकचितयकेनाइ॥ १॥ पाईवोरघुरातनपहले
प्रबलयाचौचोरबिसराइ॥ जनतुरसीसुषसागरमांही
सहजेरहोसंमाइ॥ ३॥ ३॥ चलिरजाहितहां॥ तहांडुष
सुषदोऊनाहि॥ काहेकौदगधहोतअज्ञानी॥ याजुग
जालामाहि॥ देका॥ जहांजुराजनमकोमैताही॥ बिबर
नमिबनजुनाहि॥ घटैनबधैसदाजंकाव्यो॥ एकस्ससोआ
हि॥ १॥ जहांधरनिनमपवननयांनी॥ रविससिहंनगांही
तुरसीतावापरमजोतिमिलि॥ जुगिजुगिसुषबिलसाही
॥ २॥ ३॥ रागदोषमन॥ इऊतनलेहअरथलगाशाघ
रीघरीगोबिंदनजनबितदृथवीतौजाशटेका॥ लषचौ
रासीचमपायोकेपूरबपुनिरहा॥ अंसोयऊमांसुषजनम
अतिहोऊडलनएहा॥ सोरतनहरिनजनबिना॥ तुमकाई
मिलवोयेहा॥ १॥ बहुरिकहोकहोपाईये॥ अंसोहीरात
सोशताहिसुरसबहीइबै॥ बउमागीप्राप्तिहोइ॥ सोइ
तुबबिषयांतमै॥ सहसानदीजैघोइ॥ ३॥ इंद्रीउडपो
नैकी॥ आसतिताऊत्यागि॥ मांमैसुषकोऊनही॥ यऊ
दिउषमईआगि॥ तातैजेनिकेनिजेसैतैसै॥ निकस्ये
यास्येनागि॥ ३॥ कैवीतरागवैरागधेराकेकरोनगति
हंकांमाउमैपनदिहपकरिकै॥ आपनोतजोकेवलरा

यहैनामविसतापयापपरिहरि। जपिजो लौं जुगिजीजे हो
 ॥२॥ ज्यौं चात्रिगघंनचंद्रकोरही॥ सीनाजलविनहीजे। के
 सीधीतिप्रनुके जुनाममौ। जनतुरसीराचिरहीजे हो॥३॥
 ॥४॥ रामनामद्विरदे राधि॥ श्रीरत्नलिङ्गननाधि॥ सबसे
 तनिकीइहेसाधि॥ श्रीसमजिदेब्रह्मना॥ कामक्रोधत्या
 गिदेहभरसनकोबौहलानलेह॥ मोक्षिकोउपाययदा॥ श्री
 रनादिबन्धानाटेक॥ उलटावरमांऊआव॥ प्रेमधीतिप
 मादबडाइ। गाइजेसूबगावा। गोविंदकोगुनांनबादा। ज
 नतुरसीप्रेमजगतियेह॥ त्रिविधितापहरनयेहा। करीएक
 रिकरिजुनेहै॥ बाडिआनविषाद॥ १॥५॥ श्रीवीरीस
 धीहोमिलिगोविंदगुनगावै॥ गाइगाइधीतिस्पृपीवआ
 यनौमनावै॥ टेक॥ अपनेअपनेमदिरनस्यौ॥ ऊडनिच
 लिआवै॥ जेनिकेनिकिहूपकारा॥ अपनौरामरिजावै।
 ॥१॥ पांचबाबीसांतईमिलिऔरऊबुलावै॥ द्विरदेरा
 मरूपमौ॥ जलबूरेलौमिलिजावै॥ २॥ तीनिलोकप्रमौतो
 श्रीसोतअवसरयावै॥ जनतुरसीअपनेप्रनुकोमिलि
 नीतिनिसानबजावै॥ ३॥ ४॥ आवआवआवहोदरी
 आवनइहैजुबारातुमआएमत्ततनमैहोइगाकरा
 रा। जोतुमआइहोनाही॥ तोहमजीवनकीनाही॥ वि
 चिहीविलायजाही॥ याहजुबदतीधारा। टेक॥ दया
 करिहरिदरसदेह॥ दादिदीनकीजुलेऊ। प्ररवोआसा
 जुयेह॥ होअनाथकेआधारा। मयाकरिमंदिरजुआ
 तौ॥ नयसषआनंदबडावो॥ त्रिविधितापजनकोड
 य॥ नीकैकरीपरहोर॥ १॥ जनतुरसीअपनाजुकीजे

जीजेजीजेनलेंदेविदेविकैदीदर॥परमतेजपरमजोति॥
 परमनिजप्रकासमांही॥मिलिकैआदिअंतिमधि॥वि
 लसीएसुषसार॥२॥७॥कलिमेंगंमनांमदीनीको॥आ
 नंदरूपउधारनजियको॥टेक॥वेदनिकहोसंतनिमि
 लिगायो॥जगिजोगहतेअधिकबतायो॥१॥ओरआ
 नसबधकेउपाइ॥नामहीसकलसिरोमनिराइ॥२॥
 नामहीकीउपासनांकीजे॥नामहीअपनेउरधरिली
 जै॥३॥नामहीपूजानामहीयाती॥नामहीसेवोदिनअ
 रूराती॥४॥नामहीतीनिलोकमेंसार॥नामहीजपि
 जनउतरेपार॥५॥जनतुरसीकीटनंगलौहोइ॥नां
 महीजपिरामहीनएसोइ॥६॥टी॥चीन्दिनिरेअजनम
 नमेंजनकरि॥बाहरिनीतरिसकलनिरंतरि॥टेक॥
 आदिअंतिमधिइकसार॥तरनबिस्धनहीवारा॥१
 सुषिमथलवननअबरांनो॥लिपेनबिपेनप्रगट
 नबांनो॥२॥जनतुरसीसोईपतिमेरा॥कैरहीचख
 नकाचेरा॥३॥७॥गहेटेकगोपालहीगावै॥सोईअ
 निनदासहैतैरौदेविडुनीसुषमननडुजावै॥टेक॥ज
 दिपिनरेसरोवरसर॥जहांतहांजै॥हिरसावै॥
 तदिपिचात्रिगधनपीवै॥बूदजल॥तहांक॥किअप
 नोंमननलजावै॥१॥दियौएकओरहपतिवृत॥सदा
 सिंधकैमांकरहावै॥तऊनरूचिअचवैजलघारो॥स्वा
 तिबूदकीआसकरावै॥२॥इहैपुनपकरिअजैपनु
 अपनो॥आनदेवकेसंगिनजावै॥तुरसीतबकरिच
 चैरो॥बऊरिनमवजलनेरोआवै॥३॥१०॥अलाह॥

न

रुद्रेषि॥ अद्रिष्ठिमेद्रिष्ठिला॥ अलेषकं जुलोयाद
पुदीनिवारिदिरसमाशिनपसकौजुरेषि॥ दिलोमेंदीदा
रडरिसा॥ अरतिस्पैषि॥ ॥ ॥ यंजकरदमरदिमारिपर
दासबबेकि॥ तुरसीदासपरशिपीवै॥ होहयेकमेकि॥
॥ २॥ १॥ नित्यानितिबिचौरोरे॥ हंसधग्यांनउपजाइमन
धीरनीरलौनीकैनिरवारैथोटेका॥ जोचाहोसरूपसुष
अपनो॥ तोबिचैमनोरथमारैरे॥ ॥ ५॥ हेवैरागजोगधो
इदे॥ इदेग्यांनउरधारैथोतुरसीततपदकैमांही॥ लैव
पदसेचारैरे॥ २॥ १२॥ रागकसेनीकानरै॥ जहांमाई
तांवनिसांनबगै॥ तहांननेव्यापैकाकूको॥ जमडरइ
रनगै॥ टेक॥ निरबलहोहपलटियेनौरिष॥ तोरिरनर
मतगै॥ तनउलटिरत्रियतापरदितहोइ॥ मनबाजीठ
लंगै॥ १॥ नषसषकरिनसेसबपापबुधि॥ पदमेंप्रांन
पगै॥ उरतैअसतहोइजाइइराजी॥ इकराजीबउगै॥
॥ २॥ रोमरोमआनंदसुषउपजो॥ सुतीफ्रुतिजगै॥ तुरसी
फीकेलगैहत्रिनरस॥ चोथेलिवबलंगै॥ ३॥ १॥ अगरजि
रहोअंदरिनांवनिसांन॥ जाकीधुनिसुनिकैसचपाये
थकैतमएमनप्रांन॥ टेक॥ तिलतिलकैडषमैपरिभा
गै॥ आनंदबहोआमांन॥ ताआनंदमेंआनंदबिलसे
मनसाधरिधरिध्यांन॥ पंचसषीमिलिमंगलगवैरे
गजरिरिदस्यांन॥ महाप्रफुलितनईआतमां॥ सोम
सुनिसुनिकांनि॥ १॥ नषसषनिरमलनांनप्रकास्ये
सीतलसुषदसमांन॥ तुरसीसोप्रकासपदपरसत
फटिगयोपटलअग्यांन॥ २॥ १॥ १॥ अत्रबहंसो

कामुनिपुत्रके मुरनरसब उमि
विनरपनातदात्रयडरेनिदिन गावे
कलरिलमएडावीना मरीहन्त्रधि
होमनिधिकेवाजबनबह होइरहीघे
तीनयमियविगईमभीरी विसरलो
आपलुननीप्रकासी तहांलेपुति
तीनकोतकीतहीप्रवेस जहांचितहि
सकामनाके सकामनाकलेस टेक यधील
नपिले प्रबाननायवर्नस तहांवाल।
पकुमीदिवीअदेस १ जहांर
मोदवनसहितसहेस ज
अप्र
दुरसी
३ १
कोकविदीविदीमलकोक
टपरजंतली
मसहनमनि
पजतनहीम
आपतीरसन
कोक
जीवब्रह्मअधि

ध्यांती रे ॥ यहें जानि निर वैर न यहें ॥ जन कुर सी ति ६५
 पाये ग्यांती रे ॥ ध ॥ १० ॥ उमैल बि एक हं म जानी ॥ शु
 वती ति शास्त्र प्रतीतिकें ॥ निहं चै करनी कै प्रवांती टे का ॥
 रि व इत क तांती ॥ य ऊ व ऊ बि व एक ही जुं आ ही
 न्न म जा इ नु बिलीनी ॥ १ ॥ यो जी व सी व जा ती ये धे ॥
 र बि जा ती सब जु गु जांती ॥ हं संगान उ य जा इ व य व
 हं म ॥ नि नि की ये जु इ ध र यांती ॥ १ ॥ बा च क बि रो ध
 ध सा रे ॥ सह त वा स नां क रे बिली मांती ॥ त व त त य
 द जु ये क हं दि ॥ उ रे क हं सो मि थ्या ग्यांती ॥ ३ ॥
 है न ग ति वै रा ग जो ग को ॥ ग्यां न ह को नि ज प द प्रां वा
 तुर सी द ह दि स सर से एक ही ॥ नि र स रू प नि र यो
 र वांती ॥ ध ॥ १ ॥ ३ ॥ रा ग के वा रो ॥ की जै ती ह
 रि स्यं हित की जै ॥ औ र हित करि करि न्ना न सो ॥ का दे कै
 कं च न वार मिली जै ॥ टे क ॥ ज व ल ग घ ट मे स्वा स वा
 स है ॥ त व ल ग चित वित ल्पं नं त न दी जै ॥ अ च ल हो इ के
 म ह्नां न द स्यं ॥ अं द रि वै ॥ इ ल्प मी र म पी जै ॥ १ ॥ य ऊ स
 सार अ सार अ संगी ॥ ता को सं ग प ल हं न की जै ॥ की ए
 स ग न सि जा इ ग्यां न ग ति ॥ अ ग ति हो इ अ र अ त म बी
 जै ॥ १ ॥ त त म त उ ल दि प ल टि शि य यं चो ॥ घा न अ र यि
 नि र वां न ही दी जै ॥ तुर सी दा स स म रि सु ख सां ई ॥ अ
 सें जन म सु फ ल क रि ली जै ॥ ३ ॥ १ ॥ रा म रा य अ व के
 हो ह द या ला इ दे वी न ती मी धो जी मे री ॥ मे टो क यो चो
 सा ला ॥ टे क ॥ कां म क्री ध मो ह अ धि क ज रा वो ॥ त्रि श्रुं त
 रं ग य पा द ॥ म न सा त न मे अ धि क बि या ये ॥ को उ र बी

१. अथ सौंदर्यं जावत्सलानां बंधिषामायासादि अ
 २. कनकनकरिद्रोपतिहास्यं. म्योहाबुष्टेनादि २ व
 ३. मननमनियं दुययाया मरयोमायाजाल तुरसीहास
 ४. नानाईशोत मनवीपुविधायाति ३ ३ अंसंकोउमा
 ५. वेकोपुमंगरं प्रमपीतिम्यां नारद्वार दरिदरनितिही
 ६. जरेरं मक नामको धप्रमकासनो इरमतिहरिक
 ७. अजयानयादिगुरकी बानी जीवतोहीमरेर १
 ८. व्यनीगं द/प्रप्राधदे मनसासादिजरेर एकितहोइइ
 ९. अकाननमावे यलहनत्रिसंरं १ पांचपंचीशेपरह
 १०. विष्मनी त्रिगुनादिमनवेर जनतुरपी सुषसागरना
 ११. न सुधकीमदिचरेर ३ ३ मोई जनसाईको नावे
 १२. न ताताइली नामनचार अंततकहीनहाजावेर टे
 १३. कनककासनीया हाइका मनकोगदिल्यावेरे ।
 १४. असावनेमनसावेधे यदनापलटावेरे नाद
 १५. विद्वनगजारघटं गिगनामेवबावेर २ तनम
 १६. नसांपिसीमनीदेवे गलितगुणदाइगावेर जनतुर
 १७. मातादि। सत्वाइमिंजन मिनिकारव्यगिलागावेरे ।
 १८. ३ ४ तनाइतमरिदमादिजीवाइ तोतमितवडोउ
 १९. पताम जीअसाकरेयाइ टेक जनमेतगरतवहत
 २०. दिनवीत कहेवहीसचपाइ तुमजीवतनां नाउय
 २१. जिनस अबकिलकरंमनाइ १ मानिसवदवीन
 २२. तीसंग मनःस्थनउपाइ आतमचितवनमेंवीरेलीं
 २३. अयकावतगराजिआइ १ तीवनइदंजहातनांही
 २४. आपनकमेपाइ नहाततनांकादेकीं जीवन व

टिरही विषमबलाइ ॥३॥ ब्रह्मकी यो नाथे में तेरो धरि धरि
 नां नाकाइ ॥ अब विभ्रामपकरि यूरो दे ॥ जनतुरसी बलि
 जाइ ॥ ४॥ ५॥ हरि बिबुरे मे कहा करौ ॥ गमवासजिनि
 रि ब्याकीनी ॥ तासा दिवकौ कौ बिसरो ॥ टिका ॥ जोक बुवा
 लायन मे कीयो ॥ सो प्रभु तुमसो सब गुदरो ॥ इतनी कहत
 अबौ ले अब्रज हं ॥ बिनबोले जीयक दोधरो ॥ १॥ दिवस
 अब्रित इषदेहनी जवो ॥ औरस घीन संगिमवो रो ॥ अब्र
 सो दिरे निराक सनई सजनी ॥ सुनी सेक मे बहत डरो ॥ २॥
 पांन फूल मे नोगत जेहे ॥ सब सुप्रपर हरि ॥ सिपरो ॥ ताप
 रि बिरह चुयंग सतावे ॥ प्रादुष्य कित हं जाइ मरो ॥ ३॥ बि
 रहनि इषित नां निहरि आये ॥ प्रेम प्रीतिया वडे धरो ॥ तु
 रसी दास जन नई सुहागनि ॥ तन मन लै हों पाय परो ॥ ४॥
 ६॥ अब्रया व्रमिले हो सुषदाइ तिन निस्वांति नई सुनि
 सजनी ॥ ब्रह्म दिनतकी मेरी तपति बुजाई ॥ टिका ॥ प्रेम
 प्रीतिके ब संनय हरिके ॥ धिमांष वरितिलकततुरां
 सी लक्ष्म्येनकी ब विलाई ॥ १॥ षोडिस वंम लगे मंद
 रको ॥ दादसदलत हां सेक बनाई ॥ बिरहनि पीवपर
 सपर राचे ॥ प्रीतिप रूप बरषे अब्रधिकाई ॥ २॥ निरम
 लजोति नई च हं वीरा ॥ अब्रनद दधुनित होटे रि सुना
 ई जनतुरसी आने व आरति सो ॥ सलिता होइ सुषदि
 धसंमाई ॥ ३॥ ७॥ नैनाथ कित जये हो ॥ गम बितन
 न रूप देषनते रहे हो ॥ टिका ॥ परबतें पबिम आये ॥
 नवो मुदये हो ॥ भिरडंडकी डोरी लागी ॥ दश वैगये हो ॥
 १॥ सहसरकवलम धिनि दास लये हो ॥ पूरतं प्रका न

शतहंवा समें नोये हो ॥ १ ॥ सति सरोवर मधिनिरम
 लहये हो ॥ जनतुर सी मन स्पु मन मिलिकें ॥ अंकुरद
 दे हो ॥ ३ ॥ टी ॥ हं मारे प्रम संने ही पाये ॥ पूरव ले प्रसा
 दि रं म वै ॥ भा गि ब डे घ रि आये ॥ टे का ॥ रो मि रो मि त नि
 सु धि रू धि वा णी ॥ डु य सं ता प न सा ये ॥ जनतुर सी मे
 रे जन म जन म के ॥ आ नंद अ विला ष पु र ये ॥ १ ॥ ए ॥
 आ रो धो रे मा धो ॥ मा धो मा धो ॥ आ प न वि उ र सो ज उ ल
 टि ॥ हू है जो ग सा धो ॥ टे क ॥ उ व त वै व त स्वा स न की ॥ माल
 मां ही ही मां ही ॥ फेरि फेरि धी ति यो ॥ चित नाम स्पु ले वां
 धो ॥ बि सरी ए न सं म ॥ नां म ॥ डु य हर न सु ष को जु धां म
 जि नि जि नि सु म स्यो जु न ले ॥ ति न ही जु ये ह सु ष ला धो
 ॥ १ ॥ जनतुर सी सु म र न सा र ॥ महा मो बि को जु धा र
 न य स य जि नि ली यो धा रि ॥ ध नि ध नि वै सा धो ॥ ग ए ज
 न म म र न जी ति ॥ या ई अ प नी आ हू थि ति ॥ त न ध रि
 जि नि त्ने सी की नी ॥ उ ल टि का ल या धो ॥ २ ॥ १० ॥ ३५ ॥
 ए ग बि ह ग यो ॥ जि नि आ र ति सो न जे न सां डे ॥ ति न के
 र हे म नो र थ मां ही ॥ टे क ॥ अं ब कू प की बा या ॥ त्ने सें बि
 र था ज न म गं वा या ॥ १ ॥ सु कृत क बू न कर नै पा ए ॥ ज्यो
 आ ए त्पू ही व सि धा ये ॥ २ ॥ त जि स के न त्रि गु नी मा या ॥
 क रि स के न मो बि उ पा या ॥ ३ ॥ धो ये ही धो ये प्रां नी ॥ वू डि
 म ये न मि त्रौ चे पां नी ॥ ४ ॥ जनतुर सी त्रै न्त्र ति प च्चि ता ये
 ज व ज म हू त नि बां धि च ला ये ॥ ५ ॥ १ ॥ बि ल व को क
 म ति क रौ कू व ना ई ॥ अ प नो न ज त रु घु रा ई ॥ टे क
 स्वा स सि रं ने जां ही ॥ ब हं स्यो त्ने सो न्त्र व सर ना ही ॥ १ ॥

ए सोमनिघ सरीरा ॥ क हो कहां है नीरा ॥ ता तें व ग हर न
जे ॥ न जि गो विं द ला हो ली जे ॥ ३ ॥ जन तु र सी व कु सं त
रा ॥ जि नि जा न्यो ते न ये पा रा ॥ ध ॥ २ ॥ अ से न्ने अ वे क हे
॥ ३ ॥ ज्यो कूर म उ ल टा इ अ ग अ ग ॥ ले त पि टा र मा ही
टे क ॥ ये वि ष या व व न लो त्पा गि दे ॥ वि ष क नि का की
तां ही ॥ को टि ग ष को अ र ष इ तो ही ॥ स म कि दे षि म
न मा ही ॥ १ ॥ इ ह स ग ति त ग वं त की ॥ अ र वा हि ज न्न म
आं ही ॥ ज तु र सी अ प ने रि दा कं व ल मे ॥ हरि ह रि उ वा
रि स दां ही ॥ २ ॥ ३ ॥ अ कु आ व नी अ नू प जु हे रे ॥ जे आ ए
ति न ही स च पा ये ॥ इ रि न ए ड य ने रा टे क ॥ स व द आ दि
वि ष या ये प र ह रि अं डी उ ल टी ले रा चं द च को र लो रि
दा कं व ल मे ॥ आ त्म रूप चि त रे ॥ १ ॥ नि सि वा सु रि त हां
ई ला गा र हो ॥ की ट न्न ग लो हो इ रे ॥ २ ॥ स क ल शा स्त्र को
सा र इ तो ही ॥ सो इ चि त ध रि ले रे ॥ ध नि वे सं त जि नो यो की
न न्ही ॥ उ त मं ग त व वे रे ॥ जन तु र सी लं धि ग ए बा जी को
र दे ज थ्ये सो के रे ॥ ३ ॥ ध ॥ ३ ॥ १ ॥ रा रा मा रु ॥ को इ व
जे र व न नां जो सी ॥ क हि क व अ वे मे रा रां म ॥ वि र द्दी ग
रे द र सु को ॥ जि य नां ही वि ष्णो मा टे क ॥ ज्यो चा त्रि ग घं न
को र टे ॥ पी य पी य क रे पु का रा यो रां म मि ल न को वि र ह न
त र फे वा रं वा रा ॥ १ ॥ स ति वं ती आ र ति के रे ॥ पी व मि ल न
की चा हि ॥ प ल प ल जो व न जा त हे ॥ पी व के हा क र कु गी
आ इ ॥ २ ॥ अ व ल को सु सु दी नी ये ॥ अं त र जां सी आ इ त
र सी दा स जन वा र ने ॥ वे र वे र व लि जा इ ॥ ३ ॥ १ ॥ अ व
रि आ वे हो सा हि व मे रा नि स दि न पं थ नि हा रो ते रा टि

श्रवणीवतुम विनडुयीयानारी दरसनदेऊदयालमुर
री ॥ १ ॥ मनीसेजकहोकोरहिये ॥ विनपीवमिलेबऊ
तडुयसदिये ॥ २ ॥ श्रवजनतुरसीश्रयनोकीजे ॥ अरस
परमिलियऊसुषदीजे ॥ ३ ॥ १ ॥ श्रवपीवचरनसरनज
येलीजे ॥ दरमतिमबहरिकरीजे ॥ टेक ॥ मायानिसिदि
नमोहिसंतावे ॥ श्रवपीवतुम विनकौनबुडवे ॥ १ ॥
श्रीसीमायामोहनीतेरी ॥ जिनिनुमविचिपारीसेरी ॥ २ ॥
जीयरेबऊतजतमडुयपाया ॥ श्रवकेराधिलेऊरघुराय
१ ॥ श्रवपीवकालमोहिनितिमारे ॥ बलिजाऊतुम वि
नकौनउवारे ॥ ४ ॥ श्रवजनतुरसीआयोसरना ॥ बलि
जाऊमेडऊआवागवना ॥ ५ ॥ ३ ॥ अरमईयारूपतुम्हा
राहो ॥ मुऊदियलावोमेहरिकरि ॥ मुऊलागतप्याराहो
टेक ॥ जोईजोईसुषसंसारका ॥ सबकीयापरहारा
हो ॥ तुमहीतुमलागीरबी ॥ बिसरोनलगाराहो ॥ १ ॥ रु
यतुम्हारादेयीये ॥ दिलहोइउजाराहो ॥ जनतुरसीवि
लसेसदासुष ॥ प्रांनहंमाराहो ॥ ३ ॥ ४ ॥ क्योजीवैवैवि
रहनिबोरी ॥ जिनकौपीवप्रदेसिबसतहै ॥ सुधिसंदेन
दिकोरी ॥ टेक ॥ निरषेनितिनैतनिमघनिरमलजे
मैबंदचकोरी ॥ अतिहीविकलहोइरहीरिनिदिनह
रिदरसनविनयोरी ॥ १ ॥ बऊतफिरेजहांतहांसधी
येनि ॥ आतुरदोरीदोरी ॥ चित्तमेंचैनपरतनहिचुष
भरि ॥ लगिरहीपीववगोरी ॥ २ ॥ अतिहीआतुरहरिद
रसधियासी ॥ रहीउमैकरजोरी ॥ तुरसीतेनलतबसव
पावै ॥ जबबांद्गहैवैधोरी ॥ ३ ॥ ५ ॥ सधीमेरीनीदनसा

हो ॥ पीव को पंथ निहारतौ ॥ सब रति विहां नीहो ॥ टिक
 बस्यी यनि मिलि सीष दर्द ॥ मनिये कनु मांती हो ॥ वि
 दर संन कलि नां परो ॥ जीये औ सी वंती हो ॥ १ ॥ अग्रु बी
 व्याकल नई ॥ सुषिमधुरी बांती हो ॥ अंतरि वेदन विरन
 की ॥ पीव पीरन जांती हो ॥ अजुं चा ॥ त्रिग घन को र रो म
 बरी बिन पां नीहो ॥ जनतुर सी पीव बिन मिलो ॥ सुषि बुधि वि
 सरां नीहो ॥ ३ ॥ ६ ॥ विबो है मरी ए माइरी ॥ बाल संने ही गो वि
 दो ॥ नही देत दिया ईरी ॥ टिके ॥ निस दिन कलि मोहि नां परो ॥
 तरफते विहाईरी ॥ पय पर देसिन आईया ॥ जाइ अ वधि
 शिराईरी ॥ १ ॥ मीनां जल बिन क्यो जीवो ॥ कं वला क मिला
 ईरी ॥ असे मीत विबो है मी सधी ॥ मन में मुजाईरी ॥ २ ॥ मेष
 र देसनि बापुरी बिबु रि वइ हां आईरी ॥ अब ही जानइ
 लत्त नयो ॥ उन देसनि माईरी ॥ ३ ॥ वहत क दिन बिबुरे नये
 वांते अकुलाईरी ॥ जा जां नुक ब मिल दिगो ॥ वि पीव सुष
 दाईरी ॥ ४ ॥ जा मिलीये आनंद होइ ॥ उष दर द मिटि जा
 ईरी ॥ जनतुर सी बिल से आत मां ॥ सुष सदा अघाई
 री ॥ ५ ॥ ७ ॥ वे पर देसी प्यारे हो ॥ आय अकेले होइ र
 हो ॥ हम को करि न्यारे हो ॥ टिके ॥ क्यो मिलीये क्यो जाई
 यो ॥ म हां पंथ ड्यारे हो ॥ मिते पर बत होइ र दे ॥ सोटर
 तन टारे हो ॥ १ ॥ महा ज्ञान क बन परो ॥ अति दीजु अकार
 दिनारे हो ॥ सिंघवा घग जें घने ॥ अति दीजु अकार
 हो ॥ १ ॥ निस दिन अ विरहती ॥ ने नन जल हारे हो ॥ २ ॥
 पीव वे देस दरसन नही ॥ ध्रुग जन मह मारे हो ॥ ३ ॥
 पीव वे देस दरसन नही ॥ होइ है जे जे कारे हो ॥ ३ ॥

हां पावन धरी ऐ हो ॥ २ ॥ अंतिको उचिरि नार हो ॥ द्वेषत
 मव मरी ऐ हो ॥ जनतुर सी तन मन उलटि कै ॥ निजनां मउ
 वरी ऐ हो ॥ ३ ॥ १० ॥ नहि मेरे आन सगा ई हो ॥ मन सा बा च
 क्र मनो ॥ सु म रो सु ष दा ई हो ॥ टिक ॥ अऊ लाल बन जि
 यम हो ॥ नि सि वा सु रि ता ई हो ॥ स्वां से स्वां स हरि हरि ज
 यो ॥ उर क्तं तरि आ ई हो ॥ १ ॥ कौऊ क हो ए क ब नो ही
 कौऊ प रो पा ई हो ॥ बुरी नली बिसरा ई कौ ॥ हरि स्यो लो
 ला ई हो ॥ २ ॥ सकल हित अनहित कीये ॥ कलय तो मि
 टा ई हो ॥ जनतुर सी सलिता रूप कै गही ॥ सिंधु सरना
 ई हो ॥ ३ ॥ १ ॥ प्रां नी ज पि ना व नि रं बां नां हो ॥ जो तो दि
 आर ति दर सकी ॥ ज गु स्यं दे का नां हो ॥ टिक ॥ सा चा सत
 गुर से ई ऐ ॥ सम जा वै ग्यां नां हो ॥ लाल चिलो नी ब हू त है
 तिन संगिन जां नां हो ॥ १ ॥ ऊरु ग्र व गु मां न में ॥ जि जे ल प
 यं नां हो ॥ वे सूर य दे ष त न ये ॥ न व ज ल ग ल तां नां हो ॥ २
 जि नि पां चौर स पर हरे ॥ य न्नी स फि रं नां हो तिन कै स
 गि बि चरी ये ॥ पर हरि न र म नां नां हो ॥ ३ ॥ या सं मि लो
 र न ग्यां न है ॥ नां हिन को क ध्यां ना हो ॥ जनतुर सी हरि ना
 व मो ॥ र ऊ स दा स मां नां हो ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ म हा प द म कि व ता
 यारे ॥ टिक ॥ ज प त प ती र घ्य सब की ये ॥ करि करि जु सि
 हा यारे ॥ १ ॥ पंचम ॥ हा रि प उ ल टि कै ॥ मन सौ मन ला या
 रे ॥ तिन हे पर म सु ष पा ई या ॥ ज म ट डु मि टा यारे ॥ २ ॥ ज
 नतुर सी घू रा गु ॥ १ ॥ मित्या ॥ जि नि ने दे ल या यारे ॥ आत
 मां मां हि आं नं द प दा ॥ पर ग ट दि ष ला या रे ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥
 क र्ते से न य रि उ र में ॥ अं मि किं न स च पा यारे ॥ टे क

नजोरेआरति स्युं सोई ॥ अयनौ आनंद घंतरंगम ॥ अलसा
वकरीऐनही ॥ सुंमरतां प्रतुकोनां म ॥ टिक ॥ अलसायेक
हंकीं बने ॥ अलसायेय हूब मरीर ॥ दिनदिन बी लो जा
तहै ॥ ज्यो वी वे सरकोनी र ॥ १ ॥ जैसें धू हरि धू मके ॥ बादर
बने बसोइ ॥ जैसें चिलकत देयीये ॥ धनजो बनये दिन दो
इ ॥ २ ॥ अय राधी अरण्यो नही ॥ अयोच हो अधीर तु बको
डी सुषकारने ॥ तुमकेयो वी हरि ही र ॥ ३ ॥ परब पूनिया
ई बयक ॥ सो ज अमोलिक सोइ ॥ सोकरते बु टि जाइगी ॥
बहरिक होतें दोइ ॥ ४ ॥ जनतुर सी कहै समजायके ॥ सु
निलेइ सीष अत्रवयेह ॥ सुषसागर सोई सुमरिल्यो ज
बलायह देह ॥ ५ ॥ १ ॥ ६ ॥ इननां नां आस्त्र निमां हि ॥ जीया
तुमजिनि बहोरे ॥ वी वी आवजीवन अत्र बयतु बबु धि
तातें रंगदिनां म निजु करि गहोरे ॥ टिक ॥ वारिवेद सु
मृति आदि विद्या अत्र नंत ॥ कहां लोयठै पुने धौं जुको
इरे ॥ सकलको सार निराधार निजानंद पद ॥ सोई रि
देजु दिठ राषो जुपोइ ॥ १ ॥ कहं क्यं कहं क्यं कथी इन
मैनुय ॥ तातें निज नियट निहं चौन आवै ॥ मधुकरप
रमलपडपलौं जुसारही गहौ ॥ मत बडु बिसतारनि
परिजु चलि जावै ॥ २ ॥ जत अरु सतमां ही जुसार रहौ
उभैपनय करि दित वी रंगम ॥ अयंड अहौ निसिइक
तांनलाभारहो ॥ घाति स्यो रंठी जुयतिको नां म ॥ ३ ॥
व्यागिये त्रिगुनतिरगुनस्यंला गिरहो ॥ इहै सग्रंथ
को अरधसा रा ॥ जनतुर सी अयने सुध सरूपमें होइ

जल मिलि जल के मंजारा धरु पये तेदि
कं लोके बा रा एको अंग सु मरे न ही रं मते मे

मु कति दा ता रा टे का ॥ विष व व न लो का म न दी व डो
क्रोध न की यो पर हार ॥ निजर लो न उ र ते न उ या स्यो ॥ ति
की यो ग वार ॥ १ ॥ मो द मी र मा रि न म न ता स्यो ॥ न व ज ल
पा रा ॥ क थि क थि ग्पा न की यो ज क हों तौ ॥ रि द्रो र के ल व
रा ॥ अ ज हं चे ति चि द्रु प रं म न जि त जि मा या ज न्ना रा के
गौ क हां क रि हे न्न प रो धी ॥ वी त त न्न व धि क र रा ॥ ३ ॥ उ व
स्यो चा हे ज न म म र न की ॥ म हा क ल स्यो इ हे वार ॥ तो तु र सी
र न्न व ड रं म ज पि ॥ आ दि न्न ति इ क ता रा ॥ ४ ॥ १ ॥ च ल
घी त म सो क रि ली जौ ॥ सु ष सा ग र न्न वि ना सी र जा ॥
त पं गि न्न नं द की जौ ॥ टे का ॥ कां म क्रो ध मा या म द मं ब र
इ न्को से ग न की जौ ॥ नि र म ल दे व नि रं ज न पू र ना ॥ त हां
अं मृ त र स पी जौ ॥ ५ ॥ इ ष सु ष जा म त म र न काल नौ ॥ नो
द्वि त हां म की जौ ॥ ज न तु र सी आ र ति स्यो च लि के ॥ प र म
जो ति मि लि जी जौ ॥ २ ॥ १ ॥ जा हि रे दि न ही दि न वी ते रा
म न्ज न वि न री ते ॥ स्वा से स्वा स प ल ही प ल वि न वि न
अं ज री ज ल लो ज वी ते ॥ टे का ॥ उ ल टि आ व न्न ग्पा न न्न
प ने ही उ रा ॥ दो इ जा ति स्यो जी ते ॥ ह दि म ध्य न जि न ग वं त
आ प नौ ॥ आ दि न्न ति म ध्य ही ते ॥ १ ॥ इ ह सु र ति सु मृ ति
नि को मा रि ॥ स व ही की प्र ती ते ॥ सो र्द म घ रा हि ह रि सु
म रि आ र ति स्यो ॥ सं व नि का रि ज की ते ॥ २ ॥ ज न तु र सी
इ ह स व हि न को टी को ॥ जि नि पा चो न्न रि जी ते र टि

रटि रांमनांमपारहिगये॥ नयेजुषेसोईते॥ ३॥ १८॥ जग
 बूडेजलत्रमकेमांही॥ कोऊकाठनहारनाहीरे॥ केक
 केउजंत्रमंत्रांहीकेऊजरीबूठीकेमांहीकेउधंननमो
 हनसाधे॥ केऊप्रमुकोनिजमजनत्यागिके॥ प्रेतनको
 आराधे॥ १॥ केउदेवीकोउदेवाकेउलागेसिवकीसेवा
 केउमैरूबलिजुचठावे॥ अनिनहरिकीभगतिबिन
 सूधेजमपुरिचलिजावेरे॥ ३॥ कदाचिकरमनित्यागी
 तोत्रमसांऊमनलागे॥ त्रमनिहंबिटकावे॥ तोयापी
 जीवदुराचार॥ उद्विरतिकबुऔउपावेरे॥ ३॥ जि
 निगुरपूरायायालेनांवकीनावचठया॥ घेइउतारे
 पाराजनतुरसीतेउवरिगारे॥ औरनहीउपचाररे॥
 ॥ ४॥ १९॥ चूलिपरेजियेचूलिपरे॥ याबिययाबनमांही
 हो॥ टेक॥ कबहनैनप्रवनांही॥ रूचिरूपसबदके
 मांही॥ कबहरसनांरसचाये॥ कबहकांमइंद्रीके
 बाहे॥ बचनविषमरेभायेहो॥ कबहंगंधनमन
 लावे॥ नांनान्तरगजेबनावे॥ फूलिरहेमनमानहि
 कदरजइंद्रीनिकारने॥ काकाउदिमनकरांहीहो
 १॥ ऊचीवनीकनकन्त्रटारी॥ विचिविचिचंदनजु
 किवारी॥ मनबंबतभोगकरांही॥ हरिनांमसुधा
 सिंधपरहरे॥ वियेहलाहलयांहीहो॥ ३॥ त्रस्वगज
 बहमानिकमौती॥ नवनवजोवनीजुजोती॥ लेइन
 हीसौमनलाया॥ तिनकोडीगहिकंचनहासा॥ हीरा
 जनमगमायाहो॥ ३॥ पंथपुरातननहीपाया॥ ज्योह

धाय ॥ तातैपरयदपायानां

ही ॥ चोले ल गि घोई काया हो ॥ धा ॥ जे हरिनांम हिला गोमाने

सो वतसे जागे ॥ गदि गुर आत म ग्यानां तिने हचै निस तरि गये

ओर र हे वार म्पानां हो ॥ धा ॥ जनतुर सी गाथा गा दी ॥ खल

निकी मंति व्यौरि मुनां ई ॥ अनिय कु मंत निजुर जुसागी

जे सम के तेई साधव लसये ॥ जो लै सेवे रागी हो ॥ २० ॥

काल समान को गरिय नां हो ॥ ताको से करि न जि अपनो पी

वारै जीव समजि स दाही ॥ टेक ॥ सने सने आवई जु व्यैसे

ज्यूपूर वारध बां हो ॥ आइ अचानक ग्रसे जीव क्वा ॥ ला

लोग के सां हो ॥ १ ॥ जोई जोई तन धरि आया जग में पतर सदि

यावत ता हो ॥ ब्रह्मा आदि सकल वि स्वकये ॥ निरतै ता

कहं नां ही ॥ श चलते महा मोक्षि पद सां ही ॥ पट्या राहाइ

आ ही ॥ विचि दिषे डं ड करित न को ॥ लै डारे व क दा ही

॥ ३ ॥ सपत दी पन वषं ड आ दि दे ॥ तीनि लोक सब गां ही ॥ ज

हांत हां डर नि डर नि वर को ॥ नि न हरि न गति विनां ही ॥

॥ धा ॥ इ हे जां नि अ व के न जि अपनो ॥ साबंधां न ही इ सो

ई ॥ जनतुर सी इ हे वोट उ वरीये ॥ ओर न वोर कितां ई ॥

॥ ध ॥ २ ॥ हरि गुन गाइ रे गाइ रे गाये रे ॥ मन सावा चाक

मना ॥ उलटि अ नि अंतरि आइ रे ॥ टेक ॥ इ त वत या क

गी चित व निल गि ॥ क हा र हो अ ल साइ रे ॥ स्वा से स्वा

सपल घरी म हर ताते रो ओ सर बी तो जाये रे ॥ १ ॥ वार

वार उ न मान अपनो ॥ तो हिक हं से म काये रे ॥ जो चा हे

प्रनु को अ व ल बे सुषा तो अ ल प सुष दी विस राये

रे ॥ २ ॥ गुर ग मि ना गि ब डै तै पा यो ॥ नां व नि रे जन राये

रे ॥ सो ही रा को डी के बट लै अ म ति दे ह व हाये रे ॥ ३ ॥

जो सु तो चा हे अ नु को ॥ हं गं थ ग्यां न मं ता ॥ अ र थ

इहै श्रीयादरे ॥ जनतुरसी नजिघे मयी तिस्यं ॥ अथनौ
 रामन्रघादरे ॥ १॥ २१ ॥ अथकी बेर जो मिलनै पांग ॥
 तोलंघिजाऊ सकल कृतवाजी ॥ बडरिनप्रवजलिआ
 काटेक ॥ आसायं डिअयंडआ राधौ ॥ त्रिआंतरंगमि
 । टाऊं जनम मरन की ज्वालालैकै ॥ दरिजलिसी चिबुजा
 ऊं ॥ १ ॥ मनही जीतिय वनां बंदलाऊं ॥ यचौरिय पल टाऊं
 बुधिकरौ धीरनी रडिट रायौ ॥ अमकमैन सांऊं सुयनि
 धांत साई के सुयमै ॥ आनही लाडलडाऊं ॥ जनतुरसी
 अथनै अतुको मिलि ॥ महासुमंगलगांऊं ॥ २ ॥ २३ ॥
 सधीरीना जगाइ बंकत ॥ जगै गौआतंदघंन तोकरै
 गौममअंत ॥ टेक ॥ हे बतू दोउतादी निहं चै जानिबये
 ह ॥ रवि रजनलौं कै जादिग ॥ रहै गोनकोऊनेह ॥ १ ॥
 अहेकारक है सुनिबुधिसधीरी ॥ अऊं जुमममतकानि
 सकलकुलबैकीयो चाहै ॥ तोअबअेसी वांनि ॥ २ ॥
 यऊप्रकृतिय ऊपुरुषनिनि ॥ इनमैन उपजिहै इहै
 बंबेका ॥ तोहे बतू कहान्त्रीये ॥ इनमैन रहैकोऊये
 का ॥ ३ ॥ अथव्यक्तआदि कटं वचतुबिंस ॥ महाप्रलै
 कै जांइ ॥ सुधचेतनपुरुषवड ॥ सोई भलैवहराइ
 ॥ ४ ॥ अस्थूलसूक्ष्मलिंगअलिंगलौं ॥ यऊहेमरोबत
 पांन ॥ सोसकलनिरमूलहोवै ॥ जगतपिताअग्यांन
 ॥ ५ ॥ अरधउरधदसौं दिसा ॥ दरसैजुएकोरूप ॥ जनतु
 रसीअेसीबहौ ॥ उपजतवोग्यांनअनूप ॥ ६ ॥ २४
 अहीबीरमैगैइहैसुजाव ॥ पुरुषकोनिरंबधकरै
 अथनौहकरिजुनसाव ॥ टेक ॥ हौं ही बांधीबंधनि

॥ हे ही दे उ बुडाश ॥ अंधजा दे व ल प व न बा सा ॥ अत्रि
सुरजाई ॥ १ ॥ हे ही वष सुषु नो ग मु गा ऊ ॥ पाप पु ए
द्र ॥ हे ही ले अ प व र ग क रो ॥ उ नै र हित ग्यां न ग्या द
अ द ह न दार न द ग ध क रि ॥ आ प ह हो द खी ना ए र गु
ह रि नि र गु न उ दै क रि ॥ हे हे जु के जा क ली न ॥ ३ ॥ ज हां
त हां जी व य ऊ ॥ हे ना ही त हा य ह सी वा ॥ ज त त र सी जि नि
त म जी व य ऊ ॥ ति न अ ये का रि ज की व ॥ ४ ॥ २ ५ ॥ उ ल टि
च ल हि न रे म न अ प ने ध्यां न ॥ हे म तु म दो क अ घ ट वा प नु
को ॥ ध रै नि रं त रि ध्यां न ॥ टे का ॥ ल ग र हो क हां अ ल प दं डि
न सु बा छि ध रि जु के से धां म ॥ त्रि य त्पो कौ स्व प न ल डु व नि त रि
अ से यो ज ग त जि हां न ॥ ५ ॥ वा र वा र मित क हों तो दि ह ॥
उ प दे सौं य ऊ ग्यां न ॥ प तिलौं मी के आ व पू वा ॥ जौ वा हे य
द नि र वां न ॥ ३ ॥ प टे गु ने के अ र थ जु ये ही ॥ श्री र अ फ ल
सं ब जा न ॥ तं द र को र लौं धि त आ त मा ॥ आ दि अं ति इ क ता त
॥ ४ ॥ अ ज ह वे ति चे ति ज्म गि दे ॥ अ क मा या त्र म आ न ॥ ज न
त र सी सु ध हो द सु म रि आ प नों ॥ पू र न ब्र ह्म नि धां न ॥ ४ ॥
२ ३ ॥ अ म कि स म कि म न मे रा नाई ॥ ह रि त जि अ नं त क ह
जि नि च्छा रा ॥ ५ ॥ रा चो क हा वि धे व न मां ही ॥ य म्मै डु य पा वि
सु ष नां ही ॥ ३ ॥ जे सें दी प ग दि ष प तं गा ॥ अ से म त र ज रे वि ष
सु ग ॥ ३ ॥ मां नि स ब द स त गुर की बां ती ॥ ह रि वि न वें न ही
सु नि धां ती ॥ ४ ॥ ज त त र सी रां म सं नां रे ॥ अ क दि स आं वे
द य हं मां रे ॥ ५ ॥ २ ७ ॥ स म कि न र चे ति रे न जि लौ गो वा ला ॥

फिरिपी वैयव्यिताहिगो॥ जमपकरिकरैवेहाला॥ टेक
 यामायामैकागहोरे॥ कारचिरहोगवार॥ दिनदडक
 सुषकारने॥ पीवैदुषहोइअपार॥ १॥ मेरीमेरीकरिगरे
 रे॥ रावरंकसुलितांत॥ काहूकैसंगिनाचली॥ सबटेस
 एमैदांनि॥ २॥ समजिसमजिसाचीकहरे॥ मतनहैमा
 याजालियामैदुषबहंपाईरे॥ सुषनाहिनएकलगा
 र॥ ३॥ मनसावाचाक्रमनारे॥ वडुअौरफिरिनाहि
 जनतुरसीहरिकोंनजो॥ ज्यौमिलोपरमसुषमांदि॥ ४॥
 ॥ २८॥ अौसाकोऊहैरेयाजगुमांही॥ जाकैदरसिसच
 पाईरे॥ परसेअघजाईहो॥ टेक॥ निरवैरीनिहकांम
 ता॥ सबकोंसुषदेवैरे॥ रचैनहीसेसारस्य॥ पतिकौनि
 तिसेवैरे॥ १॥ रजगुनतजितंमगुनतजे॥ तजेसतगुन
 हकासंग॥ दोइययडुरमतिसवतजे॥ रचिरहेगंमकैसे
 ग॥ २॥ आदिअंतिमधिअकस्य॥ तनमनलैलावैरे॥ ज
 नतुरसीहरिकौमिले॥ मिलिकैवहरिमन्त्रावैरे॥ ३॥
 ॥ २९॥ सोजोगीमैरैमनतावै॥ मनसाजारिविचरतचढा
 वै॥ अनहदसीगीवावै॥ टेक॥ अंतरिगतिमेंआसनधा
 रै॥ इविधाहरिगंवावै॥ चितवितउलटिरामकोंसोये
 बहरिनभवजलिआवै॥ १॥ तजेविकारुतजेअनिना
 सी॥ हरिचरनौचितलावै॥ मनयवनारायैघटमांही॥
 उनमनिजायसंसावै॥ २॥ उलटिनैननिजतरनिहा
 रे॥ ग्पांतध्यानह्योलावै॥ जनतुरसीसोईजनजोगी॥
 मननिजुमनहिमिलावै॥ ३॥ ३०॥ नीयेरहेप्रेमजल

नैन ॥ एति दिवं सगो विंदगुन गावत ॥ इहै नगति नईय ॥ ३
या नैन ॥ टेक ॥ काया मे कबोरतान ना सो उचरे गद
गदबैन ॥ मनषया यगलिजां हिमैन लौ ॥ नजतराम
मुषदैन ॥ १ ॥ कबहदं सैयाय सुय रामको ॥ कबहचिं
वाह नैन ॥ बिन बिसरत हरि नरि नरि रोवै ॥ सीव वि
बोदैन ॥ २ ॥ सोई संत जु लै साको क ॥ जाको हरे
जुमैन ॥ बिहबल होइ नगावंत दिगावै ॥ नहितनकी
सुधिसैन ॥ ३ ॥ इहै नगति प्रेमां प्रचुनीकी ॥ जनमम
रनकी ददैन ॥ जनतुरसी महामो विफलदाता ॥ वेद
नवरनी लैन ॥ ४ ॥ ३ ॥ कै सैय ईयै दरसतु म्हारो ॥ य
कुमन मुगधम हाय दपर हरि ॥ करत बयरपे चपसा
रो ॥ टेक ॥ जहां लटकी येतहांत ही धावै ॥ कहीनका
हंको अंगमै आवै ॥ लगत आनर सप्यारो ॥ कुमति सं
संग सुमति सं अनरस ॥ मांडिर हौ उरजारो ॥ १ ॥ बु
रेन लेगुन सवै अहारो ॥ साच मुखकी सुधि हीन सा
यो सोवत सांठ संवारो ॥ कबहन जागि जयै जगजी
वन ॥ होइ जगत सूनारो ॥ २ ॥ प्रेम प्रीति सो प्रचौ
नोही ॥ बुचिजुर हौ महामै तैं मांही ॥ होइ कै निल
जनिकारो ॥ जनतुरसी हरिके सुषमांही कै सै हो
इ संचारो ॥ ३ ॥ ३ ॥ राग घेना इची माह ॥ तब नल
पई ये दरसतु म्हारो ॥ य कुमन देत कुहेत सकल
तजि ॥ होइ भरम स्योन्यारो ॥ टेक ॥ चिततें सब चतुर
ता बिलांही ॥ पंचू एकंत हीइतन मांही ॥ करिन

हि सकतय सा रौ॥ जाइ गरवगलतांत होइ कै॥ बडरि
 नदइ दिखारौ॥ १॥ जहां तेउ ततहां मन आवै॥ तामन
 मध्ये पवन समावै॥ लगत न करितारौ॥ २॥ निरति
 सुरति हिल मिलि अति अंतरि॥ निस दिन करत
 निहारौ॥ ३॥ चंचल बुधि विसर जन होवै॥ सुमति सुंद
 री मिलन संजोवै॥ देजां हिक रम किनारौ॥ तुरसी प्रा
 नव सै दश वै घरि॥ माडिर अचल अहारौ॥ ३॥ ३३॥
 अहो बीरवो दघर मोहि बताइ॥ वा घर विन मोये
 रहौ न परत है॥ पलपल कल्प बिहाइ॥ टेक॥ इहां
 नरमंत बडते दिन बीते॥ दुष च्छुगत्यो अधिकार॥ अ
 वमै रमनि असी उपजी॥ परसो परचुके पाइ॥ १॥ ज
 हार वि कोटि प्रकास कहियत है॥ तिमरत हि द
 रसाइ॥ आदि अति मधि अस्थिरि होइ कै॥ रहे
 संतत हां बाइ॥ २॥ जहां सदा बरतत इकराजी
 इती संकन ही काइ॥ तुरसी आत मत बस चुपावै
 जब वासुधु हि समाइ॥ ३॥ ३४॥ सघीरी वौ दघ
 रक ही एइरि॥ जहां जोति जगमगै सदां ही॥ बजे
 अनाद दवर॥ टेक॥ जहां तिमर बही त्रिविधिता
 पनहि॥ नहि उगवै ससि सूर॥ जामन मरन जु रा
 जमको नै॥ तहां न ब्यापै सूर॥ १॥ रहै कहा कृते सु
 षमै रचि॥ इहां न जे दुष सूर॥ घे म सहित चल्य
 रसि प्राण पति॥ मिटि जाइ अ सुन अ कं र॥ ५॥ मे
 ते विसर विसर नर मादिक बाडिक बधि हव

कर। सुधबुधिहोइसुमरिषनुअपनो॥तेवेवेनि
 जनुरा॥३॥जहांगरेइहांकीहोइअनूस्वचि॥ज
 हीसैजगधूरिआदिअतिमधिमाधोजीकी॥रहि
 येसदाहजूरि॥४॥मनहीजीतिपवनैडिठउरधरि
 पांचौरहिचूरि॥जनतुरसीकहेआरतिष्येचलि
 कै॥रहियेपदमैपूरि॥५॥३५॥बीरप्रदेसीदो॥क
 हारहोइहांबाइ॥चलिरैजहांतोहिलेचलो॥
 तहांबसैनिरंजनराइ॥टेक॥चारिदिसाचौरासी
 पुरमै॥फिसौबहतहिबार॥अबबहस्योकाहेक
 नरमै॥परहरिजगुकोप्यार॥१॥जहांउपजेविन
 सेनहीकोऊकालहसकैनयाइ॥तहांवानिरनेघ
 रकैवेवे॥तेरोसबसंतापनसाइ॥२॥जहांअबग
 तिआनंदविराजै॥बैआनंदतहांनांदि॥जहांके
 गयेबऊरिनहिआइये॥याऊवेजगुमाहि॥३॥
 जहांजीतिजगमगोसदाही॥तिमरनहिदरसाइ
 तुरसीआदिअतिअस्थिरितहां॥रहिएवासुष
 हीसंमोइ॥४॥३६॥अरेबीरउतदेसांचलिजाई
 ये॥तहांबसैअघांतअधारा॥मिलिरहियेमहाप्रच
 सौ॥सुषआनंदहोइअपायाटेक॥जहांचंद्रसूरकी
 गमनहा॥उदेअस्तनहिहोइअहांतिलनरितापन
 यीरवै॥मिलिबऊरिनबिबुरैकोइ॥१॥जहांकोउं
 मरेनजनमई॥नहिआवेनांदिजाइ॥जमकीत्रास
 तहांनहि॥जहांआनंदसदाबिहाइ॥२॥जहांअन

हृदवाजे बाजही ॥ सदा अंघ्रंडधुनिहोई ॥ सुनि
सचपात्रे आतमां ॥ नितिसां ईके संगिसोई ॥ ३ ॥ जहांप
रमन्तरुपरमतेजदै ॥ परमजोतिप्रकाश ॥ परमसत
तहांवसतदै ॥ औरनकोडुलनवास ॥ ४ ॥ जहांइ ॥
कराजीवतै सदा ॥ नादिनइजीआत ॥ जनतुरसी
चलिजाईये ॥ मिलिप्रांनहोइ निरबांन ॥ ५ ॥ ३ ॥ अ
रेबीरसुषकोसागरगमदै ॥ सोईसुमरिचितलाइ
कहांइतवतनू लोकिदै ॥ हंतौहिकहंसमजाइ ॥ टेक ॥ य
ऊकलिजुगंकटिकरूपदै ॥ कोटिकलहकीषी
नितामैपरियचीयेनही ॥ तूकहोहमारौमांनि
॥ १ ॥ यात्रमजलमैबूडेघने ॥ करिकरिकोटिउ
याइ ॥ सचकिनऊपायो नही ॥ याऊवैरंगिलपटा
इ ॥ २ ॥ जोईजोईसुषकरिध्याइये ॥ सोईसोईसुष
नहिहोइ ॥ सुषहैसाचेनावमै ॥ तामैलैसुरतिसंमो
इ ॥ ३ ॥ बाजीविरचिनजीयेसदा ॥ निरमलहरि
कौनांम ॥ जनतुरसीकारिजसबसरे ॥ हरिसुष
मैहोइविप्रांम ॥ ४ ॥ ३ ॥ कथिकप्रिगयेग्यान
अनेक ॥ कहैजैसैरदैतैसै ॥ तेकोऊबिरलाएक
॥ टेक ॥ बातकहैबैरागी ॥ विधिसंजूमुषाहबना
इ ॥ गिहीकेसैकरमकरै ॥ कैसैमिलैरामएइ ॥ १ ॥
संहसकृतप्राकृतनाया ॥ वाचकग्यानप्रवीन ॥
लक्षिकौजांनैनही ॥ उरमायाकेआधीन ॥ ३ ॥ व
हघरधौकोऊऔरदै ॥ जहांगएगतहोइकोम

धलो न अरु मोहको ॥ सुपनहन सुनियेनां मां ॥
 विषै निस्सं डी फिरे ॥ चितचेतनिल गिजाइ ॥ ग्या
 की प्रापति जये ॥ त्रैसी सदा होइ आइ ॥ ध ॥ अरु ध
 धद सौ दसा दरसै जु एको रांम ॥ कल्यांतके नीर लो
 नासै नहु सरै नोम ॥ ५ ॥ जनतुरसी अकथकथाय
 सुयत्तरिक हीन जाइ ॥ जिनिलयीते निबावजल
 ॥ रहे सुयही समाइ ॥ ६ ॥ ३ ॥ वरु घर हुरिदै
 ॥ जिहि घरि पडु चैसा धा ॥ मन सावा चाक्रमनां ॥
 काटि सकल अपराध ॥ टेका ॥ जहां पपीलन जाई ॥
 बीहन देत दिवाई ॥ अति डलन वद देसा ॥ सुरन
 मुनि बहु थकिरहे ॥ करि सकै नको प्रवेसा ॥ ७ ॥
 हां अादि अतिइ के राजी ॥ मधि हन हि होत डरा
 ॥ सदा एकर सहाजे ॥ तहां अ न्यपत्र बै अान
 स्प ॥ अपनि रंजन राजे ॥ ८ ॥ जहां डष सुषनां ही
 या ॥ तहां काग्या फिरी कोऊ नांया ॥ सुषमै र
 हासंमाइ ॥ बहुरिन कबहु बिबुरौ ॥ जो वसुंडह
 चलि जाइ ॥ ९ ॥ जहां ऊगै चदन सुरा ॥ तहां बजे अ
 हदतुरा ॥ जहां जगमरा जोति उजारा ॥ जनतुरस
 परसई ॥ जौयां जगुतै नारा ॥ १० ॥ १० ॥ तहां तु
 तको को जाने ॥ जहां अचैतन अपदा अ
 बुधि ॥ मननां रसवांने ॥ टेका ॥ होइ रदे उनमंत अ
 धरे ॥ कवे प्रबगुमांने ॥ साधसिधकी तनकनव
 ॥ नोइ रदे रसनांने ॥ ११ ॥ मिथ्या स्वाद स्वारथ

स्यौरतमंत॥ बुरीनलीन चिंतांनै॥ क्रियाहीनकृतघन
 कुबुधी॥ कुरी साधिव्यंनै॥ २॥ सतरजतंमतीन्योकी
 प्रकृति॥ इदं जुधितिक रिमानै॥ तुरसी चौघापदकी
 चितवनिचिंत हंनचितमैत्रानै॥ ३॥ ध॥ जहातु
 रीयाततप्रगटनयोरी॥ जहां अचैन न्नापदाभरम
 को॥ बादरफटि जुगयोरी॥ टेक॥ गरिगयो गरवगु
 मांन विलांनै॥ रागदोषजितयोरी॥ मननयोमगान
 मदासुषमांही॥ इतिनसंकतितैरी॥ उदितनयो
 विष्णानमानउर॥ निसविनाव्रवितयोरी॥ तुरसीप्रा
 ननिरवानसमानै॥ ब्रह्मरिनन्नावैइतयोरी॥ ३॥ ध॥
 मेरेनै नसमानै नूरमै॥ पावनपरसिपावननये॥ अ
 पावनकरिहरिरे॥ टेक॥ उलटिन्नायेउरपुरमांही
 तहांदेवीवसतसपूररे॥ जनममरनकोनैमित्यो॥ पि
 रिगावैनही अंकूररे॥ १॥ जहांबिनही दीपक ज्वा
 लादिये॥ तहांबिनकरवाजेहररे॥ बिनहीपावन
 यऊचीयो॥ मैरीघाननिरवानहजुरिरे॥ २॥ सुष
 सागरबासोत्रयो॥ दुषदरदनयोहरिरे॥ जनतुरसी
 बस्तबस्तहीमिली॥ अबबिबरनहोइनमूररे
 ३॥ ध॥ जीयाद्वैयहंडुषकोमूरदैरे॥ जिनकरे
 जिनिकरै॥ जिनिकरैकाहं॥ इतौहीमोक्षिको
 करेरे॥ टेक॥ हिरदाकवलजुमांऊबढिविस
 तरिरह्यो॥ मानोविरयबंबूरदैरे॥ १॥ नैनन्ना
 सकतिनौहैजुटेठीकरि॥ चितवैक्रोधीकर

यो

पद्मदत्रयाद्दुःखदेहनिजदासकौ॥ स्वातिपदकं
 रिद्धिरिदंरे॥ यदमेरोसत्रयदमित्रमानेमुगध॥
 गदोयदिरदोषूरिरदंरे॥ तादुयदित्यागपनागि
 बिंदनजे॥ सोईसांयतसूरदंरे॥ त्रादेवईसंप
 सुधउरउदंकरि॥ आसुरकोकरैचूरदंरे॥ जन
 रसीसोईसंतसुयनागवैरदंरेसदाहरिदंजूरि
 रे॥ ध॥ ध॥ रागदोषरहितहोइरामगुनगाइ॥
 लटिअपनेउरमांऊआवैपहराजाइरेजाइत
 नबदीतनयोजाइ॥ टेक॥ कामअरिजीतिसुविवा
 केवाणगाइ॥ क्रोधऊलबिसांजलसीविसिराई
 नअरुमोहमदआदिदोषीजुए॥ वासनासा
 तिअणिषोदिबगाइ॥ राबसेसंदंसईकई
 महामणिनकी॥ बैजंतीमालाजुफिराइस्वा
 स्वांसउरमांऊहरहरिसुमशिज्योतेरीसुफल
 इयदकाये॥ २॥ इदंजोगवैरागनगतिकुइदं
 तगुरमारिगदीयोदंदिषाइ॥ तीबरहोइनांव
 नैयागिआलसअसुरा॥ हिरदंमुषइकवांनमं
 नलाशाइइदंहरिनजनविधिततमआषीजुतो
 हि॥ सुरतिसुमरतिनीकैजुनिरताइ॥ जततुर
 जडतावनोजुहरिकरि॥ रदोउरमांऊचेतन
 लाइ॥ ध॥ ध॥ ध॥ पाजीया रागकाहेस्पूजिति
 रै॥ इदंग्यानवैरागनगतिइदं॥ इदंसेबको
 रउरधारैरे॥ टेक॥ केऊआवैसुयपायअय

... ननु गारी नयेष्यं
... तत नमः गारं
... उपन्या करं
... निरम लकश्चि
... तं २ इ
... नं घिमव
... मदि जुन
... इ इ इ
... कोटिशालसमृ
... नो विरसहदि
... कादी बकागिरदमा
... आदित्यतिमधि
... वउरभेवसे ।
... आत्मा ध्यानमां
... प्रीतिलई
... पुरानइत
... निहकां
... विदेही
... अर्ध
... प्रमात्माजी
... नद्वाम
... तामेधियारदा

तबिचोरे॥ नजैरामन्त्रविनासीहो॥ टेका॥ विष्णु
रिदथातबिरजै॥ हरसपरसतमनासीहो॥ म
करणकानामनिरमलजल॥ न्हावतहीमलजा
हो॥ शिववेकन्नादिशुद्धसालकसंन्या॥ येई
नौसंन्यासीहो॥ प्रकृतिपुरुषविवरणाकरे
॥ ग्गानगंगतटबासीहो॥ १॥ यामैरदेवहो
इतवता॥ सहेसकलकीससाहो॥ ब्रमांसव
देशरकौनजै॥ कोटितीरथफलपासीहो
याहीमांजबूदमाधौजी॥ बैकवाकेबासी
याहीमांजबूदमाधौजी॥ बैकवाकेबासी
पति॥ बैबेकरेबिलासाहो॥ धायांहीमांजब्रह्मा
बलासन॥ यामेंसकरकेलासीहो॥ याहीमांज
नगुनरहिता॥ हेसमदेवन्त्रविनासीहो
॥ ५॥ याहीमांजउलटिकरेदिठबासा॥ नबोक
टलगासीहो॥ जनतुरसीसौजीवनमुकतिफ
पावै॥ अगतिनकबहुजासीहो॥ धांध्याम
कोऊपूरवतनधावैहो॥ पूरवदिसाएगका
सा॥ जाइजीईडुषपावैहो॥ टेका॥ जहो
प्रलयलान्त्रापदाघनेश॥ घुणालोघुणत
बिहावैहो॥ निहचैनिजसुषसुनहितेयाबि
थांजीवबहिजावैहो॥ १॥ जहांइंडीनविषे
पाहिलागीरहे॥ तिसनांऊलनबुजावैहो॥ दो
तथावतन्त्रवधिवशीते॥ सुषसेतोषनन्त्रावै

वगाही के निसाने जे बने ॥ अंत की बेस्को जन
 साथी ॥ ३ ॥ तात अरु मात नगनी आता बने ॥ दा
 दासी परिवार सोई ॥ सकल माठी मिले गिले ए
 नत गये वृथ न जन बिन अत्र धियोई ॥ ४ ॥
 कहां लो कहां बरणों जु मे कहां लो ॥ एक ही मृतगा
 साण ॥ जहां लो द्विष्टि अरु मुष्टि में आवै ॥ कने
 अस थूलनां नां विचारा ॥ ५ ॥ एक ही मृतगा
 एत प्रचुबी चिये हा ॥ हौ दर द्यो बोट महाकोट बा
 ताह को लंघन जु डन रय स्यो ॥ ता आगे त्रि विंश
 जाई ॥ धा आदित्यागेतन त्याग सब को कीयो
 हित्यागि बेक बुर द्योन सोई ॥ आही मां कतेई
 अंतर नूत ॥ आही त्यागेत त्याग होई ॥ ७ ॥ सायसा
 बेक उर धारि ॥ त्रिमूल परय चको कीयो पर
 हाय जनतुर सीधं निधं निज संत वै ॥ अत्रपते स
 धस रूप करि रहे सं चारा ॥ ८ ॥ ५० ॥ ॥ ध ० ॥ ॥ राग
 ॥ हरि बिन मने नदी बांधत धीरा ॥ सोचत ही दि
 जाइ सषीरी ॥ नैन निबर षतनी रा ॥ टेका जादि
 तै हरि बिबुरे सजनी ॥ कलिन परव सरी रा ॥ बि
 हवि थाउर अंतरि मेरे ॥ कोउन जानतपी रा ॥ १ ॥
 जाय सुबहु रित आवै ॥ उहो आनंद सुष
 मूरि ॥ स देसो को कं अनिसुनावै ॥ अगम अगो
 ॥ २ ॥ अति आतुर होइ उम गिचे ल्यो ॥ स
 नने कन बाडत तीरा ॥ जनतुर सी विरहनि नई

विरला ॥ गहि गो बिंदु गुन गावै ॥ टेका ॥ घटि घ
टमांही सुंदर सदां ही ॥ नांतां रूपवतावै ॥ जोगीज
तीतयो संन्यासी ॥ विषय बनमै नरमावै ॥ बडे बडे मुनी
परपत्रिही ॥ येकाह हाथि न्नावै ॥ २ ॥ मनसाहा
थि की ये सबकोऊ ॥ मनसाहाथिन न्नावै ॥ जनतु
रसीमतसोई जीतै ॥ जोषे मसदितिपीवगावै ॥ ३ ॥
॥ काहेको गहरकरतगुनगावत ॥ घरी घरीप
लहीपलपानी ॥ हरिबिनजनमसिरावत ॥ टेक
याचतीनिगुनसांनिसज्यघटा ॥ बकुदिनलगेव
तावता ॥ बिनसतबेरकबुनहिलागै ॥ फिरिपी
बैपंडितावत ॥ २ ॥ जोतरवरकेपातजातजि
बकुरिनडारी न्नावत ॥ यौतनजाइध्यायेत्रिच
वनपति ॥ संतसकलसमजावत ॥ २ ॥ यकृतेरोने
सरबकृतेरी बरीया ॥ अकृसमयो फिरिनावत
जनतुरसीनजिरांमरैनिदिना ॥ सुषमैसुरति
सावता ॥ ३ ॥ ५ ॥ निदानेहनकीजेनीचा निड
दकीयेतनमनसबा ॥ जारेजुराकुमीचा ॥ टेक
जुगमरनभवहरनमुराशी ॥ तजितजिनिदान
निदानेहतजेबिनगधा ॥ देहहोइजरिषद
न्नासनसाधिन्नांराधिपरमपदा ॥ निरति
तिउलटाइ ॥ सुषदिरेदैरटिशमनिंज
कचितएकैनाइ ॥ २ ॥ अलपत्त्रहारअल
अलपत्त्रयाअचीजाअलपर

तमंगजोवता॥चित्तमैपरैनचैना॥शाइहै
 नौहोसोईयां॥सुषदेकुडयविसरावो
 १कूमिलोकपाकरि॥मिलिआनंदउप
 ॥२॥४॥४१ए॥रागदेवगंधारि॥
 गीतितहोचलिजाव॥याग्वेजगुमांही
 गहैकोनरमावत॥टेका॥इतवतकीबि
 वारो॥अगुनसंगनरहाव॥चितचेत

नतुरगमचेटिनिसिदिना॥निरगुनघरिपहंचा
 व॥१॥जुराजमकोतैनांही॥निरनैहोइरहांवा॥
 जनतुरसीअपनेप्रचुकोमिलिकशि॥जुगिजु
 गिसुषविलसाव॥२॥१॥बांनीकथिकथिफू
 लेघांनी॥जोगतिउनसंतनियहंचांती॥सोतोए
 कनजांनी॥टेका॥बातनिजादीकेघनलोक
 लावतअंधअग्यांनी॥करनीवोसखूदतुल्पन
 ही॥क्योमिलिबोनिखांनी॥१॥बिचत्रबिच
 त्रकथाकहांनी॥बिचित्रिबिचित्रअरथओ
 गाहै॥येगरवनतजदिगुमांनी॥२॥जनतुरसी
 दोहआहिओरही॥जुगतिअंतितबखांनी
 जिनिदिटक रिअपनेउरिधारी॥तेनएनिबा
 वकोयांनी॥३॥२॥४२१॥ ॥इतिश्रीगुसा
 ईजीश्रीतुलसीदासजीकापदसंपूरण ॥ श्री
 १५परमात्मनेनमः॥श्रीसकलसंतापनमः॥
 रं

परमात्मपरब्रह्मपरः

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

परमपदस्यपरम

॥ गुरदेवकी परिकरत ॥ १ ॥ अथ बंदन विधान ॥ नमो नमो निजा
 नंदमय धनि जालंबनि जदेव ॥ निराकार निरधार प्रभु ॥ अथ
 पति अलष अनेव ॥ गुरपद रज बंदन जु करि ॥ संत जनों की से
 व ॥ तुरसी श्रे सै सु सरिकै ॥ जनम सुफल करौ एव ॥ १ ॥ नमो नमो
 निरंजनाय ॥ नृगुं नाय नमो नम ॥ नमो नमो ज्ञान रूपाय ॥ गुरदेव
 य नमो नमः ॥ २ ॥ अथ श्री गुर क्रिया विधात ॥ १ ॥ तुरसी प्रथम गुर
 क्रिया स्यौ ॥ इति संत संगम ज्ञान ॥ त्रीतीय पूरव अंकूर मिलि उदैन
 योय हज्जान ॥ २ ॥ तुरसी ज्ञान ग्रन्थित हरिकी शक्ति ॥ अंष्टांग जो
 ग अहत्याग ॥ गुरगमि ज्ञान मंजू सिका ॥ खुली हंसारै नाग ॥ २ ॥
 तुरसी शक्ति जोग वैराग्य पद ॥ अथ गुर अथ सुधिसौ शानो नारतन
 प्रगट भये ॥ पूरव लै प्रति सोश ॥ ३ ॥ तुरसी जदपि पूरव बुधि प्रगट
 नई ॥ उदै नई उर आश ॥ ताहू के दाता गुरु ॥ जिति दी न्दी फेरि जगार
 ॥ ४ ॥ तुरसी गुरु ते गति गुर ते शक्ति ॥ गुरु ते ग्यां न अरु धांन ॥ बिन गुरु
 क बुन पाई ए ॥ तावै कोटि कपटो पुरांन ॥ ५ ॥ विद्या तीनो लोक की ॥
 असा सई जु की ई ॥ तुरसी तऊ गुरु क्रिया बिन ॥ ज्ञान दीप नदी होइ ॥
 ॥ ६ ॥ अथ श्री गुरु अस्तुति विधात ॥ १ ॥ गुरुदाता महामो चिका ॥ गुरु
 मस्तक का मोर ॥ तुरसी गुरु समि को नहि ॥ पूजि जात मै श्रौ रा ॥ २ ॥ तुरसी
 गुरु अस्व सव धरम का ॥ उपदेसन हारा ॥ गुरु ही तै लंघि जाइ ए ॥ महा
 भव जल पाया ॥ ३ ॥ तुरषष्ट नव अस्तदस ॥ सब ही मां ही सोश ॥ गुरु की
 महिमा अतंत है ॥ वरनि सकै का कोइ ॥ ३ ॥ गुरु समुद्र कृते अधिक ॥
 गरवागहरा सोश ॥ तुरसी तापटंतरव को ॥ वस्तन त्रिन वंन कोइ ॥
 ॥ ४ ॥ तुरसी सप्त दीप नव यंड ज्ञा ॥ तीन लोक कै मां हि ॥ गुरु समांत गुरु
 ही जु है ॥ हजा को ऊनां हि ॥ ५ ॥ अकिंचन आत्मारंम गुरु ॥ गुन इंदी जि
 तमार ॥ तुरसी श्रे सासत गुरु ॥ निरंजन निरविकार ॥ ६ ॥ चौपड ॥

रीजाव॥१४॥ जब ते मोहि दरसन ज्यो॥ मिटि गयो सकल केलिस॥ तुरसी
 पावो परम पद॥ सत गुर के उपदेश॥ १५॥ आत्म बोध न देकरेन॥ आपन सु
 यशारंभ॥ त्रैसास मध्य गुर मिल्या॥ तुरसी पूरण काम॥ १६॥ रवि वत न
 रमनि साहरन॥ अवि वत हरन जु पताप॥ तुरसी त्रैसा गुर मिल्या॥ मह
 वृमल निहपाय॥ १७॥ ज्ञान सुसीतल नीरस्यो॥ चिरकि बुजवन काम
 तुरसी त्रैसा गुर मिल्या॥ अमल आत्मारंभ॥ १८॥ तुरसी ज्वाला को ध
 की॥ सहजे गई सिराश॥ लोभ आनि पानी नई॥ मोह दुगया पु
 लाश॥ नयस यउर आनंद ज्यो॥ सो सुषक हो न जाश॥ गुर के कृ
 या प्रसाद स्यो॥ अब त्रैसी नई आश॥ २०॥ ३५॥ अध गुरु लक्ष्
 ण निपार सवत विधीन॥ ५॥ तुरसी पार सवत गुरु॥ परसत हो फ
 ल देश॥ तात काल तही जु चित॥ यस्मान्त सकरिले श॥ १॥ तुरसी पार
 सवत गुरु॥ हे मम जीवन धान॥ जिनि पतित जीव पावन कीये॥ हंम
 से किते अज्ञान॥ २॥ तुरसी पहली काच कधीरथा॥ करपकरता
 नकोश॥ गुर पारस कौ परसिकै॥ अब कंचन जया सोश॥ ३॥ तुरसी
 सत गुर कौ सबद॥ परत विपारस रूप॥ जिनि परस्यो द्वित चित दे
 ते ज्यो पलटि अरूप॥ ४॥ कंचन रूपी कै जलै॥ लोहरूप यद्मन॥
 पारस रूपी गुरव चतन॥ जो उर धीरै जन॥ ५॥ पारस परसत पलक
 में॥ लोहा कंचन होश॥ तुरसी तनक संचर रहै॥ तो अति दोश का दे
 श॥ धर्व चवी चले गुर सरन॥ बरन दोष मिटि जाश॥ तुरसी ज्यो पारस
 परसतै॥ लोहा नाम न साइ॥ ७॥ धात ही स्पे चालै जलै॥ पारसत नो जु
 यांन॥ तुरसी पारसि ऐषी तिस्यो॥ ये पलटै नही पषांन॥ ८॥ तुरसी रो
 म डहाई सतिक ही॥ जदपि पारस गुर आदि॥ तो रू धात ही पलट
 ई॥ धात न पलटै नादि॥ ९॥ तुरसी किते सिष गुर पुनिकिते॥ अप
 नी अपनी गौर॥ पारस अमल सुधात समि॥ ते गुर सिष कौ ऊच्यो र

तुरसी गुरको दोसनदी जिण पुरनिज पारस अंग सिषस्रध होइ पर
येनही ताते लगे नरंग ॥१॥ तुरसी सुधरिद सिषके अत्रसिउदेजु
होइ पारस व्रत गुरदेवके ॥ मानउ जागर सोइ ॥१॥ सुरा पूरासत
गुरु गारवा गहर सोइ ॥ पारस व्रत जांनो सोइ ॥ जो त्रैसाहेकोइ ॥
॥१॥ भाग बडे हंस पाईयां ॥ गुर पारस का संग ॥ तुरसी ताको परसि
के ॥ प्रांन मिले हरिरंग ॥१॥ पारस हंते परस गुरु ॥ तुरसी अधि
क प्रवांन ॥ पारस धात हि क न क करि ॥ गुर करे आय समान ॥१॥
पारस व्रत गुरदेवकी ॥ महिमा वरनि सोइ ॥ आगे कल्पतरु व्रत गुरु
॥ वरणो विधि संजोइ ॥१॥ अथ गुरु कल्पतरु व्रत विधान ॥
तुरसी कल्पतरु व्रत गुरु ॥ जदपि अधिक कृपाल ॥ तदपि सरनि अवे
कोऊ ॥ ताही करे निहाल ॥१॥ जाके पीतिन वैरता ॥ सबस्यो सदासं
मान ॥ तुरसी कल्पतरु गुरुके ॥ समजो एसदिनांन पेपरसे अंतित
योयदे ॥ त्रैसे कृपानिधान ॥ अघट ज्ञानधन अरपिके ॥ हरे सकल
दुष आंन ॥ दुषद लिद्रता हरि करि ॥ निज अपनो सुषदेइ ॥ तुरसी
सरना गतिन गुरु ॥ यो अपनां करिलेइ ॥३॥ सत्रसिउजाके कोऊ ज
दपि नाहिन आन ॥ तदपि सुतह सुभा वयह ॥ सरनि आये देज्ञान
॥४॥ औरा वरक हो कोऊ ॥ काऊ धरे नकांन ॥ तुरसी सदासमान
गुरु ॥ तुल्यतपे जौं मान ॥५॥ तुरसी जा गुरके नही निघनता ॥ ना
ही विघनताकोइ ॥ जैसें साइ नजे कोऊ ॥ तेसी ही ताहि सिधि होइ
॥६॥ अथ गुरु कामधेन व्रत विधान ॥ तुरसी सत गुरको सब
द ॥ सरजधेनि उतमान ॥ सकल मनोरथ सिधि होहि ॥ जो कोऊ धा
रेकांनि ॥७॥ तुरसी सत गुरको सबद ॥ दयादू धनिति देइ ॥ सरजधेनि
लौं अयोकरे ॥ सरिभजन किनलेइ ॥८॥ अथ गुरु चिंताम
णिव्रत विधान ॥९॥ तुरसी चिंतामणिव्रत गुरवचन ॥ उरधारत
ही सोइ ॥ मनबंछित फल देत है ॥ जो उर धारे कोइ ॥१०॥ तुरसी चिंता

चितवतही चिताहरे। मिलहिंम
॥ २ ॥ चिंताकोऊ नारहै ॥ उरधारतही जैन ॥ तुरसी ज्ञान ॥

लगुरके चरना ॥ सीतलसुषदसुचैन ॥ ३ ॥ सबसिधिसहजैपाइय ॥ उर
सरहैसकोइ ॥ तुरसीचितवतगुरुचरना ॥ परमलानयदहोइ ॥ ४ ॥

॥ ६ ॥ अथगुरुचदनवतविधान ॥ १ ॥ तुरसीसतगुरकोसबद ॥
चंदनजेहाहोइ ॥ सुगंधेसीतल जये ॥ सरनेआयेसोइ ॥ १ ॥ श्लोपइ ॥

सरनेआइसकलदुषगयो ॥ रोमरोमतनआनंदनयो ॥ फनहंसंज
उपोतीअतिचैता ॥ परसतसीतलगुरकेबैन ॥ २ ॥ साधी ॥ तुरसीचं

दतउतगुरुपायाहंसबडजागि ॥ परसतहीसीतलनए ॥ बुझीबंरंती
आगि ॥ ३ ॥ तुरसीगुरबेनाजुए ॥ अरवधारतहीकान ॥ पापतापसबहै

मितै ॥ लैसनरहईआना ॥ चंदनसीतलघरीयदौ ॥ नीवनीठतिबं
हंत ॥ तुरसीसीतलगुरुबयन ॥ आदिमधिअरुअंति ॥ तुरसीजा

कैसवनही ॥ मित्रहंनोनेहनकोश ॥ सत्रमित्रसबकैबिषे ॥ रघासमानजु
होइ ॥ अिसासीतलसतगुरु ॥ चंदनरूपीजोइ ॥ तापदपरसतपापचै ॥ ताप

नरहईकोइ ॥ ६ ॥ ६ ॥ अथगुरुकुरकटवतविधान ॥ १ ॥ तुरसी
कुरकटवतगुरु ॥ अंतितहीजुक्रियाला ॥ अयनोप्रीतिपषवाबदे ॥ करै

सिषनिप्रतिपाला ॥ २ ॥ तुरसीपापतापसबहीहरे ॥ करैअमितउपा
रा ॥ कुरकसुतनिलौपौषदे ॥ लेनिरबाहैपारा ॥ ३ ॥ अिसासमथसतगुरु

ग्यानध्यानदातारा ॥ पूरबपुनिहंसपाईया ॥ निरधारैआधर ॥ ४ ॥ निरधा
रैआधारगुरु ॥ औरआधारनकोइ ॥ कैआधारमेरेसाईया ॥ जिनिशि

रजेहंससोइ ॥ ५ ॥ तुरसीपरमारथीगुरु ॥ पोषसवनकोदेइ ॥ अत्यउप
गारनवाबरी ॥ अिसेआनंदकेश ॥ ६ ॥ आनंदकेशतागुरु ॥ सुषसिंध

कीजहाज ॥ तुरसीपारलंघायदे ॥ बांहगहेकीलाजा ॥ ७ ॥ कुरकटस्वा
रथहंजुलगा ॥ करैसुतनिकीसेव ॥ तुरसीपरमारथीगुरु ॥ ताहीतेअ
धिकेव ॥ ८ ॥ ८ ॥ अथगुरुकूरसवतविधान ॥ १ ॥ तुरसीज्यो

तुरसीज्योत्कृमञ्जनिर्को। राधेदिष्टिलगया। हरहीतेनिजपोषदे। अतित
 प्रीतिनपाया। १। तुरसीज्योत्कृमिधनको। सुद्विष्टिकरिसुषदे। योषेप्रा
 तियालनकरे। अपनोजानिसुषे। २। तुरसीकृपानिधानमसुसुषति
 तुरसी। तुरसी। अपनोजानिकरि। आपकरैप्रतियाल। तनकचितव
 नमांदिगुरु। निजकरिकरैनिहाल। ३। सतिसकल्यगुरुदेवकी। सु
 द्विष्टिहीस्योसो। तुरसीचेलावसहो। जीवकलुषताषो। ४।
 तुरसीजीवकलुषतानारहै। पलटिवसहो। गुरकीतनक
 चितवनिमें। ऐसीहोवैआ। ५। ७। अथगुरुकेजीवतविधा
 न। १। तुरसीकुंजीसुतनिहिता। उडिचढेअसमान। हरहीतेनिज
 योषदे। करिकरिघीतिवचान। १। तुरसीऐसेसतगुरु। कुंजनकीग
 हिरीति। सियनिकोसंतोषदे। करिकरिकसणीप्राति। २। तुरसीकृ
 पानिधानगुरु। पतितपांवनसो। जाकीनिजसुरतिहीस्यो। शिष
 नकीशिधिहो। ३। तुरसीसतगुकीक्रियासुरति। अतितहीबल
 वान। पतितनकोपांवनकरे। गडाउधारेपांन। ४। ८। अथगुरु
 दीपगवतविधान। एकनिमयिकाठीदहन। अतिहीसरमकरिसो
 एकानदीवैदीवकरि। रहैतिमरसवषो। १। तुरसीदासगुरसिषनि
 का। ऐसैयदमतजो। कंककठिनकंकहैसुगम। पुनितेप्राप्तिहो।
 २। तुरसीदीपगमयगुरु। अतिततटस्थलआदि। कौकआवकन
 लजाऊकोऊ। कबूनकदुईकाहि। ३। काऊकेडुयसुषमें। जदपिनेरे
 नाहि। तदपिआइपरसेकीऊ। सरूपसुषदेतादि। ४। सरममिताइ
 जुसिषकी। अनयासहीगुरदेव। अपनोआत्मज्ञानदे। पदपरसतही
 एव। विनसेवाविनबेदगा। विनहीकष्टसुषेव। तुरसीदीपगमएगु
 र। ऐसेआनंदकेव। ५। ८। अथगुरुचेद्वतविधान। १। ४।
 गुरुचेदमाचकोरसिष। होहरघालेलीन। तुरसीअचवैअमीरस। हो
 इहोइअतिआधीन। १। तुरसीगुरचेदमाचकोरसिष। आदिअति

चात्रिगघनप्रीति

आतस्यौतीता। तुरसीवसुषपावश
 कायहसाचीपरतीति॥धा। तुरसीयहसाचीप्रतीतिगहि। उरनिहचौअव
 धारभअपनौगुरगोविंदभजौं। सोसिषविज्ञवनसार। पा। पांणीहोवैपल
 धिकै। तुरसीतीनौताय। रोमरोमसुषस्वांतिहोइ। जपतजपतगुरजा
 प॥ ६॥ १२॥ अथगुररविवृतविधान॥ १५॥ तुरसीरविवृतगुस
 की। कहलौंवरनौंसोशांमंदिमांअंमितिअपारहै। वरनिसकैकाकै
 इ॥ १॥ तुरसीद्विरंमिसेवाविनिबंदगी। अवनपासहीनुआश। विरदअ
 यनौंजानिकशिदीयाज्ञानजागश॥ २॥ तुरसीधनिवैसतगुस। निसाक
 रीजिनिहूरि। कामकौधअरुलौनकी॥ मोहकंकीनिरमूर॥ मोह
 आवरननिवारिकै। निजपददीयादिघाइ। तुरसीधनिवैसतगुरु॥
 निविअैसीकरीआइ॥ ४॥ जागुरतैनईज्ञानगामि। फुनिपाप्तिनयो।
 धान। तुरसीदरसीआइ। धनिवैक्रियानिधाना॥ ५॥ वरणंअंमकै
 नेदहै। निसिनिष्ठिर्वलौंसोइ। सोबुधिसहितविलेनयो। लेसनरहि
 कोकोइ। रविवृतज्ञानउदैनयो॥ गुरपरसादतैसोइ॥ तुरसीगुरअैसी
 करी। जैसीगुरतैहोइ॥ ६॥ १८॥ अथगुरुघनवतविधान॥ १६॥
 तुरसीनिकटहोइअथकुरिगुरुघनहोइमुषतैश्रवै। सबदसुधा
 रसधार। तुरसीसिषचात्रगहोइ। अचवैवारंवार॥ १॥ तुरसीसतगु
 रस्वांतिबूंदलौं। वरिषेअंमृतवैन॥ सिषअवनपुटसीपलौं। सोगाहि
 गाहिलेअैना॥ तुरसीगाहिगहिलेगुरुकेवचन॥ रिदमधिगयतजाइ
 तबनिहवैतनसीपमौं। मनमोतीहोइआइ॥ ३॥ तुरसीमनमोतीहोइ
 सहीसौं। तामेंससैनांदि। जोगुरबचनगहेरहै। गाठकैजीयमही
 ॥ ४॥ तुरसीगाठकैगहै। घटहीमाऊगुरवैन॥ तीमननगहोइनिपजै।

अथ सिद्धमोलिक त्रैतः ॥ ५ ॥ तुरसी धार समद संसार यह तहो सिधसी पस मो
 न विषजल सपरसना करे ॥ तो मो तीयन की घांनि ॥ ही ए वै रा गर घना सील
 संतोष सुज्ञान ॥ तां नां नागर उदै हो हि ॥ गुरा गमि अत्र अत्र मान ॥ ६ ॥ १० ॥
 अथ गुर ब्रचन वान विधान ॥ १० ॥ तुरसी निकट होऊ अथ वा डवरि
 वचन ब्राण लो जाहि ॥ सरबीर सता गुर को ॥ तल फत बीते ताहि ॥ ११ ॥ तुरसी
 निकट की को कहै ॥ हरि हरि के मारे ॥ सोधि सांघि गुरज्ञान सर ॥ घा डल करि
 डारे ॥ १२ ॥ सत गुर ब्राहे ये चिकरि ॥ सब दउ ला कतीर ॥ तुरसी जा डल गो जिने
 तोरे भरम जंजीर ॥ सो वत हे मस मोह की ॥ नीद मा म अ बी द ॥ तुरसी सुनत गु
 ल के वचन ॥ चमकि उठे ज्यौं सिद्ध ॥ १३ ॥ सुमरन लो गो राम के ॥ सुनत करन गुर
 द्वै न ॥ तुरसी नियरे हरि को ॥ नियम नही कहु त्रैत ॥ १४ ॥ तुरसी दरपत स्यो इति
 र दि न ही ॥ जद पि अर क आकास ॥ तवै बिंब न सैन ही ॥ तावै सदार दौ रि
 द्विपास ॥ १५ ॥ तुरसी र बिडंका करे ॥ जो मलति आर सी होइ ॥ निकटि होऊ
 अथ वा डवरि ॥ प्रति बिंब निदैन कोइ ॥ १६ ॥ गुर गुर करि दो करे ॥ उर तै त जे
 बकांसा ॥ क्रोध लो न ब्राडे मही ॥ कहा भयो गुरनांम ॥ तुरसी गुर कडु ह रि
 त ऊ हिर दा के माहि ॥ जो सिध को चित सुध होहि ॥ प्रीति बिसारे तां हि ॥ १७ ॥
 गुर र वि सिध र बिकांत मणि ॥ तन करि हरि डरंत ॥ तुरसी मन करि मिलि
 रहे ॥ ज्यौं ब आ ल के तंत ॥ १८ ॥ ज्यौं र बि निकट जु कं वल के ॥ हरि कहै ते हरि
 तुरसी तेई हरि हैं ॥ वै तो सदा ह जरि ॥ १९ ॥ २० ॥ अथ गुरु चंटी मी वत
 विधान ॥ २० ॥ तुरसी ना गिन पाईये ॥ त्रैसा सत गुर सोइ ॥ जातें यह जी
 व पलटि सीव ॥ आही तन धरि होइ ॥ २१ ॥ सत गुर की सुध क्रिया स्यो ॥ जीव
 पलटि होय सीव ॥ तुरसी जे सैं हो ति है ॥ कीटी स्यो चंगी व ॥ २२ ॥ कीट पलटि
 चंगी व नया ॥ जीव पलटि नया सीव ॥ तुरसी धनि वो सत गुरु ॥ जिति ॥
 यह त्रैसी की व ॥ २३ ॥ तुरसी सुता जन्म जन्म का ॥ जागै याम मयां न ज
 गाइ आपन साकीया ॥ धनि वो सत गुर जान ॥ २४ ॥ २५ ॥ अथ गुर ब
 चकल वि विधान ॥ २५ ॥ वाचक दानी गुर घने ॥ लच्छि ज्ञाती ॥

तिलसरावके ॥ वातबनां वनसार ॥ तुरसी ॥ असे सतगुरघने ॥ बिरलेजे
 वनहार ॥ १ ॥ जोइ मेले हेरिदके वलमें ॥ अथं डदीपगसोइ ॥ तुरसी ज्ञांती
 गुरसोई ॥ जो असे साहेकोइ ॥ अथं डईश्वरजीवकी ॥ अथलबिहीगहिते
 ॥ तुरसीउने अकासलो ॥ वाचकचितनदेश ॥ ४ ॥ तुरसी वाचकमें तूजे
 घने ॥ पाहिपाहिबेदपुरांन ॥ बहावनिमांही बहिपरे ॥ लखिनसकेलबि
 ज्ञान ॥ ५ ॥ तुरसी वाचकघटमगवतअरथ ॥ लबिअकासवतजान ॥ ६ ॥
 ज्ञेयागिउनेयत्पाहे ॥ सोसतगुरकोऊ आंन ॥ ७ ॥ ततवपदकीसुधांता
 लबिकहावेसोइ ॥ उनेनको एकहीकरि ॥ अथं निरेनेहोइ ॥ तुरसी असा
 सतगुराजगकीजिहाजजोइ ॥ आपतिरैतारैसिषनि ॥ अथं हेजेकोइ ॥ ८ ॥
 ॥ १२६ ॥ अथगुरहंसधीरनीरवतविधान ॥ २० ॥ तुरसीपूरवप्र
 नितैपाईए ॥ असासतगुरसोइ ॥ धीरनीरलौंजिनिकरन ॥ प्रकृतपुरुषए
 होइ ॥ १ ॥ प्रकृतिपुरुषनिरवारिदे ॥ न्यारेन्यारेन्यांन ॥ तुरसी असाधमगुर
 मरीजीवनप्रांन ॥ २ ॥ तुरसीप्रकृतिपुरुषहैयह ॥ जिनिनितिदेशवताइ
 संसेकबूरवेनही ॥ सोगुरनामकहाइ ॥ ३ ॥ तुरसीसतगुरनामकहावते ॥
 लाजनमरऊसोइ ॥ जावतप्रकृतिपुरुषए ॥ निजकरिलषैतदेश ॥ ४ ॥ तुर
 सीजहंससेनही ॥ जहीबिपरजेकोइ ॥ असेपुरुषवताइदे ॥ गुरुहंमारासो
 इ ॥ ५ ॥ चौपई ॥ यहप्रकृतिपहपुरुषकहावे ॥ संसेबिपरजेरहितलषा
 वै ॥ तुरसीसाचासतगुरसोइ ॥ करैबेदनांसबहीलोइ ॥ ६ ॥ साधी ॥ तुरसीसा
 चाप्रसोई ॥ पुरुषहीदेइवताइ ॥ ७ ॥ १३३ ॥ अथगुरदारवतविध
 न ॥ २१ ॥ गुरदारमईचाहिए ॥ सिषजो लोहकहोइ ॥ तुरसीतोतिरपार
 होइ ॥ अइजुरेजोकोइ ॥ लोहजटितहोइ ॥ दारस्यो ॥ जोजलमांजतिएई
 योरतहोइ ॥ बिरकतस्यो ॥ तीतुरसीलेधिजाइ ॥ ३ ॥ रोममिलावेतीमिले ॥
 अरसिषएकसमान ॥ तुरसीबिरकतधिकारस्यो ॥ रतमतपदनिरबान ॥ ३

तुरसीदासविरक्तगुरुमनऊजबोहियदारसरकतवावपयातदौले
दौवेमऊधाराधतुरसीजागिनपाइएद्वैरगीगुरसोइसगगीकेतेपरे
तिनयोंसुकतिनहोइ॥५॥कंनककोमनीरतगुरुद्वैजगुमाहिअनेक
तुरसीहंमदेयेघनेउभैरहतकोउएक॥६॥उभैरहतसतगुरसोईद्वै
जगतकीजिहजआपतिरैतारैसिषनिकरिकरिजतनईलाज॥७॥
तुरसीदौकिलनावृविचिमतद्वैतौऊजुकोइलंघ्योचाहैलोकतय
तौहलकीनावसंजोइजहांलोलालचनहीरद्वैपायमलषोइम
नसावाचकरमनायेद्वैसतगुरसोइ॥८॥१७१॥अथगुरपार
पदिधाने॥२२॥गुरगुरमेंबऊअंतरासमकेकोऊसुजातइकदी
पकमणिनउत्रसमिएकससिसरसंमान॥१॥गुरगुरमेंबऊअंतरा
बूकैविरलाकोइतुरसीइकपारससमिइकपधानसमिजोइ॥२॥
गुरगुरमेंबऊअंतराजातेकोऊजाननहारइकरतमायामोहमेंइक
विरकतसंसारअरतगुरनावसुलोहकीविरकतबोहियदारारत
दौवैनवजलमहीविरकततारैपार॥३॥तुरसीविरकतगुरबिनस
रकतडूडेनमाहिद्वैसबेसिबूडेघनेपारगयाकोऊकेंताहि॥५॥त
रसीजरजरनावृचदिमतकोऊकरऊअकाजलंघ्योचाहैलोकने
तौसाजोसमरथजिहजतुरसीअथासमदसंसारयहवारपारनहि
कोइसंतगुरसफरीनावृवितालंघ्योजाइनसोइ॥७॥तुरसीसफरीता
वागुरजाउरआत्मज्ञानहूकंवलमेंहोइरघाब्रह्ममांऊगलतांन
जाकेंनैननासिकातुकरसनानहिकातजदपिहैतदपिनहीनईवि
तिबिलीमानी॥८॥१७१॥अथगुरउतनप्रापतिविधाने॥२३॥
अकिंचनइदियजितगुरुइधनत्रिनवनजोइतुरसीजागिनपाईये
ओरउपायनकोइ॥१॥तुरसीजाकैरागनरिदामेदोषहंतदरसाइदि
येजुपूरनचंदलौअडितहीजुइहिकाइसबस्योसमानहोइरघा॥५॥

समुद्रमलविसराशा ॥ १ ॥ त्रैसा आत्मरामगुरा सबगुरएजकहा ॥ २ ॥ तुरसी
जागुरमैगुरताजुयहा ॥ स्वभरुनदरसा ॥ सोगुरनामकहायकौबिषही
ब्रीकबहाशा ॥ १५ ॥ अथगुरउपथयापीत्यागविधानः ॥ २ ॥ धानही
सबूरीसतता ॥ असततावरतांदि ॥ त्रैसेगुरजनबहुतहै ॥ तुरसीयाज
गुमाहि ॥ सायास्वारथकारनै ॥ बकतककरदिउपा ॥ कऊंतांवेगा
बैकऊंकऊकहैअरथबनाशा ॥ एकगुरनष्टविकलबुधीपवहैव
हवैश्रीर ॥ तुरसीतिनकौसेगकियो ॥ बूटेननरकश्रीघोर ॥ अकनक
कामनीगुरकौ ॥ सिषरुंकेफूनिमो ॥ तुरसीबूडेनवजलमही ॥ लोह
लोहमिलिहोशा ॥ कंकककामनीगुरुकौ ॥ लीयेफिरैजुलारासि
षरुंवहिमारगपरो ॥ बूडेकालीधारा ॥ पापांनौइंद्री ॥ ब्रौमना ॥ बधि
गुरसिषदोक ॥ आहि ॥ तुरसीउंनैजुएकसे ॥ अधिकारीकऊंकदि
॥ ६ ॥ गुरवटरसवसिहोशरघा ॥ सिषविचिपांनीलौन ॥ तुरसीदोक
अंधरेपंथवतावैकोन ॥ ७ ॥ आपनअंधराअधसिषा ॥ अंधाहीउ
पदेसा ॥ तुरसीतेप्रनुपेथकौ ॥ लहेनसुरविसेदेसा ॥ ८ ॥ नौपई ॥ लोनी
कौलोनीगुरकरै ॥ ताकोकाजकबूनहीसरे ॥ ज्यौंकामनिकामनिकौ
प्रसे ॥ तुरसीसुतसुषपकतदरसे ॥ ९ ॥ लोनीगुरस्योरचिपचिपांनी
उंनैलोकहारतअज्ञानी ॥ तुरसीनाकुलअकुलामोहिदोउसुयमै
रकौतादि ॥ १० ॥ साधी ॥ रितिवंतीत्रियत्रियमिलौ ॥ लोकारनरहैनको
॥ ११ ॥ तुरसीप्रसेषुरुषकौ ॥ तवफलपावैसो ॥ १२ ॥ लोनीकौलोनी
लोनीमिलौ ॥ कथाकहैबऊंतांति ॥ विननिरलोनीगुरबिना ॥ तुरसी
मितैनन्तांति ॥ १३ ॥ नौपई ॥ अरथजावसबहीकरिसुरो ॥ ज्ञानही
नहारजातिअधूरो ॥ सोगुरमतौजाजरीनाव ॥ चढवहीजुवैरैति
हिवांवा ॥ १४ ॥ साधी ॥ नवजलतिरेवचादि ॥ तौसारीनावसजोइ
तुरसीफूटीनावमौ ॥ चढिमतिबूडैकोइ ॥ १५ ॥ जोकबनौरैवैसिप

फूटे तैरै मांदि ॥ ठरसी जबकी मति परै ॥ तवत हारि एनाहि ॥ १५ ॥ ठरसी यह
 जानै सकल ॥ देखि जरजरी नां व ॥ अंधही आरोहन करै ॥ और न धरई पाव
 ॥ १६ ॥ कूवाषनिये जलनिमति ॥ गुठनीनके काज ॥ उने मांदि एकऊन ही
 तौ द्विषकौ करै छलाज ॥ १७ ॥ ठरसी सकलई लाजये ॥ गुरविनि फोक
 टजानि ॥ जौ तिहं कंचन गुरमिलै ॥ तौ ही चढै प्रवानि ॥ १८ ॥ १९ ॥ अथ
 गुरत्वाग दोष विधानः ॥ २० ॥ अकिंचन गुरु देवकौ ॥ कदाचित्पागौ कोइ
 काला मुष्टता सिषका ॥ कवहं काजन होइ ॥ अकिंचन गुरु कौ कवे
 सिषत्रकसौ जुकराइ ॥ तौ ठरसी तासिषकौ ॥ लागे दोष अघाय ॥ २१ ॥
 जिहाजतै उतरि परै ॥ डौंडनि वैठै धाइ ॥ कंनक त्यागि कुबधी जुनर ॥
 काचकी किए अगाहाइ ॥ औसीषता जुषात है ॥ सोसिषमनइंज आइ
 जौ बिरकत गुरस्यौ विरचि ॥ लोनीनिस्यौ लपटाइ ॥ काबवाचनि
 कलंक गुरु विरदोषी नृवान ॥ सत्रमित्र सबकै विषै ॥ कैरघा एकसमा
 न ॥ ठरसी गुरको सिषतजै ॥ तौ वृटि वरत असमान ॥ ठरसी धरऊपरि
 परै ॥ फरकरतौ पवीन ॥ २२ ॥ ठरसी औसकौ न अनागिया ॥ जगुरकी
 निदकरा ॥ जिनि गुरससि साषा जुसौ ॥ ततदीयादि घराइ ॥ २३ ॥ ठरसी प
 रतषिदीयादिषाइकौ ॥ वदप्रमात्तराम ॥ संसै विपरअै विना ॥ धनि वहस
 तगुरनाम ॥ २४ ॥ ठरसी औसै अमलगुरु देवकौ ॥ जाकै होइ कुधांन ॥
 आनैतौ वहसिषनही ॥ है बिटकीटसमान ॥ २५ ॥ २६ ॥ अथ गुरउच्छ
 वचन उपदेश विधानः ॥ २७ ॥ ठरसी गुरके कहे कौ ॥ बिलगु जु
 मानै कौ ॥ मंदनागता जीवकौ ॥ कैसै कारिज होइ ॥ २८ ॥ जौ ताताहं कै
 कहै ॥ तौ गुरइ है सुताव ॥ जौ ऊलकाटे कनकमल ॥ देदे अपनौ ताव ॥
 २९ ॥ सतगुर जौ कौ ही कहौ ॥ ठरसी त्यों ही नागि ॥ तपतसीतजल
 जलपरै ॥ तऊबुजावै आगि ॥ नही कनकस्यौ वरता ॥ जदपिक
 सै सुतारा ॥ कानकंगपहरनकौ ॥ औरनकौ ऊंविचार ॥ ३० ॥ मीमीम

महास्वारधनरी॥मनासुहातीवाताःतुरसीसुषनायेनही॥सौगुरत्रिन
 वतताताः॥५॥राधीयासंसारकी॥लाधीनहीकबीर॥कदिकदिवचननि
 टकोस्तोरैरमजंजीशा॥बाहरिमीनाबोलना॥मांहीकरवासोइ
 सीसोसतगुरनही॥अतिरपती॥जौकोइ॥७॥तुरसीबाहरिनीतरि
 सारिषा॥सुधरिदसदासमाना॥थरीकहनघोटीदहन॥सतगुरएसदन
 ना॥१८५॥अथगुरसिखसुधसुमिलतविधानः॥२०चौपई॥५
 नदधिहोइजीयसुधसतावा॥तजगुरवितनदिहोतऊगाव॥तुरसीज्यो
 दिबदरपनमांही॥विनिरविपावकप्रगटेनाहि॥१॥साधी॥आदि
 अमोलिकःआरसीःरहेनिहारिनिहारि॥तुरसीबदननतासईरवि
 विनरजनिमऊशि॥५॥तुरसीरविहंकाकरै॥जौआरसीमलीना॥उत्ते
 अमलप्रतिबिंबहोहि॥तौपावकउदेवकीना॥३॥तुरसीकाटैषाईआर
 सीकेतैगाघोजुजाता॥पावकप्रकासेनही॥तावैसदारहोमनिधान॥५॥
 ॥चौपई॥तुरसीपावकरूपीज्ञाना॥उपजैसतगुरकैसनिधान॥येजोगु
 रततवेताहोइ॥अरुतैसासिषऊंहोइसोई॥५॥साधी॥तुरसीसतगु
 रसिषदोऊ॥अतिहीअमलतनहोहि॥तौहीज्ञानजउयाजै॥मोहिरोम
 कीसोइ॥६॥तुरसीमनसावाचाकरमना॥आमैमिथ्याजुनाहि॥गुरसि
 षसुधसंपर्कतो॥अवसिज्ञानहोइमांही॥७॥तुरसीअंतजागुकैमाहि॥
 गुरसिषकीसुधताविता॥ब्रह्मज्ञानहोइनांही॥ब्रह्मज्ञानविनमुक्त
 नही॥सबसाधूजुकहांहि॥अतिसुमृतिसबहीकहैं॥अस्थइतौही
 आहि॥८॥गुररविसिषहोइद्वयतवत॥अनेसंजोगसुताइ॥अवसि
 ज्ञानऊतउदेहोइ॥तुरसीनिजइहिकाइ॥९॥१९६॥अथगुरज्ञा
 नध्यानउपदेसदाताविधानः॥२०॥तुरसीज्ञानहीसारहैं॥सबहीमा
 हीसोइ॥सोसतगुरतेपाइये॥औरउपायनकोइ॥१॥तुरसीसतगुरद
 ताज्ञानका॥ध्यानऊदाताजोइ॥मोठिमुक्तिअरपनसकला॥अस

त्रयसोऽश्वसोर्ज्ञानदंमपाऽया सतगुरदीयादिषाऽत्तरसीउ
रनिहचानया ज्ञाहरि नमैवलाऽत्तरसीवाहरनरमेवहरमु
याजिनिगुरपायाताहि जिनकोपूरागुरमित्यातेआत्मसुषमा
दिषाऽत्तरसीपूरागुरमित्यायायादंमपसादसबघटमाहिल्या
ईयाएकहीबहसत्रागाधोपसुषपायासमितानर्शमिटीवैरताआन
त्तरसीअतिसीतलनयेसतगुरकेसनिधानधत्तरसीगाादिकनि
कोरहोअतिततराजसमरथगुरकीक्रियास्योनयोओरहीईला
जात्तरसीपिरवरआदियेजसचौरासीजीवसतगुरतेसोधीन
ईयवमेदेव्यासीवजहांसंसेनहीविपरजेउत्तरदेतअस्थान
त्तरसीअतसलषाईयासतगुरमितियाजानएत्तरसीमनफि
रिआईयाअपनेहीउरअस्थानअहनिषिआत्मध्यानमेंहोइर
ह्यागलतांनअबइतवतचलिनासकेतहकमिटीसबआन
जिनिसतगुरअेसीकरीसुधनिवहक्रियानिधान१०॥२०४॥अ
थसिषकोपरिकरनः॥२॥सतगुरकासिषसोसहीसुतेसतगुरही
कोज्ञानत्तरसीमतमनमुषीनकेनिमषनधारेकानत्तरसीस
तगुरकासिषसोसहीचलेसतगुरकीसीषगुंनइंद्रीमनकेकहेन
रेनएकोबीष॥२॥जोचालैमनकेकहेमहामदनवसिहोइत्तरसी
सतगुरसिषनसोसोसिषमनकाजोइ॥३॥केऊसिषअपनेमतके
केऊसिषतनकेजोइकेऊसिषगुनइंद्रीनकेरूलिरहेयोसोइ॥४॥
जहांमनफेरैतहांफिरैजहांमनकहैतहांजाइमतअकछोकरि
तांसकेअेसेबहुकलिमांदि॥५॥आहमतमानैतहीमानैमनकोज्ञ
नत्तरसीजहांजहांअरकियेतहांतहांकरतपयानधगुरमुष
मारगछाडिकैइंदिनरतेजाइत्तरसीउतमनमुषीनकेमुषदे
येनपाइ॥६॥गुरमुषमारगछाडिकैकनककोमतीलीनत्तरसीद

रहरितिन। काचमणितचितदीना॥८॥ सरमनहीसंसारकी॥ गुरनेकौं
वापी॥ तुरसी डरैतदोषस्यो॥ हरसकलिजुगिजीव॥९॥ चौपई जिन।
मोनपातमाहीमनलायो॥ करतफिरैअपनोमतजायो॥ तुरसी लहेतसग
आज्ञान॥ बिनो बंदगी गुरकौंज्ञान॥१०॥ साधी। सतसुनतसगकेग
ये॥ बूजि बूजिवज्ञान॥ तुरसीदासषालीपेशबिनबंबेकबजघाना॥
॥११॥ अंतरगतिआरतितही। देषादेधीज्ञाना॥ हरसी बूजेकानया॥ जिन
तनरिहोपषाना॥१२॥ थारसधातद्विपलटिकें॥ षिनमेंकनककरेवा॥ तु
रसीपाहनरूपकौं॥ कहाकरैगुरदेवा॥१३॥ तुरसीतासिषकौगुरकाक
रे॥ जाकीदिलहिडरेषाविधिविधिकरिसमजाईये॥ येसमकेनहीबंबे
का॥१४॥ धातहीस्योचालेनले॥ पारसतनोजुपान तुरसीपरसिहषी॥
तिस्यो॥ येपलटेतहीपषाना॥१५॥ जोसमकेनहीसैतमें॥ तास्योकदि
येबैन॥ तुरसीबैतनसमजई॥ तादिकबूनदिकहेन॥१६॥ जोसम
केगामनकी। सोतोबिरलाकीइ॥ तुरसीयासंसारमें॥ वेतनकदिये
सोइ॥१७॥ सतिवकतासुहृदता॥ मबुधीसतवान॥ तुरसीएमतसिष
केसेवासुमरनधाना॥१८॥ चौपई॥ तुरसीसहनसीलताधरसगुनगहे
सबदकुसबदनकहै॥ सदागुरसदासीपपरिणये॥ सोसिषकौनपर
मरसचाये॥१९॥ तुरसीसतगुरकौअकद्वौनदिकरे॥ आतामानिसीस
परिधरे॥ सदांरहेचरननिलपटाना॥ सोसिषसहीओरउनमाना॥२०॥
सतगुरजोदेवैसोषाश। जहांजहांपगवैतहांतहांजाइ। तुरसीकबहुअ
मोरनहोइ। सोसिषसहीसुषविलसैसोइ॥२१॥ सारसारस्वात्मनिजध
रम॥ सतगुरकौपूछे होइनरमा। जोकबूकहैसुमानतजाइ। तुरसी।
अबेसुषविलसाइ॥२२॥ तीनलोकसुषतिनकरियागो॥ सनमुषरहे
सदागुरआगो। तुरसीइतउतकौंनलुजाइ॥ सोसिषसकलसिरोमनिर
इ॥२३॥२४॥ अथअथमदिसांकीपरिकरन॥२५॥ तुरसीगुरुप्र

सदाशिवमतः बालश्च न ज्ञानिः सिधसाधिकसबकीक्रिया यामैस।
 वैप्रदानि ॥ २ ॥ चौपई ॥ अनंतशास्त्रअनंतवांनी ॥ अनंतकथारिषिमुनि
 नवधानी ॥ तुरसीयामैसबकौसार ॥ हमनीके कीयौनिरधार ॥ ३ ॥ साधी ॥
 याहीमैसागवतकौ ॥ साररूतहेसोइ ॥ याहीमैवासिधमत ॥ बूजेबिस्ना
 कोइ ॥ याहीमैसरतिसुमृतिकौ ॥ साररूतसबज्ञान ॥ याहीमैपुरा
 ननिकौ धरससमूहअमान ॥ बिद्यातीनोंलोककी ॥ औरकहौकहा
 लोंअना ॥ तुरसीयाहीमैहेसही ॥ सबकौसुधबिज्ञान ॥ ४ ॥ तुरसीयाही
 माहीजातिहे ॥ परंसावतीसोइ ॥ याहीमैवेरागहै ॥ षोजिलेइजोकोइ
 ॥ ५ ॥ याहीमाहीजोगहै ॥ जोगनिजीवनिमूरि ॥ याहीमाहीज्ञानहै ॥ करन
 द्वैतनिरमूर ॥ ६ ॥ वेदांतसिधांतकौ ॥ सबसंतनकोसार ॥ तुरसीयामै
 हैसही ॥ सबकौअरथविचार ॥ ७ ॥ तुरसीयामैआषेजुहंम ॥ अधिका
 रीप्रतिधरम ॥ उत्तमज्ञानमधिकोंभक्ति ॥ कनिष्टकौसुजकरम ॥ ८ ॥ अ
 रकनिष्टअधिकारीविधान ॥ १ ॥ तुरसीतावतकरमकीयौकरै ॥
 मनप्रतीतिनयाइ ॥ जावतअसुजकरमको ॥ काटरद्यौउरबाइ ॥ ता
 वतकरमकीयौकरै ॥ जावतकबूसकांम ॥ तुरसीहिरदौसुधहोइ ॥ ता
 वकरमनिसौकाकांम ॥ २ ॥ तावतकरमकीयौकरै ॥ जावतउरमलहो
 इ ॥ तुरसीआदरसअमलनये ॥ सिकलिकरैनहिकोइ ॥ ३ ॥ असुधअ
 तहैकरनको ॥ सुजकरमहिप्रदान ॥ तुरसीसुधकौज्ञानहै ॥ अरथइतो
 हीजान ॥ मलिनआरसीमजिए ॥ अमलनमंजैकोइ ॥ तुरसीसबकौ
 सारयहयेतेहीमैजोइ ॥ ५ ॥ तुरसीसुधदरयनमंजैकवन ॥ अमल
 हिरदैकरमजोग ॥ साधिसाधिकौधौमरे ॥ यहतौवातअजोग ॥ ६ ॥
 ताहीकौकरिबौजगत ॥ जपतपविधिमाही ॥ तुरसीजाकौमनमली
 ना ॥ औरनिकूताहि ॥ ७ ॥ तुरसीनावहीकाकरै ॥ अरकैवटस्योकाकां
 म ॥ जोजनलंघिपारहीगया ॥ पायौपदआराम ॥ ८ ॥ जोबपारगयौ

डि एतत्प्रचारा ॥ १० ॥ करत करत सुतक्रिया एमनकोमैलतसाइतुरसी
 तबहरिनागतिमें ॥ सहजचितलगाइ ॥ ११ ॥ १५ ॥ अथमधिअधिका
 रीविधानः ॥ २५ ॥ तुरसीनागतिनागवंतकी ॥ अनयासहीजुहोशयाचित
 कैसुधनयेते ॥ नहीकठिनताकोइ ॥ १५ ॥ चिदाकारचितकीबिरतितात
 कालहोइजाइ ॥ तुरसीचितसुधनयेते ॥ यहफलहोवैआइ ॥ १५ ॥ ज्योधा
 गमनिगतनविति ॥ योंसबघटमधेरामा ॥ ऐसीनागतिजोउदेहोइ ॥ तुर
 रसीपूरनकांम ॥ २२ ॥ अथउतमअधिकारीविधानः ॥ ३ ॥ तुरसी
 यानगतिकोफला ॥ आदिअद्वैतजुज्ञान ॥ तादीबडतागीपावैकीऊ ॥
 जाकैएकहीधांत ॥ १ ॥ तुरसीयानगतिकोफला ॥ ज्ञानसिरोवनिएद
 जहांबिजातीकोनही ॥ सदासजातीनेह ॥ २ ॥ तुरसीपिंगुलज्ञानयह
 जहानहीपेचकोयान ॥ उनेगुनमुर्चितनयेतहं ॥ सुधस्त्रात्वकस्था
 नकीरीकुंजरअरिजुमति ॥ आवरजंगमजाना ॥ सबघटनिदोषद
 रसई ॥ आत्मएकसमान ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ तुरसीजहांयज्ञान ॥ समाधि
 स्थउतपनतया ॥ तहांकेएसहनान ॥ धितनानहीपेविए ॥ ४ ॥ साधी
 अरधरामऊरधऊराम ॥ रामदसौदिसिजोइ ॥ बाहरितीतरिरामहै
 रामबिनानहीकोइ ॥ ५ ॥ ऐसीद्विट्टिजुउदेहोइ ॥ अज्ञानआवरण
 योइ ॥ तुरसीसिधांतज्ञानयह ॥ काहेनदयोनीइ ॥ ६ ॥ २५ ॥ २५ ॥
 अथनगतिकोप्रकरण ॥ अथपरममंगलविधीन ॥ १ ॥ तुरसीन
 गतिनागवंतकी ॥ बंदततीनीलोक ॥ सुरनरसबअस्त्रतिकरै ॥ दरन
 अंततनयसोक ॥ तुरसीनागतिनागवंतकी ॥ सकलसिरोमानिआदि ता
 ऊपरकोऊनही ॥ ओरपदंतरद्वौकाहि ॥ अरधऊरधमधिदसौदि
 साउनेजोरिकरिताहि ॥ मंगलसोंबंदनकरै ॥ ज्ञानमोचिउरवादि

॥ २॥ अथ अस्ति महिमा विधान ॥ २॥ तुरसी नगति संभवत की वि
 चयन भेदित तस्य ॥ ता हि सु मरि ब्रह्म संत जन ॥ उतरि गये न वपार ॥ १ ॥ तुर
 रसी नगति नग वंत की ॥ त्रिचयन मां ही सोइ ॥ अति तया वन रूप है ॥ संत कहै
 सब कोइ ॥ २ ॥ तुरसी नगति नग वंत की ॥ नै हरन अने करन ॥ किते पतित
 पावन कीये ॥ जे आये जु सरन ॥ ३ ॥ तुरसी नगति नग वंत की ॥ पारस के उन
 मान ॥ ऊचनी चपर सौ कौं ॥ सोई सोई कंचन ध्यान ॥ ४ ॥ सिरो मनि हरि की
 नगति ॥ जुग जुगंत तत सार ॥ तुरसी तीनी लोक में ॥ ता कौं जे जे कार ॥ ५ ॥
 थोथे मत हरि नगति विन ॥ सब ही घा संसार ॥ तुरसी जुग जुग में सदा ॥ ६ ॥
 नगति अकेली सार ॥ ६ ॥ जो मन जोग ऊके करत ॥ गरिया नी तहि होइ ॥
 सो मन दोरै लौं गै ॥ धै मन गति स्थो सोइ ॥ ७ ॥ धै मन गति सब तै उतम ॥ जो
 उर धारै कोइ ॥ जनु म मरत तै ऊबरे ॥ तिह चै प्रांती सोइ ॥ ८ ॥ चौपई धै
 म नगति विनि जपत प ध्यान ॥ रूपे ला गै सह त विज्ञान ॥ तुरसी धै मन ग
 तित ब होइ ॥ तब सब ही मत साचे जोइ ॥ ९ ॥ साषी ॥ कहा जोग जुग
 ति ऊंक हां ॥ कहा सांषि सु विचार ॥ उर अलेष की नगति होइ ॥ तौ स
 ब मत ला गै सार ॥ १० ॥ कहा जोग कहा सांषि विधि ॥ कहा वै राग वि
 चार ॥ जा जा में हरि की नगति ॥ सोई सोई मत सार ॥ ११ ॥ १३ ॥ अथ
 करम मिश्र नगति विधान ॥ ३ ॥ तुरसी गुण गुण कै विषै ॥ त्रिधा त्रि
 धा सोइ ॥ करम मिश्र जा नौं जुग्रह ॥ जहां त्रैसी नगति जु होइ ॥ १ ॥ हि
 सा दोष उपाय कै ॥ करै नगति मत लाइ ॥ तुरसी यह अधता म स नग
 ति ॥ संत निकरत दिजाइ ॥ २ ॥ दं न निमत गो विंद न जै ॥ न ही नगति निह का
 म ॥ तुरसी ताम स नगति यह ॥ मधि मया को नाम ॥ ३ ॥ न गति करै श्री रं
 के ॥ मान घटा वन काज ॥ तुरसी अर्प नै मात कौं ॥ स नगति तमो सिर ता
 ज ॥ ४ ॥ धन दारा सम इंत्रिकै ॥ हरि सम रै जत कोइ ॥ तुरसी यह राज स
 नगति ॥ कनिष्ठ कहिए कोइ ॥ ५ ॥ तुरसी मधि म नगति यह ॥ राज सके

माही॥जसकारतजगदीसकों॥सुमरैउरधा॥१॥अष्टईश्वरजकेअर्थ
केसोनजेजकोश॥तुरसीउतमज्ञातियह॥राजसमांहीसोश॥१॥असुन
करमवैकस्तकी॥सुकृतसंचैकरा॥करुनासोंकेसोनजे॥सरधाधीति
अप्यतुरसीसाखाज्ञातियह॥कनिष्ठनामकहा॥सुरतिमृत्तिस
ह्नीकहै॥संतहंदैदिदिषा॥६॥पीतिअरथनगवंतकी॥नागतिकरै
जकोश॥हिरदैनामरद्रीकरै॥अषंडरामकोंसोश॥निरंतरिनिसदिन
सदात्रौरकामतहीकोश॥तुरसीयहसाधसाखाज्ञाति॥संतनिबरनी
सोश॥१०॥बुधिआदिइंडीसकला॥द्विषैतसोंउलटा॥लेविधिसतअ
रपत्करै॥हरिकोंहिरदैजुआश॥सेवासुधलागारहै॥फलकामना
मिटा॥तुरसीयहसाखामही॥नागतिशिरोवनिरा॥१०॥तुरसीक
रमिश्राज्ञाति॥त्रिधात्रिधासोश॥गुनगुनविषैजुहंमकथी॥बूजै
बिरलाकोश॥११॥तुरसीकरममिश्राज्ञाति॥असुधरिदकोंजोश
जाकीचितदरपननयो॥कहाकरैधोंसोश॥१२॥तुरसीमलिनआ
रसीमजिए॥अमलनमंजैकोश॥सकलग्रंथकोअरथयह्यायेतेही
मेजो॥१३॥चौपई॥तुरसीसधचितनयो॥जुजाको॥करमतिकोंनपरै
जतताको॥जाउररागादिकरहेछा॥सुनसाधैअसुननठिटका॥
॥१४॥२०॥अथजोगमिश्राज्ञातिविधानः॥४॥तुरसीधेमज्ञातिवि
नां जोगसुब्रंधसंमाताजोगविनाज्ञातिहइसी॥पिगुलकेउनमाता॥
चौपई॥धेमज्ञातिउरमेंउपजाशासरधासदतिकरैकबुआशातवै
ज्ञातिनलसोंधौजोगतातामांहिमटै॥५॥सोम॥२॥साधी॥नकि
जोगसुमिलतकथा॥तुरसीसंतनिसारा॥जिनियहनेदनजातिया
तितसंग्यासिगाररा॥तुरसीसिगारज्ञातियह॥कामीनलागैपे
हनिहकामीनिजसंतजता॥कहाकरिदिधोंयह॥ज्ञातिजोगारतहो
शरघा॥त्यागिविषैकोतेह॥तुरसीधनिधनिसंतवै॥जितकैज्ञाति

जुहवा ॥ ४ ॥ तुरसीजोगमिश्राजगति ॥ थोरेहीमैजोइकबूएकवरणी
 जुहम संतलषेसलसोइ ॥ ५ ॥ ३३ ॥ अथमिश्राजक्तिवैरागविधा
 नः ॥ ५ ॥ ३४ ॥ तुरसीजाजततीजतआदिये ॥ ६ ॥ अतिष्ठजुदेषि ॥ रागदोष
 नहीअपजे ॥ वैरागजगतिग्रहपेषि ॥ ७ ॥ तुरसीदिष्टिमुष्टिमायाजुयह
 सकलब्रह्मकीजाति ॥ वैरागमिश्राजगतिग्रह ॥ लियेनहीकङ्कंश्रान्ते
 कामकरमबीजादिये ॥ जाचितमैनउगाहि ॥ तुरसीसहतवासना
 ये ॥ वैरागजगतिग्रह ॥ ३ ॥ करमतजेफलऊतजे ॥ तजेसुधयेक
 राम ॥ वैरागमिश्राजगतिग्रह ॥ जहांक्रोधनहीकाम ॥ ४ ॥ त्रिचुवन
 ब्रिजो जुदेषिकै ॥ चलैनहीचितजाय ॥ निमषएकपलएकहं ॥ हरि
 सुमिरनस्यौंतास ॥ येकाग्रलागारहै ॥ दासनिका होइ दास ॥ तुरसी
 वैरागमिश्राजगतिग्रह ॥ जहांद्विदयहविस्वास ॥ ५ ॥ ३५ ॥ अथता
 नमिश्राजक्तिविधानः ॥ ६ ॥ जावतज्ञानसगर्तणी ॥ जगतिउदैत
 हीहोइ ॥ तुरसीतावत ब्रह्मकौ ॥ पावैनाहीकोइ ॥ जावतजुज्ञान
 सगर्तणी ॥ संगलीयेवैराग ॥ जाघटमाहिउदैतई ॥ ताकेमोटेताग
 ॥ २ ॥ तुरसीत्रिधाजगतिग्रह ॥ बरणीवेदनमाहि ॥ गुरगमिदासल
 येकीक ॥ औरनिडःकरआदि ॥ ३ ॥ तुरसीप्रथमकनिष्ठजक्तिकौ ॥
 तेदवताऊयेह ॥ नाहीहोइनाथहितजे ॥ कैनदिषावैकेह ॥ ४ ॥ तुर
 सीजदपिहमतुमयेकहै ॥ बीचितेदनहिराम ॥ तदपिमेरेहोऊयेह ॥
 तुमप्रभुमैजुगुलाम ॥ ५ ॥ एकरमिउदधिकी ॥ सबकोऊआषे ॥ तुरसी
 उरमनिकौउदधि ॥ योकोऊननाषे ॥ ६ ॥ याहीतेहमतुममही ॥ दीन
 लीनदिनराति ॥ दासनाइलागेरहै ॥ जदपिएकैजाति ॥ ७ ॥ तुमेरांमै
 बांधिया ॥ प्रमजेवरीयागम ॥ कसनीकैनिजहुदामे ॥ लैलैतुमहरीनाम
 तुरसीज्ञानगरचितजगति ॥ मधिमयाकौनाम ॥ जहांजनकेयहआ
 संधौ ॥ प्रभुस्योआगैजाम ॥ ८ ॥ तुरसीउतमजगतिग्रह ॥ ज्ञानसगर्त

तसोऽ॥ जामेदरसे एकही वैतननासेकोऽ॥ ११॥ तुरसी ज्ञानसगर्निणी ॥
 म्हाजातियह जान ॥ जहां बिजातीको नही ॥ सदासजाती ध्यान ॥ १० ॥
 चौदाती नौ लोकेमें ॥ एक रूप दरसाऽ ॥ ज्यो दरयनमें देषिये ॥ अयने
 ही मुखकी छाऽ ॥ तुरसी ज्ञानसगर्निणी ॥ यहनि जज्ञातिकहाश ॥
 जाउरमें उतयनसई ॥ सुधनिवाजनकीकाऽ ॥ ११ ॥ धर्त ॥ अथसा
 रसक्तिविधान ॥ १॥ तुरसी एकसरगुण जगति ॥ एकनिरगुननि
 जसारातामांही अतिसै अमल ॥ सो जीवनि मूलहमा रागनिर्म
 लनिहकांमी जगति ॥ सोई जगति जगवंता ॥ तुरसी जगति सकाम
 तातामें कजी अंत ॥ २ ॥ चौपई ॥ सकाम जगतिके सेवनहारे ॥ स
 री लोकजाइतये जु तारे ॥ अयनों कितफलजुगतांही ॥ सुविचीन
 नये फेरियंही ॥ ३ ॥ यरहियतनहोहिं फेरि फेरि घांती ॥ निजदि
 हकाम जगति नहिजाती ॥ तुरसी सकामही मनलाया ॥ तिनकोई
 गदिकवकगंवाया ॥ ४ ॥ तुरसी यहगदरी जगति जु जान ॥ अथवा
 निरगुनसरगुनध्यान ॥ बाडिसकामताकरै जु कौश ॥ अयने आये
 यऊंचै सोऽ ॥ ५ ॥ सायी ॥ अथवा निर्गुतइष्टहोऊ ॥ अथवा सरगु
 तसोऽ ॥ सकामता बाडे विनां ॥ मुकतिनपावैकोऽ ॥ तुरसी नि
 रगुनसरगुनदरिया जगति ॥ वारपारनहीकोऽ ॥ तंचात्रिगलौं स
 रमतां थोरोहि गदिरहौ सोऽ ॥ १ ॥ थोरे हीमें आनेदहै ॥ जगति जु

॥ तुरसी तुसकौ कुटिबौ ॥ सिंगार जगति जु सोशामतबिब
 अस्थिरकवऊं नहोऽ ॥ तुरसी अस्थिरहोइ न
 यहमनकवहयाश ॥ जावतसिगार जगतिमें ॥ रघाधीतिफैलाइ
 रगुनको जानैतही ॥ निहकामताउपाश ॥ निजसारप्रेमया जगति
 जाइसे जाइही जाइ ॥ १० ॥ चौपई ॥ ततेसाधिक सोईमत

ये प्रेमनाति उपजे सोई करे ॥ तुरसी उर धरि साधन सारा ॥ अति आरु
 दोष करे विचार ॥ ११ ॥ साधी ॥ प्रथमे साधन नाति में ॥ जो साधक उह
 शतौ तुरसी पीठे कंडं ॥ प्रेमनाति उपजाइ ॥ १२ ॥ तुरसी कौन नाति
 के सी जु विधि ॥ साधे साधक सोइ ॥ तासाधे प्रेमनाति ॥ उर में उदै जु दे
 ॥ १३ ॥ तुरसी दासनौ धा नाति ॥ वरनी वेक्षत मां हि ॥ ताहि स मजि उ
 र आचरै ॥ तौ अंतर मख जाइ ॥ १४ ॥ एक नौ धानि र वरति तन ॥ एक
 प्रवरति तन जाना ॥ तामे अतिकन रूपनी ॥ ताका करुं विष्यान ॥
 ॥ १५ ॥ तुरसी नौ धा नातिके ॥ हे अति त विस्तार ॥ तामे क बूपे क कथ
 तह म ॥ सार माहि अति सार ॥ १६ ॥ अथ अवतन विधाता ॥ जो चोपई
 प्रथम अवतन हरि नाति विचारै ॥ ज्योगिर ही घरनी वजु धारै ॥ नीव
 किनां माहि र नही होई ॥ तुरसी ताहि जौ नै सब कोई ॥ १७ ॥ तुरसी जो तप
 तीरथ कीये ॥ देह गृह दानादिक दीये ॥ तन मन को ति मरं धन जाइ ॥
 सो अवतन नातियौ सहज न साइ ॥ १८ ॥ तुरसी अवतन नाति सतका
 दिक संत ॥ शिषि मुनिके ते कंडं अंतत ॥ अवतन नाति जन काहि क
 जिते ॥ पारय कंडं तै वरनौ किते ॥ १९ ॥ अवतन नाति नौ धाके मां ही
 प्रथम नोमिका वरनी आंही ॥ तुरसी सो पशिय क जो करे ॥ तौ आ
 गै सहजै सचरै ॥ २० ॥ तुरसी अवतन नाति यह तार्श ॥ बित साधे कित
 मुकति जु पाई ॥ ताथें सम किइ है उत मान ॥ प्रेम कथा कौ कंडं जु पाव
 ॥ २१ ॥ साधी ॥ तुरसी प्रेम कथा पर ब्रह्म की ॥ वार पार नही कोइ ॥ अ
 पनै बित उत मानत ॥ सुनि जु सुचित थिर होइ ॥ २२ ॥ अंतत शास्त्र
 अंतत मता ॥ अंतत कथा गुन गान ॥ तुरसी मिति मर जाइ नहि कहां
 लों सुनिये कान ॥ २३ ॥ अत्य अवधि अत्य हि जु बुद्धि ॥ अत्य ही नर उ
 न मान ॥ ताथें कहु एक सार मत ॥ सुनै सत दे कान ॥ २४ ॥ सार सार मत
 प्रवत सुनि ॥ सुनि रषै रिद माहि ॥ ताही को सुनि वी सुफल ॥ तुरसी

तिशिरोहि २५॥ तुरसी श्रवतनि हरिकथा ॥ सुनै संत वितला २२३
सुनिसुरकात्रै मनदी ॥ अरुनिनिवारतजाइ ॥ २६ ॥ कैज सुनै सतगुर
बदा सरधा प्रीतिउपाइ ॥ कैजुसास्रसो सुनै ॥ जासुनिये तमजाइ ॥ २७
पुरसी श्रवातिदेवकी ॥ अरुननै कथाजुसाराताहि सुनै जनप्रीतिक
रे बहिनपरै विस्तार ॥ २८ ॥ तुरसीते वारतान श्रवन सुनिाते बकथा
तेजाना ॥ जिनबसुने सरधाघटे ॥ बूढ़े प्रनुको धोना ॥ २९ ॥ अरुनिनिक
थासुधामई ॥ सुनै सुवितथिरहोश सुनिसुनिमतसुरकाइलै ॥ श्रोता
कहिये सोइ ॥ ३० ॥ चौपई ॥ तुरसी श्रोता श्रेसी करौ ॥ अं सुगनादश्रवन
वितधरौ सुनत सुनत तहां लौं जु सुनाइ देह गेह सुधि विसरि जाश ॥ ३१
साधी ॥ अवनकथा सुनै संतमुषा ॥ असंतनिकटनही जाश तीउर बाह
रउपजे रोमरोम सुषकाइ ॥ अथात लबेतातपधर मरत ॥ रहे ममतमल
षोइ ॥ असे संतनिको बचना ॥ रुचिकें सुनिये सोइ ॥ ३३ ॥ चौपई ॥ गुना
रहतनिरगुनको ज्ञान ॥ निलोपी कै करे बघाना ॥ तुरसी सो बकता परवान
आपतिरै तारै श्रोताना ॥ ३४ ॥ साधी ॥ तुरसी ज्यो है त्यों कहै ॥ औरकी श्रो
रजूनहि ॥ याजुगामे बकता सोइ ॥ और सारथी श्रोहि ॥ ३५ ॥ सातदिव
सहरिकथा सुनि ॥ अरु परी बतया ॥ तुरसी सो निति सुनत है ॥ पिये उपजे न
ही करार ॥ ३६ ॥ बकता होइ सुषदेवसौ ॥ श्रोता प्री बतसमाना ॥ तुरसी त
बनलउपजै ॥ ततपर आत्मज्ञान ॥ ३७ ॥ तुरसी आत्मज्ञान उपन होइ ॥ अ
वसिउपजे आश ॥ जो बकतासतिसे कल्प होशक है सुबिद्यतजाइ ॥ ३८
॥ चौपई ॥ तुरसी श्रोता हूँ तेसा होश सुनै सुअधरिदिहि ले सोई ॥ सुनि
हरिकथा श्रवधारै तजाश व्यापतिव्रतमे रहे समाइ ॥ ३९ ॥ कै सुनिक
सती होइ साचा ॥ कै बजती होइ मनसा वाचा ॥ तुरसी दहें में एक हं नाह
तो सुनि बाकहि बाकि हिमोही ॥ ४० ॥ तुरसी सुनिसुनिकथाजुसार
मनके बाइतजाइ बिकारा ॥ सुनिवानलताही कासाचा ॥ और देव

मतकाचा ॥ ४१ ॥ साधी ॥ तुरसी देखा देवी हरिकथा सुनि ॥ मुनि न
 कोइ जौ लों सरधा पीतियो ॥ सुने नही जन सोइ ॥ ४२ ॥ तुरसी यह
 रमरी तिहो ॥ कथा जु सुनि बीकान ॥ घाइल होइ कथा सुने ॥ सो सुनि बे
 कबू आना ॥ ४३ ॥ तुरसी जइ पिकथा पवेत्र है ॥ सुने ही सुनि फल देश ॥ तद
 ये सरधा स्यो सुने ॥ अतंतला जसो लेइ ॥ ४४ ॥ चौपई ॥ तुरसी वेदोत सिद्ध
 न सारा संतन की बानी विस्तार ॥ सकल धरम सुनि परती तियारे ॥ सो श्री
 ता संदेह निशारे ॥ ४५ ॥ साधी ॥ संदेह जु कोऊ तार है ॥ जौ सुने सुरतियो
 सोइ ॥ तुरसी अति गुजल धरम ॥ तामै कफी न कोइ ॥ ४६ ॥ कफी काम अस
 क्रोध की ॥ लोचन मोह की वाम ॥ तुरसी गर्इ रही नही ॥ सुनत कथानिहकं
 म ॥ पण्यरी परब्रह्म की ॥ रुचिकरिये करूं जोम ॥ तुरसी सदई सुनत है
 तिनकी को कहियाम ॥ ४७ ॥ तुरसी यह अतंते कथा ॥ हरन अतंत संने
 ह ॥ जो बसुने ताहि नाहि रुचे ॥ राजयाट धन गेह ॥ ४८ ॥ धनि श्रोता ब
 कता जु धनि ॥ जिन कै बरतनि येह ॥ प्रेम कथा अनदिन सुने ॥ करिक
 रिपीति संनेह ॥ ४९ ॥ सोरता ॥ तुरसी करिक रिपीति संनेह ॥ कथारस
 अवन निपीवै ॥ इहि आलंबन लगेह ॥ आदि श्रुति त्रैसैं जीवै ॥ ५० ॥ सा
 धी ॥ तुरसी यह कथा प्रसंग कथा ॥ हरन जीव जट नाव ॥ रोम रोम आ
 नंद करन ॥ आगै की रति गावा ॥ ५१ ॥ ५१ ॥ अथ की रतन विधा
 वा ॥ ५२ ॥ तुरसी अवन कथा रसनारमै ॥ गोविंदके गुन सारा ॥ ताके पाप
 पंचंड जरि छि नमै होवै डार ॥ गावत गुन गोपालके ॥ प्रेम पीतियो सो
 इ ॥ तुरसी ताउर सुध होइ ॥ यापन रदर्क कोइ ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ रसना रुचिो
 विंद गुण गावै ॥ प्रेम पीति पत्रा हब ठावै ॥ तुरसी तन सुधिर है न कोइ ॥ कथ
 की रतन कहिये सोइ ॥ ५४ ॥ साधी ॥ कथा की रतन कलि मदी ॥ नाषत वेद पु
 रान ॥ तुरसी नवनलति रनको ॥ हे जिहाज उतमान ॥ ५५ ॥ तुरसी जिहाज रस
 हे ॥ रसनारुचिो रम ॥ हरषि हरषि कै गाइवौ ॥ हरिजसुबाडिस काम ॥ ५६ ॥

तुरसीतपतीरथवतदानस्यौ॥ जहंरुं स्यौ प्रुतिजोशा अतितपावन रूपहोकर
 लकीरतनसोशहासतजुगसतत्रिताजुतयादापरपूजाजोशातुरसीकाइ
 कलिबिषहरना॥ कलकीरतनसीइ॥ ७॥ चौपई ॥ कलिमांहीजिन धारीदे
 हाकरतकीरतनधरतसंतेहातुरसीअसंसकारीसोशप्रेमज्ञातिउतपन
 कोंदोइ ॥ प्रेमनगातिउतपनकेकारन कथाकीरतनसुधसाधारन तुरसी
 जिनियहंदिठकरिगह्ला॥ तिनजीतबकालाहालह्ला॥ ९॥ सुषदेवआदिसंत
 सवगावैइहिलालविलागेजु रहावै ॥ रहेमगतहरिजसमेंतोशातुरसीसी
 गतागोसोशा ॥ १०॥ जिनहरिजसकोपायोखावाहेस्तेइदीरसचावा॥ तुरसीर
 हेजुबिहबलहोशपावतगुननअषावतसोइ ॥ ११॥ साधी ॥ जहाकथाहरिकी
 रतन ॥ करैत्तातिनिहकामा॥ तुरसीनिहचैसदीस्यौ॥ तहांविराजेगंमा ॥ १२
 जहांपीतिस्योमगनहोशाकरैकीरतनसाधातुरसीतहांठिनतारहै॥ जांदि
 नोंसिअपराधा ॥ १३॥ जाहिकीरतनमिनितारहै॥ कंपकालिमाकोशातुरसी
 सोईकथासुफलाकीरतिहंसतिसोइ ॥ १४॥ कथासुनतहैकदाचिकोऊ
 कगौरतारसाशातुरसीकरतैकीरतना ॥ सुवैरैलौगरिजाइ ॥ १५॥ तुरसीवै
 रैलौगरिजांहिसबमनकेचारबिचारा ॥ मैंतस्परहिरदौजुहोशाकरतकीर
 तनसारा ॥ १६॥ कीरतिकरुनोसिंधुकी ॥ जिनउरधारीसोइ ॥ तुरसीतेकंचन
 नये बड़स्यौकाचनहोशा ॥ १७॥ तुरसीयकीरतनविधि ॥ कबुकबस्तीसार
 बागैसुमरनबस्नकेपावतपानअधारा ॥ १८॥ १९॥ अथसुमरनविधा
 नः ॥ २०॥ जितेकअंगहरितंगतिकेसासबहीमेंसोइ ॥ तुरसीसुमिरतसार
 हो॥ सेतकहैसबकोशा ॥ तुरसीसुमिरनसमिकोऊनही ॥ साधनऔरजुअ
 न्नाजिकरिक्केउपदेसिया ॥ सतगुरक्रियनिघाता ॥ चौपशो ॥ तुरसीसुमि
 रनहीअधिकारा ॥ सुमिरनसमिकोऊ ॥ औरनसारा ॥ जिनसुमिरतकापाया
 जेनातेपरतञ्जिनयेतिरजतदेवाशासाधी ॥ तुरसीकलिमेंकलमलहरन
 को ॥ रोमनामसेमिआना ॥ सतकोऊदेधानही ॥ सुन्यांहेनकोऊकानां ॥

सब पाठनको पाठ है। सब पुराणनिकी पुराणन। यावनपदतिहं लोकको। तुर
 सीना वनिश्रंवांत। पा। अयावनपांवेतकरत। कलविषटारनहरि। तुरसीश्रैसा
 नां व है। एषिहरिदैमुषिपूरि। ६। जोगजगितीरथव्रत। जपतपहंतनश्रतेक।
 तुरसीसबदितउपरै। उतमनां वकीटेक। ७। तुरसीनांमसमाननज्ञानकोऊ
 नांमसमाननधोना। नांमसमाननविधिवरता। नां वसमिनदतदान। ८। को
 टियेधको अरथयह। कोटिज्ञानकतयेह। तुरसीनिश्रलहोईके। करइ
 नां वस्योनेह। ९। तुरसीयाजुगमें आधारयह। याजुगमेंयहज्ञान। याजुग
 मेंहरिनां वसमि। नदीधरमकोऊआता। १०। चौपह। तुरसीधरमअनेक
 दिवाये। तिनमेंकहिकीनेसचपाये। जेनिजकेलागेहरिताम। तिनहित
 लेपाये। आरंम। ११। तुरसीरंमनामदीसारा। रंमनामविनधंधविकार
 जिनिआरतिस्योसुमिस्वासीश। तेजवरहेरंमहीहोइ। १२। साषी। योगे
 करिनहिमानिये। प्रसुकोतजतविवेक। तुरसीकनिका अग्रिकी। राहत
 दारअनेक। १३। तुरसीअग्निऊअत्यहोइ। योअत्यऊहोइतांम। तदपि
 अनेतअघनिदहै। जोसुमिरेकोऊनिहकांम। १४। तुरसीपारसस्सी
 नामको। काजातेयेजीव। जिनसुमस्योमतलाइके। तिनयेजीवतेसीव। १५।
 तुरसीरैनिकेसेरहै। जहांरविउदौकराइ। त्रैमेंसुमरतरमको। पापाये
 नहराइ। १६। अधियागेअज्ञानको। रस्योनरिदमधिकोइ। तुरसीरबिब्रत
 रामको। नामउआरतसीइ। १७। अरधघरीहहरितजे। धनिवहदेही।
 धाम। तुरसीतिनकीकोकहै। जेसुमरेंआमीजोम। १८। सातहंपलस
 धतास्यो। हरिसुमिरनउरहोइ। तुरसीतासुमिरनकी। सरत्तरिपुननकोइ।
 १९। एकपलककीप्रमितिता। मोयेवरतीनजाइ। तुरसीजोमतसुधते
 इ। नाइबिलंबेआइ। २०। निमषतिमषहरिनां वले। स्वासेस्वाससुम
 रंत। तुरसीपलपलपीवस्यो। प्रीतिकरेसोईसंत। २१। तुरसीज्योप्यासे
 जुकी। प्रीतिनीरस्योहोइ। त्रैसीसुरतिरहोकरै। रामआपतीसोइ। २२

चौपई॥ जंरूषे अतप्यासेपाती॥ असीप्रीतिजुनजेविताती॥ तुरसीनजतज
 करतासो॥ जोअैसाजगुमेहैकोबा॥ साषी॥ ज्योपृथुरोमानीरकों॥ वा
 त्त्रिाघनकीप्यासा॥ ज्योकामीकामदितजे॥ योंरंमजजेतिजदासा॥ २४॥ तु
 रसीज्योनेनाजुयहा॥ रूपमादिगलतांना॥ नासागंधरसनारसहिासबद
 मुननकोंकाना॥ देहपियारीजीवकों॥ जीवदेहकोध्राना॥ अैसीसीप्रीति
 उररंमस्यो॥ नजऊतांमतिरबांना॥ २५॥ तुरसीरंमनजनकरिलीजिणदि
 जैचितनआना॥ भरिसरिअमीजुपीजिण॥ इहैजुबडौसयाना॥ २६॥ इहैजो
 गइहैजुगतिहै॥ इहैनातिइहैनावा॥ नजतबिलंबनकीजिये॥ तुरसीत्रिच
 वनरावा॥ २७॥ जबलगदेहीसावती॥ रोगनकबूसरीरा॥ तबलगगोविंदनज
 नकरिा॥ वेदिगुरचरनकबीरा॥ २८॥ नांमनिरूपतरंमको॥ जामघरीपल
 सोश॥ तुरसीबिलंबनकीजिये॥ नजतेहोइसुहोइ॥ २९॥ चौपई॥ तुरसी
 नामहिंसंतनिगाया॥ नामहिमांसिबनिसचपाया॥ तारंमनामकोउवा
 र॥ अगौबरनौचारिपरकार॥ ३०॥ साषी॥ तुरसीअधमधिमतम
 अतिउतमहंसो॥ सुमिरनकीविधिजुगतिथे॥ जानैबिरलाकोइ॥ ३१॥
 चौपई॥ तुरसीअधसुमिरनधोयेहा॥ रसनारंमनांमजपिलेहा॥ यदअव
 लंबंतोलौकरै॥ मधिसुमिरनकीसोधीपरे॥ ३२॥ साषी॥ तुरसीमधि
 सुमिरनजुयहा॥ कंबकंबलअस्थाना॥ रंमनांपउचारहोइ॥ तादिघाय
 लकोऊनलजाना॥ ३३॥ अमसुमिरनरिदामै॥ आरनैधरिध्यान॥ स्वास
 उसासरहोकरै॥ तुरसीनांमतिरबांना॥ ३४॥ चौपई॥ अतिउतमसुमि
 रनकीनाई॥ महिमासुषकरिकहीनजाई॥ रीमरोमरंरंकारसुनाइ॥ तु
 रसीनागउदैहोइआशा॥ ३५॥ तुरसीउतमअतिउतमहंतावै॥ मधिसु
 मिरनहंलष्योनजवै॥ तावतअधसुमिरनहंत्यागै॥ ताकोघोहनपार
 तलारो॥ ३६॥ जावतरविससिउदैजुनाही॥ उडगनहंकरेवादरबाही
 तावतदीपगहंसदिकरै॥ सोअगिअंधपूहमैपरै॥ ३७॥ साषी॥ नाडे
 हंतिरनासको॥ समदतिरनकोजाइ॥ तुरसीप्रथमसाधेविना॥ क्योलंधे

दरियावा ॥ ३६ ॥ जावतमनचितकीकीरने ॥ रहीदसौदिसकेल ॥ तुरसीता
 वतउतमनजन ॥ किरहोसलहलीसैल ॥ ३७ ॥ तुरसीतिनैतिनिमनबं
 टिरहो ॥ चितरहोकिनकिनहो ॥ तावतउतमनजनमों ॥ कैसैगमिहो
 इसोइ ॥ ३८ ॥ १५० ॥ अथअधसुमिरनविधाना ॥ १५ ॥ चौपई ॥ तातैअ
 धहरिनजनसंबाहै ॥ उतमनजनकीथो ॥ जोचाहै ॥ तुरसीमहामदिरपरआइ
 येहीब्रितानपऊंचाजाइ ॥ १ ॥ साषी ॥ पैरीपरीपावदे ॥ सुमिरनबढताजाइ
 तुरसीउतमनजनमें ॥ तबकऊंमनठहरा ॥ २ ॥ चौपई ॥ ज्योबेलीतिणको
 संगलेइ ॥ दिनदिनउरधपयानादेया ॥ योंहरिनजनहरिनजनजुमांही ॥ ल
 ग्यारहैअलसाइजुनांही ॥ ३ ॥ सुमिरनडोरीलागाजाइ ॥ उरमेंअतितधीति
 उपाइरहैनहीउरैहीअलसाइ ॥ तुरसीतबसुमिरनसचयाइ ॥ ४ ॥ करक
 टकीमालालेइ ॥ अथवामालाहैबिनिकेइ ॥ जेनकेनरसनामुषरोम
 तुरसीउचरैयावननाम ॥ ५ ॥ साषी ॥ यावननांवरदोकरै ॥ ज्योचात्रि
 गधनप्रीति ॥ अरुशोगहिबेदहिवज्यो ॥ गहैरहैयहरीति ॥ ६ ॥ चौपई ॥
 तुरसीतिमिषनिमिषपलपलसुमिराइ ॥ घरीमहंरतबढताजाइ ॥ यहसु
 मिरनतावतजुकराइ ॥ मधिसुमिरनकीगमिहोइआइ ॥ ७ ॥ साषी ॥ यह
 सुमिरनअंकूरवत ॥ संतनकसाजुसोइ ॥ तुरसीतावतकीजिये ॥ जावत
 मधिमसिहोइ ॥ ८ ॥ १६० ॥ अथमधिसुमिरनविधाना ॥ १६ ॥ चौपई
 तुरसीमधिसुमिरनहैत्रैसा ॥ आकाशउडगनंतजजुतैसा ॥ अधसुमि
 रनकीउपायायेह ॥ ज्योअधियारैदीपगयेह ॥ १ ॥ साषी ॥ तुरसीमधिसु
 मिरनयोकीजिए ॥ ज्योत्रियेपरिषजुनांम ॥ मांहिमांहरदोकरै ॥ बाहरि
 ल्योकाकांम ॥ २ ॥ चौपई ॥ तुरसीबाहरिभूलेनाही ॥ जिनिमिरनरस
 पायामांही ॥ बाहरितौलौंहीउचराइ ॥ जोलौंतीतरिनेदनयाइ ॥ ३ ॥ तुर
 सीअवमनउलटाचल्या ॥ कंवकंवतकामारगभुल्या ॥ धुनिअस्थानेबैठ
 जाइ ॥ इतउतकीसबधरीउवाइ ॥ ४ ॥ तुरसीकंवकंवतअस्थान ॥ नांविनि
 रूपैधरिकरिधान ॥ बिनहीकरमालाजुबिताही ॥ रदोकरैरमाहियौ ॥

मांही ॥५॥ साय ॥ तुरसी रंमरटोकरै ॥ ज्योपतिवरतायीव ॥ मांही ही मांही
 जुर्षी ॥ वाहरिक बूनकीव ॥ ६ ॥ चौपई ॥ तुरसी यत्नपलठिनठिनसुमि
 मांथरी महरत जोमै जोम ॥ बढती पीतिन जैयो रंम ॥ लोया वै उतम आराम
 ॥ ७ ॥ साधी ॥ तुरसी मधिसुमिरनकहा ॥ अपनी बुधिअतुसारा ॥ आगे
 मबरनकंकोकं जानै जाननहार ॥ ८ ॥ ऊतमसुमिरनकुसमवत मधितरव
 रपरवात ॥ तुरसी अतिउतमनजना ॥ ताहिफलरूपी जानि ॥ ९ ॥ चोप
 उतमसुमिरनससिवतसो ॥ पूरननागउदेउरहोश ॥ तुरसी अतिउतम
 नौनान ॥ निपटजुहरननिसाअज्ञान ॥ १० ॥ ११ ॥ अथउतमसुमिरन
 विधान ॥ १३ ॥ मा ॥ १४ ॥ तुरसी यहुउतमनजना ॥ संतनकहीजुसोइ ॥
 बडनागीयावैकोकं ॥ जाताकै नहिहोइ ॥ १ ॥ हिरदेनांमरटोकरै ॥ मुष
 हाजतिनाहि ॥ सासउस्वासनिनामले ॥ तुरसी मांहीमाहि ॥ २ ॥ तुरसीमाला
 सासउसासकी ॥ श्रीरउपलौं आरंमा ॥ तासनिरिदधिरहोइकै ॥ सुमिरेअ
 पनोरंमा ॥ ३ ॥ सासउस्वासनिनामले ॥ निरतिसुरतिउलटाइ ॥ तुरसी विर
 थषोवै नही ॥ एकऊंस्वाससुजाई ॥ ४ ॥ येकऊंस्वासनषोईये ॥ रंमनांमवि
 नबांम ॥ तुरसी वीतौ जाततना ॥ धूवाकोसौधोमा ॥ ५ ॥ मोलचत्रदसनवन
 कौ ॥ येकस्वासहैसोइ ॥ श्रीसोधनहरिनां वद्विना ॥ तुरसी विधानषोशा ६
 उगत्स्वासानां वलै ॥ वैगत्स्वासानां व ॥ तुरसी निसदिननां वलै ॥ मनचित
 करि एकगं व ॥ ७ ॥ तुरसी स्वासासुमिरनकी सदा ॥ एकादसीनिवाहि ॥ या
 अतसामिके ऊवतनही ॥ देमकहैजुगति श्रीगाहि ॥ ८ ॥ छसैसहंसईकस
 की ॥ स्वाससमालासोइ ॥ ताहिफेरै जनसुरतिकरि ॥ तनमांही धिरहोइ
 ॥ ९ ॥ निसदित रंम रंमहिज्यो ॥ प्रेमपीतिवितगोइ ॥ तुरसी सोसिधहोइ
 सही ॥ छायागायाषोइ ॥ १० ॥ जास्वाहैनहिजरे ॥ मास्वाउनिमरेतपानी ॥
 काट्याहं नहि कटे ॥ बोयानही बूडै पानी ॥ छसैसहंसईकईसा ॥ मणिन
 कीमालाजानी ॥ सास्योउरधिरहोइ ॥ नावसुमिरे निरबांनी ॥ १२ ॥ उरअत
 रिलागोरहौ ॥ नवौकेपाटलगाइ ॥ तुरसी रंमकेनां वमै ॥ वाहरिचमेवला

२१॥ मोती लोपो यो करै ॥ सुरति सुधागे नाम ॥ तुरसी पलन बिसारिये ॥ उर
 यो अपनो राम ॥ १३ ॥ चौपद ॥ जो सुनार सो नै बित धरै ॥ देम हरन की मन मे क
 रै ॥ तुरसी यो उर अपनो राम ॥ सुमिरो अहति सिआ मे जांम ॥ १४ ॥ सायी ॥ निर
 ति उलटि करै अंधरी ॥ आन रूप स्यो सोइ ॥ सुरतियं गढ़े हरि जौ ॥ आन आ
 लंन नषोइ ॥ पां चो को उलटे धरै ॥ कुरम कला संजोइ ॥ तुरसी सब साधु कहै
 सुमिरन की गति सोइ ॥ १५ ॥ सुमिरन सब कोऊ करत है ॥ बित अपनै उन मान
 तुरसी पानी लौ न लौ ॥ होइ सु सुमिरन आन ॥ १६ ॥ तुरसी सुमिरन सब को
 ऊकटत है ॥ करि करि मानै फूलि ॥ वह सुमिरन कोऊ और है ॥ तन सुधिरै
 नमूलि ॥ १७ ॥ मन इं द्री बुधा दिये ॥ हति रहत होइ जाइ ॥ तुरसी जा सुमिरन म
 ही ॥ सहत वासना मां हि ॥ १८ ॥ जज्ञा दिक का सिद्धि कर्म ॥ फोकट अपत प
 दान ॥ तुरसी कलि में आषियो ॥ सुमिरन ही निरवान ॥ १९ ॥ सुमिरन माहि स
 माहिरां ॥ संपूरत उर आइ ॥ सकल ग्रंथ को अरथ यह ॥ तुरसी लीबो पाइ
 ॥ २० ॥ तुरसी कांन निबहरा होइ कै ॥ बिसरो बाजी वैन ॥ रूगपूग होइ कै न
 जो ॥ राम अपनो अंत ॥ २१ ॥ चौपद ॥ तुरसी कांन निबहरा होइ ॥ बाजी बचन
 सुनें न ही कोइ ॥ राम नाम मे रहै यो होइ ॥ जे में की चप धान जु सोइ ॥ २२ ॥ सा
 यी ॥ नावै बाहरि बड़ बचन हीं ॥ बाजे बजो अनंत ॥ तुरसी चमकिन चि
 तवई ॥ सुमिरन गता संत ॥ २३ ॥ राम नाम गतार है ॥ अपनै ही उर मां हि ॥ त
 रसी चलि बिसरि कबै ॥ बाहरि आवै नाहि ॥ २४ ॥ बाहजिके सुषतारवै पाई
 उर और ही मोर ॥ राम नाम स्यो मवल ग्या ॥ तुरसी पर हरि और ॥ २५ ॥ तुरसी औ
 रन आवई ॥ जो उर गता राम ॥ विषव वन लौ बिसरि ग्या ॥ बाजी सुषवे काम
 ॥ २६ ॥ ज्यो सरकित सर मे रचा ॥ नरपति देष्या नाहि ॥ बाजे बाजत नी कले ॥ च
 मकिन चित याता हि ॥ तुरसी यो रत मत होइ रसा ॥ राम नाम के मां हि ॥ सुमि
 रन करता संत सो ॥ जो आसा कोऊ आहि ॥ २७ ॥ तुरसी असा है कोऊ ॥ राम नाम
 मरत साध ॥ धनि ता जननी तात धनि ॥ धनि गुर देव आगाध ॥ २८ ॥ तुरसी धनि
 धनि दास वह ॥ राम नाम में लीन ॥ अषड अहो निमि होइ रघा ॥ तिन सब सु

१॥ तुरसी श्रुति उतमनजन ॥ कापेवरन्यौ जाय ॥ लब्धो

श्रुतिहिनां प्रतिहकां ॥ रोमरोमहो यौ करौ ॥ सहजै सुमिरन रंमा ॥ आतुरसी
रोमरोमरं कारधुनि ॥ सहजै चली जुजाश ॥ ज्यौं कारिज विनाकुम्हारके
सहजै चाकफिराश ॥ धा ॥ तुरसी चाकफि स्यौ करौ ॥ विनही कारिज सोइ
यौं उरबाहरिसंतकै ॥ परमजापयौं होइ ॥ पा ॥ विनही जयियां जाप होइ ॥
अषंड उरमें बैना ॥ तुरसी करमाला विना ॥ विनरसना विन बैना ॥ हरस
नाहलैन करचलै ॥ डूलैन मनसासोइ ॥ तुरसी मनहं होइ रघा ॥ सहज रंम
त होइ ॥ ७ ॥ करमंमाला फेरनकी ॥ अटपटमिटि गई आना ॥ तुरसी यक्षमन
दिगया ॥ अहल आत्मा धोना ॥ ८ ॥ तुरसी आत्म ध्यान स्यौं ॥ निमषन न्या
होइ ॥ जं मुषक पारपीया ॥ कैरसा अं स्यौं सोइ ॥ ९ ॥ तुरसी महषत्रपाय
निकौं ॥ होतै परदावामा ॥ सोधूं वरिलौं फटि गयो ॥ चितरहि गयो एक ही रंम
॥ १० ॥ तुरसी रंमनां मही रदिगयो ॥ याचितमां ही सोइ ॥ ज्यौं हस्त्रिय गदार
तौं उतरन कबहं होइ ॥ ११ ॥ कबहं न उतरई दारकै ॥ हस्तीको नोई ॥ तुर
सी यौं चितरहि गयो ॥ सुमिरनमें सोइ ॥ १२ ॥ टास्वा दूधौं नाट रौं ॥ रहेकामा
दिकारि ॥ तुरसी चित्रकी बेलिकौं ॥ काकरै वाजि बहारि ॥ १३ ॥ ज्यौं गि
स्वरकी छाया मों ॥ नै कौं कंय जुनाहि ॥ तुरसी बंधौं मन होइ रघा ॥ रंम
नांमकै मोहि ॥ १४ ॥ तुरसी ब्रह्मना वतां यदा ॥ नामकहावै सोइ ॥ रसना
करमात्वा विना ॥ अषंड उरमें होइ ॥ यक्ष सुमिरन संतनिकहा ॥ सार
तसंजोइ ॥ नवसिंधकी जिहाजयदा ॥ चढै सुलंघै लोइ ॥ १५ ॥ १६ ॥
अथ पाटसेवन विधानः ॥ १५ ॥ चौपई ॥ तुरसी श्रुतुन प्ररुष अव

हकै॥ तौ कौंन परम सुषपाइ ॥ १७ ॥ चौपई ॥ तुरसी यह से वा जु विधा
 ना बर न्यौं अय नै वित उंन मान ॥ आगे अर चंन नाति जु आहि ॥ कबू एक
 वर तिसुनां अंताहि ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ अथ अर चन विधाना ॥ तुरसी छ
 छि परै नही मु छिन आवै सो शाता प्रचुकी अर चन नाति ॥ कही कौंन वि
 धि होइ ॥ १ ॥ द्रसि रूप मनना लगी ॥ अद्रसिल ष्यौं न जाइ ॥ तुरसी अद्र
 स लवे विना ॥ मोम तना पतियाइ ॥ २ ॥ चौपई ॥ द्विष्टि मु छि बाजी वी
 हारा ॥ उय जै विन सैं बारं बारा ॥ तुरसी अद्रिष्ट अघिर रंम ॥ तहां मोम
 न मानत विश्राम ॥ ३ ॥ साषी ॥ तुरसी निरगुन ब्रह्म स्यौं ॥ मोम न मानत
 सीइ ॥ सरगुन स्यौं रुचिनां करै ॥ कोटिकरै जो कोइ ॥ ४ ॥ सावै सिधिय
 सिधि होइ ॥ सुषडषंड होइ सो शा तुरसी पूजौं पति आपनी ॥ पति वत
 प्रीति स्यौं संजो शा ॥ ५ ॥ निरगुन सरगुन रूप हो ॥ वरने वेदनि मां हि ॥ तुरसी
 निरगुन मूर है ॥ अगुन डारी आहिाधा सो अगुन डारी वज्यौं ॥ तोषिये जु
 बडनाइ ॥ तौ निरगुन मूल तोष्यौं न परै ॥ देखौ जल वृद्ध्यो पाइ ॥ ७ ॥ ज्य
 उनै आरसी जोरि कोऊ ॥ मां ऊ बदन निरखाइ ॥ तहां नाना प्रीति विंब हो
 हिं ॥ पति नहि तिल कदे आइ ॥ तुरसी तोउ सो नान होइ ॥ जौ लौं तमूल अर
 चाग्यौं निरगुन सरगुन नाति ॥ देखौ नीकै निरठाइ ॥ ८ ॥ सब ही तर दर
 त्रिपति होइ ॥ करत मूल जल पोष ॥ तुरसी यौं निरगुन नजत ॥ अगुन ड
 होइ संतोषा ॥ ९ ॥ तातैं साधु संत जंता ॥ जेत के न मन लाइ ॥ तुरसी निज नि
 रगुन नजत ॥ अंतित प्रीति ग्याइ ॥ १० ॥ पूजा उ नै पकार की ॥ संत नि वर न
 सो शा तुरसी इक बाह जि है ॥ इक अति अतरि जोइ ॥ ११ ॥ चौपई ॥ अति
 अंतरि पूजा यह नाइ ॥ गुन इंद्रि कौ होइ समिटावा ॥ तुरसी बाह जि पूजा क
 रौ ॥ तौ मन फैलि दिसौं दिस परै ॥ १२ ॥ तुरसी यह सब कौं निरधारा विदांवा
 सिधांत सार ॥ फुनि सब सांधन को मत यह ॥ अति अंतरि पूजा करि लेह
 ॥ १३ ॥ अति अंतरि पूजा यह नाइ ॥ संत नि सकल सिरो वनि गाई ॥ ताऊ

रनहि और जुआन ॥ तुरसी यह निष्चो निरवांन ॥ १४ ॥ सायी ॥ तुरसी ॥
 तिमा देविकें ॥ पूजत है सबको ॥ अद्रिसि ब्रह्मको पूजिबौ ॥ कहौ कौन वि
 धे होइ ॥ १५ ॥ तुरसी दासति हूँ लोकमें ॥ प्रतिमा वौ ऊकार ॥ वाचक निरगु
 न ब्रह्मको ॥ वेद न ब्रह्मों सार ॥ अंगनांम आदि और हूँ ॥ प्रभुके नाम अया
 र ॥ पूजों प्रीतिलगाइ कै ॥ तन देवल जुमंगार ॥ १६ ॥ तुरसी यह है मंदिर यह
 देहरा ॥ इहे तन मो छिसु धाम ॥ याही मांऊ बिराजही ॥ अमल आत्मार
 म ॥ १७ ॥ चौपई ॥ तुरसी इंद्री उलटी लेक ॥ यछि मत्तन जुपयाना देइ ॥ रिद अ
 स्थल थिर आसन लाइ ॥ अरचन नगति करौ इहि नाइ ॥ १८ ॥ चित वंदन घसि
 गात लगावौ ॥ लै लै प्रभुके अंग लपटावौ ॥ तुरसी अंतित उमल होइ ॥ अर
 चन नगति करे यो सोइ ॥ १९ ॥ तुरसी और अरगजे घने ॥ केते कोऊ कहां लौं
 नै ॥ नाव नगति के अति दीसु गंध ॥ अरचौ अपनों आनंद कंद ॥ २० ॥ सायी
 तुरसी तरली लेत हंसी लमंजरी सोइ ॥ संतोष के पडुपज बने ॥ सुंदर माल
 संजोइ ॥ अरचौ आत्म देवको ॥ अतित प्रधित होइ ॥ तुरसी यह अरचन
 नगति ॥ संतनि बरनी सोइ ॥ २१ ॥ जोइ जुदीपक ज्ञानको ॥ अत हृदघंटा
 बाइ ॥ आनंद स्यो करौ आरती ॥ उलटि अति अंतरि आइ ॥ अषड आत्मा दे
 वकी ॥ अनिन नाव उपजाइ ॥ तुरसी यह निज अरचन नगति ॥ सतगुरु द
 ईदिषाइ ॥ २२ ॥ तुरसी यह अरचन नगति ॥ सतगुरु कही सुनाइ ॥ आगो
 बंदन बरत कं ॥ उर दीनता उपाइ ॥ २३ ॥ २५ ॥ अथ वेद न विधान ॥
 तुरसी असुन अमंगल पाप सब ॥ वेदत हरि गुरसाध ॥ तात काल तही
 छिन ॥ जाहिना सिअ परध ॥ १ ॥ तुरसी गुरगोविंद संतन विषै ॥ अनिनि
 नाव उपजाइ ॥ मंगल स्यो बंदन करै ॥ तौ पाप न रहई काइ ॥ २ ॥ बंदन उचै
 प्रकारको ॥ संतनि गावौ सोइ ॥ तुरसी ता विधि नेदको ॥ सम है साधुकोइ
 ॥ ३ ॥ तुरसी इक निरगुन सरगुन इक ॥ उचै रूप ये सार ॥ सकल साख सुम
 तिन कद्या ॥ कोऊ जावै जान नहार ॥ ४ ॥ तुरसी नगुन ब्रह्म है ॥ सरगुन

॥७॥ कौकच है धनमालकौ ॥ कौकमानस हाग ॥ दासच है हरिनागिकौ ॥ मेर
 नकौ दुषदाग ॥ ८ ॥ दासबडाई आपनी ॥ अप ॥ नौमुषकरा ॥ तौतरसीदासके
 दासापनघटिजाइ ॥ ९ ॥ अपनीअस्वतिआपमुषकरै करषैकोइ ॥ ताकौतप
 ज्ञानजुघटै ॥ ज्योसिसकलाजुसोइ ॥ १० ॥ कबहूँस्तपितरकवै ॥ कबहूँदेईदेव ॥
 कबहूँतरहरिकौंजौ ॥ नदीअनितयहसेव ॥ ११ ॥ आनदेवतजिरांमकी ॥ सेवा
 करैसुधसाइ ॥ तुरसीदासतबनलकहै ॥ हरिकौंसकहाइ ॥ १२ ॥ जौदासापनदि
 टगहै ॥ वारनिबाहैजाइ ॥ तुरसीताहरिदासकौं ॥ कबहूँकालनषाइ ॥ १३ ॥ हरि
 देहरिगुरकौंजन ॥ करिसंतनकीसेव ॥ तुरसीअवनतिहरिकथा ॥ रसतरमेगुर
 देव ॥ १४ ॥ करिसैवाहरिजनकी ॥ मुषिमुनिहरिकौंनाम ॥ आगपरआलंबइह
 श्रीरतकौंकांम ॥ १५ ॥ तुरसीकैहरिकैगुरसंतजन ॥ जीवनिजानौंयेह ॥ श्रीर
 अमुनसंसारसब ॥ कबहूँनलावेनेह ॥ १६ ॥ तुरसीतिस्नबूडनकीचितकौं ॥ चि
 तमेंआनेंताहि ॥ सेवामांहिसन्यारहै ॥ एंमनांमकेमांहि ॥ १७ ॥ तुरसीनानिदेना
 बदर्श ॥ नाहरषैबिसमाइ ॥ मगतरहैहरिसैवमें ॥ सोसेवगसतिजाइ ॥ १८ ॥ गु
 रआज्ञालीपैनही ॥ कोपनकायामंजरी ॥ संतनकीसेवाकरै ॥ कोमलताउर
 धारि ॥ स्वर्गमृवपातालसुष ॥ बांछैनहीलगार ॥ तुरसीतिसदितनवरता ॥ सो
 सेवगसतिसार ॥ १९ ॥ सतगुरसाधूंजनिकै ॥ चरनकंवलसिरनाइ ॥ तु
 रसीनितयस्यारहै ॥ निमघनइतउतजाइ ॥ २० ॥ जोसबकीषूदनिसहै ॥ सबद
 कुसबदनजरिजाइ ॥ तुरसीकबूआनेंनही ॥ सोनिजदासकहाइ ॥ २१ ॥ जोस
 बकीषूदनिसहै ॥ कसकनआनेंकोइ ॥ तुरसीगरदहूंवारहै ॥ संतचरनरत
 सोइ ॥ २२ ॥ तुरसीदासनिकापरदासहोइ ॥ ताहंकाहोइदास ॥ तासुषपल
 पलपटतरनही ॥ स्वर्गसुषनोगविलास ॥ २३ ॥ सबसंतनिकेचरनकी ॥ रनको
 तिलकजुदेइ ॥ तुरसीत्रैसैंहीनहोइ ॥ परमलानयीलेइ ॥ २४ ॥ एंमनांमबिन
 दासकै ॥ जोमुषिनिकसैआन ॥ तौतरसीबहुदासनही ॥ हैअसोचअज्ञान ॥
 २५ ॥ एंमनांमरतहोइरहा ॥ अनितदासउरमांहि ॥ तुरसीएंमबिनश्रीर

मत्वा इजा आतेनां हि ॥ २६ ॥ जिनि व्यापा अरपनकीया ॥ जाका ताकों सो इअस्य
 नहं अयनां वै नही ॥ जाग्रतकी कहै कोश ॥ अंतितनिरमल होइ कै ॥ २ ॥ हारां मर
 त होइ तुरसी दासतादासकों मही ॥ पटंतरिकोइ ॥ २७ ॥ अंबिब्रत हंतेमहोअ
 धिकादासापतनिजसोइआमांतरहो ॥ अंबरीषकी ॥ ताहिजांतेसबकोइ ॥
 २८ ॥ जदपिवरनअधिकहो ॥ दुबासारिधिसोइइहकीयेहरिदासस्यो
 राखीनांदिनकोइ ॥ २९ ॥ ३० ॥ अथसषाजावविधानः ॥ १ ॥ १ ॥ तुरसी
 सषाजावहंहरितजै ॥ सोऊसदातिहोइ ॥ मनसाबाचाकरमनां ॥ सतकहैस
 बकोइ ॥ १ ॥ चौपई ॥ जोसेवाहोइसेवाकरै ॥ सोतौअवसिमेवउधरै ॥ तुरसी
 ब्रह्महंमितहिजांनि ॥ जैसुताहैकीलेमांनि ॥ २ ॥ तुरसीपारसअरुपरमेश्वर
 सोइ ॥ कैसीहविधिपरसोकोइ ॥ नावैजानिअजानिजुसोइ ॥ ताकोफलता
 हिहोईहीहोइ ॥ ३ ॥ साषी ॥ तुरसीप्रनुताजनिंके ॥ प्रनुकींजैजुकोइ ॥ ता
 कीमहिमाकोकहै ॥ जोतोरेहूतारैसोइ ॥ अत्रैसेपतितपावनप्रनु ॥ जैसेहंके
 सेहोइ ॥ सरधास्योसुमिरेवृजेनि ॥ पारलंघायेसोइ ॥ ४ ॥ चौपई ॥ बारवरी
 कीनावनजाती ॥ गुंनअगुंनताकीकबुनमानै ॥ अयनोमितजानैवेरंम
 ताहिसमरयेअपनोंधांमा ॥ ५ ॥ पतितपावनताथअनाथ ॥ सुरनरसक
 लबिचकोमाथ ॥ तुरसीकैसेहंसुमिरोजीवा ॥ ताहिजुतेसैंहितोषेपीष
 ॥ ६ ॥ साषी ॥ तुरसीतैसेंहितोषही ॥ जोजैसेंसुमिराशागुंनअगुंनताना
 है ॥ अत्रैसेविनवनराश ॥ तुरसीविनवननाथको ॥ सुतहिसुताब्रजुयेहु ॥ जे
 नकेनज्यौंनजौजिनातेसैंहीउधरेतेहाई ॥ उधारेसंसारस्यो ॥ किरपापर
 सलगाइ ॥ तुरसीपारंगतकीये ॥ अत्रैसेहैरंमराइ ॥ ७ ॥ ३१ ॥ अथनैवे
 दविधानः ॥ २० ॥ तुरसीतनमआला ॥ करऊंसमरपनरंमा ॥ जाकाता
 हिदेउरनहीका ॥ छाडऊंसकलसकांमा ॥ १ ॥ ज्योनेचैपसुकाधनी ॥ लेनह
 रहोइसोइ ॥ तुरसीयोआपाअरपिदै ॥ ज्योवितप्रनुकोहोश ॥ २ ॥ तुरसीवि

तासोईकरैगा॥ जाकोंसोंप्या नारा॥ तखेर होइ चरनका॥ आदिअतिइक
 तारा॥ ३॥ ज्योंकेवटकीनां वदिवि॥ तासुअतासुआइ॥ तुरसी आइइकंतर
 नये॥ तास नरोसा लाइ॥ ४॥ तुरसी घरजाये जुगुलामको॥ काघों चिंताहो
 इ॥ चिंतातावत हीजुहै॥ तावतमेंतैसोइ॥ ५॥ तुरसीमें मेरीमेंतौकरो॥ जो
 कछुमेरीहोइ॥ सकलसोंज हैरंमकी॥ मेंकामेंघोंसोइ॥ ६॥ तुरसीइहैवि
 चारिजे॥ रहेममतछिटकाइ॥ तेनगता नगवंतेके॥ चस्मसस्मसचपाइ
 ॥ ७॥ सुनअसुनकरमकोफल॥ बांछेनाहिनसोइ॥ तुरसी बर्वेहीरागि
 री॥ कोडीप्राप्तिहोइ॥ ८॥ तुरसीअसुनकरमनहिआचरो॥ सुनफलवां
 छेनाहि॥ सुनअसुननिहकामहोइ॥ रहेरंमरचिमांनि॥ ९॥ तुरसीम
 मसतसाधनकीयेजिनि॥ असुवैठेकृतकृतहोइ॥ जिनिआपाअरपन
 कीया॥ जाकाताकोंसोइ॥ १०॥ तुरसीइहसाधननगति॥ तरलोंसीवीसोइ
 तिनिषेमाफलपाईया॥ प्रेममुक्तिफलजोइ॥ ११॥ १२॥ अयप्रमत्त
 किदिधान॥ १३॥ तुरसीप्रेमनगतियह॥ जाताकेनहिहोइ॥ बडनामि
 पावैकोऊ॥ इतरहिडलनजोइ॥ १४॥ तुरसीप्रेमनगतियह॥ मनविहबल
 होइजाई॥ गावतगुनगोपालके॥ तनसुधिरहैनकाई॥ १५॥ प्रेमनगति
 पायेजुके॥ येलखिनप्रदांनि॥ तुरसीसुधिसरीरकी॥ रहीनकोऊंन्या
 नि॥ १६॥ जोई॥ नूलिगयेगतिइंदिनकेरी॥ तईविसरजंतमेरीतेरी
 तुरसीअैसेसाधूसोइ॥ रहेरंमतनमेंताहोइ॥ १७॥ मगननयेगोविंद
 गुनगावै॥ प्रेमनकेपदाहबगवै॥ तुरसीताप्रवाहमेंसोइ॥ गईकगो
 रतापानीहोइ॥ १८॥ साषी॥ तुरसीकगौरतातासैंतही॥ कोऊंकायामो
 हि॥ कामक्रोधषोयेगये॥ तेफिखिबऊंसोंनाहि॥ १९॥ चौपई॥ तुरसीग
 येपिसनसोफेरिनआये॥ ज्योंपकरवरपातनसाये॥ अतिततनमन
 सुधधिरथया॥ प्रेमनगतिस्योपांवननया॥ २०॥ साषी॥ प्रेमनगतिउ

तपनर्द्धा पूरनसिसलौसोइ॥ तुरसीतहं त्रियतापकी॥ ज्वालारहीनकोर
 ॥ ८ ॥ चौपई॥ तुरसी ज्वालाजलकैगई॥ पलटिऔरकी औरहीनई॥ सीरी
 कसोरहीजुनाहि॥ जोमीनीहोइदहतीमांदि॥ ९ ॥ साधी॥ तुरसीदहतीत
 नअरुमनकौ॥ महा ज्वालायेदोआप्रेमहलरपरतही॥ गईरहीमहिसेइ
 ॥ १० ॥ जीवसीवश्रंतरनमो॥ रहीनकोकराइ॥ तुरसीधनिधनिसंतवे॥ ननकैयो
 नईआइ॥ ११ ॥ ३३पा॥ ५८ ॥ ॥ अथ विरहकौपरिकरनः॥ ५१ ॥ तुरसीवि
 रहनिबापुरी॥ अतिगतिरहैउदासा॥ पीवमिलनकैकारनै॥ अंदरिबाटीप्यास
 ॥ ५२ ॥ तुरसीविरहनिबापुरी॥ अपनैमदिरमंआरि॥ पंथनिहारैधीषको॥ पल
 पलवारंवार॥ शकबमिलिहौकबनेटिहौ॥ कबनेटिहौवैयाइ॥ जिनयाइ
 नतैबिबुरे॥ बइदिनगयेविहाइअजियमैजकरीलगिरही॥ विसबासपुरि
 तसोइ॥ पीवमिलनकैकारनै॥ रहीपपीहाहोइ॥ ५३ ॥ विरहनिकैजियजक
 ही॥ किरहीबिकलसुमार॥ तुरसीहरिदीदारकौ॥ तलफतवारंवार॥ ५४ ॥
 जौमबरीजलकौवहै॥ चात्रिगघनकीप्यास॥ यौविरहनिहरिदरसके
 तरफितरफितरसात॥ ५५ ॥ प्रवनसुननकीसुधिगईरसनारटैनआननै
 नरहेएकदगहोइ॥ दिषतकौपीवपान॥ ५६ ॥ तुमसुषसागरसाईया॥ ङषके
 नजनहार॥ पीरहमारीजांनिकै॥ दिक्कआइदीदाया॥ ५७ ॥ विरहनिउषीजदर
 विन॥ निसदिनव्यापैसोग॥ तुमबितकौनमहाप्रनु॥ याविधाकाटनैजोग
 ॥ ५८ ॥ हंमत्तनमनतमकौंशयो॥ तुमकैवारहेदुराइ॥ बरेनविनिहेंसईया॥ स
 नमुषदरसदिघाइ॥ ५९ ॥ दाधीविरहअग्निकी॥ अनतदिकहासिरंका॥ कै
 तुमहीकैतुमप्रनु॥ औरनहीकोकरांवा॥ ६० ॥ मोहरिआइअधारदेअपनो
 रसदिघाइ॥ तौतुरसीविरहनिजावै॥ नहीतलफितलफिमरिजाआरथा॥
 कहरेनिबासुरिकहा॥ अषडअठौंजामातुसैरसीतलफैविरहनी॥ क
 रनअपनैराम॥ ६१ ॥ विहनिवीरीहोयरही॥ तनकीसुधिविसराजाका
 जोनौकबमिलदिगे॥ परमसनेहीआइ॥ ६२ ॥ तुरसीइहैअईसीउरदसै

विकसित नारी होश अविधीतियों ही गर्ह अज हन आये सोश १५ अज
 हन आये रंजी आनंददाता सोश १६ तुरसी जाके मिलेंते रोम रोम सुष हो
 १७ तुरसी ताला ने लीत नम ही ॥ मन चुष धरे न चैन नैन शकरी लागा
 हे देव न कोपी न भ्रैना ॥ १८ सुहावे न सरी रस ॥ विष न रलागे नो ग ॥ तुरसी
 १९ ये ही रही ॥ विरह निधीव के जोग ॥ २० तां सुष वा हो सु रग के तां धर
 के धन धां मा मे प्या सी तु म दर स की ॥ दर स न दे हो रंम ॥ २१ तुरसी यह अचि
 ताष कति मोहि क ब दर वै हिं ग रंम ॥ क व मो हि दर स न दे हि गो ॥ अष ड अ
 वीं नास ॥ २२ तुरसी यह विरहा वधों ॥ उप यो उर में आश ॥ पी य विना प्रिय ज
 क व ही ॥ ताला ने लि क र ग ॥ २३ तुरसी यह विरहा वधों मेरी जीव न जीव ज
 र से उत प न न या ब डं ना गी ज न जो ड ॥ २४ तुरसी विर ह मा ऊ ब डू ने दे है
 ये क विर ह सा का रा ये क नि ए कार को ले मि लो ॥ सो विर हा त त मार ॥ २५
 तुरसी करि करि आस की ॥ जीव न स्यो ये जी व ॥ कर म फां सि मां ही फ से ॥
 विना पी ति ये क पी व ॥ २६ आ सि क एक अ रूप के सा वे विर ही सो ड ॥
 और रूप करि आस की ॥ रहे फास की होश ॥ २७ तुरसी पी ति श क पी व
 मि व न की ॥ सो ई पी ति प्र दा ना ॥ और पी ति वि पर ति है ॥ मो हि रं म की आं
 न ॥ २८ तुरसी रं म ड ह र्श स ति क हीं ॥ जी वे त नि त र ली न ॥ सा चा नि र ही
 जा नि व ह ॥ और का मां हि क मी न ॥ २९ ॥ चौ प र्श ॥ तुरसी विर हा नी दे की र
 सु सु त मां न र गि नि ये सो ड ॥ जा विर हा मां ही यो ही ड रं म र वी ला गी र है
 सो ह ॥ ३० ॥ सा षी ॥ तुरसी विर हा वि न स क ल ॥ म त के कि ये वानि ज ह
 न हीं विर ह त हां त हां दे प्र तु स्यो प ह चां नि ॥ ३१ ॥ तुरसी ती व्र सं वे ग य
 ह सं त नि गा य सो ड ॥ पी व मि ल न को पं च य हा अ ति त उ त म जो ड ॥ ३० ॥ त
 न य सुष जा रें आ गि नें ॥ मन सुष दे क ब हा ड ॥ सक ल सुष त ऊ उ परें ॥ वा रे
 नि तु व न रा ड ॥ ३२ ॥ सु हा वे न ही तु ऊ वि नां ॥ सं सारी सुष मो हि ॥ तुरसी त व
 त ल ये न हो ड ॥ ज व नैन न दे वों तो हि ॥ ३३ ॥ नैन नि अ प नें ना थ को दे वों

तुरसीपलकपटलाइकौं॥ एषोंमधिसंमाइ॥ त्रशातुरसीनि

मनन्याएकरिसकौं॥ जौपीनपाऊसोइ॥ जापायेंद्वितविरहनी॥ रहीउं
वाइतीहोइ॥ २७॥ तुरसीप्रतउतउतहिइत॥ निरघतरेनिबिहाइ॥ दिनहं
करधरिसीसपदिहरिमघजोवतजाइ॥ अजहंनआयेरामजी॥ कहांरहे
विरमाइ॥ पलकपलकखितछिनजुयह॥ श्रीसरबीतोजाइ॥ ३०॥ पान्त्रेदे
केसेबनिहैसाईयां॥ तुमजलधिदंममीना॥ तुमनिरमोहीनाथजी॥ हम
तलफितलफिजीयदीना॥ छधाहंमतुमहीलागेजीवै॥ अतरजीमीरामा
तुमकौंअरीऊकैरहे॥ एषोंकौंबनिहैकाम॥ ३१॥ अतिहिअनाथविर
हनी॥ अयनोंदरसदियाइ॥ तुरसीसुनाथकीजिये॥ लजिसंगिलगा
शाप्रदा॥ तुरसीलीजैसंगलगाइ॥ भेटिजुगकीउघदीवो॥ होहरिवि
भुवनराशाभिलिजुयहपेमवठीवो॥ ३२॥ देमतुसमेंतुमहंमही॥ स
वितसिंधलौंसौंइ॥ तुरसीतबआनंदहोइ॥ अबपीवअैसीहोइ॥ ३३॥
३४॥ पीबपीवरटतजुविरहनी॥ कीटनेगहोइजाइ॥ तुरसीदास
तबनलंककविरहनीनामकहाइ॥ ३५॥ ३६॥ अयज्ञाननिरहकोप
रकरना॥ ३७॥ चौपई॥ तुरसीज्ञानविरहअगनिजुयहअैसी॥ पावकप
वनसेजोगजुतैसी॥ ब्रह्मचंडनयेग्रहवनबारे॥ यहकायाकेकरम
निजारे॥ ३८॥ जौंसरावपावकंपुनिवाती॥ तेलनराइजुजोवैराती॥ यौमन
पवनविरहअरुबिंदा॥ जयेइकत्रउपजैआनंद॥ ३९॥ मनपवनबिहबिंदमि
लावै॥ जौयहसौंजयकंत्रहोइआवै॥ तुरसीप्रंगटेजोतिप्रकासा॥ त्रिविधि
तिमरकौतबहोइनांस॥ ४०॥ साधी॥ तुरसीयांनीपमांहीपरंटी॥ पावकए
कप्रचंडा॥ सपतदीपसावतरहे॥ दगधकीऐनवषंडा॥ ४१॥ जलमोहीएक
ऊलउगी॥ सीतलसुधसुजावा॥ तुरसीतायावकमही॥ मीनकरैबिचराव
॥ पादहनप्रगटनईदारेमें॥ दारदहनकैजोगि॥ तुरसीदारउबरिगया॥
लीयाधूमिआरोगि॥ ४२॥ योनीमेंप्रवेशकीये॥ नहरनहरवरेअगा॥ तुर

भीमादकप्रसर्तै उपजेगंगतरंग ७ पानीकोपरवेसपल अन्नमीनाम
दुहाइ तुरसीमीनमुक्तिनई चहीजुतरवरजाइ ॥ ७ ॥ दौलागीदरियाव
मैं दगधजयापानी तुरसीयागतिकोकोक समरैजनसोनी ॥ ८ ॥ ज
लमेंजाताप्रगठनई सोज्वालासभिनीर तुरसीदासताद्विपरसिकै
सीतलतयासरीहा १७ जलहोमैंज्वालाजले थलकोकरैदहन ॥ तुल
सीदासफलपाईये ॥ वाकलबीजविहन ॥ रानीरमाहिनिरधूमअग्नि
प्रगटीअमितअपार तुरसीतामैंजरिगये मनकेचारविचार ॥ १२ ॥ जल
ज्वालाज्वालाजुजल जहिजलविद्यमीन तुरसीपलपलपुष्टिहोइ कक
कनहोवैढीन ॥ १३ ॥ तुरसीदासज्ञानाअग्नि लगीनीरलौसोइ जगत्रज
लज्वालासया देखीउलटीहोइ ॥ १४ ॥ अयमज्ञानकलवतकता ॥ अबजल
समानुसोइ तुरसीउलटीगतिनई उलटाहीसमरैकोइ ॥ १५ ॥ जोपर
पुरसीउलनहीचकजनें जोवेधानप्रसषगुरगणैं विसरिरघातनकी
सुधिसोइ अज्ञानमेंशेषकहोइ ॥ १६ ॥ तुरसीनियोविरहकोबांन
नीसरिगयोइसारजुसाजातेजुगामेडामगेफिरंही जतनकीयेकंजीवे
नाही ॥ १७ ॥ साधी ॥ तुरसीयांतवानलापों ज्जित करिगयेकरमजंजीर
रंमनांमसौरचिरहे ॥ जौरचिनांमकवीर ॥ १८ ॥ तुरसीजेतेकोऊसाधून
ये ॥ ज्ञानविरहकीअग्नि ताइताइतनआपनों ॥ रहेअग्निवहिलागि ॥ १९ ॥
वोपर ॥ करमकषाइरहीकोऊनाही ॥ बरिजुगईमांहीमांही ॥ ज्यौंजुगद
गधकपरेकीघरी ॥ तुरसीदेषतदीसघरी ॥ २० ॥ साधी ॥ देषत्केदीमेंजु
तोंऊपरिजीवतमांजा ॥ तुरसीअंदरिहोइरहे ॥ दगधगपटउतमांन ॥ २१ ॥
६ ॥ १ ॥ अथपरचाकोपरिकरनः ॥ अथस्त्रुतिकेविधानः ॥ १ ॥
जोगजगिआदिजुसकला सबमंतदेषेजोइ तुरसीएकपरचाविनां
कीकेलागतसोइ ॥ १ ॥ तुरसीसबहीमतपरचाविनां ॥ कंकरकाचक
थीरपरचापारसरूपहै ॥ आयेंसंतसधीर ॥ २ ॥ तुरसीसाधकहैंसास्त्र

कहै॥ सुमृतहं श्रावैयेमा॥ एक आत्मपरवाविना॥ सबहिनेमअनेमा॥ ३॥
 तुरसीकहां लों छाधिये॥ परवाकीबानी॥ जिनकेअभिअंतरजया॥ धनि
 धनितेपानी॥ ४॥ तुरसीधनिधनिसाधये॥ परवैलागेधाई॥ कूरमलोंई
 दीअटकिके॥ हिरदाकंवलमेंआइ॥ ५॥ तुरसीहिरदाकंवलमेंरंमजी॥ बा
 हरिन्नमेंवलाइ॥ बाहरितेवलनलें॥ जिनियहनेदत्तपाशाइ॥ तुरसीजे
 तिजागंगी॥ अनयासहीनुआइ॥ अपवैहीरदाकंवलमें॥ जनप्रभुनयेसहा
 इ॥ ६॥ प्रथमअनाहदस्योसया॥ परवापिठमंजारी॥ तुरसीपायोपरमसुष
 आनंदबदौअपार॥ ७॥ नानंविधितहांधुनिउगे॥ बाजेअनहदनांदा॥
 तुरसीतहांमनमानीयां॥ छूटाबादविबाद॥ ८॥ परमजोतिस्योमनल
 म्या॥ नुकुटीकेअस्थान॥ तुरसीततवाजेसदा॥ अनहदकेनीसोना॥
 ९॥ अनहदवाजावाजही॥ रुनऊनधुनितहांहोति॥ तुरसीतत्रपर
 गतिरही॥ पारब्रह्मकीजोति॥ १०॥ तुरसीपारब्रह्मकीजोतिके॥ नहीपद
 तरिकोइ॥ रदिससितारतेजमणि॥ हमदेषेसत्रजोइ॥ ११॥ रविस्तुताप
 संसिद्धीनता॥ नब्रधिरिधिरिजांदि॥ तुरसीमणिजडरूपहैं॥ तातेपट
 तरनांदि॥ १२॥ परमजोतिकेपटतरे॥ परमजोतिहीआहि॥ चीरपटत
 रकोनही॥ तुरसीयाजगमांदि॥ १३॥ निरधूमनिरसंधिता॥ निरधिरनि
 रबांता॥ तुरसीअैसीजोतिहै॥ सीतलसुषदस्यमान॥ १४॥ प्रसवनासेया
 पसब॥ त्रिविधितापबिलीमाना॥ तुरसीपानपलटिके॥ होइताजोतिस
 माना॥ १५॥ जिनपरसीपारसमई॥ पारब्रह्मकीजोति॥ तुरसीतेकचन
 नये॥ फिरितबकाचनहीहोति॥ १६॥ ससिहंतेसीतलअधिके॥ रविह
 तेअधिकप्रकासा॥ वंदनहंतेअधिकअंति॥ तहांसंतनिकीयोनिवा
 स॥ १७॥ तुरसीजहांयेतरबायानही॥ नहीबारीनह्येबेली॥ विधिविधि
 कुसमविगसिरहो॥ तहांमधुकरकरैकेलि॥ १८॥ तुरसीमधुकररूपी
 मवयहाकेवलषटवक्रहैसोइ॥ परवैसुगंधसुवासना॥ तासुषमेंरहा

जो ॥ २० ॥ परब्रह्मलगिमहामनयहः विरतिहीनहोइसोइ ॥ परबिहीनपंथी
 जुतौं ॥ रत्नाजुत्रैसैहोइ ॥ अबइतवतत्रलिनासकें ॥ बलावईजुकोइ ॥ त्र
 सीपरमात्मौं ॥ रत्नापंगुलाहोइ ॥ २१ ॥ तुरसीदा ॥ रसपंनका ॥ देवलवन्पा
 न्ज्ज् ॥ तहोवैरंमभिराजिही ॥ अषंडजोतिसरूप ॥ २२ ॥ तुरसीरंमर्यो
 दिक्षा ॥ घालीदिसानकोइ ॥ अट्टदरियातरिरहा ॥ तेजपुंजकासोइ ॥
 पैहुसामेंपार्दये ॥ औरसुधाभनकोइ ॥ किंनसाचूनात्रिमें ॥ निजकेंप्रसि
 होइ ॥ २३ ॥ तुरसीप्रनुपाधनेके ॥ केउतमअस्थान ॥ वेदपुराननिबरनि
 थे ॥ संतनिकीकेप्रदान ॥ जहंजहंमनचितलगे ॥ होइअचलइकतां
 ना ॥ तहोतहंअवसिजुउदैहोइ ॥ परमजोतिनिरवांन ॥ २४ ॥ परमजो
 तियद्गटनई ॥ तामसतिमरमिताइ ॥ तुरसीसतगुनसुधनया ॥ ता
 दरपनमेंदरसाइ ॥ २५ ॥ तुरसीजोतिजगदीसकी ॥ जागगाजगमगज
 गमगहोति ॥ ताहिदेविमसआत्मा ॥ अतिआतंदीहोति ॥ २६ ॥ उमे
 अलतिउरमेंबसे ॥ त्रियवतकौंलगेकपाट ॥ तुरसीगमनिहाटेधुली ॥
 परगतीजोतिनिरांन ॥ २७ ॥ बहरगुघवांनीसुनें ॥ सुरतासुनेंनको
 इ ॥ तुरसीसोवानीअघटासुषबिनगुपजेसोइ ॥ २८ ॥ योगाउवितर
 वरवहो ॥ सपंगेचहोतजाइ ॥ तुरसीजोतिजगमंगो ॥ अंधेकौंदरसा
 इ ॥ २९ ॥ तुरसीअंधाहोइसुपेपई ॥ गुहजहरिकीजोति ॥ नैननिवार
 षयेरहे ॥ दिषराईवहीहोति ॥ ३० ॥ चौपई ॥ पमारोपेषनकेतेन
 म्देउघरेवरकेअंत ॥ तुरसीजगमगजगमगहोइ ॥ तासनिताहिजु
 देकेकोइ ॥ ३१ ॥ विरंआरहैकंवलमेंनिति ॥ ताकंवलमेंकंवलापति ॥
 तुरसीजहंअछेंसुषपात्रे ॥ मनबिलसैसुषिकहनसुनावे ॥ ३२ ॥ तुर
 सीअकथप्रचारह ॥ जाकेनयासु ॥ विसरैदेह ॥ गेहहंकीसुधिरही
 नकोइ ॥ विचरैविगतसनेइजुसोइ ॥ ३३ ॥ सायी ॥ तुरसीयह
 यही ॥ औरअपरचाजानि ॥ जाकेनयासु ॥ बिलसिही ॥ अछेंसुषकी

भागि ॥ ३३ ॥ तुरसी रांमड्हाईसतिकहौं ॥ यौगोमिथ्यातांदि ॥ बिनघनचम
 कतबीजुरी ॥ हेम देमीनेननिमांदि ॥ ३४ ॥ नैतनिवाहरिनीतरै ॥ किंमिलिकि
 मिलिमिलिहोति ॥ तुरसीदिसौंदिसदेषिये ॥ पारब्रह्मकीजोति ॥ घटातुर
 सीवैनेनांकोऊऔरहै ॥ वैश्रवंतकोइऔर ॥ जिनिकरिसुनियेदेषिये ॥ जोति
 अनाहदटोरा ॥ ३५ ॥ तुरसीचलितहांजाईये ॥ जहांतांतांविधिकेतांदा ॥ सु
 निसुंदरसुषपाईये ॥ बूटिजाइबादबिबादा ॥ ३६ ॥ तुरसीचलितहांजाई
 ये ॥ जहांगयेयहनांदि ॥ बाजीकीबिसमरनहोइ ॥ रहियेताघरमांदि ॥
 ३७ ॥ तुरसीचलितहांजाईये ॥ जहांप्रचैसुषसोइ ॥ सुषसागरमिलि
 येलिये ॥ बजरिद्विछोहनहोइ ॥ ३८ ॥ तुरसीकहिबेकीनही ॥ सुनिबेहूकी
 नांदि ॥ देषतसिखीवातहै ॥ यहप्रचैसुषमांदि ॥ ३९ ॥ जिनकंप्रहृषचा
 नया ॥ सुन्याअनाहदनांदा ॥ तुरसीजोतिजगमगी ॥ धनिधनिवैनिज
 सीध ॥ ४० ॥ तुरसीधनिधनिसाधवै ॥ जिनिचेततलीयाचीन्दि ॥ जडघटनको
 बिसरिगये ॥ तुरसीअदभूतकीन्दि ॥ ४१ ॥ तुरसीचौबीसौततकेपरै ॥ ता
 हंपरैजुजोइ ॥ तापदस्योपरवाभया ॥ परचाकहियेसोइ ॥ ४२ ॥ परचा
 धमात्माका ॥ तुरसीऔरनानाउरमांहीउदितनया ॥ अतहदधुरैतिसा
 न ॥ ४३ ॥ उरमेवाजाबाजही ॥ होइरहोनेजेकारा ॥ तुरसीआतंदबठिरहो
 गवैमंगलचार ॥ ४४ ॥ तुरसीकायाकंबलमी ॥ कोमलकंबलएकऔरतह
 निसानिमषरूबही ॥ होइरहोनेतिनोर ॥ ४५ ॥ मधुरमधुरयातरिबजेमडला
 निरतिकराइ ॥ तुरसीअचरजदेविईया ॥ तुरसीहंसउरआइ ॥ ४६ ॥ तुरसीवरष
 नलागोज्ञानघनाघटमेंघटासंजोइ ॥ विविविचिचमकेविडलता ॥ तिजसुजकी
 सोइ ॥ ४७ ॥ घटमेंसेफुटिया ॥ निकस्यानिरमलनीरा ॥ तुरसीअचवैतातीरके
 सीतलनपासरीर ॥ ४८ ॥ अमृतपीयाअघायके ॥ नागीत्रिशांयादि ॥ तुरसी
 मनपूरतनया ॥ बकरितजावेकादि ॥ ४९ ॥ पारसमंदमैमिष्टजलापाया
 धरननागि ॥ तुरसीताजलअचवतै ॥ त्रिपतित्रिशांआगि ॥ ५० ॥ चो

ईपकाचंद्रअस्त्रनयास्त्र॥तुरसीबगेश्रनाहदस्त्र॥वरषतलागाश्र
रुतधारशोरशश्रववेआत्मसार॥५३॥कोऊकोऊसंततहांकेबासी॥त
शेषटहंणिकंवलप्रकासी॥कोऊदसदलकरिरहेनिवास॥तुरसीयेषेप
प्रकाय॥५४॥सात्री॥कोऊकोऊसहप्रकंदलके॥तुरसीबासीसोइ
तारसमैरसलुत्रधहोशारहेरसीलेहोइ॥५५॥श्रीपद्मे॥जहांजागा
जोतिकोंआइनिवास॥तुरसीनेतनिपरसैतास॥परसिपरसिआनंदही
हीजाशाआनंदकोअंतनकोइ॥५६॥उलटिचितउनघरिगयो॥जहांअन
हृदघुरैनिसान॥जहांबिनपायनहीनरतिहोइ॥द्विनरसशांगुनगान
हृदसदीपगदेबिये॥हृदिसउगेसांत॥हृदिसिचंदरबिमलिरहे॥तु
रसीपरमअभ्याना॥५७॥तुरसीचितदृतिहीननई॥परमजोतिकेंसो
हि॥अतितलीनजुहोइरसा॥अबइतउतकेनाहि॥५८॥इतउतकेनै
कीनही॥ज्यौंकरंगफंदसांहि॥ज्यौंचितअनहृदनादमें॥गल्याजुनि
कयेनाहि॥तुरसीलेकोधरजुयह॥परवाहयेआहि॥जिनबडनागी
नकैनया॥सजुगिजुगिसुषविलसांहि॥५९॥तुरसीजालाइकहम
नाकंते॥सोईयाईगौर॥सतगुरतेसोधीनई॥जहीतोमरतेहोरि॥६०
॥श्रीपद्मे॥तुरसीइंद्रीतपतिसिगंती॥जबपरश्वेपीयासुधपानी॥जा
यानीकैपीयेसोइ॥बहुस्योतापउदेनहीहोइ॥६१॥सात्री॥अंतर
कीआतसबुजी॥संकागईसिराइ॥तुरसीमनयांतीनया॥सुषमे
रहासेमाइ॥६२॥यांतीतहांपावकतही॥घनुतहांघपंचनांहि॥तु
रसीनानउदेनये॥कोटितिमरमिडिजांहि॥६३॥रबिन्धसथांति
मरतही॥ससिअसधानिहीताप॥तुरसीपीवपरचौजहां॥तहांमु
निनहीपाप॥६४॥वरसरापदोऊरहे॥इषसुषनयेसमांत॥जीवसीव
मिलिएकहृद॥परश्वेकासहनांत॥६५॥परवासबकीऊकहतहे॥प
रवाकहियेकोंत॥तुरसीमननिजमनकी॥मिलिहोइयांतीलीन॥६६॥

शिवेक होइ मिलि एक ॥ ६७ ॥ तुरसी परचाउने परकारको संतनिगाये सोइ
 एक बसगलतांत जेयो ॥ येक दिवितन रहे संजोइ ॥ ६८ ॥ चौपई ॥ तुरसी ये
 कया लये कयोनी ॥ परचैनये कीये हस हनांती ॥ येक परचै परकरनी जु
 आवै ॥ येक अगहन गहो नही जावै ॥ ६९ ॥ साषी ॥ येक बीज वरितस
 मनयो ॥ येक वरि रहि गयो सारा ॥ येऊने ऊंगन स्योरहे ॥ आया अगनिप
 जाय ॥ तुरसी यौ देह अदेह विचि ॥ इतनौ ही नेद विचारि ॥ देही दिव्य
 देही लिये ॥ अदेह अदेह मंकारि ॥ ७० ॥ अथ उतम परचौ विधान ॥
 ॥ ७१ ॥ तुरसी उतम परचा जानियहा ॥ परमजोतिकें मांहि ॥ सिंधू दजत
 होइ मिले ॥ बडुरौ बिठुरै ताहि ॥ ७२ ॥ चौपई ॥ तुरसी बज्जस्यो बिबूरै तांही
 जौ बहा अनंत चलि जांही ॥ जये जातिकी जाति जु सोई ॥ विजाति मलरस
 नकोइ ॥ अहार हवांती कुंदत जये ॥ करम काट मल उतरि गयो ॥ तुरसी जु ये
 अति नये जु सोइ ॥ परचै माया कुसम लधोइ ॥ ७३ ॥ साषी ॥ तुरसी अपने ही
 उर मही ॥ अमल आत्मारं मातापदस्यो परचा जया ॥ गयापुलाइ जु कामा ॥
 तुरसी जहां रंमत हां कामना ॥ कैसै धौ गदरोहि ॥ एक संगि रवि अरु रजनि ॥ ह
 मक हं देखे नां हि ॥ पाजहार विरजनी नत हां ॥ जहां रंमत हां कामना ॥ तु
 रसी कैसै म्हा हरी ॥ बहवौ अजल धाम ॥ ७४ ॥ तुरसी कैपद परसे जुके ॥ आदि जु
 ये सहनांत ॥ अंतरि गति गुन गलि गयो ॥ रहि गया देहनि सांन ॥ ७५ ॥ द गध
 पटलें देखिये ॥ तुरसी संत सरीरा ॥ अंतरयद मै होइ रघा ॥ ज्यो पाला गलिनी
 रंजा पाला गलिपानी जया ॥ अरु सिंधु सलिल समाइ ॥ यौ परचै पदरलि मि
 लि ॥ साधू अतही काइ ॥ ७६ ॥ काया त्रैसै देखिये ॥ परचै रतकी सोइ ॥ ज्यो
 परचै के ही पस्यो ॥ होत उपाधि नकोइ ॥ ७७ ॥ तुरसी काया रूजाइ गशि दि
 यिये जु तहि सोइ ॥ जो उर एक अलेष्यो ॥ पूरन परचा होइ ॥ ७८ ॥ पंचतत
 स्तुति मजु होइ ॥ ततनिमें रलि जाहि ॥ तुरसी जास्त गउनकी ॥ बाकी रहे

जुनाहि पूरनपचा आहियह सबसाधूजकहोहि जीवसीवमिलियेकहं
 हि। संक्षरहेकीऊनाहि। १२। तरसीचांत आनिमें दग्धहोहि वियेदेह। सुभ
 एकआत्महिरहे। पूरनपचायेह। १३। तरसीजीवतावज, मिटें। सुधसीवरहे
 जाश। सललिसिंधजीएकहोहि। परवानांमकहाइ। १४। तरसीयाप्रवे
 कीसुगति। विरलाजनिंकोइ। मरिखरिवकृतकमुये। गुरस्योंप्राप्तिहो
 इ। १५। ८५। १३६। अथरसकोपरिहरनः॥ ८॥ तरसीअंततलोक
 ब्रह्मंडमही। त्रैसामिष्टनकोइ। जैसामिठारंमरस रहेसंततहांतोइ। १।
 चौपई। तरसीरंमरसाइतसार। संतनिजीवनप्रांतअधारा। जिनिआर
 तियोंअचयाकोइ। तेजनरहेवावरेहोइ। २। सापी। तरसीइदीसमनि
 कीरहीसंचारनकोइ। महोमतिवारेहोइगये। अचै। अमीरससोइ। अत
 रहीतिनकीकौकहै। जिनिअवियारसंयं। जिनकेउरवासइनिदी। ती
 विसरेधनधाम। ३। तरसीअमीअचयेजुकी येवातेंबोपाई। ज्योमूषक-
 पायपीया इवउतहंतजाइ। ४। तनमनकीसौधीनही। आपापरनहीजान
 तरसीअचयारंमरस। तिनकेयेसहनात। ५। रंमरसाइनअचवतें। आ
 पाकीसुधिजाइ। चेतनिथिलासरूपहोइ। सुतारहेसुताइ। ६। चौपई। तरसी
 रसरंमकोनाम। ताहिअचवतेंकोधअरुकांम। दरसावृदिदेहकेसाहि। ता
 वतसोरसअचयानोहि। ७। तावतसोरसअचयाताही। जावतकामकाया
 केसाही। तरसीजनपरिकोपकरवै। कोधहंआइदिषारीयावे। ८। स
 पी। तरसीअवयारंमरस। तेनयेरमसरूप। देहाकीसुधिसूलागये। वि
 सरिगयेमहकूप। ९। जिनिअचयावोहअमीरस। होइरघामसतांन
 तरसीताकीद्विष्टिमें। आवतनाहिनआत। १०। जिनहरिरसरुचिस्योपी
 योरहेपरमसुषतोइ। तिनजगुबानशिदैतही। कोठिकरेजेकोइ। ११।
 नागतसप्तसुषोपती। परैपरमरससार। तरसीसोरसअचवतें। आन
 हबहेअपारा। १२। चौपई। तिहअवस्थातिहूगुनपरै। तारसअचवतकी

बिसरिगयेचितवतिसकला॥जिनअव्यारसवीहा॥तुरसीतारसमेंनही॥क
 हकीप्रीतिनदोह॥१५॥पीयापीयारंमरस॥सबकोकअषों॥तुरसीपीया
 जानियो॥सुषऔरतनाषों॥१६॥पीयापीयारंमरस॥सबैबयानैसोडातुरसी॥
 पीयाजानितबातनसधिरहैतकोइ॥१७॥बिससंमुद्रसंसारमें॥सुधामई
 हरितांम॥तुरसीअचयाप्रीतियों॥पलटिनयेतेरंम॥१८॥सोसुधसुधासुडा
 मिपीयो॥तुरसीरुचिसोडा॥प्रतिवारेबहननये॥देसोउलटीहोइ॥१९॥
 तुरसीबिंदीबिंदैरंमरसतौ॥बिंदीसाची॥रंमरसविंदैबिना॥मिथ्यारसरा
 वी॥२०॥दोषई॥तुरसीमिथ्याषटरसइंदी॥जोगापयजावतउरतांनारोगा॥
 ताहिजुगिनैबिरसबेकांमातौबिंदीबिंदैरसंम॥२१॥साधी॥तुरसीअ
 साकौनअनागिया॥जबलगदेहीधोंमा॥उरमांहीआलसकरे॥अचवतअ
 मृतनांम॥२२॥तुरसीअमृतहरितांवतजि॥जोअचवैरसकांमा॥कालासुष
 तापतितका॥सुषनदिषावौरंम॥२३॥तुरसीरंतांमको॥मांतारसगुनसं
 ना॥ताहिजुयेकैसैरुचो॥बुडइंडीसुषअना॥२४॥शलितहोइरहाज्ञानमें॥क
 रिअमृतकौयांता॥तुरसीअैसेसंतकौं॥काजानैजगतजिहांना॥२५॥जाकैहिर
 देरंमरस॥पूरिरहोतवसया॥तुरसीताहित्रिणसमितगै॥३॥त्रिलोकीकौसु
 ष॥२६॥सीरवा॥रुन्नारहैबिदेहा॥जिनअचयावाहरंमरसाकोउडारोषेह
 कोऊंचेदनलेपनकरें॥२७॥ससकीनहीसंनारा॥सुषहैकोचितननही॥
 करिरहोउनेप्रहारापीयकैप्यालापेमका॥२८॥१८॥अथलांबिकोपरि
 करव॥१॥तुरसीपीयारंमरस॥तनमनत्रिपतिजुहोइ॥तौरुप्यासमितेन
 ही॥सीगलागोसोइ॥१॥जैसामीगारंमरसातेसाऔरनअना॥तुरसीदासता
 हिअचवतै॥त्रिपतिनमांनैयांन॥२॥अनंतकोरिसाधूतये॥अनेतसिधनये
 सो॥तुरसीअचवतरंमरसा॥तनधरिथकातकोश॥३॥सनकादिकसुकसे
 ससिवा॥नारदादिसवसाध॥तुरसीपीयोरंमरसा॥युतिकहैअगाधअगाध ४

जुनाहि पूरनपचाआहियह सबसाधूजकहांहि जीवसीवमिलियेकहं
 हि। संघिरहैकीऊनांहि। १२। तुरसीजानअगनिमें दग्धहोहिं त्रियेदेह। सुध
 एकआत्महिरहै। पूरनपचायेह। १३। तुरसीजीवनावजुमिटे। सुधसीवरहि
 जाश। सललिसिंधलींएकहोहि। परवानांमकहाइ। १४। तुरसीयाप्रवे
 कीसुगति। बिरलाजानैकोइ। १५। रिकूरिवकृतकमुये। गुरस्योंप्राप्तिहो
 इ। १५। ८५। १२६। अथरससौपदिकरनः। ८। तुरसीअंततलोक
 ब्रह्मंडमही। अिसामिपृनकोइ। जैसामिगरंमरस रहेसंततहांनोइ। १७।
 चौपई। तुरसीरंमरसाइनसार। संतनिजीवनप्रांनअधार। जिनिआर
 तिस्योअचयासोइ। तेजनरहैबावरेहोइ। १८। साषी। तुरसीइंदीसमनि
 कीरहीसंनारनकोइ। महोमतिवारेहोइगये। अचै। अमीरससोइ। १९। तुर
 रसीतिनकीकौकहै। जिनिअचियारसंगंम। जिनकेउरबासइनिदी। ती
 विसरेधनधोम। २०। तुरसीअमीअचयेजुकी येवातेंबोयाई। ज्योमूषक
 पारपीया इवउतहंनजाइ। २१। तनमनकीसौधीनहीं। आपापरनहींजान
 तुरसीअचयारंमरस। तिनकेयेसहनान। २२। रंमरसाइनअचवतें। आ
 पाकीसुधिजाइ। चेतनिसिलासरूपहोइ। सुतारहैसुताइ। २३। चौपई। तुरसी
 रसरंमकोनांम। ताहिअचवतेंकोधअरुकांम। दरसाप्रहिदेहकेमांहि। ता
 वतसोरसअचयानांहि। २४। तावतसोरसअचयानांही। जावतकामकाया
 कैमांही। तुरसीजनपरिकोपकरंवे। कोधहंआइदिषारीयावे। २५। स
 २६। तुरसीअचयारंमरस। तेनयेरमसरूप। देहाकीसुधिनूतिगये। वि
 सरिगयेरहकूप। २७। जिनिअचयावीहअमीरस। होइरघामसतांन
 तुरसीताकीद्विष्टिमें। आवतनाहिनआन। २८। जिनहरिरसरुचिस्योपी
 यो। रहेपरमसुषतीइ। तिनजगुबांननिवैनही। कोटिकरेजीकोइ। २९।
 जागतस्वप्नसुषोपती। परैपरमरससार। तुरसीसोरसअचवतें। आन
 दबंदैअपार। ३०। चौपई। तिहंअवस्थातिहं गुनपरै। तारसअचवनकी

जोकरै० तौ इतन्नतचितवनबिसारे० पलटि अलंतनमममें धारै ॥ १७ ॥ साषी ॥
 बिसरिगये वितवतिसकला० जिनअव्यारसदोहा० तुरसी तारसमें नही ॥ क
 हकी प्रीति नदोह ॥ १५ ॥ पीयापीयारं मरस ॥ सबको कअषे ॥ तुरसी पीया
 जानियो ॥ सुष औरतनाषे ॥ १६ ॥ पीयापीयारं मरस ॥ सबे बयाने सोडा तुरसी ॥
 पीया जानितब ॥ तनसधिर है तकोइ ॥ १७ ॥ बिससमुद्रसंसारमें ॥ सुधामई
 हरितांम ॥ तुरसी अचया प्रीतियों ॥ पलटिनये ते रोम ॥ १८ ॥ सोजुसुधासुड
 तियो ॥ तुरसी रुचिसो ॥ प्रतिवारबहननयो ॥ देषोउलटीहोइ ॥ १९ ॥
 तुरसी बिंदी बिंदै रंमरसतौ ॥ बिंदीसाची ॥ रंमरसबिंदे बिना ॥ मिथ्यारसरा
 ची ॥ २० ॥ शेषई ॥ तुरसी मिथ्याषटसइंडी नोगा ॥ अयजावनउरनां नारोगा ॥
 ताहिजुगिनै बिरसबेकां मातौ बिंदी बिंदै रंम ॥ २१ ॥ साषी ॥ तुरसी अ
 साकौं अनागिया ॥ जबलगदेही धांमा ॥ उरमां ही आलसकरै ॥ अचवतअ
 मृतनांम ॥ २२ ॥ तुरसी अमृतहरिनां वतजि ॥ जो अचवै रसकांम ॥ कालासुष
 तापतितका ॥ सुषनदिषातौ रंम ॥ २३ ॥ तुरसी रंम रंमको ॥ मोतारसगुनरं
 ना ॥ ताहिजुके सै सै सुत्रे ॥ बुदइंडी सुषअना ॥ २४ ॥ प्रालितहोइ रहाज्ञानमें ॥ क
 रिअमृतकौ पांत ॥ तुरसी असे संतकौं ॥ काजातै जगतजिहाना ॥ २५ ॥ जाकै हिर
 दे रंमसा ॥ पूरिहोतषसषा ॥ तुरसी ताहि त्रिणसमितगै ॥ २६ ॥ त्रिलोकीको सु
 ष ॥ २७ ॥ सोरगा ॥ ह्रवार है बिदेहा ॥ जिनअचयावाह रंमरसाको उडारोषे
 कोऊ चदनलेपनकरौ ॥ २८ ॥ ससकी नही सनारा ॥ इषहंको वितवननही ॥
 करिहोउने प्रहारा पीयकै पालापेमका ॥ २९ ॥ १६ ॥ अथलां बिकौ परि
 करन ॥ ३० ॥ तुरसी पीयारं मरस ॥ तनमनत्रिपतिजुहोइ ॥ तौहृष्यासमिष्टेन
 ही सीगलारो सोइ ॥ ३१ ॥ जैसामी गंमरसातैसा औरतअन ॥ तुरसी दासता
 हिअचवतै ॥ त्रिपतिनमां नै प्रांन ॥ ३२ ॥ अनंतकी रिसाधूसये ॥ अनंतसिधनये
 मोह ॥ तुरसी अचवतरंमरसा ॥ तनधरिथक्यानकोश ॥ ३३ ॥ सनकादिकसुकसे

४। तुरसी अगाध अगाध सब कहें ॥ फुनि पीवते जु जाहि ॥ अष्टदरिया अमी
 रस ॥ घंटे बघैक ब्रूताहि ॥ ५। तुरसी घुमारी खागी रहै ॥ कबहू न अतरु बिहो
 ६। अतिही मीठा अमी रस ॥ अघा वैतही कोइ ॥ ६। तुरसी अघाव को अगही
 पीवत गये जु गवीति ॥ अजहूं अतितप्या सहै ॥ येह मतिवाल कुंकीरीति ॥ ७।
 तुरसी पीवत पीवत रं मरस ॥ तहा लौ पीया सोइ ॥ रस तब मैं ताहेइ राये ॥ आपाप
 र सुधिषोइ ॥ ८। शरीर की सुधिनार है ॥ गार्इ बिसर जन होइ ॥ तुरसी अचै जु
 मरस ॥ नये जु ये पुति सोइ ॥ ९। १०५३ ॥ अजरणा को परिकरता ॥ १०। जा
 वत त्रियरिपत नही ॥ मन बाई अरु बिद ॥ तुरसी अजर जरे बिना ॥ धिन
 धिन धैरै कंध ॥ ११। तुरसी जावत चपलये ॥ तीनों यात नमाहि ॥ तावत येई काल है
 और काल को कनाहि ॥ अरसन होइ नल डती बिधि ॥ जावत त्रियरिपत न तुर
 सीये अजर जरे बिना ॥ मिटत न जनम मरन ॥ अजनम मस्त न वबी जये ॥ जा
 वत जरे न जाहि ॥ तुरसी जरिये जु गतियों ॥ तौ नै कौ कनाहि ॥ १२। तुर
 रसी सोई संत जगु जांनि ॥ जिनिये अजर जरे उर अंनि ॥ लै अरधतें उर धव
 ठावै ॥ जहां के गये बड रिनहि आये ॥ १३। तुरसी नांद बिंद मन बाई ॥ असाध
 रूप बसै येकाइ ॥ जावत तजोगी जरे नयेह ॥ तावत उपजे बिनसे देह ॥ १४।
 १५। जावत अजर जरे नही ॥ अमरत मरई आइ ॥ तावत अथिर नथिर रहै ॥ त
 रसी धिर धिरि जाइ ॥ १६। धिरत धिरत कलपनां बसि ॥ नांद बिंद अरु बाइ ॥ त
 रसी के ते जगु नये ॥ अब उलटा उलटाइ ॥ १७। अतित अजर जु अमरये ॥ यात
 नमां ही सोइ ॥ तुरसी जारे जु गतियों ॥ सो अजर अंमर नल होइ ॥ १८। जसे
 न जाइ अजर सबद ॥ जइ जीवये लगार ॥ तुरसी चेतन ही जरे ॥ जाके गान
 बिचार ॥ १९। तुरसी अजर जरे जोगी सोई ॥ अजर जरे सोइ मर ॥ अजर ज
 रे सोई संत जत ॥ येवै आनंद मर ॥ २०। जैसी बिधि दरिया जरे ॥ सकल न
 दीयन कौ नीर ॥ तुरसी यौ अजर हि जरे ॥ सो जन त्रिन वत धीर ॥ २१। जै
 २२। जैसै निरधन धन हि डरावै ॥ काहुं आगे कहै न कहावै ॥ जैसे अपनों तां

ननेडारात्तुरसीअरेसु, जोगीसार॥१३॥सायी॥साररूतजोगीसोईनाउरजर
 ताहोइ।जरतांविनकेतेपरे।आलीबासतसोई॥१४॥तुं, तुं, तुं, बाओंकरौरैनिदि
 वससचुषोश।तुरसीअैसेसवहेंजहां।खहांननइककोइ॥१५॥सोएगा॥तन
 कोंकरिदरियावा।मनोमंगरवातनपकरि।तौलौनततीबाव।तुरसीबासंसा
 रकी॥१५॥होइरहोगहरगंतीरा।श्रीचीबुद्धिविसराइके।तुरसीमधिसरीर
 कुबकबानकवऊननिदे॥१६॥सायी॥तुरसीजरतांअंगयहा।सबअंग
 निमैसोइ॥साररूतसंतनिकइया॥गहैसगरवाहोइ॥१७॥१८॥अथ
 हैरानकीपरिकरतः॥१९॥तुरसीकहंकहंकथापेकही॥कहंकहंछुनि
 दोश।वेदपुरांननिहंमदी।रहीहैरानीहोइ॥२०॥कहं ब्रह्मकथापचीसत्रां
 कारूषटविससोश।तुरसीएकनिरधारविनः॥बहीबहीफिरैलोइ।
 तुरसीबहीफिरैलोइयहा।जावतलहैनतासा।जोपवीसोंकेपरै।अथद
 जोतिप्रकाश॥२१॥तुरसीतावा ब्रह्मकी॥सुधपायेंविनसोइ।षट्दर
 मनषटसास्त्र।रहेसुकिंचतहोइ॥२२॥चौपई॥तुरसीएकब्रह्मउनमात।
 दिषावै।अग्निधूमलौकदिसमजावै।इकउपमानैरहेसमाइ।सुधसारक
 बूखयीनजाइ॥२३॥सायी॥सुधिसारकोऊनालहै।होइरहेहैरंन।तुरसी
 अतिहिअगहनहै।चलेनकोऊपीन॥२४॥चौपई।यिकशाखनियदेपदावै
 इहंअलबनिलागिरहोवै।तेऊनेतिनेतिजुकहोवै।परतिविनिशाप्रतितन
 पावै॥२५॥सायी॥तुरसीरूपनरेषतवरनवपु।आगोपीचोनाहि।कहेक
 होकबुतापरे।अैसेसोकबूआंहि॥नाअगमआंधअगहिपुरुषाको
 ऊलधेनताहि॥तुरसीकितेपंडितगुनी।रहेअैगाहिअैगाहि॥२६॥इति
 साऊआवेनही।मुष्टिगहोवहीजाइ॥तुरसीताअवरतकी।वरनैकीक
 हिनाइ॥२७॥आदिअंतिमधिप्रमितिता।जाकीनहीआवै॥तुरसीताअज
 रअबिकी।कैसेनीअध्यावै॥२८॥अविदरियाअोयेअयग।अहेथहोन
 हिजाइ।तुरसीनाइखिलंबिये।नाहिनआनउपाइ॥२९॥ताइजुलगितगि

अदरे ॥ अतकोरिनिजसाध ॥ तुरसी इतर अथाह है ॥ कस्ति सके कोऊ बाध ॥ १२
 तुरसी कुदरतिरामकी ॥ को लविबेको अहिं ॥ सिव विरविनार ॥ १३ ॥ मुनी रहे ॥
 औगादि औगाहि ॥ १४ ॥ औपई ॥ तुरसी बसा बिसन महे स ॥ सनकारिक स
 रिं ड अरुसे स ॥ तेऊ कहे बस निरदे स ॥ तो और वपुरको कस प्रवे स ॥ १५ ॥ तुर
 सी अगाध अगाध बांती ॥ सबही मधमधि उचरे प्रांती ॥ कथिक थिकें कथिर दे ज
 सोइ ॥ ये प्रमित पार नदि पावै कोइ ॥ १६ ॥ ॥ ॥ वाजीगरकी कोक है ॥ वाजी
 को नही पार ॥ तुरसी किते पंडित गुनी ॥ रहे योजि पचि दारि ॥ १७ ॥ पंढी कोषो
 जजुकहां ॥ कहां मीनकी माघ ॥ तुरसी लविनो बसको ॥ औसो अगम अ
 गाध ॥ १८ ॥ वतुर बंबेकी पंडिता ॥ तेऊ नमश्मल हंदि ॥ तो अज्ञाती औरको
 ऊं काकी गिनती माहि ॥ १९ ॥ अज्ञानीनकी कोक है ॥ जुबहे जोहि विषधा
 र ॥ तुरसी यह है रा नहे ॥ जुदीप कनिकट अंधार ॥ २० ॥ तुरसी अधियारे
 इहे ॥ बचन ब्रह्म औगाहि ॥ पर ब्रह्मकी जांते नही ॥ रहे लोचहि लाहि ॥ २१ ॥
 औरनको कहे है वुरी ॥ त्यागो माया नेह ॥ आप अमी करि नो गवै ॥ देवो देर ति
 वेह ॥ २२ ॥ औपई ॥ कथनी ज्योऊ म्हा रके नाडे ॥ कथिबो करै रैन दिन पांटे
 तुरसी करनी स्यो चितनाही ॥ यह है रा न बडौ मोहि आही ॥ २३ ॥ औरन स्यो
 कहे नटे बयारे ॥ आपनको लागे अति प्यारे ॥ औरनको कहे विषि घाबुरी ॥
 आपनो गवै अमृत करी ॥ २४ ॥ तुरसी औसे अधज जोइ ॥ दितके चले जो
 नौ सोइ ॥ तिनदिज को समजावनिकरै ॥ देषत अधकूपमें परै ॥ २५ ॥ ताकी
 हरष सोगकी नदीमें पंडित सूर बहाइ ॥ तुरसी रास शंती गुनी ॥ जुमुबपु
 रा किसमाहि ॥ २६ ॥ जगत विचारका करै ॥ जांने नही कबू जाना जांनिह
 बूझिके बहेत है ॥ तुरसी यह है रा न ॥ २७ ॥ अधा होइ सुनर मई ॥ ताका नही
 अदेह ॥ छती आबिन यहमें परै ॥ तुरसी अचिर ज यह ॥ २८ ॥ तुरसी अवि
 रज आहि यह ॥ तादिनको ऊं जांन ॥ येक कहे येक तांन जे ॥ तजे अनेक
 अज्ञान ॥ २९ ॥ औपई ॥ निरगुन अगुन एक बतावै ॥ कबरुं जुदे जुदे दि

२१॥ अथ लैकी परिकरन ।

कानकार

पपीलपुनिपं छीतहां पङ्कचितसकेकोश । रातपतीरथ
जपतपहुं स्यो जानि ॥ तुरसी धानहुं स्यो अधिक ॥ लेमारा

५॥ तुरसी संत

६॥ तुरसी संत तहां गयो ॥ जहां नही पंचकी पसारा ॥ ती न्यो गुन करिना
सके ॥ बिन नरितहां संचार ॥ ७॥ चौपई ॥ तुरसी लेमारा है श्रेया ॥ पंछीषो
जमीतमघजैसा ॥ अतिही अलहलहौ नहि जाइ ॥ केते करि करिथके उ
पाइ ॥ ८॥ साषी ॥ राति दिवस चित्यो करै ॥ तनमां ही थिर होइ ॥ तुरसी आ
त्मरंमको ॥ लेमघपावै सोइ ॥ ९॥ तुरसी लेसमानको ऊं नही ॥ अतमसारा
आना ॥ साधू जननिदीयाई यौ ॥ करि अति तप व्राना ॥ १०॥ चौपई ॥ तुर
सी लै अनंत ब्रह्मंडि बेंदै ॥ लगी होइ तो बज्रहुं नैदै ॥ उलंघि जाइ जगत
गुरजहां ॥ आदि अतिलपटी रहै तहां ॥ ११॥ साषी ॥ तुरसी जहां जुलै तहां
येनही ॥ सकल्प विकल्प दोइ ॥ निबावनी रलौ होइ रघाषिहमन वितायोइ
॥ १२॥ विंता गई मन विरनयौ ॥ तुरसी लेमघपाइ ॥ सकल मनोरथ गवाये
नायरसावहराइ ॥ १३॥ कासुन अस्तुना ॥ न्यो करे ॥ सुनि सुनि संसै ज्ञान
एकही स्यो लोलाइरइ ॥ न्यो चकौरसिसध्यान ॥ १४॥ नावै डब होऊं दे
सकौ ॥ नावै सुष होऊं आइ ॥ असेसी सपरि धारिकें ॥ एकही स्यो ल्योला

१५॥ लैलागी तब जातीय रहि जाइ वचन अबोल तुरसी मन को रथयके
 डंडी हो दिअ डोल ॥ १६ ॥ जैसे चित्रकी पूतरी रहि जाइ एक ही वीर तुरसी
 ऐसे बहस्यो होइ रह हो चंद चकोर ॥ १७ ॥ तुरसी कहं लों आविये याले को उन
 मान लागी होय तो नाटरे मल निकसत हूं होइ सौं प्रान ॥ १८ ॥ तुरसी घान
 नियान जु करत अंतत डष होइ सोइ तऊ ले नंग होवे नही जो लगी
 बहस्यो होइ ॥ १९ ॥ २० ॥ अथ निहकरी पतिव्रता को परिकर ॥ २१ ॥
 तुरसी कै वारी के न्यार हो ॥ कै बर वरि हो रंग ॥ मन सावाचा कर मना ॥ औ
 र नस्यो नही काम ॥ तुरसी इहै टेक मेरे जीय मही इहै जुगति इहै जोग ब
 रि हो रजा रंग को ॥ चाडि आनर सजोग ॥ तुरसी तुम ही तुम वित वतर हो
 तुम ही तुम हर रंग ॥ तुम वित और अनेक सुष सो नही हमारे काम ॥
 सब सुषतिन करि छाडिया ॥ अंतरि इहै झलास जुग जुग मिलि अनेद
 करौ ॥ अपने प्रभु के पास ॥ २२ ॥ जावत के वारी आत्मा जावत पतिव्रतये
 ह निहचै लागि रें नि दिन ॥ करे पति अपने स्को नेह ॥ २३ ॥ तुरसी निहचौत
 वलगा ॥ अति तही रंजंत जावत प्रचै आइ पीव ॥ हृष लेवो नग हंत ॥ हृष
 लेवो हरि गहं जुके दे अपतौ सुष सोइ तब कं वारी व्याही जुके पतिव्र
 त सब सिधि होइ ॥ २४ ॥ चौपई ॥ तुरसी पतिव्रता होइ असी ॥ तो पीव पासिर
 हे निति वैसी ॥ जोइ तवत बिन चितहि चलावै ॥ तो तत काल धका मल पावै
 ॥ २५ ॥ साधी ॥ तुरसी धकामिल हिं अरु पीव को ॥ सेग बूटई सु सोइ ॥ जो पति
 व्रता पतिहित जि ॥ अंतत कहर ति होइ ॥ २६ ॥ तुरसी इहै जीये जानि के ॥ नै
 राषे मन साहि ॥ तो पतिके पति वरत विचि ॥ निघन परे को ऊं ताहि ॥ २७
 चौपई ॥ तुरसी मन को राषे फेरि ॥ वरुं दिसाते घटमे घेरि ॥ प्रभु के चरन
 निराषे लाइ ॥ सो पतिव्रतानां रि कहइ ॥ २८ ॥ साधी ॥ तुरसी गुण अतीत
 गो विंदन जत ॥ कदाचित डष होइ को रि ॥ तऊ दासने मानि के ॥ धसे न सुर
 गुन दोर ॥ २९ ॥ सरगुरमाया ब्रह्मकी ॥ उत पतिषयति प्रतियाल तुरसी

निरगुन ब्रह्म है॥ सब सौर है निरगल ॥ १३ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेस लो॥ स्वर सिधद
मंत्र बुतारा॥ तुरसी जो सब के परे॥ सो निज कंत हमारा ॥ १४ ॥ आवे जाइ न जग
तमें॥ जुगतें न ही गुन आना॥ तुरसी सोई बरवस्यो॥ पूरव्यपीति पत्रांनि॥ जो
पवीसो के परे॥ पति हमारा सोइ॥ तुरसी और पति नां करौ॥ जो त्रिनुवन अ
रये कोइ॥ १५ ॥ त्रिनुवन हं करौ वारनै॥ तिण कालो॥ त्यगो॥ तुरसी उन्नव रू
रहो॥ अयनै पति आगो॥ १६ ॥ देह जाइ नो वैर ही नला॥ कृणो होइ स्वही श
तुरसी के चन पाइके॥ की धो॥ है जु लोह ॥ १७ ॥ तुरसी लोह रूप यह मांडस
न त्रिगुण रवित संसारा॥ के चन रूपी रंम जी॥ संतनिका नरतारा ॥ १८ ॥
तुरसी एक ही को आराधिलो॥ एक ही लै उर राशि॥ ब्रह्म पंथ निन ही रात्रिये
यह संतनिकी साधि ॥ १९ ॥ सीप आरति स्यो अचवै॥ स्वांति सधा को नीर ॥
तुरसी तुल्य षो रो परे॥ सो तीप न नासे बीरा ॥ २० ॥ न तन करे गुर सब दको
जुग धासना नुकाशा॥ तुरसी तब तन सीपमो॥ मन मोती होइ आइ ॥ २१ ॥ तुर
सी मन मोती होइ आइके॥ कामे क बूसे नो दि॥ जुगुम मुद षो रो जुजल
जो पल पर सिये जु नो हि ॥ २२ ॥ तुरसी पति वरत पपीहा को न लो॥ भाके स
ये कही आसा॥ और आस बांधे न ही॥ जो तन हेके होइ तांसा ॥ २३ ॥ तुरसी प
ति वरत पपीहा को न लो॥ देखो किन निरता संके अचवै न न नीरको॥ के प्या
सा ही मरि जाइ ॥ २४ ॥ तुरसी प्यासा हि मरि जाइ॥ तऊन अचवै धर पांनी॥ अ
रुपति ब्रत कोरीति॥ पपीहा तें हम जानी ॥ २५ ॥ वीपरी॥ मृषि पति ब्रत म
नमें बिन चारा द्वैती संगि सं जोइ सिंगारा॥ तुरसी तावत पति ब्रत नां ही ॥
साखि सुखी हेम साधनि मां ही ॥ २६ ॥ साधि॥ साधक है साखक है॥ तावत
पति ब्रत नां हि जावत मन चोरी करे॥ पीवस्यो परे दे मां हि ॥ २७ ॥ मन
बिचरे बाजार में॥ जब जन आगे सोइ॥ तुरसी तनि पति ब्रत गादि॥ रही
मृषि मोन सं जोइ ॥ २८ ॥ तुरसी मोन हं मिथ्या है॥ बचन हं मिथ्या सोइ
जो ल्यो पति स्यो नोरथा ॥ ब्रह्म मन प्रीति सं जोइ ॥ २९ ॥ सकल लोक की

साहिबी संयति अरवबरव ॥ तुरसी त्रिभुवननाथपरि वारि वारि वीं स
रवा ॥ २ ॥ तुरसी वारो सकलनिधि ॥ करिक रिगई लौन रांम चरनो
रविरहो ॥ तौ जुबिबो है कौन ॥ ३ ॥ ८ ॥ १ ॥ अयचित्तानी को परि
करनः ॥ १ ॥ १ ॥ मनिषजनमतनयाइ कै ॥ जननजैगो बिंद ॥ तुरसी दाम
मनक्रमबचन ॥ धिगधिगतेनरअंध ॥ १ ॥ आयकहं जु गुमै की यो जु
गतिनजानी कोइ ॥ तुरसी गौबिंदनजनबिन ॥ नरखले बाहितनषी
इ ॥ २ ॥ साचहूता सो परहस्या ॥ जये म्हुतमै लीन ॥ तुरसी दामनरअंध
रे ॥ अंधकमाई कीन ॥ ३ ॥ लषवै रसी नरमिके ॥ पायो तनततसार
सोतनषीयो काचगहि ॥ कंचननांम बिसारि ॥ ४ ॥ अइयायदतेरी
जुगति ॥ कंचनडास्यो कीच ॥ काचरूपकदरजसुष ॥ सोदिठगस्यो जु
नीच ॥ पायायो है बऊजतनकरि ॥ चमिके व्यास्यो पांनि ॥ सोतनकोडी
कैसतै ॥ षोयीषलुतै जानि ॥ ६ ॥ चौपई ॥ सोवतसोवतरै नबिहानी
बासुरआयपऊंताघानी ॥ बषविसस्वाबरनपलटांनो ॥ औगुनक
रतनमनउलटांनो ॥ ७ ॥ कबऊ जांनिनजये मुरीरी ॥ मैतै करतअव
धिसवहारी ॥ जबहिइतगलिमे ल्यांफंध ॥ तऊतरंमहिउचरै अंध
॥ ८ ॥ साषी ॥ तुरसी अंधनसुमिरै रंमकौं ॥ अबियाकै चाइ इतउतउ
तइतऊषतै ॥ बीतिगई सबआइ ॥ ९ ॥ जिनिजोवनमैनां नज्या ॥ अ
दिनासीसुषधाम ॥ तुरसीतेपठिताहिगे ॥ जबजुरासकोवैमचाम
॥ १० ॥ याबिततंगरदेहकी ॥ मतिपतीतिकरौकोइ ॥ बारूकेमंदिर
जुलौं ॥ बिनसतवारनहोइ ॥ ११ ॥ तुरसीमिथ्यादेहयह ॥ तास्योमो
हनलाइ ॥ बाडिगंसवरेषतै ॥ जिनकीदीरघआइ ॥ १२ ॥ जिनकैअ
गिनतलछमी ॥ चलतेब्रजुबोह ॥ तुरसीतेघालीगरे ॥ उरैम्ल
वतबाइ ॥ १३ ॥ यावौबेजीवनमसी ॥ मतकौऊगरवकरइ ॥ एकहिना
उभिवलनां ॥ बाइतरौतजिकाइ ॥ १४ ॥ मिथ्यामाटीकोजुतन ॥

फिर माटी के सो जल र सीता को गरब करि। मतिर विगृही को श। १५। प्रा
 रिद्वारि डर गंध व दौ। मल मुत्र की जुषांति। तुर सी सुचि सुपन रू नदी। यादे
 ही गति जांनि। १६। जा कौं नर अपनाइ कै। पाले यो धै नि ति सौ देह दे व ग व न
 ज प्रयोटे गी घिति। १७। क हार होय ल मृदिके। देषि जु नैन उ घा रि। ज न म
 सि रं नौ जात है। जै सै या नी प रि। १८। निज क बुले आइया। नां ले जाइ जु के
 श। तुर सी नां गा ही आवनां। नां गा ही जां नां सो श। १९। या ही वै द म क ह त हे
 तो हि जु वारं वारा। य ह औ सर व हो स्यो न ही। सक दि तो रं म सं जा रि। २०।
 काम क्रोध क लि विष नरी। महा चिन नं गर सो जा। औ सी क दर ज पा दे ह
 कौं। मत अप ना दौ को श। २१। औ गौ पी छै जाइ गी। रह त न दे यो दे ह। रे न र
 म फूल्यो फि रै। रं म सु मि रि कि न ले ह। २२। पार व न क रि या दे ह कौ। धे
 ह सो त न ही वारा। तुर सी गर ब गं मां ना। त जि रं म सु म रि ड क तारा। २३। जा
 जा स्त न ब दि त न यो। क हार हो अ ल सा श। सु मि र स ने ही। आप नों म न
 बि त म न सा लाइ। २४। व क रि क ही क हं पा इ यो। प्र सी अ मो लि क दे ह। त
 ली आ त्म रं म के। अ र धि ल गा इ कि न ले ह। २५। अ गि पी छै जाइ गा।
 अ प र न ही आ का र। तुर सी रं म सं जा रि यो। प ल प ल वारं वारा। २६। आं
 पी छै जाय गा। अ वि च ल न ही स री रा। तुर सी सां ई सु मि रि लो। सु य सा ग र
 र धु बी र। २७। अ गौ पी छै जाइ गा। ता की के सी सार। तुर सी ती के र थि
 यो। हि र दै रं म अ धी रा। २८। वार ही वै उ त प न प्र यो। फू नि दे हे व न वा
 रा। तुर सी इ हा वि जा नि कै। रं म सु मि र ड क तारा। २९। कार वा या दे ह क
 वे ह हो त न ही वारा। तुर सी नि स दि न वे ह स्यो। नि र म ल नां म उ चार गा। ३०।
 औ पी छै क बा डा नां। सो अ व ही दे ह वि ट काइ। तुर सी व न म न सौ पि के
 सां ई सु मि रि अ धा श। ३१। सां ई सु मि रि अ धा श कें न व न्या त व नी दि ह
 तुर सी दे ह व ल घटे गा। व न न हो इ प न ने द। ३२। क हं पा क की दे ह स्यो
 कर व ड त अप ने स। ३३। अ प न के न जि डे रं म न र म। ३४

विनसिजाइयलछितमही देषतहीयहदेह। तुरसीइसीयादेहस्यो करि।
 येकहांसनेह ॥ ३४ ॥ जैसेबांधूधरनिपरितैसैहीयहदेह। तुरसीअैसीज
 निकै ॥ छाडिदेहकोतेह ॥ ३५ ॥ साकहीतैजुऊगइकै ॥ साजिरकीयोसरी
 र। तुरसीताहिअपनाइकै ॥ मतिषेधोहरिदीरा ॥ ३६ ॥ साकहीतैपैराकी
 यो ॥ अतिषाकहीसमाइ ॥ आदिअतिमघिषाकहै ॥ तुरसीतासविसरा
 इ ॥ ३७ ॥ मतभूलैयादेहमें ॥ करिरंमस्योसनेह ॥ तुरसीचाहौपरमसुष
 तोसाहिवसुदिरहमतयेह ॥ ३८ ॥ तुरसीयासेसारकौ ॥ निश्रेजानिअसार
 षितउपजैषिनविनसई ॥ षिनषिनमेंहिहोइ ॥ बारा ॥ ३९ ॥ नाजनतांनो
 इषिनिकौ ॥ सकलउपइहमूल ॥ तुरसीअैसीजगतयह ॥ ताकौदेषिन
 नूलि ॥ ४० ॥ पथमसुप्रसंसारहै ॥ तासुप्रमेंसुपनसंमान ॥ तुरसीपाई
 देहयह ॥ ताकौकाअनिमान ॥ ४१ ॥ होइआइयेआकासमें ॥ बादरबि
 नकमंगार ॥ तुरसीबिनमेंफटिगये ॥ तैसोयहसंसार ॥ ४२ ॥ धूहरिके
 बादरनकी ॥ कहौकहांलौप्रतीति ॥ तुरसीदेषतहीजते ॥ बिनमेंगयेव
 दीति ॥ ४३ ॥ जोइहनेननिदेषिये ॥ सुनहीषिराऊकोइ ॥ अपनौअपनौ
 औसरनुगति ॥ बल्योजाइजगुसोइ ॥ ४४ ॥ जिनकैहैवरदीरते ॥ गोवर
 घूंमतद्वरि ॥ तेनांगेकरिजुनिकारिये ॥ काहूंनपूबीसारा ॥ ४५ ॥ अैसेमि
 थ्याजगतइह ॥ मायारचितजुसोइ ॥ तुरसीजनममरनविथा ॥ फिरिफि
 रियातैहोइ ॥ ४६ ॥ फिरिउपजैफिरिविनसई ॥ फिरिफिरिलेआवता
 र ॥ आवागवनइषहीतहै ॥ यातैबारंबार ॥ ४७ ॥ तातैयाजुगविथ्योस्यो
 हूंवोचाहैहरि ॥ तौतुरसीयाजगतकौ ॥ संगकरइनिरमूरि ॥ ४८ ॥ जीव
 तऊजगुमृगतुलि ॥ मूयेमहांमसान ॥ तुरसीअैसाजागतयह ॥ बिननजि
 येनगावान ॥ ४९ ॥ अैसेसैजानौजुयह ॥ संसारीसंगिसोइ ॥ अवधित
 दीउतरिगये ॥ कोऊकानहीकोइ ॥ ५० ॥ अैसेसैजानौजुयह ॥ भाईबंध
 पितमाइ ॥ ज्योसलिताविचितिएमिले ॥ कहूंकहूंकेआइ ॥ ५१ ॥ कोऊ

काकोकनही॥कोहेदेयो जोइ॥कालवलीकंगगहेगा॥तबनिकटिनआ
 इहेकोशा॥पचारजपाटधनलिब्ध॥विननजियेजावता॥तरसीदेसु
 यबिनकको॥फिरिइयहोइअंतता॥पचार्योसोवतस्वप्नमेंपाईयोराज
 जुइंसमांता॥तरसीजागोइहै॥त्रिसोसोसबजांता॥पचारिनरनिसदि
 ततामजपि॥कहारहोसुषनोयाप्रहओसरसमयो॥जुयहाध्वकरिक
 हंतैहोइ॥पचा॥आलसीकहोइकहारहो॥उठिकिनकरहिउपाइ॥
 जिहिउपाइकीयेउबरियो॥राजतजंमकीलाशा॥पचा॥आलसीकहोइ
 कहारहो॥उठिकिनसुमिरैरंमापौतिविधारीलौंपकरिंमोहिलेजा
 इगीनिकंम॥पचा॥तरसीकल्पिकल्पिकायाषीशामनविगास्यो॥
 मूढाअबतीकैहरिनांमलौ॥होइअकल्पआरूपा॥पचा॥होइआइरू
 ठहरिनांमलौ॥षडिकल्पनांआना॥तरसीषडेकल्पनां॥प्रांतमिलेनि
 रबांता॥पचा॥लक्ष्मालकाहरिनांवलौ॥अपनैहीउरयिरिहोइ॥तरसीकलि
 जुगकबिबदे॥देनतकरियेकोइ॥६०॥जिनिजनदंनकीयासुतो॥कलि
 जुगलीपितराइ॥रामकहनपायेनही॥विचिदीगयेविलायो॥६१॥न
 लोमनावतलोकको॥होइयलोककीहोनि॥तरसीनजनविचिनागप
 रै॥करतलोककीकांनि॥६२॥जनजनकोमनराषतै॥बैरागरनिजदे
 हा॥तरसीवृथविहातहै॥कीनसयानपनयेहा॥६३॥सोरगा॥तरसीको
 नसयानपनयेहा॥वृथकंवनतनषोईये॥रंमनजनतविसराशा॥अलसा
 इअस्वरहोइसोईये॥६४॥अलसाईयेतहीएकयल॥सुमिरतरंजारं
 म॥तरसीबील्योजाततन॥धूंवाकीसोधांमा॥६५॥तरसीधूंवाकेसेंधोर
 हर॥कंधतजीवनजोइ॥कालरुबुकेजाहिगे॥दिष्टिनपरिहैसोइ॥
 ॥६६॥तरसीमैतैप्रतिकरौ॥मैतैधरोउगइ॥विचिमेंतैकाकोठहै॥तहि
 बोटरहेहरिबाइ॥६७॥तरसीमैतैजनबलगे॥बसेजतनमनमांहात
 स्तगदरसनदेवको॥जीवकींशैतांदि॥६८॥

रविंमविनि सोऽ ॥ तुरसी इदपरदा मिटे विन ॥ कैसैर सत होऽ ॥ ६ ॥
 जागि दिवानेचेतिरे ॥ कहर सौ अलसाऽ ॥ राजारंम रिजाइले ॥ औसर
 वीतौ जाऽ ॥ ७० ॥ ज्योरी कै लौरि जाइये ॥ तुरसी राजारंम ॥ फिरि पीबै पबि
 ताइवै ॥ जब विन सै देही धाम ॥ ७१ ॥ रंम रिजावै तो विसरि ॥ रिजलोक की
 आन ॥ तुरसी जो असी करै ॥ तो तू बडा स्वजान ॥ ७२ ॥ तोरि स्मृति आकार स्यौ
 निरकार स्यौ लाइ ॥ तुरसी उरमधि आइकें ॥ इदै अरथ भोपाइ ॥ ७३ ॥ जो
 तें गुरकौ सिर दीया ॥ तो अनंतहि कहं जाहि ॥ तुरसी अं दरि अचल होइ
 क्योन अराधेताहि ॥ ७४ ॥ आराधत अविदेवकौ ॥ अलसावै कांई अंध ॥ त
 रसी आरति स्यौ स्वमिरि ॥ अपनौं गुर गोविंद ॥ ७५ ॥ तुरसी कथनी काकथै ॥
 कथेक बूनां हि होइ ॥ जो चाहे हरि दरसकीं ॥ तो मनत न माहि समोइ ॥ ७६ ॥
 कथनी कथि कथि कलि मदि ॥ बहूंतति बंधानार ॥ तुरसी दास पापानही
 विन करनी करतार ॥ ७७ ॥ करनी करतं पाइये ॥ विन करनी कबूनां हि त
 रसी करनी कीजिये ॥ मन गहित नही मां हि ॥ ७८ ॥ तनतजि अनंतन जाई
 ये ॥ अनंतन पईये पीव ॥ पीव जीवके पास है ॥ परसि होइ किन सीव ॥ ७९ ॥ सु
 ष चाहे सुष कौल है ॥ तुरसी मुगधगां वार ॥ सुषतौ सो नल पाइ है ॥ जो सब
 सुषधरै विसारि ॥ ८० ॥ सुषत्यागं सुष पाइये ॥ सुषजुग है सुष जाइ ॥
 तुरसी दास सुष परदरौ ॥ ज्यौं सुषमै रहौ समाइ ॥ ८१ ॥ तुरसी दास वि
 षरुपरै ॥ मिश्री लपटाई ॥ अैसेनां नौग है ॥ पहरि दे नाई ॥ ८२ ॥ दुष
 परे टां सुष है ॥ सुष परे टां दुष ॥ अैसे परस परदे बिये ॥ ये संसारी सुष
 ॥ ८३ ॥ मूवे सस कौं देषि करि ॥ मतहि डूलावौ जीव ॥ तुरसी दुष बडू तां नि
 है ॥ नजि सुष सागर पीव ॥ ८४ ॥ सुष के सागर रंम है ॥ सब दुष संजन हा
 र ॥ तुरसी ताहि संतारि लै ॥ सन मुष वारं वार ॥ ८५ ॥ तुरसी या संसार की
 जूव सगाई जान ॥ स्वारथ देषि अविमिलै ॥ विन स्वारथ अपि ब्रानि
 ॥ ८६ ॥ तुरसी या संसार कौं ॥ सुपनै कौं सो सुष ॥ तहां न चिये वावरे र

वेहोइबकडषा॥८७॥ तुरसीयासंसारस्यो॥ निमषनकरियेनेहा॥ नेहकीये
 जचबनिमो॥ परैकुबधिकीषेहा॥ ८८॥ तुरसीसुषसंसारको॥ कोटिइबतकी॥
 षा॥ नि॥ तहांपरिजोतिपतंगली॥ यचेवकृतअज्ञाना॥ ८९॥ जोलौतनआरे
 येहै॥ लौ॥ हरिगुनगाइ॥ तुरसीपानप्रवसियरे॥ तबकबूचलेनउपाई॥
 ९०॥ नुरआइग्रासैतनही॥ मनसरधाघटिजाइ॥ तुरसीतबइलनहै॥
 नजिबौत्रिनवनराइ॥ ९१॥ नुरआइग्रासैतनहि॥ जोवनजाइबिलाइ॥
 तुरसीइडीसधिलहोहि॥ तबकबूहोइनउपाइ॥ ९२॥ थरहरथरहरतनइह
 कंपतसकलसरीर॥ तुरसीरंमनजनतब॥ कैसैधौहीइबीरा॥ ९३॥ नेनप्र
 वेप्रवननइ॥ सुन्योतपरैसुधबेन॥ रसनांयकिकंठकंमधि॥ उपजेअतित
 येना॥ अंगअंगसबसिधलहोहि॥ समकैनहीसुधसेन॥ तुरसीतबगोवि
 दनजनाकैसैधौहीइभेन॥ ९४॥ करतप्रीतिघटघटनिस्सो॥ ग्याबीति
 तनसोइतुरसीअनहूनचेतई॥ इइअज्ञानीलोइ॥ ९५॥ सोरगा॥ घ
 टस्योकरतसनेहा॥ हेहजगतमेंधारिये॥ तातेसमकिजगुह॥ अघटहस्योम
 नलाइये॥ ९६॥ साषी॥ जोपीबेहंछाडनींघटकीप्रीतिसनेह॥ सोअबहि
 ब्रिटकाइकैहोइरहीअसंगअनेह॥ ९७॥ चौपई॥ सोकमितनकोऔषदि
 येहा॥ पहलहीकरूनकरियेनेहा॥ तुरसीउलटिहउरमेंआज्ञातांमहीसौरहि
 येस्योलाइ॥ ९८॥ ९९॥ अथमनकीपरिकरन॥ १००॥ तुरसीमनपूरबदि
 सा॥ निमबासुरिधावै॥ पठिमदिसआवैनही॥ कैसैधितियावै॥ १०१॥ पठिमव
 सैहिजपानपति॥ हरनअनंतअघत्रास॥ तुरसीताहिवियारिमना॥ पूर
 बकरैप्रकास॥ १०२॥ धिननौधिननासिका॥ धिनअवनीचलिजाइ॥ धिनतुर
 सीरसनांलुबधि॥ सकलस्वांदरसषाइ॥ १०३॥ तावैमारिगबहियस्यातलदि
 नऔवैगौरा॥ तुरसीचंचलचौरमता॥ जपेऔरहीऔरा॥ १०४॥ तुरसीजबलग
 चंचलचपलहै॥ तबलगकरईदौरा॥ धिनइहांधिनउहांदसोदिस॥ फिरि
 आवैसबगौरा॥ १०५॥ तुरसीजबलगचंचलचपलहै॥ तबलगरदैबथीरास्वा॥

दबादबकबाहसौ जाइकरै मिलिसीर ६॥ तुरसीजबलगचंचलवपलहे
 तबलागवकेअघाइ ॥ जबमनवाउनमनिसिल्या ॥ तबवोल्याकनसुहाइ ॥
 तुरसीजबलगमनयहजीवता ॥ तबलाइहदिसजाइ ॥ नलीबरीबरतेसबै
 विषअमृतसबषाइ ॥ ७ ॥ तुरसीजबलगमनइहजीवता ॥ तबलागवतेदो
 इ ॥ मैतैमांनिबडाईयां ॥ तातीसीलीसोइ ॥ ८ ॥ तुरसीजबलागमनइहजीव
 ता ॥ तबलागचंचलदेह ॥ जबमनवामृतिगया ॥ तबदेह नईबिदेह ॥ ९ ॥ तुर
 सीजबलागमनइहजीवता ॥ तबलागपांचपचीस ॥ जबमनवामृताया ॥ त
 वपांचपचीसनतीस ॥ १० ॥ यहमनमारैसकलकौ ॥ मनकौबिरलाकोइ ॥ तुर
 सीमनकौमारिहै ॥ पावैगोसुषसोइ ॥ ११ ॥ तुरसीजबलागइहमनजीवता ॥ त
 बलागवतेदोइ ॥ मैतैमांनिबडाईयां ॥ तातीसीलीसोइ ॥ १२ ॥ यहमनमारै
 सकलकौ ॥ मनकौबिरलासंत ॥ तुरसीमनकौमारिही ॥ तैपावैनागवंत ॥
 १३ ॥ मनकेमारैमुनिगये ॥ वनतजिबस्तीसांदि ॥ तुरसीइहमनमसकरा
 पलधीजीयेजुनांदि ॥ १४ ॥ मनकेमारैमुनिगये ॥ ग्यानध्यानसुधिचूलि ॥
 तुरसीइहमनमसकरा ॥ याहिधीजियेतमूलि ॥ १५ ॥ महाकविनयहमन
 है ॥ अगदगघीनहिजाइ ॥ तुरसीकेतेपचिगये ॥ करिकरिको टिउयाइ ॥
 १६ ॥ कायाकसेबडकातया ॥ मननोतारसषांइ ॥ तुरसीमनरसरहि
 तहोइ ॥ तौनिरबांतसंमांत ॥ १७ ॥ जोमनकबूबसिनयाहोइ ॥ तकमित
 करिगिनौनकोइ ॥ तुरसीअपनौंऔसरपरै ॥ पलटिसत्रहोपसोइ ॥
 १८ ॥ मनसौंमित्राईकिसी ॥ जाकोइइसुजाव ॥ बडेबडेमहामुनीरिषि
 इहिमनदीयेडिगाइ ॥ १९ ॥ रईहकेबीजसमि ॥ तहांनसंचरकोइ ॥ ज
 हांमनआइसंचरकरै ॥ कामकटकसंजोइ ॥ २० ॥ जोरजतमागुनत्या
 गिके ॥ नयासाविकीमन ॥ तौहूताहिनधीजिये ॥ सिधिनचुलावैजन
 २१ ॥ मनकौनैकरिरिषिवसे ॥ विचरेवौरेहोइ ॥ तुरसीतबनलबू
 टिये ॥ या मन आगेसोई ॥ २२ ॥ कालहूकेमहाकालहै ॥ कोठिकसत्र

समाना। तुरसी त्रैसोमन है। महासुगध अज्ञाना। २४। तुरसी तऊतधी जिये
नो मन मूवा हो। २५। कदाविक बहू उविचले। नृते प्रत होइ सोश। २६। तुरसी
तऊतधी जिये। २७। यामन कौं बिन चाइ। सुपक सिधिलों धिरियें। तऊमधि अं
कूख जाइ। २८। जावत सं पूरन मन। नयान तन मँ थीरा। तावत के रो मन के
बाडिन दर्जे नीरा। २९। मन ही कुतसत क मलयना। षपजा वै उर मां हि। तुर
सी ताकी चोमै परि। निकस्यो चाइ नां हि। ३०। दियो यामन की मूढता। उल
ठकें समझइ। ३१। तुरसी डस सुषकरि गिने। सुषका डषकराइ। ३२। नीव
की तरसनी बस्यो। ३३। रुचि मानई जु सोश। ईषदंड मधि मे लिह्यो। तो तल कित्य
गतत होइ। ३४। अपने ही मन की कल्पना। मन कौं बंधन होइ। ज्यो तंतूत
अ करी। रही अरजि मधि सोश। ३५। शो सो विचारिकें। औरन को क
फंद। अपने ही कीये करम मँ। अरजि रह्यो मन मंदा। ३६। जैसे की रपाटकी
आपहार विकें जाल। तुरसी तोमै पश्चिमरे। औरन को ऊकाला अ स
कलजा स्वस मिरतक हैं। सिधसाधिक कहै सोश। तुरसी दास मन बसि
कीये। मन की मुक्ति जु होइ। ३७। मन ही माया विषैरस। मन ही निरबिष
होइ। मन ही उलटि निज मन मिले। तुरसी गुरगमिसोइ। ३८। मन ही स्यो
मन पाईये। मन बिन मन नही होइ। तुरसी तुरीया तत कौं। मन बिन प
डवै कोइ। ३९। मन ही समझे ज्ञानाति। मन ही होइ अज्ञान। मन ही प
रसै पीवकौं। तुरसी परहरि आंवा। ४०। मन ही उतम मधि ममन। मन
ही चोर मन साध। मन ही फिर मन कौं मिले। बाडिस कल अपराध। ४१।
एगदोष मन के धरम। अनिसंकल पविकल्प सोइ। तुरसी एविली मा
न होइ। तब मन मूवा जोइ। ४२। जब मन अपनी चितिकौं। बिसरि ब
स होइ लीन। तुरसी तब यहई जु मन। होइ ब्रह्म समुद्र की मीन। ४३।
यह मन रत होइ ब्रह्मस्यो। इहे बिषाया रत होइ। तुरसी दोजिगनिस
तका। इहे मन कारन सोश। ४४। इहे मन इंद्री सुषनिस्यो। रविसंसा

रीहोइ ॥ तुरसीइहै मतबिरकतहोइ ॥ तौ ब्रह्मसामोवैसोइ ॥ ४२ ॥ सबइं
 नकोमूलमन ॥ अरुजगुकीसीवांसोइ ॥ तुरसीजिनइहलंधिया ॥ तिन
 लंधीसबलोइ ॥ ४३ ॥ करैकबूजुनारद्या ॥ किवकितनयेजुसोइ ॥ तुर
 सीजेमनजीतिकै ॥ रहेरोमरतहोइ ॥ ४४ ॥ विद्यासकलपढीजुजिनि ॥
 अरुजान्यौंजोगाभास ॥ तुरसीजिनमनवसिकीयो ॥ करिइंकीकोना
 स ॥ ४५ ॥ तुरसी ॥ ज्यहमनमूरहै ॥ यहमनसायासोइ ॥ यहमनवसिनये
 ब्रह्मको ॥ अरुसिप्रकासजुहोइ ॥ ४६ ॥ तुरसीयहमननगरजुगरीका
 काटरघोरआहि ॥ ज्यौंज्यौंअघाचलाईये ॥ त्योंत्योंपछांहाजाइ ॥ ४७ ॥
 तुरसीयहमनअसअरैलअति ॥ चलायेनचलाइ ॥ कचअसवारहिडा
 रिदे ॥ कोउपकामलठहराइ ॥ ४८ ॥ यामनअसकोसाधिवौ ॥ अतित
 डहकरजानि ॥ तुरसीसनेसनेसधै ॥ औरनहीबलअन ॥ ४९ ॥ गिर
 परिसिलाचढाइबौ ॥ महाखडहकरजानि ॥ तुरसीमनकौंजीतिबौ ॥
 अंसोसोपरवांनि ॥ ५० ॥ जीततबीतेवरपबडा ॥ उरधचढावतसोइ ॥
 तामनकौं गिरसिलालौं ॥ उतरतवारतहोइ ॥ ५१ ॥ मतहीधीजोसंतजन
 कामनरिपकौंकोइ ॥ तुरसीधीजेकरतहै ॥ नजनमाहिनांसोइ ॥ ५२ ॥
 तुरसीहंमगुरक्रियातौ ॥ गोविंदकैप्रसादि ॥ संतसंगतिकेप्रसतै ॥ लषी
 जुयाकीआदि ॥ ५३ ॥ अंहकारतैउदितहोइ ॥ डिष्टिमेष्टिजुहोइ ॥ तुरसी
 सौमनतबमरै ॥ जबनिरमूरहंहियोइ ॥ ५४ ॥ तुरसीबाजीकौंबिसमर
 नकरि ॥ सुभुरैगंमअघाइ ॥ यहवोषरिउरआचरै ॥ तौसहजेमनमरि
 जाइ ॥ ५५ ॥ अैसीकरनीकरैनिवि ॥ जनचितवितउलटाइ ॥ तौतुरसीय
 मनकी ॥ सहजिविधामिदिजाइ ॥ ५६ ॥ जोइजोइंनोगजुवासनां ॥ मतम
 हिउयजैआइ ॥ तुरसीसोईसोईटारिये ॥ तौमतमरताजाइ ॥ ५७ ॥ सह
 जिसहजिमनकौंजतन ॥ तुरसीबीनजुहोइ ॥ जोबविविधिजोगादि
 सुष ॥ ताहिअरपियेनकोइ ॥ ५८ ॥ जावतजतनजुमनको ॥ करैसंतज

नसोऽप्येचकुटंभीनसहतयहा॥ तावतमृतकहोऽ॥ ५॥ जावतजतन
जुमनकी॥ जनतदेडडिटकाशा॥ तुरसी तावतचपल॥ तातजि॥ ललित
बेठेआऽ॥ ६॥ तुरसीजबलगमनअस्थिरनही॥ चितचंचलवलिजा
॥ तीलोमहांकरनीकरता॥ रहियेनहीअलसाऽ॥ ६॥ अलसायेकही
कौबनौअवधिसिरांनीजाऽ॥ तुरसीमनबसिकारनौ॥ करियेकबूउ
पाऽ॥ ६॥ स्वसैस्वामसुरतिस्यौ॥ रंमनांमनितितेरि॥ तुरसीमनया
आलंबस्यौ॥ लीजीघटमैघेरि॥ ६॥ सनेसनेसुरमाईये॥ अरुऊनिस
बेनिवारि॥ तुरसीदासमनरासिकरि॥ रगिरहीअमनमगरि॥ ६॥
ज्योआवेस्यौलीजिये॥ हीजेअनंतनजांना॥ तुरसीमनबसिकीजिये
योहीबडोसयान॥ ६॥ चौपई॥ तुरसीयहमनबसिकबहोइ जब
रातिरिंवलसागारहैसोऽ॥ याकोपीबीपलनबिसारोआअन्यास
मेंअवधिगुदारी॥ ६॥ श्रीरउपायसबैपरिहरो॥ मनबसिहोइसोईम
तधरे॥ तुरसीओरउपायनमांही॥ बडभूलेतितकीसुधितांही॥ ६॥
॥ साषी॥ सनकादिकसिवआदिदे॥ आषैइहैजुजोगा॥ तुरसीमनन
टाईये॥ परहरितानांजोगा॥ ६॥ सोमननमूरनये॥ तननमूरनहीइ
तुरसीतननमूरनये॥ ६॥ तीनंदरसैकोऽ॥ ६॥ वेदातसिधांतकोइतो
हिअरथततसारा॥ मनबसिकरितजिरांमजी॥ तुरसीत्यागिविका
रा॥ ७०॥ चौपई॥ तुरसीकोटिवातकीएकहीबाता॥ कहैसतस्वरबे
रबिधांता॥ जोसबविधिमनबसिहोइआवे॥ तोजनक्योनमुकतिफ
लपावे॥ ७१॥ साषी॥ कायाकसिमनकौसुसै॥ धसिकैकऊनजाऽ॥ तु
रसीसोईसंतजेना॥ स्वविसुधारसषाशा॥ ७२॥ तनमेंसबमनमेंपवना॥ य
वनमेंसुरतिसमाऽ॥ तुरसीतबआनंदहोऽ॥ बेआनंदबिलाशा॥ ७३
बेआनंदबिलाइतब॥ जबमनथिरहीइआऽ॥ तुरसीमनथिरनये
विन॥ कहाकसैहोइकाऽ॥ ७४॥ कायाकिसजुदेखिये॥ माहीमो

क्रमो वनमें वसो हसो किरहो गहिमो न तुरसी मन जीते विना मिटेन
 दी दुष जौनि ७६ मन जीते महं प्रचुको दरस होइत त काल तुरसी म
 न जीते विना जपत पस वै जंजाल ७७ जिन मन जीत्या जगति स्यो सि
 ध तये जंन सोइ तुरसी मन जीते विना बरुत गये है रोइ ७८ मन जी
 ते सुष पाईये मिटि जाय सबे कलेस तुरसी पूरन ब्रह्म जहां तहां है
 इष वैस ७९ निरहंकारी मन करि धरै निरंतरि ध्यान तुरसी तब
 न ल पाईये परम जोति अस्थान ८० मन प्रवा है रोकि कै राषे काय
 मोहि तुरसी कर ताको मिलै मिलि पुनि बिछुरै नोहि ८० तपति
 मिटे तन मन की सीतला ता उपजाइ तुरसी ज ब मन तन मही बि
 र वित वैसै आइ ८२ मन चित थिर होइ तन मही कलह कलप न
 धोइ तुरसी परम समाधि सुष तब न ल हो वै सोइ ८२ जैसे कत धार
 संघे ता कूज परितार तुरसी यो मन संघिये उलटि र द्वि दाम नारि
 ८३ फेरै तै मन फिरै गा धरै तै धरि जाइ ता तै धरिये नही तुरसी ले
 ज उलटाइ ८४ उलटाये मन रा सि होइ आधि बधे उर मोहि तुरसी
 बुजै विकार कल स्वांति होइ सब गंड ८५ चिन चित्य ह मन अ
 किये तुरसी रि दाम नारि अ बंटे केइ कं तर होइ गा ज्युं ता कूं उं परि
 तार ८६ अटके अ स थिर होइ मन टूटि जाहि सब पाइ तुरसी दस
 अमृत पिये विष देख्यो न सुहाइ ८७ तुरसी आदि अंतिलो यह अ
 र न कीजे मन तन मोही अ ट किये जान न ही दीजे ८८ जौ निरधन
 धन को संघे यो जन संघई मन तुरसी सो अमृत स्यो होइ संपू सत
 न ८९ सोई संत सोई सूरि वां सोई पंडित बुधि वां त तुरसी मन ग
 हित न मही जौ सुमि रै ना व नं वां न ९० जो न न देई जग त म हि म
 न को एक ल गार तुरसी राषे फेरि करि सो सूर सें सार ९१ जपत
 य हूं करि बौ सु ग म सु ग म ती र थ ब त दान तुरसी मन को जति बो म
 हो क चिन यह जो न ९२ जिनि मन जीत्या आपना मेरि तर म सब अ

॥ तुरसी बस मिलि बस्तमें ॥ नये जु ब्रह्म समांन ॥ १७ ॥ मन सब का ईश्वर ॥
 जहो ॥ मन ईश्वर जनहि कोइ ॥ तुरसी मन ईश्वर जनयो संत कहें वै सोइ ॥ १८ ॥
 ॥ वीपई ॥ तेई साधपंडित फुनि पांनी ॥ संपूरन मन वैठे आनी ॥ निवाचनी र
 लों कै रहे आइ ॥ तुरसी त्रिष्ना तरंग मिटाइ ॥ १९ ॥ साधी ॥ तुरसी मन महा
 चल बिचल ॥ चंचल चपल जु सोइ ॥ अंसे मन कों बसि करे ॥ तीनि नवनपति
 सोइ ॥ २० ॥ जैसे रंग टिगमेलियो ॥ फटकतिसा होइ जाइ ॥ तुरसी ही राएक
 रस ॥ द्वै रंगत समाइ ॥ २१ ॥ गिरं ॥ फटक रूप जो लोरि दों ॥ तो लोरंग अ
 नेक ॥ तुरसी हो वै ही रसमि ॥ तबै एक का एक ॥ २२ ॥ इकरंग सौं ॥ जो धरे
 परे बहाव निमाहि ॥ तुरसी तो लों फटक मवा ॥ ही रा रूपी नाहि ॥ २३ ॥ यांचे
 इंडी पंचरंग ॥ छगै फटक समांन ॥ तुरसी खबरंग होइ हि फिला जो उरग
 जत हरि ज्ञान ॥ २४ ॥ मन कों जीति जुगति गहि ॥ जे तजि है गोपाल ॥ तुरसी
 पऊचै गोसही ॥ जहो हरि दीन दयाल ॥ २५ ॥ जहां हरि दीन दयाल है ॥ तहां म
 नकी गति नाहि ॥ तुरसी मन पऊचै सही ॥ जो सुमिरे हरि घटमाहि ॥ २६ ॥
 काला मुष होइ कालका ॥ करम बाधि घटि जाइ ॥ तुरसी जो मन हरि तजो
 इकचित इकै ताइ ॥ २७ ॥ तुरसी कहां पटि ऐ गुनी ऐकहां ॥ कहां सुनि एब ऊ
 ग्यो न ॥ जब लागत समझै नही ॥ तब सबही अंम जांत ॥ २८ ॥ पटि पटि बऊ
 पंडित मूयो ॥ तुरसी मन बसित रजयो ॥ दिन गंदे हरि की दोटा ॥ २९ ॥ सोई क
 रनी की जीयो ॥ सोई कथिये ग्यो न ॥ जिह ज्ञाने बसि होइ मन ॥ तुरसी पर हरि
 ज्ञान ॥ ३० ॥ तांचे वृत्ति महेसकी ॥ तांचे ब्रह्मा विष्णु ॥ मन बसित प्रे बसि होहि
 गो ॥ तुरसी यांची पिष्णु ॥ ३१ ॥ तनही नास देहे नदिन ॥ मनकी खबरिन सार ॥
 तुरसी फिरै तिहू लोकमें ॥ महा प्रथिमता धारा ॥ ३२ ॥ मन फेरै तनकी प्रकृति
 फिरि आवै एक तौरा ॥ तुरसी ताहि नफेरि ही ॥ मूर मम तकें टोया ॥ ३३ ॥ मन
 फेरै महामुक्ति के ॥ मूलि जाहि बज्रक पाटा ॥ तुरसी मन फेरै बिता ॥ प्रांत
 घटै बऊ थाट ॥ ३४ ॥ द्वादस अंग देह स्यो ॥ जो लों करे गवें न ॥ तुरसी तो

लौजातिये ॥ कच्छवासनामन ॥ १२१ ॥ अपनै धरि अस्थिर रहै ॥ तिलनरितजे
तेप्यान ॥ तुरसी तब जानी मनकी ॥ मिठी वासनां आन ॥ १२२ ॥ जौ लौं चाले वि
नकहं ॥ तौ लौं जीवतमान ॥ तुरसी मन पूजा जातिये ॥ जौ गहेर हे अस्थान ॥
॥ १२३ ॥ त्रिया रूपहि देषिकरि ॥ जौ उगत उर जागि ॥ तौ लौं तुरसी काच मन ॥
बूधो न बिषयादाग ॥ १२४ ॥ त्रिया रूपहि देषिकरि ॥ जौ कब करई गव
न ॥ तौ लौं तुरसी काच मन ॥ परपक क है कवन ॥ १२५ ॥ परपक मन कौ
जातिये ॥ कौं पईये सुध सार ॥ तुरसी बिषे विकार कौं ॥ बाले नही लागर
॥ १२६ ॥ परपक मन ही उपजे ॥ अहं बिषे की कोर ॥ तुरसी रमितारं मस्यो ॥
॥ १२७ ॥ होइ रसा चंद्रव कोर ॥ १२८ ॥ तौ पई ॥ जावत असापरिपक मन ॥ तु
रसी होइ तरह ईतन ॥ तावत मन प्रतीति धौं कोइ ॥ करै सुन वज्र बूडे सोइ
॥ १२९ ॥ यामन कोइ है जसुतावा ॥ उर धेलेत अरध कौं जाइ ॥ मानै नही काहं की
संक ॥ निरनै बिषे तजै निसंक ॥ १३० ॥ साबी ॥ तुरसी कोटि वात की एक ही
कहौं तोहि मन नाइ ॥ जौ चाहे प्रकृ कोइ रस ॥ तौ उर मधि थिर होइ आइ ॥ १३१
उर मधि सार गंम कौं ॥ बाहजि बाजी काम ॥ तुरसी बाहजि बिसरि कौं उ
र मधि करि आरंम ॥ १३२ ॥ नांम आलंबन विनां मन ॥ उधे कैं अलसाइ ॥
कैं तुरसी क हौं उ विचले ॥ ये अस थिर रसा न जाइ ॥ १३३ ॥ तुरसी क बहं जा
इ आका समन ॥ क बहं पता लै जाइ ॥ क बहं न मै दि सौं रिसा ॥ ये उर आव
त अलसाइ ॥ १३४ ॥ उर आवत इह अंध मन ॥ आलस करत अनेक ॥ तुरसी
बाहरि न मन कौं ॥ अंब रिपारै ठेक ॥ १३५ ॥ सकल सिधिया मन मै ॥ जौ उर अ
स थिर होइ ॥ तुरसी उर अस थिर विनां ॥ कौडी कान ही सोइ ॥ १३६ ॥ कौडी हं
सर नरिन ही ॥ अस थिर ता विन मन ॥ तुरसी उर अस्थिर रहै ॥ तौ है अमो
ल रतन ॥ १३७ ॥ कायक वायक करम कौं ॥ जीते गाजन सोइ ॥ तुरसी जौ या
मन कैं ॥ कैंरे लाग होइ ॥ १३८ ॥ जौ उगते मन कैं लषे ॥ लषि राषे मन मां हि ॥ तु
रसी चेतनि पुरुष सो ॥ नव जवन न मै नां हि ॥ १३९ ॥ तुरसी चेतन राषे मन कैं

कायागठमां हि ॥ अचेतनि बहे बहे फिरे ॥ जहां जहां मततहां जां हि ॥ १२ ॥
 जति मन हीन जानई ॥ जातैं जब लगे जाइ ॥ तुरसी तब उलटावई ॥ कति प
 नथाइ ॥ १३० ॥ जहां जाइ जान न देतहां ॥ विविदि मन ले फेरि ॥ तुरसी म
 वेतनि सो ॥ त्रैसैं रषे घेरि ॥ १३१ ॥ उठे हि मन कौ लषै ॥ लषि रषे तहां गे
 तुरसी या त्रिय लोक सौं ॥ उतम चेतन सोइ ॥ १३२ ॥ आदि अति मघि लौर
 सा न धान इक तारा ॥ तुरसी चलन न देम तहि ॥ सो वेतन निज सारा ॥ १३
 तन के सुषत जिमन कौ ॥ अल वि अघै उर मां हि ॥ तुरसी हरि नाइ ला म
 दि ॥ तौ सिधिमैं संसानां हि ॥ १३३ ॥ पंग होइ मन तन महि ॥ गुण इंद्र बि स
 राइ ॥ तुरसी तबरि दकं बल मों ॥ परम जोति दरसाइ ॥ १३४ ॥ मन की मूरि ष
 तामि टै ॥ भरम गलित होइ जाइ ॥ तुरसी तब या उर मां ही ॥ आत्म उदी क
 राइ ॥ १३५ ॥ सब साधन मिलि यों कसौ ॥ फुनिक है वेद पुरां न ॥ तुरसी मन रि प
 जीतिकें ॥ नजिये पद निरबान ॥ १३६ ॥ कांन यो तन थिर बसिकें ॥ धरै जुहर
 की धांता उर और ही आलंबन करै ॥ तुरसी मन अज्ञान ॥ १३७ ॥ चौ पई ॥
 पक लाइ बन बै गै धांतां ॥ मन बजार में उदि मगानां ॥ विधि विधिका बज
 सो दा करै ॥ ताकी सठ सुधि हूं न धरै ॥ १३८ ॥ जाकी बूटि गइ उर मनी ॥ होइ ग
 यो मन फे लाव ॥ तुरसी ताम ति हीन कों ॥ बल न न यो फिराव ॥ १३९ ॥ पसरै म
 व कों सम द्विबौ ॥ पी बें डल न होइ ॥ तातैं अब हूटि ग राषीये ॥ तुरसी घट
 मों गोइ ॥ १४० ॥ चौ पई ॥ तुरसी जोर बरी जो अनां ॥ तौ मन मुगध उपड हगै
 तातैं सनै सनै उलटावै ॥ सनै सनै मन बसि होइ आवै ॥ १४१ ॥ साषी ॥ तुरसी
 जोर बरी मन बसि करै ॥ जगति न जानै कीइ ॥ त्रौं धाकुं न उरक मों ॥ कै सैं बूडे
 सोइ ॥ १४२ ॥ जौं जौं तरहा दा बिये ॥ त्यों त्यों उठरै सोइ ॥ तुरसी जोग जगति
 बिना ॥ यद्गति मन की जोइ ॥ १४३ ॥ जगति जगति मन थिर रहै ॥ अजुग
 ति बिष रि जाइ ॥ तुरसी सब साधू कहै ॥ यद्गति कि उपाइ ॥ १४४ ॥ चि
 पई ॥ तातैं जोगी जगति समावै ॥ सनै सनै मन कूं उलटावै ॥ तुरसी सनै सनै

तावतजदरसनरअरुनारी

हमनबसिहोइ जोरिजीत्यादेष्वाकोइ॥१४८॥साषी॥मनैसनैकोष्वाकहे
जोरवरीकोनाहि॥जोरवरीआवेनही॥तुरसीमनतनमोहि॥१४९॥जबमन
थिरहोइतनमही॥आसायासमिठाइ॥तुरसीतबकनतरूनहोइ॥मनबू
ढाहोइजाइ॥१४८॥जुस्त्रिचमै जावतमनतनमैरहै॥तावतहीजुसमाधि
जबतनतजिवाहरिचमै॥तबहीजांनिय्याधि॥१४९॥तनमैरहैतावतम
नसिधगोरषसमान॥तुरसीदतअवधूतयह॥जोरुणारहैरिदथात॥
१५०॥मनजीत्यागोरषसोई॥मनजीत्यासोईदत॥मनजीत्याआपेआपे
है॥तुरसीत्रिचुववपति॥१५१॥मनहीकेसंकल्पते॥जातअईहोइआइ
तुरसीसोसंकल्पमिटे॥जगतबीनहोइजाइ॥१५२॥वैपई॥जावतजी
वेमनविकारी॥तुरसीवरनारीबिलीमान॥जबमनमैरिमिटेअतिमान
॥१५३॥साषी॥जावतमनमैकल्पना॥तावतजगदरसाइ॥तुरसीजगद
रसेततव॥जबमनवामरिजाइ॥१५४॥जावतयंचैनतनमो॥तुरसीमन
कोवेग॥तावतजोगीजनको॥अवौपहरउदेग॥१५५॥उगतवेगगिहन
ईयलो॥मनकोतनहिंसमार॥तुरसीथनिबोतासको॥कभिनषांडेकीधा
र॥१५६॥जाकोत्रियवातेचलत॥उगतमनहरियाइ॥तुरसीसोकैसैटिके
जबपतछिधकाहोइआइ॥१५७॥तुरसीअजितमनकी॥करियेनापरती
ति॥त्रियेवचनसुनिबहिवले॥ज्यौंजलबारूतीति॥१५८॥कघाईजौलो
जुयह॥द्वैयामनकैसाहि॥तावतकाचकथीरमन॥तुरसीकंचननाहि॥
१५९॥कंचनमईमनजानितव॥जबत्रियकेविषबैन॥इराजीकरिना
सकै॥अरुमधिनिदैननैम॥१६०॥नैतबैनआदिजुसकल॥जितेकत्रियवि
षवान॥तुरसीमधितिदैनही॥तबमनयहपकजांनि॥१६१॥तुरसीतथा
पिमनयह॥अैसारूपकहोइआइ॥तऊताहिनधीजिये॥ककतालीहोइ
जाई॥१६२॥मनधरमीताकेधरम॥संकलविकल्पहोइ॥तुरसीजांमनम
रनको॥हैअंकूरजुसोइ॥१६३॥मनबीजअंकूरमधि॥मनकैउनैविकार

तुरसी तास्यो उदित होश अधिल लोक ससार ॥ १६४ ॥ तुरसी सुरतर अस्वर स
 वा सिधसाधिक सुनिसोशा संकलप राजा सबनिका जावत ज्ञान न होश ॥
 १६५ ॥ संकल्प स्यो संसार सब ॥ सुरतर अस्वर अनंत ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश लो ॥
 तुरसी उदैनु कंत ॥ १६६ ॥ संकलप विकलप जावलगा ॥ तावत है मन सोश ॥
 तुरसी ये बिलो मान होहि ॥ तब मन मूल जोश ॥ १६७ ॥ तुरसी सब कामूल मन
 मन ही स्यो सब होश ॥ मन बिना करि तां सको ॥ कारि जक बूजूकोश ॥ १६८ ॥ ये
 क कहै काया करै ॥ मन का करै नु सोश ॥ तुरसी ग्रहनि हवा जु निजा ॥ सोमनि
 नावै कोश ॥ १६९ ॥ काया ही उदिम करै ॥ तब का हेन करा ॥ तुरसी हे सगव
 न करै ॥ काया षति पौटाश ॥ १७० ॥ जो सुबु करै समन करै ॥ तन का कीया
 न होश ॥ तुरसी तन उदिम करै ॥ तौ देषो मृतक जोश ॥ १७१ ॥ तौ मतहि कौ ॥
 हिरा थियो ॥ मन ली जे उलटाश ॥ मन ही कौ बंद दी जियो ॥ तब तन कऊन
 जंश ॥ १७२ ॥ मन वित तन करि नां सको उदिम येक लगारा ॥ तुरसी तन वि
 त मन हू नये ॥ मन सां लडू अया ॥ १७३ ॥ उदिम उने संजो गते ॥ सुअ अस्
 न सब होश ॥ तुरसी दो ऊथ फित नये ॥ उदिम करै न कोश ॥ १७४ ॥ करत स
 ब उदिम नको ॥ तुरसी है ग्रह मन ॥ तापि छै लाग्यो फिरो ॥ पवन पात लो तन
 ॥ १७५ ॥ मत कारन कारि जजु तन ॥ तन मई सब संसार ॥ तुरसी डि छि जु दे
 थियो ॥ सुहे मन को बिस्तार ॥ १७६ ॥ तुरसी होश या मन को ॥ प्रतिलो म परि
 णमा ॥ सकल शास्त्रनिको है ॥ सार न्तव विप्रो मा ॥ १७७ ॥ चौपई ॥ तबे र
 कंवल लो उलटा आवे ॥ अरध सी सउरध पाइ करावै ॥ तुरसी जब त्रै सा म
 न होश ॥ तब आत्म सुष बिल सै सोइ ॥ १७८ ॥ सायी ॥ तुरसी होश या मन के
 अरध सी सउरध पाइ ॥ त्रै सै तन में तप करै ॥ तौ नै टै त्रि चतु नराश ॥ १७९ ॥
 तन बत में मन तप करै ॥ तजि इंद्रिन को संग ॥ तुरसी परसे रंग को ॥ फि रि
 होइ रंग म हिरंगा ॥ १८० ॥ अंतरि प्रतिम मन करि ॥ बाह जिबु धि वि सग
 श ॥ तुरसी दाद सकंवल में ॥ परमात्म पद ध्याय ॥ १८१ ॥ अंतरि प्रतिम मन

नकरि॥ तानि प्रकृति सब आनि॥ तुरसी धृति गहि ध्यान धरि॥ परमात्मा पि ब्र
 नि॥ १८२॥ अंतराति मुषमन कौ॥ आदि अति जो होइ॥ तौ तुरसी पद पद हि
 मिलि॥ पद स रूप होइ सोइ॥ १८३॥ तुरसी साधक है सास्त्र कहे॥ सुमृति ह
 कहे सोइ॥ अंतराति मुषमन होइ॥ तौ सहजे सब सिधि होइ॥ १८४॥ तुर
 सी सब मत माही सारयह॥ मन जीतन कौ सोइ॥ सांन जो गबै राग स्यौ॥
 बल टत होइ सु होइ॥ १८५॥ तौ पर॥ तुरसी उलटत उलटत यह मन नाइ
 येक दिना पि गुल होइ जाइ॥ इहै जांनि अस्या सजयेह॥ बिनत बिसारे
 अयती देह॥ १८६॥ सायी॥ बिन बिन यह मन अटकै कौ॥ तन में आनि ब
 साइ तुरसी विचुवत नाथ स्यौ॥ सनै सनै लै लाइ॥ सितारा सिलौ मतर है
 सदा स्थिर तन मां हि॥ तौ तुरसी पिषे तुरी॥ त्रिय अवस्था बिसो हि॥ १८७॥
 जोई जोई तरंग उवैया मन में॥ सी उलटी उलटावै॥ सांघिसी विमन की निर
 धन लौ॥ परमें आनि बसावै॥ सोई साधिक सिध होइ सही स्यौ॥ या करनी म
 न लावै॥ तुरसी उलघि जाइ त्रिगुन कौ॥ निरगुन मां हि संमावै॥ १८८॥ कोटि
 क करती करि जु कौ॥ बैग निरनै होइ॥ तुरसी जिन मन उलटि कै॥ राष्या घट
 में गौइ॥ १८९॥ एक अहंकी कौ कहै॥ कोटि अहं मिटि जां हि॥ तुरसी जी
 मन उलटि कै॥ रत होइ हरि पद मां हि॥ १९०॥ मन कारत कारि जु मन॥ म
 न ही डारन मूर॥ तुरसी हास मन बसि कीये॥ मिटे जनम अं कूर॥ १९१॥ जे
 यई॥ पंचतत गुन तीनि पसार॥ जो क बुद्धि हि मुहि विस्तार॥ तुरसी सो सब म
 न प्रवांनि॥ मन बिन औ रनइ जा जांनि॥ १९२॥ मन मन सब कोऊ कहै॥ पे
 मन मरम कोऊ बिरलाल है॥ तुरसी संपूरन मन जांने॥ तांही स्यौं मे ए मन
 मांने॥ १९३॥ संपूरन मन जांन नहार॥ ते सानी बिरला संसार॥ तुरसी
 कहन सुनन के सोइ॥ तानी अनंत जुग में जोइ॥ १९४॥ सायी॥ तुरसी
 बडंत नांति मन बरनिया॥ बुधि विस्तार पाइ॥ अब घाली सौं सेर मन
 बडंत स्यौं क हौं सुनाई॥ १९५॥ तौ पर॥ पिरथी आप आनि फुनि बाई॥

आकाश आदियां चैततवार्शः। फुनिपंचनकी प्रकृतिपचीसा। बरनिसुंन
 ऊं बिसवावीस ॥ १९७ ॥ साधी ॥ चांभरोमनाडी अस्सापंचमसां सहुंसोइ
 तुरसी प्रिथी प्रकृतिये ॥ बूरे विरलाकोइ ॥ १९८ ॥ (वैपई) लालमुत्रप्र
 खेदजुजांनि ॥ सकलसुमेवसहतिपरवानि ॥ तुरसी आयप्रकृतिये कही
 इनजति सोजोगीसही ॥ १९९ ॥ साधी ॥ आलसंनिडाक्षत्रिषापंचमको
 धहुंजांनि ॥ तुरसी वैजप्रकृतिये ॥ उपजावनअसांत ॥ २०० ॥ राहेतजेपुनिले
 बलौ ॥ बौलैगवनकराइ ॥ तुरसी बाइप्रकृतिये ॥ संतकहैसमसाइ ॥ २०१ ॥
 ॥ चौपई ॥ रागदोषमोहफुनिमाया ॥ लजालैजुबसैएकाया ॥ एपंचौनिज
 तनकेनाग ॥ तुरसी संगपारनवैराग ॥ २०२ ॥ अबतवनागसुनौहगुनती
 नि ॥ सतगुरकहैक्रियाकरिनिनि ॥ तुरसी जोइवनवौंतजोने ॥ सोशंनी
 काहेनमनमांने ॥ २०३ ॥ साधी ॥ पुलकप्रथममनबंधहीये ॥ तपतिअति
 तिअस्कि ॥ सीतलसकचसुबंधता ॥ तुरसी विरलाकोऊबूजि ॥ २०४ ॥
 सोरगा ॥ तुरसी गुनप्रकृतिनवतीस ॥ बरनिसुताएविवाधिके ॥ मनक्र
 मभवतसहीस ॥ तामधिजोतिचालीसई ॥ २०५ ॥ साधी ॥ यहचालीसौंसेर
 मना ॥ जगतिजनायासोई ॥ तुरसी जोयाबसिकरी ॥ स्वजोथासोतलहोइ ॥ २०६ ॥
 तुरसी जोथासोतलहोइसही ॥ जिनअैसाकछकीना ॥ संपूरनमनजीति
 के ॥ साअमनमेंलीना ॥ २०७ ॥ सबकरियामनको ॥ पवनधारनाधांन ॥ तुर
 सी जोमनबसिनया ॥ लौकरनैरहातआन ॥ २०८ ॥ नदीयाजलतौलींन
 ले ॥ जोलींतसकेसमाइ ॥ तुरसी मिलैसुबसिधुकीं ॥ तोहलनचलनथ
 किजाइ ॥ २०९ ॥ मनकी गईअस्थहा ॥ तनकी मिठीतपति ॥ तुरसी तपसा
 धवकी ॥ तबकी करिमरेषपति ॥ २१० ॥ तुरसी चौषदितबलगसाईये ॥
 जबलगतनमेंऐगा ॥ ऐगामिठीतनजकचई ॥ तबतयोसंपूरनजोगा ॥
 ॥ २११ ॥ ११८ ॥ अथस्त्रिमारगकोपरिकरनः ॥ १८ ॥ तुरसी सारापीव
 को ॥ कोकरियायोजाइ ॥ बडेबडेमुनियरषपिरहे ॥ करिकरि कोटिया

१२। तुरसीमारगपीवकौ ज्योपेडीआकास। घुरवोजपईयेनही। महाअ
 गहनगतितास। २। तुरसीमारगपीवकौ। कीनहूँतेअतिनीन। पावनटी
 किहैपंचके। पंडुचिनसकईतीनि। ३। तुरसीमारगपीवकौ। अतिहामं
 डेधारा। चितगदिचलेसुपडुचिये। औररहेउरवार। ४। जोगीजंगमतप
 सी। पीरअवलीयादेव। तुरसीमघपावेनही। धाकेकरतनयेव। ५। अ
 तिस्सिमअतिहीअगत। अतिहीअगहनसोइ। तुरसीसमरथगुर
 विना। याइवेसकतनकोइ। ६। सृष्टिममारिगमोठिकौ। महासुडहक
 रआहि। विनहरिगुरकीक्रिया। विना। कोऊनपावेताहि। ७। तुरसीमार
 गमोठिकौ। हेउरमोहीसोइ। बाहरिचमतनपाईये। कोठिकरैजोकोइ
 । ८। चौपडी। जबउलटाउरमोहीआवे। तबतलतामघकीसुधिपावे।
 तुरसीउलटेविनाजुसोइ। कोठिरहेषपिषवरिनकोइ। ९। साषी। त
 रसीग्रहसमसीजु। जिनजेतयेजगतस्यौं। अजान। जिहंगूगेहोरहे। व
 हरेहीइगयेकान। १०। तुरसीअदस्तवातयह। पंथविनानिजसोइ।
 धरस्यौंअधरहोइअनुसरे। सुधियावैतलसोइ। ११। तुरसीउलटापंथय
 ह। सूधापंथयेनाही। सूधेचलेसुबहिगये। विषयानंदिमोही। १२। त
 रसीपठिमदिसाजुअनुसरे। पूरवपीतिनिकारि। पूरवपलेजाईये। १३। वि
 लेहिनिधिनारि। १४। चौपडी। पंचविषेपंचौंनईनारी। इनधौंरहसवन
 कीमारी। इनहित्यागिअलेउरगये। तुरसीपरसहूपतेतये। १५। साषी।
 डलनचालकबीरकी। डलनगोरषज्ञान। डलनरहणीदतकी। डलनपद
 निरबान। १६। डलनपालनगुरसबद। डलनदहबौकाम। डलनमनको
 जीतिबौ। डलनमिलिबौराम। १७। डलनसंशतिसाधकी। डलनसत
 गुरसेव। डलनरहिबौरकरस। डलनअलषअतेव। १८। संतककीग।
 तिडलनहै। गहीनकाहूँजाइ। सीसदेसाईतजे। सोजननलवहरइ।
 १९। तुरसीचलवाअवलमैं। पलऊनपावेजान। अचलहिनलतहोप
 ऊंचई। वामघकौअहज्ञान। २०।

चलत अचल नहियाई ॥ अचल इते हरि हरि ॥ चल अचल दो उपर है सो
 पद पावे पूरि ॥ २० ॥ तुरसी अचल चलाइ लै ॥ चलता कौं गहि घेरि ॥ तव स
 व पावे आत्मा ॥ बूटि जाइ अरजे रि ॥ २१ ॥ चलती प्रकृति ॥ चल करि ॥ अप
 ने ही उर में आशा तुरसी अचल आलसी मना ॥ ताहि उर धको चलाई ॥ २२ ॥ उ
 र धे चले सु हरि मिले ॥ थिर जु नये थिति मांदि ॥ तुरसी दास सुष विलसई ॥ क
 बहु बिबुरे तांदि ॥ २३ ॥ अरध उर ध उने पंथ का ॥ तुरसी इहौ बिचारा ॥ उर धे
 चले सु हरि मिले ॥ अरध माया मंजारा ॥ २४ ॥ अरध उर ध उने पंथ मधि ॥ त
 सी उत मसी जाहि गहे मन चितकी ॥ चंचल चित थिर होइ ॥ २५ ॥ थिर ते
 गये जु गिग न घरि ॥ पके वेपद अस्थाना ॥ तुरसी निस दिन चलत है ॥ पेज हंकी
 तहां जिहां ॥ २६ ॥ थिर मारग अस न प्रकौं ॥ जहां वसे नै नास ॥ तुरसी आने द
 बरतई ॥ बहु रति बारह मांस ॥ २७ ॥ उ बट चले सु जाइ मिले ॥ परम जो तिसंजारा ॥
 तुरसी सुधे पंथ चलत ॥ लूटि लीया संसार ॥ २८ ॥ सुधा पंथ या जगतं का ॥ ताहि
 अति तज उ बट जांनि ॥ तुरसी संत नित्या गिया ॥ और हू लीया प्रवानि ॥ २९ ॥
 ॥ वीपई ॥ जाहि सो बिमघ यह जग कहै ॥ ताहि बसे की संत न गहै ॥ तुरसी बसे
 की उर आइ ॥ पेग होइ पद मेर है समाइ ॥ ३० ॥ साखी ॥ योगे तहां न लपके चई
 सपंग न पावे जाना ॥ तुरसी असा देस वडा ॥ बसे न बिबुरे प्रांन ॥ ३१ ॥ वतुर न को
 ऊ करि स कौ पल न रि तहां प्रबेसा ॥ तुरसी एरो बावरो ॥ तिन कं है व हरे सा ॥ ३२ ॥
 तुरसी चित राई विततौ बिसरि ॥ जान पनौ देह सागि ॥ या जल में बूडे घता ॥
 लखिन सके यहु आगि ॥ ३३ ॥ बडे मां नाह विलास मै ॥ सा निमानि सुष सोइ ॥
 तुरसी परत छिंदे यहा ॥ समजिन सक्या कोइ ॥ तुरसी काटि जु फंदे
 गया गगन घर सोइ ॥ अलख रूप में रलि मिला ॥ बडरिन आवन हीइ ॥
 ॥ ३४ ॥ अथ सखि मजत मको पार करन ॥ २० ॥ तुरसी संकलप जनम है ॥ वि
 कत्य मरन प्रदान ॥ जनम मरन ये हेम कथा ॥ और कहौ कौऊ आन ॥ १ ॥ ये
 पई ॥ तुरसी मन संकलप बसि होइ ॥ नां नां रूप निहारे सोइ ॥ जात सो व

तस्यपनमंजरि तहांतहां चमैविविधितनधारि २ यहदेवोमनकीगतिमो
 ३ कबहुंकीरीकुंजरहोइ कबहुंविविधिरूपविस्तारै अंतिसूक्ष्मना
 नांतनधारै ३ घटहीमैघटरविबौकरै जातैधरैसंवारैधरै यहदेवोमन
 कोबोहार कौंउतरिवोयास्योपार ॥४॥ ॥४॥ यहमनआपहिनारिहोइ
 आपदिहोइपुरुष सिद्धसकतीकोसाजितन आपआपस्योसुषा ॥५॥ कब
 हुंस्यालसूकरकबै कबहुंसागमृगहोइ कबहुंदेवसरीरसजि स्वरासु
 घरसुगतैसोइ ॥६॥ कबहुंराजारंकहोइ कबहुंसाहसुनिचौर नांनारंगव
 दल्योकरै यहमननिसअरुत्तोर ॥७॥ नांनोविधिकेसाजितन सूक्ष्मसूक्ष्म
 मसोइ बेरबेरजामेमरै मनमायाबसिहोइ ॥८॥ एकदिनमाहैबहुजनम ध
 रैसुगधयहमन तरसीधरिधरिफिरिमरै करिकरिस्सुक्ष्मत्त ॥९॥ जोप
 इकदिनमैआगनितअवतार ॥१०॥ धरैमरैफुनिफुनिहोइबार तरसीइहइष
 विषमबलाइ आपआपकौलेयउपाइ ॥११॥ ॥११॥ सूक्ष्ममनकेतननि
 को जानतनाहीकोइ असधूलजामनमरनस्यो लागिरहीसबलीइ ॥
 १२॥ अस्त्वितिसुनिमनउलहै निदांसुनिमुजाइ तरसीयहैजामनमरन फु
 निफुनितनहोइआइ ॥१३॥ मानमयेसूवाजुमन बकरिजीवैइहिदेइ ओसा
 नैफिरिकरिमरै देवोउदबतियेह ॥१४॥ आवागवतहोइतनमही ज्योजल
 मांऊवरंग एकउपजेएकबिनसही मनउरसीअसंग ॥१५॥ तरसीआत्मधेत
 वजि जहोजहोकरैपीति तहांतहांजामनमरन देवोयहविपरीति ॥१६॥
 एअवतारजुमनके समकैकोऊसुचेत अचेतनिजातेनही कहोकहोगा
 वनकरैत ॥१७॥ असूलजामनमरनको तबहोइहैनलनांस जबमनसू
 क्ष्मसाजितन करैतसोगबिलास ॥१८॥ तरसीसूक्ष्ममनसजेतही यहमन
 स्वप्नहंसोइ तबअसूलजामनमरन बकरिनकबहुंहोइ ॥१९॥ इहैजोगइहै
 सांघिमत इहैआतिनिहैकोम तरसीसूक्ष्मजामनमरन जीतिहोइरति
 रोम ॥२०॥ जबमनकेसूक्ष्मजनम होहिनियठनिरमूख तरसीतबकौघोप
 रै लषचौरसीधूल ॥२१॥ चौपई

तुरसी जनम मरन को रूय है सकल पविकल पत्रकूर। हाहि मिते विनियह चम
 बाधि होइर ही अति ही ज्ञ असाधि ॥ २५ ॥ साधी ॥ तुरसी अनिष्ट वस्तु कीं ॥ इष्ट मा
 निले सो ज्ञ संकल पविकल पतपतियह। जॉने विरला को ज्ञ ॥ २६ ॥ बचन जॉन उ
 तपन होइ ॥ ज्यो मरी विको पाना ॥ तुरसी बस्त मिथ्या तहां ॥ यह विकल पपर घांनि
 ॥ २७ ॥ कोटि तप स्य कर कुंको का रू मंडल पर आ ज्ञ संकल पविकल पमिते वि
 ना कारि ज सरे न काइ ॥ २८ ॥ तुरसी संकल पमिते जनम मिते ॥ विकल पमिते
 मरना ॥ यह वेदन यह वो यदी ॥ कोऊ संम के साधू जंवा ॥ २९ ॥ तुरसी मिते ज्ञान
 स्यो ॥ संकल पविकल पयोग ॥ कै मिते जोगा न्या सस्यो ॥ और नही संजोगा के
 मिते ब्रक त बैराग स्यो ॥ क हरिन गतिक राइ ॥ और मिते न्यारोग को ॥ नाहि
 न आन उपाइ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ अथ माया की पर करण ॥ १८ ॥ तुरसी माया ब्रह्म की
 के बैठी अति रतिरी नही जाई ॥ बडे बडे महारिषि मुनी ॥ करि करि थके उपाइ
 ॥ तुरसी माया ब्रह्म की ॥ प्रमित पारन हिको ॥ थहे थ्याहा आवन ही लंघी जा
 इत सोइ ॥ तुरसी माया ब्रह्म की ॥ द्वे बैठी करताराई ॥ पूर होइ आडी नदी क
 रि चम कोटि प हारा ॥ तुरसी माया ब्रह्म की ॥ अति विवित्र हे सोइ ॥ ताकी
 विधिरचना जूको पारन पावै कोइ ॥ तुरसी जहां ना ही हे होइ तहां हे त
 हो ना ही होइ ॥ यह अचि रज माया जूको दिषो अद रूत सोइ ॥ १५ ॥ चौ पई ॥ वि
 ॥ या को ॥ अबिद्या रसावै ॥ अबिद्या मोहि मत लपटावे ॥ तुरसी ऐसी माया सो
 इता हि उ लंघन के सैं होइ ॥ ब्रह्मा रूं स्यो की बड ज्ञानी ॥ चारि बेद मुष उ चरी वा
 नी ॥ तिन हूं को मन चित चुरायो ॥ सर अ ब्रसर क बु सु धिन आयो ॥ ७ ॥ तुरसी इ
 सी अपर बल माया ॥ सुर तर असुर सकल च माया ॥ का हूं की छिन सकन आ
 ने ॥ ती निलोक तिन का करि मने ॥ ८ ॥ साधी ॥ जैसी ही माया पंला ते सो हा चं
 चल मना ॥ तुरसी उं नै रियन विवि ॥ क्वो निरव ई ज्ञ जना ॥ ए न ही निरवा हया
 जीव को ॥ बिन सीध के सहा ॥ तुरसी माया सरयनी ॥ घेरि रही चहुं पाइ ॥ ९
 तुरसी माया प्रबल राम की ॥ क्वो ही न जी ती जाइ ॥ मर तैं हूं को जिवाइ लो ॥ काम

च
 ह

कटाच्छिदिषा ॥ ११ ॥ मायाके अंग अनंत है ॥ वारपार नही कोइ ॥ तुरसी गुरगो ॥
 बिंदविना ॥ लंघी जाइत सोइ ॥ १२ ॥ प्रबल मायाकी प्रकृति ताओ योय हजीव ॥ तुर
 सी निरबल होइ रघा ॥ सकै संनारि नयीव ॥ १३ ॥ माया मुनि परबसिकीये ॥ ज
 गुवपुण किसमांहि ॥ ब्रह्मा बिष्णु महेश लौ ॥ तिन हूं बंधी जु नहि ॥ १४ ॥ मायाषे ल
 अगाध है ॥ लष्पो नका हूं जाइ ॥ तुरसी धनिवै संत जंत ॥ जेर हेरो मल्यौ लाइ ॥ १५ ॥ स
 हामुनि जनको मन है ॥ माया नुस्की लाइ ॥ तुरसी जगकी कौ कहै ॥ रघा तिया
 घर छाइ ॥ १६ ॥ मागे हूं कौ नौरवै ॥ हूं से हूं लेइ मनाय ॥ तुरसी ते नल उबरे ॥ जेर
 हे हरि चरनौ लपराये ॥ १७ ॥ तुरसी माया ब्रह्मकी ॥ करि बैठी बपु दोइ ॥ विया
 पुरुष होइ परस पर ॥ सब जुग मोघा सोइ ॥ १८ ॥ केऊ त्रिया होइ सांगी लीये ॥
 काम कटाच्छिदिषा ॥ केऊ कनक करि बसिकीये ॥ अंतरि लो जगपाइ ॥ १९ ॥
 मायाके अंग अनंत है ॥ तामै उने ज जोइ ॥ तुरसी परबत होइ रदे ॥ जीवसी ववि
 चिसोइ ॥ २० ॥ उने न लंघे सो अवसि ॥ सदसुषमां हि समाइ ॥ तुरसी उने निबसि प
 स्था ॥ सो नाना जो निफिराइ ॥ २१ ॥ जो कब हूं कामनि तजे ॥ तौ कनक तजानही जाइ
 तुरसी कनक हूं परहस्या ॥ तौ मानि रहै उर छाइ ॥ २२ ॥ चौपई ॥ जे जे जोनी
 संकट आइये ॥ अं प्रति तातिके ते नरमाये ॥ तुरसी उबारि सक्या नकोइ ॥ बिन ग
 रगो बिंद कृपा सोइ ॥ २३ ॥ रासी ॥ घर घरनी सब त्यागिकें ॥ लेजु पाये बैराग ॥
 तुरसी माया मोहिकें ॥ तिन हूं लाया दाग ॥ २४ ॥ षट्हरसन षट्स्वप्न स्यौ ॥ काम
 करि बंधे ॥ तुरसी माया मोहनी ॥ करि मल्ले आंधे ॥ २५ ॥ आंधे कीये अनंत मु
 नि ॥ इह माया तेरी ॥ तुरसी दास करुना करै ॥ राषीपति मेरी ॥ २६ ॥ यति राषीप
 नुके आवे ॥ मै सरनांगति तोर ॥ माया आसनि वारिकें ॥ चरन बास दे मोर ॥ २७ ॥
 म तुरसी तुमही आहि प्रच ॥ हंम से अधमन आन ॥ माया नवजल बूडितो ॥ क
 हो कृपानिधान ॥ २८ ॥ चौपई ॥ मायाके आगे मुनि हारे ॥ औरपतंग जीवक
 हां बिचारे ॥ जाकौ तुम पनु तये सहाय ॥ सो नलै उबरे सरनाय ॥ २९ ॥ आसा होइ
 आडी आवै ॥ त्रिष्णो होइ तरंग उपजावे ॥ तुरसी आसा त्रिष्णो होइ ॥ बंडत कबंधन

परिसोड ॥ ३० ॥ साधी ॥ आसाके अधीन रातिन आरुनको शत्रुसी मानमा
 हतबिना जावै सारी लोडा ॥ ३१ ॥ तुरसीजे आसाके दास है ॥ ते सब ॥ जुगुके दास
 आसात जिअन आसा जये ॥ त्रिनुवबंदत तासा ॥ ३२ ॥ आसास्यो अतरसतये
 लगी निराससिहाना ॥ पंचसयी बिलषी ॥ ३३ ॥ तवस चपायो प्राना ॥ ३४ ॥ तुरसीजे
 न आसा षडनकी यो ॥ मनसा करी बहारा ॥ तिनको जस प्रगटि हो ॥ तीनों लो
 कमें गारा ॥ ३५ ॥ तुरसी आसा परहरो ॥ त्रिंशको द्योदांन ॥ इति सोटे सुनियरगि
 ले हो ते चतुरस्र ज्ञाना ॥ ३६ ॥ तुरसी आसा परहरो ॥ आसा अरि की काय इन
 उर आये सब देहा ॥ ब्रौचै नही लारा ॥ ३७ ॥ तुरसी आसा परहरो ॥ आसा बडौ
 संतापा ॥ निरासा दिठिक रिग है ॥ तामें सुष अमापा ॥ ३८ ॥ तुरसी आसा परह
 रो ॥ त्रिंशको तजिनेहा ॥ तन मन प्रक्तु ॥ अरपिकें ॥ जनम सुफल करिलेहा ॥ ३९
 जावत जोगी जात पुरा ॥ तावतर है निरासा ॥ तुरसी आसा आचरै तो जुगु गुर
 जोगी दासा ॥ ४० ॥ न गति मुक्ति निज ज्ञां वका ॥ तासपलकमें हो ॥ तुरसी
 जब जन संग्रहै ॥ कतक कामनी दोडा ॥ ४१ ॥ कतक कामनी संग्रहै ॥ ग्यांत ध्यांत घ
 टि जाडा ॥ तुरसी जी आत्मा ॥ प्रसुस्यो परे डराडा ॥ ४२ ॥ ब्रौहरे अंगमसु मोहको
 परमसोककी धानि ॥ तुरसी हरिकी रतिक था ॥ सनन देईकांनि ॥ ४३ ॥ मोहवगो
 री जि निलगी ॥ तिन हिनिदत नही ज्ञाना ॥ कछटिकुब ॥ कटि बाडरौ ती चन गु
 रके बांन ॥ ४४ ॥ मोहफांसिमें जेफेये ॥ तिनसद गति सुषनां हि ॥ तुरसी दास ड
 षतो गवै ॥ अष्टबीसकेंसं हि ॥ ४५ ॥ मोहति मरता तनमंदी ॥ बटिर हो अमित अ
 यार ॥ तुरसी दासता अधमको ॥ स्सैन हरिजियारा ॥ ४६ ॥ विषही विषस्यो न
 रिरहो ॥ अमृतकहोसमांश ॥ तुरसी अमृतपीजिये ॥ जो बिंधै उताडा ॥ ४७ ॥ ५
 रबिकी ज्वाला देषिक रिग ॥ मृगजल करि धावंता ॥ तुरसी प्यासमिटेन ही ॥ अमि
 त्रमितन दाहंता ॥ ४८ ॥ तुरसी अविषयानको ॥ त्रिसो जांनि जोगा ॥ अलयस
 षडषको समूहा ॥ जषतन अंधे लोगा ॥ ४९ ॥ कथा कहै कीरतन सुनै ॥ पुनिप
 रमो धे आचा ॥ तुरसी तजेन सुब सुषा ॥ इहै बडौ है रान ॥ ५० ॥ गुरवचनौ बाडे

घनी तुल्यतजी नही जाइ। तुरसी तुल्यतजे विना। बड़ रिलि चिनु गताइ ॥ ५० ॥
 ज्योतिनषे निकानै कीयो। तुल्यतो तुर द्योलाइ। तुरसी दास बरिया नये। ज्योका
 ल्यो लगी जाइ ॥ ५१ ॥ नावे हित स्यो हरि नजो। नावे नजो कचु और। तुरसी सरति
 जहो लगी ॥ पावे गा सोई और ॥ ५२ ॥ जोसन मुख हेइ सर दिसा। तोपे प्रकास
 तुरसी छाया निरषते। छाया ही दरसात ॥ ५३ ॥ माया मोरे तासको। जोचित वे
 कावोर। तुरसी तास चित वे नही ॥ तो जाइ उलटि कर जोरि ॥ ५४ ॥ इंड लोके तें
 रबसी। आई करि बल बंदे। तुरसी सुक स्यावति रघा। गई उलटि पर बंदि ॥
 ५५ ॥ बड़ तपची बसि करनको। बसिन नयासु षदेव। तुरसी बल बल फि
 लिनये। निरफ ल गई सख सेव ॥ ५६ ॥ आरति होइ आई कुंठी। टारतको सु
 निध्यांत। तुरसी सुनत सक के बचन। रघो तरं नामांत ॥ ५७ ॥ जो लो देहन ग
 सनी ॥ तो लोके पत प्रांत। यह रि क व च ग र ग्यां नको। ज्योति देन माया वान
 ॥ ५८ ॥ ज्ञान क व च प हरे विना। प्रांत धरत न ही धार। तुरसी विषम माया तने
 आइ लो गौर तीर ॥ ५९ ॥ बहै सघन घन बूंद लो। माया के बड़ बान। तुरसी
 उबरि बौ क विना। विना वीठ गुर ग्यां न ॥ ६० ॥ प्रांत वीठ न ल अरिये। कै न वि
 ये न ग्यां न। कै सत सत गुरु क्रियाते। और नही बल ब्यान ॥ ६१ ॥ ये क मृग
 स्यो मोह करि। धरि न रथ द्वे देह। तुरसी तिनिकी को तगति। जु करि रहे
 नां नै रहे ॥ ६२ ॥ औपई ॥ तुरसी नां नै न हन मोही। विहले परि निक से नर
 नां ही ॥ माया बसि होइ ग ए विकाइ ॥ प्रांत ध्यान सु धर ही न काइ ॥ ६३ ॥ तुर
 सी ताती सीरी माया ॥ इह माया सब जगत जगया ॥ या माया स्यो नये नु स्यारे
 जनम जीति वे सत सिधारे ॥ ६४ ॥ लाबी ॥ दिष्टि मुष्टि बाजी बनी ॥ नां नो रंग वि
 रंग ॥ तुरसी तामे विमुषनर ॥ होइ रहे जोति पतंग ॥ ६५ ॥ बिसरिन सकई नि
 मष नरि ॥ बाजी को विस्तार ॥ तुरसी दास बिसरे विना ॥ को पावे करतार ॥ ६
 ६ ॥ बाजी गरही बिसारिके ॥ बाजी में नये लीन ॥ तुरसी दासनर अंधरे ॥ अंधक
 माई कीन ॥ ६७ ॥ मिलिये को मिलिये कहा ॥ देखे को कहा ध्यान ॥ अनदेखे स्यो

मिलिरहो। तुरसी बह गुर ग्याना ॥ ६८ ॥ त्यागिपसा गुंवारि ला। मतको ऊपर बाश।
 तुरसी माया और है। जिनि सरं नर पारेया ॥ ६९ ॥ तुरसी माया सन मन में बसे।
 कोऊ लये ततासा। लहरि उगने बिषतनी ॥ वैसी जीव के पासा ॥ ७० ॥ इंद्रा के का
 रलें। माया तनी जु आना। तुरसी आगे सुध धनो। कोऊ पंडु वै संत सुजान ॥ ७१ ॥
 इंद्रा बोरे कारलें। रही सकल दि स पूरि। तुरसी कोऊ न जाइ ॥ सके जहां वे
 तन आने दर ॥ ७२ ॥ चौपरी ॥ सब म अस्थूल होइ य हम माया ॥ विधि वि।
 धिके संसार जु लाया ॥ जन तुरसी अब सा जन कोइ ॥ जिनि मिथ्या करि जात
 सोइ ॥ ७३ ॥ साषी ॥ माया मिथ्या ब्रह्म सति ॥ ब्रह्म सुत ह सुध धीरा ॥ माया त
 रकी स्त्री हरी ॥ छिन इत उत होइ वीरा ॥ ७४ ॥ सदा एकर सतार है। जो तां रूप ध
 रशा ह मां की रति है। दिषो नी के निरताइ ॥ ७५ ॥ तावतनी की सी लगे। जाव
 त ज्ञान ही सा। तुरसी ज्ञान उदे नये। नमसी नो से सोइ ॥ ७६ ॥ चौपरी ॥ तुरसी
 सोवत स्वपतां मां ही ॥ धवया या ता की मिति बोही ॥ ज्ञानो द्विष्टि परे त ही सोइ
 त्रै से इह माया नम जोइ ॥ ७७ ॥ तात मात सुत बंधु नाई ॥ त्रिया स जं न थो र्थ
 री स गाई ॥ तुरसी तहं अग निरु विमां नी ॥ ज्ञानो ता स न दे गये कां नी ॥ ७८ ॥
 तुरसी धनि धनि वी ज्ञानो ॥ जिनि माया त्रै सी करि जा नी ॥ जूधूं वरि के वा दर न
 को छिन क अरै फुनि फटि गये ॥ ७९ ॥ साषी ॥ तुरसी फटि गवे धू वरि ध
 टालें। कां स को ध के को हरा ॥ माया रोइ करि ना क सी ॥ बुधि प्रका सी और
 ॥ ८० ॥ चौपरी ॥ आत्म बुधि प्रका सित नई ॥ माया रज नि अस्त होइ गई ॥ तुर
 सी सो फि रनाई मूरि ॥ र बि बत ज्ञान र छौ उर पूरि ॥ ८१ ॥ साषी ॥ माया क्त
 निर बत नये ॥ इर्यो आत्म ज्ञान ॥ तुरसी आगे रि बके ॥ क हार जनि को मां
 ना ॥ ८२ ॥ चौपरी ॥ र बि ज्ञान र जनी य हम माया ॥ तदे हो त पुर सो जन माया ॥
 तुर सी सो ज्ञान धौं जु कौं न ॥ होइ र हा आत्म आटे लो न ॥ ८३ ॥ साषी ॥ अ
 नलो म माया जु को ॥ पार ग आवे बेरा ॥ तुरसी प्रति लो मी नये ॥ ते संत अ ने द
 अ बेरा ॥ ८४ ॥ अति अंतरित मंत सदा ॥ तुर पर मे ग ल तं बा ॥ तुर सी त हो ने

दितसकै तीबनमायावांत ८५ तुरसीमायाकाकरै तासाधूकोआइ ति
रुंअवस्थाकेपरै जुतरपदर घासमाइ ८६ चौपरी ॥ तुरसीअपनेतर
पदमांही अरसपरसअंतरकबूनाही ॥ दोइरघाज्योआटेवैता ताहिजु
कहौबिबोहैकोन ॥ ८७ ॥ साजी ॥ बिबोहजुकोऊनासकै ॥ अयावसपर
लीन तुरसीयांचौपचिरहै ॥ अरुथकिरहेजुतीन ॥ ८८ ॥ १२३ ॥ अरु
गुणविज्ञानकोपरिकरतः ॥ १२ ॥ तुरसीमायाब्रह्मकी ॥ तास्योगुणत
येतीनि ॥ एकउतममधिमएकै ॥ एककनिष्टजुकीन ॥ १ ॥ त्रिगुनकेत्रियपरब
ने ॥ अरधउरधमधिसोइ ॥ तुरसीसमजैगासही ॥ संतबेबेकीकोइ ॥ २ ॥ अ
सीअपतिअस्थितिफुनिप्रहै ॥ तिहेगुनतिस्योहोइ ॥ असअकरताइनमंही ॥
साबीलौरहैसोइ ॥ ३ ॥ तुरसीगुणस्योगुणप्रवरतिसब ॥ सहजैवलीजुजाइ ॥
जुंचुबकपाषांतस्यो ॥ लोहचपलहोइआइ ॥ ४ ॥ तुरसीजडचुबकजडलो
हजु ॥ अैसेहीजडगुनतीनि ॥ परसपरसंजोगतै ॥ चेतनताईकीन ॥ ५ ॥ जड
पिजडगुणधौंजुयह ॥ आपआपमैआइ ॥ तुरसीमिलिचेतनतये ॥ तऊंचे
तनिसरताइ ॥ ६ ॥ चेतनिबिनांकबुनही ॥ थोथेतुषवतजानि ॥ तुरसीकनव
तहैजदां ॥ चेतनिहीकीज्ञान ॥ ७ ॥ चौपरी ॥ तुरसीजडगुनचेतनतये ॥ ज
बचेतनिकैसरनैगये ॥ चेतनिबिनिकबूहोइनआन ॥ डेरहैअैसेजुपषां
न ॥ ८ ॥ साजी ॥ तुरसीज्यौंवातीतेलजुअगनि ॥ जोवनहारबिनिसोइ ॥ ज
दपिप्रकाससकिहै ॥ तदपिकबुनहोइ ॥ ९ ॥ तुरसीयौंजडगुणये ॥ बि
नचेतनिसनिधान ॥ अतितयंगजुहोइरहे ॥ अछितआपनेपान ॥ १० ॥ त
रसीजदपिसकतिवंतआरसी ॥ तदपिरबिबिननाहि ॥ पावकपकोसे
नही ॥ जडचेतनियोआहि ॥ ११ ॥ निमतकारनब्रह्महै ॥ तास्योयहसंसार ॥
तुरसीउतपनहोतहै ॥ यहनिहचौनिरधार ॥ १२ ॥ ज्यौरबिकैसंपर्कस्यो ॥ ज
गतचेष्टाहोइ ॥ तुरसीअैसेब्रह्मस्यो ॥ उदितहोइयहलोइ ॥ १३ ॥ चौपरी ॥ त
रसीकहोरबिकहोरचितसंसार ॥ ताउहोतकरै ॥ मोहार ॥ यैरबितहंलिपत

नहोशयुननिगुनयोदेवो जोइ ॥२५॥ साधी ॥ तरसी जडवेतनिका ॥ कबू २७
 कबूकीयाविचार ॥ आगोगुनिलिंगवरनकुं निन्ननिन्निविधिप्रकार ॥
 ॥२५॥ वीपई ॥ तिहंगुननिके चित्तनवषांती ॥ जितेयेकजैसीविधिजाती ॥ त
 रसीतास्यो होइयहस्यांता ॥ यहजडयहवेतनितिरवांता ॥२६॥ अथमाताविधा
 त ॥१॥ अंतकरणवहकरण ॥ त्यागित्यागिविधियांता ॥ तरसीउरउलेन
 यो ॥ सतसनावसो जाना ॥ शोकोऊबो ॥ उपावृश ॥ तीऊतबोनउपजाइ ॥ व
 मानामसाविगीयह ॥ उपजेजनकीकाश ॥ नित्यानित्यबंबेकहोइ ॥ बीचि
 कमीनरहाइ तरसीजहांजहांविरतियहा ॥ सीसत्वधरमकहाइ ॥ शरया
 सकलजीवनपरासावहदेमुखजासा ॥ अमानअरुआर्जवता ॥ धीरजरिद
 विसवासा ॥ सुधरमसीलसुदीनता ॥ समिरनस्वोसेस्वासा ॥ तरसीयहसावि
 गधर्मे ॥ अधर्मकरनविनासा ॥ लोगत्यागतपदानयहा ॥ चूतअनेतादेइ
 लजाहूजातो ॥ जयहा ॥ उतपथपंथनहिलेइ ॥ उतमारागअनुसरै ॥ उरधरि
 आत्मश्रेय ॥ तरसीसात्विकधर्मयहा ॥ सोनासुजसविनेया ॥ ५॥ उपाया
 रहीकी ॥ आस्तीकबुधिजासा ॥ संतोषीसीतलचतुर ॥ सुषदाईगुणतासाफ
 लअसंगघटहूअसंग ॥ बिचरैरहितअयासा ॥ तरसीसात्विकाद्वियह
 कोवीदेनिजदस ॥ ५॥ २१ ॥ अथराजसविधान ॥ १ ॥ निश्रागरबसका
 मता ॥ मदमनोरथमाना ॥ तरसीएरजकेगुना ॥ कोऊजातेजावसुजाना ॥
 मदअमदनजानही ॥ सुषहीसुषस्योसनेहा ॥ सावहसममैतही ॥ युनि
 रजकेगुणएहा ॥ अरिमित्रादिजुनेदजहां ॥ मदउत्साहजसपीति ॥ हासि
 वीरजबलउदिम ॥ तरसीयेरजरीति ॥ ३ ॥ जोईजोईकबूउदिमकैरे ॥ सजस
 षतापकेकाज ॥ रोमनगतिजातेनही ॥ रजरुनिलजनिकाज ॥ ५ ॥ अथ
 तामसविधान ॥ ३ ॥ निद्रानयेआलसरिडा ॥ हिंसासोकसंताया ॥ तरसीए
 तामसगुना ॥ उपजावनउरयाय ॥ मिथ्यामोहवियादता ॥ परपीरस्योपीति

दितसकै तीबनमायावांत ॥ ८ ॥ तुरसी मायाकाकरे ॥ तासाधूको आइ ति
हुं अवस्थाकै परै ॥ जु तुरपदर घासमाइ ॥ ९ ॥ चौपडी ॥ तुरसी अपनै तुर
पदमांही ॥ असपरस अंतरक बूनांही ॥ होइर घाज्यो आटे लौं ॥ ताहिज
कहौ विबोहै कौं ॥ १० ॥ सायी ॥ विबोहजुको ऊं नासकै ॥ मयाब्रह्मपर
लीन ॥ तुरसी पांचौं पचिरहै ॥ अरुथकिरहेजु तीन ॥ ११ ॥ १२ ॥ अथ
गुणविनागको परिकर ॥ १२ ॥ १३ ॥ तुरसी मायाब्रह्मकी ॥ तास्यो गुणत
येतनि ॥ एकउतममधिमाएकै ॥ एककनिष्ठजुकीन ॥ १४ ॥ त्रिगुनके त्रियपुरब
ने ॥ अरधउरधमधिसोइ ॥ तुरसी समजै गासही ॥ संतबेबेकीकोइ ॥ १५ ॥ अ
सीअपतिअस्थितिफुनिप्रलै ॥ तिहे गुननिस्योहोइ ॥ ब्रह्मअकरताइनमंही ॥
साबीलौरहैसोइ ॥ १६ ॥ तुरसी गुणस्यो गुणप्रवरतिसव ॥ सहजै वेलीजुजाइ ॥
जुंचुबकपाषांतस्यो ॥ लोहचपलहोइआइ ॥ १७ ॥ तुरसी जडचुबकजडलो
हऊ ॥ अैसेही जडगुनतीनि ॥ परसपरसंजोगतै ॥ चेतनताईकीन ॥ १८ ॥ जड
पिजडगुणधौंजुयह ॥ आपआपमैआइ ॥ तुरसी मिलिचेतनये ॥ तऊंवे
तनिसरनाइ ॥ १९ ॥ चेतनिबिनांकबुनही ॥ थोथेतुषवतजानि ॥ तुरसी कनव
तहैजदां ॥ चेतनिहीकींज्ञान ॥ २० ॥ चौपडी ॥ तुरसी जडगुनचेतनिनये ॥ ज
वचेतनिकैसरनैगये ॥ चेतनिबिनिकबूहोइनआन ॥ डेरहैअैसेजुपधां
न ॥ २१ ॥ सायी ॥ तुरसी ज्यौंवातीतेलजुअगनि ॥ जोवनहारबिनिसोइज
दपिप्रकाससकिहै ॥ तदपिकबुनहोइ ॥ २२ ॥ तुरसी ज्यौंजडगुणये ॥ वि
नचेतनिसनिधान ॥ अतितपंगजुहोइरहे ॥ अखितआपनेपान ॥ २३ ॥ त
रसीजदपिसकतिवंतआरसी ॥ तदपिरविविननाहि ॥ पावकप्रकासे
नही ॥ जडचेतनियोआहि ॥ २४ ॥ निमतकारनब्रह्महै ॥ तास्यो यहसंसार ॥
तुरसीउतपनहोतहै ॥ यहनिहचौनिरधार ॥ २५ ॥ ज्यौरबिकैसंपर्कस्यो ॥ ज
गतचेष्टाहोइ ॥ तुरसीअैसेब्रह्मस्यो ॥ अदितहोइयहलोइ ॥ २६ ॥ चौपडी ॥ त
सीकहोरधिकहोरचितसंसार ॥ ताउदोतकरैबोहारपैरबितहोलिपत

नहोशुननिगुतयोदेधौ जोइ ॥२५॥ साधी ॥ तरसी जइवेतनिका ॥ कबू ॥ १४
 कबूकीयाविचार ॥ आगे गुनलिंगवरनऊं निचमिनिबिबिधिप्रकार ॥
 ॥२५॥ धौपई ॥ तिहूंगुननिके चिह्ननवषांनों ॥ जितेयेकजेसीविधिजाते ॥ त
 रसीतास्यो होइयहस्योना यहजइयहवेतनिरवांता ॥ १६ ॥ अयसालाविधा
 त ॥ ॥ ॥ अंतहकरणवहकरण ॥ त्यागित्यागिविषयांन ॥ तरसीउरउलेन
 योसतसुभाषो जाना ॥ १ ॥ जोकोऊबोतउयावई ॥ तीऊतबोतउयाजाश
 मानामसातिगीयह ॥ उपजेजनकीकाश ॥ नित्यानित्यबंधैकहोश ॥ बीचि
 कजीनरहाइतरसीजहोजहांदिरतियहासीसत्वधरमकहाइ ॥ १ ॥ इया
 सकलजीवनपरासावहदेसुषजासा ॥ अमानअरुआर्जवता ॥ धीरजरिद
 बिसवासा ॥ सुधरमसीलसुदीनता ॥ सुमिरनस्वासेस्वासा ॥ तरसीयहसावि
 र्धमी ॥ अधर्मकरनवितासा ॥ १ ॥ योगत्यागतपदानयहा ॥ पूतअनेतादेइ
 लजाहूजाते ॥ जुयहा ॥ उतपथपंथनहिलेइ ॥ १ ॥ तममारा ॥ अत्रसरे ॥ १ ॥ र्धरि
 आत्मश्रेया ॥ तरसीसाविकधर्मयहा ॥ सोनासुजसविनेया ॥ १ ॥ इबाउपा
 रहीकी ॥ आस्तीकबुधिजासा ॥ संतोषीसीवलचदुर ॥ सुषदाईगुणतासा ॥ फ
 लअसंगघटहूअसंग ॥ बिवरेरहितअयासा ॥ तरसीसातिगृहवियह
 कोवीदैनैजदास ॥ १ ॥ २ ॥ अथराजसविधान ॥ १ ॥ त्रिशांशरवसका
 मता ॥ मदमनोरथमोन ॥ तरसीएरजकेगुना ॥ कोऊजोतेजावसुजान ॥ १
 मदअमदनजानही ॥ सुषहीसुषस्योसनेह ॥ साचअसमकेतही ॥ पुनि
 रजेकेयुएएह ॥ १ ॥ अरिमित्रादिजुनेदजहां ॥ मदउत्साहजसपीतिहासि
 धीरजबलउदिम ॥ तरसीयेरजरीति ॥ १ ॥ जोईजोईकबूइदिमकेरो ॥ सजस
 पतापंकेकाज ॥ रोमनगतिजावेनही ॥ रजरुनिलजनिकाज ॥ १ ॥ अथ
 तामसविधान ॥ १ ॥ निद्रानयेआलसदरिडा ॥ हिंसासोकसंतापा ॥ तरसीए
 तामसगुना ॥ उपजावनउरयाया ॥ मिथ्यामोहबिघादता ॥ परपीतस्योपीति
 तरसीमनवकरमसही ॥ एतामसकीविपरीति ॥ १ ॥ क्रोधअधिकलोडइ

धिक। अधिकदंतत्ररुद्रोह। आयासकलविता अधिक। अधिककवदोत्र
रोह। आसा आसाहस अधिक। कहोलौवरनोवोह। यहतीछणतामसद
ति। अधर्मनोकालोह॥२॥ अज्ञान अधिक आत्मस अधिक। अधिकही।
निद्राजानि। तुरसी अवेवेकुरु अधिक। एतमवेहनप्रवांति॥४॥२॥ अ
अगुणसमिलतविधानः॥४॥ तुरसी यहहुं महमेरीवसा। याप्रवाहकैसा
हि। विवहारनिमैवदिपरे। संतोषजुकेऊनोहि। अर्थधरमकामहीको
बडेबडेकरमकरोहि। गुणसमिलतजानौजहो। अहबुधिअपजेआहि। अ
पनीअपनीवृत्तिको। सरधालोत्तउपाश। अतितउत्तमतहोइरहे। मनइंडी
अरुकाइ। गृह्णयधनपृथसुषटय। बडुआरत्तउपाय। तुरसीजहोबु
धिवृत्तियहगुनसुमिलतजुकहाय॥२॥ तुरसीयहहुं महमेरीवसा। यह
तुरीजान। याप्रवाहमेपरिरहे। करिकरिअंचांतोनि। नगुनकीसोधी
नही। कहोबसैकिसथानि। गुनसुमिलतजानौजहो। यहबुधिअपजेआ
नि॥३॥३॥ अथत्रिगुणतिगनेदत्तिद्विद्विन्निरूपनविधांतः॥५॥ स
सततेसुषजतेकर्म। तमतेअविधिअविचार। तुरसीतीनोंगुणनिका
निनिनिनेदविचार। रजवासनासकामकी। तामसक्रोधसुताव।
सतसमदमसंजुक्तहैये। त्रिगुणत्रियताव। २। एत्रिगुणबुधिस्योत्तये।
चित्तमुषअपजेआइ। तुरसीताहिजियमानिके। बंधनयाबिललाय। ३। त
रसीजबसुधरमस्योहरिजै। त्यागिकामनादेहा। त्रियाहोइअथवापरु
ष। सात्वगप्रकृतियेह। ४। सुकरमकरेसुषबांठिके। उरबांठइजुकोम
तुरसीयहरजकीप्रकृति। अंतरपारनरंम॥५॥ चौपडी। तुरसीहिंसादि
रदैधरे। सकरमनिनिजसेवाकरे। तहांतहांतासप्रकृतिकहोवे। सुषपावे
तबताहिनसावे॥६॥ साषी॥ तुरसीधरमअदिसकरत। चितविघनजोहो
ताकीपीडामानिसन। सकेविचारिनसोइसोचहिसोचकस्योकरे। सुष
आनंदपदयोइ। यहअज्ञानवरतेतहां। रजसुजावतहंजोइ॥७॥ चौपडी

अतिचित्तमार्गे ऽ ष हो ऽ आवै ॥ सोचत सोचत मां हिरहावे ॥ सकै न ही पर ॥ १४ ॥
मिधिवजा कौं ॥ नासती क मतमवै न का कौं ॥ तुरसी इ हता मसी छनावा ॥ ब
कुंबु डेया समदमकावै ॥ ८ ॥ साषी ॥ निर्मलचित्तं ऽ डी अचला मत अ संगी हो
शा तुरसी य ह जां नि सु जा व स ता ॥ हरि य द ची न्हे सो ऽ ॥ ९ ॥ स्वारथ वस्तस्य
त संग्रहे ॥ त्या ग नो ग सिं गार ॥ तुरसी ए र ज के गु नां ॥ ब र नै यं च प्र कार ॥ १० ॥
बाद क ल द ब ध व च नां ॥ पंच म सो क हू सो ऽ ॥ तुरसी ए त म के गु नां ॥ बू र्के
बिरला को ऽ ॥ ११ ॥ दया धर्म सर धा क्रिया ॥ पंच म त्त कि हूं जां नि ॥ तुरसी
ए स त के गु नां ॥ सं त नि की ये प्र वां नि ॥ १२ ॥ लष चौ ए सी घट निर्मां ॥ प्रा त म अ
नि नि ज एक ॥ तुरसी अै से दे षि यो ॥ त हां सा त्कि वि वे क ॥ १३ ॥ तुरसी घट नि
नि नि नि है ॥ न ही ति नि वि चि नां ना ॥ अै से दे षे आत्मा ॥ सो सा त्कि ज्ञ ज्ञां ना ॥ १४ ॥
तुरसी सा त्कि ज्ञान वि ता मि टै न मन को मै ला ॥ राज स ता म स र ज्ञां त मै ॥ ए ह चि
त प करै फे ला ॥ १५ ॥ तुरसी न्या र न्या री आत्मा ॥ न्या री न्या री दे हा न्या रो न्या रो दे षि
यो ॥ ए ज स ज्ञान जु य हा ॥ १६ ॥ तुरसी प्र ति सा दिक नि को ॥ करि पू जै ना वां ना ॥ स्त्रि
म को जां नै न ही ॥ य ह ता म सी जु ज्ञां व ॥ १७ ॥ तुरसी ब्र ह्मा दिक अ स्तं न लो ॥ ल घु दी
र घ स ब दे हा ॥ इ त ही कौं आत्म क है ॥ ता म स तां न जु ए हा ॥ १८ ॥ वि षि आ दि ऽ डी स
क त्वा ति न ति न उ प जे नां ना ॥ तुरसी पु नि प्र का स हो ऽ ॥ त हां सा त्कि ब्र त मां न
॥ १९ ॥ तुरसी वि ष्णु लो न अ सां ति ता ॥ पर ध न हर न जु प्री ति ॥ ज हां ज हा ए ज स
बै त हां त हां ए वि परी ति ॥ २० ॥ अ धि क प्र व र ति बा ढा अ धि क ॥ अ धि क वि षे
स्यो प्रे हा ॥ तुरसी र ज गु न वृ धि न ये ॥ पु नि उ प जि र्जु ये ह ॥ २१ ॥ चौ प डी ॥ अ ति
त त म अ ति त अ वि चार ॥ प्र ति त म हां मो ह वि स्तार ॥ अ ति त अ सा व धा नी ज हां ॥
तुरसी अ ति त ता म स त हां ॥ २२ ॥ सा षी ॥ तुरसी त म स मिल त या म न को ॥ अै से
जां नो सो ऽ स्त्रि न हू य सू र्के न ही ॥ स कि त सी वां को ऽ ॥ २३ ॥ तुरसी त म स मिल त
या म न को ॥ ब्र ह्म स्यो जां नो ये हा ॥ ए ह त जि वै न जि वै न जु प्रे हो ॥ ए ह बु धि ना ही दे ह

मयानकहोइ ॥२५॥ आपआपकोनिरदरे ॥ महासत्रलोसोइ ॥ तुरसीसमिताकी
 सगति ॥ समझे एकतदोइ ॥ २६ ॥ सांतिरूपसात्विकीमन ॥ रहितकालिमाकांम
 गुरबंबेकप्रसादतै ॥ होइरघारतरंम ॥ २७ ॥ तुरसीदुषसुषसंपतिद्विपतिकी ॥ म
 हांजातोएसोइ ॥ सुधसात्विकीमनके ॥ आंचसपरसनहोइ ॥ २८ ॥ सांदिमांदि
 असंगनिति ॥ आसक्तकबहूंतहीइ ॥ तुरसीत्रेयाहैकोऊ ॥ सुसात्विगकरताजोइ
 ॥ २९ ॥ तुरसीफलहीकारतै ॥ करमनिमैंगलतांन ॥ रातिदिवसकीयोकरै ॥ राजस
 करताजाना ॥ ३० ॥ मगनमहागृहकूपमै ॥ नहीसंतसनमांन ॥ नगतितावबूकेन
 ही ॥ सुराजसकरताजोन ॥ ३१ ॥ सांनरहितकारजकरै ॥ उरअंधकारउपाइ ॥
 तिरनगतिसमझेनकबू ॥ तमकरतासुकहाइ ॥ ३२ ॥ तुरसीसतसरधाअमल
 सबीतस्योहीइ ॥ रजुकर्मनिअधर्मजुतमा ॥ एसरधाविधिजोइ ॥ ३३ ॥ तुरसीजो
 कर्मनिपरे ॥ अवरतआत्मरंम ॥ तहो जाइकैंगंहरै ॥ सोसाबगसरधानाम ॥ ३४ ॥
 निमषहूंकटरेनही ॥ ताघांतस्योजुसोइ ॥ तुरसीदुषसुषमांनिकै ॥ सात्वास
 रधाजोइ ॥ ३५ ॥ तुरसीसरधासात्वगी ॥ संतजननकीमाइ ॥ पालेयोषेप्रीतिस्यो ॥
 अमृतपादकराइ ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ सत्रजननीलो ॥ जननिजागवै ॥ पालेयोषेपुष्टि
 करावै ॥ आरूढधर्मउतपनकरैसोइ ॥ जैसेबहुस्योतंगनहोइ ॥ ३७ ॥ तुरसीजि
 नकेसरधानाही ॥ सुधसात्विगीयातनमांही ॥ तिनपैचजननगतिहोइनाही ॥
 कैसीहूंबिधिकरहुआही ॥ ३८ ॥ साधी ॥ तुरसीबस्तीत्यागिकै ॥ बनमैब
 हैअसंग ॥ सात्विगबासाजोनियह ॥ रजतमग्रामकुंसंग ॥ ३९ ॥ फलवांछाय
 रहिरकरै ॥ सुजकरमतकौसंता ॥ सोक्रमसात्वगजानहुं ॥ आदिमधिफुनिअ
 त ॥ तास्योचगतिउदैजूहोइ ॥ जनममरनकीहेत ॥ तुरसीतापरसादतै ॥ नेटिये
 जुनगवंत ॥ ४० ॥ अतिहीउतमकर्मका ॥ फलसात्वंगसुधजानि ॥ तुरसीताफल
 नगतिहै ॥ नगतिब्रह्मफलमांनि ॥ ४१ ॥ पहलैहीफलवांछिकै ॥ करमनिकरैजु
 कोइ ॥ तुरसीरजसकरमको ॥ संतबषांनैसोइ ॥ ४२ ॥ चौपई ॥ तुरसीउरधरिदि
 सांअंध ॥ करमकरैकोऊमतिमंद ॥ ताकरमकैकीयेयहजान ॥ चत्पौरसातलि
 जाइअज्ञान ॥ ४३ ॥ साधी ॥

सतस्य उच्यते नदिना। समनमदा अज्ञानं वरसीति
एकतज्जा निद्वेन कुप्रवान ४४ सात्त्विकस्य आत्म
वित्तवाजसवि। पद्याजान। अज्ञानत उतपननया सासुप
मसमान ४५ वरसीमत अदारयद करमदजममाड सुन
सुछ अरुसुय करन तदान कलपनाकोड ४६ वरसीधान
मीवात्रादिद रसनाकव क्रुनाग मदारजमी अदारग उ
पजावन ४७ राग ४७ दिमाप्याउतपनदोड कर कलप
नामुष वरमा अरुसुध अरुविमदा तामन अदारनिरुप
४८। तुरसीध्रिगुणा अदारम मनदीसाइंतीन जातियसा
त्वगवद रजनमवृद्धिदोडतीन ४९ रजनपुनपतिनान
की। तमनमादप्रमाद वरसीसततज्ञानद ज्ञानतगानम
माधि ५० रजगुनतेमवनपत्र तमनटाइछमान मनगु
नतेपावधुष्टि त्रिगुननिगतवतान। ५१ रजपदडमृतना
कदो। समपदईपाताल सतगुनपदईस्वर्गद वरसीकद
विदार ५२ वरसीमत प्रमन्नय धानपयानकराड ता
स्वर्गदक अवरस्वर्गलाकमजात ५३ रजगुनकदद
रिनगतको वधुविनसईजुवीर तापुरसीमृतनाकमपा
वैमनियमरीर ५४ जातमपुनप्रवननय तनयागजुका
श्रधमजोनिमनपजिक पसुपर्षीटाडमोड ५५ अरुम
यांहाव अरुमगति मधिस्यामधिस्यान उतमस्याउरुगकम
हे। प्राप्तिहाइयदपान ५६ मनरजनमावयगुननिका क
कच्छुकीत्याविवार। वरसीत्र। जम्पीवरानह। नानानेन
कंप्रकार ५७। विदवयार वरजागुणारनपनकी। वा
नीन। वरसीएत्रियदरभेकर रजगुननिठी। तीन
। वायुधनारतितमो। पुन। वावयतमकत - उर। नम
। तसां करतिलंकोछ ३ ५५ मनसीतिरिव

तकेतीनिप्रकारतुरसीतीनोंलघईसोजनसतजितसार
 दिव्येनयातततरतीनतुरसीजिनियेवसिकीयेदशदे
 तमकेत्रियभागतपतिअनितिअसूजिताकरैतास
 कोत्यागतुरसीतलवेतासोइदशसाधीप्रथमसीतल
 उतीयसुकचत्रियतीयसुबंधध्वानतुरसीएसतकेगु
 नाकोऊजानैजानसुजानदशतुरसीवरनेतीनियुनअ
 ष्टादशविधिसोइएअष्टादशवसिकरैसुजोयासोनल
 होइदधतुरसीकहांलेंअषियेविगुनकोविस्तारका
 लकर्मकरताजुफलदर्विदेसआकारत्रिविधिज्ञानस
 रक्षत्रिविधित्रिविधसकलसंसारजहांलेंसुनियेदेषि
 ट्ठेनृगुनतेउरवारदयइत्यादिकएनावजोसवैगुनम
 ईजानअकृतिपुरुषमल्लडपनातुरसीहेतअस्थानददवौप
 ईतुरसीइतअकृतिउतपुरुषजुदोकउनेहेतस्योउपनेसोऊ
 जबहिजीवइनअनहितहोइअवेतवगुणमईनलविद्यावि
 जावैदृगएएअथसतगुनद्विप्रकारविधंनदवौपईतुर
 सीसतरजतमएतीनिएकअमलहउनेमतीनतातेसाधकसो
 ईकरैरजतममिति सतगुनविस्तरेसाधीरजतमबुद्धीजग
 तमबसतबुद्धीकोऊसाधतुरसीसतमैसुषधनांरजतमनरेविषा
 दशरजतममनोरजनिअंधियारीतामैअमतकिरैनरनारीविन
 नात्तिकससिउदजुसोइतुरसीपंथवतावकोइअपंथनकोऊगा
 वइकोठिककरइविचारतुरसीसात्विगवदेविनरजतमहोइन
 वारधनिहसंगहोइसंगछाककोसरधप्रीतिउपायतुरसीतवसा
 विगवदेरजतमजाहविलाइअप्रथमसात्विगबुष्टिकरैव्याधरमउ
 रधरतुरसीअसैहोइगारजतमकापरिहारदूरजतमकोपरहारन
 येसतगुनकेवलहोइतोआगैतुरतस्योतनमनरतहोइसोइ
 सारसारगुथनिआगहेसतसंगआदिअतित्रिवाहेसतपुरकीसे
 वानितकरैसतगुनबहिरजतमयौमरेणनिरवर्तिसासुनिरवर्तिसा
 धसतपुरगानीअगमअगाधतुरसीएतीनेउरधरेतोरजतमदृति स

१०६ अथ सुधो सिकानये सात्वगहंस्यागधियनः १ नोपई सात्वगकर्मकरैतवताई जिनोना

ततपनिहोशंही॥ तुरसीज्ञानउदेहोइश्यावे॥ तवसतगुतऊबिटकावे
 ॥१॥ रजतमकरमअत्रसिकेंदिवारे॥ सतगुतकर्मतावतउरधारे॥ तुरसी
 जावतउपजेज्ञान॥ षगटकरनतुरपदन्तवांता॥ २॥ साषी॥ रजगुनतजो
 बसेषस्यो॥ तमागुतधरोउताश॥ तीजेआसनबेसिके॥ चौथेरहीसमाज्ञा
 ॥३॥ जोकदाचिरजतमगुनहि॥ उलंघिजाइजनकोइतौआपोहूरपस्ये
 तुरसीसतगुनसोइ॥ ४॥ सतगुनअटकेअनंतमुनि॥ दीयेमानिवहाइ
 शिषिसिधस्वरगकेसुधितिमें॥ तुरसीरहेलुत्ताइ॥ ५॥ साखिगसुषमानि
 केंजीवा॥ अपनोंसीवसुत्तावा॥ तुरसीबिसरिगुणबधहोशकरेनांनो
 जोनिफिरवइ॥ तुरसीगणपिसनफिरिआवई॥ मूयेजुजीवेसोज्ञानोस
 तगुनसुषमानिजीया॥ अहंजुकरताहोइ॥ ६॥ सतगुनकेजीतविकींन
 हिअगतिकींउंज्ञानांके॥ तुरसीनिजगतिहो॥ केनिहकेवलज्ञानां॥ ७॥
 कोजुज्ञानकोमैजुहोइ॥ सतगुनकोनिरमल॥ तुरसीदासताइनेमो
 सत्रमिअसमलल॥ ८॥ आत्मज्ञानउठिउदितहोइ॥ अंतरजामीगंमा॥ तुरसी
 तवसाखिकीहं॥ करमनिस्योकाकांसा॥ १०॥ ११॥ १२॥ अथसतरजतमती
 नौगुतत्यागप्रकारविधातः॥ १॥ तुरसीतीनौगुणजुगसायारचिउजु
 सोश॥ स्वरनरपसुजीविकीं॥ बंधतरूपीजोइ॥ सतमेंरजरजमेजुतम
 तममेंसतप्रवाति॥ तुरसीतीनोमिलिरहे॥ चौथेहिकींजांनि॥ २॥ सोत्रिगु
 णप्रपंचमईनिहचैवस्वरजुजाति॥ तुरसीनिरगुतज्ञानगहि॥ करिजरा
 तरमूरोनि॥ ३॥ ज्ञानदोषदीगुतविथा॥ गुरतयोवैदसमान॥ ठाकेदरसप
 रसता॥ विथाहोइबिलीमाना॥ ४॥ न्युतज्ञानकोसस्रगहि॥ गुतनृमूरके
 हे॥ तुरसीगुतनृमूरकीये॥ बडरिनधरीयेदेह॥ ५॥ अत्रिअपुनितिअ
 वकरमा॥ गुतनिवपारजितसोइ॥ तुरसीतिहंकोत्यागकोके॥ तवबेता
 स्योहोइ॥ इततबेलाहीकरेकोजा॥ त्रिगुनकरमकोत्यागि॥ तुरसीबोर

२०

तकेतीनिप्रकारतुरसीतीनोंलघईसोजनसतजितसार
 दियेनयातततरतीनतुरसीजिनियेवसिकीयेदशदे
 समकेत्रियनागतपतिअनितिसूजिताकरेतास
 कोत्यागतुरसीतत्ववेतासोइदशसाधीप्रथमसीतल
 इतीयसुकचत्रियतीयसुबंधप्रवांनतुरसीएसतकेय
 नाकोऊजानैजानसुजानदशतुरसीवरनेतीनियुनअ
 षादशविधिसोइएअषादशवसिकरेसुजोयासोनल
 होइदधतुरसीकहांलेंअषियेविगुनकोविस्तारका
 लकर्मकरताजुफलदविदेसअकारत्रिविधिज्ञानस
 रक्षत्रिविधित्रिविधसकलसंसारजहांलेंसुनियेदेषि
 येनूगुनतेवरवारदशइत्यादिकएनावजोसवैगुनम
 र्दज्ञानप्रकृतिपुरुषमूलइपनातुरसीहेतअस्थानददचोप
 ईतुरसीइतप्रकृतिउतपुरुषजुदोकउनेहेतस्येउपनेसोऊ
 जवहिजीवइअनहितहोइअवैतवगुणमर्दज्ञानविधावि
 जवैदशएअप्रथमतगुनद्विप्रकारविक्षंनदचोपईतुर
 सीसतरजतमएतीनि एकअमलहउनेमलीनतातेसाधकसो
 ईकरैरजतमपितिसतगुनविस्तरेसाधीरजतमबुर्क्षजग
 तमवसतबुर्क्षीकोकसाधतुरसीसतमैसुषधनांरजतममरेविषा
 दशरजतममनोरजनिअंधियारीतामैअमतफिरेंनरनारीबिन
 सात्विकससिउदजुसोइतुरसीपंथवतावकोइअपंथनकोऊपा
 वइकोठिककरइविचारतुरसीसात्विगवदेबिनरजतमहोइन
 तारधनिहसंगहोइसंगछानकोसरक्षत्रीतिउपायतुरसीतवसा
 द्विगवदेरजतमजाहबिलाइअप्रथमसात्विगवुष्टिकरेवयाध
 रक्षरतुरसीअसैहोइगरजतमकापरिहारहरजतम
 येसतगुनकेवलहोइतोआगैतुरततसोंतनमनरत
 सारसारगुथनिअोगाहैसतसंगअदिअंतित्रिवाहै
 वानितकरैसतगुनबहिरजतमयोंमरेअनिद्वर्ति
 धसतपुरग्वानीअगमअगाधतुरसीरतीनोउरधरे

जिनोडा
 साधकमेकरैतवहोइ
 प
 साधकमेकरैतवहोइ
 विषय
 विषय

तत्पनिहोइमांही॥ तुरसीसांनउदैहोइश्रौवै॥ तवसतगुनऊंछिटकावै
॥१॥ रजतमकरमञ्जुसिकैनिबारे॥ सतगुनकर्मतावतउरधारे॥ तुरसी
जावतउपजैज्ञान॥ घगटकरनतुरपदन्तबांन॥ २॥ साषी॥ रजगुनतजो
बसेषस्यौ॥ तमागुनधरैउनाश॥ तीजेआसतबैसिकै॥ चौथेरहोसमाश
॥३॥ जोकहाचिरजतमगुनहि॥ उलंघिजाइजनकोशतौआगोइतरपसे
तुरसीसतगुनसोश॥ ४॥ सतगुनअटकेअनंतमुनि॥ दीयेमानिबहाइ
शिधिसिधसुरगकेसुधिनमै॥ तुरसीरहेलुनाशपा॥ साविगसुषमानि
कैजीव॥ अपनौसावसुताव॥ तुरसीविसरिगुणबधहोशकरैतांन
जेनिफिरवः॥ तुरसीगणपिसनफिरिआवई॥ मूयेजुजीवैसोशजोस
वगुनसुषमानिजीया॥ अहंजुकरताहोइ॥ सतगुनकेजीतविके॥ न
हिजगतिकेउंआंन॥ कैतुरसीनिजतगतिहो॥ कैनिहकेवलसांन॥ ८॥
कोजुज्ञानकोमैजुहोइ॥ सतगुनकोनिरमूल॥ तुरसीदासताबैनेमै॥
सत्रमित्रसमल्ला॥ एआत्मज्ञानउगिउदितहोइ॥ अंतरजामीरंगमा॥ तुरसी
तवसालिकीहं॥ करमनिस्योकाकोमा॥ १०॥ १२॥ ॥ अथसतरजतसती
नौगुनत्यागप्रकारविधान॥ ८॥ तुरसीतीनौगुणजगु॥ सायारचित्तु
सोशस्वरनरपसुजीवतिके॥ बंधनरूपीजोश॥ सतमेंरजरमेंजुवमा
तममेंसतप्रधाति॥ तुरसीतीनौमिलिरहे॥ चौथेहिकेजांनि॥ १॥ सोत्रिगु
णप्रपंचमईनिहचैवस्वरजुजांनि॥ तुरसीनिरगुनज्ञानगहि॥ करिजरा
नरमूरोनि॥ अज्ञांतबोधदीगुनविथा॥ गुरजयोवैदसमान ताकेदरसप
रसता॥ विथाहोशबिलीमांन॥ १॥ नगुनज्ञांतकीसस्वगहि॥ गुननृमूरके
ह॥ तुरसीगुननृमूरकीये॥ बऊरिनधरीयेदेह॥ ५॥ अनिअपुनिमिषि
तकरमा॥ गुननिउपारजितसोश॥ तुरसीतिहंकेत्यागकोजं॥ तबबेता
स्योहोइहातबेवाहीकरैकोजा॥ त्रिगुनकरमकेत्यागि॥ तुरसीत्रोर

तकेतीनिप्रकारवुरसीतीनोंलघईसोजनसतजितसार
 दियेप्रयातततरतीनवुरसीजिनियेवसिकीयेदशदे
 तमकेत्रियनागतपतिअनिनिअसूजिताकरैतास
 कोत्यागवुरसीतत्ववेतासोइदशसाधीप्रथमसीतल
 इतीयसुकचत्रियतीयसुबंधप्रवांनवुरसीएसतकेयु
 नाकोऊजानैजानसुजानदशवुरसीवरनेतीनियुनअ
 ष्टादशविधिसोइएअष्टादशवसिकरैसुजोयासोनल
 होइदधवुरसीकहांलेंअषियेविगुनकोविस्तारका
 लकर्मकरताजुफलदविदेसअकारत्रिविधिज्ञानस
 रक्षत्रिविधित्रिविधसकलसंसारजहांलेंसुनियेदेषि
 येनृगुनतेउरवारदयइत्यादिकएनावजोसवैगुनम
 ईज्ञानप्रकृतिपुरुषमल्लडपनावुरसीहेतअस्थानदधचौप
 ईवुरसीइतप्रकृतिउतपुरुषजुदोकउनेहेतस्योउपनेसोऊ
 जवदिजीवइनअनहितहोइअवैतवगुणमईनलविद्यावि
 जावैदशएअथसतगुनद्विप्रकारविधंनदचौपईवुर
 सीसतरजतमएतीनि एकअमलदउनेमतीनतातेसाधकसो
 ईकरैरजतमपितिसतगुनविस्तरैसाधीरजतमबुधीजग
 तमवसतबुधीकोऊसाधवुरसीसतमैसुषधनांरजतमनरेविषा
 दशरजतममनोरजनिअंधियारीतामैअमतकिरैनरनारीबिन
 सात्विकससिउदजुसोइवुरसीपंथवतावकोइअपंथनकोऊपा
 वइकोठिककरइविचारवुरसीसात्विगवदेबिनरजतमहोइन
 तारधनिहसंगहोइसंगद्यानकोसरक्षप्रीतिउपायवुरसीतवसा
 द्विगवदेरजतमजाहविलाइअप्रथमसात्विगपुष्टिकरैव्याधरमउ
 रक्षरवुरसीअसैहोइगरजतमकापरिहारदूरजतमकोपरहारन
 येसतगुनकेवलहोइतोआगैउरततसोतनमनरतहोइसोइ७
 सारसारगुथनिआगहैसतसंगआदिअतित्रिवाहैसतपुरकीसे
 वानितकरैसतगुनबहिरजतमयोंमरेणनिद्वर्तिसासुनिस्वर्तिसा
 धसतपुरगपानीअगमअगाधवुरसीएतीनेउरदहैतोरजतमद्वतिस

जिनोडा साबागकमेकरैतवतोइ जिनोडा ७ २७ अथसुधकोसिक्तानयेसात्वगहंत्यागविधन

ततत्पनिहोइमाही॥ तुरसीमानउदेहोइस्योवे॥ तवस्तगुनऊंछिटकावे
 ॥१॥ रजतमकरमअत्रसिकेंनिवारो॥ सतगुनकर्मतावतउरधरो॥ तुरसी
 जावतउपजेज्ञान॥ षगटकरनतुरपदनृवांन॥ २॥ साषी॥ रजगुनतजो
 बसेषस्यो॥ तमगुनधरोउगाश॥ तीजेआसनबेसिकें॥ चौथेरहोसमाश
 ॥ ३॥ जोकदाचिरजतमगुनहिं॥ उलंघिजाइजनकोश॥ तीआपोहूनरपस्यो
 तुरसीसतगुनसोइ॥ ४॥ सतगुनअटकेअनंतमुनि॥ दीयेमानिवहाइ
 शिषिसिधस्वरगकेसुषिनिमै॥ तुरसीरहेलुजाश॥ पासादिगसुषमानि
 कैजीव॥ अपनोसीवसुजाव॥ तुरसीविसरिगुणवधहेशकरैनांन
 जोनिफिरव॥ छतुरसीगरपिसतफिरिआवई॥ मूयेजुजवैसोशजोस
 तगुनसुषमानिजीय॥ अहंजकरताहोइ॥ ५॥ सतगुनकेजीविके॥ न
 हिअगतिके॥ उंआंन॥ कैतुरसीनिजतगतिहै॥ केनिहकेवलज्ञान॥ ६॥
 कोजुज्ञानकोमैजुहोइ॥ सतगुनकोनिरमूल॥ तुरसीदासताअंनमै॥
 सत्रमित्रसमलल॥ ७॥ आत्मज्ञानउगिउदितहोइ॥ अंतरजामीगंमा॥ तुरसी
 तवसाविकीहं॥ करमनिस्योकाकांम॥ १०॥ ११॥ ८॥ अथसतरजतमती
 नौगुनत्यागप्रकारविधान॥ ८॥ तुरसीतीनौगुणजुगु॥ सायारचिउजु
 सोइ॥ स्वरनरपसुजीविके॥ बंधनरूपीजोइ॥ सतमेंस्वरजमेजुवम
 तममेंसतप्रवाति॥ तुरसीतीनौमिलिरहे॥ चौथेहिके॥ जोनि॥ ९॥ सोत्रिगु
 णप्रपंचमई॥ निहचैतस्वरजुजांनि॥ तुरसीनिरगुनज्ञानगहिं॥ करिजरा
 तरमूरोनि॥ १०॥ ज्ञानवोषदीगुनविथा॥ गुरस्योवैरसमान॥ ताकेदरसप
 रसते॥ विथाहोशबिलीमान॥ ११॥ दृगुतज्ञानकीसस्त्रगहिं॥ गुननृमूरके
 हे॥ तुरसीगुननृमूरकीये॥ बडरिनधरीयेदेहा॥ १२॥ पुनिअपुनिमिषि
 तकरम॥ गुननिवपारजितसोइ॥ तुरसीतिहंके॥ त्यागकोऊं॥ तवबेता
 स्योहोइ॥ ततबेवाहीकरैकोऊ॥ विगुनकरमकौं॥ त्यागि॥ तुरसीओर
 जीयइनमही॥ रहेपरसपरयागि॥ १३॥ जतममरतनवबीजण॥ गुनचितक

रमसुजाव अरधउरधमधिलोकमै तुरसी करहिंउगाव ॥ ७ ॥ प्रथमेविता
इतियेजुगुन ॥ त्रितीयेइंद्दी आंन ॥ अहेममनआदिजुसकल ॥ एतवबीजव
षांन ॥ एतुरसीइतवैजनमहोइं जनसमरननवबीजए संतनिवरने सोइ
॥ १० ॥ तुरसीवरनेतीनिगुन ततज्ञानब्योपाइ ॥ आगेवरनोअवस्था ॥ सुन
इंसंतचितलाइ ॥ १० ॥ १० ॥ अथत्रिगुणअवस्थाविधांत ॥ १ ॥ त्रिगुण
कीत्रियअवस्था ताताकेअस्थांन ॥ तुरसीनिनिनिनिवरनऊ ॥ उरधरिगु
स्कोज्ञान ॥ जागृतराजाजुगुपिता ॥ रजगुनरवितहांदेव ॥ वबुअस्थानि
आदिजुसकलइंद्दीआद्विजेव ॥ अपनेअपनेसुषपतिमित ॥ लागिरही
विषसेव ॥ तुरसीयहजागृतिविसरी ॥ तोस्वप्नहंनदरसेव ॥ सुप्नराजासि
धुसुतापति ॥ सतगुणस्वरतहांवदा ॥ सुकंठस्थानिआदिदिसौंदिस ॥ नरमे
मनसामेद ॥ सुत्तअसुत्तइषसुषकहं ॥ कहंमुक्ताकहंफंद ॥ तुरसीयहस्वप्न
उलंघई ॥ तोउपजेसुषआनंद ॥ सुषपतिराजारुइतहां ॥ तमगुणगुण
तहो जीइ देवदहनबुधियाततहां ॥ रहेपाणमनसोइ ॥ तामधिव्यापक बास
नां ॥ ताकौंनगनहोइ ॥ तुरसीयहसुषपतिसही ॥ पैलंघैविरलाकोइ ॥ १० ॥ तुर
सीवतुरइसइंद्दीजुए ॥ जोजोश्रितिकरंहि ॥ पुनिजायतअवस्थायेह ॥ सबसा
धुजकहांहि ॥ १० ॥ पंडहकोपरिसोवई ॥ नौततकौंजागे ॥ स्वप्नअवस्थाजांनि
यह ॥ कहंमूकैकहंजागे ॥ बुधियादिइंद्दीसकल ॥ अतितलीनहोइंजा
हि ॥ सरीरकीसुधिनारहे ॥ पुनिसुषपतियेआहि ॥ अज्ञानबीजरहिबोक
रे ॥ सौधौंनसेजुनांहि ॥ तुरसीज्ञानवैरागविन ॥ अरथइतोहीआदि ॥ रज
जागृतिसतगुणस्वप्न ॥ तामससुषपतिसोइ ॥ तुरसीएत्रियअवस्था
तिहंगुणतिकीजोइ ॥ १० ॥ त्रिगुणफुनित्रियअवस्था ॥ जयेबुधिवासतां
सोइ ॥ तुरसीएत्रियपरहंरो ॥ तोवौषेगमिहोइ ॥ १० ॥ १० ॥ अथसतांता
एकएकअवस्थाविधात्रिधाप्रकारविधांत ॥ १० ॥ जाग्रतिजागृति
इहै ॥ कमीरहननहीदेश ॥ तुरसीवस्तजोहैजसो ॥ तादिपरिषरीकरि

जीवको नाता विधिकी त्रास। तुरसी बेहद अज्ञेय पद। परम जोति परका
 सा ॥ १० ॥ बेहद पद वेगमघर। तहां न सेको क जान। तुरसी एक र जी सस
 केवल सुषकी घांति ॥ ११ ॥ श्लो पई ॥ सुन अ सुन कर म ए दो ॥ तहो ग
 ए गंजित स कै को ॥ तुरसी श्रेया बेहद था न। तहां अनंदी घुरै निसां न।
 ॥ १२ ॥ सा जी ॥ आनंद के बाजे बाज हि। ही र र हो जै जै का र। तहां सो नी ग
 लतान नये ॥ तुरसी तिहूं की री म नार ॥ १३ ॥ १४ ॥ अथ तुरसी अती
 धी व ॥ १५ ॥ तुरसी तिहूं की अपे ब्या तुरी हो ॥ तुरसी अपे ब्या ती नि ॥ घन व
 द लो ग न्यो करे ॥ जो लो पंच म पद ली या न ची नि ॥ १६ ॥ तुरसी पंच म पद ची न्या
 जु जि ति ॥ तहां के ये सह नां न। ते दा ते द वि सरि ग ए ॥ र हो न बा जी शान ॥ २
 य द कं च न य ह का च म णि ॥ ग्रा ह जि अ या ह जि सो ॥ तुरसी तुरी या अती
 त को ॥ इ हें बु धि र ही न को ॥ ३ ॥ को क श्रो मा न जु करे ॥ अंतरि को प ऊ पा
 ॥ को उ वि वि धि सु म पा य के ॥ बे ठा व र्द्ध बु ला ॥ सं त र हूं त पर ए कर सा ॥
 ह र्षे त क हूं वि स मा ॥ तुरसी तुरी या अती त के ॥ ये ल छि त ब्यो पा ॥ ४ ॥
 की री कें ज र अ रि जु मि ति ॥ था व र जं म जां न ॥ तुरसी क हूं त वि ष म ता ॥
 स ब स्यो ए क स मा न ॥ प दे ष न वा लो रं म हे ॥ जो दे षि ये सु रं म ॥ अ सी इ ति
 उ दे त र्दी फ टि ग र्द वि ष या वां म ॥ अ र ध अ र ध र शो दि श ॥ ते पे ता को ना
 म ॥ तुरसी श्रो र न ना स र्द ॥ ज न को अ वां जो म ॥ ५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ अथ
 लो स को य रि कर न ॥ १ ॥
 यथ ॥ तुरसी ज ब ला
 क च तुरा र्दी को टिक
 को टिक अ र थ सु न
 तां म क हो व ही ॥
 को टि स चि ॥ को टि ज्ञा व गु न
 गु न को टि
 टिका ॥
 गें

नो न स मा न

जीवको नां विधिकी त्रास। तुरसी वेहद अमैपद। परम जोति परका
 स॥१०॥ वेहद पद वेगमघर। तहान सैकोऊ जान। तुरसी एकर जीस्य
 केवल सुखकी घानि॥११॥ औपद। सुन असुन करम एदोइ। तहो ग
 एगजितसकैकोइ। तुरसी अैया वेहद थोत। तहां अतदी घुरै निसांन।
 ॥१२॥ साजी॥ आनंदके बाजे बाजहि। होइर घौजेजेकार। तहां सोनीग
 लतान नये। तुरसी तिहूँकी रीम मार॥१३॥ १४॥ अयतुरीया अतीत
 धीव॥१५॥ तुरसी तिहूँकी अपे ब्यातुरीहो। तुरसी अपे ब्यातीनि। घनव
 दलोंगन्योकरे। जो लोपंचमपदलीयानचीन्हि॥१६॥ तुरसी पंचमपदबीस
 जुजिति। तहां के ये सहनांन। तेदा तेद विसरिगए। रहोत बाजी शान। २
 युदकंचनयहका चमणि॥ ग्राहजि अयाहजिसोइ। तुरसी तुरीया अती
 तकोइहें बुधिरहीनकोइ॥३॥ कोऊ औमानजुकरे। अंतरिको पऊपा
 इ। कोउ विविधिसुखायके। बेठावई बुलाइ। संतरहंतपर एकरस।
 दरषेत कहं विसमाइ। तुरसी तुरीया अतीतके। ये लखित ब्योपाइ॥४॥
 कीरीकुंजर अरिजुमिति। यावरजंमजान। तुरसी कहंत विषसता।
 सबस्यो एकसमान। पदेषन वारो रामहे। जो देखिये सुरंगम। औसी इहि
 उदैतई। फटिगई विषया बांसा। अरध अरध दशौदिशा। तैपे ताको ना
 म॥ तुरसी औरन नासई। जनको आवौं जामा। ॥१५॥ १६॥ अय
 लोतको परि करन॥२०॥ कोटि सुरतनकोटि सचि। कोटि रावगुन
 ग्रथ। तुरसी जब लगली नहै। तब लगसबै बिरथा। १। कोटिक गुनकोटि
 कचतुरई। कोटिक बात बनावही। कोटिक गानतांन तककोटिक।
 कोटिक अरथ सुनावही। कोटिक घुरानपदि जुबड विधिकें। पंडित
 तांम कहो वही। तुरसी एक लो नर बिआगें। नहि ॥ २॥ बिपिनां वही
 ॥२॥ लो नसमान तपायकोऊ। सोहसमिन अर
 लंककोऊ। क्रोधसमिन शिपिआन।
 निदहियो सकल

ग

रनीकैमांही। तुरसी करनी हंस्यो न्यारा। जा करनी में अहं विकारा। ७५।।
 कहर हनी कथनी करता। उपजे अहं विकार। सो करती कथनी
 नकबू। तुरसी मांथे मारि। ७६। कहां करनी कथनी करता। जो उपजे
 बल आन। तुरसी सो करनी नकबू कथनी हं नरम जोत। ७७। तुरसी
 केते कहि गये। केते कहै गो आइ। कितेनी अजहूंक है वहै। ये रहनी र
 घान जाइ। ७८। रहनी र घान जाइ। कहां ही सब ऊं सिया। तुरसी र
 हणी बाहिर। कौं पावै करतार। ७९। रहनी मांही रोम है। कहनी मां
 हिक बूनां हि। तुरसी रहनी दिठग है। मत्त न लो क हवी मां हि। ८०। र
 हने सिरषी बात है। कहने सिरषी नां हि। कहें कहै करता मिलौ। तो क
 बिता बडू कलि मां हि। ८१। रहै कहै ग्पानी सोई रहै कहै सोई संतार
 है कहै सोई पंडिता। भेटै पदना वंता। ८२। करनी पूरा चाहियो। कथ
 नी हो हम हीइ। तुरसी हरि दरवार में। दादिल है गा सोइ। ८३। १६२२
 अथ को सीतर को पर करना। २३। तुरसी तीनी लोक में। अधिया को
 मूर। एक अके लोकाम है। रस्यौ सकल घट पूरा। जाव देखुति हं लो
 क में। मलिन करम बिस्वार। तुरसी ता सब हिन को। कारन कां स वि
 कार। २४। कांम समान को कत ही। वली जया से सार। तुरसी सकल जी
 व जीते जु जिहि। मारि मिलाये बार। २५। चौपई। काला मुषया कुटि
 ल जु केरा। जिहिं जीव करि राष्या सब चेरा। तुरसी उबं दित सक्या को
 इ। विन सत गुर की क्रिया सोइ। २६। साधी। सत गुरु हूं सरनै कोऊ। क
 दां चिको मरत होइ। महा बज्र पापी जु सो। दिन का मूला जोइ। २७। स
 त गुर सरनै आइ करै। जो न रनु गतै कांम। तुरसी लोक प्रलोक में।
 कहै न ल है विश्राम। २८। कहां गुप्त पर गटक हं। कहां देस पर देस। तुर
 सी नु गतै कांम ना। लज वै गुर की नेसा। २९। गुर लाजे ताजे सु बुधि। ज्ञान
 दीय बु फिजाइ। जब न रनु गतै कांम ना। त वै इती होइ आइ। ३०। कांमी न
 डो कुबधिका। सु बुधिन करै प्रवेस। तुरसी क्रम कसावते। गिनै न देस

१०॥ ॥५॥ तुरसी कहा जागत सो वत कहो ॥ जो त बरवै नारि ॥ कंचत मई जो
गा सोई ॥ और काच उन हारि ॥ ॥६॥ जाके उर मधि नो निदो ॥ त्रिये कटा ठिके
बोना ॥ तुरसी या त्रिये लोक में ॥ सो अती त प्रदान ॥ ॥७॥ काम जी तिरं मही
न जै ॥ त जै त्रिगुन को तेद ॥ तुरसी चौथा पद मही ॥ मिलि जन होइ विदेह ॥
॥८॥ चौपई ॥ निजर होइ कां सहि जु मितावे ॥ निरमल रंमनां मस्यो लये
तुरसी त्रैसा कोऊ होइ ॥ जगु में जो गी कहिये सोइ ॥ ॥९॥ साधी ॥ जास
दर उतप न नया ॥ तास पटं तर जोइ ॥ तुरसी जेती देखीये ॥ माता आपनी सो
इ ॥ १०० ॥ चौपई ॥ प्रथम नारि यी छै महतारी ॥ देखी यह हे रं न विचारी ॥
तुरसी जिन अजुग तिय ह देखी ॥ ते रहत जिन गये बंबेकी ॥ १०१ ॥ यह अ
जुग तिया जगति के मां ही ॥ ताहि जुकेऊ समजे नां ही ॥ तुरसी जिन उलटी
यह जोनी ॥ तिन हूं सकल त्रिया माता मानी ॥ १०२ ॥ साधी ॥ कश्जोरै सब
कामनी ॥ पिये पितास मान ॥ जब जन रत नया रंमस्यो ॥ तुरसी गहि गुरग्या
न ॥ १०३ ॥ ग्यां न गद्या गुर देव का ॥ उरत जिग्या अनां ॥ तुरसी जन निरमल
नया ॥ पाया सीतल संग ॥ १०४ ॥ सीतल संग हम पाईया ॥ संत जनों का सो
इ ॥ तुरसी ता प्रसाद स्यो ॥ रहे जू पानी होइ ॥ १०५ ॥ चौपई ॥ सत गुर अरु सं
वन की बोनी ॥ अति सीतल अति अमल जु जोनी ॥ तुरसी जिनिय रसी विम
लाइ ॥ तिन की अंतगजल गई सिराइ ॥ १०६ ॥ साधी ॥ तुरसी कृत कृत नये
ते ॥ जिन काम की या निरमूर ॥ रंमना मस्यो रचि रहै ॥ रोमरो मस बपूर ॥
१०७ ॥ स्वप्नंतर हूं न सर वरी ॥ चढो गगनि घरि बिंद ॥ तुरसी ताके मुख प
रि ॥ मानो चमकत चंद्र ॥ १०८ ॥ चौपई ॥ कीटिक बंदइ कत्रनु की जो ॥ ता
साधू की सो ना हो जै ॥ तुरसी तऊ न तुलई तासा ॥ जो नांद बिंद ले चढ्या अ
कास ॥ १०९ ॥ साधी ॥ तिलक उर धजिन के वंदे ॥ उने नांद अरु बिंद ॥ ता ज
न को मुख निरघतौ ॥ उपजै अति आनंद ॥ ११० ॥ नांद बिंद होउ अग्र धरि ॥ ग
या गगन घर सोइ ॥ तुरसी तास अतीत की ॥ सो नाकी नही कोइ ॥ १११ ॥ तु
रसी सो नाको कोऊ नही ॥ तीनों लोक मारि ॥ जो यह नेद बिसरि गया ॥

॥५॥ तुरसी कहा जागत सो वत कहो ॥ जो त बरवै नारि कंचन मई जो
गा सोई और का चउत हरि ॥ ॥६॥ जाके उर मधितां तिदें त्रियेक टाठिके
बान ॥ तुरसी या त्रिये लो कमें ॥ सो अती त प्रवांन ॥ ॥७॥ काम जी तिरं मही
न जो ॥ त जे त्रि गुन कौ तेद ॥ तुरसी चीया पद मही ॥ मिलि जन होइ विदेह ॥
॥८॥ चौपई ॥ निजर होइ कामहि जुमिटावै ॥ निरमल रंग मनां मथ्यो लावै
तुरसी त्रैसा कोरु होइ ॥ जगु में जोगी कहिये सोइ ॥ ॥९॥ साधी ॥ जास
दर उतपत नया ॥ तास पटं तर जोइ ॥ तुरसी जेती देषीये ॥ माता आपनी सो
इ ॥ १०० ॥ चौपई ॥ प्रथम नारियो छै महतारी ॥ देषीय हू हे रं न विनारी ॥
तुरसी जिन अजुग तिय हू देषी ॥ ते गृह त जिन गये बंबेकी ॥ १०१ ॥ सह अ
जुग तिया जगति कैं मां ही ॥ ताहिनुके ऊ सम कैं नां ही ॥ तुरसी जिन उलटी
यह जोनी ॥ तिन हूं सकल त्रिया माता मानी ॥ १०२ ॥ साधी ॥ कर जोरै सब
कामनी ॥ पिषे पितास मान ॥ जब जन रत नया रं मथ्यो ॥ तुरसी गहि गुर म्या
न ॥ १०३ ॥ ग्यांन गद्या गुर देव का ॥ उर त जिग्या अतंग ॥ तुरसी जन निरमल
नया ॥ पाया सीतल संग ॥ १०४ ॥ सीतल संग हू मपाईया ॥ संत जनों का सो
इ ॥ तुरसी ता प्रसाद स्यो ॥ रहे जू पानी हीइ ॥ १०५ ॥ चौपई ॥ सत गुर अरु सं
तन की बानी ॥ अति सीतल अति अमल जुजानी ॥ तुरसी जिन परसी विस
लाइ ॥ तिनकी अतंग मल गर्द सिराइ ॥ १०६ ॥ साधी ॥ तुरसी कृत कृत नये
ते ॥ जिन काम कीया निरमूर ॥ रं मना मथ्यो रचि रहै ॥ रोम रोम सब पूर ॥
१०७ ॥ स्वप्न तर हूं न सर वर्श ॥ चढे गगनि घरि बिंद ॥ तुरसी ताके मुख प
रि ॥ मानों चमकत चंद ॥ १०८ ॥ चौपई ॥ कोटिक चंद इकत्र जुकी जो ॥ ता
साधू की सो नाही जो ॥ तुरसी तऊन तुलई तास ॥ जो नांद बिंद ले चढा अ
कास ॥ १०९ ॥ साधी ॥ तिलक उर धजिन के चंदे ॥ उने नांद अरु बिंद ॥ ताज
न कौ मुख निरघतों ॥ उपजे अति आनंद ॥ ११० ॥ नांद बिंद होउ अग्र धरि ॥ ग
या गगन घर सोइ ॥ तुरसी तास अतीत की ॥ सो नाकी नही कोइ ॥ १११ ॥ तु
रसी सो ना कौ कोऊ नही ॥ तीनों लोक मरारि ॥ जो यहु नेद विसरि गया ॥

मानन कोइ ॥ १ ॥ सकल साख सुवृत्तिक है ॥ पुनिक है संतसु जंत ॥ तुरसी सील
 सुधरमिसमि ॥ नही धर्म को ऊ आन ॥ २ ॥ चौपदी ॥ सील धर्म सबही को ठीके
 सील बिना सबला गौफीको ॥ तुरसी जो मुख सुंदर ही ॥ नो सा बिना न सो न
 तसोइ ॥ ३ ॥ ताधी ॥ नासा बिना न सो नई ॥ सुंदर नर को मुख ॥ तुरसी श्रीसे
 सील बिना ॥ सबही धर्म निरुषा ॥ एकादसी जु आदि ॥ जावते पुत्र तसार
 तुरसी ता सबही निमें ॥ सील सुव्रत अधिकार ॥ ५ ॥ सील बिना एकादसी ॥
 सील बिना तपदान ॥ तुरसी श्रीसे जान हं ॥ जूं कूंडल बिताका न ॥ एक
 अतकत के बांतसौं ॥ नजी नजी फिरै सोइ ॥ तुरसी तांतीतिके नजि ॥ अ
 नेनया कहिकोइ ॥ ७ ॥ तुरसी सतिव्रत सीलव्रत ॥ दयाव्रत प्रतिपालिस
 ब्रतनिमें सारा ॥ संतनिलीये निरवालि ॥ ८ ॥ चौपदी ॥ तामे सील धर्म अ
 धिकाई ॥ दया सतितातास सहार्इ ॥ तुरसी जा उर उदये रह ॥ सुफल रूप
 है तिनकी देह ॥ ९ ॥ १० ॥ तुरसी सील सुधर्मकी ॥ महिमा बरनी न जाइ
 ताहि जपतप जज्ञादि ब्रत ॥ रहे सकल सिरताइ ॥ १० ॥ जहां सील संतोष
 तहो ॥ जहां संतोष तहो सुष ॥ तुरसी जहां सुष स्वप्न हं ॥ देषिये न डष सु
 ष ॥ ११ ॥ डष सुष नाहित देषिये ॥ बहिर हो धीर ज ध्यांन ॥ तुरसी सील सं
 तोष तहो ॥ तहां तहां ए सहनांन ॥ १२ ॥ चौपदी ॥ तुरसी सील संतोष जु सी
 ऊ ॥ त्रिविधिति मरहरदीप गदोक ॥ जा उरि उदित नये हें आइ ॥ धनिध
 नितानरकी काइ ॥ १३ ॥ अल्प अत अल्प ही जु पाती ॥ अल्प ही निद्रा
 अल्प ही वांती ॥ तुरसी श्रीसी जु गति गहावे ॥ सोई सुष नलें सील को या
 वे ॥ १४ ॥ तुरसी नै नानी वै राषे नित ॥ त्रिये देषिन ही चलावे चित ॥ आदि अ
 ति श्रीसें जु रहावे ॥ सोई सुष नलें सील को यावे ॥ १५ ॥ तुरसी जेता कत्रिय
 देषियत जगु मोही ॥ लघु ही रथ मधि जहां तहो ही ॥ माता बहन पुत्री जु जग
 वे ॥ सो सुष नलें सील को यावे ॥ १६ ॥ १७ ॥ पतिव्रता हं स्यौं अधिक ॥ सदा सी
 लव्रत नारि ॥ तुरसी वा नृगतै अल्प सुष ॥ वा सुष अथै मुरारि ॥ १७ ॥ सिंह
 हरी गिरतै यसे ॥ नावे बहौ सिर लोह ॥ ए जु वासन लहोईयो ॥ ये सील न

मतिहोह ॥१८॥ अमतिदहौं नदीवां वहीं ॥ नलकंजरमारोधा ॥ एजुवास
 नहो प्रीतिस्यो ॥ येसीलगायौं नखहा ॥ १९ ॥ सुषसंयै धनजाऊ सवा ॥ सायावि
 प्रवाबीस ॥ तुरसीतनमनतवलोगो ॥ सीलरहौं दंसदसीस ॥ २० ॥ सीलगये सब
 शतहै ॥ ग्यांनघांनवेरगा ॥ सीलरहै सबरहै तहै ॥ तुरसीमस्तनाग ॥ २१ ॥
 १०१ ॥ अथसाचकोपरिकरन ॥ २२ ॥ तुरसीनावेबौजोवेदमता ॥ नावैवि
 विमुधिकहैंसांखकहैं विप्ररांता ॥ नावैमततिहूं लोकके ॥ येनहीकोऊसाच
 समाना ॥ १ ॥ साधकहैंसास्त्रकहैं ॥ फुनिसुमृत्तिकहैंसोशतुरसीसुरनरसबक
 हैं ॥ सावसमाननको ॥ २ ॥ साचामघसबवपरो ॥ हेजुसियेवनिसारा ॥ तुरसी
 ताहिगहिसंतजना ॥ अंतरिगाएनवपारा ॥ ३ ॥ तुरसीनवजलतिस्योजुचाहिए
 त्रैसाचीनांघसंजो ॥ मिथ्याकेनेरेनवढि ॥ बडतकबूडेलो ॥ ४ ॥ तुरसी
 मिथ्यानेरोजरजरो ॥ अतिंतफूटीआंहि ॥ जानिअजांनिचढौकोऊअथ
 विविबोरेताहि ॥ ५ ॥ मिथ्यामलमहांअतिबुरो ॥ बज्रलेपलमिज ॥ तुरसी
 कौंहीनखूटेश ॥ जोलौंसतिजलनहा ॥ ६ ॥ तुरसीसतताजलनहायेबिनां
 मधिषवेसजकरिरह्यो ॥ सीयेहंखूटेनाहि ॥ ७ ॥ तुरसीसतितामुषिसतितारिं
 सतितासर्वत्रहो ॥ रोमरोमसबतनबसो ॥ तबसतितासतिजो ॥ ८ ॥ चो
 पई ॥ बितवंबेकउचरेसतिवांती ॥ ताहंमांहिमरेकबूपांनी ॥ तुरसीबंबेक
 हास्योबोले ॥ ताहिकरमकंठिकनहीजोले ॥ ९ ॥ साघी ॥ तुरसीकहिवोसाच
 को ॥ कठिनषडेकीधारा ॥ साचकहैंजनउबरे ॥ कोपकरेसंसार ॥ १० ॥ साचकहि
 आसंतजना ॥ बिरलेयासंसार ॥ फुरंजावतजगतको ॥ तगाताबहोतअपार
 ॥ ११ ॥ मिथ्यावादीमवमुषी ॥ मनरंजनसंसार ॥ तुरसीतेसबसाचको ॥ सरमतल
 षेत्पारा ॥ १२ ॥ कालामुषउनअज्ञनिका ॥ जिनकेगूढहीषेह ॥ तंजकरिकरिउदर
 जुनरो ॥ नाहीसाचकोलेह ॥ तुरसीदेजापरहोग ॥ तामेंनहीसंदेह ॥ साधकहैं
 सास्त्रकहैं ॥ सबकोनिश्चोएह ॥ १३ ॥ तुरसीशैसेअनृती ॥ इंद्रीअजितअज्ञ
 ना ॥ नरकजातनासिरसहै ॥ मोहिरंमकीआना ॥ १४ ॥ तुरसीशैसेजडनिको ॥
 भूविनकोसंगसो ॥ स्वप्नंतररुनकीजाए ॥ जागृतकीकहैंको ॥ १५ ॥

माननकोइ ॥ १ ॥ सकलसाखसुसृष्टिकहै ॥ पुनिकहैसंतसजान ॥ तुरसीसील
 सुधरमिसमि ॥ नहीधर्मकोऊआन ॥ २ ॥ चौपई ॥ सीलधर्मसबहीकोठीके
 सीलबिनासबलागोफीको ॥ तुरसीजोमुखसुंदरहीइ ॥ नासाबिनानसोन
 तसोइ ॥ ३ ॥ चाधी ॥ नासाबिनानसोनई ॥ सुंदरनरकोमुख ॥ तुरसीअैसे
 सीलबिनासबहीधर्मनिरुष ॥ ४ ॥ एकादसीजुआदिये ॥ जावेत्सुबतसार
 तुरसीतासबहीनिमें ॥ सीलसुबतअधिकार ॥ ५ ॥ सीलबिनाएकादसी ॥
 सीलबिनांतपदान ॥ तुरसीअैसेजानहं ॥ जूंकूडलवितकान ॥ ६ ॥ एक
 अतकतकेबांतयौ ॥ नजीनजाफिरैसोइ ॥ तुरसीतानीतिकौतजि ॥ अ
 नेनयाकहिकोइ ॥ ७ ॥ तुरसीसतिब्रतसीलब्रत ॥ दयाब्रतपतिपादि ॥ स
 ब्रतनिमेंसारण ॥ संतनिलीयेनिरवालि ॥ ८ ॥ चौपई ॥ तामेसीलधरमअ
 धिकाई ॥ दयासचिताताससहाई ॥ तुरसीजाउरउदयेएह ॥ सुफलरूप
 हैतिनकीदेह ॥ ९ ॥ साधी ॥ तुरसीसीलसुधर्मकी ॥ महिमावरनीनजाइ
 ताहिजपतपजसादिब्रत ॥ रहेसकलसिरताइ ॥ १० ॥ जहांसीलसंतोष
 तहो ॥ जहांसंतोषतहोसुष ॥ तुरसीजहोसुषस्वप्नहं ॥ देषियेनइषसु
 ष ॥ ११ ॥ इषसुषनाहितदेषिये ॥ बहिरहोधीरजध्यान ॥ तुरसीसीलसं
 तोषतहो ॥ तहोतहांएसहनान ॥ १२ ॥ चौपई ॥ तुरसीसीलसंतोषजुसो
 ऊ ॥ त्रिविधितिरदरहीयगहोऊ ॥ जाउरिउरितनयेहैआइ ॥ धनिध
 नितानरकीकाइ ॥ १३ ॥ अल्पअनअल्पहीजुपानी ॥ अल्पहीनिद्रा
 अल्पहीबांनी ॥ तुरसीअेसीजुगतिगहावे ॥ सोईसुषनलैसीलकोपा
 वे ॥ १४ ॥ तुरसीनैतानीवेराषेनित ॥ त्रिवेदेषिनहीबलावेवित ॥ अदिअ
 तिअेसैजुरहावे ॥ सोईसुषनलैसीलकोपावे ॥ १५ ॥ तुरसीजेताकत्रिय
 देषियतजगुसांही ॥ लघुदीरघमधिजहांतहोही ॥ मातावदनपुत्रीजुअन
 वे ॥ सोसुषनलैसीलकोपावे ॥ १६ ॥ साधी ॥ पतिब्रताहंस्योअधिक ॥ सदासी
 लवेतनारि ॥ तुरसीवात्तुगतैअल्पसुष ॥ वासुषअवेसुरारि ॥ १७ ॥ सिंह
 हरीगिरतेपहो ॥ नावेवहीसिरलोह ॥ एजुवासनलहोईको ॥ पेसीलन

गमतिहोह ॥१८॥ अमतिहोतदीयां बहो ॥ नलकंजरमारोधा ॥ एजुजास
सहोप्रीतिस्यो ॥ येसीलगायोनसुहा ॥ १९ ॥ सुषसंयैधनजाऊसवा ॥ मायावि
सवाबीस ॥ तुरसीतनमनतबलोग ॥ सीलरहैरंसदसीस ॥ २० ॥ सीलगायेसव
जातहै ॥ ग्यांनघ्यांनवैरगा ॥ सीलरहैसवरहैतहै ॥ तुरसीमस्तनाग ॥ २१ ॥
१२०१ ॥ अथसाचकोपरिकरतः ॥ २२ ॥ तुरसीनावेषीजीवेदमतात्तावैवि
विशुद्धकहेंसास्त्रकहेंविषुरंनानावैमततिहंलोककोपैवहीकोऊसाच
समाना ॥ १ ॥ साधकहेंसास्त्रकहें ॥ फुनिसुमतिकहेंसोशातुरसीसुरवरसबक
हैसाचसमाननकोड ॥ २ ॥ साचामघसबअपरोहैजुसिरेवनिसारा ॥ तुरसी
ताहिगहिसंतजनाउतरिगाएनवपारा ॥ ३ ॥ तुरसीनवजलतिमोजूचाहिए
मोसाचीनांनसंजोड ॥ मिथ्याकेनेरेनचढि ॥ बडुक्तकबूडेलोड ॥ ४ ॥ तुरसी
मिथ्यानेरोजरजरो ॥ अतिंतफूटीआहिया ॥ जानिअजांनिचढोकोआश्रधा
विचिवीरेताहिया ॥ ५ ॥ मिथ्यामलमहांअतिबुरो ॥ बज्रलेपलमिजाड ॥ तुरसी
कोहीनसूटईजोलीनसतिजलनहाड ॥ ६ ॥ तुरसीसतताजलनहायेविशो
मधिपवेसजुकरिरह्यो ॥ मोयेहंसूटेनाहिया ॥ ७ ॥ तुरसीसतितामुषिसतितारिदे
सतितसर्वत्रहोइरामेसबतनबसो ॥ तवसतितसतिजोड ॥ ८ ॥ जोप
पई ॥ बितबेवेकअचरेसतिबोनी ॥ ताहंमांहिमरैकबूपांनी ॥ तुरसीबेवेक
होस्योबोले ॥ ताहिकरमकंठिकनहीजोले ॥ ९ ॥ साधी ॥ तुरसीकहिवोसाच
को ॥ कठिनघंडेकीधारा ॥ साचकहेंनतउबैरै ॥ कोपकरैसंसार ॥ १० ॥ साचकहि
यासतजन ॥ विरलेयासंसार ॥ कूरंजावतजगतको ॥ तगाताबहोतअपार
॥ ११ ॥ मिथ्यावादीमनमुषी ॥ मनरेजनसंसार ॥ तुरसीतेसअसाचको ॥ मरमतल
पैलमार ॥ १२ ॥ कातासुषउनअचनिका ॥ जिनकेरूबहीषेह ॥ हंतकारिकरिउदर
जुनरे ॥ नाहीसाचकोलेह ॥ तुरसीदेजापरहिग ॥ तामेंनहीसंदेह ॥ साधंधकेहें
सास्त्रकहें ॥ सबकोनिश्चोएह ॥ १३ ॥ तुरसीत्रैसेअनृती ॥

साचरुत्वसुधिकोनही कहांआइकहंजोहि कहांकरनीहंमकरतहैं त
 नमनआत्ममोहि १६ काब्रवपरकुमुधीकटिला कुमारागते तेषोसा
 चहीकाकरै ॥ विषयारसिमोते ॥ १७ पषापषीलाजालजी सरमासरम
 सोइ रूकाचसुषसंगहै साचपदार्थषोइ ॥ १८ चौपरी ॥ तुरसीसाच
 सबनियौन्यार कहांवरनकहो बूढाबारा कहांही कं कहांसुसलमान
 विनसमरथगुरकौऊतजोन ॥ १९ ॥ राषी ॥ तुरसीसाचेगुरवितां साचा
 मारगसोइ अरुसाचीसंगतिवितां पाइवेसकवकोइ ॥ २० ॥ चौपरी ॥
 तुरसीसाचसोईतलजानै ॥ कीयाकौंकरै जुकानै ॥ अतकीयाअनथाप्यदेव
 ताकीकरैअषंडितसेवा ॥ २१ ॥ राषी ॥ तुरसीकीयाकौंकानैकरै ॥ अतकी
 याअरधारी साचरुसीवांचुपहा ताहिलेऊतीकें निरवारि ॥ २२ ॥ तुरसी
 साचएकजुबइहै ॥ मिथ्यातीनोदेह ॥ तातीनोकोत्यागकरि वतुरथका
 वौनेह ॥ २३ ॥ तुरसीइहैसाचआकासवता ॥ चिदधतआत्तराम ॥ श्रीरघु
 वतमिथ्याजगत ॥ उतपतिषपतिकोधाम ॥ २४ ॥ तुरसीअजेबिनसई सोतो
 साचतहोइ ॥ साचसुथिरअधिरअमल ॥ सेतवषांनैसोइ ॥ २५ ॥ चौपरी ॥
 तुरसीइहैसाचसुरतिसप्ततिनकहा ॥ इहैसाचसुधसंतकिलहा ॥ अथ
 धजीवसाचहिकाजानै ॥ तऊदधताएकहितानै ॥ २६ ॥ राषी ॥ तुरसीपंडि
 तसोईजपदगहै ॥ साचरूवकसिलेश ॥ कौंसक्रीधअहंकारे ॥ पलनरिया
 वनदेश ॥ २७ ॥ महोसुअधिरकौअरथ ॥ नित्रिचिनिकरेबषांन ॥ तुरसीक
 बुलुकवैनही ॥ सोपंडितपरवान ॥ २८ ॥ हीइसुसलमानकी ॥ राषीनाषेतां
 हि ॥ तुरसीज्योहैसोकहै ॥ सोसाचाजुगामोहि ॥ २९ ॥ सुसमरीकेतेनही ॥
 काऊकीकरिआस ॥ सहानिरसीतावरत ॥ तुरसीस्वासेस्वास ॥ ३० ॥ सुष
 मिथ्यानाषेनही ॥ गहैंरहैंअतएह ॥ तुरसीमिसिदितप्रीतियो ॥ एमतांमउ
 चरेह ॥ ३१ ॥ तुरसीमिथ्यातावला ॥ जावतचित्तमेंआन ॥ एमनांमबिसरा
 इकें ॥ नज्योकरैविषयान ॥ ३२ ॥ तुरसीएकविषयाअस्थूलवतइकअ
 तिस्कासोइ ॥ सकलमिथ्याकोमूहाए ॥ गतविनसुकतिबहोइ ॥ ३३ ॥ ५

॥ चौपई ॥ सकलमिथ्या निरमूर होइतासे ॥ संपूरन आइसा चप्रकासे ॥ त
 रसी मुकति हीं तमें सीइ ॥ तब निश्चै संसान ही कोइ ॥ १३॥ १००५ ॥ अथा
 तरम विधस को परिकरना ॥ १३॥ तुरसी अचर ज एक अनूप है ॥ देशि उप
 जै है राना ॥ संत सजीव निछाडि कै ॥ परत छिपू जै पाषाण ॥ १४ ॥ परत छिपू जै
 पाषाण के ॥ करि करि बडुं तपियारा ॥ जिन हे प्रोण पिंड जीव दीया ॥ सो प्रच
 धसा बिसारि ॥ १५ ॥ तन मंदिर में रमिर घा ॥ अलष निरंजन देवा ॥ तुरसी ता
 हि बिसारि ॥ करहिं कृतमकी सेवा ॥ ३ ॥ तुरसी दास त्रिये लोक में ॥ प्रति
 मांत वसारा ॥ एक सांई एक संत जना ॥ परसिन एव कुंपारा ॥ तुरसी दास त्रि
 यलोक में ॥ प्रतिमा प्रचुको नाम ॥ तांम निरंजन निरमला ॥ ताहि नजो तजो वा
 माया ॥ मूरति में अमूरति बसे ॥ अमल आत्माराम ॥ तुरसी चरम बिसरइ के
 वाही को लें नाम ॥ ६ ॥ तुरसी ताही को उरमां हि ॥ अलटिकिन से वी असे ॥ ज्यूस
 रति पाषांता ॥ जगत जल से वै तै सी ॥ ७ ॥ तुरसी सरधा जगत की ॥ जल पषांन के
 मां हि ॥ जे राते अरि वितरं मस्यो ॥ ते रचित होत जाहि ॥ ८ ॥ तुरसी जिन पाई जु
 वै ॥ सुष समुद्र की सी राते वहित जिय हकी पो वै ॥ सहतु बिवह गनी रा ॥ ए
 अष्टधात को सरगडि ॥ अध ही यो उतमा ॥ तुरसी सीइ हां क्यो रचे ॥ जिन दे
 षो सतिनां ॥ १० ॥ रविये सी कै से रचे ॥ जिन अरचित लीयां उरलाइ ॥ तुरसी
 दास ही रा अठित ॥ कंकर लेइ बलाइ ॥ ११ ॥ जो धिर कों धिर से वडी ॥ तौ अधि
 रक बहन हीइ ॥ तुरसी अधिर कों नजे ॥ तौ अधिर हो वै सीइ ॥ १२ ॥ अरचित
 अगहि अषडपद ॥ घट मौर है समांइ ॥ तुरसी ता प्रचुके अठित ॥ बाहरि चमे
 बलाइ ॥ १३ ॥ चौपई ॥ बाहरि चमे बलाइ हे मारी ॥ हम पाए घटमां हि मुररी ॥
 तुरसी घटत जिवा हरि गए ॥ तिन के काजक बुन हिनए ॥ १४ ॥ साधी ॥ ताव
 त कारि जना से रो ॥ जावत यह अज्ञा ॥ चित्रकार तजि चित्रको ॥ करि पूजे त
 गवांन ॥ १५ ॥ चौपई ॥ तुरसी सब चित्रका विरते रत हारा ॥ निरतरि रहि
 या जु न्यारा ॥ चित्र ही सौं लागे सबकीइ ॥

तुरसी है हैरनी यह ॥ अदरूदमोजियमां हि ॥ जिहि सिरजेताहिनासने ॥
 रक्तोपूजनजां हि ॥ १० ॥ परपदकोलषिनासकें ॥ नरमकरमकी वीट
 तुरसीतरमही होइरयो ॥ जीवसीव विधिकोट ॥ ११ ॥ बहरिं सबनां
 कें ॥ विवेमनफेलाइ ॥ तुरसीषलीषलकसब ॥ तिहिसेवापतियाइ ॥ १२ ॥
 तवउजलकरिउदककरि ॥ मनहीकांलिमांकांमा ॥ इहिसेवाइहिं बंदागी
 तुरसीरिमैतरंम ॥ २० ॥ न्हावैधौवैनेमस्यो ॥ बरतनिबाहैवोरा ॥ जिन्हकर
 नीकलविषमिठै ॥ लहेनहीसीसीठोर ॥ २१ ॥ मनचितमनसासुधनही ॥ ता
 तमजेकाहोइ ॥ कोगदिनप्रतिधीइए ॥ तऊवउजलहोइ ॥ २२ ॥ निदाकरिके
 उमतिगिनो ॥ हेमकहैसरोतरबात ॥ तनमजेमनमलमिठै ॥ तीजलचर
 नितहीनहाता ॥ २३ ॥ तुरसीजावतसुबइंटीनही ॥ तावतसुचनसरीरा ॥ न
 वैसदाविधिज्जगतिष्यो ॥ मलिमलिन्हावौनीरा ॥ २४ ॥ जलमजेतनमलमि
 ठै ॥ मनमलमिठैनताइ ॥ तुरसीमनमलतवमिठै ॥ जवनांवनीरमैन्हाइ ॥ २
 २५ ॥ तुरसीगंगअसनानकरि ॥ फूलिजबैवोकोइ ॥ कामक्रोधमलमिठै
 बिना ॥ मुकक्तिनकबहंहीइ ॥ २६ ॥ तुरसीइंडीसुबनई ॥ तीसबसुचिया
 धीसोइ ॥ तनमनसबपावनतया ॥ कितकरनैरह्यांनकोइ ॥ २७ ॥ अमअ
 चारीसोई ॥ करैज्ञानआचार ॥ तुरसीक्रोधचंडालको ॥ परसैनहीलगार
 ॥ २८ ॥ अरधाताअरधनिमषमना ॥ इतउतजाननदेइ ॥ तुरसीराषेनांवमो
 आचारीसोश्रेय ॥ २९ ॥ मुषमिष्याताषेतही ॥ आचारीसोश्रेय ॥ तुरसीमु
 षकवाइतसुवै ॥ सीतलराषेनैहो ॥ असुत्तोरतेअठकिसन ॥ राषेघट
 मैगोइ ॥ तुरसीज्ञानआचारइह ॥ जातेविरलाकोइ ॥ ३० ॥ तुरसीधागावैतए
 कब्रसहै ॥ व्यापकसबघटमां हि ॥ मणिगाणवतनानाजुतव ॥ तहंसए
 गहोइताहि ॥ उचैनिकीनितिनितिलषै ॥ कनीनराषेमां हि ॥ तुरसीज्ञान
 आचारयह ॥ सबसाधूजकहांहि ॥ ३१ ॥ तुरसीयहस्राचारविधि ॥ बिस्वा
 कोऊजांत ॥ ओरउपरन्हां योकरो ॥ मिठैतमैलअज्ञां ॥ ३२ ॥ देहहंमारैदेह

रा॥ देव आत्मा रामा॥ वृषी ताको सेवती॥ सिधि हो दिस बकोमा॥ ३३॥ अमल अ
 मूरति आत्मा॥ अकल जोति प्रकासा॥ तुरसी रिदम धिरा जई॥ सेवो विधियो
 तासा॥ ३४॥ बाहरि जि बहर मुष ब कत वरा॥ पूजे जल गाता॥ अंधरि से वारं मकी
 जब तुरसी राता॥ ३५॥ मानसी कसे वा करे॥ हरि की रिदा स्थाना॥ तुरसी गति
 तो जगतकी॥ काजनि जगत अज्ञात॥ ३६॥ मातसी कसे वामुनि नउत्त आ
 धी आदि॥ संद नागा ताजी वको॥ जीव उथं मे तादि॥ ३७॥ अंतरि से वाना मकी
 बाहरि संत अराध॥ उने से वक लिम ही॥ तुरसी आगम अगाधा॥ ३८॥ उने से
 वमा ही रवे॥ मनकी मैल मिटाइ॥ तुरसी सावे दासवै॥ परपद बेठे पाइ॥ ४०
 दीपग करी याता बलमा॥ जावत रजनी ही॥ तुरसी तांत उंते॥ दीपग करे दे
 नकोइ॥ ४१॥ दीपगको बल ता बलमा॥ जावत रजनी रही वाइ॥ तुरसी तां
 वुद्धे वये॥ दीपग जाइ बिलाइ॥ ४२॥ चौपई॥ दिन मधे दीपगको पान॥ तुर
 सी बलेन निमष परवांत॥ जहां जहार जनी जु अंधियारी॥ तहां तहां ही ल
 गी प्यारी॥ ४३॥ असे ही कनिष्ठ धर्म इतीको॥ तुरसी तावत लागीनीको॥ जाव
 त उतम धर्म त होइ॥ जनम मरवको पौवन सोइ॥ ४४॥ जब उर उतम धर्म प्रकोसे
 तब कनिष्ठ सहज ही नासे॥ तुरसी ज्यो आका सके वारि॥ दिन उदेत ये दिष्टि ते
 नारे॥ ४५॥ साधी॥ उओ उर उतम धर्म॥ तुरसी तांन समाना॥ तब दीपग मई धर्म
 को॥ कबुन वाले पाव॥ ४६॥ दीपग मई कनिष्ठ धर्म॥ परति मां रूपी सेव॥ तुरसी
 उतम धर्म युहा॥ जु नजिबो आत्त देव॥ ४७॥ उतम धर्म जुग जुग मही॥ संतनिकी
 यो प्रतांन॥ तुरसी कनिष्ठ थापियो॥ वित वंतको अज्ञान॥ ४८॥ वित वंतको
 अज्ञान वनरा॥ पाहाई जुय हटेक॥ तुरसी तहां ही बेह परे॥ पंडित वतुर अनेक
 ॥ ४९॥ चौपई॥ तुरसी पूरन धरम पिछान्यानां ही॥ रहियायो वीले उर ही मा
 ही॥ ज्यो दादरक बलके जु नारि॥ तिदन पायो धाई गारि॥ ५०॥ साधी॥ तुरसी
 है हेराती जुय हा॥ अति ही अवि रजये हा॥ देही देही की नजे॥ जपे नरं म अदेह
 ॥ ५१॥ विरैषये सो कित महे॥ अवि र आत्तरं म॥ तारं महि आर धिले॥ तुरसी
 होइ निहकांमा॥ ५२॥ रजत हारा पूजियो॥ पूजिए स पूजिए तां ही॥ तुरसी पू

जनहरा पूजे ॥ पूजनहारेमांही ॥ ५३ ॥ तुरसीग्रह पूजा जुविधि ॥ अधिकारी
ही नलजान ॥ इतरजीवकौडलनहै ॥ जाकेउरअज्ञान ॥ ५४ ॥ तुरसीदेह्या
रीजूतहांलोगों ॥ अविद्यारतजीवा ॥ तेचमचिहेलेपरिरेहे ॥ सुमरिनसकईसी
वा ॥ ५५ ॥ तुरसीकेउजंत्रकेऊमेत्रमें ॥ केऊवैदंगीकरंही ॥ केऊधातपाषंडकी
परेबहावनिमांही ॥ ५६ ॥ तुरसीकेऊयंत्रतमोहननिमें ॥ केऊजोहनजोहि ॥
केऊचाटनिमारननिमें ॥ रहेमुगधयोंमोहि ॥ ५७ ॥ तुरसीकहांलौआषिये
भरमतकीविस्तार ॥ जावतएतावतनहोइ ॥ परपदमेंपेसार ॥ ५८ ॥ तावैसध
पुरीबसौ ॥ गृहवनतीरथवांइ ॥ नखैतुरसीगिरगुहा ॥ मुकतिनबिनहरि
नाइ ॥ ५९ ॥ तावैअरधकरधहंनला ॥ तावैसधिसुवथाना ॥ तरमतजीवकर
बसौ ॥ तुरसीतहांबधमांन ॥ ६० ॥ बक्ताश्रोताबहरमुष ॥ जावतनहीबंबे
का ॥ तुरसीविषैविकारतजि ॥ नजेवहीपदएक ॥ ६१ ॥ बक्ताश्रोताबहरमुष
नजेतआत्माराम ॥ तुरसीबहायेनरमके ॥ बहेजोहिवेकामा ॥ ६२ ॥ तावैप
टिपरबीणहोइ ॥ पंडितवेदपुरांन ॥ तुरसीततलषेबिनां ॥ सबैपचावटि
जान ॥ ६३ ॥ पंडितकौपंडितपनी ॥ तावतहीप्रवांन ॥ तुरसीरगतजेरहे ॥ दोष
नधरईकांन ॥ ६४ ॥ बक्ताआस्योवेदकी ॥ जोपंडितजनहोइ ॥ राशेषगतना
नये ॥ गर्धवकहियेसोइ ॥ ६५ ॥ तुरसीपटिपटिवरुपंडितमस्ये ॥ मुनिगुनि
गुनीअपारा ॥ रागदोषगतनयेबिना ॥ कौऊनउतस्योपार ॥ ६६ ॥ वत्रपष्टनव
अष्टदसा ॥ पटिपंडितहोयकोइ ॥ तुरसीब्रह्मलष्यानही ॥ तीवंकुधेननयेसोइ
६७ ॥ तुरसीकहांलौआषिये ॥ बानीकौविस्तार ॥ नूनहोइअथवाअधिक
ब्रह्मबिनानवबारा ॥ ६८ ॥ चौपट्टी ॥ तुरसीध्रियजुबानीजाकी ॥ लामिनसुर
तिब्रह्मस्योताकी ॥ रातिदिवसकथिवोहीकरे ॥ करनीकिंचितरुंनचितभै
॥ ६९ ॥ साशी ॥ वरणवरणविचारकौ ॥ कीचमांहीअज्ञान ॥ तुरसीपथरही
इरहे ॥ लषेनवेहदज्ञान ॥ ७० ॥ कहैवरनकरताकीये ॥ आप्रसङ्गफुनिसोइ
तुरसीयह्नरममानिषलु ॥ रहेकर्मबसिहोइ ॥ ७१ ॥ तुरसीबर्णनेदकरता
कीये ॥ तोकहियेयेअंत ॥ जोगनेतेलीयेतीकसे ॥ अपनैअपनैचिहेवा ॥ ७२

१२५॥ अनपरचैपरअनतषे ॥ कवेरुवजंजाल ॥ तुरसीउनअंधअप्रविका ॥
 द्वैगाकींनहवाल ॥ २५॥ सावहीनहरिनगाविहं ॥ हीननगातिजोहोइ ॥ तुरसी
 परअनआचरो ॥ तौरिणसनबंधीसोइ ॥ २६॥ गिरहीहोइवैरागको ॥ बनीनेष
 बनाइ ॥ सुजावैसंसारयो ॥ धोइधोइपावैपाइ ॥ करनीकरकमीअवित ॥ विषे
 सुगवैतनअघाइ ॥ तुरसीसोइषतोगवै ॥ अष्टबीसमेंजाइ ॥ २७॥ द्योपडी ॥
 सनकाक्षिककीसाजिवनेष ॥ कबहुनसुमिरैरमअलेष ॥ गिरहीकेसेकर
 सकसाइ ॥ सोनरन्याइरसातलिजाइ ॥ २८॥ वैरागीगिरहीकताई ॥ अपनेअ
 पनेंनेषरहाई ॥ कहजतवहसतमेरहैसाग ॥ तुरसीदोकउतरेपारा ॥ २९॥ वैर
 गीगिरहीकाकोऊजतसतधरसाहैदिहोऊ ॥ तासमानउतमनहीऔर
 तुरसीतीनलोकसिरमौर ॥ ३०॥ यावी ॥ वैरागीकोताबवै ॥ ऐसेविभुवत
 नेष ॥ गलिबागोयगियांनही ॥ सिरयधरीपुनिकेस ॥ ३१॥ याइननोगासिरन
 गिनकेकदाविदेटोपागलमेपहरेगुइडी ॥ कसिबांधैकसिकोपा ॥ विचरो
 विषेविषलोतजे ॥ उरधरिज्ञानअनोया ॥ सहबानोंवैरागकी ॥ तुरसीपावतहस
 ३२॥ वैरागदसातबसोतडी ॥ जबउनेदसाबंधदेश ॥ तुरसीतीनोंत्यागिके ॥ वीथे
 वासालेइ ॥ ३३॥ बनीउजलनगावकी ॥ तबसलराजतरंसा ॥ तुरसीजबउरस्यो
 मिठहिं ॥ कलहिकालिमाकांस ॥ ३४॥ नगतनेषतबरजडी ॥ करैजातकीत्या
 गा ॥ तुरसीजगुत्यागेबिता ॥ अंपरहंसउरकारा ॥ ३५॥ मालासुइतिलकतब ॥
 सोहतजनकैगात ॥ कनकनकबहुंकरगहै ॥ कामनिसंगतसुहव ॥ सतसीत
 लताउरधरे ॥ सुमिरैत्रिसुकेनतात ॥ तुरसीअेसासंतजन ॥ सुषसिंधमेंसमात
 ३६॥ तुरसीतावैनेषहोऊ ॥ तावैहोऊअनेष ॥ जाउरमेंआपानही ॥ नहमेंतेत
 रमरेष ॥ एमनामरतहोइरह्या ॥ अदिअंतिमधियेस ॥ तुरसीअेसाहैकोऊ ॥ सो
 आतरूपअलेष ॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ अचकुवेगतिकेपरिकर ॥ ४०॥ ४१॥
 तुरसीकबहुंनकीजिये ॥ कुसंगीकोसंग ॥ सजनविचिअंतरकरे ॥ लायअपनारंग
 १॥ तुरसीकबहुंनकीजिये ॥ कुसंगीस्योप्राति ॥ सुसंगामोहिविचिर ॥ सहसंतनकी
 रति ॥ २॥ गिरहीहोऊवैरागतल ॥ अथवाकोऊहोऊ ॥ तुरसीकबहुंनकीजि

कुसंगीस्योमोहा॥३॥जितासगाईसंतजनाकरैकुसगाजाइतितीहीअंतरप
 ॥अवसितजनमेआइ॥४॥हरिजननामकहाइके॥मतकोऊकरैकुसगा॥
 कीयेकुसगतहोतहै॥जगतितजनमेंनेगा॥५॥तुरसीकराविश्रैसाहूँजहोइ
 बाहरिदसाविदेहा॥उरकदरजहोइवासना॥तऊतकरिनेहा॥कदाविश्रै
 साहूँजहोइ॥कोऊकुसंगीजीव॥धरतेअधरअधरफिरे॥तऊनताहिधीजीव
 ॥७॥तोतेयहगतिसमाजिकै॥सदासुसंगीदासा॥तुरसीकबहुँनबैसरी॥कुसं
 गीकेयासा॥८॥विषयनिकीसंगतिकीये॥प्यंनधांतघटिजाइ॥तुरसीबुधिन
 लसबमिते॥अबुधिमदेहोइआइ॥९॥विषयेनकीसंगतिकीये॥विषहउ
 पजेआइ॥तुरसीमायामोहमें॥आत्मजाइविकाइ॥१०॥सुरम्याचीउरकिनपरे
 विषईतकासंगएह॥तुरसीनासेचानधनाकीयेकुसगानेह॥११॥तुरसीतत
 हिबिसारिकै॥जगतैविषेविकार॥तितकीसंगतिकीकरै॥वैलेबैवैसंगिवा
 र॥१२॥तुरसीततहिबिसारिकै॥रातेआदरनाइ॥तिनकीसंगतिकीकरै॥वै
 मूरषदेहविहाइ॥१३॥जबजीवकुसंगतिकीकरै॥तंबहीधकानलयाइ॥तुर
 सीहरिनयारहै॥तौधकानलोगेकाइ॥१४॥पतंगपरिवेकोबिसनादीपगद
 हनसनाइ॥तुरसीदीवाहोइवही॥तौपतंगपरैकहंजाइ॥१५॥परनहारहो
 इपतंगा॥तबनवैजुदीपगयासा॥तुरसीहरिनयारहै॥तौकबहुँनहोइवि
 बोसा॥१६॥संसंगतिकीत्यागिकरि॥करैकुसगातिकीइ॥तौतुरसीवापतंगकी
 गतिताहूँकीहोइ॥१७॥बाहरिसंघलुनरनिको॥उरवासनांविकार॥तुरसीउ
 भैकुसगास्यो॥राधेसिरजनहार॥१८॥बाहरितीतरिदसौंदिश॥जितदेधेतित
 सोइ॥तुरसीसकलकुसंगहै॥जावतज्ञाननहोइ॥१९॥काहेकोव्याकरनपदि
 श्मिकरतयहदेह॥एतेहीमेंज्ञानसबा॥तजविषयनिकीनेहा॥२०॥तुरसीअ
 सेसंगतिकी॥छिनसंगकरिनाइ॥पहलीविषयाबहुतकरि॥फुत्रिवकुस्यो
 ललचाहि॥२१॥बिगारिजाइबिधिज्जातिसबा॥कीयोकरायोआरा॥तुरसीजोसत
 संगतजि॥नरबहुँस्योरेवैसंसार॥२२॥संसारहीइसहस्यो॥तामेंसंसेनाहा॥
 रसीजोसतसंगतजि

खनहिकोइ उतमसंगतजिजोकरे कुसंगतियोंसोइ ॥२४॥ जोअवककेरु
 थमें विचरेसिंघसुनाइ ॥ तौतुरसीपानिपघटे केहरितावलजाइ ॥२५॥
 जोहंसामहिरोनको ॥ विचरेवगुहंरमांहि ॥ तौतुरसीमहिमाघटे ॥ हजैवे
 जोमांहि ॥२६॥ अैसेहीसंतसुसीवनरा कुसंगतिमेंसोइ ॥ तुरसीकबहुंतसो
 नई ॥ यहतौयोनहीहोइ ॥२७॥ पतिबरतापलहुंवजो ॥ बिनवारिनिकेंसंग ॥
 तुरसीसुनाइहुंफिरे ॥ तौलगेकालिमांअंग ॥२८॥ तुरसीकारीकंबरिकों ॥
 कोऊतकरैअनुराग ॥ सबहैरानीकरिउमें ॥ जोलगेषामेकोराग ॥२९॥ वासा
 फुनिश्रीसाफसमि ॥ साधूउजलअंग ॥ तुरसीकारीकंबरी ॥ संसारीनिकोंसंग
 ॥३०॥ संसारीअरुसाधसंग ॥ कदाचिकबहुंहोइ ॥ तौतुरसीसोनेनही ॥ अरुन
 लानकहुईकोइ ॥३१॥ कचेकेलागेअवसि ॥ कुसंगतिकोदगा ॥ तुरसीपके
 नांलगे ॥ तऊरहैनिराग ॥३२॥ जोकबुकमीहोइकायामें ॥ तौलगेकुसंगकोले
 स ॥ तुरसीनृमखसंतके ॥ करिनसकेपरवेस ॥३३॥ कुसंगरांगेदेतले ॥ फटक
 रूपरिदमांहि ॥ तुरसीहीरूपमें ॥ जाईजायेताही ॥३४॥ कुसंगतिसिदैतास
 की ॥ जाकेउरमधिआन ॥ तुरसीताकीकाकरे ॥ जोहोइरसामुवासतान ॥३५॥
 कुसंगकोनेतावलगा ॥ तबलगाकाचारंग ॥ तुरसीपाकरंगलगे ॥ तौकरिसके
 नकोऊतंग ॥३६॥ कहांकरेकोऊआइके ॥ तासाधूकेसोइ ॥ तुरसीअभेहरि
 रंगमही ॥ जोरघारंगीसाहोइ ॥३७॥ रंगनांमरगस्यौरंग ॥ जाकेतनमनपान ॥ त
 रसीकबहुंनभेदई ॥ तासकुसंगतिबान ॥३८॥ ॥१६८॥ अययंगारिकीप
 रिकरज ॥३९॥ तुरसीसंगतिसाधकी ॥ सावनसिलासमोन ॥ जलरूपीहरिता
 महे ॥ तहांपषालीपान ॥१॥ तुरसीसंगतिसाधकी ॥ सुषसुमुदकीगा ॥ जेजेजी
 वआएसरन ॥ पहुंचाउसअंग ॥२॥ तुरसीसंगतिसाधकी ॥ सिकलीगरलोसो
 इ ॥ सबदसुसकलाफेरिकें ॥ कारिनिघारेयोइ ॥३॥ तुरसीसंगतिसाधकी ॥ पार
 सकेउतमान ॥ सुधधितहोइपरसेजुते ॥ कनकरूपनयेपान ॥४॥ तुरसीसंग
 तिसाधकी ॥ मानोंसलितासोइ ॥ सुषसमुदकोलेमिले ॥ दुषसमुदकोयोइ ॥
 ५॥ तुरसीसंगतिसाधकी ॥ मनहुंसजीवनमूर ॥ आदिब्याधिरोगानहरे ॥ करैतप

८८ मूरा ६॥ तुरसी सति संगति वितां ॥ पारनया कोऊ नां हि ॥ सब संतनिकी सार
 सह ॥ सर्व ग्रंथ निकै मां हि ॥ ७ ॥ ऊचती वपरसी कोऊ ॥ संतजननिके पाश
 तुरसी सोई पावन होइ ॥ गां गां जे है नाश ॥ ८ ॥ ज्यो जलसिकलिसवगलित को ॥
 कीये गंग प्रवेश ॥ तुरसी गंगो दिक नये ॥ रघो न आन अहिले सा ॥ ए ॥ किन
 रेष्या किन धो सुन्या ॥ पारसतिक टजू लोह ॥ तुरसी परसिक चतस्रया ॥ मिटो
 नाम कुल बोह ॥ १० ॥ जो कदा विया जीवकी ॥ देहित अयतो अंग ॥ तुरसी तो न
 की जियो ॥ संतजन वडंका संग ॥ ११ ॥ साधु संगति परसते ॥ पलकन की जे बांनि
 तुरसी संगति साधकी ॥ पारब्रह्म समजांनि ॥ १२ ॥ मतकी मिटे मखितता ॥ मन
 सा होइ अयंग ॥ वांन मिले नृबांन मे ॥ तुरसी साधु संग ॥ १३ ॥ संसाजनमजनम
 का ॥ जुग जुग तका सोइ ॥ तुरसी निष्येनासई ॥ जो संत समागम होइ ॥ १४ ॥
 तुरसी सत संग ही जु सार है ॥ पारकरन नवसिध ॥ असे सत संग को मरम
 का जाते कोऊ अंधा ॥ १५ ॥ चोपई ॥ सत संगति विन कलुषत जाइ ॥ जाके
 टिक करे ऊयाइ ॥ फिरि आधो नवषंड नुव अंन ॥ सस संगति विनिहीइ न
 वेंन ॥ १६ ॥ सत संगति है साधन सार ॥ परसि परसिके ते नये पार ॥ तुरसी पर
 सि परम सत संगत न मन ॥ असल होइ सब अंग ॥ १७ ॥ साधी ॥ तुरसी जीवन ज
 नमका निपट जु लाहयेह ॥ सत संगत माऊ सने रहै ॥ जब लग है यह देह ॥ १८ ॥
 तुरसी देह धरे जुका ॥ परम लाभये जाति ॥ सरधास्यो साईं तजी ॥ सत संगति रु
 चिमांनि ॥ १९ ॥ तुरसी सत संग ही नले ॥ सार नूत संसार ॥ सत संग ही ते पाईये
 महा मोडिको घर ॥ २० ॥ तुरसी सत संग आश्रु संग ॥ उपसमिता मुनि सोइ ॥
 संतौष लो महा मोडिके ॥ द्वार पार ले जोइ ॥ २१ ॥ तुरसी इत सब ही तिमै ॥ सत
 संग ही प्रधान ॥ जहं सत संगत हां आहियह ॥ सबको निहचो न्योन ॥ २२ ॥ तुर
 सी सो सत संगधी ॥ कहां बईं जुकोना ॥ जाहियर से पावन होहि ॥ तीत लोक नि
 जनीत ॥ २३ ॥ को मत को धत लो नउर मोह दोह कंताहि ॥ असी संगति साध
 की ॥ सुनी हेम सुमृति नमां हि ॥ परसत पाप जुगति को ॥ तरहरा इच जिजा
 हि ॥ तुरसी ताप क नार है ॥ अति ही तल आहि ॥ २४ ॥ साधु संग जिहां जहे

नवजलयह संसार ताजिहाजपरिवैसिकरि॥ तुरसीउतरहुंयार॥ २५॥
 सतसंगतिचंदनविरो॥ वेलीसबजुगजीइ॥ तुरसीजेजे लपटिण॥ जएसुगं
 धेसोइ॥ २६॥ चारिवैदचक्रजुगमही॥ सपतदीपकेगांहि॥ तुरसीसतसंग
 तिपरसि॥ अफलगायाकौऊनांहि॥ २७॥ साधसंगतितहंबासकरि॥ आस
 एकउरधारि॥ तुरसीनजिगोविंदप॥ २८॥ यलयलबारंबार॥ २८॥ आराधन
 करिब्रह्मको॥ करिसंतनकोसंग॥ असंगाहीइसंसारस्यो॥ तुरसीयेउतमअं
 ग॥ २९॥ उतमसंगतिसाधकी॥ ओरहुषमेंसंसार॥ तुरसीताकीत्यागकरि
 सतसंगकरौसंचार॥ ३०॥ विषयनिकीसंगतिमही॥ कबऊतदीजेपाव
 तुरसीताकीत्यागकरि॥ सतसंगतिमेंआवा॥ ३१॥ सतसंगतिकेसुषसमि
 नाहितसुषकौऊआन॥ तुरसीहंमदूहेसबै॥ विधिनागवतप्रगं॥ ३२॥
 तुरसीदासजनउरधमुषी॥ तिनकाकरिएसंग॥ सुषदेहुषदालिदहरे॥ रां
 मलगावैरंग॥ ३३॥ तुरसीदासजनउरधमुषी॥ तिनकोमिलिएधाण॥ मिलि
 येआनंदउपजे॥ वेआनंदबिलाइ॥ ३४॥ तुरसीउरधमुषीजातोऊवै॥ असे
 साधूकोइ॥ इंद्रीनकौंसंजमजुकरि॥ रहेबहारतहोइ॥ ३५॥ जीतूंचाहेमो
 छपद॥ तोप्रथमपरसिसतसंग॥ इजीकमनात्यागिकरि॥ साहितपयाअंग
 ताजेपवतोपलटिके॥ मनतनमेकरियंग॥ तुरसीतबचैथैकहुं॥ जाइमिलेसु
 रतिगंग॥ ३६॥ जीवसमावैब्रह्ममें॥ ज्योसखितासिंधमं॥ हि॥ तुरसीसाधूसांग
 हि॥ ओरउयाइजुनांहि॥ ३७॥ साधिककोमनफटिकसमि॥ सिधहीरउतमंन
 तुरसीसंगलियेरेहै॥ तोमांडपरैनआन॥ ३८॥ जीलौइंदाबसिनही॥ उपजतना
 नारंग॥ तुरसीतौलौनबाडिये॥ संतजनहुंकासंग॥ ३९॥ अतादूसहरधिकरि
 जीकबबाडेनां॥ तुरसीतबहीबूडिये॥ कौऊनकरैसहावा॥ ४०॥ तुरसीसहा
 वजुकोऊनाकरै॥ तायापीकौसोइ॥ नगवंतगतिविसारिके॥ आपहीकर
 ताहोइ॥ साचसुप्रनसुहावर्द्ध॥ सीलहीवैवाषीइ॥ सतसंगपारसककरै॥ जी
 लौपसैनपीतिसंजीइ॥ ४१॥ २०२२॥ अयइसाधकोयारिकरि॥ २१॥ तुर
 सीकितेअसांनै॥ यालीककेसंकारि॥ सीगीमीगवातकहि॥ बोवैबहतीधर

१. तुरसी किते असाधनरा कहै सुहाती बाता। अपनै स्वार्थ कारै। करै और हाधा
तः २. अपनै स्वार्थ कारै। जो ले अमृत वैत। तुरसी जब स्वार्थ न होइ। तब क
बुले न न देना। ३. अपथापी अपस्वार्थी। अपपोषक अतोना। तुरसी ए अंग
असाधके। साषत वेदपुरांन। ४। चौपई। तुरसी काला सुषुतन दुष्टन के रा।
सुषुमिष्ट रिदमां गकरे रा। मतको ऊज न धी जोति नै। वेदपुरांन निकी नै मने
५। अथाह कौं घाह करि दिषावै। आपन बूडै और बुडौं। आपसरीषी क
रि ले सो झा अजल रहन तपावै कोइ। ६। जो बिन चारति पतिवरताको। अपनो प
र सखावै ताको। जावै जो मोसी यह होइ। तुरसी ए असाध मत जोइ। ७। आपन
कोसी कौं धी कूरा करि बैठा सुक्रित निरमर। तुरसी और निकी यौ चाहे। बि
धि बिधि कैं वह कावै बाहै। ८। असे असतनिके संग। निश्चकर वत जनमें ते ग
तुरसी इन स्यों न्या एर है। सो बड नागी मष्टिक है। ९। सुसुतन सासु पुनि सो
श वेदपुरांन कहै सबकोइ। तुरसी निज साधूयों आपों। असाध संग व्यागे सुष
नाषे। १०। असाधको संग कटिक रूप। करि बिसवास बोवै विषकूप ताते
तुरसी ए संघा मिटावै। सो ई संत सदा गति सुषपावै। ११। २०३३। अयसाधको
१२। साधी। तुरसी साधूया संसारमें। बड उपागी सोइ। चिनके द
र सपरसते उधरत है यह लोइ। १३। तुरसी साधूया संसारमें। करु ना सिंध ह्या।
ली जे बिके नि सुषपरसते जीव बिकरि हेनि हों। १४। तुरसी साधूया संसारमें
परत बिपार स रूप। परसि परसिके तेपतिता पलटि रनये अन्वया। १५। तुरसी
साधूया संसारमें। गंगा जे है अंग। आपसरीषी करिलीये। जे आये मत संग। १६।
तुरसी साधूया संसारमें। वंदन जे हो जोइ। महा सुसी तल करिलीये। आइ ल
पटने सोइ। १७। तुरसी साधूया संसारमें। मूरत ससि समाण। पीवै प्यावै सु
रस। कथा सुनाइ रकंति। १८। अविद्यात्म हरनकीं। मूरजके उवमाण। त
रसी सी तल करनकीं। साधूससि समाण। १९। चौपई। तुरसी तब मत घात
पलटन का जा। परससुस संत हरि साजा। केते परसियारंगति नये। जा
नर निकुल बिसरिये। २०। साधी। रानी ज्ञान उधरै। आप धरे लुका

नवजलयहसंसार ताजिहाजपरिवेसिकरि॥ तुरसीउतरकुंयार॥ २५॥
सतसंगतिचंदनविरो॥ बेलीसबजुगजी॥ तुरसीजेजेलपटिण॥ नएसुगं
धेसो॥ २६॥ चारिवेदचक्रजगमही॥ सपतदीपकैमांहि॥ तुरसीसतसंग
तिपरसि॥ अफलगयाकौऊनांहि॥ २७॥ साधसंगतितहांबासकरि॥ अस
एकउरधारि॥ तुरसीनजिगोविंदप॥ द॥ यलयलबारंबार॥ २८॥ आराधन
करिब्रह्मको॥ करिसंतनकोसंग॥ असंगाहोइसंसारयो॥ तुरसीयेउतमअ
ग॥ २९॥ उतमसंगतिसाधकी॥ ओरदुषमैसंसार॥ तुरसीताकोत्यागकरि
सतसंगकरेसंचार॥ ३०॥ विषयनिकीसंगतिमही॥ कबऊनदीजेपाव
तुरसीताकोत्यागकरि॥ सतसंगतिमेंआव॥ ३१॥ सतसंगतिकेसुषसमि
नाहितसुषकौऊआन॥ तुरसीहंमढूंसेवे॥ विधिनागवतपुरांन॥ ३२॥
तुरसीदासजनउरधमुषी॥ तिनकाकरिएसंग॥ सुषदेदुषदालिदहरे॥ रं
मलगावैरंग॥ ३३॥ तुरसीदासजनउरधमुषी॥ तिनकोमिलिएधाए॥ मिलि
येआनंदउपजे॥ वेआनंदविलाइ॥ ३४॥ तुरसीउरधमुषीजासोअवे॥ असे
साधूकोइ॥ इंद्रीनकौसंजमजुकरि॥ रहेब्रह्मरतहोइ॥ ३५॥ जीतुंवाहेमो
छपद॥ तोप्रथमपरसिसतसंग॥ हजीकामनात्यागिकरि॥ साहित्ययाअंग
ताजेपन्नोपलटिके॥ मनतनमेकरियंग॥ तुरसीतबचोथैकडुं॥ जाइमिलेस
रतिंगंग॥ ३६॥ जीवसमावेब्रह्ममै॥ ज्योसलितासिंधमंहि॥ तुरसीसाधूसंग
हि॥ ओरउयाइजुनांहि॥ ३७॥ साधिककोमनफटिकसमि॥ सिंधहीउतमंन
तुरसीसंगलियेरेहे॥ तोमाईपरेनआन॥ ३८॥ जोलौइंदाबसिनही॥ उपजतना
नारंग॥ तुरसीतौलौनडाडिये॥ सतजनकुंकासंग॥ ३९॥ अतासुत्रहरधिकरि
जोकबबाडेनाव॥ तुरसीतबहाबूडिये॥ कौऊनकरैसहाव॥ ४०॥ तुरसीसहा
वजुकोऊनाकरै॥ तायापीकोसोइ॥ नगवंततगतिविसारिके॥ आपहीकर
ताहोइ॥ साचखप्रनसुहावर्द्ध॥ सीलहीवेवाघोइ॥ सतसंगपारसककरै॥ जो
लौपसैनपीतिसंजीइ॥ ४१॥ २०२२॥ अथअसाधकोपरिकरन॥ ४२॥ तुर
सीकितेअसाधैरयालीककैसंभारि॥ सीगमीठीवातकहि॥ बोवेबहतीधार

१. तुरसी किते असाधनरा कहे सुहाती बाता अयपतैस्वारथकासै। करै और हा धा
 तः २. अयपतैस्वारथकारनें जोले अमृतवेंतः तुरसी जब स्वारथन होशः तब क
 बुवेत न देतः ३. अयपथापी अयस्वारथी। अयपोषक अतोतः। तुरसी ए अंग
 असाधके। साधत वेदपुरांन ॥ ६ ॥ चौपई ॥ तुरसी कालामुष उत दुष्टत केरा
 मुषांमिष्ट रिदमा ऊकरेरा। मतको ऊजत धी जोतिनें। वेदपुरांन निकीनें मने
 ५. अथाह कों घाह करि दिसावै। आयन बूडै और बुडौवै। आपसरीषोक
 रिबै सोश। उजलरहनत पावैकोइ ॥ ६ ॥ जो बिन चारति पतिवरताकों। अपतोप
 रसत पावैताकों। जातै जो सोसी यह होश। तुरसी पत्रसाधसत जोइ ॥ ७ ॥ आपन
 कोमी कों धी कुरा। करि बैठा सुक्रित निरमर। तुरसी और निकी यो चाहे। वि
 धिधि किं बहका वै बाहे। ८. असे असंतनिके संग। निश्चकरन जनमै तंग
 तुरसी इनस्यो न्याय रहीं। सो बठनागी ममृति कहैं ॥ ९ ॥ सुसत्यहं सास्वपुनिके
 शवेदपुरांन कहैं सबकोइ। तुरसी तिजसाधूयों आयें ॥ असाधसे गव्यागे मुष
 नायें ॥ १० ॥ असाधको संग कंठिक रूया। करि बिसवाप बोवै बिषकूप तातै
 तुरसी सुहंसा मिटावै ॥ सोई संत सदा ठि सुषपावै ॥ ११ ॥ २०३३ ॥ अयसाधको
 परसरे ॥ १२ ॥ सायी ॥ तुरसी साधूया संसारमें। बड उपगारी सोइ। तिनके द
 रस परसरे उधरत है यह होइ ॥ १३ ॥ तुरसी साधूया संसारमें। कठनां सिंध रूया
 लीजे बिके नि सुष परसरे जीव बिकरि हिन होला ॥ १४ ॥ तुरसी साधूया संसारमें
 परतौ छे पोरस रूप ॥ परसि परसिके वेपतिता पलटि रतये अनुया ॥ १५ ॥ तुरस
 साधूया संसारमें। गंगा जे है अंग ॥ आपसरीषे करि लीये। जे आये सतसेरा ॥
 तुरसी साधूया संसारमें। वंदन जे हो जोइ। महासुसी तल करि लीये ॥ अरब
 पटाने सोइ ॥ १६ ॥ तुरसी साधूया संसारमें। मूरतस सिधमांन ॥ पीवै पावै स
 रसा कथा सुनाइ रकांति ॥ १७ ॥ अविद्यातम हरनकीं। मूरजके असांन ॥
 रसी सीतल करनकीं। साधूस सिधमांन ॥ १८ ॥ चौपई ॥ तुरसी तबसाध
 पलटनकाजा। पारस रूस संत हरिसाजा। केते परसियारं पतिने
 नरनिकुल विसरि गये ॥ १९ ॥ सायी ॥ सानी ज्ञान नउधरें। आपा भैस

तौडुषीयासंसारसब सरनकोनकेजाइ ॥ ११ ॥ जिनबोलेसुषउपजे ॥ अति
 तिआनेदहोइ ॥ तुरसीतेबोलेनही ॥ तौपंथतपावेकोइ ॥ १० ॥ संतसदा
 रमारथी ॥ घनलीवरथैआइ ॥ तपतिहरेसबजीवकी ॥ अपनीपारसल
 इ ॥ १२ ॥ कबुनचाहेआपको ॥ सेंटिसबुधिधनदेहि ॥ तुरसीडुषीयाजीवके
 सुमसस्तकरिलेहि ॥ १३ ॥ अचाहीकअवधूतजन ॥ आपारहितनिदोष
 पतितनकीपावनकरे ॥ देदेअपनाघोष ॥ १४ ॥ तुरसीसीतलहीतेसीतल
 दन ॥ चंदनतैससिसोइ ॥ ससितेसीतलसंतजन ॥ बैगेनसलहोइ ॥ १५ ॥ सीत
 लवांतीबोलही ॥ सीतलदृष्टिजुदेहि ॥ सीतलपरसलगाइके ॥ तनकीतप
 तिहरेहि ॥ १६ ॥ राधेजीवकेफेरिकरि ॥ पोषदेइपल्लयंइ ॥ तुरसीघनली
 बरषिकरि ॥ स्वांतिकरेसबगंवा ॥ १७ ॥ संतोसभिकेऊनही ॥ सीतलओर
 सरीरकेसीतलमेसाईया ॥ हरेसकलकीपीरा ॥ १८ ॥ क्रियाकरततेडुष
 हरना ॥ सुषकेदातासोइ ॥ तुरसीसाधूजननिके ॥ देघोयेअंगजोइ ॥ १९ ॥ स
 तिनाषीजुसीलवांत ॥ सीतलतनमनतास ॥ रोमनांमरतहोइ ॥ २० ॥ तुंसी
 स्वांसेस्वासा ॥ २१ ॥ तुरसीतनकरिगंमरत ॥ मनहंकरितगंम ॥ गंमगंमर
 तहोइ ॥ रघा ॥ रोमरोमसबगंमा ॥ २२ ॥ थोपडी ॥ तुरसीअतिसातलअतिहीसु
 षदाई ॥ समद्विष्टीजनहंअधिकारी ॥ जडजीवतकोकरनसुवेत ॥ जगुमा
 हीविचरैइहिहेता ॥ २३ ॥ साधो ॥ औरकारनकीनही ॥ विचरतकेसंसार
 तुरसीपरमारथीजन ॥ विचरैपरउपगार ॥ २४ ॥ तुरसीअैसाहैकोऊधा
 निधनिवैसता ॥ परकाजीपरमारथी ॥ इहैबतलीयेनिबहंत ॥ २५ ॥ केसुष
 पटदीयेरहै ॥ कैजथाअरथनायंत ॥ तुरसीयासंसारमें ॥ सोपरमसुबुधीसं
 ता ॥ २६ ॥ बोलेवचनविचारिके ॥ लीयेसांतसुनावा ॥ तुरसीदासइरवचनके
 पंथनदेईपाव ॥ २७ ॥ इहैचालकरनीइहै ॥ इहैसंतरसरीति ॥ तुरसीबोलेसु
 षवचनभंडैअनृतअनीति ॥ २८ ॥ सत्रनकाहंकरिगिने ॥ मितहंगिनेन
 काहि ॥ तुरसीयहगतिसंतकी ॥ बोलेसमितासाहि ॥ २९ ॥ सत्रभित्रसबके
 विषै ॥ रघाएकतुल्यहोइ ॥ तुरसीअैसासंतजन ॥ त्रिनुवनइलतजोइ ॥ ३० ॥

अरुलकरहेऊलकैतही। सुनिअसुनसुतवैना। तुरसीया संसारमें। सा
 धूकहिएथैना॥२७॥ चौपई॥ अतिनअकिंचनइं द्विजिता। जाकोह
 रिबिनअनंतनचिता। तुरसीअैसासाधूसै। जगुमेंविरलादेश्याकोश
 ॥३०॥ साधी॥ सोजनजातजिहाजहै। जाकेरगनदोष। तुरसीविश्रांत्या
 णिकें। गहिरसासीलसंतोष। रसीलगहनसबकीसहना। कहनरिदें
 मुषरंसा। तुरसीडरासादहन। एसंतजतहंकेकांम। ३३। तुरसीहिरदेस
 कतमनसाअमला। मुषउचरैमंदवैत। दयाधरमसतिसांतिता। येसंत
 जतोरुकेचिहना। ३३। काहकींजुकुसबदकह्नि। मरमनछेदकरोहि।।
 तुरसीअैसेसंतजना। बिरलेयाजुगमांहि। ३४। तुरसीसाधूजननिकों। सु
 तबचनकोसुजावा। असुतबचनउचरैतही।। जावैकोऊकरोकुनावा।। ३
 ५। साधूबोलेसुतबचना। उरधरिआत्मजाना। काहूकोंउषवैतही।। अंगअ
 पतोंजांन। ३६। कोमलबांनीसाधकी। लागेअमृतपराश। तुरसीसाहिके
 स्मता। सुनतमेंतहीइजाइ। ३७। अतनेसुषउतपनकरैतेनअधरेउगाइ।।
 अैसीबांनीसतकी। जीउरवेदेआइ। ३८। सीतलबांनीसतकी। ससिहूतेअ
 तिजांता। तुरसीकोटितपतिहैरै। जोकोऊधरैकांन। ३९। तुरसीधनिवैसंत
 जना। जीअैसेकोऊआहि। आपनउषकएऊसहा। हरेऔरकीपाहि। ४०।।
 चौपई॥ पापतापसबहीजुनसावै।। नागवडेजोकेबधरआवै।। तुरसीअै
 सेकोमलसाधावैदनकरिगायेअगाध।। ४१। सासी।। तनकरिमदकरिव
 चनकरि। जोदेवनकाहूडया। तुरसीपातागवासेही। देषतउनकासुबा। ४२।
 मुषदेषतपातगमरै। परसतकरमबिलोहि। तुरसीअैसेसंतजना। सुरन
 नागिमिलोहि। ४३। सुरतनागजबघाटैदरवै। आपदयाला। तबअैसेसाधू
 मितें। मिलिकरिकरैहितिहोला। ४४। कोमलहिरदौबिमलचितमनसामें
 मलनांहि। तुरसीरतमवहोइरहै। अयनेंसाईसाहि। ४५। नृमलतनमन।
 आत्मा। नृमलसबदप्रकास। तुरसीनृमलहोइरहै। अयनेंपत्तुकेंपस
 ४६। जाकेंउरतैंगिई। तिलतिलविश्रांताहि। मनसावाचाकरमना

२ सोई १९ रतमत होइर घाएंमही कांमकलयनांघोर तुरसीअैसाहै
 कोई आनंदीजनसोइ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ अथ सेतसहिजाकोपरकरज
 ॥ २३ ॥ तुरसीसातहूपलसुमिसनकरै मनचितपीतिलगाइ महिमा
 ताहरिगतकी सोपेबरनीनजाइ ॥ १ ॥ तुरसीपलनकीकोकहै जोसु
 धएकहुंस्वास अनिनहोइगोविंदनजै सोधनिपितजननीतासा ॥ २ ॥ धनि
 धनिमाताधनिपिता ॥ धनिबहपुत्रजसोइ ॥ तुरसीजोगोविंदतजै जैसेहुं
 कैसैहुंहोइ ॥ ३ ॥ चौपरी ॥ तुरसीजैसैहीउरआइ नजेरामअपनौचित
 लाइ ॥ धनिधनिउतगतनकीकाइ औरवृथजनमेजुगआइ ॥ ४ ॥ ५ ॥
 ॥ ॥ तुरसीदिअषक्रमसहिता ॥ क्रीयाकसलीहोइतकसुपचहरिगति
 कै ॥ पटंतरसुलेनसोइ ॥ ५ ॥ तुरसीगतसुपचहीतलो ॥ नजैरैतक्षिरा
 म ॥ उंचैकुलकाकोमके ॥ नहोनहरिकीनाम ॥ ६ ॥ तुरसीउंचैउंचेबांस
 के बिरेबधेअतिसोइ ॥ बडाइसैबरिमूये ॥ उंचैउंचेहोइ ॥ ७ ॥ उंचेबांभूधरनि
 परि ॥ तुयंगनकेअस्यांन ॥ तुरसीतीचेनीपजै ॥ इषअनअरुपांन ॥ ८ ॥ इहे
 जानितमजनमके ॥ गरबकरोमतिकोइ ॥ तुरसीअनितहोइहरितजे ॥
 बडाजुसबकेसोइ ॥ ९ ॥ चौपरी ॥ अनिवअकिंचनहरिकीदास ॥ संमउंचा
 रेएकहुंस्वास ॥ तुरसीतासमिके ॥ बहिकोइ ॥ हेमनकेदेवीसबलोई ॥
 ॥ १० ॥ जदपिदासअनिनहोइहीन ॥ तदपिपटंतरकोनकुलीन ॥ बहदीन
 होइनोवउचरे ॥ वहअतिमानअगनिमेंजरे ॥ ११ ॥ जाकेकुलअतिमान
 नकोइ ॥ उतमबरनकोकिंचितसोइ ॥ रसांमतनमेंताहोइ ॥ तुरसीता
 हिबंदेसबलोइ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ हरिकोअबिनदासहोइ ॥ तामहिमाको
 पार ॥ तुरसीपाइवेसककोऊ ॥ हमनीकैकीयौनिरधार ॥ १५ ॥ तुरसीदा
 सनकापरदासहोइ ॥ ताहुंकाहोइदास ॥ तासुषपलमटंतरनही ॥ स्वर्ग
 सुषनोगबितास ॥ १६ ॥ स्वर्गमतिकेसुषनिये ॥ नांदिनकोऊकोम ॥ दास
 अनिननिहकोमहोइ ॥ १७ ॥ तुरसीवास्केपारको ॥ पार
 केवारबहो ॥ मृत्यसंजे ॥ १८ ॥ दासरता

करो मयों वने लोक सुष्यागि। तुरसी न्यार होइ रहा। तहां दहे न दुषकी
प्रागि ॥ १० ॥ अथ शार्तिको परिकरन ॥ ३५ ॥ कुरसी रें ति आचूषन
बंद मो। दिवं स आचूषन तो न। दास आचूषन न गति है। जगति आचूषन
ताना। यज्ञान आचूषन भान धेति। ध्यान आचूषन त्याग ॥ त्याग आचूष
न शान्ति पदा। तुरसी अमल अदांग ॥ २ ॥ त्याग फलादि के सब करम को। त्याग
कहावे सोइ। अंतर मूल निकें दिये। कौयल लेइ न कोइ। ३ ॥ इहे त्याग मु
षि वरतियो ॥ अति सुमृति में सोइ। स्वांति सुपद प्रगट करन ॥ ये बूके वि
रला कोइ ॥ ७ ॥ चौपई ॥ अमल अदांग शान्ति पद सारा। सकल कलेसन
करन प्रहारा। तुरसी ताहि उर धारे कोइ। अति आनंद सुप्रबिलसे सोइ। ५
पुरसी ताहि न दुषवे कोइ। प्रम स्वांति सुपरहा समाइ। तहां कोऊ तपति
न नेहे अइ ॥ ६ ॥ तुरसी त्रेसा सीतल संता। बस्ती बसो मल रं हो एकं त। होइ
रहा वदन को अंग ॥ कहां करे षट् लो क जु जंग ॥ साध अति सीतल अति ही
अमला अति ही औं ड सोइ। तुरसी तास अतीत को ॥ गंजिन सके कोइ ॥ ७ ॥ चौ
पई कोऊ को प चरे सुषवे न। सन सुष उचरे तास नि अंत ॥ तुरसी तक सि
वेतां हि। सी सीतल कहीये जुगुं मां ही ॥ १ ॥ कल काया ऊं कल के तां ही। अति
गहर औं ड मन मां ही। तुरसी पारन पावे कोइ। स्वांति सिंध मे रं हास मोइ ॥ १०
॥ साधी ॥ सप्तदीपन वषड चू। तीन लोक के मां हि। तुरसी स्वांति समान सुप्र ॥
और कोऊ रजानो हि ॥ ११ ॥ चौपई ॥ जहां स्वांति सत गुर की दई तहां की
धजर उपर गडी। कति हि को मवासनो विलीनी ॥ तुरसी स्वांति जुएस हनानो
॥ १२ ॥ तुरसी स्वांति सुधा को सागर। संतनिकरि गायो जु उजागर। तामें तनम
नर हे स मोइ। अहे अग्नि न हि दा के सोइ ॥ १३ ॥ साधी ॥ अहंकार की अग
नि में। जरत सकल संसार। तुरसी हरि न हं जरी तौ न जन को न अधिका
रम हं शान्ति पद पर सि के। सांत न ए जन सोइ। ते अहे अग्नि न दा री को
टिकरी जन कोइ ॥ १४ ॥ जौ सब बल क उमाडि के। उपजावे अहंकार। तुरसी त
ऊप जे न ही ॥

नमनसापान, तुरसी तेजरेजरनिमें, तोवे जगुमें हे रंग, १६ हे रंगीके ज
गतमें, अचरज मांने लोह, तुरसी जोपानी नया, जोब ऊंस्वो पावक होइ १७
पावक फिरि हीवे नही, जोपानी नयापान, तुरसीपानी नातये, पावक ते
ईजं च ॥ १८ ॥ जोपडी जलेबले अरुषिजे षिजात्रे, एगदोषमें जनमगमा
वे, स्वमहंस्वातिनही अनदेह, तुरसी जहां जहां उदृष्टियेह ॥ २० ॥ साधी
सोईपंडित सोईपारष, सोईसंत सुजान, सोईसरसो बुतसोई, सोईसुन
टपवांन, सोईज्ञानी गुनिजन सोई, सोईध्याता सोईध्यान, तुरसी नये जुत
सके, एगदोष विलासोन ॥ २१ ॥ जोपडी, एगदोषकी आतिबुगंती, को
मको धेरेग एजुकोती, तुरसी जबही स्वातिघरि आई, तब औरसु उरिफि
रीड होई ॥ २२ ॥ साधी ॥ फिरि इहाई रंगकी, गएंका सादिक नाजि, तुर
सी ज्योर विकै उदै, रघो नरज निको रज ॥ २३ ॥ २४ ॥ अयापधि की
परिकरनी ॥ २४ ॥ तुरसीपष अपषपरै, महापरम अस्यान, साधिनाइ
जो जनर है, सोतहां पावे जंन ॥ २५ ॥ तुरसीपंडित हूंकी गमिनही, अपेडित
हूंनही जंन, षट्दरसत हूंषपिर है, येडल तत्रोहस्यान ॥ २६ ॥ तुरसीको
अतलहिसके, वाअलहाकी लीह, गोडंअ विचिपरिरहे, अपनीअनीरी
ह ॥ २७ ॥ पंडित नूलेपाठमें, मुडित विधिआचार, डंडित त्रियडंडीनमें, नि
अपदरहा नियारा ॥ २८ ॥ जोपडी षट्दरसत हूंगहि षटंडी, अपनीअपनी
मांडजुमांडी, पषायषीमें रहेसमांड, नषयतांयत जायंजाइ, पाकोही
दका मुसलमान, अयनेअपनेपषमस्तान, होइरहेको योनी लींन ॥ तुर
सीपंथवतावेको न ॥ २९ ॥ साधी ॥ तुरसीए पूरवतन वेपबिसतन जाहि
रोमनि एखारहि गया, उनेपषनिके मां हि ॥ ३० ॥ तुरसी उनेपषनिसही, स्व
ज्ञात करि करिपीति, गौहअंभोरो करिरहे ॥ माति मिथ्या परतीति ॥ ३१ ॥
एअपने एपारके, एआवो एजाव, तुरसी सावतपष है, नहि नपष स्वमा
वा ॥ ३२ ॥ कदाचिको ऊयो कहै, पषतिद्या तुमकाइ, पषबिनस्वोनेको
ईकारि जतासरो, पषबिन लागेननाइ ॥ ३३ ॥ सिधसाधक जोभीजती

जो मधुकर वासनाको ॥ अंगीकार करे ॥ तुरसी हे सधी रह्यो वै ॥ नारत नर
जा ॥ १५ ॥ तुरसी असे साधूसंत जना ॥ अधिक वेद पुराना ॥ सार सार मत संग
हे ॥ तजि असार नम आना ॥ १६ ॥ चौपई ॥ सार सार मत सबको गहे ॥ गहिना
के मुनिव्यार रहे ॥ काहू के रंग मैं नमिला ॥ अपनै सुगार गला गा जा ॥ १७ ॥
अपनै सार सुमार गमाही ॥ चल्या जाइ बिन छडेताही ॥ तुरसी जतनी जोगी
सो ॥ चार बिषेक बकुं तरत हो ॥ १८ ॥ साधी ॥ असा सार संग ही जत ॥ सदा
तिसुषके मां हि ॥ तुरसी समावेश ही ॥ तामें से सेना हि ॥ १९ ॥ २२० ॥ अ
थ अविचारको परिकरना ॥ २० ॥ देया देयी उठि चले ॥ ब्रह्म्यान ही बंबेक
तुरसी फिर करि बाजरे ॥ बिना बंबेक अनेक ॥ २१ ॥ बिन बंबेक जु उहे तजे
अतिसोपऊ चैनां हि ॥ तुरसी रास जहां के तहां ॥ आय मिले जगु मां हि ॥ २२ ॥
॥ चौपई ॥ पहले कबूक बू गहे बंबेक ॥ पाबै त्यागी कुटंब अनेक ॥ बिन हाथ
बेक कुटंब ही त्यागी ॥ तो अध विचि रहै पार नहि लोघे ॥ २३ ॥ पहले ही जडता
गहे अचाना ॥ बिन समझे सत गुरको माना ॥ तुरसी सिधित होवै सो ॥ बतमें
बसो बसो नल लो ॥ २४ ॥ साधी ॥ जेमा जु गति जने बिना ॥ जडता गहे सरी
तुरसी अति निबहे सो ॥ चष्ट होइ नल बीरा ॥ २५ ॥ चौपई ॥ तुरसी गुर मत जं न
गंही ॥ होइ अविनवेता मां ही ॥ संतरुं को ऊषे ज्यमां हि ॥ ते मत वारुं तीति
जुआ हि ॥ २६ ॥ साधी ॥ जाके आचार ऊन ही ॥ धनि विचार नही को ॥ तुरसी
मन छ अकृति धरे ॥ पसंदा कहिये कसो ॥ २७ ॥ जाके आचार ऊन ही ॥ नहि वि
चार अहिले सा जने मां हि एक ऊन ही ॥ तो धिया धिगता को नैसा ॥ तुरसी अ
२८ ॥ अविचारको न्हाइबो ॥ कुंजरको असतां न ॥ दया मया समकै नही ॥ बुरा जे
गोडे थान ॥ २९ ॥ तुरसी जोई जोई कबू करनी करे ॥ सोई सोई कुंजर सोचा स
तिता धी न सु मैई ॥ अग्यानी उरयो च ॥ ३० ॥ जोई जोई कबू करनी करे ॥ सह
साई नल सो ॥ तुरसी एक विचार बिन अति बिगंच नि हो ॥ ३१ ॥ बकुं ब
ननिमें बहिये ॥ बिन बंबेक बकुं जीता ॥ तुरसी एक आले बबिता ॥ किन ऊन प
यापी वा ॥ ३२ ॥ परे बहा वनि बचनकी ॥ बूजि बूजि बकुं जना ॥ तुरसी तीरि लो
ही ॥ बिन बंबेक बकुं प्राना ॥ ३३ ॥ तुरसी ही न बंबेक पदा ॥ पटौं गुती अथको
तऊ कालिमां मां मिटे ॥ कैटेन आसा डोरि ॥ ३४ ॥ तुरसी ही न बंबेक पदा ॥ पडि
होइ नल श्री ॥ स्वै ज म परिजां

अविचारकोपरिकरना ३३॥ सबकोऊबाँधैमुकतिफल अतदितक
रहिउचार। येतुरसीपावैतहा। विनगुरग्यानविचार १॥ सबकोऊबाँधैमु
कतिफल। मारगलागेजोहि। तुरसीब्रह्मविचारविना। गमिकाहंकीनाहि
२॥ विचारमघमहादुलत्तहै। कौलैबेकौताहि। तुरसीसममौनापरे। अति
हिस्बिमआहि ३॥ विचारमघमहादुलत्तहै। कविनषांडाकीधारा। तुर
सीकेतेषपिरहे। येनहेनहीसुधिसारा ४॥ चौपद्री। विचारमारगकोबर
नाव। करिकरिथकेस्वरअस्वरगुरएवा। ताहियाइबेसकनकोइ। तुरसीय
हअतिअग्रहवसोइ ५॥ पंडितगुनीसकलप्रचिहारे। योजियोजिमतन्य
रेपारे। येब्रह्मविचारनकाहंआवे। विनसमरथगुरकोधौंयावे ६॥ ता
३॥ तुरसीकनिकाब्रह्मविचारकी। जोउरउतपनहोइ। तीसनेसनेसंसास्य
हअस्तजुहोवसोइ ७॥ चौपद्री। तुरसीविचारमतहैअसाहसजुपीसी
रमुनिंतेसा। किंचितहउरउदेजुहोइ। तीपकृतिपुखनिनिकरेजुसोइ ८॥
७॥ साधी। तुरसीसवसंगतिगुरक्रियास्यो। जबउपजिहेविचार। तबसह
जैहीहोइगा। अविहंसायापरहार ९॥ चौपद्री। बकृतबातकीधौंविस्ता
रे। इतनोअर्थअर्थहिठारे। तुरसीएकसुधब्रह्मविचार। विचारस्योकरे
वारंवार १०॥ योरेहमिबकृतविचार। ततग्यानगहित्यागिबिकार। तुर
सीतनमनइंद्रीसोइ। उलटावतेजुहोइसुहोइ ११॥ साधी। ममताइष
निर्ममतसुष। इतनोहानेदविचार। तावेकेजोबेदमंत। तावेसिधंतसा
१२॥ विचारसमिकेऊनह। तुरसीनजनजुआन। विचारहीतेपाईवे
केवलआत्मज्ञान १३॥ अधिब्याधिकीबोषही। हेएकब्रह्मविचार। तुर
सीताऊरआचरे। तोहोइरोगकोप्रहार १४॥ विचारसूरजकेउदे। जोज
नगवैतकणइ। तुरसीसौकबकृतपरे। मितेंषांडकुलाइ १५॥ चौपद्री।
विचारविनउवरेहरिताम। ताहंमैतलहेविसरंसा। तुरसीविचारहस्यो
ध्यावे। तबजनन्यानपरमपदयावे १६॥ तातेविचारहीहेनीका। विन
विचारसबैमतफीका। तुरसीजिनयहपायाखंड १७॥ तिनसवतकामता।
अगाध १८॥ तुरसीब्रह्मविचारउपाइ। अबस्तउपाधिनिवारतजाइको
हंकीक्रिमीयहदेह। जडवतजानितजेतानेह १९॥ साधी। ब्रह्ममान
विनविपकी। कोठिकरुआचार। कारिजकोऊनासरे। तुरसीविनावि
चार २०॥ विचारसोईजानिमे। विस्तविचारैनिता। अबस्तकोचितवैत

ही। तुरसी विवक्तवित् ॥ २० ॥ मनसा वाचा फरमनां यह केवल मत जो
 नि। तुरसी बस्त विचार महि। मनउत मन परिआनि ॥ २१ ॥ दोइत्यो गेदे
 इको गहो दोइउरमां हिमिलाशतौ तुरसी बसौ दोइपरे। दोइकी त्रासमि
 ताश ॥ २२ ॥ दोइउल टाये दोइकी ॥ दोइअवसिकें विनासा। तुरसी दोउर।
 लिमिलौ जहान दोइकी वासा ॥ २३ ॥ तुरसी पंचतत की देह धरि। सबको
 ऊआया। काहू उलटि अमृत पीया ॥ काहू विष माया ॥ २४ ॥ अमृत रू
 प रंमहै ॥ विष रूपी जु विकार ॥ तुरसी गुर के चान विना। लागि मूवा सं
 सार ॥ २५ ॥ अमृत पीये उबरिये ॥ विष माये मरिजा ॥ ताते तुरसी विष
 तजो ॥ अमृत पीवो अघाश ॥ २६ ॥ अमृत पीया पीयउ धरो ॥ साधु को टि
 अनंता ॥ जाइ मिले सुषसिंधकी ॥ तुरसी तजि नगवंत ॥ २७ ॥ वीपई ॥
 निनिमाया ब्रह्मको विचार ॥ पइसत गुर के उपगार ॥ तुरसी जारउ
 देजु होश ॥ बहनागी जनक हिये सोइ ॥ २८ ॥ हाथी ॥ नासुष बकु संयति
 मह ॥ नासुष फिरे असंग ॥ तुरसी सुषसु विचार मह ॥ जो प्रचुस्यो वा
 देरंग ॥ २९ ॥ तुरसी पहिले फलहि विचारिके ॥ यावै काज करण श
 को कारिज सुफल होइ ॥ कबरु ब विगारि जाइ ॥ ३० ॥ यह करि वेक
 रि वेनइ हाय हत जिबे येहनां हि ॥ तुरसी सोइ संतजन ॥ यह बंके क
 तामां हि ॥ ३१ ॥ जाची अनजाची कहौ ॥ आइ परे रिधि सोइ ॥ तुरसी
 तऊत आवे ॥ जो नरु अचती होइ ॥ अनरु चती ना अचरी ॥ हंसक
 यानी सोइ ॥ तुरसी ताके तयको ॥ विघन न करताको ॥ ३२ ॥ साधु
 सद नोजन करे ॥ असद नोजन संसारा ॥ तुरसी साध संसारे विधि इ
 तनी नैद विचारा ॥ ३३ ॥ जो प्रजुगति विधि जातिके ॥ जग हिन देइ लष
 वा ॥ तुरसी अलिष होइ रदे ॥ ताहिले गेनतती वाव ॥ ३४ ॥ जगति जांनि
 जइतारो ॥ जगति जांनि नजे रंमा ॥ तुरसी दासता दासको ॥ आतं देअ
 वीं जांमा ॥ ३५ ॥ तुरसी हंस विचारको ॥ महा विधि विधि स्यो कोइ राइ
 सुगुन वित निनिकरि ॥ मिले महापद सोइ ॥ ३६ ॥ विचारनां गिरक

सोइ ॥ ३७ ॥ वीपई ॥ विचार
 देयो जोइ ॥ तुरसी रसनां रति वीकरे ॥

तैकिनरंमः ज्योकरौकोऊअयोंजंमः ॥ १७ ॥ तुरसीसंघप्रतायजना
 प्रयेजुगतिसेदकसुउतमउपाइ ॥ जुगतिसेदकरिजिनिहरिभायाता
 त्कालतिनहीफलपाया ॥ १८ ॥ धनिधंविउतसंततिकीरेह ॥ जिनिबिवा
 टुरशस्याएह ॥ तुरसीपीरतीरचिविकीवा ॥ देहधरेकालहावीया ॥ १९ ॥
 धीरआत्मातीरसरोर ॥ चिवकरिवैठेसंतसधीर ॥ तुरसीतेईसंतप्रवोवि
 औरधोंकहिबेसात्रजंनि ॥ २० ॥ लयीकहिबेकेबऊतकहें ॥ साधूयासं
 सार ॥ मथिकोठेघृतआत्मा ॥ तुरसीतेकोऊसार ॥ २१ ॥ तुरसीस
 कृतिपुरुषतिनिचितिकरंही ॥ करिकरिअपवैअंसतिबाही ॥ प्रकृति
 प्रकृतिपुरुषपुरुषसमाइ ॥ तजेनजेकोतबफलपाइ ॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तुरसीसुधधीजीवकों ॥ सिषइसुसत
 कुबुधीस्योकहिसेह ॥ जाकोरिदोपवांन ॥ २३ ॥ तुरसीसुधधीजबकों ॥ संत
 ल्यालचहीइ ॥ उपदेसैंधर्मआपनों ॥ कुबुधीकौनहिकोइ ॥ २४ ॥ उपदेसियेनम
 तनिकों ॥ अत्रितइइकोमान ॥ तुरसीउरमधियांतिहे ॥ हीइस्तेरिदोप
 वांन ॥ २५ ॥ पतिताईसुंपूरिकरि ॥ राधीतवसषकाइ ॥ तुरसीसुधिसत
 पुरुकों ॥ जहांकैसैंजातसिदाइ ॥ २६ ॥ कबुकअततजपुनिकबु ॥ कबु
 कजातअजान ॥ तुरसीताहितउपदेसिये ॥ येहलैंहीबसरांन ॥ २७ ॥
 सुबुधिसीमिजाकोरिदो ॥ सबदबीजतहांबीइ ॥ तुरसीकशिउदोके
 रे ॥ कबहुंनटफलहोइ ॥ २८ ॥ तुरसीउत्तमसीमिहोइ ॥ उत्तमहीहीयबीज
 बाहनहारबुधिवंतहोइ ॥ तोउपजेधरमअषीजा ॥ २९ ॥ तुरसीसुधासु
 हैतवै ॥ सिदैबुधियुरजात ॥ औउतमआहरसमें ॥ आइपकसैंतांन ॥ ३० ॥
 चातपकसैंवपतमें ॥ ज्ञानसुधातसमोहि ॥ एकअसुधजीवतयोतवि
 तुरसीदरसैंनांहि ॥ ३१ ॥ सुधआतस्योंज्ञानकहि ॥ सुधासुस्योंभान ॥ सुधा
 तअपदेसिये ॥ यहसिब्यापरधोना ॥ ३२ ॥ जाकेबुधिवैरायकी ॥ कैबंदरी
 बिवार ॥ तुरसीताहिहरिसजनको ॥ करिवेबऊउपगारा ॥ ३३ ॥ करिउपा
 रसुत्तजनको ॥ जाकेसदबुधिहोइ ॥ तुरसीअसबुधिजीवस्यो ॥ जषिनवि
 प्रैजुकोइ ॥ ३४ ॥ महागोपीराजबेलिकी ॥ त्रैसोगुरकोपान ॥ तुरसी
 थनषोईये ॥ बिषिवेषिपवांन ॥ ३५ ॥ तुरसीयद्वाराउकोकातसमिस्यो
 उदासीसत ॥ ताहिधर्मउपदेसिकें ॥ अबसिबतईवेवत ॥ ३६ ॥ बस्तीबसो
 कीक्याहंही ॥ सुधरिहकोयहज्ञान ॥ तुरसीअससिउपदेसिये ॥ अबध

कोतहोइनां॥१५॥ तुरसीजाकेउरखलचयो॥अमलआदरससमान॥ताहि
 ज्ञानउपदेशियो॥इहेसाधिपरवाता॥१६॥२२८६॥ अथअविसवासको
 परिकरना॥४०॥ तुरसीदासजाकेरिदे॥नहीरंगविसवासा॥वाकीगतिकहे
 नही॥तोवैफिस्तोधरपुरआकासा॥१॥ तुरसीदासजाकेरिदे॥नहीगुरग्यां
 नप्रतीति॥संतनिकोविसवासनही॥ताहिदरसेसकलअनीति॥२॥ तुरसी
 अरधजावतलउरको॥जलतरमोसाधिनोमि॥विनप्रतीतिगुरग्यांनमठ
 निदततहीएकरोगा॥३॥ तुरसीसाधुवरयेरामजलाबूरननेदेकाशा॥अव
 सिवासरविअंधको॥राष्योरिहोजराशा॥४॥ तुरसीजोकवसिलाजुअपरे॥
 अंधवरिषाहोसातो॥रुंअंकूरनफुटही॥अैसेहीवोसवसो॥५॥ आहिवा
 हिहरिबिसुषको॥करतविहोवैरेन॥ तुरसीदीनतरमतफिरे॥कहनपा
 वैवेना॥६॥ तुरसीसंतसंतोषधिन॥ममपूरवनहीहोइ॥रातिदिसनठकत
 फिरे॥तरलजागुनषोइ॥७॥ चौपई॥ तुरसीलआषोयोफिरे॥जलेबुरेकी
 संकनकरे॥जहांतहांजावनहीस्योकांम॥अैसेजीवनकोकहांरंगमा॥८॥ सा
 पी॥जरमतफिरेतिहूलोकमो॥करपकरईनकीशा॥अविसवासकोसिधवि
 चिबूडेउखरेसोइ॥९॥ तुरसीबूडेउखरे॥भूरयलीगअंजगा॥जोकोऊक
 देह्याकरि॥ताहिकहेयहगमा॥१०॥ अपनेहीअविसवासते॥अंधरसातल
 जोहि॥ तुरसीसाधकहोकरे॥जीउरनिहचानोहि॥११॥२२९७॥ अथ
 विसवासकोपरिकरना॥४१॥ प्रथीआपअगनिके॥अनलअकासकेज
 व॥ तुरसीसबकोपूरवै॥अंतरजामीपौवै॥१॥ एकसूरुमअस्थूलएकाएकज
 रअजरजुजोइ॥एकनकीचलनसुसकि॥एकरहेथिरहोइ॥एकजावेंजा
 वैनएक॥अैसेसयहलोच॥ तुरसीसबकोदेतहै॥सोईमेरासोइ॥२॥ घाली
 काहूबरगष॥अंतरजामीरंगमा॥ तुरसीसबकोपूरवै॥जहांतहांसबगं
 ॥३॥ चौपई॥ तीनिलोकईकसबसंडा॥सप्तरीपसागरनवषडा॥तामधि
 व्यापकअंततजीवा॥सबकीसुधिलेसमृषपीव॥४॥ सापी॥ विसुनइ
 कोपूरवै॥गुनओगुननगहाइ॥ तुरसीसेवगरंगमा॥सोकाहेकीडणइ
 ॥५॥ चौपई॥ गरनवासमहासंकटसांही॥ताप्रचुकेतहोहंतनही
 तोतुरसीबाहरिवरसोइ॥कोहेकोबादिहाउरेजुकोइ॥६॥ सापी

चिंतातहितवृत्तिये जाके रिदै सुरोम पा लै पोषै पितालों तास बिसंनर
 नोम ॥ १० ॥ तुरसी सुत जननी जुवों सबकी चिंता लेइ ॥ बाजन तो जनत
 यकों जहो मागें तहां देइ ॥ बाजन तो जनकी कहां सुषमें अपनों धां
 मा तुरसी अर्यै रोमजी ॥ तास बिसंनर नोम ॥ ११ ॥ गहि बिसवा सगो बिंद
 नजि सावितराषि आकीन ॥ तुरसी कारनि उदकें ॥ होइ एत जु गुआधी
 न ॥ १० ॥ उदरनिमित्त आगें यहर सबजीव करै उपाइ ॥ तुरसी संतहुं चिंत
 वै ॥ तो हरि परतापत साइ ॥ १२ ॥ बिसंनर नदालि दहरन ॥ निरतै नोम अं
 नत ॥ सोई नोम उरधारिकें ॥ तुरसी होहन चिंत ॥ १२ ॥ करै नउदि सउदकें ॥
 हरको दसकहाइ ॥ के निरहारी बत करै ॥ के अकलपनि ब्याषा ॥ १३ ॥
 टूको मतसंतौषको ॥ हरिजन नहितस्योषा ॥ असतके विजन बने ॥ तुरसी
 तहांत जाइ ॥ १४ ॥ चौपद्री ॥ लीये विश्वास रहे उरगाटा ॥ कबहू वैवाक बह
 वाटा ॥ कबहुं तुरसी रहे जु सोइ ॥ एकलपनो न आनेकोइ ॥ १५ ॥ साधी ॥
 तुरसी उरकलपनाको ॥ वज्रलेप लगि जाइ ॥ धोयो हुं घूटे नही ॥ करिक
 रिथके उपाइ ॥ १६ ॥ तातै जोगा जा नियह ॥ अकलपनि ब्याषा ॥ रूषी वा
 सी चौपरी ॥ कैसी हूं मिलो आइ ॥ १७ ॥ चौपद्री ॥ राग दोषका हंत करेही ॥
 समविष्टी सी तल सुषमा ही ॥ तुरसी कलपित जाचै काहि ॥ राम नरो से रहे जु
 लाहि ॥ १८ ॥ साधी ॥ अनइ छित बाजन मिले ॥ तो जन सहज सुताइ ॥ का
 हे बड नागी संतको ॥ तुरसी इती होइ आइ ॥ १९ ॥ नवंर वृत्तिके इजगरी
 एनि ब्यापरवांत ॥ तुरसी उपरं विओर सब ॥ सकलपति गृहजान ॥ २० ॥
 नवंर वृत्तिके इजगरी ॥ उतमनि क्वायेह ॥ तुरसी असें अस्वकीये ॥ बढे प्र
 चुस्योतेह ॥ २१ ॥ के जु विचरि तो जब करे ॥ के इजगरी समाइ ॥ अनउदि स
 कबूनां करे ॥ संतनां मसोपाइ ॥ २२ ॥ उतमनि ब्याइजगरी ॥ मधिनि ब्या
 फिरि लेइ ॥ तुरसी कनिष्ठ जानियह ॥ परधरि धरनो देइ ॥ २३ ॥ परधरि धर
 नो देइ ॥ कलहकी नि ब्याषाई ॥ तुरसी तातनमाहि ॥ नही नैक हंसि एई
 २४ ॥ तुरसी नि ब्याईजगरी मधुकरी ॥ अथवा आरधीयोइ ॥ साधूसी
 ई सोई संगहे ॥ जहां कलपनां नकोइ ॥ २५ ॥ चौपद्री ॥ रदत कलपनां
 नि ब्यालेइ ॥ सेवाह सरधास्यो देइ ॥ सोई नि ब्या अमृतपनां नि ॥ और

कल्पानां हलाहलजानि ॥ २४ ॥ तुरसी अमृतचिन्ताम्रैसी ॥ संतसकलह
बस्तीतेसी ॥ श्रीचिन्ताम्रानी जोगावे ॥ रोमरोमश्चानंददरसावे ॥ २७ ॥ २३२४
॥ अथ पीवपिच्छाणनकौपरिकरतः ॥ ५२ ॥ कीयाकाहंकानही ॥ यप्यात
काहं जाइ ॥ तुरसी उथप्याना परै ॥ सो पीवहमारा आहि ॥ तुरसी यतिके
बोककौ ॥ ताहिनही तुबनारा ॥ निरंतरिन्यारहे ॥ सो निजकंतहं मार ॥ २ ॥
तुरसी पांनमै बूडैतही ॥ पावकसकै नदाहि ॥ पवनउडायतां उडै ॥ सो पी
वहं मार आहि ॥ तुरसी बिपेनही आकासमें ॥ गुन इंडी सौं न्यार मन
बुधचित अहंके परै ॥ सो निजकंतहं मार ॥ धामं वपं वपं वके परै ॥ रस परै
फुति जोइ ॥ तुरसी मतवचकं मसही ॥ इष्टहं मार सोइ ॥ ५ ॥ फुति जतमै फु
निबाल होइ ॥ तरवनी होवै सोइ ॥ तुरसी इध होइ बिन सडी ॥ सो तो रं मन ही
इ ॥ धालत इधन तरन सो ॥ मनत जाकी होइ ॥ तुरसी अजर अमर अषंठ
रोमहं मार सोइ ॥ ७ ॥ अणरुंते सूबिमजु अति ॥ नत्तहंते महा विस्तार ॥ तुर
सोक श्योक बुना परै ॥ सो जीवत मूलहं मार ॥ ८ ॥ जाकें पाणितपदवयाणने
नासिकानां हि ॥ तुरसी असा परमतता ॥ व्यापिर घ्रासवमां हि ॥ ९ ॥ जाकी
सत्यामां निकें ॥ बुधादिक निके जाना ॥ तुरसी उतपन ही तहै ॥ पिवाहिसके
नही जानि ॥ १० ॥ ये जडवेचे तनि प्रचु ॥ ये नि सवहर बिआहि ॥ तुरसी अंति
अंतरा ॥ कैसै लयदिजु ताहि ॥ ११ ॥ लभिजु ताहिए नोसके ॥ एवरवह परपी
वा ॥ तुरसी अरेका परैको ॥ काजाते सुधि सीवा ॥ १२ ॥ सुरअसुरयसुनाग
नगलषचो एसो जीवा ॥ तुरसी एसवय क्यहें ॥ परमलरूपी पीवा ॥ १३ ॥ प
रमलरूप्याते कहें ॥ दिष्टि मुष्टिनहि आइ नही ॥ कोनि गंधनिषलप्रचु ॥
अकहक होनहि जाइ ॥ १४ ॥ वासहंमें नृवासहै ॥ नारहंमें वनाद ॥ तुरसी
इसरसरहित होइ ॥ सो पीवैवह स्वाद ॥ १५ ॥ धांतमुकमतठिकचवर ॥ नही
तासगटगांवा ॥ तुरसी भूणा अतीतप्रचु ॥ व्यापिर घ्रासवतांवा ॥ १६ ॥ अहं
नचले अचतप्रचु ॥ मिरहासवरंगमां हि ॥ तुरसी इसवतरंगकें ॥ पटंत
कीकतां हि ॥ १७ ॥

रतासदाधिरजीवफिरैव कसीव ॥१८॥ दोष ॥ अविगतिअपरंपार
सोसबमांहीसबपरैताहिलषेसोसारतुरसीजामेंतामरे ॥१७॥ सा
धी ॥ पिडबसंडहिपूरिया ॥ अरधउरधसबगामातुरसीलियेनलोकमें
अलिप्तआत्मराम ॥२०॥ तुरसीअलिप्तआत्मरामा ॥ लोकमेंलियेजुनां
ही ॥ इष्टहमारसोइ ॥ औरकृतमकिहिमांही ॥२१॥ तुरसीकृतमजहां
लों ॥ तहांलोंमनपतियाअपतिषपतिकेपरैपी ॥ ताहिलेसौपीका
इ ॥२२॥ तुरसीताउपरिअतराइजानांहीकोइ ॥ तेजसूंजसंमृषधीनी ॥
इष्टहमारसोइ ॥२३॥ ॥२३७॥ अथवैरागकीपरिकर ॥२३॥ तुरसी
सेयब्रह्मजाननेकीं ॥ हेउपाइएकज्ञान ॥ सोबिनवैरागउपजै ॥ याकी
इहेजुन्यांन ॥ साधकहैंसास्त्रकहैं ॥ सुमृतिहूंकहैंसोइ ॥ तुरसीवैराग
नयेबिन ॥ ब्रह्मज्ञानतहीहीइ ॥ तुरसीब्रह्मज्ञानकेनयेते ॥ अजैसु
कतिविदेह ॥ सोवैरागबिनहोइतही ॥ सबकीनिहचौइह ॥ तुरसी
जेआगेसाधुनये ॥ तेऊगयेयौंसाधि ॥ अबहैंआगेहोंहिये ॥ सबकीएके
साधि ॥ ॥ दोष ॥ वैरागबिनजपतपकरेकेते ॥ तीरथहूं ॥ नमोजगु
जेते ॥ वैरागबिनजक्तकरे ॥ अनेक ॥ थोथेतुषवतबिनाबंबेक ॥ ॥ सा
॥ ॥ तुरसीवैरागबिनतिहूंलोकके ॥ मतदेष्योव्योयाइ ॥ अंतवंतक
लदेनकीं ॥ उदेनयेहैंआइ ॥ ॥ तुरसीवैरागहीनलें ॥ आदिजस्तनअ
मोला ॥ औरसकलसुषकंकरे ॥ परेरहौज्यौंटील ॥ ॥ दोष ॥ तुरसी
सोवैरागधोंकौन ॥ जामेंविषयाजसिंवीन ॥ अरुउपजैउरआत्मज्ञान
विशेषकरनद्वैतबिलीमान ॥ ॥ साधी ॥ तुरसीएकअपरपरधोंअए
का ॥ आदिजुउत्तैपकार ॥ वैरागकीविधिजुगतिएकी ॥ जानैजानतहा
र ॥ तुरसीपरएकीजुहै ॥ अपरनोमिकातीनि ॥ ता नोमानिसंजुगति
यहा ॥ वारिपकारजुचीन्या ॥ तुरसीतेनोमिकाके ॥ तिनितिनि
मोहिवताइ ॥ जानैवैरागयहा ॥ अतिआरुहहोइ ॥ आइ ॥ ॥ जतमा
नआदिइंदीजुइका ॥ अतिनोमिकाजानि ॥ वसीफारसिधिकरनकीं ॥

वरसीलेऊं प्रवांनि ॥ २ ॥ वसीकारवैराग्यह ॥ परहरिविषयासो गः स
 वदंडीउलटीनई ॥ बकरितंधरेसंजोगा ॥ ३ ॥ विषयायात्रालोककी ॥
 विषववंतलौं बिसारि ॥ इंद्रिउलटिअचलतईरहीनकोऊउधारि ॥
 ॥ ४ ॥ सोमिकाकरमंजैउपजै ॥ यहवैरागविधाना ॥ कैसतसंगगुरुकि
 पातौ ॥ औरउपाइतआना ॥ कैपूरबलेपनितां ॥ जौपूतहोइअप्रमना ॥
 रसीदृढवैराग्यह ॥ छषसुषकरतसमाना ॥ ५ ॥ तुरसीयावैरागकी
 महिमावरनीनजाइ ॥ जौतोमीनिजैउपना ॥ ताहिसकैनकोऊडिगा
 ॥ ॥ ६ ॥ तुरसीपरवैरागकी ॥ प्येसबसाधनजोश ॥ जतमानआदिवसीका
 रलौं ॥ संतनिवरनेसोइ ॥ ७ ॥ तुरसीचास्त्रो जगामोही ॥ चास्त्रोवेदमं
 रा ॥ चौदातीनोंलोकमौ ॥ एईसाधनसार ॥ जिनिसाधिकसंतनिजुजि
 ना ॥ लीयेजुगतउरधारि ॥ तिनकैपरवैरागभयो ॥ कणितरहीनलगा
 ॥ ८ ॥ तुरसीपरवैराग्यह ॥ जेसैंजतनिसिधिहोइ ॥ सोईसोईजतन
 जुकरो ॥ आरतिप्रोतिसंजोइ ॥ ९ ॥ तुरसीपरवैराग्यह ॥ सिधिकरत
 कैकाज ॥ जतमानआदिसंज्ञानिकी ॥ विधिविधिकरऊइलांज ॥ १० ॥
 ॥ अथजतमानसंग्यावैरागविधाना ॥ १ ॥ तुरसीयाससारमै ॥ सागसार
 जुकोता ॥ ताहिनितिनितिव्योपावडं ॥ गहेनरहोमुषमौन ॥ २ ॥ तुरसी
 मोनगहैकऊकोबैतौ ॥ यहलेहीषौसोइजावतसारसारण ॥ तिनिति
 निलषेतदोइ ॥ ३ ॥ तुरसीगुरसास्त्रओगाहिकै ॥ तिनितिनितिव्योपाइ ॥
 यहजुसारअसारयह ॥ ताहिलेकनीकैनिरताइ ॥ ४ ॥ तुरसीसारव
 सांअसारयेहअसुबियहदेह ॥ गुरसास्त्रसबहीनकी ॥ निजकहि
 निहचौयेह ॥ ५ ॥ तुरसीगुरसास्त्रसबहीकहैं ॥ संतहंआषेंयेह ॥ ६ ॥
 सीचिवढाईये ॥ तोरविषेकोनेहापा ॥ जावतकचवैरागहै ॥ ७ ॥
 कूरपरशतुरसीजावतजतनकरि ॥ रहीयेनहीअलसाइ ॥

कर्कशाहि ॥ ७ ॥ असे जषजतनजुकरता ॥ जुगतहोइवैराग ॥ तुरसीसंग
 कुसंगको ॥ तवताहिलगोनदाग ॥ ८ ॥ जीवतजगतकेसुषतिमोंस
 मरुतहैजनसोइ ॥ तावतविकतनयारहै ॥ तोसलउबरतहोइ ॥ ९ ॥
 ॥ चौपद्री ॥ जावततनमैरोगजनावै ॥ तावतपथभोजनजोपावै ॥
 हैवैदकेकहेजुमांही ॥ तीरोगीकोरोगविलादी ॥ १० ॥ जावतकर्क
 कायाकैसांदि ॥ कामकोधकीसागैनांदि ॥ तुरसीतावतजतवदिसा
 रे ॥ सोनिश्चैजनमआपनोहारै ॥ ११ ॥ तुरसीकचवैरागजुअसोआ
 लैकागदिअछिरतैसो ॥ विनाजतनकीयेसंगहोइजाइ ॥ समजिदे
 षइहैउतमउयाइ ॥ १२ ॥ ॥ सायी ॥ कचवैरागीकायाकी ॥ कसनीदे
 छिटकाइ ॥ पातपीतवीतैदिवंस ॥ सोवतरजनिविहाइ ॥ विरकत
 तापकरैनही ॥ मनमनसाउलटाइ ॥ तीतुरसीतानिलजको ॥ कैसेका
 जसराइ ॥ १३ ॥ वैरागीवैरागलें ॥ मतारवऊजकोइ ॥ तुरसीजावतना
 भिदे ॥ रागदोषरियहोइ ॥ १४ ॥ वैरागीवैरागले ॥ सतकोऊकरइगुमां
 न ॥ जावतनैनमैवसै ॥ नरनारीकोधान ॥ १५ ॥ जावतसप्रहचितव
 लै ॥ जुगततविषयानोग ॥ तावतकचवैरागहै ॥ नहीपकस्योसंजो
 ग ॥ १६ ॥ चौपद्री ॥ जावतकायाकोधजरवै ॥ बिनहूकांमदिषारीदा
 वै ॥ तावतपकवैरागनहोइ ॥ तुरसीसबसाधूकहेंसोइ ॥ १७ ॥ ॥ सायी
 तुरसीआइपरैआनंदइष ॥ हरषैअरुसुरजाइ ॥ तावतजोगीअप
 कहे ॥ पककहानहिजाइ ॥ १८ ॥ तुरसीलातहूवैमनमुदितहोइ ॥
 अलासैकुमिलाइ ॥ तावतजोगीअपकहें ॥ पककहानहिजाइ ॥ १
 ९ ॥ चौपद्री ॥ अपकजोगीकैमनमांही ॥ सातयांचउपजिवोकरींही ॥ क
 वहंडारीकवहंपान ॥ तुरसीतरमैदियोदिसान ॥ २० ॥ कवहूजोगकर
 नकीविचारे ॥ कवहूभोगतमनमैधारे ॥ कवहूबस्तीकवहंबनी ॥ तक
 तहीतकतविहावैतन ॥ २१ ॥ संतसंगतिहैसाधनजाको ॥ श्रीरुप्याइन

ही कबुता को ॥ जाके मन है अपक अथार जैसै वायु की सी तीरा ॥ २२ ॥ अ
 दि अति सत संग में रहे ॥ तौ जु धरम मा है चब है ॥ तुरसी संत संग तित जज
 ५ ॥ ताको अत्र सिषता उपजाइ ॥ २३ ॥ तुरसी साधु संगति मां ही ॥ कु संगति
 के रोष न सां ही ॥ अति ही अल्प का वास तसो श ॥ सने सने परपक च
 होइ ॥ २४ ॥ साधी ॥ तुरसी करत जु जत न यहार है न दोष विकार ॥ क
 रा विमल की ऊर है ॥ तौ तीव्र जत न उर धरि ॥ २५ ॥ अथ वितरे क सं
 ता वैराग विधा व ॥ २६ ॥ तुरसी जावत ठिके न प कुं चिया ॥ पक न नया ॥
 बैराग ॥ तावत कब हूं न की जिये ॥ तत धरितप को त्याग ॥ १ ॥ जावत ठि
 के न प कुं चिया ॥ मिसे न मनो ह विकार ॥ जावत जय करितप करे
 कर क क बु ऊप चार ॥ तुरसी बैठि रहिये न ही ॥ इत नो ही उत म विचा
 रा बैठि रहे रिय बल बडे ॥ जत न हि होइ प्रहार ॥ २ ॥ तुरसी जावत ठिके
 न प कुं चिया ॥ थिर न नया मन वित ॥ तावत कब हूं न त्यागिये ॥ तपसा
 सी थिति ॥ ३ ॥ त्याग न क जितप की ॥ कसिये काया मन ॥ कसे कसे होइ क
 न क ठ लि ॥ तुरसी तप सी जना ॥ धत ता ई त जितन की ॥ मन मन सा उल
 दाइ ॥ तुरसी तप सी तप करे ॥ तौ जरि जाहि को टिक घाइ ॥ ५ ॥ तुरसी काया
 कसे वित ॥ करम का टन ही जाइ ॥ जो तप ती जो तो देष क ॥ कन क तावति
 रताइ ॥ ६ ॥ कसे कसे यह काया मन ॥ कंच न मई होइ जां हि ॥ तुरसी जो क
 सी ये न ही ॥ तौ का चहे तै क बु नां हि ॥ ७ ॥ तुरसी करता जानिके ॥ काया क
 से जु कोइ सो जन करता को मिले ॥ को टिक लं क हि घेइ ॥ ८ ॥ ताते तप बैरा
 ग करि ॥ अति त अति त त्याग ॥ तुरसी जो गजु गति गहि ॥ तब सि धि होइ
 बैराग ॥ ९ ॥ तुरसी तप बैराग म हि ॥ तन मन की गति सोइ ॥ कस्त कस्त कं
 चन होइ ॥ का चक है न ही कोइ ॥ १० ॥ ठी नि मारि नर तप करे ॥ काम को
 ध अ हं कार ॥ तुरसी असे तप करता ॥ खुल हि मोषिके द्वार ॥ ११ ॥ स्वरी न ब
 डे तप करत ॥ नानर कते डराइ ॥
 निस बासु रि नर हरि ज्ये ॥ मन ब ॥

काला सातेयहमनजीतियो ॥ गहिबैरागतिराल ॥ ४ ॥ कात्यागंतु चतनवि
 तो ॥ मनकोविनी अपारा ॥ मनविनी जीपरहरे ॥ सोत्यागी त्रिभुवनसारा ॥ ५ ॥
 बंचलतासबत्यागिके ॥ जबमननिहचलहो ॥ तुरसीतबबैरागमेंकजी
 नपरईकोइ ॥ ६ ॥ चौपई ॥ तुरसीतनकीमायात्यागी ॥ तेऊबैरागीहैंबडता
 गी ॥ मनमायाकौं तजिगयेसोइ ॥ तिनिसमांनत्यागीनहीकोइ ॥ ७ ॥ सापी
 त्यागीतेईजानीये ॥ जिनयहमनबसिकीना ॥ तुरसीबैरागलीयेका ॥ तिन
 निजलाहालीता ॥ ८ ॥ इंद्दीबसितबजानीये ॥ जबमनबसिहोइमांदि ॥ तुर
 सीमनबसितयेबिन ॥ इंद्दीबिषरिजांदि ॥ ९ ॥ इंद्दीबसितबजानिये ॥ मन
 बिषयाचिटकाया ॥ तुरसीत्रिंशारहितहोइ ॥ शरहेसंतोषसमाइ ॥ १० ॥ ८
 ॥ अर्थसीकारसंज्ञाबैरागविधाना ॥ १ ॥ वैसीकारबैरागयहा ॥ आदिमधि
 अरुचंता ॥ तुरसीअंगेवरनकुं ॥ सुनोसकलईसेता ॥ १ ॥ अनाश्रितिआसन
 करै ॥ अदिष्टिलावैचित ॥ तुरसीबिसरैविषेसुषा ॥ सोबैरागीविरकता ॥ २
 सुषमायाभागेनही ॥ मनसुकलाइनदेइ ॥ अनबंछीअंगेपरे ॥ हरिजनत
 कुंनलेइ ॥ ३ ॥ लेतोप्रतिबिपतिग्रही ॥ देतोफुनिचुगंतता ॥ तुरसीकबुले
 हेनही ॥ सोकहियेनिजसेता ॥ ४ ॥ बाजनसोजनसहजमें ॥ दरवैदीनंदयाल
 उइसमाइसुलीजिये ॥ अधिकोपतबिकाल ॥ ५ ॥ गीता ॥ कौडीउतपनिहोइ
 इतीपुनिधातनरंघे ॥ सोबैरागीसारा ॥ वेदसुमृतयोंनाथे ॥ विषयारसबीस
 रें ॥ वृकतविवरैवृदावै ॥ वेहदपदगलताना ॥ तासतुरसीबलिजावै ॥ ६ ॥
 बाजनसोजनरुचित ॥ इतोअंगीकृतकरावै ॥ जितौसतगुरफुनिसेता ॥
 वेदविधिचुगतिषतावै ॥ अनरुचतौनाआचरै ॥ अधिकसंयहनबटावै
 तासपतिग्रहनांदि ॥ ततमततुरसीगावै ॥ ७ ॥ चौपई ॥ कायककोऊकरम
 नकरै ॥ जाकीयेचुगबंधनपरे ॥ वायककोबिसरैबकबाद ॥ तजेरामबिस

हि ॥ मववचकरमनिरथेनिरकार ॥ सोबैरागीत्रि

नृजै निरंजन देव ॥ १० ॥ तुरसी सबसाधूकहे सास्त्र हंइ है कहांहि काष्ठ बा
चनिहकलंकरहे वैरागी सो आहि ॥ ११ ॥ काष्ठ बाचनिकलंकरिना
वैरागी है कोइ ॥ तुरसी बारूनीतिलो ॥ अतिविगस्त्रैसोइ ॥ १२ ॥ तुरसी
यह तो यौनही यह तो षोडै धार काष्ठ बाचट्ट विरवहे तो ही पावे पार
॥ १३ ॥ अहनि सिअपने हाउरमें ही रहे रंगमल्यो लाइ ॥ तुरसी देषिस कामसु
ष ॥ सिंघ हंस्यो षराड राइ ॥ १४ ॥ विषया देषे बवनसमि ॥ विषकनकातो ॥
सोइ ॥ तुरसी देषि देषि जुडरे ॥ रघानया नक होइ ॥ १५ ॥ साधनकी कंउष
रूप संसार यह ॥ महा नया नक रूप ॥ तुरसी पावनरी जियोइ तो ही अ
रथ अनूप ॥ १६ ॥ साधनकी करनीइ है ॥ इहें साधि सिधि जोग ॥ तुरसी दा
स विष बवनलो ॥ बिसरि विषे के तोग ॥ १७ ॥ चौपदी ॥ जो आरति होइ पूछे ॥
मोहि ॥ तो उत्तम्यां नमुनां ऊं तोहि ॥ विषे सुष बवनलो ॥ बिसारे तो याही ॥
तन धरि आया तारे ॥ १८ ॥ शायी ॥ ज्यो कंचुकी उतारिके ॥ अपन करे सनेह
तुरसी यो हरि मिलनको ॥ हरि जन त्यागे गेहा ॥ ए देह गेह संसारकी ॥ जि
तीक सगाई आंन ॥ तुरसी गईर ही नहा ॥ अरतें उषरि अमांन ॥ २० ॥ वैरागी
यो तब ही सुफल ॥ बिसरै विष फल दोइ ॥ एक कनक अरु कामती ॥ चित
में रहै चकोइ ॥ २१ ॥ तुरसी उनेनिके ॥ अ नुराग यह ॥ होइ निपटिनिदृग ॥
मनसा वाचा करमना ॥ तब कहिये वैराग ॥ २२ ॥ त्यागति ईजानीये ॥ त्रि सुवन
सोइ ॥ जिन त्यागी विष बवनलो ॥ कनक कामती दोइ ॥ २३ ॥ कनक काम
नी आदिये ॥ जिते कइंदी सुष ॥ सुर्ग मृत्तिया तालके ॥ बरने वेदनि सुष ॥ तु
रसी वैरागी सोई ॥ त्यागि रहोइ निठुष ॥ निपट निरमूल करिति तै ॥ तब
कइंसद गतिसुष ॥ २४ ॥ ज्यो जलस्यं ऊष उपनी ॥ जलही मोरु रहइ ॥ जल
त्यागे जीवै नही ॥ अरथइ तो ही आंदि ॥ यो विषे नर्यो मन नर्यो ॥ सरति सु
मृति जूकहोहि ॥ तुरसी सो मन तब मरे ॥ जब विषै रहत होइ सांदि ॥ २५ ॥ वि
षे त्यागे त्याग जु सोई ॥ और सब त्याग अत्याग ॥ तुरसी विषे जु त्यागिये ॥ तो
उरहीइ अदृग ॥ २६ ॥ अलवध बसको पाइवो ॥ मुनिता जतन करइ ॥ जो
गबै मजानो ॥ जु अह ॥ संतनि ही ये दियाइ ॥ अउनेतस्यं रहित होइ ॥ वैराग

तपसोपाशु। तुरसी तत्सकरचौरनये। ताहिक बहूंतदरसाशु। २०। सिंदु
 दो दुषकलेसकी। धरस्वामिं सबकोशु। तुरसी ताहिस्यागोकिरौ। त्यागिक
 हिये सोइ। २१। तेई पावै परम सुष। दावै एवै नाहि। तुरसी निरदावै रहै। उ
 नदि आत्मां हि। २२। तुरसी निरदावै गुहा। तहां करहुं आरंमा निरदा
 वै सुषयाईये। दावा स्यो कां काम। २३। निसपे हा होइतां वले। जगु निरदावै
 होइ। तुरसी जोगकी वारता। असें आयें जन सोइ। २४। कै एकाग्रचितक
 रिसाधि अथात्मजोग। कै बिरकत वै रगा। हियर हरितां तां तीरा। २५। कै
 सरधा संजुगति सदा। सेइ तराति निह काम। कै ताना निरवैर होइ। देवि
 सकल घट रंमा। अये चतुपंथ संत निकहे। ते टनकीं नगावंत। तुरसी।
 और उपाइ है। नां नां विधिके मंता। २६। बीतराग वै रगा विना। सिद्धे न मन
 को सोका। नावै कोटि जन करौ। नरमो लोका लोका। २७। चोपइ। कै करि
 नौ संतन को संग। कै बनमें विचरिबौ असंग। कै साधिवौ अथात्मसार। कै
 समजिबो साधिसु विचार। २८। तुरसी एउर धरि उतम मंता। रंम मिलनको
 दरिया पंथा। २९। जनि जोगी निअपने उर धारे। तेजु गजीति निज लोका सिधा
 रा। ३०। तुरसी यह त्रिपतिको काम। अत्रिपतिको नाहिन आरंमा। आनसंयु
 रतका साजाकी। सो बनमें विचरै एका एकी। ३१। जैसाधिक हूं सहमत धरै
 एकाकी विचरनकी करै। तो तुरसी ताको होइ नंगा। विन प्रसे परन संत सं
 गा। ३२। सायी। एका एकी विचरिबौ। सिधिवनि आवे बीर। साधिक को सो
 तेन ही जाको मन अथीरा। ३३। एका एकी विचरिबौ। ताहिन लैबनि अशु।
 तुरसी जोपरियक जन। रिऊं तक बहूं रिजाशु। ३४। जाको मन अस्थिरिनये
 सिदि गई दुगंधि दुगंधे। कायेकी विचरिबौ। तुरसी से नवतासा। ३५। चो
 पइ। नव जोबना जु नारी आवै। ताहि देवि मन नही उल्हसावै। तुरसी असा
 कोक होइ। निसं गतिरने विचरै सोइ। ३६। सायी। तुरसी संगकु संगको।
 ताहिन ल गई राग जो असीपक बुधि बरतई।
 ३७। तुरसी उतम वै रग यह। जामें राग न दोष। सम

गहैसुदिवसंतोषं ४५। तुरसीउतमबैरागयह ताषैवेस्पुएन। सत्रमि
 प्रवहीनस्यो ह्वारहैसमान। ४६। तुरसीउतमबैरागयहै। त्रपनीइ
 व्यायोइ। बैरिहौ नलचलौ उवि। बंधननोहकोइ। ४७। तुरसीउतमबै
 रागयह। चितउलटाउरधारि। विषयायात्रालोककी। विषववनलौवि
 सारि। ४८। इंडीअपनेंबसिकरो। कात्राहै। ओरंगि। तुरसीविषयापर
 हरो। करिजरनिरसूरंगि। इतेमाहिसबसुषहै। इतेमाहिसबज्ञान। इते
 माहिवैरागहै। इतेमाहिसबध्यात। ४९। सिधिनबोबैसुपनहं। शिषमेंचित
 नदेइ। जिनहरिहीरायाइयो। कंकरकोकालेइ। ५०। कंकरकाचकथीर
 वत। मिथ्यायहसंसार। तुरसीउरदिवतजानिकें। संतनकरैसंवार। ५१।
 तुरसीत्रिष्ठात्यागते। तनमनमेंसुषहोइ। तासुषकेअंसहंसानि। नही
 त्रिचुवनसुषसीइ। ५२। तुरसीत्रिष्ठात्यागते। जोसुषउपजेआइ। सुष
 सोई। औरआहिअसुष। संतकहैसमकाइ। ५३। तुरसीउतमत्यागीजानि
 तब। जबअैसाहोइआइ। धरैदसाजडतरथकी। विचरैसहजसुताइ।
 ५४। तुरसीकोऊडुषवोसुषवोकोऊ। कोऊधरोसिरितार। तरथदसा
 तबजानिये। जबउपजेनहीअहंकार। ५५। देहदसातरथरीकी। तरथ
 यिताकोत्याग। तुरसीसेतवपाईये। जबघगटेपूरनत्ताग। ५६। देहदसा
 तरथरीकी। धरैकोऊबिरलादास। अलपअसनकुतसतबसनागिर
 कंदरतरवास। ५७। जोषई। हंसरूपवनवासीसंत। गहिरहेगारतव
 सएकंत। महामीठिकोकरैउपाइ। मनमनसातनमेंउलटाइ। ५८।
 ससी। मनमनसाउलटोकरै। अपनेउरअसथान। याआरंसंभैपरिहै
 एतिदिवंसएकतांत। ५९। तुरसीबैरागीसोई। नगतहंसोईजान। जिन
 केंसौठियाइयह। औरनहीकबूअना। ६०। कहांवनवस्तीहंकाह। कहां
 गिरगुहाजुगंम। तुरसीसंतकहौरहै। जैजीसाहोइकांम। ६१। जोषई।
 नावैवस्तीनावैवन। नावैहाटवाटनिजजन। तिसप्रेहीनिरावैहोइ।
 तुरसीकंकरहौनलसोइ। ६२। सावो। कामकलयनामिदिगई। अरु

निजस्व हेतु रही संतक हंर ही जी श्री सा जो ऊ ही प्र. दस ले सं सो रं दे नो य
मनी सा जे सकल सिंगार मे कधीर स न उषय कर दुग हे धडा पा रा भ
कं य उप जे न ही ते काम की ल गा रा तुर सी मै रा गी सो र्वा उ नै सा को न रा
रा द धा सुष की न ही अस प्र हा ड म म नि ह हे न दे लु र सी नो जा न र य सी
जना विचरै विगत सने हा द पा तुर सी परै न मो उ के पा त रों प्र हार पर दु
थो ना सदा सुत त्री हो ड र मों सो अ ती त घ तो ना ध धा व रों नि रो वा र्हे र्हे न
ही विषे का ष्ट य धा ना फे च न गा ने का च स गि। कु नि यं य र उ रा गी न ग। गो ड
अ या हि जि बु भि वि स रि। वि च रे वि दे स प्र घा ना। तुर सी य कं वै र ग गे न रा य
को ए ह स ह नो ना। द्वा। तुर सी य कं वै र ग गे। गान अ रो न रा गाना। अ य रा
के उप जे स दा। मै तै ग र ब ग्मान। तुर सी य कं वै र ग गे। र सु दान यो न अ
र सा अ त्र ति त अ ह ल ज्जु हो प्र घा। पान को फे ल गि टा। अ। अ। का गी नो र्
वि न चि त्त च लौ। क न क अ य ध री को। अ। तुर सी ली। त न। यं नो। प यं वै र ग
सो द्वा। द्वा। न ही क ल य नां का यों में। अ क ल य आ रां मा। तुर सी री नो र्वा
र्वा। जा के य ह आ र मा। ७०। हे त न का हं सं यं र्वा। अ न। ह त आ। त। र्वा। र्वा।
सो सं त्या सो र्वा। ग हे र हें य ह स त। ७०। धो पं। अ न का ष्ट यं न रा र्वा। र्वा।
हि स न्या सी ष्टु ति न हिक हे। ज न तुर सी स न्या सी सो। स न च य अ नो र्वा।
जि त हो। ७०। प्र णां यो म क रि म न कों। तै र्वा। स न। अं। उ दे व क न। र्वा। र्वा।
या को क सि रं ये हा यि। ब हे न ही। न्दी। ति क स र्वा। ७०। र्वा। र्वा। र्वा।
जु ध रौ सो सं त्या सी ष्टु ति उ च र्वा। स वि न प्र व र स न्या सी नो। ७०। र्वा। र्वा।
ज नो सो। ७०। र्वा। र्वा। तुर सी उ द्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा।
बे र्वा। कं जे र्वा। र्वा। जिन त्या र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा।
व क न हं ल्पा। हि। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा।
र। न क न कं। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा।
स्व। र्वा। ७०। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा।
र। न क न कं। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा। र्वा।

लपलफुनितासै। तुरसीमनकरमवचन। यहजुजतनहिहोई। जतीज
 तनधिरहोइ। धरमप्रतिपालेसोई। १३। यांनीपीवेचानि। तिब्याकरिते
 जनपावै। पायधरैपंथदेषि दयाहिरदैउपजावै। सतिवचनउचरै। मि
 थ्यामुषबोचैनांही। येआचरनआराधि। रचैअपनेउरमांही। समिता
 रानविचारि। इहिजुमारगमनलावै। तुरसीअैसाजती। आपतिरैऔ
 रनितिरावै। १४। त्रियाकेमुषबचन। सुनेनहीरुचिकरिकांनां। नैली
 शनांउलदि। धरैअभिअंतरिधांतां। रसनाकेरसतजे। गंधमधिमननव
 हावै। घरीघरीपलबिन। स्मरतिलेलेउलटावै। गृहजिइंदीकेंजीति।
 जुगतिरतहोइपदमांही। तुरसीअैसाजती। बरुजिजुगिजनमेंनांही।
 १५। जंत्रमंत्रवेदंतकरि। पानकदृत्तिकेरियोइ। उदप्रनांकरतहै। तै
 तोजतीनहोइ। हैअजतीअस्वरजुनर। संतवषांनैसोइ। तुरसीदेजग
 परैहजो। तामेंसंकनकोइ। १६। जतीजुनांमकहाइकें। मनकामनांउपा
 इ। कदाचिप्रियतनचितवै। तौबज्रलेपलगिजाइ। १७। जतीजुनांमकहा
 यकें। करकोडीनहीलेइ। तुरसीतोरुअंतरा। लेकरिऔरनिदेश। १८।
 लेबेकीइछानही। इवादिकनिकीकोइ। तुरसीदेबेरुकीनही। साचा
 जतीजुसोइ। १९। देइतौफलसजसबठे। लीयेपतियहहोइ। तुरसीकबु
 लेदेनही। साचाजतीजुसोइ। २०। चौपदी। जोकबसहजिद्विष्टिपरैना
 शी। तौपेथैअपनीमहतारी। पैमलिनताउपजावैनांही। तुरसीमनक्रम
 बचनजुमांही। २१। वहप्रिययहतरमिलापषांन। विसरिगयायहवा
 नीसांत। तुरसीसोइजतीपरवान। जाकेंएकहीआत्मधांन। २२। तुरसी
 अैसाजतानरेस। जहांकोरमेंस। धनिवहदेस। धनिवेलीग। धनिवैयांम।
 निवैअसथलजहांआरंम। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०।
 ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०।
 ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०।
 ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०।
 ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

तहोइकरिसेवाकरै। सकलसामग्रीआगेधरै। हवारहैदसनिकादासासं
 तसतीजनआधेतासा। बाजनतीजनबांतीयांती। श्रीचिसहितलेमि
 लेनुआंती। जतीजननिकीसेवाकरै। तुरसीसोजुसतीउधरै॥४॥ आइ
 आऊआगेले। मलनरिपाद्यावनदेश। तुरसीधरमंधजासोसती
 आदिअतिश्रैयोजती। पायामायामैरहै। जुअसौंजै। जलमांहीकंव
 लातैसो। तुरसीलिपतनकबरुहोइ। सतीसुलखिनजगुयेजोइ।
 ॥साधी॥ परतिरियापरसेनही। परतैहरेतचुषा। मासपरायोनाच
 सिध्यानबोलै। परनिदापरवादकरि। देइनेकाहुं। तुर
 सासतीजना। यावैसदगतिस्म। ॥७॥ जुवाबिसनबिसारिकै। म
 रसेकरिलेश। स्वरांनअचवैस्वप्रहं। परहकवित्तनदेश। हतै
 परआत्मा। न्याइसुपथविचरेइ। तुरसीअैसासतीजना। या
 यश्रेय। ॥८॥ कहाअपनीकहापारकी। अत्रियरुसतरांचता। ष
 रहलैतही। सुषमैनउमगिपरंता। संपतिविपतिसमांनवित। आ
 अंतिराषता। तुरसीसाचासतीसो। वकरिनजगुजांमता।
 पासनउरधरै। अतिनहोइतजैरंम। सतगुरपदबंदवकरै। साधसे
 गतिआरंम। केसनेससंसारसुष। छोडैसकलसकाम। तुरसीता
 वगको। आनंदआगेजामै। ॥१०॥ चौपजासायेकबुमुदितनहोइ।
 आवै। अनपायेबिसमैनजकोवै। संपतिविपतिवितरहैसमान। तुर
 सतीजुयेसहनां। ॥११॥ गहैदेयेबांबूसमिसोश। बीचिवसेजुचुयगा
 जोइ। तुरसीविनागतिनिहकांम। तहांनरयेएकीजाम। ॥१२॥
 उदासीनाहीनेह। कहंयेहकहांआदिबदेहजुएह। तुरसीयंमनजि
 रहैजुन्यारा। त्यागैकोकरपुंसरा। ॥१३॥ तुरसीअैसासतीजुसोइ
 तीजननिकासंगीजोइ। सहयालावहअसवारा। यहुचैयेकमोबि
 दरबार। ॥१४॥ ॥२५६॥ ॥ अपसमरधाईकोपरिकरन। ॥१७॥
 रिखाक्याबिन। कौडीकानहिजीवा। जनजनकोजांचत

लपलफुनितासै। तुरसीमनकरमवचन। यहजुजतनहिहोई। जतीज
 तनधिरहोई। धरमप्रतिपालैसोई। १३। यांतीपीवैचानि। तिद्याकरिने
 जवपावै। पायधरैयंयदेशि दयाहिरदैउपजावै। सतिवचनउचरै। मि
 थ्यामुषवीलेनांही। येआचरनआराधि। रवैअपनेउरमांही। समिता
 रातविचारि। इहिजुमारगमनतावै। तुरसीअैसाजती। आपतिरैऔ
 रनितिरावै। १४। तियाकेमुषवचन। सुनेनहीरुचिकरिकांन। अनेलो
 इनांउलदि। धरैअभिसंतरिधांतां। रसनाकेरसतजे। प्रांधसधिमननव
 हावै। घरीघरीपलखिन। सुरतिलेलेउलटावै। गुरुजिइंदीकेंजीति।
 जुगतिरतहोइपदमांही। तुरसीअैसाजती। बकरिजुगिजममेंनांही।
 १५। जंत्रमंत्रवेदंतकरि। पानकृत्तिकेरियोइ। उदपूरनांकरतहैं। तै
 तौजतीनहोइ। हैअजतीअस्वरजुनर। संतवषानैसोइ। तुरसीदेजग
 परेंहगो। तामैसंकनकोइ। १६। जतीजुनांमकहाइकें। मनकामनांउपा
 इ। कदाचिप्रियतनवितवै। तौबज्रलेपलगिजाइ। १७। जतीजुनांमकह
 यकें। करकोडीनहीलेइ। तुरसीतौइअंतरा। लेकरिऔरनिदेइ। १८।
 लेवेकीइखानही। दवादिकनिकीकोइ। तुरसीदेवेइकीनही। साचा
 जतीजुसोइ। १९। देइतौफलसजसबदे। लीयेपतिग्रहहोइ। तुरसीकबु
 लेदेनही। साचाजतीजुसोइ। २०। तौपेडी। जोकबसहजिद्विष्टिपरेना
 री। तौपेवैअपनीमहतारी। येमलिनताउपजावैनांही। तुरसीमनकम
 वचनजुमांही। २१। वहप्रियग्रहतरमिलापधांन। विसरिगामग्रहवा
 जीसांत। तुरसीसोइजतीपरवान। जाकेएकहीआत्मधांन। २२। तुरसी
 अैसाजतीनरेस। जहोकोरमैसु। धनिवहदेस। धनिवेलोग। धनिवैयांमा।
 धनिवैअसथलजहोआरंम॥ २३॥ २५५५॥ अयसतीकोपारकरजा
 न। जतीजननिकेच

रनकी। क्वारहैरजु
 नता गहेंह

तहोइकरिसेवाकरै सकलसामग्रीआगेधरै॥हचारहैदासनिकादास॥सं
 तसतीजनआवेतासा॥३॥बीजननोजनबांतीपांती॥पीचिसहितलेमि
 तैनुआंती॥जतीजननिकीसेवाकरै॥तुरसीसोजसतीउधरै॥४॥आइ
 आगकआगेलेइमलनरियाद्यापावनदेइ॥तुरसीधरमंधजासोसती
 आदिअंतिइजैयोजती॥यायामायामैरहेजुअेसैं॥जैजलमांहीकंव
 लातैसैं॥तुरसीलिपतनकवरुहोइ॥सतीसुलखिनजगुयेजोइ॥५॥
 ॥साधी॥परतिरियापरसेनही॥परतैहरेनचुषा॥सासपरायोनासै
 मिथ्यानबोलैम॥परनिदापरबादकरि॥देइतैकाहूइषा॥तुरसीअै
 सासतीजन॥यावैसदगतिम॥७॥जूवाबिसनबिसारिकै॥सनती
 रसकरिलेश॥स्वरानअचैवैस्वप्रलं॥परहकचितनदेइ॥हतेनही
 परआका॥न्याइसुपथविचपेइ॥तुरसीअैसासतीजन॥यावैगासु
 यश्रेय॥८॥कहाअपनीकहापारकी॥त्रियरूपनरांचेता॥इषदेषि
 दहलैतही॥सुषमैनअमगिप्ररंता॥संपतिविपतिसमानवित॥आदि
 अंतिराषेता॥तुरसीसाचासतीसो॥बकरिनजगुजांमता॥९॥आनउ
 पासनउरधरै॥अनिनहोइनजैरंम॥सतगूरपदबंदकरो॥साधसं
 गतिआरंम॥केसनेससंसारसुष॥बाडैसकलसकाम॥तुरसीता
 सेवगकौ॥आनंदआठोंजामें॥१०॥वीपवांयायेकबुमुदितनहोइ
 आवै॥अनपायेंबिसमैनजनवे॥संपतिविपतिवितरहेसमान॥तुर
 सतीजुयेसहनान॥११॥गुहेदेवैवांबूंसमिसोइ॥बीविबसेजुचुयगा
 जोइ॥तुरसीविद्यागतिनिहकामा॥तहांतरचैएकीजांम॥१२॥
 उदासीनाहीनेहा॥कहांयेहकहांआदिबदेहजुएह॥तुरसांमनजि
 रहैजुन्यारा॥त्यागैकीकटपुंसरा॥१३॥तुरसीअैसासतीजुसोइ
 तीजननिकासंगीजोइ॥यहपालावहअसवारा॥पुजेयेकमीवि
 दरवार॥१४॥१५६७॥अपसमरथाईकोपरिकरन॥१६॥तुर
 रिक्करुयाबिन॥कौडीकानहिजाव॥जनजनकौजांचत

च

॥१॥ बुरी सलीस मऊं नही रहित विसर जन देह । तुरसी तुरीया तत्तम
 हि जाय बसा याये ह ॥ १० ॥ मरे सुब ऊँ सोना मरे जरे सुफुनि न जाये हि
 तुरसी फिरे सुता फिरे । मिले महापद मां हि ॥ ११ ॥ जे जीव तम ता नये ॥
 ते फुनि मर हिन वीर ॥ तुरसी सुष में ही इर है ॥ जग जग सदा सुधीर ॥ १२ ॥
 मूये मृता की अकस्या जीवता है सुषो ॥ तुरसी जुगि जुगि थिर र
 हे मरे न कव हू सो ॥ १३ ॥ मूये के मोह जु नही ॥ बोहन ही फुनिका हि
 तुरसी इदी न उल है ॥ जो त्रिय वै वै बोह पा हि ॥ १४ ॥ चौपरी ॥ जब लग क
 बुक हा वै जीव ॥ तब लग लहे न सुष की सीव ॥ जब तुरसी ना ही ही इजा
 ॥ तब निह घै सुष मां हि समा ॥ १५ ॥ ता ॥ है तजिता ही है र है ॥ तिनके
 ते न हि को ॥ तुरसी क बुक हा वरी ॥ मार घां हि गो सो ॥ १६ ॥ है सो पर ह
 रिवा वरी ॥ ना ही स्यों क स्निह ॥ ना ही निह चल रहेगा ॥ है सो के हे पे ह ॥ १७ ॥
 ना ही नये सुति रिगये ॥ तब जल पे ली पार ॥ तुरसी जो क बुक ही इर है ॥ ते
 बूडे मरु धार ॥ १८ ॥ ना ही को वाहर घनी ॥ है को न ही लगर ॥ ना ही निर
 ते घरि मिले ॥ है नै में नये बार ॥ १९ ॥ ना ही नये ल है ॥ है तहां नै अ धिका
 र ॥ तुरसी ना ही केर हो ॥ अपने रं म मार ॥ २० ॥ न हां ता ही है क बुक हो
 है तहां ना हिन कथ ॥ तुरसी सम ऊं संत की ऊं या साषी को अरथ ॥ २१ ॥
 है तहां नै स हिन दि ॥ है तहां अपति विनां स ॥ तुरसी ना ही तहां तहां ॥
 इ ती बस को ना स ॥ २२ ॥ ना ही तहां है अनंत सुष ॥ है तहां सुष की र सि
 तुरसी सम ऊं या मते ॥ ता जन को सा बा सि ॥ २३ ॥ चौपरी ॥ है तहां है तही

है तहां अपजे व ऊं तै बाधि

२४ ॥ साषी ॥ है अंतर य ह वा षे हरि ह्म वि

२५ ॥ तुरसी जब

इहे तगति

अरवासनां अप

अवसथा ऊं

अस्यांत॥ तुरसी लंघि आगें गया॥ तव मन महा जाना॥ २८॥ मन मूखाव
 होरित जीवै॥ सया आनंद यदलीना॥ तुरसी दास कत कत सया॥ जब
 साक बुकीना॥ २९॥ मेही मेरा सत्रहा॥ जावत में जीवता॥ तुरसी में मृत
 गजया॥ तब में ही मेरा मितं॥ मेही मेरा अरि कता॥ जावत अरि अज्ञान
 तुरसी में मृत गजया॥ जब समया गुरगपोना॥ ३०॥ मेही मेरा कालहा॥
 मेही मेरा जाला॥ तुरसी में मृत गजया॥ तब में ही नया दयाला॥ ३१॥ मेही को
 मेपे तही ॥ इरावतानि तसो ॥ तुरसी बल तारे निदिन॥ मन सो के व
 सिही ॥ ३२॥ तुरसी मूखा फिरि जाया॥ जीवता नया समाना॥ रोवन हा
 री रहि गई॥ मंदिर बगे निसाना॥ ३३॥ सुमिति सुंदरी पान पीघा॥ अगनि
 रूप अहंकारा॥ तुरसी जरता अब स्या॥ जुरि गये जरावन हारा ३४॥ जहा
 सोगत हा सुषतयो॥ दुष जुगयो धर स्यागि॥ विधवा ब करि ब कत शीपा
 यो ब करि सुहाग ३५॥ धरि धरि हं हि ब धार्यां॥ धरि धरि संगल चारा॥ धरि
 धरि अति आनंद सयो॥ सुदरिल द्यो नरतारा ३६॥ धनि दिहो रो धनि धरी
 धनि महरत जांसा॥ तुरसी अंदरि आईया॥ अंतर जांमी रंसा ३७॥ ३७॥
 ॥ अथ चितक पटी को परिकरन ॥ ५१॥ तुरसी द्वि द्वि अद्वि द्वि सब यैकी च
 तकथेता बरतै कु बुधिस कामता॥ ताते न सो बिलहंता ॥ सुष अयकथे जु
 एकता॥ अंतरि बरतै आना॥ तुरसी दास मन कसबचना॥ लहे नपद निरबा
 ना ॥ ५२॥ चोपई॥ कासमिन ही पापी कलिको ॥ कथे एकता बरतै दो ॥ को
 मको धर्यो नरि रही काया॥ कहे सुष हम दिन व्यापे माया॥ तुरसी महा मो वि
 निरबांन॥ असे सुगधन पावे जान ॥ ५३॥ साया॥ उपरि वैठै अनहित हो ॥ ३
 तेपलक पलटा ॥ मां हो मंजारी जु लो॥ मन माया को जा ॥ ५४॥ पलक मूदि
 पापी जुतरा बेटे अनित जु हो ॥ स्वानतरी भाली तके पर धन के पर जो ॥
 ॥ मा तुरसी बाहरि तै नां सुं दिको रसनां दां ततरि दै हि॥ बलक युवन को प्रा
 नीयां॥ कांका कां स करे हि ॥ ५५॥ चोपई॥ रसनां अग्रं मको नांसा॥ मन मेस

७ जहां जहां सुमिरतये जांति तहां बधेय अति परवानी पलक
 म्दिसुमिरन करहिं ध्यान धरहिं कतार मन विचरे वाजारमें ता
 की सुधिन सार ८ तुरसी तावत हसनी गहे कहु नहि होइ जावत
 लिषिलिषिलोक कों अरथ सुनावत सोइ ९ उपरि अति नजुदे
 धिये माही मति मजार तुरसी तावत तापति तं कों विरथा विधि
 आघार १० तुरसी जावत विरथ है विविधिन सनांन तावत का
 हंगन कों है मन माही ध्यान ११ पहले मन होइ कें मिले पावै हो
 हि अघों १२ ऐसे चित कपटी नस्यो तुरसी मिलै जु कों १३ जाव
 स्वारथ तावत गहसि हसि प्रीतिक रां हि तुरसी अंत स्वारथ मिटे
 घटत घटत घटि जां हि १४ परमारथ की प्रीतरी वीरनिवा
 तुरसी स्वारथ की सुरति पारन पऊ चाकोइ १५
 छिपल मैतरी वीरनिवाहन होइ प्रती र्घ की जाया ली
 वै सोइ १६ डरी डरी कामनां मल को लो रघे कर
 रिउगे विषया नये हजर १७
 १८ जुगति जतन करि दाविये तो ऊं ऊं त क्रि दौ गंधा १
 मव ऊपां वही चले अंसतन की चाल
 रिहो हि दयाल १९ दया धर्म हिर दैन ही नही प्रेम
 यो चाहे रंम कों चले कपट की रीति २० पहले न
 मत सुरसर नौ लें हिं तुरसी पावै कपट करि गुमन
 न करनी उर से चै ता हि सुषय गटे नां हि
 करे तो सनात विचिक हां हि २१
 हं अहिले स तावत उर करिता सके
 धप ऊपनि मै तिल लेख्यो मां हि तुरसी तनप
 ने दै नां हि २२ कसौ टी विचि आइ कों
 सुध सरीर होइ तव मल नि दै सुबास २३

तपकी लू विचित्रा ॥ तुरसी तब नितिनिति होइ ॥ नो व फुले लक हो
 ॥ २५ ॥ २६ ॥ अथ गुरसिष देह को परिकरन ॥ ५२ ॥ तुरसी तुरसी
 ऊना मिले ॥ उतम ज्ञान सुनाइ ॥ इष समुद्र स्यो काटिले ॥ जुगति जिहाज
 चढा ॥ १ ॥ तुरसी तुरसी ऊना मिले ॥ महा उपगारी सो ॥ आयन इष
 सरम हंस है ॥ हंस हिलंघा वै लो ॥ २ ॥ लंघा वर्द्ध आलिष कैं ॥ परै जु पर
 सलगा ॥ तुरसी लिंगादिक भिसौ ॥ रषे तहि अरगा ॥ ३ ॥ चौपई ॥ सने स
 नै मन को निरवरो ॥ महं मोहकी अरफिनि टारै ॥ नीरधी रलौ नितिनिति
 सो ॥ तुरसी करिया रर है हो ॥ ४ ॥ साधी ॥ तुरसी हंस दूटत फिरे ॥ तुरसी
 जो पईये ॥ तौ त्रसागर लंघते ॥ वारन ही लईये ॥ ५ ॥ तुरसी हंस दूटत फि
 रै ॥ तुरसी मिले नको ॥ जाकै तन मन में तही ॥ राधा दोष रिय दो ॥ ६ ॥ तुर
 सी हंस दूटत फिरे ॥ विषयां स्यो न्यारा ॥ विरला को ऊयाईये ॥ त्रुजी का
 प्यार ॥ ७ ॥ जंत्र मंत्र के या हजी ॥ ब्रह्म जग मांही जो ॥ तुरसी षो जा रंमका
 विरला देष्या को ॥ ८ ॥ तुरसी जंत्र मंत्र वै दंतके ॥ गनक वृत्तिके सो ॥
 षो जी हंस देष घंते ॥ ये त्रसहित विरला को ॥ ९ ॥ चौपई ॥ क्रूरम लौं
 दी उलटा वै ॥ हरब पर हरिय छिम आवै ॥ विसरि जाइ वाजी को ॥ रचाना
 गंधुग होइ रर है अजांत ॥ १० ॥ साधी ॥ तुरसी लैंकें लावई ॥ यह मन उनम
 त सो ॥ अरस मषं त लौं होइ रर है ॥ ते तौ विरला को ॥ ११ ॥ विरला को उपा
 ईये ॥ त्रिगुण स्यो न्यारा ॥ तुरसी रस गुन रतय हा ॥ हे जगत्रसार ॥ १२ ॥
 ॥ २७०० ॥ अथ हेत प्रतिसनेह को परिकरन ॥ ५३ ॥ तुरसी तुरसी प्रीतिक
 रिया स्यो ॥ जैसी चंद्र चकौरा ॥ पल हंस वत तना टरे ॥ चितवत ही होइ तौ
 रा ॥ तुरसी तुरसी प्रीतिक रिया स्यो ॥ ज्यं चात्रि गघन होइ ॥ पीवपीव
 पीव उचस्यो करै ॥ निस वासरि निति सो ॥ २ ॥ तुरसी तुरसी प्रीतिक रि
 पीव स्यो ॥ ज्यं मृग मोहित नांदा ॥ साता सुत सुरही व बनि ॥ ज्यं स्वादीष
 टस्वादा ॥ ३ ॥ तुरसी ज्यं नर नारी को तजे ॥ नारी नर स्यो लीन ॥ असे प्रीति
 करि रंम स्यो ॥ ज्यं जल से ती मीन ॥ ४ ॥ प्रीतिकी वै पीव पाईये ॥ तन मन

३जलहोइ। तुरसी जामनमरनका। संसारहेनकोइ॥५॥ चौपद्री। तुर
 सी संसारसबहीनांसे। रोमरोमरंकारप्रकासै। ज्यंत्तुषे अतप्यसेपांती
 ऐसीप्रातिजो नजेवितांती॥६॥ अंतहकरैतकंवलजोआंही। प्राति
 कुंचिकाषोलेतांही। तुरसीप्रातिहोकरैप्रकास। प्रातिविनासबमि
 प्याआस। ७। प्रातिहीकेबांधेप्रसुआये। जुगिजुगिअपनेदासजा
 ये। लीयेप्रसपरिकंठिलगाइ। तुरसीज्यूवालककोमाइ॥८॥ सायी। तुर
 रसीप्रातिविनांप्रसुकीमिलन। दुलतइहिंसंसार। तावैरइतजिवन
 तवौ। तनपलटायेंघार। ९। सारत्तसंसारमें। मतएतोहीजोना। प्राति
 सहेतिहरितांमलै। तुरसीपरहरिआंन। १०। मूरि। रिवकृतकस्ये
 करिकरिजतनअनेक। तुरसीकिनहुंनपाईया। प्रातिविनाप्रसुयेक
 ११। तुरसीतावैरहकृतगननिता। अंगवकृतसमलगाइ। निरतिसुर
 तिलागेनही। प्रातिविनांहरितांइ। १२। तुरसीप्रातिसमिनसाधनकोक
 प्रातिसमिभ्रमतआन। प्रातिपकुंवावैप्रांतकी। लैकेप्रमस्यांन। १३। ता
 तालोहातुरतही। संधिरहितमिलिजाइ। तुरसीजोकवसिथलहोइ। तो
 बडरिकसोटाषाइ। १४। होइकसोटीतावलगा। जावतसंधिमिलाइ। संधि
 मिलेजीवसीवकी। तवसुप्रमांहिविहोइ। १५। सोतुरसीजीवसीवसंजो
 गयह। मिलववज्यौंजललौंता। प्रातिकसोटीकीजिये। नहीतीकारन
 कौंता॥१६॥ ॥२०२३॥ अथसूर्यतनकोपरिकरन॥५॥ तुरसीजासुरात
 नमें। सुधिआवैहरितांम। सोसुरातननटारिये। अरतैएकोजाम। १। सोई
 सरसिरहीये। करैसुरतिकीधरि। तुरसीसुमिरैरंमकी। पंचमहाशय
 फेरि। २। पंचोविषरेजातहैं। अपनीअपनीबाटा। तुरसीसोईसरिवां
 आनैएकैघाट। ३। कामदहेरंमहिगहै। लहैप्रमसुषसोइ। पावपिबौं।
 डानासरे। तुरसीसुरसोइ। ४। चौपद्री। तुरसीकराहिधांतकमान। पु।
 निजुसमांदिचानकेवांन। होइआसुबअनाहिमारे। तासुराकेमेंव।
 लिहारे॥५॥ सायी॥ मेंवलिहारेसुरके। जोअैसाहेकोइ। तुरसीअतग

रिपमारिकैर घा रं मरत होइ ॥ ६ ॥ सबको ऊसरक हां वंशी वित अपनै न
तमाना ॥ तुरसीयो चौ बस करौ सो स्वर सति जाना ॥ ७ ॥ सोई स्वर सरा होये
संई को सेवै ॥ तुरसी कनक अरु कामनी ॥ हो कत जि देखै ॥ ८ ॥ त्रिसात्त
जे तत चां न गहि ॥ कनक हाथ नही लेइ ॥ तुरसी ताहि प्रनु हं सि मिलौ ॥
मि वि अपनौ सुख देख ॥ ९ ॥ स्वर बीर संसारें ॥ साचे हं जम सोइ ॥ तुरसी म
नम घमारिकै र हे जु नृ नै होई ॥ १० ॥ स्वर सुक चमाने नही ॥ करत को
प्रस्यो जंग ॥ तुरसी ताको नंग करि ॥ आपन रहे अतंग ॥ ११ ॥ तुरसी धंनि वै
स्वर वां ॥ अनित न होइ न जे रं माका महि मारि मिठा प्रदे ॥ ये स्वर हके काम
१२ ॥ करे जगया अतंग स्यो ॥ जानवां एले हाथि ॥ तुरसी तरता तवर है ॥
जघरिय आवै हाथि ॥ १३ ॥ तिल तिल करिय मदन की ॥ जरय निडारें मूर
तुरसी जामन मरतें ॥ तब जत होइ नृ सर ॥ १४ ॥ निर मूरन करे मदन को
वर धरि हरि को ध्याता ॥ तुरसी तीनों लोक परि ॥ ताको बंजनि संना ॥ १५ ॥
समर समान न स्वर को ऊ ॥ जिति जीत्या सब संसार ॥ तुरसी वहु वहु हरि को
जित की प्री समर प्रहार ॥ १६ ॥ संखंत सिर संखें व्यो ॥ स्वर हं सिर सो सर ॥
तुरसी जित मूर ग्यं न गहि ॥ स सर को यो नृ सर ॥ १७ ॥ मसु अरु पकमांडे
मन सवा च सोइ ॥ तुरसी आंका मके क व ह न का यर ही ॥ १८ ॥ धं
मर है सब जाग को काम हि विरत को ॥ तुरसी हं जु को मके रं ग
हिय वै सोइ ॥ १९ ॥ तुरसी रं म ह ज र हे ॥ जे प्र ई जुं म के ॥ महि मारि
मिठा वुं ॥ सु मरि मरि हं ॥ २० ॥ क म्प हं र र र ॥ मार वा रें म न
मोर ॥ तुरसी तन म न हं ॥ २१ ॥ २२ ॥ नी ली ॥ धरि प ना
मिठ ता स्व गु म न ॥ ते ते स्व क हं के ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

तौस्यमरिजाइ। सुरसीरनसंग्राममें। मंड्याजुसंगलगाइ। २६। सती
सोईसखिवैसिकें। पावोचितधैतांहि। पावकपाणीसमिगितें। मन
चितपीतममांहि। २७। कोटिआत्सुनकोटिस्स। कोटिकबने
सिंगार। तुरसीवसवत्एरूपकरि। जरीजुपीवकीलार। २८। यो
साधूसुषदेहके। तिनकाल्यें। त्यागें। तुरसीतबनलवैसई। साहिव
केआगें। २९। साहिवआगेंजाइवै। रहिवैचरननपास। तुरसीबा
तडलनहै। विनकीयेंइंद्रीनांस। ३०। सोचनकीजेसुमरतें। सोईको
निजनांम। तुरसीपोचहंनहोइये। जावतइंद्रीगाम। ३१। रनसांहीप्र
वैसकीये। सरकरैजेसोच। तौतुरसीसोनेनही। सबकोऊकहैजु
पोच। ३२। हमसरकहैंतासकौं। जुपाबापावनदेइ। परबलपरदान
तिकें। एमनांमजपिलेइ। ३३। फुरतैकनकहियरहैरे। बरतीकामनि
होइ। तुरसीबएवैनही। सरकहोवैसोइ। ३४। चौयई। अनजुरती
रिधिसिधिमसुने। त्यागीसरकहोवैघने। फुरतीमायात्यागेंसोइ।
तासमानत्यागीनहीकोइ। ३५। साधी। त्रिभुवनसांहीसासनां। जास
रकीचलाइ। तुरसीसमरनबसिकीये। तौकहाकीयोसरकहाइ।
३६। सोईसरसांवतसोई। सुनटऊजुपुनिसोई। तुरसीसमरहीजीवि
कें। आयआगंजितहोइ। ३७। आघाचलियाबाजुपलै। पावनदेइअ
तीत। तुरसीयात्रियलोकमें। सोकहियेमनजीत। ३८। जोकबसांईसु
मरतें। उपजेडघसरीर। तौऊमनविग्रहनांकरे। तुरसीसतसधार। ३९।
डुषसुषमांहीसारिषां। संपतिविपतिसमान। तुरसीयुहगतिधीरकी
गहैरहैगुरगान। ४०। धीरनटरेंनिमषतरि। देखिदुतीकेंसुष। तुरसी।
सदईहोइरघा। सांईस्योसनसुष। ४१। धीरटरेंकऊंकेवैते। होइधरम
कीहांनि। तुरसीप्राणीप्रपंचमहि। फिरिफिरिषुचैजुआनि। ४२। गहैषो
टगुरधीरकी। धिरतागहैंअथीर। तुरसीतेधिरतातजै। तौकींनवंधावै
धीर। ४३। तुरसीजोगैवरचहलैगलै। तौकोकाठनहार। सरधीरसुषमोरई

होइ जगु में है कारा ॥ ४५ ॥ तुरसी स्त्रे संतको ॥ मुषमति मोर करामा ॥ मुष
 रिजो लो जौ त्रै सो जीव न धिगा धे कामा ॥ ४५ ॥ तुरसी लीक जाइ पर लीक
 नै मी वैक कनां हि जौ जन पचु की पीठि दोर वै विषय निमां हि ॥ ४६ ॥ यद
 रि संग संसार को ॥ गहा जीग वै रगा ॥ तुरसी फिरि करि वा कुरै ॥ तौ लो बज
 को दाग ॥ ४७ ॥ संतन की ऊ आद रौ जग कुरै फिट कारा ॥ तुरसी जौ वै रगा त
 जि नर ब करि र वै संसारा ॥ ४८ ॥ कुं बंद कलय नो मो वि कै ॥ प्रथम लो हि वै र
 गा ॥ तुरसी फिरि बिषया न जौ ॥ तौ धिगा धिग उन को त्यागा ॥ ४९ ॥ होइ अपज स
 या लो क मो ॥ सर लो क दिन समा ॥ तुरसी रंम वि मु म्भ र वि च हो पतन हो
 ॥ ५० ॥ ५० ॥ उ नै धर में मी एक हं ॥ द्या यिन आया को श नां ज न नयान स त त
 या नर च ले वा रि त न मी ॥ ५१ ॥ चौ पई ॥ तुरसी अे सा च ध म ज सौ ॥ ता को
 सां करौ म त को ॥ की ये सं रा तरे हं ना ॥ प्रा खित लो गे यु तिन सा ॥ ५२ ॥
 ॥ ५२ ॥ सा पी ॥ हां सो हारी वा च सु नि ॥ सु सी हो इ मन मां हि ॥ तुरसी स्त्र ह की
 कया ॥ ३ र में आवै नां हि ॥ ५३ ॥ स्त्र चें त सूं हो जीव को ॥ स्त्र ह को सु री न ॥ तुर
 सी ज हां का य र क या ॥ त हां च हो मां डे कां ना ॥ ५४ ॥ रं म न जन को आ ल सी ॥
 आ न जन को सरा ॥ तुरसी अे ये ब कू त हैं ॥ मं च नि र भे चू रि ॥ ५५ ॥ चौ पई ॥
 पं च नि के जु व हा ये कि रै ॥ रं म न जन की सु धि त ही करै ॥ तुरसी वै का सर अ
 ता ना ॥ कि सैं या वै प द चूं बां न ॥ ५६ ॥ मुष न रि न रि ब कू बां तें क हें ॥ स ना नि मां ही
 अे चूं हें ॥ तुरसी कां म पर न ज ब हो ॥ त ब ले ते फि रैं ल क ई सो ॥ ५७ ॥ ॥
 सा पी ॥ सर तन की वा त सु नि ॥ सा ह स उ प ज्जा आ ॥ तुरसी ज ब दो ऊ द ल
 मि ले ॥ त ब जी ग या पु ला ॥ ५८ ॥ दे वा दे सी प हरिया ॥ सर तन सं जो ग ॥ तु
 सी ज ब मा रै प री ॥ त ब चि त ये ऊ च लो ग ॥ ५९ ॥ तुरसी बां नो बां धि को ॥ ब कू
 त क रैं ड फ डी र ॥ सर ती ब रि यां मो रि मु य ॥ त कैं पुरा नी गी र ॥ ६० ॥ स्त्र क हं
 व न को धे यो व र सर तन नां हि ॥ तुरसी व फू ल्या फि रैं ॥ ती र परें न जि नां हि ॥
 ६१ ॥ ६१ ॥ ड मंड त व को कर ना ॥ या ज्जा मा हि अ नं त ॥ तुरसी म न रि प को द र ता ॥
 बि र ल को ई सं ता ॥ ६२ ॥ चौ पई ॥ ज हां ज हां उ न मं त

करे गवन, तुरसी तहां तहां सौं लावै, सोई सुत्त मेरै मन तावै ॥ ६३ ॥
 ५ ॥ गहिगासी गुर म्यां नकी, अरु ध्यां मकी कमां त, मन सा मगी मन मृग
 पंच विकारे ज्वांत, गुर मधि घेरि रहै नैक मध, उलटि रद्ग दस्योंत, तुरसी
 तव आगें सकल, मोडि मुक्ति आसांन ॥ ६४ ॥ ॥ २०८ ॥ अथ काल
 कौपरि करु ॥ ५५ ॥ तुरसी कं पे काल स्यो ॥ सुर नर अस्त्र अंनंत तृ नै रूप
 कोऊ नही ॥ विनां न गति नें वेंता ॥ तुरसी कं पे काल स्यो ॥ जिनके कल
 पप्र जंत सरि ॥ महा मयान कहो इर है, बांधिन सकई धीर ॥ ३ ॥ तुरसा
 जिनकी अवधि कौ ॥ आवे अंत न छेवा ॥ तेऊ कं पे काल स्यो ॥ ब्रह्मा हंसे
 सै करे कं पे देव ॥ ३ ॥ तुरसी अरवपुरे को काम ही ॥ काकी गिनती मां हि
 ब्रह्मा हंसे नै करे ॥ काल स्यो घरा डरं हि ॥ ४ ॥ जाके ते ब्रह्मा करे ॥ ब्रह्मंड को
 कंप होइ ॥ तुरसी दास असा बली ॥ महा काल हें सोइ ५ ॥ काल कंपावै
 बन को ॥ जो तन धारी होइ ॥ तुरसी हरि गुर के सरनि ॥ साधु उबरे सोइ ६
 जेजे आये उध सुष ॥ जवरजू लै सोइ ॥ तुरसी गोविंद न जन विन ॥ तिन
 मेर घान कोइ ७ ॥ जिनकी अवधि अंनंत ही ॥ अंनंत देह बिसतार ॥ अ
 नंत मनी मन राषते ॥ ते मरि मले जुबार ८ ॥ जिनकी अवधि अंनंत ही ॥
 महा विस्तीरा देह ॥ तुरसी तेऊ चलि बसे ॥ सबै मिलाने येह ९ ॥ जिनकी
 अवधि अंनंत ही ॥ होते अस्थिर पिंड ॥ तेऊ ओसरि आइ के ॥ काल की भेष
 षेड १० ॥ धर अवे सै विन सई ॥ विन सै पांती पोंन ॥ नर जीवन बद्धु हासि
 ११ ॥ चंद सर से जां हौ ॥ ओसर ओसर सोइ ॥ न छिन्न
 हंषि रिषि रिपे ॥ धिर देखिये न कोइ १२ ॥ तुरसी अस्थिर कोऊ न देखिये
 जो तन धारी होइ ॥ अपनो अपनी ओसर सुगति ॥ चल्या जाइ सब कोइ
 १३ ॥ कुं मकर न रं वन जुसे ॥ ऊते महा बल सर ॥ तुरसी तेऊ काल बसि है
 हर गये कतरूं चूर १४ ॥ रहन काहं को न पावई ॥ एंम मजन विन मांन ॥ तुरसी
 काल बली छे है ॥ सब को मर दे मांन १५ ॥ तुरसी जे संहर सुष नी गते ॥ अ
 रुगं जिन सकता कोइ ॥ ते नै निते निकसि कौ ॥ अवन निवसि ये सोइ १६

तुरसीधरकोऊतही। जोधरिआयां देहा। औसर औसर आयनें मिल
वेजाहिजुषेहा। १७। मेलतकूदत देखियो। मेषुषबिलसंतसंसार। तुरसी
तेऊजायगा। १८। धूमकेपहारा। १९। तुरसीयाकोबेजीवनमही। मत्तको
ऊगरबकराश। एकदिनाऊठिचलना। बाइसरीतजिकाश। २०। याबि
नमंगरदेहकी। मतप्रतीतिकरीकोश। वारूकेमंदिरजुलो। बिनप
तबारनहोश। २०। बिनसिजाइंपलबिनमही। देवताप्रहदेहा। तुरसी
असिदेहसों। बादिकरतनरतेह। २१। वारूकेमंदिरमही। बैसेअस्थि
रहोश। तुरसीयोंजातेतही। बिनसिजाइंगासोश। २२। ऊंचेऊंचेगठनि
परऊंचेरचिहिनवसा। तुरसीयोंजातेतही। कालगिनतहेस्वासा। २३।
तुरसीमिथ्यादेहयहा। तास्योमोहनलाश। बाडिगयेसबदेवते। जिवकी
दृश्यआश। २४। तुरसीमिथ्यादेहयहा। वारूकीसीतीति। कालमेघके
परैते। चितआवईतचित। २५। कालघटावतदेहको। जूदीवाकी
लोश। तंणफिलहोइअंधरे। कहारहेसुषसोश। २६। कालकाठलापो
कायाके। ज्योंलेंत्योंलासोतीति। तुरसीअसेपिंडकी। करियेकहाप्रती
ति। २७। कालबीलीकायाजुके। शिपहोइलागासोश। तुरसीराजांमवि
नारामतहारतकोश। २८। कालबालमूषकजगत। तक्तकिरेनिति
सोश। कोऊबुधिकरिउबरतगतजता। तगवंतसरनेंसोश। २९। कायाक
रसनकालके। मनमोनेंतवषाश। ताकीरिबाकाकरैरिपरहरिगुन
गाश। ३०। जेतोअंतरयजे। जपतेरंमदयाला। तुरसीतेतोकालहे। जनपर
डारतजाल। ३१। जीयजांवेजंसआइहो। जबइहअवधिसिराश। तुरसीयो
जातेनही। जुपेरिरसागठकाश। ३२। बऊतरठतसादेहके। रबाकरतअने
का। तुरसीसौफुनिबिनसिहो। बिनहरिनजनवबेका। अयाबिनतंगरदे
हकी। मतप्रतीतिकरीकोश। कालकहरतकतजुकिरे। लैजाइरुपति
जुसोश। ३३। नांतांसंपातदेबिनरा। मूल्याअंगनसमाश। तुरसीयोंज
नेनही। चलहोयाबिटकाश। ३४। विमुषजीववि

रहे जंजाल काल बलीसूखानही आइ गया ततकाल ३६ जाइ सुफि
 रि आवे नही आवे सुफिरि नही जाइ तरसी जब लग देह है तब लग सं
 गरहाइ ३७ इन होइ आकास रंग जल रंग प्रगटे सीस तरसी यह
 गति देह की के है बीसवा बीस ३८ तरसी सो जनम सो मरेता श्री
 सरि श्री सरि आइ कोऊ आगोपी वै कोऊ विन जीते मन काइ ३९
 अवधि घटत यो अंधरे ज्यो दीवा की लोइ जैसे अल्प जीवन मही क
 हो रह्यो विष नीइ ४० अवधि घटत यो अंधरे ज्यो सलिता को नीर
 गयो सुफिरि आवे नही सम फि देषिय हवीर ४१ तरसी सुबिम काल
 यह कोऊ जोगी ही चलै लहंत इतर जीव जानै नही जाके मत प्रव
 त जुफिरंत ४२ तरसी सुबिम काल यह महा जुबलिया सोई क
 रवत लो बिहरे सब नि जो तन धारी होइ ४३ तरसी गति जु काल की
 महा अगहन जु आहि सुषिम निरंतर नित बहै कोऊ लषेत ताहि
 ४४ परथम बिन कता परिकर म परि परि पुष्ट जु होइ ब्रह्मा अव
 धि प्रजंत लो बढि विस्तरे जु सोइ ४५ बिन क परत पावे नही तो वि
 स्तरे न काल तरसी दास निरहर होइ महा अषड उर साव ४६ अय
 ने आत्म रूप्यो ४७ इरि न क बहू होइ सुध सरूप ही मेर है ताहिका
 लनहिकोइ ४८ जम तै हरे जिहां न सब जन हं मानै संक तरसी सुमि
 रै रै निदिन ता तै स्यो नगवेत ४९ तरसी काल कहां करे जो जीव तने
 जंजाल करु नास्यो के सो नजे तो काल हं होइ दयाल ५० एक जु गति
 जमरि यहै एक जु गति जममिंत तरसी ता नै रै निदिन नाइ बिलंबो
 चित ५१ राम नाइ लागार है अंतरि नै उप जाइ तरसी तास्य काल
 हं कपाल होइ फिरि जाइ ५२ २८ २७ ॥ अथ मजी न जे को परि कर
 ५३ ॥ नाम सजीवन ओषधी सतगुर वैदस मान तरसी जहां जहां
 येउ सै तहां तहां विद्यान आना ५४ नाम सजीवन ओषधी सतगुर दीने
 जाहि तरसी आदि अंतिलो काल नगं जै ताहि ५५ काल आइ धोका

करै। जाके उर हरिनांमा। तुरसी रतमत होइरसा। काटिक लपनांको
सा। चौपई। रामतांमसजीवनिजरी। जिनसंतनिलेहिरदैधरी।
तुरसीतेजमयुरिनहिजांदि। रहेसमाइअबेसुषमांदि। नागातरम
उनतातनकेरा। जनममरनइषतावेतेरा। जिनिरायाहिरदैमुषियू
शि। तुरसीरंमसजीवनमूरि। ५॥ साषी॥ सजीवनिहरिनांमस्ये। अति
तआरतिहोइ। तुरसीजेजनविरंविषे। तिनमेंनाहीकोइ। धातौसिदि
आत्मअसेहोइ। जयतसजीवनिनांमा। तुरसीरमितारंमको। औरन
कोऊकोमा। ७॥ निसबासुरिलागारहो। नावनिरेजनमांदि। तुरसीस
जीवनिजरीयह। औरकुजरीसबअंदि। ८॥ चौपई। तुरसीवहजु
उमैअस्थान। तुरजेबोअतिइखतजात। सजीवनगोविंदगुनगा
वै। सोजवतलैजांतहापावे। ९॥ साषी॥ जहांजनममरिबोनतहं
जुरानव्यापेआइ। तुरसीजमकोनेनही। वलिवसियेतहाजाइ। १०
जनमतमरतजगतमें। बरुदिनबीतेसोइ। अबअनसेघरिजाइके
रहियेनृतेहोइ। ११॥ अहंममतकेयेरेयह। सोपदजीवनिमूर। तुर
सीचलिसोपरसियो। जूंबकरिनउठैअंकर। १२॥ अंकूरवरिजरिच
समहोइ। जनमरनकोसोइ। तुरसीउरआवींफहर। जोबसअलो
कनहोइ। १३॥ आलोकनएकबसको। जोनिजकेगहरइ। तुरसीउ
रबाहरिसदा। तौधरेतहसरेकाइ। १४॥ पिंगुलहोइअतिप्रोतिस्यो
तातकालतरतास। तुरसीजोजवचडिगया। जुरिजुरिकरेखिलास
॥ ५॥ तुरसीसोतजरविनां। धरफुनिलागनांदि। परविहंनपया
सदा। कैलिकरैतामांदि। १६॥ ॥ २८५४॥ अथअपारिषकोपरिक
रन। ५७॥ वनविचरतवतचरनिराज। मोतीयायेथेन। तुरसीकीस
तिवाहरी। गर्जजुगजालेन। ११॥ तुरसीमोतीयायेविपतिहर। सबसंपति
षदाइ। कीमतिहंनकिराठनिति। किनकिनदीये

सीजो जने तहं जाको वित्तपचाव सोताहितदै निडरहोइ करि
 करिकोटिकुचाव ॥ ३ ॥ सिधमितोसाधिकमितौ मितौ संतसुषेद
 व ॥ तुरसी दासपारषविना कोऊन जाते नेव ॥ ४ ॥ रजतके तीसाहे सु
 कतीको सठजाइ ॥ तुरसी अंति सौ प्राणीयां परषपरेयवित्ताइ पा
 उपरि कलिई कनककी ॥ नीतरितरिया लोह ॥ तुरसी तास आदस्की
 यें अंति उपजई अंदोइ ॥ ६ ॥ उपरि कलिई कनककी ॥ मेल्ही बिच
 ववनाइ ॥ तुरसी नीतरि वस्तविन ॥ घरे नमोलविकाइ ॥ ७ ॥ षोटी वस्त
 हिषरी करि ॥ बरततहे जे जांनि ॥ तुरसी दास उन अगनिको ॥ अंति हो
 इगीहांनि ॥ ८ ॥ षोटी वस्त हीषरी करि ॥ जे बगहें अग्यांत ॥ मुषकाल
 के जाइगा ॥ जबनिकसहै निहांत ॥ ९ ॥ षोवै काया कंचना काचस
 नेसवजीव ॥ तुरसी तिन अंध अगनिको ॥ कहौ कहं हेसाव ॥ १० ॥ तु
 रसी परषनहारविन ॥ बैरगरगुरग्यांन ॥ कौडी कौडी कैसे ठो वेच
 तफिरै अग्यांत ॥ ११ ॥ द्विष्टि धातपाषंडमें ॥ जंत्रमंत्रके साहि ॥ ते अग्यां
 नहरिहीरकी ॥ कैसे परषलहांहि ॥ १२ ॥ तुरसी आप अवारषु अपार
 षु गुरसोइ ॥ दोऊतेसेतेसे मिले ॥ कैसे प्रषजुहोइ ॥ १३ ॥ मुगधनके या
 नैपरी ॥ विद्या अथात्म आइ ॥ तुरसी लै घरघर करी ॥ दर्दघारमैवहा
 इ ॥ १४ ॥ मुगधनके या नैपरी ॥ विद्या अथात्मसार ॥ बाजन तो जन
 कारसै ॥ बेची घरघरघार ॥ १५ ॥ ताविद्या परसादतै ॥ पईये स्वर्गस्थान
 तुरसी तास अरुहोइ ॥ तौ मिलै सुकति नृबीन ॥ १६ ॥ तौ परशै ॥ तुरसी
 विद्या अमोल अति नार्थ ॥ काचसटे कुवधीन गवार्थ ॥ लेवै ठे चोहटे
 जुजाइ ॥ तुरसी करन जु उदउपाइ ॥ १७ ॥ साही ॥ तुरसी जोरन पटम
 ही ॥ लये द्याहोइ हार ॥ तौ जुवेगिकोऊनागहें ॥ देषत जाइवहीर ॥ १८
 जो नौतमपटपाटके ॥ कंकरबंधाहोइ ॥ तौ तुरसी सबडुलसई ॥ पर
 षविहूनीलोइ ॥ १९ ॥ ऊपरिही लागे सकल ॥ एवरंक सुलितान ॥ तुरसी

नीतरिनेदविनालेहेनवस्तनिधाना॥२०॥वस्तनेदयावेनही॥बिनउरअ
 येसोअतुरसीउपलेहिरंगनिमी॥रहेरंगीलेहोअ॥२१॥जौजगुकीरुचती
 कथा॥कहेकोऊजनआश॥तोतुरसीजगुऊलसई॥षरीकहेनगिजाअ
 ॥२२॥जौकीमूरीनस्योगरज॥सोमणिकहाकराअ॥तुरसीमणिवऊमोलकी
 पैतौऊनताहिगहाअ॥२३॥देवीसुनीनकरगही॥कीमतिहंपाईनांहि॥
 तुरसीतामणिकौपस॥केसैसरमलहांहि॥२४॥परसेनहीजनपारषू
 देतेपरषवताअ॥तुरसीपरषवितपसुनर॥फिरिफिरिषोटायाअ॥॥
 २५॥२६॥अथपारषकौपरिकरन॥५०॥तुरसीहरिनगपरष
 ईसंतबवेकीकोश॥केतेपंडितपारषू॥पचियचिगयेजुसोअ॥॥हीरावे
 रागरनिके॥बडबडपारषूजोअ॥तुरसीपरषैरमनग॥सोतीबिरलाकी
 अ॥२॥जाकेउरचबुषुले॥उदयोआत्मज्ञान॥तुरसीदासताशसकै॥
 सबैपरषआसांन॥३॥तुरसीपिंडब्रह्मंडकी॥सबैपरषजियमांहिं॥ओ
 रह्यपरषउदितहीहिं॥जौमनकेसलजांहिं॥४॥चौपई॥तुरसीमनसल
 कानेकरै॥सकलपरषसहेजाहिफुरै॥बिनतरिबांनैरहेनकोअ॥जौ
 उरदरयनलौंसुधहोअ॥५॥तुरसीपहनिगुणीमायायहब्रह्म॥सहचं
 तवहधिरज्योषंत॥उनेनिकेसुनलनिनिजानै॥सोपारषूपदहिय
 हिचानै॥६॥ज्योहैत्यों॥आतिपरषतजाअ॥षोटाडारेषरागहाअ॥तुरसीषो
 टीविषयाबांस॥षराजुरंमनांसनिहकांस॥७॥साधी॥रामनामहिनि
 हकांसयह॥परषिलीया॥निजजांन॥तुरसीयात्रियलोकमही॥तेपार
 षूप्रवांन॥८॥चौपई॥अंत्रसंत्रकेनांहिननेरे॥त्यागिरहे॥अमकाचघ
 नेरे॥तुरसीआत्मधरमविनांन॥कोऊदृष्टिमेंतांवेअंन॥९॥साधी॥
 तुरसीधर्मेआत्मीकधर्मअमलैहै॥कसिकंचनलौंसोअ॥लेकेहमहि
 रदेधस्या॥अतितप्रतिसंजोअ॥१०॥२६६॥अथउपजनिकौपरिक
 रन॥११॥तुरसीचलिअतिआरतिस्यो॥ब्रह्मसरोवरमांसि॥इहारेहे
 सुषकीतही॥सुषहैसाहिवमांहि॥१२॥तुरसी

पायपरसोइ अरधबाडिउरधैचले तोफिरिनआवणहोइ २॥ तुरसी
 बंधनअपनेदेषिके ॥ सुनेसाखनिमोइ सुकतहोइंतकेकारने ॥ और
 कारनतदिकोइ ३ ॥ सोअवसिकैजुसुकतिहोइ करमकमीमलषो
 इ ॥ सुरतिसुमृतिसबहीकहे ॥ संतहंपुकारेसोइ ॥ ४ ॥ तुरसीबंधनअ
 पनेदेषिके ॥ विधिविधिसुरतिबीपाइ ॥ सुकतिनिमजतवजुकरे
 अपनेहीउरआइ ॥ सोअवसिकैजुसुकतिहोइ ॥ बंधनविधिमिठाइ
 मनसावाचाकरमनो ॥ संतकहेंसमजाइ ॥ ५ ॥ चौपरी ॥ अपनेसुमारगिला
 गाजाइ ॥ आकुटियरेनषाडकुलाइ ॥ तुरसीअैसीउपजनिहोइ ॥ कौंत
 परमपदपावेसोइ ॥ ६ ॥ सोधी ॥ कहाअपनोकहोपारकी ॥ पापपुनि
 कौमेल ॥ तुरसीउरआनेंतही ॥ चल्याजाइसुधोल ॥ ७ ॥ चौपरी ॥ काह
 केडषसुषमेंनाही ॥ अपनेरंमरठेरिदमाही ॥ तुरसीनिकहनअलस
 इ ॥ अलसैऔसरबीताजाइ ॥ ८ ॥ इतरजाइतरंकजुसोइ ॥ बसाइइरु
 वहोऊकोइ ॥ काहंकीलबिदेषिनहालुनावे ॥ अपनेरंमहिस्योलेो
 लावे ॥ ९ ॥ पलनबिसारेपानकोनाम ॥ रहोकरेउरआठोनाम ॥ तुरसीत
 वपावेविश्राम ॥ उरेकहेंसोबातनिकंम ॥ १० ॥ सोधी ॥ तुरसीअैसीउप
 जनिउपजे ॥ आतमकेमाही ॥ अंतरजामीरंमको ॥ पलबिसरेनाही ॥ ११
 रसनारहेतिजनामनिता ॥ अवनसुनेमरणान ॥ नेननिहारेनिरमलय
 इ ॥ तोहरिमिलिबौआसात ॥ १२ ॥ तुरसीतेपंबीआकासको ॥ आयो
 किहिसंजोग ॥ अबउलठोआकाचलि ॥ बाडिधरनिकेतेपा ॥ १३ ॥ हैते
 कालसिचानको ॥ धरकेपंबीनमाहि ॥ तातेतुरसीउलठिके ॥ चलि
 आकासघरिजाहि ॥ १४ ॥ जदपिविषयानदेको ॥ तिरिगयेसंतसुता
 इ ॥ तदपिअतितहीउरे ॥ मतवऊस्योपलटाइ ॥ १५ ॥ सावधानरहेरेना
 दत ॥ मतकोउअंतरहोइ ॥ तुरसीअपनेरंमको ॥ नामनबिसरेसोइ
 ॥ १६ ॥ इंद्रादिकनिकीकोकहें ॥ रंकतहूकीमाया ॥ ताहिदेषिधजेनही
 मतमोहैकाया ॥ १७ ॥ तुरसीअैसीउपजे ॥ जाकाहंकेसोइ ॥ तोरंमडसई

सति कही ॥ धकात लारी को ॥ १२० ॥ चौपई ॥ अनात्मस्य विसरिजा
 या आत्मचितवनिचितवहरा ॥ अषडअहो निसयलव विसारो ॥ तो
 याही तन धरि आया तो ॥ १२१ ॥ साधी ॥ याही तन धरि धरै ॥ अत्रसिके
 अनसो ॥ तुरसी अहो विसिउरमही ॥ जो रंमनां सरत हो ॥ १२० ॥ तुरसी
 गुरकी किये सो ॥ अत्रे सी उपजी आशा ॥ रंमनां मस्ये मन लया ॥ तनकी स
 धि विसरा ॥ १२१ ॥ सुहो वेत ही रंम विना ॥ से सारी सुष आन ॥ तुरसी रंम र
 व हो ॥ रसा ॥ मो मन मन सा प्रांन ॥ १२२ ॥ चौपई ॥ उपजनि उपजी ये हस ह
 नांन ॥ आये सा धूस मृत्त पुरना ॥ तुरसी रिधि सिधि आडी आये ॥ तऊन च
 तनि देषि लुसाये ॥ १२३ ॥ साधी ॥ करई लारी कामनी ॥ करवा लारी धन धा
 म ॥ मीवा लारी रंमजी ॥ उपजविके कामा ॥ १२४ ॥ त्रिये ये ये पुरुष हि पिता
 पुरुष त्रिया तनमा ॥ तुरसी अत्रे सी उपजे ॥ तब क हूं रंम रिजा ॥ १२५ ॥
 उरं रंमरी के नही ॥ कोटिकरी जी को ॥ तुरसी ताल तत्रिय पुरुष को ॥ ति
 द विलेन ही हो ॥ १२६ ॥ पुरुष ये ये पिता ससा ॥ याप वुधि विसरा ॥ तो त्रि
 य उपनो जा नियो ॥ रंम सुत्रि सुवन रा ॥ १२७ ॥ चौपई ॥ पुरुष नारितन चि
 त्ते अत्रे सी जे सै बालक माता ते सै ॥ तुरसी जौ पह अत्रे सी हो ॥ तो सिधि मे स
 सान ही को ॥ १२८ ॥ साधी ॥ अजा अवा वरि हो ॥ जवा ॥ तब गऊ ग रंम हाई
 तुरसी जामे मृगयती ॥ हासंगि विचरे सा ॥ १२९ ॥ बंरु वियाती पुरुष वि
 ना जाया पिगुल पूता ॥ तुरसी तरवरि चडि गया ॥ अजर अमर अत्र भूत
 ३० ॥ सुत्रना ये ये पिता विन ॥ बंके जाया सो ॥ तुरसी उलटी राति नई ॥ बूजे
 बिरला को ॥ १३१ ॥ याणि पाद उपस्य गुदा ॥ अवननेन मुषनासा ॥ तुरसी
 येत विरुत सुता ॥ तरचडिकरे विलासा ॥ १३२ ॥ तुरसी एक उलटी चडि ॥ उल
 टाही समरै को ॥ पहली राहै सारते ॥ सरह गी रनये सोई ॥ १३३ ॥ ३६ ॥
 ॥ अथ दया निरवेरला कौ परिकरता ॥ ६० ॥ तुरसी जे तर्क है ज्ये ॥ ल
 षचौरसी जीव ॥ सब परिदया विचारये ॥ इहै ज्वमाने
 फाजुदी रघु भाने है ॥ दया जु ब्रह्म गिदाना दया

लागे दोष अधा ॥२३॥ जब सुष निंदानिकसे निज साधूकी सोइ तुर
 सी चवतानिलजको नृफलजीवनजीइ ॥२४॥ संतनकी अपमान
 करि अपनो बढवे मान ॥ तुरसीता अज्ञानको सबदनसुनिये
 कांन ॥२५॥ आनकरमकी येनरकमें हरे हरे होइ बास ॥ तुरसीनि
 देसाधको ततपर होइ सोचस ॥२६॥ संतनकी निंदा करे अत्रसिष
 तासोषाइ ॥ तुरसी चुरे देवगति ॥ अस्वरभाव उपजाइ ॥२७॥ जो नप
 ती जो ती सुनीये येजे विजेजुकी साधि ॥ साधनकी निंदा करतो ही
 ये देवलोकते नाधि ॥२८॥ रविदिशि धूरि उडावई नरको ऊअबुधि
 उपाइ ॥ तुरसी तहांपुं चैनही ॥ परे ताही पर आइ ॥२९॥ तुरसीसा
 धूकरस ॥ तिनके डतीनकोइ भाव अपनो पावे नरा ॥ चितामणि
 लीसोइ ॥३०॥ साधूजाहि गयंदलों चले जुजाहि सुभाइ ॥ मलुकुतेच
 सिचुसिमरे ॥ गलियां मांही आइ ॥ तातन चुषचितवे नही ॥ गरवातन
 उपजाइ ॥ तुरसी चितये तासतन ॥ गयंदगतिलजाय ॥३१॥ चले जाहि
 चितवितगहे ॥ दीयेपलकस्यो कैर ॥ तुरसी निहकारनजगु करैति
 नोस्यो बैर ॥३२॥ नमलनृदायकजन ॥ बिचरे सहुजसुताइ ॥ जागवस्वा
 नस्वारथनस्यो ॥ तिनहलागोधाइ ॥३३॥ डविधभावत्यागे फिरे ॥ धरे उर
 हि आनंद ॥ असे संतनकी सुगति ॥ काजने जगुअंध ॥३४॥ होइरहे
 रतमतनोवस्यो ॥ मानअमानसबधोइ ॥ तिनकीकोऊनिंदा करे ॥ विं
 दाकरे तलकोइ ॥३५॥ साधनकी निंदा करे ॥ ताहीकी होइहांनि ॥ सा
 धनको कबूनाघटे ॥ जेएतेपदनुबान ॥३६॥ कोऊनिंदैकोऊबंदई
 कोऊकरे नावकुभाव ॥ तुरसी कबून आनिये ॥ याजगुकोइहैसु
 भाव ॥३७॥ चौपई ॥ कबहूबातनिस्वर्गचटावे ॥ कबहूपातालकूब
 हावे ॥ तुरसी जगुजाचिगकी सुष ॥ ताकी चितन आनो चुष ॥३८॥ गहे
 रहोसमितासमिभाव ॥ रागदोषको करि बिसराव ॥ तुरसी यहअतो
 तकी बांती ॥ कीधरहे मनमनसापांती ॥३९॥ संतनकीकोऊनिंदा

करै। तौ संत खोन क बहू न ही धरै। मता गजराज स्वानत न धावै। तौ तुर
सी सो जान ही पावै। ॥ ३० ॥ समद रूप सा धूजन सो छ। निदे खो जन उपजे को
श्रौं दरिया महिदां मनि परै। तुरसी परिता को कहा करै। ॥ ३१ ॥ तुरसी
अंधे अंध धकौ पाइ सो श्राता की कबुन अने को श्रात्र बती आंषि अं
धसों फिरे। ता को अचिर ज सब को ई करै। ॥ ३२ ॥ संत न के धर महि पदि
वानै। जां निबू कि पुनि निदां वानै। तुरसी ता पापी को सो श्रा सतर पती
जो सा धू को श्रा। ॥ ३३ ॥ धौ पई। तुरसी निंदा हूं में ते देहै। एक बज्र पाप लागि जा
श्रा एक पाय सों बुटिये। कीनें कबू या श्रा अथा निह कं पी निर बेर हो श्रा ज
गु सों रहे ह ग श्रा अैं सं सा धूजन नि को। निंदि नरक को जा श्रा ॥ ३४ ॥ निंदन
सरा धी वस्त है। सो निंदिये नि सं का। तुरसी निदे मुक त हो श्रा सा धिक है स
ब संता प्रधा माया मोह में ते मनी। सज के चार बि चारा तुरसी टण करि
निंदिये। तौ तिरिये संसार। ॥ ३५ ॥ निंदे बि न नि पजे न ही। तन मन का या
ये ता ता ते न र म क र्म निं दि। तुरसी ही श्रा स चे ता। ॥ ३६ ॥ ज्यौ र बि निंदै र ज
नि को। स सि सं चाप न सा श्रा यौं जन हू व हि नि दि के वें सु र्भ में रहे स मा इ
॥ ३७ ॥ ३० ॥ १४ ॥ अथ निगुणा को परिकरता। ॥ ३८ ॥ तुरसी मता हि कर
वै ना य जी। निगुनें नर का संग। कहिये कबू माने कबू। प्रपजे होष
डरंग। ॥ ३९ ॥ ह धे नी ब सिं चा ई ये। म धि मि छं न मिला श्रा तुरसी मन ब च
क्रम स ही। तऊ करवा त न न जा श्रा। ॥ ४० ॥ अ मृत ई षं जु दे ड स्यो। कठ वे
ली ल प टा श्रा तुरसी तऊ छो डै न ही। ॥ ४१ ॥ अप नों कुट क सु ना वा। ॥ ४२ ॥ सं जा
रि ही म हां घी ति क रि। ये पा व ई नु को श्रा तुरसी ता हिल बू रि लो। ॥ ४३ ॥
सु सु चा व ये जो श्रा। ॥ ४४ ॥ फु निं ग हिं पे पा ई ये। अ तरि धी तिं उ पा श्रा तुरसी
अं ति श्री सर ये। फि रि ता ही को श्रा श्रा पा। ॥ ४५ ॥ तुरसी निगुणा नर अरु न
ग दोऊ उ ते एक स मि जां नि। ॥ ४६ ॥ ति तां ति पर सी धिये। तऊ न छो डै वां
नि। ॥ ४७ ॥ अं ति स कुं ट ली जी
तको करै।

द्विसरशः तुरसीजवप्रपतिहोः पले बांधिलैजाः ॥ १ ॥ तुरसीगु
 नरतननिकैसमुद्रविचि। जोषलुबुडकीदेत। तऊसंदत्तितया
 गिकैः दुटिसांशुलैलेत। ॥ २ ॥ जहांबहौमोतीवीषरे। पलकमुंदित।
 होजाः। तुरसीकंकरकांचमणि। तहंदेदृमकाः ॥ १० ॥ चौपद्री ॥
 जहांसंतमंडलीविरजै। तहांजातमनमें अचिताजै। तुरसीषलुको
 यहजुसुसाव। कुंसंगतिमिलिसानैचाय। ॥ ११ ॥ अगलेकोगुनओर
 नगावै। अपनोहिरदामांहिडरवै। तुरसीश्रैसाकीऊहोः। वासमा
 नषलुनांहीकोः ॥ १२ ॥ साबी ॥ गुनकरतेकीं ओंगुनी। तुठकरिमा
 नेसोः। तुरसीदासतापहितको। कैसेंकारिजहोः। ॥ १३ ॥ हेतकीये
 चांटेतनको। कुहेततैकांटेत। ततैसठअरुत्वांतस्यो। रंवेनविर
 चैसंत ॥ १४ ॥ ॥ ३०२८ ॥ अथसगुणाकौपरिकरन ॥ १ ॥ तुरसीसगु
 णेसंतके। समजोयेसहनांन। अपनेगुनफलकरिगितै। परगुक
 रेप्रवांत ॥ २ ॥ तुरसीसगुणेसंतकी। आदिअंतिइहबांनि। परमारथ
 केपथवमें। हवारहैगरदांनि ॥ ३ ॥ जोकोऊओंगुनकरे। ऊरअंतरि
 धरिदोष। तुरसीसगुणांसंतजना। ताहूकोदेपौष ॥ ४ ॥ तुरसीकरते
 हूंस्योनाकरे ॥ ५ ॥ नैरगअरुदोष। अनकरतेकीकोकहै ॥ इहसंमता
 संतोष ॥ ६ ॥ तुरसीओंगुनवोरनदेवर्ष ॥ द्विदहंतकेनकाहि ॥ वोरप
 रग्योनांकरै ॥ सगुनेयेगुनआहि ॥ ७ ॥ मरमछेइकाहूजुकी ॥ करैनक
 बहूंसोः ॥ ८ ॥ गरवागहरसमुद्रसाएषाअथाहजुहोः ॥ ९ ॥ चौपद्री ॥
 तुरसीगुनरतननिकीषांनि ॥ जिनकेयेलाबिनपरवांनि ॥ धरतीलोंस
 वकोंसुषदेहिपै ॥ ओंगुनकाहूकोनहिलैहिं ॥ १० ॥ आपनअंसुतपावै
 पावावै ॥ असुत्तप्रकृतिकेनिकटनजावै ॥ तुरसीज्योधरतीगिरजो
 ॥ ११ ॥ श्रैसैरहैउपगारीसोः ॥ १२ ॥ साबी ॥ तुरसीउपगारहीकी ॥ इंब्राअ
 वौपहर ॥ ओंगुनहूकोटिकरैकोऊ ॥ तऊचितवैद्विष्टिनकहया ॥
 कहरद्विष्टिनहीकायामै ॥ आदिमधिअहूंरुअंति ॥ सीतलसुषदा

द्विसराशः तुरसीजवप्रापतिहोइ ॥ पलैबांधिलैजाइ ॥ तुरसीग
 नरतननिकैसमुद्रविचि ॥ जौषलुबुडकीदेत ॥ तऊसंदत्तित्या
 गिकैहुडिसांशुलेलेत ॥ ए ॥ जहांबहौमोतीवीषरे ॥ पलकमुंदित
 होजाइ ॥ तुरसीकंकरकांचमणि ॥ तहंदेइटमकोइ ॥ १० ॥ चौपई ॥
 जहांसंतसंडलीबिरजै ॥ तहांजातमनमेंअतिलाजै ॥ तुरसीषलुको
 यहजुसुसाव ॥ कुंसंगतिमिलिसानेचाष ॥ ११ ॥ अगलेकोगुनओर
 नगावै ॥ अपनोहिरदामांहिडरावै ॥ तुरसीअैसाकोऊहोइ ॥ वास
 नषलुनांहीकोइ ॥ १२ ॥ १३ ॥ गुनकरतेकींओंगुनी ॥ तुबकरिम
 नैसोइ ॥ तुरसीदासतापसितको ॥ कैसैकारिजहोइ ॥ १४ ॥ हेतकीपै
 चांटेतनको ॥ कुहेततैकाटंता ॥ तातैसठअरुखानस्यो ॥ रवेनबिर
 चैसंत ॥ १५ ॥ १६ ॥ अथसगुणांकोपरिकरन ॥ १७ ॥ तुरसीसगु
 णेसंतको ॥ समजोयेसहनांन ॥ अपनेगुनफिलकरिगिनै ॥ परगुक
 रेप्रवांन ॥ १ ॥ तुरसीसगुणेसंतकी ॥ आदिअंतिइहबांनि ॥ परमारष
 केपंथवमें ॥ हवारहैगरदांनि ॥ २ ॥ जौकोऊओगुनकरै ॥ करअंतरि
 धरिदोष ॥ तुरसीसगुणांसंतजन ॥ ताहूकोदोष ॥ ३ ॥ तुरसीकरते
 हूस्योनाकरै ॥ ३ ॥ नैरगअरुदोष ॥ अनकरतेकीकोकहै ॥ इहसंमत
 सेतोष ॥ ४ ॥ तुरसीओगुनवोरनदोषई ॥ विदहंतकैनकाहि ॥ वोरप
 रग्योनांकरै ॥ सगुनेयेगुनआहि ॥ ५ ॥ मरमबेइकाहूजुको ॥ करैनक
 बहूसोइ ॥ ६ ॥ गारवागहरसमुद्रसारघाअथाहजुहोइ ॥ ६ ॥ चौपई ॥
 तुरसीगुनरतननिकीषांनि ॥ जिनकेयेलाबिनपरवांनि ॥ धरतीलौंस
 बकोंसुषदैहिपै ॥ ओगुनकाहूकोनहितैहि ॥ ७ ॥ आपनअमृतपीवै
 पाववै ॥ असुनप्रकृतिकैनिकटनजावै ॥ तुरसीज्यौधरतीगिरजो
 इ ॥ अैसेरहैउपगारीसोइ ॥ ८ ॥ ९ ॥ तुरसीउपगारहीकी ॥ इब्राअ
 वौपहर ॥ ओगुनहूकोटिकरैकोऊ ॥ तऊचितवैद्विष्टिनकहर ॥ ए
 कहरद्विष्टिनहीकायामै ॥ आदिमधिअरुअंति ॥ सीतलसुषदा

ईसदा तुरसी सगुणा संता ॥ १० ॥ तुरसी सगुणा संतजन ॥ रूप समतचित्ते
 ॥ श्रीगुनदोरे फटकिके ॥ गुनकनही गहिलेश ॥ ११ ॥ तुरसी गुनकरते स
 क्युनकरौ ॥ हरैवाको अपरं धा ॥ श्रीगुनकपरिगुनकरौ ॥ सीकहिये नि
 जसाधा ॥ १२ ॥ तुरसी निजसाधूसोश्रैजाकी उरसति येहा ॥ अदेहरां मरतहे
 ॥ १३ ॥ गहैत श्रीगुनदेहा ॥ १४ ॥ ३०४ ॥ अथसेकोपरिकरन ॥ ६७ ॥
 तुरसी जौ लोसैनही उपजे ॥ लो लो नमनजा ॥ मनचंचलतानां तजै ॥
 मैबिनथिरन रहाइत ॥ जौ लोसैनही उपजे ॥ लो लो नजननहोशात
 रसी बुमैन विकारगला ॥ तनमनकी तिलसोशा ॥ २ ॥ तेसमिजाताकी न
 ही ॥ तेसमिहित्कनश्री ॥ तुरसीसे अनेउलठि ॥ फूटे मनको गैर ॥ ३ ॥
 तुरसीसे जागतरिअंकरौ ॥ करै मनको उलगत्ता ॥ तेसोवतऊं स्वपनमों
 आइरकरै सहाता ॥ ४ ॥ चौपई ॥ तुरसीसे घरबनपरदेस ॥ उपजनदेइ
 तचसुजअहिसेसासुजहीमांही ॥ जुराषेफेरि ॥ ज्योगऊगवातपरिअ
 नैधेरि ॥ तुरसीसे स्यो नूषपियास ॥ मिटे औरआलसहोइनांसा ॥ निद्राहं
 नैकहंजुनावै ॥ जौहरसेउरउपजिआवै ॥ ६ ॥ नैउपजेअसविरहजा
 इनेंतनिजलघनलौबरयाइ ॥ तुरसीतबसेयाचाजोशा ॥ नवश्रीसीधीति
 पीतस्योहोइ ॥ ७ ॥ साधी ॥ तुरसीदासनेप्रीतिविना ॥ तगतिकरिऊकलि
 कोरि ॥ विनहंनोपावै नही ॥ सुतजननीकीघोरि ॥ ८ ॥ चौपई ॥ तुरसी
 नैबिननगतिजुश्रीसा ॥ घृतविनां ज्यो नारजुतेसी ॥ रूषेतनमनलागो
 सोइ ॥ रंमनांमकीरूचिनहीहोशा ॥ अलसात्रैके आवैनीदा ॥ मवहंवा
 फिरैचोगानकीगीदा ॥ तुरसीजहोजहंनै नहीहोशा ॥ तहोतहं चित्तन
 एदेवीजोशा ॥ १० ॥ साधी ॥ तुरसीनै नगवंतको ॥ नगतनहंको सोशागुर ॥
 क्रियातेउपजे ॥ तबहोइउजारनकोइ ॥ ११ ॥ चौपई ॥ तुरसीनैकेपबोहार
 कीटचंगानहीहोतजुबारातसेसाधुअगिंजांमालेसोंसुमिरेअपनौग
 सा ॥ १२ ॥ साधी ॥ नैस्योकीटचंगीतया ॥ जातियांतिकुलयोशा ॥ तुरसीश्री
 ॥ ३ ॥ तुरसीनैउरधारिकें ॥ तगतिकरै

निहकाम ॥ तुरसीसोजनसहीस्यो ॥ होइपलटिकैराम ॥ १० ॥
॥ अथबीजतीकैरि करन ॥ ६७ ॥ तुरसीकहैनहीमचरंमजी ॥ म
मश्रीगुनकीकोइ ॥ जौ तसवकसौतीकहीं ॥ उबरनहोइतौहोइ ॥ १
जैसेपरसनहोहउम ॥ सोहमकबूकी ॥ अल्पअबुषीजीवहम ॥ उइत
रनचितदना ॥ २ ॥ नामतुम्हारीनालीयो ॥ हीयेहेतउपाइ ॥ तुरसीअपना
यीकीयो ॥ मनदीयामुकलाइ ॥ ३ ॥ सोरवा ॥ तुरसीमनदीपोमुकलाइ ॥
नांनान्द्रिनसुषमांही ॥ अठकोनहीसुनाइ ॥ मूढमतिमोरबआंही ॥
४ ॥ बुरेसलोश्रीगुनमस्यो ॥ जेसोतेसोसोइ ॥ तुरसीतुम्हारेजदे ॥ औरअ
सिरोनकोइ ॥ ५ ॥ जदपिहोइतुबजीव ॥ तऊतुम्हरीआस ॥ सुषसमुद्रके
सेवतौ ॥ काकैरहीजुप्यासा ॥ ६ ॥ धूपदाऊतांदेवजी ॥ तकीतुमबायावोट ॥ तु
मवोटऊंडषपाईये ॥ तौसेवगहीकोषेठ ॥ ७ ॥ परसततुम्हरेदसकी ॥ ८
रिमतिहोइजरिषेह ॥ जबजतुमदरवौरमजी ॥ तवकारहैसंदेह ॥ जहो
हसहाइकसाईया ॥ जनसेवगपरिआइ ॥ श्रीगुनवोरनदेषिये ॥ देषि
जीववहिजाइ ॥ ९ ॥ तुम्हारीसम्रथतासबल ॥ आवैअंतनवोर ॥ तुरसी
अधमउधारिये ॥ चित्तैकृपाकीकोर ॥ १० ॥ चित्तैकृपाकीकोरसस्त
किनरषीकेसो ॥ अरीऊकाकेरहे ॥ मोहिइहैआदिअंदेसो ॥ ११ ॥ दपि
दहनदहैदेहके ॥ षिजवतहैममप्रांन ॥ वरसिबुजावौ ॥ एमजी ॥ होहा
रकृपानिधान ॥ १२ ॥ तुरसीदसरविकैउदे ॥ जौरहैरजनिअधियारतौ
रिवलाजेरंमजी ॥ जबकैइहैविचार ॥ १३ ॥ सिंघसरनैहूजाइके ॥ जौअ
वकडषदेवे ॥ तौतुरसीषासिंघके ॥ सरननकोऊलेइ ॥ १४ ॥ अंततआ
पदापीरतौ ॥ अठिततुम्हारेराज ॥ यहडषहरिप्रचुकृपाकरि ॥ एषीज
नकीलाज ॥ १५ ॥ मैपतितपावनतुम ॥ आइवन्योसजोग ॥ विरदआपनौ
जानिप्रचु ॥ हरैविविधिविषरोग ॥ १६ ॥ मैश्रीगुनकीषांतिहो ॥ तुम
गुनकरतांरंम ॥ काटिकलंकप्रचुकृपाकरि ॥ जीवहीदेहविश्राम ॥ १७
॥ जौहमश्रीगुनअंततकीये ॥ तौहमक्योंबूटैरंम ॥ बूटनतुम्हरेपा

सिंह और नही को ऊंगम ॥ १८ ॥ है धरनि धरी जी सम ही ॥ आदि अंतिमाधि
जोश जो बड़ा वै तो रंम जी ॥ और नही बल को ॥ १९ ॥ चौपई ॥ तुरसी ॥
और नही बल में रंम न व न क्रम कहै त ही दे रौ ॥ सावै न व न ल वौ व ऊ रं
म न ल ता रौ अप नो दे रंम ॥ २० ॥ जो क बू क रौ स त म हरी व ग रं ह रं प क
बून न ली व नि आ रं ॥ तुरसी गुला म ग हि स र न रं ॥ की न ही अप नी उ द न
रं ॥ २१ ॥ साधी ॥ जौ है लो ते री न ग ति ॥ हो घ न आ यै मो हि ॥ ता तौ फि र
फि र रं म दो स ल गा ऊं तो हि ॥ २२ ॥ तौ सी तु म दे वा दर य न म रं न ही ङा
वि ध क बू तो हि में सु ष दे यौ जि सी वि धि तौ सो ना स त मो हि ॥ आ त
र सी मे री ऊ रं म ऊं ॥ आ डी आ व त रं म ॥ तु म कौं दो स क बून ही ॥ तु
म न म ल नि ह कां म ॥ २३ ॥ जै सी ते सी रं म जी ॥ तु म तौं वॉ नै तां हि ॥ तु म
मालि क या जी व के ॥ जान त हो स व मां हि ॥ २४ ॥ अ वि द्या व स जी य ह मा
न ली क बून ही हो आ स क ल न ली के मूल त मा ॥ तु म ते और न को ॥ २५ ॥
धा तुर सी या घो टी क लि मां हि ह मा ष ज व ने ऊं नं हि ॥ जौ उप जा ये रं म
जी ॥ तौ ग हे र हो द ट बां ह ॥ २६ ॥ तु म कौं ल ज्या दा स की ॥ आ दि अं ति म
धि रं म ॥ तु म वि न और को ऊ न ह ॥ ज न के व ल आ रं म ॥ २७ ॥ है वी न
ती सां ई श्यां ॥ ह म हि स मे र स मां ता तु म हि नु तु व स रू प है दि क आ प
नौं तां म ॥ २८ ॥ सर नै र षि सं वा हि के ॥ ह जि न ही वि ट्का ङा वि ट्का ये ज
न कौं प च्छ ह सि है तो रा अ घा ॥ २९ ॥ हं म से तु म हारे व उ त है ॥ पर जा ये
जु गु लां म ॥ तुर सी प ति त पा व न प्र ष ॥ ह म हि क हां हो रं म ॥ ३० ॥ का रं दे
ब ल न ज न कौं का हू के व ल न न ह मारे अं धे की लु क ट ॥ तु म हो र या
नि धां ता ॥ ३१ ॥ तुर सी ज्ञान धां व हं तु मा तु म ही भ ज न वै रा म ॥ तुर सी
कै तु म ही जु ही ॥ और न तां चू ता म ॥ ३२ ॥ ना वे न र क दे ऊ रं म जी ना म
स्वो सु वा या ना वै मो वि मु क ति दे ॥ र षो अ प नै पा स ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥
अ प वै ती कौ परि क र न ॥ ३५ ॥ तुर सी ज र का टे वे
धे न वी र ॥ वै कि जा ह ब ह ड को जे पो री

काटीये। लीं लोहरि जु होइ। तुरसी यह हेर न हे। सीचैस्के सोइ २।
 सीचैस्के बेलरी। यह देखो हेरं। तुरसी जलटी वात यह। कोऊ समजे
 संतसु जान ३। तुरसी जल दीये बेली जरै। बिन जल लहस्य लेइ। या
 बेली में इहे गुन। बिनारि ति फल देइ ४। तुरसी बिन फूलों लगे अमृ
 त फल। फूली न फल जाइ। पावक पोषे युष्ट होइ। बिन पावक मुरबा
 ५। तुरसी पावक ही को ध्यावलो। पावक ही पोषे त जो कब जल दि
 षरईये। तो बेली सुकि जरं त ६। जावत धर तां त्त्व लगे। तावत ब
 धेन बेलि। तुरसी धरते अ धर होइ। तब करै अकसौं के छि ७। जब
 धरते बेली बिबुरी। करै अकसौं गवन। तुरसी तब या बेलिको दाहा
 दहे न दहन ८। जो सब ही के ऊपरै। ता ऊपरि नहि कोइ। स्मृति बेलि
 तास्यो लगी। कब कून बिबुरै सोइ ९। तुरसी धरते बिबुरि के न समै
 करै निवास। तब बेली फूलै फलै। बहरि ति वा न्ना हमोस १०। तुरसी आ
 त बेलरी जर बासनां अ नंत। सो जरै निर मूर होहि। तब कहुं फल लाग
 त ११। तुरसी ता बेली जुके। आहि जु ये फल चारि। ता तीन निप्रध बजु न भे
 चतु हं सार हे धारि १२। अर्थ धर्म अरु काम फल। गृध का मी न रषां हि १३।
 तुरसी चतुर्थ मुकति फल। ताहि हंस हि न तें चुगां हि १४। तुरसी मुक
 ति फल कारणे। मुग्ध न त्यागो कां म। अर्थ अनर्थ लोत जे। तब पायो आ
 रं म १५। तुरसी यह महा मो बि फल। ताहि तग तहा न लें लहां हि। अत्ता
 त कब कून पावई जो अ नंत जुग जां हि १६॥ ३१०४॥ अथ अज्ञान के
 परिकर ११०॥ तुरसी अमित अज्ञान यह। जहा आ पापर के पां न
 स्वप्न ऊ जीव जाने नही। तहां के ये सहनां न १। आया को बि र करि गि
 ने। बिर आया सम जाइ। तुरसी यह विपरीति जुहां। तहां अग्यान कहां
 २। तुरसी कबू गहा ईये। गहिले कबू बसोइ। अज्ञानी अरु अंध की
 गति उलटी ही होइ ३। जीव बुरे मघते कोऊ। बर जै हित उपाइ। तो तुरसी
 माने नही। मुग्ध तहां ही जाइ ४॥ १०१॥ मुग्धन की मति ये ही जोई

नही गतिगाडर का द्वेष्ट। घेरतये कपरी तहां जाइ। सकल परी तह दह अर
 ॥५॥ ॥ ॥ सायी ॥ असतिव स्वसत्तिकरिगिने। सतिअतिकरिहोइ। तुरसीअसे
 मूढको। कोसममावनिदेइ। धानलीकहतमानेबुरी। संतवचनगिनेतु
 ब। तुरसीताअज्ञानको। कहियेनाहीकुवा। ॥ ७ ॥ त्वबतिमारगनासुचा। त्रव
 तिस्त्रीअतिप्रेहा। तुरसीअसेमूढको। नहीनिजसुषस्वनेहा। ॥ ८ ॥ वरति
 सुषरिपसमिगिने। यरवरतिसुषपरवानाअसेसगहिसमजाबते। हे
 इधर्मकीहानि। ॥ ९ ॥ मायाजततमुदितहोइ। रीमत्तजतअलसाइ। तुर
 सीयहगतिमूढकी। हसदेयोबोयाइ। ॥ १० ॥ तुबधातनयेमुदितहोइ। तु
 बअलासेयाइ। सुरभिमुश्चिधरपरपरे। मेरेअज्ञानरी। अत्रिसावोहीवु
 धिका। कोटिकरे। जौकोइ। तुरसीताहिहरिदरसको। परसनकवहुंहो
 इ। ॥ ११ ॥ कोडादीयेधुसीहोइ। कोडीलीयेसीइ। तुरसीअतितडवितहोइ।
 तास्योनत्तद्रककोइ। ॥ १२ ॥ गयेसोकआयेहरय। जाउरमतिपहहोइ।
 उषसुषकेदरियावमें। बूडेउभरेसोइ। ॥ १३ ॥ तुरसीयहअज्ञानमत। अ
 सेसोपरवानि। जहाएतहांहोवेजहं। परपदस्योपदचानि। ॥ १४ ॥ आत्म
 अनआत्मकी। सुधिसारनहिकोइ। तुरसीयहअज्ञानमत। प्रगटरूप।
 जगुजोइ। ॥ १५ ॥ चौपदं। तुरसीआत्मरविवतयेका। आनात्मघटवत्तज
 अनेकोउभैनि। कौचिनि। ताननजाने। यहअज्ञानसबसेतवषाने। ॥ १६ ॥ सायी
 तुरसीआत्मअमितअपारहै। यितावतसोदेहा। उभैतिकों। एकहीगने। धि
 गताकी। मतिपेहा। ॥ १७ ॥ तुरसीकहैधगधिगरेतोहिकाकहो। अलपअबुधा
 जीवा। त्रयनौरूपविसारिकें। आनरूपरुचिकीवा। ॥ १८ ॥ अलपविषैरुचि
 मानिकें। हासोहरिसुषसिंधा। तातेंआवागवनतोहि। नारवारहोइअ
 धा। ॥ १९ ॥ बेरबेरजामें। मेरे। अलपदेहसुषमानि। तुरसीयहदेहीजुहै। क
 रमतहकीषानि। ॥ २० ॥ आयनेरिपआपनजनै। फिरिकरेतिनोस्योने
 ह। तुरसीतातेंउषषानिमें। उपजेविनसेदेह।
 मकरीमांउयेहा। तुरसीतहांहीपरियचे। असेसंततिदेहा।

तुरसीदेहीसंततिमांही अमानाभिलिके लिकयेही जूसुयगाफण
 बायाचुष मीडकवेगामानैसष ॥ २३ ॥ तावी ॥ डषहीकासुषकरिलीय
 अज्ञानताउपाइ ज्योमृगमिथ्यामानिजल फिरिफिरिभटकायाइ
 २४ ॥ धांतधरतअज्ञानतर उतेननपटलाइ नैननिपटलागेरहे मन
 बहिरयाकिथाइ तामनकीमतिहीनके सोधीनाहितकाइ तुरसी
 अैसेधांनमें तिलहंतत्रिचुवनराइ २५ ॥ तुरसीधांनअज्ञानको ॥
 अैसेसोषवांनि जूजलबुगमबीतके होइहोइनरमजुआंनि २६
 तुरसीअंदरिस्रतंतकामना बाहरिइकटकप्रीति होइदिषावैलो
 कको यहअज्ञानकीरीति ॥ २७ ॥ तुरसीअज्ञानअनंतहै ज्योमरीषि
 कोपांनि आगौंही आगौंदेशिये विनाविचारेज्ञान ॥ २८ ॥ तुरसीअज्ञान
 अनंतहै कहोलौबरनीसोइ जीवबलविचिउल्लेके रसाजुआंन
 होइ ॥ २९ ॥ वौपइ ॥ तुरसीसूबमअरुअस्थूल ज्ञानआदितीनोंमूल
 याअज्ञानकीसीवांसोइ लंघैज्ञानीजोगीकोइ ३० ॥ जायतसप्तसुषोपति
 जावत इतमांही आरामजुतावत तुरसीतावतहैअज्ञानताआगौंत
 रआत्मज्ञान ३१ ॥ तावी ॥ तुरसीतावतइअज्ञानकह होताहितहमार
 तावतहमडषपाईया अबंदेगयाकिनार ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ जपसोवद
 गधकौपारेकरना ॥ ३४ ॥ तुरसीतिनकेहोइगये कांजीरूपीमन तिनहि
 जुसमजावतकौं मतहिषयोंकोऊजन ॥ ३५ ॥ उपदेशियेअज्ञानतर कावेद
 धसमांन तुरसीफाटेइधकौं काअपेहोइज्ञान ॥ ३६ ॥ धजतनकरिवो
 नलो केजुमलौघृतसार ॥ तुरसीबहिविचिकाबुर फाटांइधमांवार ॥
 ३७ ॥ अवयसममिअसममिअनंतरहोतासमदिमाति तुरसीसोसम
 जैन्है ॥ नावैसमजावौदिनराति ॥ ३८ ॥ ब्रह्मादिकरिषिसुनिसवै आइदे
 हिउपदेश ॥ तुरसीसूढमतिहीनके मनिनहोइप्रवेश ॥ ३९ ॥ जोचतुरानं
 नचतुरमुख समजावैसुज्ञान ॥ तुरसीतऊननिसषचरि सूढनमांन
 उंकोन ॥ ४० ॥ म्पांनदग्धआत्माको ॥ द्विदोवडौकठोर साधुवरधैरंमर

सा, तऊन नीजेको ॥ ७ ॥ ज्ञानरुध आत्माको ॥ हेही बडो पयान ॥ कोटिजत
नकोऊ करे येको ही नचिदई ज्ञान ॥ ८ ॥ चोपरी ॥ कहिये कष्ट कष्ट करि
जाने ॥ अपने मत सुषुको मोने ॥ तुरसी ता अज्ञानको ज्ञान ॥ कहांस
माये होइ सुज्ञान ॥ ९ ॥ रायी ॥ के मूरनयानी जतो ॥ के सुनली अर्जाना ॥ तु
रसी वह विचिका बुरा ॥ साटा ॥ धध अज्ञान ॥ १० ॥ भांती स्थे ॥ स्तानी मिले ॥ मि
ले परम सुषु होइ ॥ तुरसी अत हंसम काईये ॥ तीमा मिलेइ सति सो ॥ ११ ॥
तुरसी अत तत्पु विनही ॥ नाहित जान अज्ञान ॥ सो मूरस सम के नही ॥
सेतानिको सुज्ञान ॥ १२ ॥ कामनिके मारि नरहि ॥ कदा विउपजे ज्ञान ॥
तुरसी मास्या नष्टका ॥ वडरि नचेते प्रांता ॥ १३ ॥ कहे मी छिपद आपको ॥ प
रेशोर कहिके न ॥ प्रकृति सुजा वहु टपानही ॥ होइ रर्या पांनी लौं ॥ जो
कोऊ संतस ममा बुई ॥ तस न सो डैवो ॥ तुरसी असे मुग्धस्यो ॥ गदिरहि ॥
ये सुषु मोना ॥ १४ ॥ जवहा स्या हरि धरमस्यो ॥ तव कहे सकलस्यो वसा ॥ अ
प आपस्यो बेलसी ॥ काको लोरो कर्म ॥ त्रैसे अपत अज्ञान नरा ॥ बेकसी बे
समी ॥ तुरसी सित हीन धाजियो ॥ जो हीं हि निपट अति नमी ॥ १५ ॥ जाकी दे
हस्यो ममता ॥ अतिकरुंता ही ॥ सो ऊम कतिकहिये नही ॥ हे बंधनमा
ही ॥ तातमा रसुत वितवनिता ॥ पलटि रघाजहाही ॥ सो समो छिक
हावतो ॥ सरमा वतनाही ॥ १६ ॥ रजगुनमा हीरचिरहो ॥ तमगुनबु टपाना
हि ॥ सतगुनस्यो प्रचेनही ॥ कहे हे मत्तरपदमां हि ॥ १७ ॥ जागतही सो
वतरही ॥ सो वत नमोइ सोना ॥ नै स्वप्नमें तोइ करि ॥ होइ रर्यापालता
ना ॥ सुषुपतिस्यो परचेनही ॥ पल एको परवांता ॥ तुरसी यायो तुरयदा
कयत तलजत अज्ञाना ॥ १८ ॥ सोरगा ॥ होइ तुरमी आन ॥ सो हरिये सु
रग्यनस्यो ॥ ज्ञानही में अतिमांता ॥ तुरसी सो केसें टारिये ॥ १९ ॥ साध
जोको ऊई अरता जुवयांने ॥ साहि अनी अरता करिमांने ॥ नासती व

तुरसी हरे जु संत जन ॥ ग्यांन सरो वर न्हा
 तत मन मिटि जाइ ॥ तुरसी सो मलत
 ग्यांन नीर मांही सदा ॥ उर संजई
 बसे ॥ तुरसी तद मस्त सुध होइ ॥ पाप न रहई कोइ ॥ १७ ॥ अहंघटे
 व्यापिंटे है प्रान मन सोइ ॥ तुरसी उत्तम ज्ञान सो ॥ जामधि श्रैसी ही
 ॥ १८ ॥ तुरसी सब ही कपरो ॥ है उत मय ह ज्ञान ॥ जामधि दरसे आत्मा
 अस्ति ही ॥ अस्ति मांन ॥ १९ ॥ अस्ति मांन मिटे या तन को ॥ मन चेष्टान
 कोइ ॥ तुरसी उ ते दूख जहां ॥ ग्यांन सिरो वनि सोइ ॥ २० ॥ तुरसी आत्म
 ज्ञान के प्रे जु विहन परवानि ॥ इष सुषस मिलो हा कनक ॥ येक वहां
 समांत ॥ २१ ॥ लोपई ॥ कंचन को मृत्पकाट जु मांनो ॥ कामति कष्ट यथा
 नव मांनो ॥ तुरसी उ ते विनैद बिलांन ॥ बस ज्ञान के एस ह मांन ॥ २२ ॥
 साषी ॥ बस ज्ञान के परसते ॥ पावन होइ सरीर ॥ तुरसी तरम बा दरक
 टे ॥ सद सुषमें ही सीर ॥ २३ ॥ कोटि जनम के कीये अघु ॥ बिनमें ही इति
 बिलांन ॥ तुरसी जब उर उपजो ॥ केवल आत्म ज्ञान ॥ २४ ॥ ज्ञान संपूरन
 संजन ॥ जो है या जुग मांनि ॥ ताके दरसकी ॥ तुरसी संख्या नां हि ॥ २५ ॥
 सब या सुषा को विनो दान करै जो कोइ ॥ तऊ ज्ञानी के दरसकी ॥ स
 रर को नहि कोइ ॥ २६ ॥ अस्तन होइ अति तइषा ॥ तप तीरथ की येदा
 न ॥ तुरसी ता इष हरन को ॥ गुरु वतायो ज्ञान ॥ २७ ॥ जो लोत ज्ञान उदि
 त होइ ॥ तो लोत रोग मिटता ॥ तुरसी मांन अमांन में ॥ किरिफिरि प्रान प
 वंत ॥ २८ ॥ रोग संतावत ताव लग ॥ जावन सम के ज्ञान ॥ ज्ञान वीषरी आव
 र ॥ तो होइ निरोगी प्रान ॥ २९ ॥ तुरसी जिन ह ज्ञान वेरी सजा ॥ अयने ही
 र होइ ॥ सुष के दरिया व को ॥ तिरि जुगये जन सोइ ॥ ३० ॥ न
 द ॥ तमन आस मिटाइ ॥ तुरसी ते सुष रूप है ॥ स
 रसी ॥ ज्ञान मसक लोलाइ ॥
 ॥ ३१ ॥ ज्ञान मसक लोला

शकौ। अमलकी योमत धान। तुरसी उर आदर सत्तयो। तहां प्रग
 टपद नोत। २३। अंदरि ज्ञान उदित नयो। गालिग यो ग बै गुमान
 तुरसी जाति जु तासकी। पूर्वे सुन ड अज्ञान। २४। अष्ट धातया र
 समिले तब का जाति जु होइ। तुरसी य ह बूजी बजिना। नर म
 लित नये से ३। २५। बरण प्रम के जाल तो। ते जन निक से जात।
 तुरसी ते बिसरि गयो। मोर तोर को ज्ञान। रघा मोर तोर की रसी स्यो
 बंधे सकल सब जीव। तुरसी सानी कूं बंधै। तो ज्ञान कहा कथिकी
 २६। अरुंग मिले न फटक मणि। यो जन लिये न देह। तुरसी ज्ञानी
 जन सो रोग हेर है मतये ह। २७। तुरसी ज्यो न तनी रमी। सुकर मधि
 सुषुब्ध शय्यो जो नीया देह मे। कहने मात्र आदि। २८। देही के डब
 सुषुब्ध मे। लिये तन क बहं होइ। तुरसी यो सार मे। ज्ञानी कहिये सो २
 २९। तुरसी अयनी इं ब्या उ विचले। अयनी इं ब्या थो रायर इं ब्या मे न
 पये। ज्ञानी गहर गं नी रा २३। अयने तन को ओर को। जिनै सुगं नी
 जात। को क डब दो सुषुब्धो को क। तुरसी ले ज्ञान मानि। ३०। सां नित ले
 ई उ ते य गुन। ज्ञानी गुन गलतान। तुरसी अचल हू तार है। अयने वर
 अस्थान ३१। ज्ञानी की सांवे न ही। बकि वो एक वगारा। तुरसी ठि म
 ता ग हिर सा। करि पंच की पर हारा। ३२। जो क ब ज्ञानी बोल सौ तो तुर
 रसी इं हि नाइ। अऊर मि व द धकी। कव त स ह ज सु नाइ। ३३। चो प
 ई। सदा स तं चार है अडोला। ग हेर है सु दि ट गुर ज्ञान प्र सो ला। सुषुब्ध
 कल कि न उ च रे बै न। तुरसी ये ज्ञानी के चि है न। ३४। सायी। अयनी
 अस्ति आय सुषुब्ध। करे न क व हूं सोइ। ओर क की इ बै न ही। र घा अमल
 तन होइ। ३५। चो प ई। देधि अ डं व र दं तन वाने। कूर म लीं जु छि प्यार है व
 ने। हम त्रै से हम को को जाने। तुरसी यो क ब हूं उर न मे। ३६। सायी। चि
 न अय डर ता व तं ल ग। जा व त ति म र र हौ बा
 मर मि टे ड र जाइ। ३७। जा व त मि प्या ज ग

हित नजिगयो तजिके वांस मोहहियो फूटिर मूवो रहियो एकही
 रोम ७। तुरसी रोम अर रोम जन एचुं देहुत हां तो हि पाता गलिया
 नी जु लो होइ रहे सि लि सां हि ८। तुरसी पाता गलिया नी सिखा अ
 उ आठे सि लि राया लो त यो स्वो नी से वग सि लि एक ह्व ता हि वि ब
 हे कौ न १॥ तुरसी जी वस मो ना सी व से सी व जी व के मो हि जी व सी
 व एकै हवा ॥ हजा कौ ऊतां हि ॥ १०॥ ॥ ११३८॥ अथ जी व कौ पार
 करनः ॥ ७१॥ श्री गुरु पर्यंक ज सु म रि सु नि सु मि रो सि ध सा ध तुर
 सी ता प्र सा द ते व र तो जी ग अ ग ध ॥ जो जाने ते मु क ति हो इ म व के
 मि टे वि का र ॥ तुरसी म व सा पं रा ही व सि वे सु य सि ध सं गार २ रो म
 रो म आ नंद हो इ न य स व ति म र त सा इ तुरसी जी ति जा सो जा जे
 ग यो सु ना इ ज य त प आ रि स क ल ध र म सा धि सा धि सं रो को इ तुर
 र सी जी ग न्या स यो सो सि ध स हे जे ही ३ ॥ ना हित म ध म हा मो वि को
 ह व जी ग के य मो न तुरसी सा धि क कौ क घा स त गुरु क्रि पा ति धा व
 ४। ह व जी ग अ रु सां धि म त म हां सु मार ग जो न तुरसी ता से ह वी की
 ह व जी ग प्र वा न ५। ह व जी ग से र च्यार है ह व जी ग से सु ची त ह व जी ग
 से हं वार है तुरसी ज्युं ज ल सी त ७। तुरसी जी ग व स से व ते पा सी की
 ऊ न जा इ जो क व फ ल पा वे न ही तो बा या सु ष वि ल सा इ ८ फ व
 जु मो छि बा या सु री सु य सा ध क है स व को इ तुरसी जी ग त क से व ते
 एक ती ही इ ही हो इ ९। ये जित की आ रु ह म ति रहे मु क ति म त रो इ
 ते स री सु य वां चे व ही जो मि लें म ह ज में सो इ १०। स्व री दि क के सु य
 नियो कौ त प रो ज न ता हि जी ष्य सा म हा मु क ति का तुरसी अ ति
 त आं हि ११। चौ प ड ॥ अ स्य ध र म का म फ ल वी त त हो जा ठ हे इ र
 घा ज ल सी त तुरसी जी ग धो क हो करे जा की म न जा गो वि हं प रो १२
 ॥ आ वी ॥ ना वे सि धि अ सि धि हो हा ना वे ही ह क ष ड य तुरसी जी ग सा
 स ते त क री रिये त मु य १३। अ तं त सि ध आ रो त यो सा धि सा धि व त वा

५॥ तुरसी सो मन बायकों ॥ को देन ले कर लता ॥ १७ ॥ त लता वत मन बा
 यकों ॥ विचिही विघत तन हो ॥ तुरसी जोगत से नही ॥ अरों की ही
 ६ सो ॥ १८ ॥ ना वैषो जि पुरान सब ॥ ती सार द्द है सब मां हि ॥ तुरसी मन
 बस करत कों ॥ अथा त सी नां हि ॥ १९ ॥ इत उत चित ये न ही ॥ चित ये
 चित बिना स ॥ तुरसी जोग जगति गहि ॥ करि अत्त अत्त स ॥ २० ॥
 सब सुष जोगा स्य स में ॥ अतिक हं सुष नां हि ॥ तो तें तुरसी जगति
 गहि ॥ करि अत्त स तन मां हि ॥ २१ ॥ तुरसी तन में मन मन में पवन
 पवन में श्रुति सं मो ॥ असे अत्त अत्त क शि जोग जगति सं जो ॥
 २२ ॥ की ये अत्त स अरोगि तता ॥ रोगा दिक मिटि जा ॥ तुरसी मन
 मन सा स धौ ॥ अं न नृ बां त समा ॥ २३ ॥ जे जन जोगा स्य स में ॥ ही तत्त
 अ है आ ॥ तिन के मन हि जू कां मनी ॥ सके न छिन क च ला ॥ २४ ॥
 जे रत जोगी स्य स में ॥ जोगी जन दि त रा ति ॥ तुरसी तिन के मन में ॥ प
 स्ति सं के की क श्रु ति ॥ २५ ॥ चौ पई ॥ तुरसी जोगी जोग सुष मां ही ॥ स्व
 प्रंतर हं र चै नां ही ॥ सा वधा त हं वार है जां ही ॥ अ प ते जोगा स्य स जु म
 ही ॥ २६ ॥ सायी ॥ तुरसी जोगा स्य स मि ॥ ना हिन आ न उ पा श्र ॥ मन इ
 दी बसि करन कों ॥ सत गुर द द व ता ॥ २७ ॥ के मन थिर र है नां व में ॥
 के थिर जोगा स्य स ॥ के थिर सं तं स गति मं ही ॥ के थिर सत गुर या स ॥
 के थिर अ र है ज्ञान में ॥ के थिर कि रें उ दा स ॥ तुरसी थिर हं वी चा हि ए
 तो उ र ध रि ये वि स या स ॥ २८ ॥ चौ पई ॥ तुरसी ए सब ही मत्त सा चा ॥
 जा स्यो मन प करे बि स्वा सा ॥ ये बि त सी घ्र जोग के उ पा श्र वे गिन मत्त थि
 र वे से आ ॥ २९ ॥ सायी ॥ तुरसी क ब हं सा धे जोग कों ॥ क ब हं दे ॥
 बि ट का ॥ अ से मन थिर ही ॥ न ही ॥ बि न की ये ती अ उ पा श्र ॥ ३० ॥ ए का
 य ता गार है ॥ तो ही जोगा सि धि ही ॥ तुरसी सर धा ही न कों ॥ फल न ही
 ल गों को ॥ ३१ ॥ ज्यो को ऊं वा है सर नि ॥ लै लै आवे सो ॥ तुरसी सा
 मू वि बि न र ही प चा व टि हो ॥ अ से मन या ह ना म रे ॥

२ जौ लौं जोग की जुगति सीं। दिठ अस्यासन होइ ॥२१॥ चौपदी ॥
 तुरसी नोग जुगति जिनि जौनी। तिनके मन थिर सये उर आनी
 जोग जुगति स्यो रहै अचेत। तिनके मगन पाये धेत ॥३०॥ सायी ॥
 ॥ जौनी नांही जोग गति जोग पंथ में आइ। तुरसी तिवके मबकी ॥
 नोग कही क्यो जाइ ॥३१॥ जावत होइ आवै नही ॥ जनपे जोगा सास
 तावत थान मुकाम कौं है देषन की प्यास ॥३२॥ जत्र चपल बुधिव
 सबही व्यापत त्रिशां रोग ॥ मनसा प्रबल बहि फिरे ॥ मन बंछित
 बडु नोग ॥ इंद्रिन की आदर अंतित ॥ दिल में बसै असद रोग ॥ तुर
 सी ए आचरत जहां ॥ तहां न सधे छिन जोग ॥३३॥ चौपदी ॥ नेनर
 परत श्रवना नादा ॥ नासा गंधरस नां बक बादा ॥ फुनिरसनारस्यो
 चित धरै ॥ इंद्रिकांम नोग की करै ॥ तुरसी जौ लौं उर उद वृत्तिये ह ॥ तो
 लौं न जोग सधे तिहि देह ॥३४॥ सायी ॥ जावत जोग सधे नही ॥ ता
 वत उद वृत्तित्तीनि ॥ बडु पांता बडु सीवनां ॥ अरु मन माया लीनि ॥
 ३५॥ आसन सधि आवै नही ॥ सिटहन नूषपियास ॥ तुरसी जब लग
 जोग की बादिकरत नरतन आस ॥३६॥ मन उलटि बाहरिके चर्म
 नुगते नाना सुष ॥ तावत जोग कठिन है ॥ तुरसी सधे न चुष ॥३७॥
 ए विपरीति मिटे विनां ॥ अरु मन बितनये थीर ॥ तुरसी धार जोग
 की की साधवे सधीर ॥३८॥ चौपदी ॥ ए सबही रस फाके करै जोग
 साधता परिचित धरै ॥ माडै मरन धरत गुनसाइ ॥ जौं तुरसी जोग सधे
 तब काइ ॥३९॥ जोग साधनां तब बनि आवै ॥ जब येनां नारस मिटावे
 मन चित सरधा उपजे सोइ ॥ तब साधे सोई सिधि होइ ॥४०॥ सायी ॥ तुर
 सी सरधा प्रीति विन ॥ असा जानौ जोग ॥ ताहि साधते समे दोइ ॥ ऊ
 पजि आवै रोग ॥४१॥ चौपदी ॥ रोग उपजे अजुगति कीये ॥ जुगति प्रना
 बहि बिसरि गये ॥ ताते सावधान होइ सोइ ॥ अजुगति पंथ नपकरै
 कोइ ॥४२॥ ना अति आतुरता अलसाइ ॥ सनें जोग पंथ लाग जाइ ॥

तुरसीसनें सनें सिद्धि होइ। साधुसंत युकारे सोइ॥४३॥ साधक हे साधु
 मुनि आषे। रिषि मुनि सिद्धि सकल योनाषे। प्रथम ब्राह्मजि चिंता
 लो। तौ नलजोगमा रुचित लो।॥४४॥ जोगकरनकी जो उर धोरे। तौ
 सुख सुधर्म देस विचारे। तहां अचल होइ बैसे प्राणी। तौ जोगसाधना
 होइ मनमानी॥४५॥ साधी॥ कवन जोगके सीजु बिधि। साधै साध
 कजात। तुरसीदासता जोगका। चिनि चिनि करे वषांता॥४६॥ चो
 पई॥ षटसाधे षटपरहरे। षटकोषे जे ज्ञानता। तुरसीदासतव षटमही
 परचे लो गोष्थान॥४७॥ साधी॥ प्रथम जोग आलेवनयेहा। आसनसाधि
 सरल करे देहा। अल्प अहार जुगति सों लेइ। षाठामि गामुवनहि दे
 इ॥४८॥ प्रथम जोग सों बांधे प्राति। अपथकी छांडे स्वरीति। पथि
 नोजनते सिद्धि होइ जोग। अपथि उपजे नानारोग॥४९॥ अति तत्र
 पथि अहार सों। बाइ प्रबल होइ जाइ। तुरसी उर आतुर बुको। रोग उ
 दे होइ आइ॥५०॥ त्रैसे रोग उत्पन होइ। साधक हें जु सोइ। के पूरव
 ले पाप सों। के अति अहार सों होइ। ५१॥ चोपई॥ अति अहार अ
 लस उपजावै। निदान सस स तेदत आवै। तुरसी प्राण प्रबल होइ बहे
 संया जोग तहां कहां रहै। ५२॥ साधी॥ तुरसी जोगसाधना होइ तब
 जब आसन करेइ कंठा। अत नल सोवन सबदको। संमसाधे संता। पर
 करे निवारन नीदको। सनें सनें हवनोहि। तुरसी जोगी जुगति रत्ता।
 सो कहिये जुगुमां हि। ५३॥ जुगति जुगति अन आचरे। जुगति हो अ
 चवे नीरा। तुरसी संग अजुगतिकी। कब हून करे सधीरा। ५४॥ ना अ
 तिह से न बोलवी डीलेनी अतितां हि। तुरसी थिर होइ उर मही। रहे अ
 नही मां हि। ५५॥ तब ही जोगफल पाईए। जी संज मरहे सरीर। जुगति जुग
 ति अन आचरे। जुगति हि अचवे नीरा। अधिक न निद्रा अधिक संग।
 अधिक न बोलवीरा। तुरसी संग अजुगतिकी। कब हून करे सधीरा। ५६॥
 चोपई।

चार अधिकरमनपरि धरै नरंग ॥ अधिकनकरै काहू को संग ॥ येस
 व अधिकसागिपरि होइ ॥ षट् अंग जीगहि साधै सोइ ॥ ५७ ॥ अर
 आसजविधान ॥ १ ॥ चौपई ॥ प्रथमे आसनसाधे संत जे संहो गु
 रदेववतायो मंत ॥ बिनही आसनबाइ ही हरे ॥ तुरसी अतिपरिन
 हा परे ॥ २ ॥ बिनतीवहि मंदिरहि उठावे ॥ अतिठहे धरमाऊसमावे ॥ यो
 बिन आसनपकसाधे जीग ॥ तुरसी अति उपजे तहो रोग ॥ ३ ॥ सा
 ७ ॥ आसनपक नये बाहिर ॥ प्रणयाम करै कोइ ॥ तुरसी अति
 त अंतर परे ॥ सिधकारि जनही होइ ॥ ४ ॥ चौपई ॥ प्रथमे जीगी आ
 सन करै ॥ इतीये षट् करमनिचित धरै ॥ उने अत्यास करै षट् मास ॥
 असलही इतत रोग द्वितांसा ॥ पीछे विधियों निसै जुवाय ॥ तुरसी
 विघनतपरई काइ ॥ ५ ॥ सा ७ ॥ विघनको ऊपरि नासकै ॥ जी आ
 सनपक होइ ॥ तुरसी तीव विहंनघर ॥ होत न देष्पाकोइ ॥ ६ ॥ चौपई
 तिगी उपरि आसन लाई ॥ विठे अंग विधियों जुबनाई ॥ कनक डंड
 लों सुधसरीर ॥ राषे लीचन चूमधिधीर ॥ दायह सिधासन अैसे करै
 सो जीगी जा में ही मरे ॥ मुकतिदारके पुलहिकयाठ ॥ तुरसी परे
 जोति निराट ॥ ७ ॥ सा ७ ॥ सिधासन बेवार है ॥ दुलवै हस्तनपाव ॥ आस
 निद्रा नूसत्रिय नहि अति गति उपजाव ॥ सातलनेन अवतसुधिरह
 रि सुमिरनका चाव ॥ तुरसी अैसे संत कौ ॥ समरन करै संताव ॥ ८ ॥
 १ ॥ चौपई ॥ सब आसनसिद्धकीये निरधार ॥ तामे अतिसे उतै जुसार ॥ सि
 धासनपदासन सोइ ॥ तुरसी साधे सिधि जुहीइ ॥ ९ ॥ सा ७ ॥ पदासन
 की जुगति यह ॥ उने उतान करियाइ ॥ लैकै जांन निपरि धरै ॥ नसा
 दिहिलगाय ॥ १० ॥ नांसा दिहिलगाइकै ॥ आसन अचल होइ आइ ॥ जी
 गुर उपदेसी जुगति ॥ विधिसं जुगतिक एइ ॥ ११ ॥ आवपर अस्तनप
 तौ ॥ आसन रहै अतीत ॥ तुरसी तब नल जांनियो ॥ हं वा आसन जी
 त ॥ १२ ॥ चौपई ॥ आसनपक नये पक होइ काया ॥ होहि आरोगि अंग
 अंग सबाया ॥ तब नल करिये प्राणायाम ॥ तुरसी सिद्ध होहि सबका

मा॥३॥७१॥ अथ प्राणायामविधाना॥२॥ तुरसीप्राणायामकौ॥ कर्म
बोविधिसनसो॥ पापसंमूहनिकोंहुरैतनमनअमलबुहोइ
तुरसीप्राणायामस्यो॥ प्रकृतिहोइसमाना॥ मवमनसाकोरथथके
पापहृदबिलीमांना॥ प्रसिधहोइतनआत्मा॥ अनहृदघुरेनिसा
ना॥ ऐसेप्राणायामकौ॥ तजेसुवडअज्ञाना॥ शातुरसीइहैगतिजा
निकें॥ प्राणायामकरिलेहवारवारविपरजेविधि॥ रविमिस
पवनपुरेह॥ ३॥ चौपदो॥ रविमिसिनांडीविधिवोपाइ॥ दोतपोत
पवनाजुपुराइ॥ तुरसीकुंनकरैचकसोडाकरैजुगत्तिसनजुग
मलषोइ॥ धासाधी॥ वासनांजुमेटेबिनांकरहिंवायकोरुपम॥
तुरसीवितनवाहुरै॥ मतआसाकेपास॥ पाप्रथमेत्योवासनां
इतीकरैप्राणायाम॥ इकत्योइकउलटिये॥ तुरसीसिधहोहिक
साधुप्राणायामआलंबस्यो॥ मनकीवृत्तिउलटाइ॥ तुरसीमनबसि
करनकी॥ हेयहउतमउपाइ॥ ७॥ अधममधिसउतमा॥ प्राणायामके
तेदा॥ तुरसीविधिसाधते॥ होइसववृत्तिकोबेदा॥ ८॥ नौपदं॥ प्र
णायामतीतप्रकारा॥ अधममधिसउतमसारा॥ सात्राद्वादसवतु
रुबीसा॥ अठसमकेउतमवतीसा॥ एसवजानितजेजगदीसा॥ से
गीस्वरनरकाईसा॥ ९॥ प्राणायामसोईसतिसाराजामधिवंमं
चार॥ ईसोहंबिनहीवाइ॥ तुरसीसाधेसिधितथाबंश॥ १०॥ प्रा
मकरैअवकीइ॥ मात्रासहितजुगत्तिस्योसोइ॥ सोप्राणायाम
निसारा॥ तुरसीसाधेउतरेपार॥ ११॥ निगर्तप्राणायामजुसोइ
मधिमंत्रवीजनहिहोइ॥ तुरसीसोप्राणायामकरै॥ ताजोगीव
संचरपरै॥ १२॥ १३॥ अथप्राणायाममधिमंत्रजपामंत्रविध
॥ १४॥ ओकमैमिलिमंत्रहोइ॥ सोमंत्रउरधाशि॥ तुरसीजपियेज
स्यो॥ प्रगटेजोत्तिसकरि॥ १५॥ तुरसीजोगांन्यासमोउतेमंत्र
एकवोईसोहंके॥ जपेहोइजीपपारा॥ २॥

एकमात्रातीना ठत्ते मंत्रको जपे जाय होइ जोतिमें लीन ॥ ३ ॥ सो
हं सो है न दिन ॥ सब का हूँ के होइ जनतुरसी प्रसाविना ॥ मुक
तिन पावै कोइ ॥ ४ ॥ सो हं सो हं होइ नित ॥ नासा अग्रे जाइ ॥ तुरसी
सो सो हं सबदा उचरि अनि अंतरि आइ ॥ ५ ॥ अनि अंतरि सो हं ज
पत ॥ होहि पाप नमूर ॥ तुरसी जोति जगमगो ॥ बगै अंत हद तर
इ ॥ अहद अन दिन घुरै ॥ जोगे जोति अ ॥ ६ ॥ तुरसी अनि अंतरि
जपत ॥ सो हं हं सा जो प्र ॥ बंसा सो हं सो ॥ ७ ॥ सो हं हं सा जाय को जपे
जुगति सन कोइ ॥ तुरसी सो हं हं सा सो ॥ हं सा सो हं सो ॥ ८ ॥ चो
॥ सो हं सो हं सबद सुत्ताइ ॥ नातिकं वल ते उपजे आइ ॥ सो सो हं
उलटि कै उचरै ॥ नातिकं वल धिर वै सि विचारे ॥ परम जोति स्यो ल
वै ध्यात ॥ तुरसी ए अजपा परवान ॥ ९ ॥ या यो ॥ रसना कर विनका
या मे ॥ रंकार धु नि होइ ॥ तुरसी सब सा धूक है ॥ फुनि अजपा वि
धि सो ॥ १० ॥ तुरसी प्राण यां म मे ॥ मंत्र हं सग र्ति त सो ॥ विधि वि
धि कै वर न्या जु हं म ॥ बूँके विरला कोइ ॥ ११ ॥ आसन प्राण यां म का
क बूक बूकी या विचार ॥ तुरसी आगे जुगति स्यो ॥ बरनो प्रसाह
र ॥ १२ ॥ ए धा ॥ अथ प्रत्याहार विधान ॥ १३ ॥ तुरसी प्रत्याहार विन म
ना हम तो रघ सो ॥ नमूल होइ मिटे नही ॥ कोटि करै जो कोइ ॥
॥ १४ ॥ यो पद ॥ बार बार इंद्र अरु मन ॥ उलटो करै जु जो गी जत ॥ यह
आरंभ तावत जु करावै ॥ जावत मन इक व होइ आव ॥ १५ ॥ तुर
सी कूर्य गति नृ ताइ ॥ इंद्रिन को आतै उलटाइ ॥ रिदा कं वल मे ए
कं व करै ॥ असा होइ अति र भ व ति रै ॥ अजहां जहां ए इंद्र मन उन
मत होइ कै करै गवन ॥ वहां तहां ते जो गी हरो ॥ तुरसी हरि अपने
वसि करै ॥ १६ ॥ अपने अपने रस को जाहि ॥ विष अमृत करि नुग
ताहि ॥ सुर सहलाहल करि जु रिषावै ॥ गहि गुर गान तहां ते ल्यावै
॥ १७ ॥ और वि अस्त पयानां देइ ॥ अपनी किरनि आप मे लेइ ॥ यो जु

सबैया जोगी करै ॥ पूरबके रिपबिममत धरै ॥ ६ ॥ तुरसी जव असे
 मन आशा ॥ इंदित सहित रहै ठहरा ॥ तब नल जोग धारणा होश सा
 अत्र संतक है सब को ॥ ७ ॥ १०१ ॥ अथ धारणा विधांत ॥ ५ ॥ धारण
 जु असे करै जोग जु गति धिर होश ॥ रंम रूप निरख्यो करै ॥ नासा अ
 य जु सो ॥ १ ॥ चौपई ॥ इत उतकी चित वनि जु निवारे ॥ चित हि उ
 लटि एकाग्र धरै ॥ जैसे नै न बिचिना साया ना ॥ तहां निरखे निज प
 द न्द बांन ॥ २ ॥ तुरसी ना सक द्वे स्थान ॥ अथ वा नू मधि धर ऊ जु
 धांत ॥ मन अवल करि राषी कहं ॥ परम जोति प्रापति होइ तही ॥ ३ ॥
 नहां धरिये तहा तेन मन टरै ॥ परम जोति पद निरख्यो करै ॥ तब धार
 ना परपक जु जोति ॥ आगे सुष ध्यान बयोनि ॥ ४ ॥ साधी ॥ धारना
 जु परपक नये ध्यान सहजिल गिजा ॥ तुरसी परगट पे विद्ये परम
 जोति इहंका ॥ ५ ॥ १०६ ॥ अथ धांत विधांत ॥ ६ ॥ तुरसी कोटि जप
 के कोये को ॥ जंत पहे को सो ॥ ध्यान सी हल ही कला के ॥ पल पटंतर न
 ही होइ ॥ १ ॥ तुरसी एक घरी अर धरुं घरी ॥ लगे सुध ब्रह्म धांन ॥ तापु
 नके अंस हंस मि न ही तीरथ ब्रत दान ॥ २ ॥ आदि अति आठो पहर
 जे रहे ध्यान ही समाश ॥ महिमा उन जोगी नकी ॥ काये बरनी जाइ ॥ ३ ॥
 चौपई ॥ जोगी धांत धरे जु असे ॥ ज्यो विष नरी जु काम निते से ॥ गति दि
 वे स कंठ हि न बिसारे ॥ यो जन ध्यान धनी को धारे ॥ ४ ॥ कीट चंग ही इके
 जु धांन ॥ चंद चकोर लो धांत लमावै ॥ तुरसी असे को ऊ होइ ॥ आत्मा
 धानी कहिये सो ॥ ५ ॥ सम आसन सम काइ विचारै ॥ सति ग्री वां करि
 धांत जु धारै ॥ नासा अग्र ने न चित देइ ॥ परम जोति परचा करि लेइ ॥ ६ ॥
 अथ वारि दे जु धारै धांन ॥ मन पवन उलटा उर आंन ॥ अस न धंस लो वै
 वै सो ॥ तुरसी रूगा बहरा होइ ॥ ७ ॥ साधी ॥ सपरस सुष सम नै न ही सब
 दन सुनई कांन ॥ तुरसी लागा जो नितना ॥ सहमत उन मन धांन ॥ ८ ॥ बीस
 रिजाइर सस्त ॥ धांन गंध विली मांन ॥ तुरसी उन नितनी के ॥ ये संतक है

एकमात्रातीना तत्ते मंत्रको जपे जाय होइ जोतिमें लान ॥ ३ ॥ सो
 हं सो हं ऐ न दिन ॥ सब का हू के होइ ॥ जनतुरसी प्रसाविना ॥ मुक
 तिन पात्रे कोइ ॥ ४ ॥ सो हं सो हं होइ ॥ नितानासा अणे जाइ ॥ तुरसी
 सो सो हं सब द ॥ उचरि अति अंतरि आइ ॥ ५ ॥ अति अंतरि सो हं ज
 पत ॥ होहि पाप नमूर ॥ तुरसी जोति जग मगो ॥ बगो अनं हद तर
 ॥ ६ ॥ अहद अन दिन घुरे ॥ जागे जोति अ ॥ ७ ॥ तुरसी अति अंतरि
 जपत ॥ सो हं हं सा जो ॥ ८ ॥ सो हं हं सा जाप को ॥ जपे
 जुगति मन कोइ ॥ तुरसी सो हं हं सा सोइ ॥ हं सा सो हं सोइ ॥ ९ ॥ चो
 ॥ सो हं सो हं सब द सत्ताइ ॥ नासिकं बल ते उपजे आइ ॥ सो सो हं
 उलटि कै उचारे ॥ नासिकं बल थिर वै सि वि चारे ॥ परम जोति स्यो ल
 वै ध्यान ॥ तुरसी ए अजपा परवान ॥ १० ॥ सा ॥ रसना कर विनका
 यामे ॥ रंकार धु नि होइ ॥ तुरसी सब सा धू कहै ॥ फुति अजपा वि
 धि सोइ ॥ ११ ॥ तुरसी प्राण यां ममें ॥ मंत्र हं सग र्चित सोइ ॥ विधि वि
 धि कै वर न्या जु हं ॥ बू के विरला कोइ ॥ १२ ॥ आसन प्राण यां मका
 कबू कबू की या विचार ॥ तुरसी आगे जुगति स्यो ॥ वर नों प्रसाह
 र ॥ १३ ॥ १४ ॥ अथ प्रसाह र विधान ॥ १५ ॥ तुरसी प्रसाह र विना म
 नाह मती रथ सोइ ॥ नमूल होइ मिटे नही ॥ कोटि करै जो कोइ ॥
 १६ ॥ चो पदी ॥ बार बार इंद्री अरु मना ॥ उलटौ करै जु जो गी जता ॥ यह
 आरे न ता वत नु कर वै ॥ जा वत मन इकत्र होइ आव ॥ १७ ॥ तुर
 सी कुर मगति नृ ताइ ॥ इंदित को आतै उलटाइ ॥ रिदा कं बल मे ए
 कं त्र करै ॥ असा होइ अति र म त्र ति रै ॥ १८ ॥ जहां जहां इंद्री मना उन
 मत होइ कै करै गवन ॥ तहां तहां ते जो गी हरै ॥ तुरसी हरि अपने
 वसि करै ॥ १९ ॥ अपने अपने रस को जा हि ॥ विष अमृत करि नृ ग
 तां हि ॥ सुर सहला हल करि जु दिषा वै ॥ गहि गुर गान तहां ते ल्या वै
 ॥ २० ॥ ज्योर वि अस्त पयानां देइ ॥ अपनी किरनि आप में लेइ ॥ यो ज

सर्वथा जोगी करै ॥ पूरव फेरि पबिम मन धरै ॥ ६ ॥ तुरसी जब असे
मन आइ ॥ इंदिन सहित रहै वहराइ ॥ तब नल जोग धारण होइ ॥ सा
अवसत कहै सब कोइ ॥ १० ॥ १०० ॥ अथ धारणा विधान ॥ ५ ॥ धारणा
जुअसे करै जोग जुगति धिर होइ ॥ राम रूप निरख्यो करै ॥ नासा अ
ग्रजु सोइ ॥ १ ॥ चोपई ॥ इतउतकी चितवनि जुनि वारो ॥ चितहि उ
लटिकाय धारै ॥ तैनेन विचिना साथाना ॥ तहानि रषे निजप
दन्तवाना ॥ २ ॥ तुरसीना न कहै देस्यान ॥ अथवा नूम धि धर ऊजु
ध्याना ॥ मन अचल करि राषी कही ॥ परम जोति पापति होइ तही ॥ ३ ॥
जहां धरिये तहा तेन मन टरे ॥ परम जोति पद निरख्यो करै ॥ तब धार
ना परपक जु जानि ॥ ता आगी सुष ध्यान बघाति ॥ ४ ॥ माया ॥ धारना
जु परपक नये ध्यान सहजिल गिजाइ ॥ तुरसी परगट पेधिये परम
जोति इहिकाइ ॥ ५ ॥ १०६ ॥ अथ धारणा विधान ॥ ६ ॥ तुरसी कीटि जप
के कीये को ॥ जंतपहू को सोइ ॥ ध्यान सो हल ही कलाके ॥ पलपट तरन
ही होइ ॥ १ ॥ तुरसी एक घरी अरधकं घरी ॥ लगे सुध ब्रह्म ध्याना ॥ तापु
नके असह समित ही तीरथ ब्रतदान ॥ २ ॥ आदि अति आठो पहर
जे रहे ध्यान ही समाइ ॥ महिमा उजोगी नकी ॥ काये बरनी जाइ ॥ ३ ॥
चोपई ॥ जोगी ध्यान धरे जुअसे ॥ ज्यो बिष नरी जु काम नितेसं ॥ गति दि
वे सक ठहिन विसारै ॥ यो जन ध्यान धनी को धारै ॥ ४ ॥ कीट चंग होइ के
जु ध्यावै ॥ चदचकोर लो ध्यान लमावै ॥ तुरसी असे को उ होइ ॥ आता
ध्यानी कहिये सोइ ॥ ५ ॥ सम आसन सम काइ विचारै ॥ समि ग्रीवां करि
ध्यान जु धारै ॥ नासा अग्रनेन चित देइ ॥ परम जोति परवा करि लेश ॥ ६ ॥
अथ वारि दै जु धारै ध्यान ॥ मन पवन उलटा उर ध्यान ॥ अस नयन लोवे
वे सोइ ॥ तुरसी एगा बहर होइ ॥ ७ ॥ गापी ॥ सपरसम सम के नही ॥ सब
दन सुतई कांता ॥ तुरसी लागी जानि वना ॥ सहमत उत मन ध्यान ॥ ८ ॥ वीस
रिजाइ रससा ॥ ध्यान गंधविली मांसा ॥

सहनो न ॥ १ ॥ औं निवा वा के नार मों तुर सी तरंग न होइ ॥ ध्यान लगा
तब जां नियो ॥ जब अँसै र है मन सोइ ॥ १० ॥ चार विचार त उपजे ॥ कोऊ
रिदै जु आंन ॥ निज त तस्यो ला गार है ॥ तुर सी ध्यान प वांन ॥ ११ ॥ चौपड
तुर सी रिद क वं ल के मां ही ॥ जो ति मई ज ग दी सर हां ही ॥ ता ध्यान मै र
हे यो ही ॥ जैसे की चप पां न जु जोइ ॥ १२ ॥ साय ॥ तुर सी की चप पां न
लो ॥ मतर है रिद थिर होइ ॥ अप मे व सुष व्र सु को ॥ तब बिल से सुष
सोइ ॥ १३ ॥ तुर सी यह ध्यान जु क छा ॥ सद गुर के प्र सा दि ॥ आ गे व र
नौ ॥ अति अ म ल ॥ पा व न पर म स मा धि ॥ १४ ॥ १२० ॥ अ व त मा धि दि
धां न ॥ १ ॥ तुर सी पर म स मा धि सु प्र ॥ तब प्रा ति द्वे सोइ ॥ जब दूर न स
द गुर को ॥ प्र सा द प्र ग ट होइ ॥ १५ ॥ चौपड ॥ जन म जन म सां षि अ रु जे
ग ॥ सा धि जु आ या होइ ॥ आ रोग ॥ तुर सी त व स मा धि सु ष पा वै ॥ अँ क
हे सो मो म नि ना वै ॥ १६ ॥ तुर सी उ रे क है सो नां ही ॥ सां षि जो ग सि धि न
थे बि ना हे ॥ पर म स मा धि न उप जै मां ही ॥ या को अ र्थ इ तो हा आं ही
१७ ॥ तुर सी ध्यान धार नां इ क होइ आ वै ॥ अ रु चित को वि वै प मि टा वै
ए का ग्र है उ ह राइ ॥ तब स मा धि उ त प न होइ आइ ॥ १८ ॥ साय ॥ सर स
मा वै चं द मों ॥ चं द सर के मां हि ॥ तुर सी त व स मा धि सु ष ॥ जब उ ते ए क
होइ जाइ ॥ १९ ॥ चौपड ॥ तुर सी उ ते ए क होइ जां ही ॥ नां द वि द स सि सु
र स मां ही ॥ जी व सी व का मे ला होइ ॥ सह स मा धि सा धू क है सोइ ॥ २० ॥
॥ साय ॥ र वि स सि उ ते उ ल टि के ॥ प त्रि म अ स्त होइ आइ ॥ पू र व दि
सान ऊ ग व हिं ॥ ब ऊ रि न क व रूं जाइ ॥ अ म ल मि लै मि लि वि बुरे
वि धि वि धि सु ष उप जाइ ॥ तुर सी त व या का या की ॥ छा या न ही दर
साइ ॥ २१ ॥ चौपड ॥ उ ल टै स्वां स हों हिं नो हिं स्वां स ॥ त व र ग उ हां मे हि होइ नि
वां स ॥ मन म धु कर की पर हीं हिं न ग ॥ तब स मा धि क हि ए इ कर ग ॥
२२ ॥ तुर सी मन म धु कर की पर ऊ रि जां ही ॥ सो हे सो हे स व द होइ मां
ही ॥ ने व र उ हां मै र है यो होइ ॥ जू मू ष क पी पा रा सोइ ॥ २३ ॥ साय ॥

ज्योतिषकः पारायणीक इतरेतः ज्ञानः योज्यमानः गदौ
 ५। सुखं रक्षेत्समाप्तं करतः ॥ अत्र कथं वक्तव्यं तद्विदि
 षात् तः पाजवत्त्रैसैजुदौः परमसमाधिकहाः १०
 २। तस्मिन्नाजलजलदिसमाः ३। धृत, मिलिबकः रमावि।
 बुरातं गीपनआत्ममैमिलिः ४। तवसमाधिकदियेसतिता
 ५। ११। तस्मीपरममः १२। जातकेनहीहोः व
 इत्तारः तिनमतजन यहसः १३। मसोः १४। १५। ३। १६।
 १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०।
 ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०।

पदजातको महासुमनः १। जोगअरुसाधिमत व्से
 विर्याकोः २। हवजोगअरुसाधिमत ३। तत्रमोलिकवाट
 तुरमांगविपदजातको गसादकायघाट ४। हवजोगअ
 रुसाधिमत उतैपथए गः ५। तुरमांगगतगटजातक मता
 निवापापाज ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०।

ई जु उ नै पंथ प्रचोहि ॥ ११ ॥ तुरसी इन उ नै पंथ निका ॥ ज्ञान जोग
 का सो इ फल एको महो मोखि है ॥ तिन मत जानो को इ ॥ १२ ॥ ज्यो
 दोऊ नै ना जुये ॥ साधे वस्तु एक यो जु ज्ञान अरु जोग को है
 एक ही बवेक ॥ १३ ॥ तुरसी ज्ञान विहंगवत ॥ जोग पीलवत ॥
 आहि ॥ वह उडि वह क्रम क्रम के ॥ फल निश्चो जु करे हि ॥ १४ ॥
 तुरसी फल जु मोखि मारग जुये ॥ महो जोग अरु ज्ञान इन उ
 नै न सिधित येते ॥ पर्ये परम सथां न ॥ १५ ॥ दोपरी ॥ तुरसी सां
 धि जोग ये सार ॥ उ नै निको धारना विचार ॥ दिठ करि उ जे आ
 त्त मां हि ॥ तो मुक्ति में अं देसां नो हि ॥ १६ ॥ साधी ॥ तामें सांधि वि
 हंगम त ॥ उ जे उरह मारि ॥ तुरसी जो पीलवत जो साधा ही
 इवो हवार ॥ १७ ॥ दोपरी ॥ तुरसी जोग जु साधा ना ही ॥ तावत सां
 धि जु आ ही ॥ ज्यो नो काषे वट जु बिना ही ॥ बही बही फिरे दरिया
 मां ही ॥ १८ ॥ साधी ॥ तुरसी सांधि सुधर मतवा ॥ अति त दिठ हो इ
 आइ ॥ जो जु गति स्यो साधा जु हो इ ॥ जोग घडो ग जु काय ॥ १९ ॥ तुर
 सी घडो ग जोग विन ॥ सांधि पिगुला जां नि ॥ सांधि बिना जोग ह
 यह ॥ आहि अंध उत मां न ॥ २० ॥ एक पर न पं बी उ डै ॥ एक पा च लो
 न जाइ ॥ उ नै उ नै हो हि उ नै के ॥ तो ही त लें सिधियाइ ॥ तुरसी यो ज्ञा
 न अरु जोग का ॥ मत देयो निरताइ ॥ एक हो इ एक हो इ त ही ॥ तो के
 से का ज सराइ ॥ २१ ॥ तुरसी सकल सास्त्र निको ॥ सुमृति निहं के सो
 इ अरथ इ तो ही सार है ॥ उ नै स धे सिधि हो इ ॥ २२ ॥ अंध पंग शिलिम
 तो करि ॥ निक सि गये फल मां हि ॥ तुरसी पायो परम सुष ॥ काल
 जाल नै नां हि ॥ २३ ॥ ज्ञान पंग पंग पंष विन ॥ अधात्त चष अंध ॥
 तुरसी जब दोऊ मिलो ॥ तब कटो काल जम फंद ॥ २४ ॥ तुरसी इन दो
 ऊ बिना ॥ जो जन जोगी हो इ ॥ पायन पंग चष अंधरा ॥ असे जानो सो
 इ ॥ २५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ अंध सुष सो धि को य रि कर न ॥ ५५ ॥

तुरसी तत्तपत्रीसको॥ जाउरुपजे ग्यान॥ हंसवीरनीरलोंसुधात्त
 सैंकमीनआना॥ सोईजटीमुडीसोई॥ सेयहंसोपरवांन॥ षटदर
 सनमेंकोऊहै॥ कतकतसोईजांन॥ हंसवीरनीरलोंतिनि
 प्रकृतिखुरुषएदोइ॥ तुरसीनिजकरिकेलेवै॥ सांविज्ञानीसोइ
 ॥ २॥ तुरसीजहांसंसेनही॥ नहिद्विपस्जेकोइ॥ ३॥ तैमांहिएकहं
 नही॥ सांविज्ञानीसोइ॥ ४॥ तुरसीसांविज्ञानकीयांरिषा॥ एते
 हीमेंजांन॥ गुनमईदेहविसारिके॥ होइरघाआत्मवांन॥ ५॥
 तुरसीप्रकृतिअंतिहै॥ खुरुषअंतिप्रवांनि॥ प्रकृतिजडचेतनि
 खुरुषा॥ इहैसांविमुधमांन॥ ६॥ तुरसीजुदेजुदेकरिजानिईसा
 ब्रातकारजुसीइ॥ प्रकृतिकमीकानेकरे॥ रहेखुरुषहैहीइ॥ ६
 तुरसीखुरुषजुनयेके॥ आहिजुएसहिनांन॥ प्रकृतिगुणव्याये
 नही॥ सबदिनएकसमान॥ ७॥ ॥ ३५४५॥ अथचित्तकोपरिकर
 त ॥ ८०॥ तुरसीचित्तचित्तसबकोऊकहै॥ चित्तहिनचीन्हेकोइ
 जिनचित्तचीन्हाआपनां॥ मयेतत्ववितसोइ॥ १॥ तुरसीचित्ता
 चित्तसबकोऊकहै॥ चित्तहैनकोऊजांनजेसैंजतनचित्तजीती
 ये॥ सोइलनकोऊध्यांन॥ २॥ तुरसीचित्तबीजअंकुरमईआहि
 जुयहसंसार॥ तीनिलोकविस्तरिरेहै॥ इलततापरिहा॥ ३॥ चो
 मई॥ तुरसीचित्तबीजसंकलयअंकुरा॥ इहैसंसारबृहकोमूर॥ ता
 हिद्विषुसेयहजगुसोइ॥ निद्वैनिजनिरमूरजुहोइ॥ ४॥ साधी॥
 ॥ तुरसीकितेसहोइसांवतकिते॥ कितेजुसरकहांहि॥ चित्त
 जीतेतेसरिवां॥ तेकोऊओरहीआहि॥ तुरसीअमलयमाधिमु
 षा॥ महामुक्तिनृवांन॥ तहांचित्तजीतेबाहिरा॥ कोउनपात्रे
 जांन॥ ५॥ जानकोऊपात्रेनही॥ जहांनिजसरूपनिरकारा॥ तुर
 सीचित्तवृत्तिद्वैरही॥ आइवोटपहार॥ ७॥ चोपरी॥ तुरसीपडि

६

नही जीते जाइ। याको उतम इहे उपाइ। ४। साधी। चितवृत्ति चि
तसौमिका। चितके उतै धर्म। तुरसी लषिबो डलन है। कोऊ
बिरल जानै मरम। ए। जदपि प्रथम चितवृत्तिक ही। तदपि क
रमयौ नाहि। तुरसी वरनौ सौमिका। तापी छै औ राहि। १०।
अथ चितको पंचम सौमिका। अथ छिपत निविधान। १।
तुरसी इंद्रा द्वार होइ। यह चितवा हरि जाइ। रजगुन के उदवे
गति। यह छिप्त मिक हाइ। १। तुरसी कहं डष सुष युनिक
है। पाये अयाये होइ। यों बुझौ उबस्यो करै। इन विषय नमै सी
इ। २। चौपई। जावतर जत मलेपी चित। तावत लहै नही उर
थित। तुरसी उरथितिकी तो पावै। जी पूरब तजि पछिम आ
वै। ३। साधी। तुरसी पछिम नावरी। यह चित अंध अज्ञान परे।
स्यारजगुननिका। बघाबहा फिरै आन। घेरि घेरि मुनियरथ
के। गिनै नकाह कांनि। छिप्त सौमिका जानियह। जहां यह अ
चातांनि। ४। ५। अथ मूढ सौमिका विधान। तुरसी तामसरू
पी चित यह। निश्चै जानौ एसोइ। कृत अकृत समकै न ही रखा
अतित जड होइ। १। चौपई। नलीबुरी सर अवर सौई। सत।
असुतकी समकिन कोई। तुरसी जब असा चित होइ। महाताम
सी कहिये सोई। २। साधी। तुरसी मूढ सौमिका यह। जहां कृत
अकृत नज्ञान। निजकै समक्यो नापरे। होइ रघोली पविज्ञान
। ३। ४। अथ विविक्त सौमिका विधान। ५। चौपई। सप्तसौमि
का जब चित आवै। तब असा होइ कै जु दिषावै। सुषरु चिडष
देष्यो नसुहाइ। तुरसी सोई सोई करै उपाइ। १। स्वर्गनिके सुषनि
को जु चाहे। करि करि प्रातिजुवोरिनिवाहै। तुरसी यों जानै न
ही अंध। पेई सुषफिरि दै है फंद। २। साधी। जूं विषके लडवान
पर। मिश्री लाई सोइ। मोठे करि करि पाईये। अति विरचनि

संख्ये हैं ॥ मतरपती जो के ॥ ३ ॥ तुरसी विधि पत्तोमिका यह
सतो गुनी जूकहा ॥ आडी आगल हो रही ॥ बहजीय विधि
आ ॥ अलपज्ञान अलप ही सुखा ॥ उने नि सुपय जा ॥ ता हिया
गौ ही मुक्ति हो ॥ और न आन उपा ॥ ४ ॥ अथ तीन तोमिका ॥
त्याग विधान ॥ ५ ॥ चौपद ॥ तुरसी तीन तोमिका मां ही ॥ हलचल अ
धिक अचल सुषणं ही ॥ तातें जो गी रोई करौ ॥ प्रन हिया गि आगे वि
त धरे पर ॥ साधी ॥ तुरसी विधि विधिके नें लें ॥ जगति उपा ॥ विचारि
जे निके नि चित थर करौ ॥ जन त्रिय तोमि निवारि ॥ तुरसी तीन तोमि
कारा उपा जवन संसार ॥ एक ग्रनि रो धरिन ॥ सुलेन मो छि दवार ॥ २ ॥
॥ २५ ॥ अथ एकाग्र तोमिका उपा ॥ विधान ॥ ५ ॥ एकाग्र चित करन
कौ ॥ प्रतम उपाय जु ये हा ॥ तुरसी जगति जतन गही ॥ तजि अजु गतिके
नेह ॥ १ ॥ चौपद ॥ तातें जो गी जगति समाधा ॥ अजु गतिके नेरे नहि जा ॥
चुरसी जगति मां रुथि स्त्री ॥ यह चित सब सा धूक है सो ॥ २ ॥ आदि
अति मधि उलट्यौ करौ ॥ उलटि उलटि द्विदे चित धरे ॥ तुरसी उलट तउल
टत सो ॥ एक दिनां सह जे थिर हो ॥ ३ ॥ साधी ॥ तुरसी यह चित रहे गा
एकाग्र हो ॥ सां हि ॥ जो या की करौ को ॥ छिन जु बिसारे नो हि ॥ ४ ॥ त
रसी इ हि आरे तिला गार है ॥ रति दिवं स इ क तारा ॥ तब न ल एकाग्र है
शाय ह चित पर हरि आन ॥ ५ ॥ २ ॥ अथ एकाग्र तोमिका पा रुष वि
धान ॥ ६ ॥ तुरसी एकाग्र चित मये के ॥ आं हि जु ये सहनां ना यरे स्वा
उष सुषका ॥ चलेन हा कही आन ॥ आत्म मां ल गार है ॥ ज्यौं चकोर
ससि धां ना ॥ चात्रि गधन सफरी जुं जवा ॥ बिबर त त्यागें धान ॥ १ ॥ ३०
॥ अथ निरोध तोमिका विधान ॥ ७ ॥ तुरसी निरोध तोमिका यह ॥ वृत्ति
रहित हो ॥ चित ॥ पर बिहं न पबी जु लो ॥ जडिन सके रत उता ॥ १ ॥ तुरसी
उड्यौ जु ना परै ॥ सुति गयौं व ह फाला ॥

पापासुषनिराल॥२॥निरालंबसुषपाईया॥जितकालणञ्जचित
दृतिरहेतहोइब्रह्ममें॥पाईपूरनधित॥३॥प्रवाणआदियावोदृति
याचितकाजुसोइ॥निरोधनोसिकासुधनये॥इतमेंरहेनकीइ॥४॥
तुरसीनिरोधचितनये॥उपजेप्रमसमाधि॥बीजरहितमेदुअरहित
रहतजुसकलउपाधि॥५॥३॥अथषट्पटितिनानिधान॥६॥तुरसी
येहदृतिजुकवन॥कहानांमधोसोइ॥निनिनिनिप्रगटकहो॥जोस
बकींज्ञानजुहोइ॥७॥यहकंचनकाचहैयह॥नांनोवतवाजीशाना॥
तुरसीप्रवांमदृतियह॥कीयोकरैगणनांन॥२॥मिथ्यादेहादिकनि
कीं॥आयाजातेसीइ॥तुरसीविपरजेदृतियह॥याचितकीजेसोइ॥२
वचनज्ञानउत्तपनहोइ॥बस्तज्ञानतहानोहि॥तुरसीविकल्पदृति
इहै॥याचितकीजुआहि॥४॥बूडिजावदरियावमें॥रहेनसुधिन
धाम॥तुरसीतामसचितदृतिनिनिद्रायाकोनाम॥५॥जेआगोसुष
सोगयोइषरुंभोगयेदेह॥तुरसीसदृतिनामिदो॥युनिचितकीदृति
येह॥६॥इनयावोदृतिनिते॥नदृतिकिचितहोइ॥चितजितजोगीज
निषह॥जोअसाहैकोइ॥७॥वीयइ॥तुरसीचितजितजोगीतया॥ता
हिक्कतकरनकबुनहीरघा॥अजितचितकींछमृत्तिनमें॥जततक
रतआलसकींबनें॥८॥साथी॥तुरसीजावतचितमें॥चंचलतादरसा
इ॥तावतकेरोचितकीदीजेनहाछिटकाइ॥९॥जावतचितवाहरित
में॥तावततुरपददूरि॥तुरसीआवेउरमहा॥तौयावेपदधूरि॥१०॥
चितमूयैषितकेगुनां॥गरकहोइगलिजांहि॥तुरसीआत्मगदित
होइ॥रिदाकंठकेमांहि॥११॥चितचितसबसाधनिकहो॥चितचि
तआषैवेद॥तुरसीपईएपरमपद॥जोचितकोहोइवेद॥१२॥चित
सगिरघाविगटस्यो॥वाणीकथेनिराट॥तुरसीरायमहामीबिके
कोकरिषुलहिकयाट॥१३॥चितइहांछिनउहोचंडरिस॥चितचं
चलचलिजाइ॥जावतजनकोपितितही॥रहीअपितिउरबाइ॥

॥१५॥ चित्तचपलबसनां बसि ॥ फिरेयवनलें सोडा तुरसी सो उलटें
 बिसां ॥ सिधकारि जनही होइ ॥ १५ ॥ उलटों येही मिलेगा ॥ आत्मसुख
 के मां हि ॥ तुरसी उलटें बाहिर ॥ अमृत जहां तहां हि ॥ १६ ॥ तुरसी ज
 हां तहां रिदस्थानतजि ॥ चीतचंचलचलिजाइ ॥ तहां तहां तेल्याव
 सी हनौ रोगवलाइ ॥ १७ ॥ चित्तचलावै देहको ॥ यत्रनांतरकी डार
 तुरसी कारन चित्तयवन ॥ नहितनतरको सारा ॥ १८ ॥ आलाकुं
 नजुजलबिना ॥ लौषालीयहकाया ॥ तुरसी चित्तजलस्यो तरौ ॥ तौ
 आत्मनमदरसाइ ॥ १९ ॥ चित्तनारथिरस्ये बिना ॥ उपजतअनंत
 तरंग ॥ तुरसी ततआत्मनमा ॥ दरसतनही अचंग ॥ २० ॥ तुरसी अन
 गआत्मा ॥ ज्योहें स्यो नदरसाइ ॥ जावतचित्तजलऊपरौ ॥ त्रिगुन
 कभीरही बाइ ॥ २१ ॥ येपांनी लों मिलिरहौ ॥ तीनों गुनके मां हि ॥ तु
 रसी ताको विठरिबौ ॥ हंसज्ञानबिननां हि ॥ २२ ॥ हंसज्ञानअंग ॥
 अंगस्यो ॥ अरमधिउदैजुहोइ ॥ तुरसी तबगुणचित्तदोऊ ॥ उदैजुदे
 होहि सौ ॥ २३ ॥ चित्तमूरसायाजुगुण ॥ पलवविषै विकार ॥ तुर
 सी सौ नृमूरचये ॥ रहै एक निरंकार ॥ २४ ॥ औरआलंबसब हरि
 करि ॥ चित्तके कैरै लागि ॥ तुरसी चित्तकेरै लगे ॥ अरमजाइ सब
 तागि ॥ २५ ॥ तुरसी चित्तको बंधनदीजीये ॥ चित्तहि घेरि घटमां हि
 चित्तघेरें इंद्रिअर्थी ॥ बिलीमांन होइ जां हि ॥ २६ ॥ ६॥ अथचित्त
 के धर्मविधान ॥ १ ॥ तुरसी चित्तधरमीके वैधमी संतकहें समजा
 ॥ एकै सदगतिपाई ॥ एकअगतिलेजाइ ॥ एकतदीनालेजुवै ॥ ए
 कअमलमलएक ॥ तुरसी अमलपडिमवहै ॥ अमलपूर्वगवनेक ॥ ए
 कअरधएकअरधतन ॥ एकचपलएकथीर ॥ तुरसी एचित्तके धर
 ॥ समजैकोऊसधारा ॥ तुरसी अरधमधइंद्रीनको ॥ मूरबह
 रहै सोइ ॥ अतसोमरुइहै ॥ संतनिकघा ॥ बूजै विरलाकोइ ॥
 ॥ तुरसी अरधपंथमहां सोबिकी ॥ मधि

तिले

महंजातोंइहै ताहिलेहूनीकै निरताइ॥५॥ १५॥ अथवितबीज
विशेषवर्णनविधाना॥१०॥ सुप्तअसुप्तआदिजुसकलप्रावित
कौविस्तारतुरसीकषूएकवरतीयौ॥ फुनिवरनौअधिकार
॥११॥ औपइ॥ सुप्तअसुप्तकरमादेश॥ देहीस्योउतपनहोहिसोइ
ताबीजकौबीजइहैजानि॥ तुरसीनिश्चैतनपरवांनि॥ ॥१२॥ साबी॥
याजगुउतपनकरनकौ॥ प्रगटबीजहैदोइ॥ तुरसीसुप्तअसुप्त
तनतैउपजेसोइ॥ १३॥ तातनहैकौबीजतोहि॥ बरनिसुनार्जमित॥ त
सीसवसाधनिकघौ॥ महाचपलएवित॥ १४॥ तावितकेसनिबी
जहै॥ वेदयुरांननिमांहि॥ तुरसीतेऊप्रगटहै॥ बिषेबियायेनां
हि॥ १५॥ प्राणवायुकीचपलता॥ फुनिवासनाजुसोइ॥ इनउत्तैनिके
उदिसते॥ चितकीउतपतिहोइ॥ १६॥ प्राणसपदवासनाकौ॥ जोन
उपावनहार॥ तुरसीनिश्चैसहीस्यो॥ हेद्विष्टिकौविकार॥ १७॥ देवेंउप
जेवासना॥ देवेचपलकेप्राण॥ तुरसीद्विष्टिदेवेंविनां॥ संवेदिसंबि
तविलेहीइंमान॥ १८॥ संवेदिउदौताव्रतहै॥ जाव्रतसंबितसोइ॥ त
रसीसंबितविलेहीइ॥ तौआगींकजीतकीइ॥ १९॥ औपइ॥ संवेदि
द्विष्टिसंबिततात्तान॥ जाव्रतउत्तैतकौसंधान॥ तुरसीताव्रतहैअ
ज्ञान॥ समरैकौऊसंतसुजांन॥ २०॥ साबी॥ जहांलोंसीवांजगतकी
तहौंज्ञानअरुध्यान॥ तुरसीयसआगींधसो॥ एऊहोहिबिसीसांन
॥ २१॥ यहचितवौरैलोंगरे॥ अरुवासनाविलांहि॥ तुरसीप्राणचप
लता॥ जोउरउपजेनांहि॥ २२॥ प्राणचपलताकेसिठे॥ केसिठेबसना
सोइ॥ रहंसांहिएकहंघटे॥ तौचितउदैनहोइ॥ २३॥ तुरसीचितके
बीजये॥ प्राणवासनामांहि॥ इनकीचंचलबृतिसिठे॥ तौचितउपजे
नांहि॥ २४॥ तुरसीइहैरोगवैषदिइहै॥ इहैजुउतमविचार॥ जेनिके
निवासनामल॥ ब्रह्मअगतिमेंजार॥ २५॥ औपइ॥ ब्रह्मअगनिवासना
जरवै॥ तवचितपिरसहजैहोइ॥ आवै॥ तुरसीज्योपवनोपकिजाइ॥

महतरगजलदेतदियाइ॥१६॥ ८३॥ अथचितजीतनेकोजुग
 गयाइविधीना॥११॥ तुरसीचितअटकनकोइहैमता॥ सरिसूतसंस
 कैसतसगकैसाधना॥ कैसदबसविजारा॥ १२॥ जोपरीप्रथमेगुरइत
 येसतसंग॥ त्रितीयेसारसास्त्रअगा॥ वपुरथचितअटकनकोसा
 तुरसीयंनमपयनाधांन॥ १३॥ एयांयौआलंबनसार॥ मैटनको
 तदृतिविकारा॥ तुरसीऔरकथाविस्तारा॥ कथिकथिकीऊबाधे
 नारा॥ १४॥ साषी॥ कथिकथिकलयना॥ मालजुगूथ्योकोइ॥ चित
 जीतनकोजुगतिमता॥ येहजुगिजुगिजीशा॥ १५॥ चौपई॥ तुरसीएह
 जुगजुगामाही॥ चितजीतनकोजुगतिजुग्याही॥ जोबइनहिद्विदि
 केजुगहइ॥ सोचितजीतिजगतलधिजाइ॥ १६॥ साषी॥ ॥ दोहातीने
 लीकमें॥ औरकहौकहोलौयाशा॥ तुरसीचितजीतनेको॥ इहैमतये
 रनकोइ॥ १७॥ तुरसीएयांयौआलंबतजा॥ जीत्योचाहेमनतिअम
 करिकरिप्राणियां॥ दृष्ययोवैयहउत॥ १८॥ तुरसीकरमनिग्रहजु
 सह॥ संत्सेदीयादियाय॥ चितजीतनकोसुगमता॥ कीइजोगीह
 जलैकराइ॥ १९॥ तुरसीसहमतसागिजे॥ जीत्योचाहेचित॥ सोप्राणी
 कनपरहरे॥ कूकसकूटेनित॥ २०॥ तुरसीकूकसकूटेनित॥ जुगति
 बिनवितउलटावै॥ सोकरदीपगत्यागि॥ धलजुवमनेनेअजा
 ॥ २१॥ जिहीजतेउतारपरो॥ डौंडनबैवैधाया॥ तुरसीवताजुघातहै
 बिनिसहजुगतिउगाइ॥ चितहाथिआवेनही॥ हकरिकरिप
 चिजाशा॥ तुरसीचितसोजीतिहै॥ जिनकेजीगबलकाइ॥ २२॥ ॥ १५॥
 ॥ २३३॥ ॥ अथचितसुधकरनकोपरिकरन॥ ८१॥ कोटिज
 तनकोऊकरौ॥ हांडौवनवनजाइ॥ तुरसीचितसुधनयेबिनमे
 छिपदनदरसाइ॥ १॥ तुरसीदरपनमेंसुधदेखियो॥ जोदरपनसुध
 होइ॥ (तेवैबिंबनासेनहं॥ कोटिकरैजोकोइ॥ २॥ तुरसीतनसुध
 मनसुधप्राणसुधा॥ चितसुधहोवैआइ॥ तबहरि सोइस

ज्योदरपनमें ॥३॥ ॥३॥ ज्योदरपनछाया नननार ॥ अ
 मलतये भासत है वीर ॥ योचितसुधनये आत्मरूप ॥ प्रगतये
 धिये अंतिहा अन्वप ॥ ॥३॥ शीरवा ॥ तुरसी चितसुधहो ॥ रागदो
 षमलत्यागिके ॥ तोदरसे सबही लो ॥ ताचितदरपनमें सदा ॥
 ॥५॥ ॥५॥ ॥ तुरसी इहे विचारिके ॥ चितकी मेलमिटा ॥ अतित
 हाउजलकरो ॥ ज्यो आत्मरूपदिषा ॥ ॥६॥ तुरसी परदाचितको ॥
 चितको परदाताहि ॥ आधिन आडीबादरी ॥ रविज्योका त्यो आदि
 तातै चितसुधकी जीये ॥ मेदि आवरणमांदि ॥ तुरसी सबदादिक
 निकी ॥ अर्थ इतोहा आंदि ॥ ॥७॥ तुरसी दशादिकनिकी ॥ जिनकी
 योनिजके नास ॥ तिनके चितदपनभरे ॥ धनि धनिवेदास ॥ ॥८॥
 चितसुधसाधूजननिके ॥ निकटनिरंजनराम ॥ तुरसी प्रगतहो
 इरहा ॥ रोमरोमसबवांम ॥ ॥९॥ ॥ ज्योपद ॥ चितसुधनये सुधहोइस
 रीर ॥ तावे न्हावमन्हावोतीर ॥ तुरसी सबसाधूयों नाये ॥ चितसुधही
 कोटीके सये ॥ ॥१०॥ ॥१०॥ चितसुधहवाजांनिये ॥ जबगहैनओ
 गुनआन ॥ तुरसी अपने हंखिसरे ॥ मलिनकरमको धांत ॥ ॥११॥
 चितसुधहवाजांनिये ॥ जबत्रैसाहोइबीर ॥ रजतमकलुषनला
 वई ॥ अपने सुधिससरीर ॥ ॥१२॥ चितसुधहवाजांनितव ॥ जबसत्र
 मित्रनहिकोइ ॥ दसों दिसादरपनमई ॥ तुरसी दरसें सोइ ॥ ॥१३॥ चित
 सुधहवाजांनितव ॥ जबविषेवासनांबिलाइ ॥ तुरसी उरवाहरि
 सकल ॥ एकरूपदरसाइ ॥ ॥१४॥ चितसुधहवाजांनितव ॥ जबत्रि
 गुणकाटनयाबीत ॥ तुरसी नृगुनको मिल्यो ॥ जैसें जलजलली
 न ॥ ॥१५॥ ॥ ज्योपद ॥ तुरसी सुधचितनयोजुजाके ॥ सिंघप्रपडसा
 योवताको ॥ वैरीकोऊवभासे आंन ॥ तातै अतै आनंदीप्रांत ॥ ॥१६॥
 कलहकालिमाचितके गये ॥ मनअरुमनसान्मलतये ॥ तुरसी
 तव आनंदीचित ॥ जहांदेखै तहां आनंदपति ॥ ॥१७॥ ॥१७॥ सुध ॥

२

चितकेसत्रको॥ मित्रहिकहिधोंकोता॥ समयदमोहीहोइरहा॥
मिलिकेंआटेलों॥ ११॥ तुरसीआटेलोंतलों होइरघायदमें
सोइजिनचितसुधकीयाआपता॥ रागदोषमलबोइ॥ १२॥ ए
॥ वीपइ॥ रागदोषमलउतरिगये॥ मनअरुमनसाअजलतये
तुरसीअमलआत्माप्रकासी॥ चितसुधतयेत्रैसीमत्तिनासी
॥ १३॥ साधो॥ तुरसीत्रैसीमत्तिनई॥ अमलआदरससमान॥ ता
माहीउदिततये॥ निजसक्यनृवांन॥ १४॥ ३६६० अयवासना
कोपरिकरन॥ १५॥ तुरसीजौलोंबिबिधिविषवासना॥ यिंडा
ब्रह्मंडरहीबाइ॥ तौलौएकआत्मनन॥ तिनितिनिकेदरसाइ॥
घटमठवृहदआकासए॥ परदस्थोंत्रियमांवा॥ तुरसीजवपर
रामिदौतघएकेनिरनाम॥ १६॥ तुरसीनिस्तामीपुरुषा॥ निर
धिरनिरसेद॥ बिबिधवासनावसितये॥ ताहंतयोबिनेद॥ अ
तुरसीतीनौलोकलौं॥ जीवजंतसबजेज॥ जुदीजातिनामजु
जुदौ॥ सुहेवासनाबंधेज॥ १७॥ तुरसीअपतीवासनामें॥ आइक
याआरंम॥ तौतैएकअनंततया॥ नहीऊतानिरनाम॥ १८॥ तुर
सीनिरनामीआत्मायह॥ आइअवरणमांहि॥ अपतेरूपहिचि
त्तै॥ वासनास्थेनासेनाहि॥ १९॥ वासनापटलजुफिरिगयो॥
निजचबूनपरिसोइ॥ तौतैरूपजुआपनौं॥ निजकरिउदेतहे
॥ २०॥ तुरसीजौंठुबवादरी॥ रथ्याचंदछियाइ॥ त्रैसीहुतवा
सनाए॥ मतकीऊपतियाइ॥ २१॥ तुरसीठुबवासनाठुबअग
नि॥ करिसानियेजुनाहि॥ तुरसीमिलेउपाधिके॥ कालमालहो
इजाहि॥ २२॥ मनजावैतौलौंजीवै॥ अरवासनाअनेक॥ तुरसीम
मसुतगनये॥ रदहैएककाएक॥ २३॥ वीपइ॥ कायाकसोअग्रतप
करोदेहीकरिजवतहीमरै॥ तुरसीजावतमरेनमन॥ तौलौंन
मिटववासनातना॥ २४॥ साधो॥

सतासिद्धात् तुरसागरे सिद्धे तही कसे कसे यह काय ॥ १२ ॥ जो न
पती जो तो देष ॥ महदरिषिन को जो ॥ कोठि बरषता लील
॥ १३ ॥ उठे उठे हत सो ॥ १४ ॥ जो व तडुगो धवासनां तन मै रही
प्रवेस जु करिया मन मै ॥ तावत को ठिजतन कर क को ॥ तुर
सा सिधिका रिजत ही हो ॥ १५ ॥ सहस्र पाव दस लों लों ॥ त
नमत मां हिय मा धित ऊचात किन ना सिद्धे ॥ विषम वासनां बा
धि ॥ १६ ॥ ताली में स्ती रहें ॥ जाइ न तन मत सागि ॥ तुरसी जब जी
यजाई ॥ तत पहलें हाउठे जागि ॥ १७ ॥ ज्यूसुषपति मधि स्वप्न
को जाग्रत हं को सो ॥ बीज नूतर हिवो करे ॥ औस रिउ दे उहो
॥ १८ ॥ यों सरीर में सरीर की रही वासनां सो ॥ तुरसी ते तब
जरहिं सल जब जोगी जान क व सो ॥ १९ ॥ सो न विनां ना से न ही
विषम वासनां ये ह ॥ तावे तप आदि जग र कै ॥ देह सिला बोष
ह ॥ २० ॥ तुरसी तन सुका यपं जर करे ॥ धरौ रें नि दिन धाम तउ
वासनां ना सिद्धे ॥ विनां विचारे ज्ञाना ॥ २१ ॥ ज्ञान जोग उभय निमि
लै ॥ तम वासनां बिलोहि ॥ तुरसी तिराले बजो गयों ॥ ताली में र
हिजा हि ॥ २२ ॥ इत सावत उत उज लयो नी ॥ सिले पटकी मलि
नत न सानी ॥ तुरसी उते में एक न हो ॥ दौ ज्यो हे त्यों न लन में सो
॥ २३ ॥ तुरसी यों ज्ञान अरु जोगा विन ॥ अंतर को मल सो
॥ तुरसर हो वेत ही ॥ जो काय हं क सो जु को ॥ २४ ॥ कोठि बर
षलों काया कसि करै तप स्या को ॥ तुरसी अंतरि हो ॥ अति
फतै ॥ २५ ॥ तप कौं दो स न ही जीये ॥ तप देव तम त आहि ॥ तु
रसी उर हो ॥ वासनां सोई सिधि ही ॥ ताहि ॥ २६ ॥ तावे हो ऊर
अस्वर बुधि ॥ तावे देव सुभाव ॥ जैसें ताइ जन तप करै ॥ तै सो
ही हो ॥ उगाव ॥ २७ ॥ रज गुन तम गुन कौं लिये ॥ करै तप स्या को ॥
॥ तुरसी अस्वर हो ॥ दो तरे ॥ सत गुन दोषी ही ॥ २८ ॥ तुरसी तावे

कासकों॥ फिरि श्रोत्रो सब वामा जाये ॥
वतकषूसकांसा ॥ २८ ॥ चोपड ॥ गिरही कामिक फलके
॥ राति दिवस मिलि करै इलाजा ॥ ताते मो विपद हिन ही पा
हो वासनांत हार होवै ॥ २९ ॥ साधी ॥ कामिक फलनि मो
॥ वी लो कञ्च मां हि ॥ तुरसी वेगधवरूप है हं मारूपी ताहि ॥
नगुकार निज गुपर हेरै जपतप करै अघाघ तुरसी दास जग
॥ वे ॥ अति सो नर किय राश ॥ ३० ॥ तुरसी अतंत वासना एक हां
वरनै कोइ ॥ चितनो मिमै रघो करै मूलनासको होइ ॥ ३१ ॥
रसी अनंत वासना ॥ ज्यूसू माही बीजा ॥ वै अस्त होयो करै ॥
॥ सरि श्रो सरि ही ज ॥ ३२ ॥ श्रो सरि श्रो सरि उदै होहि ॥ सहाइ कवल
॥ ३३ ॥ तुरसी सहाइ कविनां ॥ रही चितमां हि विपाइ ॥ ३४ ॥ नवलग
॥ कलपमतमही ॥ किंचित हंगु जंत ॥ तब लग जो समाधि सुषा ॥ ३५ ॥
रसी हरिदुरंता ॥ ३६ ॥ चोपड ॥ जब लग संकलप विकलप मतमें ॥ तब
लगडषकेले सब कतनमें ॥ जब संकलप विकलप मिटि जाइ ॥ तुरसी
॥ अथे सुष बिलसाइ ॥ ३७ ॥ साधी ॥ संकलप जा जा वोरको ॥ वरमे उदै ॥
जु होइ तुरसी तैसी ही वासना ॥ वटि बिसरे जु सोइ ॥ ३८ ॥ चोपड ॥
गहिवरतरलै फेलत जां हि ॥ ज्यो ज्यो मन को योष जु यां हि ॥ तुरसी ज्यो
॥ नलग जु सोइ ॥ घृत सो वेस ह्यगुनी होइ ॥ ३९ ॥ असी हे वासना
बलाइ ता आगे बुटि बौ कि हिं नाइ ॥ तुरसी ज्यो जत उलटी लेश ॥
स्यो स्यो अगमपयां नां देइ ॥ ४० ॥ अगनि धूम लौ देह दिसि धात्रे ज्यो
वपरे रकपवन मिलावै ॥ तुरसी पवनां घों को सोइ ॥ महा वपल वि
॥ तदेयो जोइ ॥ ४१ ॥ साधी ॥ इक सो वै इक जाग होइ ॥ इक जागि जागि पि
रि सोइ ॥ तुरसी असी वासना ॥ लखे जु जोगी कोइ ॥ ४२ ॥ चोपड ॥ तुर
सी जोगी ही नवै प्रमानै ॥ कुजोगी घों इतक जानै ॥ जिनके काटर हो
॥ उरबाइ ॥ कुबधिकामनां यथे वाइ ॥ ४३ ॥ साधी ॥ एक कै बी

तिगई एकहौनकी आसा ॥ ३ ॥ सन बरषाके बीजलौं ॥ औसरउदे प्र
 कासा ॥ ४ ॥ चौपई ॥ औसरि औसरि उदोकरंही ॥ जबहासहावकमि
 तहिंजुआंही ॥ तुरसीसहावकबिनसोइरहाचितमांहीबांनीहोइ
 ॥ ५ ॥ सायी ॥ तुरसीचितनोमिकामेंरहीबासनासमाइसोनुमूरन
 येविनां कहांकसेहोइकाइ ॥ ६ ॥ जोगीजंगमतपसी ॥ सागिरहेतनसे
 ग ॥ तुरसीसनरसनाबुटे ॥ इहैलसोबडरोग ॥ ७ ॥ मनकेरसबिषबास
 नां ॥ मांविअमांतिउपाधि ॥ तुरसीजोलोतसुषसमांधि ॥ ८ ॥ चौपई ॥
 जावतउरुतउतकी आसा ॥ बटिस्हीबिषेसुषनिकीष्यासा ॥ तावत
 ध्यानलायेहूनलोगे ॥ बिषेबासनांआडीआगे ॥ ९ ॥ सायी ॥ धूममे
 टेधूमनामिटे ॥ जबलगअगनिबरंता ॥ तुरसीअगनिसबसांतहोइ
 तोधूमनहीदरसंत ॥ १० ॥ जावतदहनमेंदारका ॥ हेकचूकसरतिको
 इ ॥ तुरसीतावतदहनमेंउगतधूसकीधोर ॥ ११ ॥ जावतकसरति
 कायामेंकांसकोधकीहोइ ॥ तावततरंगउगोकरे ॥ नांनानिधिकी
 सोइ ॥ १२ ॥ चौपई ॥ तुरसीनांनंतरंगजुमांही ॥ अगनिधूमलौंउवें
 सदही ॥ तावतरौकीहंनरहांही ॥ जावतअबिद्याअगनिजुमांही ॥
 ॥ १३ ॥ सायी ॥ तुरसीकहांलौंआधिये ॥ बासनांनिकोनेव ॥ जावतयेता
 वतनही ॥ मिलहिंनिरंजनदेव ॥ १४ ॥ मनसावाचाकरमनां ॥ यमेंमि
 थ्यानांहि ॥ आत्माआडौहोइरघो ॥ बासनाजुवादरबांहि ॥ १५ ॥ क
 हानामअसेकहा ॥ बासनानिकोनाइ ॥ तुरसीसस्यजातिये ॥ तौके
 ऊकरेउपाइ ॥ १६ ॥ लोकबासनांआदिहै ॥ मानसीबासनांअंत ॥ तु
 रसीचतुरषबासनांए ॥ कोऊजोगीहीनलैलहंत ॥ १७ ॥ चौपई ॥
 तुरसीजोगीहीनलजाते ॥ जातिजगतिताअरंनवानें ॥ चिनितिनिर्के
 जतनकराइ ॥ लोकादिबासनांधरैउवाइ ॥ १८ ॥ अचलोकजस
 नोविधांजा ॥ १९ ॥ तुरसीलोकबासनांसहजहो ॥ त्रैसीसीबुधिहोइ ॥ य
 हजुगनिंशनांकरे ॥ त्रैसीवांनैसोइ ॥ २० ॥ तुरसीलोकबासनासह ॥

ज्योत्सुककरमकराद् सौत्रकेलेमानदीको श्रेष्ठानतयेर २१६ ॥
 तुरसीश्रमसठनिको कोममभावना जिनकेउरयद्वयता ।
 लोकाध्यकोशान २ लोकारिभावतकारने सीधेश्र श्रुताव
 लोकारिभावतकारने कंठवदतवभाव गगरालाद २३
 नि लोकहितवैचाये तुरसीतकहरिविमुषको होइतउदतर
 व ३ लोकारिभावतकारने गदसीसपरिवास लोकान्तावन
 कारने जागे श्रौतोजाम अलगअद्वारअनपनुया अलपठ-२३
 उवराम इतेउपायेकरे लोकको पत्रधनसुधिरास ५
 तुरसीलोकवासताकाज काकानिलजनकरेइलाज जाते २४
 मोहोकोमाने औरनिकाऊउरमेआने ६ अलगअनअन
 हीजुपानी अरुमुषबोलेमधुरीवानी विधिविधिकाऊकसाठः
 करे करेकरिसानिधुहमेपर ७ सनाकहावनकारने कल
 करिसाधेजोग तुरसीश्रमजोगो वोटेअतितगोर ८ यहाया
 केनेकीनही स्वनाकेसचार तुरसीकाठतसाकेओ अमका
 देलौकाअधिकार ९ तुरसीलोकवासतायह १० जगवनदष
 बीज जनममरनफिरिफिरित मन मदरहि-दरीज १० तुरसी
 लोकवासतायह सबसाधुजउ ताहि तात्यागेहीसुखहे आन
 पायज, ताहि १०६८
 दिवौधिमन परमारथनक ११ कहामारअमारकहा विवर
 नकोऊनाहि १२ यददेयादेय १३ यह नानाप्रयनिमाके याप्रवा
 हमेपररहे पैप्रनुहिपादतात्यानाहि १४ तद्विद्यापाठपठिजुवक
 वृथहाश्रमकराहि तुरमाननषेविना परलाबाहुबहाहि १५
 नवतमनवत्मासाख परसाधीश्रोक रातिदिदसगण्योकरे न
 हीआत्मआलोक १६ तुरसीप्राप्तआलोकविन पडेजुबेदपु
 रान परमारथयसैतही कलाकणक, जानषआर तुरस

तिगरी एक हौनकी आसा उसन बरषाके बीज लौं ॥ औसर उदै प्र
 कासा ॥ ४३ ॥ चौपदी ॥ औसरि औसरि उदोकरांही ॥ जबहसहाकमि
 लहिंजुआंही ॥ तुरसीसहावकबिनसोइरहीचितमांहीबंनीहोइ
 ॥ ४४ ॥ साधी ॥ तुरसीचितनोमिकामेंरहीबासनासमाइसोचमूरत
 येविना कहांकसेहोइकाइ ॥ ४५ ॥ जोगीजंगमतपसी ॥ सागिरहेतनमो
 ग ॥ तुरसीमनरसनाबुढे ॥ इहैलसौबडरोग ॥ ४६ ॥ मनकेरसबिषबास
 नां ॥ मांदिअमांनिउपाधि ॥ तुरसीजोलेतसप्रसमाधि ॥ ४७ ॥ चौपदी ॥
 जावतउरुतउतकी आसा ॥ बटिस्हीविषेसुपनिकीष्यासा ॥ तावत
 ध्यानलायेरूनलागे ॥ विषेबासनांआडीअगो ॥ ४८ ॥ साधी ॥ धूममे
 टेधूमनामिदे ॥ जबलगअगनिबरंता ॥ तुरसीअगनिसबसांतहोइ
 तोधूमनहीदरसंता ॥ ४९ ॥ जावतदहनमेंदारकी ॥ हैकचूकसरति
 इ ॥ तुरसीतावतदहनमेंउठतधूसैकी धोर ॥ ५० ॥ जावतकसरति
 कासामेंकांमकोधकीहोइ ॥ तावततरंगउगोकरे ॥ नांनविधिकी
 सोइ ॥ ५१ ॥ चौपदी ॥ तुरसीनांनंतरंगजुमांही ॥ अगनिधूमलौउवे
 सदही ॥ तावतरोकीहंनरहांही ॥ जावतअविद्याअगनिजुमांही ॥
 ५२ ॥ साधी ॥ तुरसीकहांलौंआषियो ॥ बासनांनिकोनेवा ॥ जावतयेता
 वतनही ॥ मिलहिंनिरंजनदेव ॥ ५३ ॥ मनसावाचकरमनां ॥ यामेंमि
 थ्यानांही ॥ आत्माआडोहोइरघो ॥ बासनाजुवादरबांहिं ॥ ५४ ॥ क
 हानामअसैकहा ॥ बासनानिकोमाइ ॥ तुरसीसरूपजातिये ॥ तौकी
 ऊकरेउपाइ ॥ ५५ ॥ लोकबासनांआदिहै ॥ मानसीबासनांअत ॥ तुर
 सीचतुरषबासनां ॥ कोऊजोगीहीनसैलहंत ॥ ५६ ॥ चौपदी ॥
 तुरसीजोगीहीनतजाने ॥ जातिजगतिताअरंनवाने ॥ तिनितिनिके
 जतनकरांइ ॥ लोकादिबासनांधरैउवाइ ॥ ५७ ॥ अयलोकजव
 नोविधांजा ॥ ५८ ॥ तुरसीलोकबासनांअहजहांअसीसीबुधिहोइ ॥ अ
 रुजगनिदानाकरे ॥ असीगानैसोइ ॥ ५९ ॥ तुरसीलोकबासनाअह ॥

रमकरादौ सौत्रकेलेमानहोको श्रीमानतयना
असंभविको कोसमजवेनात जिनकेउरयहवामता ।
व्यकोशान २ लोकरिजावनकारने सोधैअर्थरुताव
रिजावनकारने करैवकठतवनाव रागरालाइमधुरधु
लोकहिलावैचांवे तुरसीतऊहरिविमुखको होइजउदतर
लोकरिजावनकारने महेसीसपरिवास लोकरिजावन
रहे जागेओजाम अलपअहारअलपतुया अलपवचन
वरास इतेउपयेकरैलोकको पेशधनसुसिरेराम ५
पुरसीलोकवासताकाज काकानिलजनकरैइलाज जातेजगु
मोहोकोमाने ओरनिकारुउरमेंआने ६ अलपअनअलप
हीजुपानी असुषुबोलेसुधुरीवानी विधिबिधिकीजुकसीटी
करै करैकरिसानिषूहमेंपर ७ नलकहावनकारने कस
केनेकीनही सुईनाकेसचार तुरसीअसंजागमें बोटेअतितरोग ८ यह्यौ।
देतौकाअधिकार ९ तुरसीलोकबासनायह उपजावनडष
बीज जनममरनफिरिफिरिकरन मदर्हरहितदरीज १० तुरसी
लोकबासनायह सबसाधूनकहाहि तात्पोगेहीसुषुहैं और
यायजुनाहि ११ ६८
ठिबौबिमनपरमारथनल्लादि कहामारअमारकहो विवर
नकोऊनाहि १२ यहदेव्यांदेशहयह नानाग्रथनिताहि याप्र
हमेंपाररहै पैप्रचुहिपदिचानानाहि तेबियापठिपठिजुव
वृथहाअमकराहि तुरसीतततषेविना षरलोंबाऊबहादि
नवतपनवतमसास पदसाधीश्लोक रातिदिवसगूथोकरै
हीआत्मआलोक १३ तुरसीआत्मआलोकबिन पढैजुदे
यत परमारथयावैनही कहाकएकहातुषआन ५

ये विद्यासकला अविद्याहो जाइ जावतपटिगुनिबसको प
 रमभेदनहीपाइ ॥ ६ ॥ तुरसीबसअगाधवे ॥ तततेलष्याज्जाहि ॥
 तेवथपटिपटिपाणीपा ॥ अमकरिकरिमरिजाहि ॥ ७ ॥ ७५ ॥ ॥
 अथदेहवासनाविधाना ॥ चौपद्री ॥ तुरसीजहांजहांबासनायेह
 आयाकौंकरिमानेदेह ॥ असीवियर्जेबुधिहैजहां ॥ देहवासना ॥
 कहियेतहां ॥ १ ॥ ता ॥ तुरसीदेहवासनायह ॥ जहांउलठीबुधिहै
 इ ॥ बसऔरमानैअवर ॥ नहीनिस्सनकोइ ॥ २ ॥ सष्टादिवि
 षयाजुये ॥ अतितसौजनजाति ॥ रातिदिवसउदिमकरै ॥ देहके
 सुषमानि ॥ जपकरैतपकरैबतकरै ॥ तीरषुहूरटनाति ॥ तुरसी
 कोटिजतनकरै ॥ देहसुषनिउरआनि ॥ ३ ॥ सोईचौरचांडालसो
 ई ॥ सोईअपघातीजाति ॥ सोईकृतघनपापीपतित ॥ करिवैवास
 कृतहांति ॥ आयाऔरमानैअवर ॥ अज्ञानताउरआनि ॥ तुरसी
 आश्वरहसोई ॥ जोअसाहेन्यानि ॥ ४ ॥ ७६ ॥ अथअंतरिजातनाति
 धाना ॥ ४ ॥ चौपद्री ॥ तुरसीकामक्रोधअरुलोभ ॥ मनहीमनउपजा
 वनबोभ ॥ मोहमदमबरादिकआही ॥ उवोकरैउरमीमाही ॥ ५ ॥
 साधी ॥ यिकरमीउरजावला ॥ तावतनाहीचैन ॥ तुरसीसबसाधूक
 हैं ॥ यहतौवातजुअैन ॥ बाहरिभीतरिबासना ॥ जितीएकबस्नी
 एह ॥ तुरसीमलिनबासनायह ॥ अबसिधरावतदेह ॥ ३ ॥ जोपदीजा
 ग्रतजोकोकरमकरावै ॥ सोइसोइरिदबासनारहोवै ॥ सोसुपतामे
 सिधिहोइआइ ॥ जिसीमनसातिसीधरिकाइ ॥ ४ ॥ साधी ॥ तुरसीजा
 वतसुषमै ॥ अमतबासनादेह ॥ नावैनागनृघनरहो ॥ तावतनही
 विदेह ॥ ५ ॥ डुलसमिडिबोस्वपनको ॥ नवोततकोनास ॥ तुरसीके
 तेपचतहै ॥ देदेतनकोनास ॥ ६ ॥ केतेकायाकौंकरै ॥ करैगुफामै
 बास ॥ केतेअल्पअहारलेहि ॥ सोषैतनकोमांस ॥ केतेनागिनदि
 गोवरी ॥ बनवनफिरैउहास ॥ तुरसीतऊगुररूपाबिन ॥ बूटैतसुषनि

॥ १ ॥ कदाचिजन्तुः ॥ अतश्च लक्षिकेरेथी ॥ १ ॥
 अत्र परमा त्रसीतिगसरीर ॥ नृ नकेमरीरको ॥ १ ॥ की
 वेनास तावत्तजतममरनक ॥ नुरा प्रिटेनवास ॥ नरसीतर
 मवसितयते मानियतयहदे ॥ २ ॥ परयामाहिदे ॥ ५ ॥ जो
 हेग्रह १० मोदेहीमृतागये ॥ ११ ॥ अत्रवदसोकोइ तरा ॥ १२ ॥
 रिजीजीये जोलोहेवहसोइ ॥ १३ ॥ लोकवासनाआदिय चन्त्य
 वरणीसोइ तरसीताडेकरन ॥ १४ ॥ मधवासनामजोइ ॥ १५ ॥
 ५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

निदीयौवता ॥ १२ ॥ चित्तवासनां उवननही देई कदाविउठै तो उल
ठीलेइ इहि आरंभिलागारहेनिता तबसिहचेहोइ नवततजिता ॥
३ ॥ निसवासुरलागारहेकरै जहांजहांजाइतहोतेंफेरै परमत
तमनराषेलीन तबसलखपुत्राधिहोइबीन ॥ १४ ॥ प्रथमहित
असथानचुकावै अतहितहोइआपमेंआवे ॥ हंवारहेआत्ममेंही
ना तुरसीखपुत्राधिहोइबीन ॥ १५ ॥ १५ ॥ वासनाविनासेजुतबनि
श्चेत्तजकरिसोइ तुरसीनिजवासनानिको मूलनिकंदनहोइ ॥ १६
मूलहेतअसेअफलापुनिआलंवनआन तुरसीकारिजवासना ॥ १७
एकारनपरवांन ॥ १७ ॥ जबइनहेतादिकनिस्यो अलटिअहितहोइजाइ
तुरसीचूंजेबीजलो तबवासनादिषाइ ॥ १८ ॥ तुरसीचूंजेबीजलोही
हिंवासनासोइ पापपुनिकोउदिसतब अदेनकबहंहोइ ॥ १९ ॥ दोस
१९ ॥ जैसेबादरबिनआकास अरुनिरधूमअगनिप्रकास असेसुध
आत्मारहिजाइ तुरसीजोवासनाविलाइ ॥ २० ॥ २० ॥ वासनांज
केमेटें निवावनीखनमान तुरसीचित्थिरहोइरहे गहेतसुध
तिआन ॥ २१ ॥ २१ ॥ लोयदोथकेपवनतरलोतनधीरा बुद्धितनहीवैमन
सानार तुरसीनिहतरेगहोइजाइ तमिथिरतुरपददरसाइ ॥ २२ ॥
आत्मततउदेहोइआवे पापपटलपटलोफटिजावै तुरसीपरदर
हेनकोइ जोगुरगमिअैसीगतिहोइ ॥ २३ ॥ जागृतिअपुत्रसुषोधि
तीन ताआगेतुरपदहोइलीन तुरसीसोजोगीततसार औरवास
नावैसंसार ॥ २४ ॥ तुरसीएविषैवासनामोग सबसंतनिबरनेकरिये
ग जिनिअसुषसरूपकरिजाते इतेइहोकेइहोअहोइहोते ॥ २५ ॥ इहेता
नइहेजोगसवाया इहेसुकतिमघसंतनिगाया जेविषयास्योबुकव
नयेतेनिहचैवाजीलंघिगये ॥ २६ ॥ तुरसीइहेवेदकौसार इतेहिमां
हियर्षनानविचार अरंधुसिधांतहंमतरह विषयातजिहोइरहो
बिदेह ॥ २७ ॥ अवतसबदसपरसुकजोन नैतरूपनासांघतोन

रसतारसत्रादिजुएनोग ॥ एतौगोवितकोकटजोग ॥ २८ ॥ साधी ॥
 जीगसिधिजातो जतव ॥ मुनिजुत्पातिवैराग ॥ तुरसीअविद्याअ
 दियहोहोइबासनात्याग ॥ २९ ॥ सुधअसुधवासना ॥ बरणीउत्ते
 प्रकारातुरसीएकअवधकरण ॥ एकवधमेंविकारा ॥ ३० ॥ असु
 धतैबंधभावकौ ॥ प्राप्तिहोइयहजीवा ॥ तुरसीसुधतैमुक्तिहोश
 परसेअपनीयाव ॥ ३१ ॥ दोपई ॥ सुधवासनाजुराषेजावता ॥ ताव
 तजीवसीवहोइआवता ॥ जीवसीवतवएकेहोशतवतास्योनपरो
 जनकोइ ॥ ३२ ॥ साधी ॥ सुधवासनासुधकरौ ॥ शरीरकौजूसोशत
 स्पीपदपङ्कचायकै ॥ तवजाइअस्तजुहोश ॥ ३३ ॥ तुरसीसुधअस
 नांयहा ॥ निरधूसअगनिवतसोशअसुधदारतिदाधकरि ॥ आप
 हकृतकृतहोश ॥ ३४ ॥ सोपदपङ्कतिकेपरो ॥ तापदमैपङ्कचाशतुर
 सीआपहअसहोश ॥ ज्योदीपगवस्तदियाश ॥ ३५ ॥ तुरसीदीपगवस्त
 दियाइदे ॥ सुधवासनांरंमा ॥ उनेनिमत्ततपननये ॥ औरनकौऊ
 कोमा ॥ ३६ ॥ तुरसीसुधवासनांयहा ॥ ताकेयेसहनांनजहोयहतहोम
 सेमही ॥ मलिनकर्मकौमाना ॥ ३७ ॥ १२८ ॥ ३७८८ ॥ अथनृवासना
 कोपरिकरता ॥ ३८ ॥ स्काकाठनहसाहोश ॥ तावैसीचौसोबारा ॥
 नृवासीकअतीतके ॥ तुरसीएबोहारा ॥ ३९ ॥ कनस्ककतरुपरो ॥ जो
 घनवरयाहोश ॥ नासोउलेतपलेवै ॥ कोपललेजनकोशयोंनृवास
 संतये ॥ आवतरिधिसिधिसोश ॥ तुरसीसोसुधमांनिकौहस्यानकव
 हेहोश ॥ ४० ॥ रिधिसिधिविघनवरियांनये ॥ उवेनहीहरियाश ॥ नृवासी
 जअतीतवै ॥ तुरसीअबितहीकाश ॥ कनस्कनईआत्मा ॥ प्राईवास
 नाबिलाश ॥ तुरसीताकौस्वाहजला ॥ सकेनहीहरियाश ॥ ४१ ॥ हरीयोही
 हरियाइमलै ॥ जोजलवरषेपूरा ॥ तुरसीस्काकाठमै ॥ उवतनहाअवृ
 टा ॥ ४२ ॥ नमतरतसोजानिये ॥ तनमनकेरससोश ॥ तुरसीबिसरिबि

कोइ तुरसीउन मनरतको ॥ ७ ॥ जैसे जाते सोइ ॥ ७ ॥ जो कब भूए मृतक
 की इंद्रा उलहे सोइ ॥ ८ ॥ तो नुबासी संतके जगतचे हाहो ॥ ८ ॥ जाकी ज
 रिगई को मन ॥ ताको का करे नारि ॥ तुरसी बुझी अगनिको ॥ सके न
 दार प्रजारि ॥ ९ ॥ मनके कुसमल जरि गये ॥ पान अगनिकें मोहि ॥
 तुरसी नुं जे बीजलो ॥ बडस्यो उगे नाहि ॥ १० ॥ दिषे अनदिषे जुकी ॥ मा
 यास्यतिकी सोइ ॥ उरवासनां नउपजई ॥ तब मन मूवा जोइ ॥ ११ ॥
 मन मूवाममता गई ॥ भयो मनीको नास ॥ मच्चरता उपजे नही ॥ गलित
 वासना दसा ॥ १२ ॥ तुरसी यावा लोकाकी ॥ असा रहिनकोइ ॥ निबाव
 निरलो मन जया ॥ विषम वासनायोइ ॥ १३ ॥ ज्यो पई ॥ तुरसी सुधवा
 असुधवासना सिधारी ॥ ज्यो वाजी विषरे नरतारी ॥ रुचिसंग नई गई
 गलि प्राति ॥ उदै नई उर और ही रीति ॥ १४ ॥ असुधवासनां मन कुं अंध
 री ॥ सुधजे सी रजनी उजियारी ॥ तुरसी उते नई बिली मान ॥ तब उदयो
 उर आत्मतांन ॥ १५ ॥ साधी ॥ आत्मतान उदित जयो ॥ हस्त अविद्या
 रेन ॥ तुरसी अब आनंद जयो ॥ दहदिस वरतै चैन ॥ १६ ॥ ॥ १२० ॥
 ॥ अथ ब्रह्मसाधी नूतको परि करण ॥ ८ ॥ तुरसी साची नूत सकल
 का ॥ तटस्थ आत्मरंम ॥ सब करि न्यार होइ रघा ॥ निरधिर निहंको म
 ॥ सकल सिद्धि जास्यो नई ॥ पुनि तालि पतन होइ ॥ तुरसी साची लोर
 है सोई मेर सोइ ॥ १ ॥ तुरसी साची नूत सदार है ॥ सुषडुषमेत ही जाइ
 पाते योषे सकलको ॥ अर्पते ससहज सुजाइ ॥ २ ॥ ज्यो पई ॥ रजगुन करि
 संसार उपावै ॥ सतगुन करि षोषे पल्हरोवै ॥ तुरसी तमगुन करे संघा
 र ॥ आपन रहे तिहं स्यो न्यार ॥ ३ ॥ साधी ॥ गुनस्यो गुन पवरति सब बली
 जाइ सब सोइ ॥ तुरसी आप अकल असला ॥ बधक कब हंन हीइ ॥ ४ ॥
 ज्यो पई ॥ बधक कब हंन हीइ जु नो ही ॥ आदि अति अरुमधिस हो ही ॥ तुर
 सी ज्यो त्रैसा आत्मरंम ॥ जनकी जीवनि ताको नाम ॥ ५ ॥ साधी ॥ तुरसी
 जीवनि जनकी ॥ जगत्रको आधार ॥ घट घट मां ही रभिर घा ॥ जैसे को

गहरा ॥ ७ ॥ चोपड़ी ॥ तुरसी की तिगहार जुमांही ॥ काहूँ के डबसुषम
ही ॥ ज्यो अलिपत आकास जु चंदा कहिबे मात्र घट प्रतिबिंब ॥ ८ ॥
षी ॥ तुरसी घट प्रतिबिंब लो ॥ अलिपत आकास मा ॥ डबसुषम अंच
गे नही ॥ अषंड अगे जं मा ॥ ९ ॥ जूंजलस्यो घट पूरि को अंगति व
सो ॥ पात्र जलै जल दग धही ॥ प्रतिबिंब अंचन को ॥ १० ॥ चो
ई ॥ अंचंदा पांती के मांही ॥ अलिपत रहे लिये सो ना ही ॥ जल चरस
॥ मने सो ॥ दहनां ही काहूँ मे हो ॥ ११ ॥ ज्यो रबिसब को तिगरहर
॥ अयनों अषंड उदो करे वै ॥ अहिं उदो तज गुचेष्ट तसो ॥ आपन
बंधन काहूँ हो ॥ १२ ॥ साया ॥ दीपग के परकास में ॥ कारिज करि ल्यो
को अत्र तुरसी दीपग ना लिये ॥ आपन निमें सो ॥ १३ ॥ चोपड़ी ॥ असे
लिपत आकास मा ॥ काहूँ के गुनस्यो नहिको मा ॥ तुरसी दोष हंग हे
नकी ॥ साही नूत सदार है सो ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ अथ प्रकृति पु
रुस को परिकरन ॥ १६ ॥ तुरसी अनबित बहूँ के इबा कही नजा
इबा तो आगे पिये ॥ जो देह रूप दरसा ॥ १७ ॥ ना तसे देहन दारत स
ना तस आवन जाना ॥ ना तसना दन चूष विषा ॥ ना तस गी वगुमां ना
ना तस जन्म जुरान तस ॥ न सो इबिली मां ना ॥ तुरसी असा अनबित
पदा ॥ ताहि सो नित न इबा आन ॥ अत्र तुरसी जहां इबा गै पतित हो ॥
उत पतित हो बिनां सा ॥ जहां बिनां सत हो सो कहै ॥ सो कत हं सुषन
सा ॥ अत्र तुरसी जे कोऊ कहै तस कौ कष्ट ॥ अनबित निरंकार ॥ तो
कै से उत पतित या ॥ अखिल लोक संसारा ॥ १८ ॥ अत्र वर के इबा नही
बीज परे नै मोरा ॥ तुरसी गगन उदो करे ॥ हो दतर वर एक ओरा ॥ पात्र
सो सहै बीज धरनि गियो ॥ सहै जे ही गयीं अंकुरा सहै जे ही बीसत
रनयो ॥ यो सुनि तै स्थूला ॥ अजुंजु इब बस हे ल्यो ॥ बाया ज्यो माया
जोनि ॥ वृक बायां सि रजान ही ॥ यो बह माया मां नि ॥ अत्र तुरसी जद
पिसुत हिय ॥ अनादि माया सो ॥ अत दयितो लो ही ॥ ज्यो लो ज
न नही ॥ १९ ॥

ज्ञानमयै ज्ञानसै नही अनादिमायायेह तुरसी और विकै उदै ॥ १ ॥
 होत रजनी लेह ॥ २ ॥ तुरसी माया ता वलग जो लो ज्ञान भाइ ब्रह्म
 ज्ञानके मयै ते देखत जाइ बिलाइ ॥ ३ ॥ आदिमधि अरु चंता ॥ ४ ॥
 अनादिमाया ब्रह्मकी ॥ अपने सहज सुभाइ उपजावै संसारको
 पुरुषसंपर्क पाइ ॥ मूलो हो चुंबकसंगि ॥ नां नो नृत्तिकराइ त
 रसी सुतह कहुनासरे ॥ जदपिसक तिवंतकाइ ॥ १ ॥ अनादिमा
 या ब्रह्मकी ॥ अनादि अवगतिपीव ॥ ता विधिसहजिसुताइ यह ॥
 उतपननया ज्जीव ॥ २ ॥ तुरसी जदपि जीव उपजातही ॥ तदिपि
 पयाजांनि ॥ परोचिते अपरोचितया ॥ मायासंपर्कमांति ज्यो आ
 रसी अरक विधि प्रगटी ॥ अगति सुभाइ ॥ तुरसीयो जीव ब्रह्मस्यो
 सहज उपनी आइ ॥ ३ ॥ को आसी अरकको ॥ को जु अगति उतमां
 न ॥ तुरसी यह गतिसमिके ॥ सिति सितिकर डंबयां ॥ ४ ॥ प्र
 कृति इंद्रा आरसी ॥ अवगति अरक अषंड ॥ अगति सरसी जीव है
 तुरसी महा प्रचेड ॥ ५ ॥ तुरसी रविकी की रविके ॥ यदि तसके को
 इ संजीगे उतपन नई ॥ ताते विग्रह होइ ॥ ६ ॥ गुज अंगीकृत कर
 तही ॥ हवा और का और ॥ तुरसी उलटी गति नई ॥ हविंगया वह
 दोरे ॥ ७ ॥ दोषदा ॥ तुरसी जीव वीसरि अपनी गतिसाव ॥ अहंका
 रस्यो असेंकीव ॥ तातै पखा प्रवाह मगर ॥ उपजे वितसे वारंवार ॥
 १० ॥ लक्ष्मी ॥ तुरसी नां नां बंधत मै पखा ॥ नां नां डुव मै सोइ सुम
 असुत्त चुरात तलग्या ॥ अहंकार बसि होइ ॥ ११ ॥ करि अपने स अ
 वस्तस्यो ॥ गया वस्तको मूलि ॥ तुरसी तातै सहत जीव ॥ जनम मरन
 डुवसल ॥ १२ ॥ आया कौं विर करि गिने ॥ विर आया समान देषे
 अविद्या जीवकी ॥ बंधां विपरजे नई ॥ १३ ॥ दृष्टा दस्यसे जो गते ॥ असें
 मया जु सोइ ॥ तुरसी नलनी गहतही ॥ जैसे स्ववा होइ ॥ १४ ॥
 सुतुरसी नलनी माया सुकय हजीव ॥ सततरमाइ और ही कीव ॥

तातेबंधजानिबिलतावे। मुकंतिआहिपेमरसतयावे॥२५॥साधी॥
तुरसीअैसीकाहसोंतहीज्ञानेसीयाअणिकीता। अबंधहोइबंध
नयस्यामरकटलौमतिहीना॥२६॥ तुरसीतनकस्वादरसलागि
कैं। सफरीलौसवसौशाडयसमुद्रमांहीपस्या। सुषसमुद्रकौषौ
॥२७॥ अषपतिषपतिपरवाहमें। पस्यापतउवाहीशाडयसुषकेन।
कजोरमें। तीरनलौगैसौ॥२८॥ विविधिवाजीकौतिरथि। अबंध
धनयाबंधसौशा। विसरिगयागतिआपनी। तुरसीपरबसिहोइ
॥२९॥ परापरस्यौविसरकैं। पस्यानोमिगुजमांहा। तुरसीचुगु
ननाथकी। निसयहेसौधीनांहा। अणजूनलनीस्वैगही। स्स्वा
नलनीसौशा। तुरसीप्रकृतिजीवयो। रहेजुअैसैंहीशा॥३०॥ जूदहन
दारमेंडरिहदी। अरिजुदारनमान्वा। तुरसीयो। जडदेहसंगि। होइ
रथाजडवांता। अचेतनपरिजडगुननिमें। विसरिगयाअपगोव
तुरसीज्यौमिलिधातनिमें। डसोसुकंचननांमा। ॥३१॥ ज्यौपैमेंपा
नीमिले। पानामेपैसौशा। तुरसीप्रकृतिजीवयो। रहेपरसपरही
शा। अथाजडप्रकृतिमेंजीवसहा। क रिसपरसप्रवेस। तुरसीआ
पनहनया। जैसैंमणिबिनसेसा। ॥३२॥ हींओरियहओरही। सम
तनांहीजीवा। मीठीकौअपनाइकैं। मूढविसारतयावा। अथाचौ।
पुं॥ जडसंगतिचेतनजडनया। अथपनेखन। अहिबीसरिगया। तुर
रसीजडहंचेतनिहो। जबचेतनिकौपरसेसौशा। ॥३३॥ सासी॥ चेत
निकेसंगिअथजैजडहंचेतनताआशा। तुरसीज्यौलोहाअगनिसं
गा। अगनिसतही। अजाअरथा। चौबीसोंचेतननये। जबचेतनिकी
योवासा। तुरसीज्यौरबिकेउदै। सबकौनयोप्रकासा। ॥३४॥ चेतनि
बिनजडमृत्युका। जडबिनचेतनपंग। तुरसीउतैइकत्रनये। त
बवाद्यौरसरगा। ॥३५॥ जडसंगतिचेतनिजड। चेतनिजडप्रकासवान

वतवधहे निश्चैनिजकरिसौद्र जावतरागजुदेषकीरेषअनि
 अतरिहीद्र ॥५॥ तरसीरेषनरहीको जाउरमाहीअनरागदे
 षगनगलिगए सोकहिएअवधनृवांन ॥६॥ तरसीबधअ
 बधका निमिनिमिसेदविचार विधिविधिकेहंमवरनिया
 कोऊजानैजाननहार ॥७॥ वौयई ॥ तरसीजांतहीजुनलजा
 नै ॥ यावधअवधकेजुन्याने औरअज्ञानकहापदिवांनै ॥ त
 कइधताएकहितानै ॥८॥ ३॥२७॥ ॥अपइविधाकेपरि
 करता ॥८८॥ जोयाइविधासिंधसे मायाजजोंकरंम तर
 सीतेअधिविचिरहे ॥ सस्योनएकौकाम ॥९॥ कबहंसूतपि
 तरकवै पूजेप्रातिलगाइ कबहकहै अनिनहोइतजौ
 नरंजनराइ ॥१०॥ कबहरंमनजनको उरअपजेउतसाह क
 बहकहैमायाजजों तनधरियोयहलाह ॥११॥ कबहंकहैन
 पुजजों कबहंस्रगुनतनजाइ यावौलाजोलीमेंबीतिगई
 सबआइ ॥१२॥ यावौलाजोलीमेंही षोईकंचनदेह तरसीरंम
 तज्यानही तोरिइविधस्येनेह ॥१३॥ याइविधाकेपंथमें बह
 तकअटकेआइ तरसीइतउतजायते ॥ कालपकृताआइ
 ॥१४॥ एकपंथमहामौबिको एकमायातनजाइ तरसीपंथकपूबेवि
 मां यथावौटाषाइ ॥१५॥ तरसीमुकरमंदिरमही ॥ मृगापतिकीयोप्र
 विस ॥ अपनांईदेषके करिकरिमूवौकलेस ॥१६॥ आपातैसास्ये
 रें नलेबुरेगुनदोइ तरसीजोगजसुवनमें वोलतमांईसोइ
 ॥१७॥ जोअपनेउरअपजे काऊं स्येवैरसाव ॥ तरसीसोवतसपने
 तेसोहीहीइ दरसाद बिलो चोरकौ साहसमितसा
 मान तरसीकार ना ॥१८॥ एकनिसत्रउ
 करिगिने ॥ एकनि को ॥ यहसबका
 र ॥ ३॥ ज ॥ नेसुष ॥

जहां न सारथ चहिक है। वाका का लामुषा ॥ १६ ॥ घाते यह से कल्प
सब ॥ तुरसी अयनी ही आहि ॥ काको सुष करि मानेयो ॥ १७ ॥ मं
निये जु काहि ॥ १८ ॥ चौपद ॥ दित की ड विधा करे न हरि ॥ ध्यान
धरे नंदो ऊस्वर पू रि ॥ तुरसी उरत ही होइ गजियारो ॥ बिना विध
से ड विध अघारो ॥ १९ ॥ जब लग ड विधा तन मन मां ही ॥ तब लग
जोग सिधि होइ नं ही ॥ तुरसी जोग सिधि होइ आशा ॥ विधा मि
टे मत म रिजा ॥ २० ॥ जावत अविद्या नारन न सो ॥ तावत उमै अका
स प्रकासो ॥ एक जीव एक सी ज्ञाना मा ॥ ताहि गिनत बी ते व ऊ ज
मा ॥ २१ ॥ ड विधा दरपन ड विधा तीरा ॥ करे एक स्यो दोइ सरी रा जन
तुरसी ड विधा तब न सो ॥ उरे परे एको आत्मा सो ॥ २२ ॥ ड विधा कि ह
रि रूप में परे ॥ ड विधा ह सी फटक स्यो निरे ॥ तुरसी दै वि ड विध
की मां ई ॥ कोटिक परे कुब धिकी माई ॥ २३ ॥ साषी ॥ जो अयने होइ
बैरता तो पर ह बैरता होइ ॥ तुरसी अयने सुधि होइ ॥ तो सुधि दसो ॥
दिस जोइ ॥ २४ ॥ जो कर उठे जु कर उठे ॥ सिर नये सिर जु नवा ॥ तुरसी
काहे न देष ॥ दरपन में निरताइ ॥ २५ ॥ गुन जु देषि ड प्रस्य क छु
दर सत ड विधा धन ॥ तुरसी अयनी हा जु हो तै प्रस्य दास मो न ॥ २६
२ ॥ आया पर विसराइ दो आ ॥ ड विधा को दै दाना ॥ तुरसी सुत ह प्रक
समें होइ र दोग सतांत ॥ २७ ॥ ३ ॥ ५० ॥ अथ ड विधा विधे सकोप ॥
रि करन ॥ २८ ॥ तुरसी ड विधा आरसी उर करे तै बूटि जाइ ॥ तब उ
रे परे नै आत्मा ॥ एक रूप दरसाइ ॥ २९ ॥ जावत दहन जु दरमै ॥ तुरसी
उदैन होइ ॥ तावत ही धेना महे ॥ प्रगटे एकै सोइ ॥ ३० ॥ चौपद ॥ जावत
है पाला अरु पांनी ॥ तावत उमै जुनां मनि सांनी ॥ तुरसी जब गरि ए
के होइ ॥ तब ड विधा धोर हैन कोइ ॥ तुरसी कैरी द्विष्टि जु आही ॥ ता
वत धेवंश दरसाई ॥ जब सुध होइ ग हे आरं मा ॥ तब एको चंदा एको
रं मा ॥ ३१ ॥ साषी ॥ उमै बिंब हौं हि एक ही ॥ तुरसी धेत मिटाइ ॥ जब

वतवधहै॥ निश्चैतिजकरिसौ॥ जावतरगजुदेषकीरेषअनि
 अतरिही॥ १५॥ तुरसीरेषनरहीको॥ जाउरमाहीअनगरगदो
 षगुनगलिगए॥ सोकहिएअवधनृबान॥ १६॥ तुरसीवधअ
 वधका॥ निनिनिनिसेदबिचर॥ विधिविधिकेंहंसवरतिया॥
 कोऊजानैजाननहार॥ १७॥ चौपई॥ तुरसीजोनहीअनलजा
 नै॥ यावधअवधकेजुन्याने॥ औरअज्ञानकहापदिचाबै॥ त
 कइधतएकहितांनै॥ १८॥ ३ए३७॥ ॥ अयइविधाकेपरि
 करत॥ ४४॥ जोयाइविधामिधसे॥ मायाअजौकरंमा॥ तुर
 सीतेअधिविचिरहे॥ सस्येनएकौकाम॥ ५॥ कबहंसूतपि
 तरकबै॥ पूजेप्रातिलगाइ॥ कबहकहैअनितहोइअजौ
 नरंजनराइ॥ ६॥ कबहरंमनजनकौ॥ उखपजेउतसाहाक
 बहंकहैमायाअजौ॥ तनधरिख्योयहलाह॥ ७॥ कबहंकहैनृ
 पुअजौ॥ कबहंस्रगुनतनजाइ॥ यादोलाजोलीमैब्रीताइ
 सबआइ॥ ८॥ यादोलाजोलीमैही॥ षोईकंचनदेह॥ तुरसीअ
 नज्यानही॥ तोरिइविधस्येनेह॥ ९॥ याइविधाकेपंथमें॥ बह
 तकअटकेआइ॥ तुरसीइतउतजाषते॥ कालपइताआइ
 १६॥ एकपंथमहामौबिके॥ एकमायातनजाइ॥ तुरसीपंथकपूबेवि
 ना॥ पंथाषोटाषाइ॥ १०॥ तुरसीसुकरमंदिरमहं॥ मृगापत्तिकीप्री
 वेस॥ अयनांईदेषिकें॥ करिकरिमूवौकलेस॥ ११॥ आपातैनासेप
 रें॥ नलेबुरेगुनदोइ॥ तुरसीजौगजचवनमें॥ बोलतजाईसोइ
 १२॥ जोअपनेउरउपजे॥ काइस्येवैरराव॥ तुरसीसोवतसप्री
 तैसोहीहोइदरसाइ॥ १३॥ पौरबिलोरियचौरकौ॥ साहसमितसा
 मोन॥ तुरसीकारनआपनी॥ औरनइजौजोन॥ १४॥ एकनिसत्रउ
 करिगिनै॥ एकनिमित्रकहाइ॥ तुरसीअपनीदृष्टिके॥ यहसबका
 रनआहि॥ १५॥ जहोजहांकबुखारथहोइ॥ तहांतहांमात्रेसुष॥

जहां नकार थ वाहिक है। ताका का लामु य ॥ १६ ॥ ताते यह से कल्प
सब ॥ तुरसी अपनो ही आहि ॥ काको सुष करि मानेयो ॥ १७ ॥ मं
निये जुकाहि ॥ १८ ॥ चौपद ॥ दितकी ड विधा करे न दूरि ॥ ध्यान
धरे नंदो ऊस्वर पू रि ॥ तुरसी उरत ही होइ गजियारो ॥ बिना विध
से ड विध अघारो ॥ १९ ॥ जब लग ड विधा तन मन मा ही ॥ तब लग
जोग सिधि होइ न ही ॥ तुरसी जोग सिधि होइ आश ड विधा सि
टे मन मरि जाइ ॥ २० ॥ जावत अविद्या नीरत न सो ॥ तावत उमै अका
स प्रकासो ॥ एक जीव एक सी वृज्जु नो मा ॥ ताहि गिनत वी ते व ड जं
मा ॥ २१ ॥ ड विधा दरपन ड विधा नीर करे एक स्यो दोइ सरी रा जन
तुरसी ड विधा तब नो सो ॥ उरे परे एको आत्ता से ॥ २२ ॥ ड विधा कि ह
रि कूप में परे ॥ ड विधा हसी फटक स्यो निरे ॥ तुरसी दै वि ड विध
की जाई ॥ कोटिक परे कुबधिकी याई ॥ २३ ॥ साषी ॥ जो अपन होइ
बैरता ॥ तो पर हू बैरता ही ॥ तुरसी अपन सुधि होइ ॥ तो सुधि दसो ॥
दिस जो ॥ २४ ॥ जो कर उठे जु कर उठे ॥ सिर नये ॥ सिर जु नवा ॥ तुरसी
काहे न देष ड दरपन में निरता ॥ २५ ॥ गुन जु दे वि ड विध सुष क छु
दर सत ड विधा धन ॥ तुरसी अपनो ही जु हो ॥ वै प्रभु सदा समो ना ॥ २६
२ ॥ आया पर बिसर ड दो ॥ ड विधा को दै दाना ॥ तुरसी सुत ह प्रक
स में होइ र दोग लतांत ॥ २७ ॥ ३ ॥ ५ ॥ अथ ड विधा विधे सकोष ॥
रि करन ॥ २८ ॥ तुरसी ड विधा आरसी उर करे बूटि जाइ ॥ तब उ
रे परे से आत्मा ॥ एक रूप दरसा ॥ २९ ॥ जावत दहन जु दर में ॥ तुरसी
उदे न होइ ॥ तावत ही धेना महे ॥ प्र गटे एकै सो ॥ ३० ॥ चौपद ॥ जावत
है पाला अरु पांनी ॥ तावत उमै जु नो मनि सांनी ॥ तुरसी जब गरि ए
के होइ ॥ तब ड विधा धोर हेन को ॥ अ तुरसी कैरी द्विष्टि जु आही ॥ ता
वत धे चंदा दर सांरी ॥ जब सुध होइ ग है आरं मा ॥ तब एको चंदा एको
रोम ॥ ३१ ॥ साषी ॥ उमै बिंब होइ हि एक ही ॥ तुरसी धेत मिटाइ ॥ जब

वतवधहे॥ निश्चैनिजकरिसौ॥ जावतरागजुदेवकीरेषअनि
 अंतरिही॥ १५॥ तुरसीरेषतरहीको॥ जाउरमांहीअनरागदो
 षगनगलिगए॥ सोकहिएअवधनृवांन॥ १६॥ तुरसीवधअ
 वधका॥ निनिनिनिनेदविचार॥ विधिविधिकेंहेमवरनिया॥
 कोऊजानैजाननहार॥ १७॥ चौपई॥ तुरसीजांतहीजनलजा
 नै॥ यावधअवधकेजुन्याने॥ औरअज्ञानकहापहिवानै॥ त
 क्रदधताएकहितांनै॥ १८॥ ३९२७॥ ॥ अथइविधाकेपरि
 करता॥ ४४॥ जोयाइविधामिंधसे॥ मायाज्ञजोकरंम॥ तुर
 सीतेअधिविचिरहे॥ सस्योनएकौकाम॥ १५॥ कबहंसूतपि
 तरकवै॥ पूजेपीतिलगाइ॥ कबहंकहैअनितहोइतजौ
 नरंजनराइ॥ २॥ कबहरंमनजनकी॥ उख्यजेउतसाहाक
 बहंकहैमायाज्ञजो॥ तनधरियोयहलीह॥ ३॥ कबहंकहैत
 पुनजो॥ कबहंस्रगुनतनजाइ॥ यादोलाजोलीमैबीतिगई
 सबआइ॥ ४॥ यादोलाजोलीमैही॥ योईकंचतदेह॥ तुरसीरंम
 नज्यानही॥ तोरिइविधस्येनेह॥ ५॥ याइविधाकेपंचमै॥ बह
 तकअटकेआइ॥ तुरसीइतउतकाषते॥ कालपकृताआइ॥
 ६॥ एकपंचमहामोडिके॥ एकमायातनजाइ॥ तुरसीपंचकपूबेवि
 नो॥ पंचाषोटाषाइ॥ ७॥ तुरसीसुकरमंदिरमही॥ मृगापत्तिकीकीप्र
 वेस॥ अयनांईदेविके॥ करिकरिमूवोकलेस॥ ८॥ आयातैनासेप
 रें॥ मलेबुरेगुनहोइ॥ तुरसीजैगजचवनमै॥ वीलतजाईसोइ॥
 ९॥ जोअयनेउरउपजे॥ काऊस्येवैरनावा॥ तुरसीसोवतसपूमे
 तेसोहीहोइदरसाइ॥ १०॥ ज्यौरबिलोरियचौरको॥ साहसमितसा
 मोन॥ तुरसीकारनआपनी॥ औरनहजौजोन॥ ११॥ एकनिसत्रजु
 करिगिनै॥ एकनिमित्तकहाइ॥ तुरसीअपनीदृष्टिके॥ यहसबका
 रनआहि॥ १२॥ जहांजहांकबुखारथहोइ॥ तहांतहांमानैषम॥

जहां वसुधै कुरुते तमसा जगत्सृजते ॥ १ ॥
सर्वं भूतं जगत्सृजते तमसा ॥ २ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ३ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ४ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ५ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ६ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ७ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ८ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ९ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १० ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ११ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १२ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १३ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १४ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १५ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १६ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १७ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १८ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ १९ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २० ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २१ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २२ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २३ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २४ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २५ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २६ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २७ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २८ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ २९ ॥
तमसा जगत्सृजते तमसा ॥ ३० ॥

ही जीवसी वहि मिले होइ परसपर आइ ॥ ५ ॥ धौपदी ॥ एकरंम
 सबहिनकैसांही ॥ तामै फेरफारकबूनाही ॥ ज्यो उरवामदिहि
 मिटिजाइ ॥ सुधएकताज्ञानउपाइ ॥ ६ ॥ सायी ॥ सुधएकताज्ञ
 नहोइ ॥ अपनैही उरआइ ॥ तबहि दोइकाएकहोइ ॥ तुरसीधैत
 मिटाइ ॥ ७ ॥ तुरसीधैतविधंसनज्ञानयह ॥ चेतनहिाहिलेइ
 मनिगनघटकातेकरे ॥ धौगोही चितदेइ ॥ ८ ॥ धागास्पीरंमहै ॥
 णिगणनांतां देह ॥ तुरसी व्यापकहोइ रघा ॥ औरनदृजाकेह ॥
 ९ ॥ तुरसीइहै सबसरति सुमृत्तिको ॥ इतोहीउतमबवेका देवद
 हनवतएकहै ॥ देहदारवतअतेक ॥ १० ॥ दरनिनिभयेकाभया
 यीपरकैरबंबूर ॥ दहनसबतिमेंएकहै ॥ रही सकलवनपूरयो
 घटघटमेंरंमहै ॥ ज्यो जलचंद्रासर ॥ तुरसीअसै देषीये ॥ तौइवि
 धारहैनमूर ॥ ११ ॥ जीवसीवएधैतही ॥ ज्यो बुधिनेदबिलाइ ॥ ज्यो क
 रत्यागे श्रारसी ॥ उनेनबिंबदीयाइ ॥ १२ ॥ एकजीवएकसीव
 वेदबतावतनेद ॥ तुरसी तावतजुहे ॥ ज्यो लौनहोइ बुधिबेदा ॥
 बुधिनेदबिलीमांनहोइ ॥ अहंममतमिटिजाइ ॥ तबही दोइव
 एकहोइ ॥ सलित्तासिंधसनाइ ॥ १४ ॥ तुरसीसलिलसमावैसिंधसे
 हैतसलिलकोमांम ॥ जीवसमावैसीवमें ॥ तबएकोनिरनांम ॥
 १३ ॥ इहाअथअविहरकोपरिकरना ॥ १० ॥ धौपदी ॥ तुरस
 संगीसोजुहमारा ॥ जोयाउपतिषपतिस्यो न्यारा ॥ अयंइतेजइ
 कास ॥ तासंगिविचरेंकरें ॥ बिलास ॥ १५ ॥ प्रथममिलनताइल
 जोइ ॥ मिलेनपलभरिविबुरैसोइ ॥ तुरसीअैसासंगीरंमसिंध
 करनसंतकोकांम ॥ १६ ॥ तुरसीताहीस्योकरिनेह ॥ ताहीकोंनजि
 लाहावेह ॥ ताहीसंगिसदारकुलागा ॥ कबहूनतोरैतांत्तागा ॥
 १७ ॥ वासमिनहीमीतकोऊओरहमनीकैदेषीसबओर ॥ तुरसीमद
 जलतारकरंम ॥ पतितपावनहैताकानांम ॥ १८ ॥ अविहरअउर

मरहे सो प्राप्ति बंध बाल तरनत ही हो ॥ तुरसी दास एकर सजे
 दासगी रंग महे मार सो ॥ ५ ॥ सायी ॥ तुरसी अनंत चो करी अनंत च
 गा वी वि वी ति जो जो हि त ऊ रंग संग ना बुटे जो पर स्या हो ॥ ६ ॥ सां हि ॥
 ॥ ६ ॥ चो पई ॥ तुरसी पृथी आदि यंत्र एत ता कदा चित्त न हूं की हो
 इ अंत जिन अ प वे प्र सु पर से मा ही ॥ तिन को नां सक दा चित्त ना ही
 ॥ ७ ॥ ब्रह्मा की अ वृ थि को च्च ना सा ये ता जो भी को न हा विना सा ॥ जिन
 संक ल प वि क ल प वि सर या ॥ अ वि नां सी से लै मन ला या ॥ ८ ॥
 २ ॥ ७ ॥ अथ आत्मा को परि कर न ॥ १ ॥ ॥ तुरसी ज्यो प ऊं प मे
 वा स नां ॥ चित्त मे ते ल पर वां ति त्रि सै न ष ष त न म ही ॥ व्या प क
 आ च जां ति ॥ १ ॥ तुरसी ज्यो दार मे द ह न हों ये दि ष रा ई न हि दे श ज्यो
 त न व्या प क आ त्मा ॥ को ऊ म हा म ती म थि ले श ॥ २ ॥ म थि कां टे मा ष
 न च लो ॥ श्री र नी र लो से ॥ तुरसी ज्वा जो गी यो ॥ श्री र कु जो गी जो ॥
 ॥ ३ ॥ की री कुं जर स व ति मे ॥ था व र जंग म सो हि ॥ तुरसी व्या प क ब ह
 हा ॥ न्यार मित्या जु नां हि ॥ ४ ॥ न्यार ऊ क हा जु नां प रै ॥ मित्या ऊ क घ
 न जा ॥ तुरसी रि वि प्र ति विं व लो ॥ स व घ ट र ह्या स मा ॥ ५ ॥ स व घ
 ट आ त्म एक है ॥ नि नि ति ति ता स ता ॥ तुरसी धा रा एक है ॥ म ति रा न म
 ने ऊं अ वं त ॥ ६ ॥ तुरसी ता हि को क सु ध चित्त ही नि ज करि जा ने सो ॥
 अ सु ध अंत ह कर न मे प्र ति वि व त न ही हो ॥ ७ ॥ वा प ई ॥ अ ह हं य ह
 तं मे री ते री ॥ अ ह ड र म ति न हि अ भे ते री ॥ तुरसी ज व आ त्मा प्र का
 से ॥ ज हां त हां आ त्म ही मां से ॥ ८ ॥ सा यी ॥ तुरसी र हित उ पा भि ते नि र
 उ पा धि नि ज म रा ॥ घ ट म ब्र मा ही र मि र घा ॥ र हित अ व स्था ना रि ॥ ९ ॥
 ॥ चो पई ॥ विं ग अ लिं ग सू ह्म अ स थू ला च हं ना ग करि सा या म्
 ला ॥ तुरसी दा स ता ये रे व जो श आ त्म स्त य अ यं डित सो ॥ १० ॥ स
 ता व न मा त न चां त त सि ॥ गां व न गां व न नां वा दे ह न्ये ह न ते ह
 ॥ ११ ॥ आ त्म अ चल अ ष ड

प

१२

तुरसी व्यापक सकलमें लियतन काहे होइ ॥ १२ ॥ है न मन सब
 रउ परै सत्त्व तरसा से नाहि ॥ जहां जहां नीर दरपन जहां ॥ दरस
 तजहां तहां हि ॥ यौं अवगति पद पूरि रघा ॥ पिंड ब्रह्मंड सब वा
 इ ॥ नांद विंद जल थिर जहां ॥ प्रगटता तन मां हि ॥ १३ ॥ ये क प्रस
 आकास वत ॥ सब घट रघा समां ॥ तुरसी देह गुन वीस ये ता
 हिन लें दरसा ॥ १४ ॥ सत गुर घारे हे म सुन्या ॥ सास्त्र ह में सोइ ॥
 अनात्म विसरे विना ॥ आत्म ला जन होइ ॥ १५ ॥ प्रमात्म प्रक सई
 जो मन सुब होइ जाइ ॥ तुरसी मन सुब न ये विना ॥ तवै न विंब दि
 षाइ ॥ १६ ॥ तुरसी परमात्मा परका सई ॥ अवसि जु हिर दामां हि
 जो पहले मन सुध होइ ॥ और उपाइ जु नाहि ॥ १७ ॥ काया कुत्त में
 प्राण जल राषी अचल समाइ ॥ तुरसी तत तारन तिरन ॥ आत्म
 न मन दरसाइ ॥ १८ ॥ प्रकृति पवन के मिटे तौ ॥ मन सातरंग विना स
 तुरसी प्राण जल समिर है ॥ न सै ब्रह्म अकास ॥ १९ ॥ आराधत आ
 द्रसि पद ॥ द्विसि रूप ड रिजाइ ॥ जौं निरयत मुकर मुकर बिलो ॥
 तुरसी सुख दरसाइ ॥ २० ॥ जूं सुष ना सै इ पन में ॥ उरै परै सुध सो
 इ ॥ तुरसी यौं दरसे आत्म ॥ जो मत वित सुध होइ ॥ २१ ॥ सुध वित क
 रिस कल में ॥ देषे आत्म रं म ॥ तुरसी तवता संतको ॥ क्रोध न व्यये
 को म ॥ २२ ॥ चोपई ॥ तुरसी कां मति जरि होइ जाई ॥ क्रोध न क बड
 देत दिखाई ॥ लोचन मोह कौर है नतां म ॥ जौ वित सुध की ऊदेषे रं
 म ॥ २३ ॥ साधी ॥ चित आरसी अमल होइ ॥ रजत म काट मिटाइ ॥ तौ
 उरवा हरि दसौं दिसा ॥ एक रस दरसाइ ॥ २४ ॥ तुरसी आत्म दरस
 ई ॥ तामें नही संदेह ॥ जो उरमल आदर स होइ ॥ पर हरि नां नोहे ॥
 २५ ॥ चोपई ॥ तुरसी नां नाने हन मां ही ॥ तावत तवा तुल चित आ
 ही ॥ स्या गिने ह निरमल होइ ॥ आइ ॥ तावित में आत्म दरसाइ ॥ २६ ॥
 अय आत्मा ली ज निशाना ॥ ॥ चोपई ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ किर निउल टिउरयेसा ॥ अचल नई छिन चलेन सोइ ॥ स्वाकसुष
 मेरहेस मोइ ॥ १० ॥ सायी ॥ जीवन मुक्ति जु जननिके ॥ मिटि गयो
 विषे विकार ॥ तुरसी तिहुं परे करि रहे ॥ तुरपद मेये सार ॥ ११ ॥ जिन
 ॥ जिनके उरको मना जु सोइ ऊपरि गइ रहिन हीकोइ ॥ तुरसी
 जीवन मुक्ति जब जोइ ॥ जोइ ऐसें जोगी हेकोइ ॥ १२ ॥ कामनिक
 बहू लकि दियावै ॥ कोष अगनिका यानजरवै ॥ तुरसी उरसे लो
 न अरु मोह ॥ तिनहुंको मिटि गयो अं दोह ॥ १३ ॥ सायी ॥ हरषसोग
 हिरदेन ही ॥ संपति विपति समान ॥ लोहं कंचन समि गिनै ॥ सोमू
 रतिन गवान ॥ १४ ॥ जहां मंत्र मानै तहां रहौ ॥ उजर बस्ती सोइ ॥ तुरसी
 गुनगलतांनके ॥ काठन लारीकोइ ॥ १५ ॥ जहां मन मानै तहां रहौ ॥ अ
 रध ऊरध मधि धान ॥ तहां तहां मुक्ति सरूप है ॥ तुरसी गुनगलि
 तान ॥ १६ ॥ वीपद्री ॥ गुण उपाधि जाकी गति गइ ॥ तांकी संगी श्रीरही
 मई ॥ जूं पारस परसे तै लोह ॥ तुरसी पल टिन यो श्रीरही दोह ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥ संतोषी साधू जनां ॥ सति बक्ता सुषरूप ॥ तुरसी पिरधी ली
 कको ॥ वैजनया वनरूप ॥ १९ ॥ संतोषी साधू जनां ॥ जत सव सारा सोइ
 तुरसी आत्मरं मरत ॥ जीवन मुक्ति बजोइ ॥ २० ॥ जीवन मुक्ति बजो
 निवै ॥ तन ही अछित जु सोइ ॥ तुरसी जिनके रगनहि ॥ दोष न दरसेके
 इ ॥ २१ ॥ हिरदे कायं थितां सत नवो संदेह ॥ तुरसी जीवन मुक्ति सो
 पद बंदन करि लेह ॥ २२ ॥ पद बंदन करि लीजिए ॥ अति नृपति उपा
 इ ॥ जीवन मुक्ति जोगीनिके ॥ तुरसी सरने आइ ॥ २३ ॥ तुरसी सरन
 को जोगी है ॥ जो ऐसेको ऊआं हि ॥ जिनके तन अरु मनकी बुकि ग
 ई विष्णा मां हि ॥ जीवन मुक्ति जानौ जुवे ॥ या त्रिभुवनके मां हि ॥ तुरसी
 ब्रह्म सरूप है ॥ पट तरको ऊनां हि ॥ पट तरको ऊन ही ॥ हंस देषी सक
 ल जिहां न ॥ जीवन मुक्ति जोगीनिके ॥ तुरसीको ऊन आन ॥ २४ ॥ तुर
 रसी मोत अमोतकी ॥ वन बस्तीकी सोइ ॥ मुत्तरूप महं मुनिके ॥ वा
 धारहीनकीइ ॥ २५ ॥ जो वीले तो ब्रह्म मुया ॥ अवीले ब्रह्म मां हि ॥ आ

देखो तो हि १०॥ तुरसी वात विदेह की मुमत्तरिक ही न जाइ ॥
 षड-ग धारक ते डलन ॥ ताग होइ तो पाइ ॥ २ ॥ जावत सुध वासना
 खि म हं त मनो हि ॥ तावत जीवन मुक्ति है ॥ विदेह मुक्ति जु
 नां हि ॥ ३ ॥ यह भाता भेय है यह ॥ यह विनाग जहां होइ ॥ तुर
 सी तन कडु तन मां ही ॥ जीवन मुक्ति जु जोइ ॥ ४ ॥ तुरसी महं
 विदेह मत्त ॥ महा पुरस कहै सोइ ॥ जहां वरण आश्रम की प
 ह चानि न रही कोइ ॥ ५ ॥ तुरसी महा विदेह मत्त ॥ जहां तत वि
 गुणी देह ॥ मत्त गज लो विसरे फिरे ॥ कायें जगत सुषयेह ॥ ६ ॥
 तुरसी विदेह मुक्ति जां नों जु यह ॥ न भे वेद पुरां न ॥ यह हं यह
 हं यह अवर ॥ से दत्त यो विली मां न ॥ ७ ॥ ये अयने ए पार के ये व
 ल स अरिण ॥ तुरसी जहां जहां दिष्टियह ॥ तहं न मुक्त विदेह ॥
 ८ ॥ तुरसी विदेह मुक्ति के ॥ आदि जु ए सहनां न ॥ ब्रह्म जीवण
 के मया ॥ कहै नैं कौ न हि आं न ॥ ९ ॥ तुरसी विदेह मुक्ति पार्इ जु
 जिनि बड साग जन सोइ ॥ पाइ अयने मुनिको फल ॥ रहे जल त
 कृत होइ ॥ १० ॥ जो पत्रे सरीर की सुधिसार न जां नों ॥ होइ रस मा
 त आत मत्तों नें ॥ फु नि विदेह की यह गति पार्इ ॥ संत नि आगे प्रा
 टव ताई ॥ ११ ॥ जन तुरसी असा है कोइ ॥ पार ब्रह्म पट तर जन सो
 इ विदेह दय द मे र घास मोइ ॥ ज्यो पाला गलियां नी होइ ॥ १२ ॥ जाके
 कोपन काया मां ही ॥ षिजयै षिजये क सके नां ही ॥ षिषया छी न
 विदेही सोइ ॥ चित्र दीप लो र घा जु होइ ॥ १३ ॥ तुरसी यह नर यह धे
 नारी ॥ यह विभेद वासना सिधारी ॥ जाके निपट ग रि गयो जु काम
 से कहिये अवध आत्सरं म ॥ १४ ॥ सा सी ॥ तुरसी आत्सरं म वे त्या
 गि सु छ त्रिय नेह ॥ तं डल रूपी होइ रहे ॥ बड रि न उ गै नेह ॥ शिषि
 धि आइ आइ परो ॥ ज्यो सावन का मेह ॥ ना सो उल्ले न य ल्हे वै ॥ जे जन
 मुक्ति विदेह ॥ १५ ॥ तुरसी कहौं जु कहौं नों ॥ वरतौं मत विदेह ॥ जा

प्रागहोइ सोपवेमनाह

1. तुरमीस्यनात्तनहीसच

हि सिलासरूपीसतयो अतिश्रुतिमधिमाहि

दुषस्यकरकनहीताही मीनउप्रतातेदनाही मपति

तिषेदनहीकोइ सिलासरीसाधर्मइ २ त

रताहि जोश्रेसाजुगंभेइ सिलासरूपहि ३ मी

कामकलयनामनकीषाड ३ कामनकोधनको

द्वेदनहीकोइ जागरासुदनी माधुकरायलोइवेत

हीगडिरघा, आयापरसुधिये, परमात्माकाक वि

अमजोइ धा तुरसीताहिते ४ कामके ५ मलोइ ६

नेमनचितकीवृत्ति, अलविगणी, ५ किअत ६ मी

रतिब्रह्मस्योलाइ केजाग ७ तुरसीता ८ मी

कैमनचितबुधिकोइ ९ तुरजमु १० प्राचरनद्वी

तके तुरसीकहिसमा ११ दुषदादहन १२ सुषकावि

सैश्वान पापहमाहिलि १३ दुनिफन १४ ममल निहामुनि

जोतनकरे, अस्तित्वरयन १५ तुरमाया १६ सासधीर

जान १७ तुरसीसतसुधीर १८ अचहनपरवा १९ मुहकचनक

हेयह तथोनेदविलीमान २० उदीउलदिवल २१ ममगंयाअर

समाइ सिलासरूपीसतसे २२ तुरसीअचितहाका २३ जोसूलेग

सदा रागरगवितहोइ २४ तुरसीअनेनसानले नासो २५ चतवेसोइ अस

होइजनजानकरि गुनइदीसकोइ तोतुरसीसिधरस्यो राजिन

केकोइ २६ सारसूतमतासलकी जेरायेमनमाहि सकलयताहि

अपजे विकलयब्यायेनाहि जागृत्तिकीसप्रहामिठ स्वप्नरुनदर

हि तुरसीसुषयतिलेधिके तुरयदमाहिसमाहि २७ कामततेहर

हेतहे सतजुसिलासमान २८ उषकेडिगायेनाडिग सुषनहीहिग

अंग अंग सब उलटि कें ॥ गहिर है कूं रमजान ॥ तुरसी ते पद ब्रह्म हैं ॥ न
 हा कहन कों आन ॥ जो कब सीत संता वई ॥ तौ सिला न उचरै ॥ अहि
 सहस किरति स्वरज तयो ॥ तौ दोष न देवै ताहि ॥ यों जोगी कों जागत
 सब भारे ॥ बचनों दाहि ॥ तौ जोगी आनै न कबूर है ॥ सिला गुन
 साहि ॥ १३ ॥ चौपद ॥ तुरसी इहे सिला गुन सार ॥ सीत उसन नही ता
 समारा ॥ कदाचि उपरि पीर बन होइ ॥ तौ तानै डिगि फिरे नहि
 सोइ ॥ १४ ॥ यों जोगी इषस्यषकै मांही ॥ तुरसी अचल चले सीता
 ही ॥ जो कब हंइ तउ तचलि जाइ ॥ तावत नही सिला मत पाई ॥ १५
 ॥ पायी ॥ तुरसी तन करि विचरई ॥ अपने सहज स्वताइ ॥ मत क
 रि अचल हं वार है ॥ स्वरति ब्रह्म स्यौ लाइ ॥ त्रैसा साधू हे कोऊ
 अष्ठित ही जुइ हिंकाइ ॥ धनिता माता धनि पिता ॥ त्रिभुवन व
 दत पाइ ॥ १६ ॥ सिला महाजड रूप है ॥ साधू चेतनि सोइ ॥ संत सि
 लाएं अंतरा ॥ प्रगट देषिये दोइ ॥ जदपि सिला अडोल है ॥ साधू च
 लक्रिय होइ ॥ तुरसी तथापि ब्रह्म है ॥ संत समान न कोइ ॥ १७ ॥
 तुरसी को मत सदा कगेर नही ॥ इषस्यषरहित समान ॥ अषंड
 अष्ठिद अकास वत ॥ ब्रह्म सिला च्चबान ॥ ताहि कोऊ ज्ञानी ही लेषे
 औरनि कों नहि तान ॥ यों सानी बीस रिरघा ॥ विषवत बाजी तान
 न ॥ १८ ॥ चौपद ॥ तुरसी सिला मत सो पावै ॥ जो कोऊ त्रैसा हीइ
 आवै ॥ इषस्यषमांनिद है नही देह ॥ हवार है उर अचल विदेह
 ॥ १९ ॥ तुरसी सिला मत यह सार ॥ संत निवरन्यो करि अधिकार ॥ व
 डना गी ही पावै कोइ ॥ इतर जीव कों डलत जोइ ॥ २० ॥ १००० ॥
 अथ सिला को परि करन ॥ १५ ॥ ॥ तुरसी ब्रह्मा की टपर
 जंत लौ ॥ आत्म एक समान ॥ यों ससि सिंध सराव मै ॥ देषिले कु
 न मान ॥ १ ॥ ब्रह्म आदिकी टपर जंत ॥ यावर जंगम संत अ संत ॥ त
 रसी सब मधि व्याप करं म ॥ काहके गुन स्यौ नहि कां म ॥ २ ॥ काह

के गुणमें नहि आवै। सबमें समान सदा रहवै। जौ चंद्रा जलकुं
ननिमांही। व्यापक वोर वोर सौ आंही। ३। साधी।। सब घट व्यापक
होइ रघा। तुरसी रंम अदेहा और का और होवै नही। किहं स्त
और और यह देहा। ४। तुरसी गुणकी विषमता। वस्तु विषमता ना
हि। जा जनति निनि देषियो। रविए को सब मांही। पा। कहां उतस
मध्यम कहां। कहां सूक्ष्म अस्थूल। तुरसी सब गुण घटनिमें। ५।
आत्म एक सम कला। ६। सब घट पिड बलंडमें। व्यापक आत्म ए
का तुरसी द्विष्टि गुण बंध है। तौ लौं दरसे अनेक। ७। चौपई।।
विष्टि द्विष्टि जौ लौं घट मांही। तौ लौं नां नां रूप दिशांही। तुरसी
सम द्विष्टि उपजे आजा तब नल एक रूप दरसाइ। ८। मेघ बूद नि
निकिन सच पायो। मन ले धोषा मांही आटकायो। तुरसी निरखे ए
को नारा। ताको होइ तुरपद स्यौं सीरा। ९। पूरन होइ पूरन पद पे
पूरन बिन कबू और न देखै। तुरसी पूरन कहिये सोइ। जाके उर
मधिय हमत होइ। १०। साधी।। तुरसी चास्यौं वेद कौं। सार चूत।
मत एहा। समिता गहि देहि देह सुषा। विचरि जु होइ विदेहा। ११।
विचरि जु होइ विदेहा। विसरि गु अरि मित्रां तुरसी तुलित
तबो। दसौं दिस देत दियाई। १२। तुलित जाव उर उपजि है। षष्ठ
षके है इं री। तुरसी तब दंम जांनि है। माया आनंद मूर। १३। नि
दान्य रु अस्तु बवै। जब तुलिके है रंमा। तब तुरसी जव जांनि है। मा
यो परम विप्राम। १४। चौपई।। तुलिकं चन तुलिका चव सोइ। घ
टि बधि नेद विसर जन होइ। तुरसी तब सुमिता सुध जानी। उरै क
है सो आहि अज्ञानी। १५। एक वोर कं चन की ठेरी। एक वोर को की
चघनेरी। तुरसी उचै समंत ज्जानै। ताहि समिता सब संत वषां
नै। १६। तुरसी समिता मिधि होइ अत्रै। त्रिविधिताप नहि ताहि न
रावै। तुरसी सौ तुरपद में जाइ। सलित सिंधु लोदी रहइ। १७।

कोऊकटुकवचनकहिकेंजुडुपावै॥ कोऊसीतलसबसुना
 वै॥ ५५ सुषकसककबूकैनावै॥ सोमतकोऊबहुंउतागापावै
 ॥१८॥ ॥१८॥ कोऊचंदनलेपनकरौ॥ कीऊउडोवोधूशिरो
 ऊसमिहोइबौरंगमजाहैगतिडलमइरि॥ १९॥ यामतकोहम
 सेपतिता॥ षपतआहिवऊताइ॥ तुरसीतवतलपाईये॥ जब
 रंगमहिकरैसहाइ॥ २०॥ रंगमक्यातेपाईये॥ केगुरपूरहोइ॥ ता
 केदरसपरसते॥ सममतउपजेसोइ॥ २१॥ दोपई॥ कोटिआ
 स्वकामतएह॥ आत्मचितैविसरिगुवदेह॥ कनककीठमस्तु
 कायषांन॥ तुरसीदेवैसर्वसमान॥ २२॥ पाठो॥ कोऊआवौत
 लजाऊकोऊ॥ निंदोबंदोकोइ॥ तुरसीसमिरहैसिंधलौ॥ पूरा
 कहियेसोइ॥ २३॥ सत्रननासेस्वप्नइ॥ मितरुंनदरसाइ॥ तुरसी
 समिताज्ञानगहिरघासंतोषसमइ॥ २४॥ अनंतसिधसाधनि
 को॥ सास्वनिहूकोसोइ॥ मतएतोहीसारहै॥ समतारहोसमोइ॥
 २५॥ आगोपीवैरंगमहै॥ अरधउरधमधिरंगम॥ तुरसीदहदिसिं
 महै॥ रंगमसकलहीगंगम॥ २६॥ गुणअतीतनृगुणमई॥ अवाति
 अपरंयाए॥ तुरसीदहदिसिंरिघा॥ कोऊजानैजाननहार
 ॥२७॥ जाहिवैरीजासेनहा॥ मित्रननासेकोइ॥ तुरसीबेहदसुष
 मेंसमावैगासोइ॥ २८॥ रिधिआयेबुधिनाचलौ॥ अनआयेनषट
 इ॥ तुरसीपूरसंतसोरहैसिंधकैसनाइ॥ २९॥ तुरसीनिदाअ
 स्तुतिकीरतन॥ सुनैनकबहुंसोइ॥ सुनिकाहूकोनाकरैरघौ
 एकहीहोइ॥ ३०॥ पचततकीदेहसवतामैबस्वसमान॥ घटि
 बधिकरुंनदेषिये॥ तुरसीयहततज्ञान॥ ३१॥ जहांजहांजित
 कितसबै॥ अरधउरधमधिसोइ॥ तुरसीरमितारमिरघा॥ पादि
 सातकोइ॥ ३२॥ उरैपरैएकात्मा॥ दिविदिष्टिहोइ॥ धाव॥ तुरसी
 मणिगणरूपतजि॥ धागोद्विष्टिलगाव॥ ३३॥ जबदिविदिष्टिउ

दित्तहोशावरमद्विष्टिविलीमांता॥त्तुरसीतवत्तलपाइएत्यहसमे
तासुजाता॥३॥त्तुरसीयहसमिता धर्मा॥सास्त्रवेदपुरातासुबसं
तनिमयिकाथिया॥महाअकलमषज्ञाना॥३॥त्तुरसीयहस
मताधरमा॥जोउरसेचिकोउलेडा॥तोडषसुषकीकसकउरउय
जंतकबहंनदेडा॥अद्याहहंयहत्तयहअवराएविनागजोअ
हि॥त्तुरसीसमितार्के संयें॥सकलएकहोइजांदि॥३॥वोपई॥
तातासीलीतरंगमिटांवे॥डषसुषकबहंनउयजिआवै॥त्तुर
सीमानअसांनसमांन॥समितानये होइयहज्ञाना॥३॥साषी॥
त्तुरसीयहसमतकही॥महाबुधिव्योपाइ॥आगेआषोंएकता
तहांनइतिदरसाइ॥३॥॥३॥अथएकताकोपरिकरना
॥३॥त्तुरसीवेदयदोव्याकरनयदो॥यदोअष्टादसपुरात
सकतसास्त्रसोधिर्को॥तिनिनिनिकरौबघांन॥जयकरौतयकरौ
ब्रतकरौदेइविबिदितदंन॥ह्ददेखांतिनउयजै॥विनाएक
तापंन॥३॥जोउरउयजैएकता॥जोउरसीतलहोशअहंब्याधि
तेउबरै॥निश्चैप्राणसोइ॥अरधउरधमधिदसोदिसादरपनस
यसबजोइत्तुरसीधाताधेयबिन्धि॥तबसंचररहैनकोइ॥
एकब्रह्मकथिंबोसुफला॥तबसोहतमाईअहंब्याधिगुनगलि
तहोइमैतैमिष्टिजाई॥मानअसांनसमांनसबा॥समअरिमित्र
ई॥त्तुरसीआतंदयदद्वपनलोदहदिसिदरसाई॥त्तुरसीद
हदिसिदेषिये॥एकहिअमलजुरंमावाहरितीतरितरिघ
तहांनहीधेकीनां॥त्तुरसीअधैतज्ञानयहा॥अतिहीअमल
जुसोइअधिकारीहालयेकोआजातकेनहिहोइआधासवि
वैअधैतज्ञानको॥कांसीकोमहिकांमा॥त्तुरसीइंइजितनए॥तिन
कीयहआरंमा॥३॥त्तुरसीअधिकारीहालयेकोअप्रनअधिकारीही
वंकौ॥मंयहपतीतिसुनीजुहमावेदयु

कारीजीवकों महाअधीतयहज्ञान तुरसी मूलिन आषिये के जा
 इ ध्यान कु ध्यान ॥ ७ ॥ तुरसी अति तता ते रू धमें अति तसी रे सां हि त
 न क त क्र अ रे को ऊ द धि घू त दो ऊ नां हि ॥ ८ ॥ तुरसी अधिकारी प्र
 ति ज्ञान यह क थौ ह म वि धि ब्यो पा इ अन अधिकारी जीवकों ॥
 दे व्यो सु न्यो न सु हा इ ॥ ९ ॥ तुरसी अजित इं दी को ऊ क थो एक ता ज्ञा
 न कि न दे व्यो कि न धों सु न्यो त वा म धि मु ष मां न ॥ १० ॥ तुरसी त वे
 विं व भा से न ही अजित इं दी उ र ज्ञान सक ल सा स्व सु मृ ति त कों
 यह नि ह चों नृ बां न ॥ ११ ॥ तुरसी अजित इं दी क थो को ऊ ज्ञान एक
 ता ये ह उ ग त न अं कूर प षां न में भा वे दे से ई व र थो मे ह ॥ १२ ॥ तुरसी
 ज्वा ला वि च र नै को जल च र ही इ अधिकार तौ रा गी उ र उ प जे यह
 अ धै त वि चार ॥ १३ ॥ तुरसी क हो लों आ षिये सरा गी उ र ज्ञान को
 टि क रौ त ऊ न हो इ ता थै वे द पु रं न ॥ १४ ॥ शेर ता ॥ तुरसी कां गी क्रो ध
 को इ क थ त एक ता मु क्ति हो इ तौ मु क्ति जा इ सब लो इ अ मु क्ति का
 रू की न ही ॥ १५ ॥ रा थो ॥ मु ष यों क थे जु एक ता मन का म ता अ ने
 क क्रो ध लो न च्छु टा न ही क हां क थे हो इ एक ॥ १६ ॥ दे हा अ धा सी
 जी व कों यह एक ता जु ज्ञान के से ऊ उ प दे सो को ऊ तुर सी हो इ न मां
 न ॥ १७ ॥ तुरसी मा न प्र का से इ प न में ज्ञान सु धा त्त मां हि सक ल सा
 स्व सा र यह ए ते ही में आ हि ॥ १८ ॥ जा को उ र न्यो अ र सी रा ग दो ष
 म ल षो इ अधिकारी या ज्ञान कों तुर सी क हि ये सो इ ॥ १९ ॥ तुर सी
 ए गा दि क जा के ग ये र हा जु को ऊ नां हि ता हि सं न वे ज्ञान यह
 और नि ड कर आ हि वि ष या या वा लो क की त्र म करि जा ती सो
 इ वि ष व न लो वि सा रि कें र हा जु उ ल टा हो इ अधिकारी या
 ज्ञान का तुर सी क ही ये सो इ और एक ता क थ्यो क रौ क थें क
 च्छू न ही हो इ ॥ २० ॥ अ त ह कर न ब ह कर न ए जि न ली ये उ ल टा
 इ या वा लो क के वि षे तो ग वि सरा इ या अ धै त जु ज्ञान में सो

ईसलेवदगुइ तुरसीजाउरेतोग्ये नानातरमबिलाइ १२ अतमा
 दिसपतिजुयह जाकेसिधितईताइ तुरसीधनिधिमनन प्र
 धिकारीजुकहाइ १३ तुरसीसमादिसपतिजुयह १४ तुरसी
 एीसार अघेतज्ञानउदेकरनको दसाधनअधिकार २४ तुरसी
 इनसमदमादिसाधननिकरि मयेमधरनसोइ तिनकसकान
 धिवेजुको नहीकवितताकोइ २५ याअघतजुसागतो तीधि
 हमकबुसनाइ तुरसीअसेउदेहाइ जोगुरकरणइ २६ ।
 तुरसीगुरकारनसबधरमका तेनपदेसनहाइ गुरहातनाध
 जाईए धेतप्रपचजुयार २७ धेतपरपचलघनेको अघेतनाउ
 नासोइ तुरसीउतमउपाइइ तांतसुबलहिहाइ २८ मठघा
 व्यापकएकहो निरदोषीकेटाप यरसुधवजुगमना तुरसी
 निजकरिलेपिअ २९ यहनिजबलउपासना सोउवटाउरन तु
 रसीमवसाधूकहो सबसंगहपमान ३० बलविनातद्वि
 चरे यहबुधितिमषडज्ञान तुरसीरनिदिउमकहा यह
 निदिध्यासनज्ञान ३१ अवनमननकोफलउयन बलसावता
 येह तुरसीसागिनउदेहाइ डिमरावजउदेह ३२
 तुरसीजाडनावतानिवोइ बलनावताउरमुधार गुरगामिता
 लौतावेसोइ जीवसतागिटिबलहीहोइ ३३ तुरसीबसहीन
 केकारनायहे तावनासुधमाधारन भुरतिसुहे तिमिलिवरनी
 सार धेतविधसनपरमावचार तुरसीधतनृमूलकी
 जौबलहिपावेकोइ अघडअहेनिसिहृदाभ व्योनबलहेइ
 सोइ ३४ तुरसीतीवतावउपाइ नदीबगलोलागाताइ
 यासुधबलनावनामाही तोबलहोनमैसमानाही
 बलहीबलकीयोकरे हरेमघएकतान तुरसीकरनयहता
 वना रहैतजगुकोतान ३५ किनदेष्पाकिनंधोसुन्या नृचा

येतैसोइ तुरसी रजमाही जनु जंग ॥ अयेयह जगु जोइ ॥ ३९ ॥ तुरसी
तावतसाचोसो लगे ॥ जावतनाहिन ज्ञान ॥ ब्रह्म ज्ञानके सयेते रहे
नजगुको सांन ॥ ४० ॥ तुरसी वरणाश्रमन बत्रण ॥ सोहे जहां जुरें ॥ सां
नउदे सासे नहां ॥ अये सो ज्ञान जु अयेन ॥ ४१ ॥ ब्रह्म ज्ञानके सयेते ॥ सि
टि जाइ धेत कलेसा ॥ तुरसी ज्यौरविके उदे ॥ रहे न रजनी लेसा ॥ ४२ ॥
ब्रह्म ज्ञान अज्ञानयह ॥ एकै संग जु सोइ ॥ तुरसी कै सै सो नई य
हत्तौ यौ तही होइ ॥ ४३ ॥ तुरसी अज्ञानकी रजनी नई ॥ ज्ञानसुता
नसमान ॥ जहां यह तहां वह तहां ॥ वह तहां याकीहां न ॥ ४४ ॥ महा
अधेत जु ज्ञानयह ॥ तहांके सो अज्ञान ॥ तुरसी हम देव्यो तही ॥ सु
यौ कूनक हंकांन ॥ उभै विरोधी जानिये ॥ तेजति मरउतमान ॥ संत
समृत्ति सबही कहें ॥ साषे वेदपुरांन ॥ ४५ ॥ जदपि अज्ञानबलीहे ॥
करे आवरण छाइ ॥ तथापि आगे ज्ञानके ॥ तुरसी कबुन बसाइ ॥
४६ ॥ कहावल सुबवादरीको ॥ आब्यदई जु सांन ॥ अये सो अधेत ज्ञा
नहे ॥ निरावण नृवांन ॥ जाघटमें उतपन जया ॥ तहांके ये सहनांन
तुरसी अरि मित एक मया ॥ रही न धेघा आंन ॥ ४७ ॥ ज्यौ गिरवरकी
गुहामें ॥ जुगांतको अधियारा ॥ महाजडित जु कैरघ्यो ॥ क्यौ ही न
होइ प्रहार ॥ दीपगके जीवतही ॥ तातकालतिहिं वार ॥ तुरसी गये
रघ्यो तहां ॥ अये सो अधेत ज्ञान विचार ॥ ४८ ॥ जयतय जज्ञादिकनि
को ॥ बतादिकनि को सोइ ॥ ज्ञान अके लोसारहे ॥ ज्ञानसमाननको
इ ॥ तुरसी तान्मो लोकेमें ॥ औरकहो कहां लोसोइ ॥ ज्ञानसांनइत
रजु धरम ॥ निसनि बत्रलोसोइ ॥ ४९ ॥ तुरसी इंद्र आदित बत्रप्र
कासई ॥ तऊ निसानु मूरनहीइ ॥ सांनउदे सासे नहां ॥ अये सो ज्ञान
जुसोइ ॥ ५० ॥ तुरसी ज्ञानसमानको ऊनहां ॥ जाज्ञानके जुसांनि
घटघट सासे एकही ॥ इजाको ऊनांनि ॥ ५१ ॥ तुरसी ज्ञानसमानको
ऊनहां ॥ संतकहें सबकोइ ॥ समृत्ति समृत्ति सबही कहें ॥ ज्ञानतहांन
ही होइ ॥ ५२ ॥

वेतघषरासिहो अवेतसुयकीभूराय

हस्यसवसंतनिकघासतवहकिपरोकहंहरि॥५॥तुरसीर
रिनजाईयो।उरैयैएकरंमा।वाहरिनी।तरितरिरघा।रहितस
अरुनांमा॥५॥तुरसीनांमरूपउभैनिरतंहत।सकलप्रकासक
सोशसवकीसोतासकतप्रिया।प्यिरहासवलोश।महाज्योवद
मेंदहनहे।रुघेव्यापकधीवाप्रऊपनिसुगंधसुबायनां।पिंडापिंडज्ये
जावा।रोमरोममेंरभिरघा।सोंसवघटव्यापकसीव।तुरसीअमचण
कहीहे।नाथेंसंतसुधीवा।५॥जदपिदरतनितिविहो।रहनितिनिति
नितां।हिरसीदहनएकहीहे।ब्रह्महंअसंवाहि।५॥तुरसीव
रसिनितयेकातया।पीपलकेरवंबूल।दहनसकलमेंएकहे।
योंब्रह्मसवतिकेभूल।५॥प्रतममधिनघुघटनिमें।ब्रह्मएक
हीआहि।तुरसीउसकीविषमता।वसविषमतानाहि।५॥ब्रह्म
धएकहीहे।सवघटमांहीसोश।तुरसीसवसाधूकहे।वसतदहन
कोश॥६॥ज्योभागमणिगतनिविचिः।नारैयोरसिहो।५॥
एकोआहि।असंअथइवसहो।समांससवघटमांहे।तुरसीव
कहीरहा।हिसाकेऊतंहि।५॥तुरसीघा।हिको।हिकोरे
मणिगणघटविसरुश।घा।ह्यीरंमहे।मणिगणघटविसरुश
३।कायाभावाआदिदे।जटकद्विटिविकार।तुरसीव
ही।सहनिसवैनिरधार।६॥चितचेतनेमंडिरहा।ब्रह्म
नाएहा।तुरसीवहिकोंचमें।तत्रतावनाहे।६॥
हनकरि।करअपरवेदेहः।तुरसीदेहदुरंगवती।ब्रह्म
६॥वेतनहकीमहापटकविजडसोंनहिरकंसतुरतीनदे
डरूपहै।वेतनप्रचरंमा।६॥वेतनहकीमहापटकविसरुश
धरुउतायवेतसुव।५॥५॥

ममयांनाजिनकासुष्या नमहेगयाबिलाइ उमैविंवाकहा
 तयारहीनकोऊराइ तुरसीप्रमातमजीवयह सलित्तसिंध
 समोइ नगतिजोगवैरगिको सबफलवैवेयाइ ॥१०२॥ ॥
 ॥३२२॥ ॥इतिश्रीगसंडेदुलराइतजीकीसामीयंपूर
 ॥॥संवत् १८५३का ॥वरथेमितीप्रगित्तरेसुदित्तीजि॥
 ॥३॥श्रीरामचिरंजनदेवायनमः श्रीगणेशायनमः श्रीपरम
 ॥३॥जैनमः ॥अथकरणीशारजोगयंसः ॥३॥वर्त्मजोगसंग्राम॥
 कवितप्रोडेकीधारे ॥थाकेसंकरसेसा ॥औरजीवकहाविचारं॥
 ॥१॥सरनरमुनिजनपीरारहे तोवजलतरवारं ॥पुणामिग्यांनवि
 चारं ॥गहैविरलाजनपारं ॥२॥समदृष्टीसमत्ताइरहेनिरवैरमि
 रसं ॥सोजनउतरेपार ॥कालनहीकरैविनासं ॥३॥जाकेसुत्र
 नमित्रा नहीसंगदूजाकोई सदाइरहेनिरबंधासाधजनका
 हयेसोई ॥४॥नहींकिसहीसंनेहदेहकासुषनहीचाहैसी
 तउससिरिसहै ॥आदिअतिअंसीनिरबाहा ॥५॥घरबनदोक
 रीति ॥रचैतहीइतसंताई ॥कंनककामणीत्यागि ॥रहेउतसा
 नल्योलाई ॥६॥अैसेरहणीरहे ॥तासकूंलेहपिबाण ॥कथैसा
 चरहैकात्र ॥सोईपरहरीयेप्राणी ॥७॥सबदसरोतरिकहै ॥मि
 थ्याकबहंनहीबोलै ॥षोउपदनृबांता ॥काहेकूंबनिवतिडो
 लै ॥८॥आसात्रिप्रांवाडि ॥तजैसबजगब्योहारं ॥रहेनिरतरि
 लागि ॥सोईजोगीततसारं ॥९॥कायाकूंबसिकरै ॥मोहतजि
 ममतामारै ॥अैसाअवधूजांनि ॥कालतैहरिनिवारै ॥१०॥निर
 गुणरहेउदास ॥नहीसंगिदूजाभांते ॥एकलमलअबीदा ॥सो
 ईअवधूतकहोवै ॥११॥नहीआगलीचाहिये ॥नहींसंसाको
 ईरमैसीगीपरवाण ॥देवगतिकहियेसोई ॥१२॥निंदोविंदोके
 इकाहंयोवैरततावं ॥सबदेयैसमिताइ ॥जैसाइकतैसाएवं ॥

सिथरकरे हांटेनहा घरिघरिघारं ॥ ५ ॥
 पावैअकलयअहारं ॥ ६ ॥ चंचलराजेमारि
 रपावै ॥ असाओधूजाणि ॥ मरेनहीज्जगज्जु
 चलोततिवारि ॥ आत्माअस्थिलआवे ॥
 दत्तरान्तरकादरसणपावे ॥ १६ ॥ कुंवाबाइ
 बाडीबागं ॥ आसणमठीमसाण ॥ तजेसब
 तंमंतओषदजडीबूटीनहीजाणें ॥ अ ॥

...अराधा ॥ तसबहीकरिसांजें ॥ १७ ॥ परहरिबाद
 विवादातजेसबहीकासाथं चकमकंज्वालाजाडि ॥ करेन
 हीजीवकीघातं ॥ १८ ॥ स्वादसकलसेगतजें ॥ घाटामीगअर
 धारा ॥ इंद्रोभोगनदेशसोईजोगीमनिसाय ॥ १९ ॥ इलापिंगु
 लाफेरि ॥ पविमकुंउलटाघोरै ॥ नवंरगुफाकैघातिपिवैअ
 मृतसचयावै ॥ २० ॥ इमृतयोवैअघाशतपतिसबतनकी
 जाईथकतहोइतामांदि ॥ आसकैबापनमाई ॥ २१ ॥ पर
 हरियांचपचीसादोइतजियेकपिबाणें ॥ सतगुरकैपर
 सादिअसीगतिविरलाजाणें ॥ २२ ॥ तजेंइषअरुसुष ॥ ग
 गतमेंआसणलावै ॥ तहांदेवेंनिजन्तर ॥ मगनहोइमांदि
 समंवे ॥ २३ ॥ दोहा ॥ यऊनिजज्ञानविचारिके ॥ मनमनिर
 हैसमांशरुसीदासअंतरनही ॥ सागतिहोइहरिआइ ॥
 २४ ॥ २॥ इतिकरणीसारजोगग्रंथसंपूरणसमापता ॥ ॥ अ ॥
 यसाधसुलबाणजोगग्रंथ ॥ साधूजनसंसारमें ॥ रमेंसुसाइ
 ससायाकाहूकैरंगिनांमिले ॥ अणोरंगिरहाइ ॥ सुषवां
 णीसुसबदचवै ॥ कुसबदकहैनकादि ॥ सीलसबुरीसादिके
 चालेणकैनाइ ॥ २॥ निरययनिरदावैरहे

धरे सदास्मे मतिस्मे तस्मै हरदम हरिकाना वले मनश्चरम
सामेल ॥ ४ ॥ परनिंदा ना वै नही ॥ परपंचपलनखहाश पर
आत्मस्यो प्रीतिकरि परचे विलंबै धाश ॥ ५ ॥ विषश्चमृतमं
जनमही ॥ निनिनिनिकरिले ॥ विषत्यागेश्चमृतगहै ॥
साकाजकरे ॥ ६ ॥ अलपअहारी अलपतो ॥ अलपही नि
दानेह ॥ अलपरमिणिरमै जगतिस्स ॥ अलपही सबदक
रेह ॥ आहो मारा आदिमता ॥ आहूगहै विचार ॥ आदिश्च
तिरटिबोकरे ॥ निराकार निजसार ॥ ७ ॥ करमतजे करताम
जे करे नजगकी काणि ॥ कायानगरीषो जिकै करतालेहमि
बाणि ॥ ८ ॥ धिरेषये सो ना नजे ॥ अविनासीस्तेह देहताण
स्यस्यगिकै ॥ होइरहै समयेह ॥ ९ ॥ होइरहै समयेह लो ॥
तनमन आयाजार ॥ आरतिस्स आतममही ॥ रंमरमैक
तार ॥ १० ॥ सुषजुआन उचरे नही ॥ परपंचसुनै नकान उते
लोइण उलटिकै ॥ धुनिमै राषै ध्यान ॥ ११ ॥ कोकं निदो कोकं
विंदो ॥ कोकं करे आदर नाव ॥ कहें वांचितनला वधि हरित
जिवे कोचाव ॥ १२ ॥ सुषदिसयलहं नपगधरे ॥ दुषदेपिनस
रज्ज ॥ दुषसुषदै सामांनिकरि ॥ समतासमनिरताइ ॥ १३ ॥
समजुलोसटसमकांचनं ॥ समजुमानअपमान ॥ सीतग
सनसमकरिगितै ॥ समचौरासीजान ॥ १४ ॥ समजुधूपसम
बाहडो ॥ समपाणीसमपाल ॥ समसेतफटकमणिमोतायां
समकंकरसमलाव ॥ १५ ॥ सममनपवंनातनमही ॥ निरति
स्स रतिसामान ॥ नादविंदसमकरि नजे ॥ पूरणपरमनिधानं
॥ १६ ॥ परपरीस्तरचिरहे ॥ साधसुलबिणएह ॥ जनतरसीश्चै
सायंतजन ॥ प्रतिष्ठिप्रभुकी देह ॥ १७ ॥ शाइरिसाधसुल
बिणजोगयं चरं पूरण ॥ अथ वगैराचौवरी ॥ चौपदो ॥

गुरुपरसादश्चकलप्रवांती॥विसर्गोत्तनीजोचालवषांती॥चौ
 ह्त्रभिरकाकरेविचार॥जोचान्हेसौउतरेयारा॥१॥प्रथम
 विसरेमायामोह॥विसरेप्रीतिवैरतादोह॥विसरेममता
 मोनवाडाई॥विसरेहरिवितवुरीमलाई॥२॥विसरेआप
 अरअनिमांतां॥विसरेषुदीगरवगुमांतां॥विसरेप्रपंचवा
 हविवादां॥विसरेषटरसइंद्रास्वादां॥३॥विसरेकांसक्रोधक
 संग॥विसरेकुबधिविषेकारंगा॥विसरेव्रतिगतिनिद्रा
 न्मष॥विसरेपापपुनदुष्प्रसूया॥४॥विसरेपाण्डकपटसुनाव
 विसरेरंगरूपरसचावा॥विसरेहेसनवकनकीषांती॥विस
 रेकलहकल्पनाकांती॥५॥दोहा॥विचरेसतसंगतिमहा
 कीरतिकरेअघाइ॥सोईपरमनिजवैश्री॥जोपतिकुं विस
 रिनजाइ॥६॥चौपई॥तोसाहेरामनांसततसारा॥साहेसम
 ताम्पानविचार॥साहेबुधिविवेकप्रकाश॥साहेभावतागा
 तिबिसवास॥साहेजतसतशीलसंतोषा॥साहेदयाधरमत
 जिदोषा॥साहेनिजकरकरनीआधार॥साहेनां वतिरंजनसा
 रा॥साहेदीनगरीवीयांता॥साहेदिटिकरिधीरजध्यांन॥साहे
 स्वरतिनिरतिमनपवन॥साहेनिजततनिरमलचरना॥७॥साहे
 प्रमार्थतजिस्वारथ॥साहेअरथपेलिसवअनरथा॥साहेसाच
 ज्जवठिठकांवे॥साहेप्रेमप्रीतिनिजध्यांवे॥१०॥दोहा॥साहेनि
 जततनिरमला॥साहेनिजमत्तिसारा॥सोईपरमनिजवैश्री॥जो
 कएलेकुकसडार॥११॥चौपई॥तोनाकरेतीरथवरतकीआसा
 नकरेजपतपआनउपासा॥नकरेपारथपूजासेवा॥नकरेनांन
 विधितषेवा॥नकरेविसचारीकासंगा॥नकरेकांसनिकल
 कुसंगा॥नकरेबिणजअरबोपारा॥नकरेसिषसाध्यापरवारा॥१२॥
 नकरेआसनघरघरघरघरे॥नकरेपठिपुनिबळविसतारा॥

करै परवरतीस्योनेह। सो जगतामें पायनवेह। १५॥ नकरै परा
नडाउपहासी। नकरै प्रीतिबिनासी। नकरै किससंवेरतताक
नकरै हरिबिनआनउपाव। १५॥ वोंहोह। ॥ प्रीतिकरैतिजे
वस्यो। ममकाजमनसाइ। सोईपरमनिजवेसतो। जनतरसीव
खिलिजाइ। १६॥ वीपदी। तो आरतिसों हरिनां वज्रवरीआ
रतिसों निजरूपनिहारै। आरतिसों निरतेरसयीवै। आरतिसों
मरिबकंरिनजीवै। आरतिसं निरमलजसगावै। आरतिसं
जततरसावै। १७॥ आरतिसं चीनेपदसोई। जाचैकेरि
नमनहीई। आरतिसों पतिसं ल्योलावै। आ
मधिरांमें धावै। १८॥ आरतिसूं पेपेपतिसंदरता
डुषडुडर। १९॥ दोहा। आरतिसंसे
श्रीसोई निरमलवेसतो। निरमलमां हिममांश। २०॥
नीजोकरै। सो जनहरिकी देह। तरसीजामनमर
कलअनेह। २१॥ ३॥ अरेसंपूरणयथा। तबपुणतिवा।
ततसार। सुमिरिअनिअंतरिप्राणी। मर
सतगुरकीवाणी। १॥ कालजालजंजाल। लागितन
तरमनिसामेयेसि। सुगंधसुरिषमतसोवै। २॥
साउलटितहांकरैनिवासा। सबघटिसिरजनहार
परआसा। ३॥ तयेअनिन्यअनंत।
मांसगुदरि। दीनहोइ निषदिनजागी। ४॥
खादस्वारथजुनिवारी। परमारथपरतीत। सुमतिसब
री। ५॥ उषीसुषीसांमांस। दोहकाहनहीकीमै। निर
रहै। सुमरि कैलाहालीजे। हृदयामयासंतोष। सील
गदिये। बुरीतलीसुषतेंजु। तलिकबहंनहीकहिये। ७॥
सोईवेदोतलताई।

तच्चवपतिरर्द्धादाज्यौजलदिनश्चरति॥चलतपलत्रटक
तांही॥त्रैसैंगवतकरिमिलियेसुषसागरमांही॥१॥कहंअट
कीयेनांहीरटियेनितिहरिकेनांमां॥नांमविनांजेकरे॥सोई
तरसीबेकोमां॥१॥सबहीकूसुषदेश॥उषदीजेनलगा॥ज्यो
जलथलमेंघोषा॥अतिन्यारेकान्या॥१॥कामक्रोधअहंकार
लागपलहंनरदिये॥संतनदीजसमाइ॥जाइसुषसिंधमिलि
ये॥१॥कहोतिरगुनसरगुनकहं॥सकलहीसमकरिलीजे
अननिरगतसाहा॥आदरसकबूनकीजे॥१॥कहाषाटाकहा
सीवा॥कहामधुरकहाषारा॥सबहीहिरसनिवारि॥अगतिज
मकरेअहारा॥१॥बुरमलानहीकहिये॥लहियेसोतेजनकी
जे॥आत्मअगनिबुझा॥सदासांईसुमिरीजे॥मनवचक्रमसु
निवीरा॥यहेजमतिदिटक॥रिसाही॥तौतिरतनलागेवार॥
पावैपरचैसुधत्तई॥१॥मनमनसाजमनाइ॥समाइपरम
पदमांही॥बाइततोगहिमत॥अनंतकहंरचोयेनांही॥१॥
कहारंककहंरावाकाहेकाआसकतनहीईये॥बाइततीग
सिसाहि॥सकलतजिदिरबंधनरदिये॥१॥कनककांसनी
त्यागि॥सुषसंपत्तिसबघोई॥घोयेविनांसंताप॥जनमजन
मेंतरहीई॥१॥सांतिहमारसीष॥रंमअतिअंतरिगाई॥यां
चपचीसोत्यागि॥जागिजगपतिसिरनांई॥१॥ज्योसबमेंअ
कास॥बाहरितीतरिइकसारा॥त्रैसैंप्रचुकंयेषि॥बहोतक
हाकरेविचारा॥१॥अवगतिअपरंपारा॥बहसअडिगअविना
सी॥देवरघादसोदिसमूशि॥पलटिपरचैकरिसेवा॥१॥बाह
रितीतरिका॥एकसबहीमेंजानी॥अरधउरधमधिेकरकहं
सुरुचिमांती॥१॥सबहीमंतश्रीगाहि॥सारमततेहिसुना
या॥असीकरनीकरेतौ॥बहीरिफरिध

को श्रेयः ॥ गुरुगिरही गायगहै ॥ सिधवेरागो
ममतकौ मिलै ॥ प्रगट्यै डा दो द्र ॥ पगुरुलागा

बंदरि हरिसाञ्ज ॥ जनहरी दासक कौ मिले
॥ च ॥ गुरुसिधदोऊ गठि चल्या ॥ जनहरी
प्रचले गुरुका ऊं डै ॥ तो वह गुरु सिधनाहि
संधतजि जे रै बैता जाया ॥ सो गुरु सिधकौ ले

जे गुरुपै होइ ॥ जनहरी दास करि बंदगी ॥ गुरुगो बिंदतही दोइ
॥ पागुरुनि नै गो बिंद नजे ॥ तेसाही सिधहोइ ॥ जनहरी दास
मतर एक है ॥ तब कहए सुणए कौ दोइ ॥ दुजनहरी दास गुरु

गारडू ॥ बिषजा डै ऊं डि ॥ जइ सिधसठो गुरुका करे ॥ सिधहदि
षफिरियाइ ॥ जनहरी दास गुरुका करे ॥ सिधमूरिषगुणजो
रुइ मितपाया नां पिकै ॥ बिषकापी वणहार ॥ ६ ॥ पानी गुरु
सो सिधमिलै ॥ सो सिधसी जानी होय ॥ इष्टएकै एकै सजन ॥ न

बकहिबेकौ दोइ ॥ ७ ॥ बाहकहै आकासकी ॥ आपरसात
लिजाइ ॥ वापानी गुरुसो मूरिषनला ॥ सकेन और मुलाइ
॥ ८ ॥ सिधसाचासाचे मते ॥ गुरुदीरघ नमना सरहसिए
करै बैसता ॥ एकदिसा इरिवासा ॥ १० ॥ सिधसूता जागेन

रै निपकुंती आइ ॥ वासिधके मतिगुरु मिले ॥ तो अंतरिसा
तलिजाइ ॥ ११ ॥ पबिमदेसपं घप्रहरी ॥ पूर्व रहसमाइ ॥
गुरुके मतिजै सिधमिले ॥ तो पारिपकुं चै जाइ ॥ १२ ॥ २३ ॥
मिरणको अगा ॥ साहिबजीकी बंदगी ॥ कीजेरवमनलाय
नहरी दासषे लोतहो ॥ जहां कालनप्रसे आइ ॥ १४ ॥ अतिन
आवोंपरहै राप्रपणों हिरदै धारि ॥ जनहरी दास निरसेम
निभै वमन विचारि ॥ १५ ॥ १६ ॥

दसहोत्र हरिदासजनयौकहे मूलियडोमतिको ३ हवकरि
 कोईमतिमरे परैनपऊंचेहाथ जनहरिदासनिरनेमते सजो
 निरंजनताथ ४ हरिसाहित्विसारिसां अविश्रवरकैसाधि
 लोकलाजबदिजाहिगा हीरनावेहाथ ५ अलतागोतासा
 रिकरि अंतरिअलषविचारि रंमसजनअतंदसदा कदे
 नआवेहारि ६ सनकादिकजोगीजनक मतिगातिलषेन
 कोइ जनहरिदासताकोसजो सजताहोइसुहोइ ७ मैह
 रिसुषबाडौनही मीवालोमोहि कर्मकठिनसबकंका
 ग्यांसूपलेसोहि ८ मैहरिसुषबाडौनही वातकहतऊं
 ठक हरिदासजनयौकहे मीवालोसुऊण मैहरिसुमि
 रणबाडौनही सनवांमारिअठकि जनहरिदासकरमनरं
 मसबदंतडा गहिगुरुग्यांतफटकि १० जनहरिदासनि
 रनेमते सजो निरंजनताथ कालजायलोमोही सुषमैर
 हेसमाइ ११ जनहरिदासनिरेमतेपाजावको अठकि
 अठकिसमकाइ १२ जीडुरमतिहरिकरि हरिचरणचित
 लाइ १३ १४ ॥ बरहतेअंगविरहनिउतीदरदसु अबलासुं
 क्यामाण कैमिलिहोकेतनतजो सुणिहोकंतसुजाण ॥ ज
 नहरिदासकासुकहुं अयणांघरकीलाइ ज्यो जाल्यातुं
 हीजल्या जलिवलिरह्यासमाइ २ विकलसर्द्विलंबेक
 हा तालाबेलीजोव हरिदासजनविरहनी मिलोसनेही
 घोव ३ अंतरिविरहाआईया रोमरोमसबतांदि जनह
 रीदासकेहरिमिलो कैअबजावांनाहि ४ अचिनासी
 आवूपहरे अपणोहिरदेधारि जनहरिदासनिरनेमते निरनेव
 सतविचारि ५ कफनीकफतासारिषी पहिरैविरलाकोइ जन
 हरिदासबिसअग्निमेपैसिकरि जलिवलिकोलाहोइ ६ ॥
 ७ ॥ प्रजाकोआं ॥ आगे ॥

। नमः ॥ श्रीप्रसादनेन श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ग्रंथ
 मेण अष्टयदीलिषिते ॥ रागसूत्रो ॥ एकविंश
 ॥ सवे अयांतवो अपेसयांन ॥ सत्तरजत्तमथैक
 षानिविसत्तारउपाया ॥ पंचत्तलेकीनबंधांत
 षिमांन ॥ अहंकारकीन्हंमायामोहासंपत्ति
 त्रकाह ॥ जलेरेपोच अकुलकुलवंता ॥ गुण
 वनवंता ॥ भूषयियास अनहितहितकीन्हं ॥
 रिलीन्हं ॥ पंचस्नादलेकीनां बधू ॥ बंधेकरंम
 अवरजीवजंतजेआहा ॥ संकटसोचजियापे

ताहा ॥ निद्या असत्तिमांनि अपिमांतां ॥ अहिज्जवेजीवह
 त्यागियांतां ॥ ब्रह्मविधिकरिसंसारत्तुलावा ॥ जूठे दोजगि
 साचलकावा ॥ मायामोहधंनजोबनां ॥ त्रैनिबंधेसबलोय
 जूठेजूठेवियापिया ॥ कबीरअलषलषेनहोकोइ ॥ १ ॥ जूठ
 निजूठसाचकरिजांतां ॥ जूठंनमेसबसाचलकांतां ॥ धंधं
 धकीन्हंब्रह्मतेरा ॥ करमविवर्जितरहेतनेरा ॥ षटद्रसनअ
 षमेषटकीनां ॥ षटरसषाटिकांमरसलीनां ॥ चारिवेदछह ॥
 सास्त्रबषांनै ॥ विद्याअनंतकथेकोजांनै ॥ तपतीरथकीने
 ब्रतपूजा ॥ धर्मनेमदांनपुनिहजा ॥ त्रोरअंगमकीनेबीहा
 राजदीगमिस्केवारनपारा ॥ लीलाकरिकरिनेषफिरावा ॥ वे
 टब्रह्मकबुकहतनआवा ॥ गहनब्यदकबुनहास्ते ॥ आप
 नगोपितयोआगंमबूजे ॥ स्तलियस्योजीवअधिकडराई ॥
 रजतीअधकूपकेआई ॥ मायामोहउनूसरपूरी ॥ दाडरदांन
 नियवनांपूरी ॥ तलफेवरिषेअषडधारा ॥ ऐंनितोमनीतयाअ

धा॥ वेदनि आहिकरुंकोमाने॥ जानि बूझिमें नया अयांते॥ न
 टव रूपषेले सब जाने॥ कलाके रगुन वा कुरमाने॥ वेषेले सब
 ही घटमाही॥ दूसरेके लेषे कबुनाही॥ जाके गुन सोईपै जां
 ने॥ ओरको जानै पार अयांते॥ नलेरे पोच ओसर जव आव
 करिसंनमान पूरि जतयावा॥ दान पुनि हंमद कुंति ससा॥
 कबल गर कुंनंटर सका बा॥ फिरत फिरत सब चरत रुगैते
 हरि चरत अंगम कथेको जांते॥ गाण गंधप मुनि अतन पा
 वा॥ रह्यो अलष जगुंधेलावा॥ अहिं वा जीसि वविरं चतुलं
 ना॥ अवर वपुराको कंचित्तु जांता॥ नाहिनाहिमें की न्हयुका
 रा॥ राषिराषिसाई अहिं वा ए॥ कोटि बसांड गहि दीन फिराई॥
 फल करकी टजनंमव कुंताई॥ ईस्वर जोगषराज बलातां॥ ट
 स्ये धांततय षंडतकी नां॥ सिधसाधिक उंन हूंते कौर्ष मगचि
 तधिरकहै कैसें है ई॥ लीला अंगम कथेको पारा॥ बिसकुस
 मीपकिर कुंनियारा॥ षग षोजपी छैनहं॥ तंतत अपरूपार
 विंति प्रचेका जानिये॥ कबीर सब ऊवा अंदकार॥ २॥ अलषनि
 रंजन लषेनकोई॥ निसे निराकार है सोई॥ सांति अस्थूल रूप
 नही रेखा॥ दिष्टि अदिष्टि छिप्या तहोपेया॥ वरत अवरन कथा
 नहो जाई॥ सकल अतीत घटि रह्या संसाई॥ आदि अतितादि
 नहंम धे॥ कथे न जाय आहि अकथे॥ अपरूपार उपजे न
 ही बिंतसे॥ जुगति न जानिये कौथिये कैसें॥ जस कथिये तस
 होत नही॥ जस है तेसा सोई॥ कहत सुंनंत सुप्र उपजे कबी
 रा॥ अरपर मार्य होइ॥ ३॥ जानसितहं कसकथसि अयां
 नां॥ हंमत्रि गुनत रुहसुर गुन करि जांतां॥ मंति करहीन कवं
 नगुन आहा॥ लाल चिलागि आसिरे रहाई॥ गुंन अरूप ग्यांन दो

हेमहीनां जैसी कबू बुध विचार तसकी नां॥ हेममति हीन
 बुद्धुगति न आवे॥ जो तुम्ह दरवौ तो पूरि जत पावे॥ तुम्ह
 चरन कवल मन राता॥ गुन निगुन के तुम्ह निज दाता
 तऊ वां प्रगटि बजावै जैसा॥ जस अत नै कथियाति तिसैसा
 ब्रजे जंत्र नाद धुनि होई॥ जे बजावै सो औरै कोई॥ बाजी नां
 वै को तिग देषा॥ जो न चवै सो किं न हूँ न पेसा॥ आप आप धै
 जो तिये॥ हे परिता ही सो याका बीर सुप नै के रा धन ज्य॥ जाग
 तहा धिन होय॥ ॥ जि निय ऊ स्य पिनां फुर करि जां नां॥ और
 सबै दुष या दिन आं नां॥ ग्यां त हीन चैति न हां स्ततां॥ में जा ग्या
 बिस हर सै स्ततां॥ पार धी बां नर है सरसां धै॥ विषम बां तम
 रे विष बांधै॥ काल अहेरी संक सिकारा॥ स्वा व्रज सुसा स कल
 संसारा॥ दा वान ल अंति जे रे विकारा॥ माया मोह रो किले जारा॥
 पवन सहाय लोत अंति नईया॥ जंम चर चा च ऊं दिसि फि रि
 गईया॥ जंम के चर च ऊं दिसि फि रि लागे॥ हे स पं ये सू अ व क
 हां जाई॥ के स ग है कर निस दिन र हई॥ ज व ध रि अं चै त व ध
 रि च हई॥ क वि न पा सि क बु च लै न उ पा र्वा॥ ज म ड वा रि सा धे स व जा र्
 सोई वा स सं नि रं मन गा वै॥ मृ ग त्रि षं षां ष्टा दिन धा वै॥ अ ति
 काल किं न हूँ न हि दे वि॥ दु ष कूं सु ष स व हा करि ले षा॥ सु ष क र
 मूल न ची न्ह सि अ सां गे॥ ची न्है बि तां स्हे दु ष ला गे॥ नी व की ट र
 स नी व पि या रा॥ यो वि ष को अ मृत क है सं सारा॥ वि ष अ मृत ए कै क
 रि सां न्या॥ जि नि ची न्ह ति न हीं सु ष मां न्या॥ अ ब त र ज दि न दि न
 हिं सि र ई प्र हरि अ मृत अ र वि ष षा र्ई॥ जां नि अ जां ति जि नो वि ष
 षा या॥ परे ल हरि पु को रें वां वा॥ वि ष कै यां ये का गुं न ही र्ई॥ जा वे द नि

बरुषीरवितासा ॥ तिलसुप्रकारनिदुषत्रसमेस्त ॥ चौरासीलप
 कीन्हाफेरु ॥ अलपसुषदुषआहिअनेता ॥ मतभोगलचुने
 मेमता ॥ दीपकजौतिरहेइकसंगा ॥ नैननेहमतपरैपता ॥
 सुषविश्रामकिंन्हनहिपावा ॥ प्रहरिसात्रऊवादिमिधावा ॥
 लालचिलारोजनमसिरावा ॥ अतिकालदिनआइतरावा ॥ जब
 लगहैयदुनिजतनसोई ॥ तबलगचेतनदेवैकोई ॥ जबनि
 जचलैकरैपयांनो ॥ तयोअकाजतबफिरिपिछितांनो ॥ मि
 गत्रिछांदिनिदिनिइसी ॥ अबमोहिकबुनसुहाइ ॥ अनेकज
 तंतकरिठारियो ॥ कबीरकरंमपासिनहीजाइ ॥ परैरेमनबु
 धिवंततंडारा ॥ आपआपनांकरौविचारा ॥ कंवंनसयांनकंवं
 नबौराई ॥ कहिसुषपईयेकहिदुषजाई ॥ कंवंनहरिषको
 विषमेंजांनो ॥ कोअनहितकोहितकरिसांनो ॥ कंवंनसारको
 आहिअसार ॥ कोअनहितकोहितहिपियारा ॥ कंवंनसाच
 कंवंनहैऊवा ॥ कंवंनकरुकोलागेमीवा ॥ किंहिजरियेकिंहि
 कीजेअनदा ॥ कंवंनमुक्तिकोगलकेफंदा ॥ रैरेमनमोहिबो
 रि कहि ॥ हुंततपूबौतौहि ॥ संसेसलसंबैतई ॥ कहिसंमका
 ईमोहि ॥ ६ ॥ सुनिहंसाहंकहंविचारी ॥ त्रिजुगजोतिसवैअ
 धियारा ॥ मनिषाजनमउतिमजोपावा ॥ जांनूरोमतोसयांन
 कहावा ॥ नहीचेतैतौजनमगमावा ॥ तयोविहानतबफिरि
 पछितावा ॥ सुषकरमूलनगतिजोजांनो ॥ औरसवैदुषया
 दिनआंनो ॥ अमृतकेवलरामपियारा ॥ औरसवैविषकेतं
 डारा ॥ हरिषआहिजोरंमियेंरंमो ॥ औरसवैविसमांकेकांम
 सारआहिसंगतित्रिबांनो ॥ औरसवैअसारकरिजांनो ॥ अ
 नहितआहिसकलसंसार ॥ हितकरिजांनियेंरंमपियारा ॥

साधसोईजोअधर करहाईकपजेबिनसेऊठकेजाई।पीवा
सोजोसहजेपावा॥अंतिकलेसतेंकसूकहोवा॥नांजरिये
नाकीजेमैमेरा॥तहांअनंदजहांरामनिहौरा॥मुकतिसो
ईजुआपापरजाते॥सोपदकहांजिंहिंअमित्तुलंगे॥आन
नाथजगजीवता॥दुलंनरामपियारा॥सुत्तसरीरधनप्र
हाजीयेरंतरवरपंषिविसियारा॥रेजीवअपनादुषनसंता
रा॥जहिंदुषेआप्योसबसंसारा॥मायामोहचूलेखबलोई॥
कंचतलासमानिकदीयोषोईमैमेरीकरिषणविगुता
जननीउदरिजनमकासूता॥बहुतैरूपतेषबहुकीनं॥जु
रामरणकोधतनवीनां॥उपजेबिनसेजोनिफिराई॥सुषक
थूलनपावैचाही॥दुषसंतापकलेसबहुपावै॥सोनमिले
जोजरतबहुजवै॥जहिंहितजीवराषिहैसाई॥सोअनहितके
जाइबिलाई॥मोरतोरकरिजरेअपारा॥मृगत्रिष्ठागृहीसं
सारा॥मायामोहऊठिरह्योलाग॥कासयोइहांकाकेहैआ
रा॥कचुकबुचेतिदेषिजीवअबदा॥मनिषाजनमनपावैक
बही॥आरआहिजेसंगपियारा॥जबचेतैतबहीउजियारा॥
त्रिजकजोनिजेआहिअचेता॥मनिषाजनमनयोचितचेत
आत्ममुरखिमुरखिजरिजाई॥पिछलेदुषकहैतैनसिराई॥
सोईवासजेजातेहंसा॥अजहुंजीवकिंनकरेसंतोसा॥जोसाग
रअतिवारनपारा॥तातिरिबेकाकरोबिचारा॥जहिंजलकंअ
दिअतिनहीजानियेताकोडरकाहेनसानियो॥कोबोदियको
षेवटआही॥जिहितिरीयेसोलजेचाहा॥संमजिबिचारिजीव
जबदेखा॥अहुंसंसारसुपिनकरिलेषा॥सईबुधिकबूषाननि

नेडे दूरि कथो नही जाई ताके चीन्हें प्रचापावा ॥ तई संमक्ति
 सूल्यो लावा ॥ भाव न गति हित बोदिथा ॥ सत गुर खे वं एहार ॥
 अलप उदिक तब जोणो ॥ कबीर गोपद घुर बिसतार ॥ चर
 गंथ डुप द लिखते ॥ राग सहो ॥ नया दया ल बिसहर जरि
 जागा ॥ गहा हां न प्रेम ल्यो लागा ॥ नया अनंद जीव नये उल्हा
 सा ॥ मिले रंम मनि पूरी आसा ॥ मांसि असा ठि र वि धरणि ॥
 जरा वै ॥ जरत जरत जल आय बुजो वै ॥ रूति के सुता इजमी स
 बजाग ॥ अंमृत धार हो इरर लागी ॥ जिमी मां हि उ वी हरियाई
 बिरहं निपीव मिले जन जाई ॥ संनिकां मनि के नये उबाहा ॥
 कारंनिके न बिसारी नाहा ॥ घेवत म्हा राम रंन नया मोरा ॥
 चौर सी लख की नां फेरा ॥ सेव ग सुत जे हेय अंनियाई ॥ गुंन
 ओ गुंन सब त्म हिंस माई ॥ अपनै अं व गुंन क हूंत पारा ॥
 इहै अना ग जे त्म न संसारा ॥ दर वै न ही कां यं त्म नाहा ॥ त्म
 म्हा बिबु रै मै व डु डुष चाहा ॥ मेघ न बरे धेरं जं हिं उ दा सा ॥ त
 उन सार्ग सागर आसा ॥ जल हर न सो ता हि न ही ना वै ॥ के सरि
 जाइ के उहै पिला वै ॥ मिले रंम मनि पुरवो आसा ॥ त्म म्हा बिबु
 स्यो मै स कल निराया ॥ मै र निरा सी जव नि धियाई ॥ रंम नां मि
 जीव जाणा जाई ॥ नल नी के जूनी र अधारा ॥ भिंत बिबु स्यं ये
 र बि प्रजारा ॥ रंम विनां जीव व डु डुष पावा ॥ मन पत्तं ग जागि
 अधिक ज रावा ॥ माघ मांस रूति परै तु सारा ॥ नयो बं सत तव
 वाग संसारा ॥ अपनै रं गि सब को ई राता ॥ मधु कर वास लेइ
 मै मंता ॥ बन की किलाना द ग हा ग हां नां ॥ रूति व संत सब के
 संनि मां नां ॥ बिरहै निरजनी जुग प्रति नईया ॥ बिति पीव मि
 ले कत पट लि गईया ॥ आत्म चेति संमक्ति जीव जाई बाजी ॥

रंमनिधिपार्श्वानयादयालनितिबोजेवाजा॥सहजैरंमनांम
नराजा॥जरतजरतजलपाईया॥सुखसागरकररसूता॥पुर
सादिकबीरकहि॥तागीसंसेसूला॥१॥रंमनामनिजय
सारा॥मिथ्याज्जसकलसंसार॥हरिउतंगेमेजातिपता॥जबक
कहरिकेजूसगा॥कंचित्तुकेसुपिनैनिधिपार्श्वानहीसोतावध
रेंलुकाई॥द्विदैनसंसाइजाननहीपारा॥लोगेलोसनश्रीरहक
रा॥संमिरतहंअपनैउतमांनं॥किंचितजोगरंममेजाना॥सुख
साधकाजानियेअसाधा॥किंचितजोगरंममेलाधा॥कुबज्या
होइअमृतफलबंछा॥पडुच्योतवसंनिपूगीइछ्या॥नीरैते
हरिहरिहैनियरा॥रंमचरित्रनजानियेजोयरा॥सीतथेअग्नि
फुनिहोईरविथेससिससिधेरबिसोईसीतथेअग्निप्रज
रई॥यलथेनिधिनियेथेयलकरईबज्रथेतिणषिणसीत
रिहोई॥तिणथेकुलसकरेपुनिसोई॥गिरवरवारवारगिर
होईअवगतिगतिजानेनहीकोईजहिंइरमंतिडोह्योसं
सारा॥परेअसूकितारनहीपारा॥बिषईमृतोकेकरिलीन
जिनचोन्हातिनकोसुखदीन्हं॥सुषडुषजंहिंबीन्हिन
होजानां॥असैकालसोगरूतिमांनं॥होइपतंगदीपमैपर
ईफूवेस्वादिलागिजीवजरईकराहिदीपकप्रहिंजुकूया॥
ऊअचिरजहंसदेविअनंया॥ग्यानहीनबोछीमंतिबाधा॥सुष
साधकरततिअसाधा॥दरसनसंमिकवसाधनहोई॥गंन
संमानपूजियेसिधसोई॥नेषकहांजेबधिअसुधा॥बिंणिं
चेजुगबूडणिंबूडा॥जदपिरविकहियेसुरआही॥प्लेरेव
नांसुरचाही॥कवकं कृतासंनहोइजराई॥कवकंअषंडध

उषदेषा ताकेसेइ मूठकूं सुषयावे। दोरे लानकूं सुलगंसावे
 अठतराजदिनिदिनें सुहोई दिवससिराइ जतं मुगयेषेई
 मृत्तिकालकिं नही नही देषा माया मोह धंत अंगं मत्रले
 षा। ऊवै ऊव र ह्यो उर जाई सा च अलषक बूलष्या न जाई
 साचे नीये रे ऊवै दूरी विषको कहे सजीवं न मूरी कथ्यो न
 जाइ नीये रे नही दूरी सकल अती तर ह्यो घट पूरी जहां
 देषों तहां रां मसमांतां। तुम्ह विनिगे र और नहां आंतां ज
 दपिर ह्यो सकल न र पूरी। ताव विनां अति अंतरि दूरी लो
 नपाय दो ऊं ज रे निरसा। ऊवै ऊव ला गिर ही आसा। अऊं वां
 के निज पग टि व जावा। सुष संतोष तहां हं मयावा। निशि उ
 विजस की नां प्रकासा। पाव कर ह्ये जै से का ए नि वासा। विनां।
 जुगति के से मंधिया जाई काष्टिया व कर ह्ये समाई कष्टे क
 ष्ट अग्नि प्रजर ई जारे दार अंगं नियं मिकर ई रां मक है तेरो मे हो
 ई। इषक ले स घाले सबयोई जनम के कलि विष जो हिं बिताई
 नरं म करं मका क बूनव साई। नरं म करं म दो ऊं वर तै लोई।
 इनका चरित न जानै कोई इनि दोऊ संसार सुलावा। इनके
 लोगें ग्यां न गं वावा। इनको मरं म पै कोई विचारी सदा आंन
 द ले ली न मुरारी। ग्यां न दिष्टि जे देषे लोई। इनका चरित सुअं
 नै सोई रजनी रज देष त अंधियारी। उसे मुंयं गं म विनिज जि
 थारी। तारे अगि नंत गुं न हिं अ धि कें डे पारा। तउ क बून ही ही
 त आ धारा। ऊव देषि जी व अ धि क ड र ई। विनां मुंयं गं म इसी
 इं नियाई। ऊवै ऊव ला गिर ही आसा। जे व मां स जै से कुरंग पि
 यासा। त्रि वा वंत द हिं दि सि फि रि आ वे। ऊव हिला गानी र न
 पावे। ऐक त्रि वा वंत अरू जा र ज र ई। ऊवी आ स ला गि म रि जा
 ई। नी कर ती र जां न प्र हरिया। करं म के बो धे लाल च क रिया।

हेमोरकबुवाहिनयाही॥तरंमकरंमदोउमतिगांवाडी॥तरंमकरीये
मंतिउयहरिसा॥खेनांवंसाचलेधरिया॥रजनीगतनईरवि
रगासा॥तरंमकरंमदोउकेरविनासा॥रविप्रकासतारेगं
मधीना॥आचारब्योहारसबमयेमलोनां॥विषकेदाधेवि
मनहीतावे॥जरतजरतखुषसागरपावे॥अनलज्जुगदिनधा
वेआसा॥अंधडरांधसहेडुषत्रासा॥एकत्रिषावंतहसरेरवि
तबडीरहदिसिज्जालाचक्रुदिसिजरडी॥करिसंनमुषजव
गंनविचारी॥संनमुषपरिया॥अगनिमंजारी॥गच्छताग
तजवआगोआवा॥वितउंनमांनठबुवाएकपावा॥सीतलसरी
रतवरद्वैसंमादो॥तहांबाडिकतदोकेजडीथोवा॥रूनिमनन
याहंमारा॥दाधाडुषकलेससंसार॥जरतफिरैचोरसीलया॥
खुषकरिमूलताकेंनहांदेया॥जाकेबाडेसयेअनाथा॥भूलि
पेरयावेनहिपंथा॥अबैअभिअंतरिनीयरेदूरी॥विंनची॥
हेकूपदीमूरी॥जाविनिहंसवकुतडुषयावा॥जरतजरत
गुरिरंमभिलावा॥मिल्यारामरहोसहजिसमाडी॥षिनिवि
बुस्याजीयअधिकजराडी॥जेमिलियातेकरैवधाडी॥प्रमानं
देरेनिदिनाडी॥सषीसहेलीलाबहुलाडी॥रूतिप्रमानंदते
टियेजाडी॥सषीसहेलीकरैअनंद॥हितिकरिनेटियेप्रमानं
हां॥चलीसषीजडंक्रानिजरंमां॥नयेज्जाहसबबाडेकांमां
जानिकमीरेसरसवसंता॥मैबलिजावंतोरेनगवंता॥नग
हेतिगांवेलेलीनां॥जुंबननादकोकिलाकीनां॥बाजेसंघ
बदधुनिबीनां॥तनमनचित्तहरिगोविंदलीनां॥चलअच
पाइंनमधुरनां॥मधुकरजुंथलहंआघरनां॥स्वावजसीद
रहेसबमांजी॥चंदस्तरहेरथयांजी॥गणगंधंमुंतिजो
देना॥अरत्तिकरि॥

करिबिसतारजग धंधेलाया॥अधकायाथेंपुरिषउपाया॥
जिंहिजेसीमनसातिहैतैसासावा॥ताकौतैसाकीन्हउपाव
तेतौमायामोहमूलांना॥असंमरंमयोकिंतऊंतजांना॥जि
हिंजांन्यांतेनिरमलश्रंगा॥नहीजांन्यातेनयेमुंवांगा॥तामु
षिविषआवेविषजार्द॥तेविषहीविषमैरहेसमाई॥सांता
जातभूतखधिनांही॥अभिमूलैतरआवेजांही॥जांनिबूजि
वेतेनहीअंधा॥जवरकरेमकामकेफंदा॥करमकीबांधौ॥
जीयरो॥अहिंनिसिआवेजाया॥मनिषादेहापाइकरिहरिबि
सरेतौफिरियांवेपछितादा॥तौकरिनाहिनेतिजाचंदा॥त
जिप्रकीर्तिनजिचरंनगोबंदा॥ऊदकूपतजोग्रनवासारैजी
यरंमनांमअन्यासा॥जगजीवंनिजेसैलहरितरंगा॥धिंन
सुषकौंमूलसिबऊंसंगा॥मगतिहांनजीवनकबुनांही॥उ
तपतिप्रलेबऊरिसमांहा॥आतिहांनअैसाजीवनां॥जनम
मरंनबऊकाला॥आश्रमअनेककरिसिरेजीयरा॥एमविनाके
ईनकरेप्रतिपाला॥५॥सोईऊपावकरिजुंयहुदुषजार्दयेसब
प्रहरिविषेसागाई॥मायामोहजरैजगआगा॥तासंगिजरसिक
वंतरसिलागा॥नाहिनाहिकरिहरिनपुकारा॥साधसगतिमिलि
करऊविचारा॥रेरेजीवनहीविश्रामां॥सबदुषषण्डणरंमका॥
नांमां॥रंमनांमसंसारमैसायांरंमनांमनौतारंमहार॥सुंमृत्त
वेदसबैसुण्णा॥नहीआवेकितकाना॥नहीजेसैकुडलवनंतमु
षानंकविनिसौनितरण॥६॥अवगाहिरंमनांमअविनासी॥
हरितजिजिनिकतऊंकोजासी॥जांहांजायतहांतयापतंगा॥११
अवजिनिजेसंमंकिविषसागा॥चौषारंमनांमसनिलीनां॥अ
गीकीटतावतसकीनां॥तवसागरअंतिवारनपारा॥तातिरि

वेका करौ ऊ विचारा ॥ मनि ता वै अतिल हरि विकार ॥ नहि गोमि
 सूके कबु वारन पारा ॥ सो सागर अति अथाह जला ॥ तामे बोहिय
 नां व अ धार कहे कबीर हं मरं म सरनि ॥ तातै गोप दधुर विय
 तार ॥ १ ॥ ३ ॥ ग्रंथ अष्टपद लिखते ॥ राम सहै ॥ कोई कोई ती
 र थ वर तल पटां नां ॥ कोऊ के ऊ केवल रं मनि ज जानां ॥ अज
 र अ म र एक अस्थानां ॥ ताका मरं म का हू खिर ले जानां ॥ जे नहि
 उपनां धरनि सरीरा ॥ ताके पंथिन सी चानीरा ॥ जहां नही लो
 सूरि ज के बां नां ॥ सो मोहि आनि देऊ कोई दानं ॥ जवन ही होते
 पवन नयां नी ॥ जवन ही होती सिद्धि उपां नी ॥ जवन ही होते प
 डन वासा ॥ जवन हिं होते धरनि आकासा ॥ जवन हिं होते य
 तन मूला ॥ जवन हिं होते कली नफूला ॥ जवन हिं होते सबद
 न स्वादे ॥ जवन हिं होते विद्या न बां दे ॥ जवन हिं होते गुरू न
 चेला ॥ गामि अगामे पंथ अकेला ॥ अब गतिकी गतिका कहं
 जस कर गा वं न गां वं ॥ गुं न विहं नां का पे धिये ॥ का करि धरिये
 नां व ॥ १ ॥ आदम आदि सुधिन हिं पार्श ॥ सं मां ह वा क हां तै आ
 र्श ॥ जवन हिं होते रं म प्रदा र्श ॥ साषा मूल आदि न हि पार्श ॥
 जवन हिं होते त्तर कन हिं हं ॥ माता का उदर न पिता का बि
 ष ॥ जवन हिं होते गा इ क सा र्श ॥ तव या ह बि स मि ला किं नि सु
 र मा र्श ॥ भूले फिरे दी न दो र्श धां वै ॥ ता सा हि व का पंथ न पां वै ॥ सं
 जो गे करि गुण धस्या ॥ वि जो गे गुण जाइ ॥ जि त्या स्वार थि आय
 गौ ॥ की जे व ऊ त उ पा र्श ॥ २ ॥ जितिक ल मां क लि मां ऊ प ग या कु
 दर ति धो ज ति न्हौं न हिं पा या ॥ करं म करी म न ये कर चू ता ॥ वे
 द कु रं न त ये धे री ता ॥ किं तं सं न ति औ र ज ने ऊं ही इ त्तर क
 न जां नै नै ऊं ॥ मन म स ले की सु धिन जां नै ॥ म ति नू ला दे दी न व
 किं तं सो ज प्र ति औ त रि या ॥
 किं तं सो ज नां व ज स ध रि या ॥

जे। पांणी पवन संजो इकरि। करि लीनी उतयाति। सुंतिहि
बद संमाइगा। तब का कहिये कुलजाति। आतुरकी धर्म बडं
हम सो धा। बडं बजगार करै ऐवो धा। गाफिल गार बकरै अधि
गार्। स्वारथि अरथि बधै ऐगार्। जाको रुधइ कै पीजे। ता
गता कुं बध क्यूकीजे। लऊरै थकै इहिया यायी रा। ताका अह
तप नये सररा। वे अकली अकलित जाणही। मूले फिरै ऐलोइ
देल दरिया दीदार बिनि। निस्तिक हों थै होइ। आ पंडित मूले
पटि गुणि वेदा। आप उपावै नां नां तेदा। संयात्र पंन अस्त सट करमा
लागि रहेइ निके आ अमा। गावत्रा जुग चारिय दारी। पूवो जाइ सु
कि कि निपाई सब मै रं मर है लें सा चा। इ न तें और कहौ को ना चा
अति गुंन प्रब करै अधिकारी। अधि कै य बिन होइ न लाई। जा
कौ वा कुरय ब प्रहारी। सो कै सें अब स है स हारी। कुल अति मा
न विचार तजि। थो जी पट चि वां ना अं कूर बी न न साइगा।।
तब मिले ब दे ही थाना। पा। षत्री करै षत्रिया धरं मा। ता कौ है
इ स वा या कर मा। जी व हि मा रि जी व पि ति पा रें। दे ष त ज न म
आप नों हो रें। पंच सु भा व जु मे टै का या। सब तजि क्रं मं जे रं म
रा या। षत्री सो ज कुं टं ब सो। जी प चो मारि ऐ कौ बू जे ए आ
व ध गुर गं निल या वा। गदि कर वाल धूप धरि धा वा। हे ला
करै नि सां नां घा का। ऊरु परै त हां मन म थ रा का। मन म थ मे रे
न जी व डै जी वं न म रं न ही होइ। सुं नि सं ने ही रं म वि नि थो ग
ये अ पं न पो षो वा। हा अ र मू ले ष ट द र सं न ना डी पा ष ड ने य रे हे
ल प टाई। जे न बो ध अ रू सा क त से नां। चार वा क च त्प र ग वि
हं नां। जे न ना व की सु धि न जा ने। पा ती तो रि दे ऊ रें। आ नें। हं नों म
र वा चं प क फू ला। ता में जी व व से क र ह ला। अ रू प्रि थ मी कारे
म उ पा रें। दे ष त जी व को टि

रा॥ कहेरूपतबंदधयेतहिंदा॥ तिनकोहत्याकेश्रदत्त
 ता॥ षटदरसनमेंजेनविगृह्णा॥ ग्यानअमरपदबाहिरा॥ नी
 राहीतैद्वरि॥ जिनिजांन्यांतिनिनिकटिहै॥ रद्यासकलतरपू
 रि॥ ७॥ आपनकरतातयोकुलला॥ बडविधिसिष्टिश्चीद
 रहला॥ विधनांकुंत्तकीयेदेधाना॥ प्रितिब्यंवतासांहिंसम
 नां जवरअग्निदीनाप्रजारी॥ धतामहिआपकरीप्रितिपार
 नांतरथेजबवाहरिआवा॥ स्योसक्तीदेनावधरवा॥ तले
 अमिपरेजिनिकोई॥ हीदुत्तुरककुकुलदोई॥ घरकासुत
 जेहोयअंयांता॥ ताकेसंगिकोंजायसयांता॥ साचीबातकहै
 जेवास्ये॥ सोफिरिकहैदिवांतातास्ये॥ गोपिभिनिहैयेकेइधा॥
 कास्येकहियेवांसनसदा॥ जिनिंयकुचित्रवणईया॥ सोसा
 चासुत्रधारा॥ कहेकबीरतेजननले॥ चितवतलेहिंविचारि॥ ८
 ॥ १॥ गंधबारहयदीलिषते॥ रातसूहो॥ पहलीमनमेंसुभिरों
 सोईजासमितुलिऔरनहांकोई॥ कोईनसूजेवास्येप्रांतां॥
 आदिअंतिवौकिंनकूनजांतां॥ रूपअरूपनआवेबोला॥ हरू
 गरूकबूजाइततोला॥ नूयनत्रियाधूपतहीबांही॥ सुषड
 परहतिरहैसबमांही॥ अबगतिअपरंपारब्रह्म॥ ग्यानरूप
 ॥ बडतविचारकरिदेधिया॥ तोकोईनसारिषारा
 म॥ १॥ जोत्रिभुवनपतिवोहैअसा॥ ताकारूपकहौधोकैसा॥
 सेवगजनसेवाकैतांई॥ बडतनांतिकरिसेवगुसांई॥ तैसी
 सेवाचाहौलाई॥ जासेवाविनिरह्योनजाई॥ सेवकरंतांजो
 डषसाई॥ सोडषसुषवरिगिणहंसवाई॥ सेवकरंतांसीसु
 षपावा॥ तिनिसुषडुषदोकुविसरावा॥ सेवागसेवतुलांनि
 यां॥ पंथकुंपंथनजांत॥ सेवागसोसेवाकरहुं॥ जंहिसांदिब
 सलमान॥ २॥ जहिंजगकीतसकीतसकेही॥ आयेआपआ

हो। कोई न जानै वाका सेवु। तेउ होइ तपोपवक।
नै आगे न पावु। अर धन ऊर धन रूप त ही की वृ। मर्दन वाप
ए नहि जावा। जो वहि जाणो न वहि को जावा। विंहे तसा वोही
ते। वोही आहि आहि नहि आंते। नै ना वै न अगो चरी। अवन
रनी पार। बोलैण का सुषकारणो। कबीर कहिये सिरजन ह
अ। सिरजनहार नो वधूतेरा। भवसागर तिरिवेको तेरा। जे
कुतेरा राम न करता। तो आपै आप आवटि जग मरता। राम
उसोई मे हरिज की न्हो। तेरा साजिसंता को दी न्हो। डस बंढण
महसंडण। सगति मुक्ति विप्राम। विधिकरि तेरा साजिया
धस्वारं मकां नाम। धा। जिनिय कुतेरा दिठ करि गहिया। ग
ये पारति नही सुबल हिया। इमतां के जिनचित्तु डुलावा।
कर बिटके थै घाह पावा। एकहु विरहे उर वारा। ते जे गिजे
न राष हारा। राषण हारे की कबू जगति न की न्हो। राषण गहा
न पाया ची न्हो। जिनि ची न्हो ते निमल आगा। जे अची न्हो ते नय
पतंगा। रामनां मल्यो लाइ करि चितचेतनि के जागि। कहे कबी
रते कबरे। जेरहे राम ल्यो लागि। य अच्यत अवागति हे निधार।
जाणो जाइ न वारन पारा। लोक वेद थै आंछे निया रा। बाडिर
हो सबही संसारा। जस करणो वन गवन घेरा। कैसे गुनवर
नो मै तेरा। नही तहारूप रेष गुनवानो। असा साहिब है अबु
लाना। नां सो ज्ञान बिधन ही वरा। आपै आप आपन पोतार
कहे कबीर विचारि करि जिनिकोई लावो तगा। सेवा रतन मन
लाइ करि राम रह्या सरवागा। ध। नही सो हरि नही सो नीयरा।
ही सो तावानही सो सीयरा। उरिषन नारिकरे नही कीरा।
मन धाम न बापे पीर। नदी न नाव धरनि नही धीरा। न

रा॥ कदंरं लपत बंध धसै तहिं दार॥ तिन को ह त्या केश्रदत्त
 ता॥ षट्दरं सन मै जैन विगहता॥ ग्यानं चं मरपदवा हिरा नी
 राही तें दूरि॥ जिनि जां न्यां तिनि निकटि है॥ रद्या सकल तं रप
 रि॥ ७॥ आपं न कर ता न यो कुला ला॥ बडु विधि सिष्टि रची द
 रहला॥ विधनां कुं स की ये दे धानां॥ प्रिति बंध वता मां हिं सम
 नां जवर अग्नि दी ना प्रजारी॥ ४॥ ता म हि आप करी प्रिति पार
 नी तरथें ज व बा हरि आ वा॥ स्यो स की दे नां व ध रा वा॥ तले
 अ मि प रें जि नि को ई॥ हीं हू त्पु र क ऋ व कु ल दो ई॥ घर का सु त
 जे हो य अं यां तां॥ ता के संगि को जा य स यां नां॥ सा ची वा त क है
 जे वा स्युं सो फि रि क है दिं वां नां ता स्युं गो यि नि ति है ये कै इ धा
 का स्युं क हि ये वां नं त सू दा जि नि य डु चि त्र व ण ई या॥ सो सा
 चा सु त्र धार॥ क है क बी र ते ज न त ले चि त व त ले हिं वि चारि॥ ८
 ॥ १॥ गं घ वा रा ह य दी लि ष ते॥ रा ग सू हे॥ पह ली म न मै सु मि री
 सो ई जा सं मि त लि श्चो र न हीं को ई॥ को ई न पू जे वा स्युं प्रां तां॥
 आ दि अं ति वीं किं न कं न जां नां॥ रूप अ रूप न आ वे बो ला ह रु
 ग रू क बू जा इ न ती ला॥ नू य न त्रि या धू प न हीं बां हीं॥ सु ष ड
 ष र ह ति र है स ब मां हीं॥ अ व ग ति अ प रं पार व ह्म॥ ग्यां न रूप
 स व मां म॥ ब डु त वि चार क रि दे षि या॥ तो को ई न सा रि धारं
 म॥ १॥ जो त्रि त्तु वं न प ति वीं हे अै सा॥ ता का रूप क हीं धीं कै सा॥
 से व ग जं न से वा कै तां ई॥ ब डु त नां ति क रि से व गु सां ई
 से वा चा हो ला ई॥ जा से वा विं नि र ह्यो न जा ई॥ से व करं तां जो
 ड ष ता ई॥ सो ड ष सु ष व रि गिं ण हूं स वा ई॥ से व करं तां सो सु
 ष पा वा॥ तिं नि सु ष ड ष दो क वि स रा वा॥ से वा ग से व त्तु
 यां॥ पं थ कुं पं थ न जां त॥ से वा ग सो से वा क र डुं॥ जं हिं सां हि व
 त ल मां न॥ २॥ जं हिं ज ग की त स की त स के हीं॥ आ ये आ प

थिहेही॥कोईनजानेंवाकासेवु॥तेउहीइतौयावेकेउ॥वावेन
दाहिनेंआगेनयाबू॥अरधनऊरधनरूपनहीकीबू॥माईनवाप
आवेणनहिजावा॥नोवहिजाणानवेहिंकोजावा॥वोहेंतैसावोही
जानें॥वोहीआहिआदिनहिंआंतौनैनानावेनअगोचरी॥प्रवंना
करनीपार॥बोलेणकासुषकारण॥कबीरकहियेसिरजनह
रा॥सिरजनहारनावधुंतेरा॥भवसागरतिरिवेकोतेरा॥जे
यकुसेरांमनकरता॥तौआपैआपआवटिजगमरता॥रंम
गुसाईमेहरिजकीन्हं॥तेरासाजिसंताकोहीन्हं॥डयबंधण
महसंडण॥तगतिमुक्तिविश्राम॥विधिकरिनेरासाजिया
धस्वारंमकानामा॥धा॥जिनियकुनेरादिठकरिगहिया॥ग
येपारतिनहांसुयलहिया॥डंसवांकेजिनिचितपुडुलावा॥
करबिटकेधेघाहपावा॥एकहुबिरहेउरवा॥तेजुगिजरे
नराषहारा॥राषणहोरेकीकबूजुगतिनकीन्हं॥रंषणगहार
नपायाचीन्हं॥जिनिचीन्हंतेत्रिमलअगा॥जेअचीन्हतेनये
पतंगा॥रंमनांमल्योलाइकरि॥चितचेतनिंकेजागि॥कहेकबी
रतेकबरे॥जेरहेरंमल्योलागि॥पा॥अंचंतअवगतिहेनिधारा॥
जाणयाजाइनवारनपारा॥लोकवेदयेअबैनियारा॥बाडिर
होसबहीसंसारा॥असकरगावंतगावंतषेरा॥कैसेंगुनवर
नोमेंतेरा॥नहीतहांरूपरेषगुनबांनो॥अैसासाहिवहेअकु
लानां॥नांसेज्जानविधनहीबारा॥आपैआपआपनपोतार
कहेकबीरविचारिकरि॥जिनिकोईलावोतंग॥सेवोत्तनमन
लाइकरि॥रंमरह्यासरबंग॥घा॥नहीसोहरिनहांसेनीयरा॥न
हीसोतातानहीसेसायरा॥उरिषननारिकरेनहीकीरा॥घा
मनधांमनबापेपीरा॥नहीननावधरंतिनहीधारा॥नहीरे

काचनहीसोहरा॥ कहै कबीर विचारिकरि॥ तासंलाषीहेत॥
 वरणविवर्जितकेरया॥ नांसोस्यांमनसेत॥ ७॥ नांवोहवारह
 व्याहवरता॥ पीतपितंबरस्यंमतरता॥ तीरथवरतनआवे
 जाता॥ मचनहीमूनिवचननहीवाता॥ नादनविदगारयनही
 गाथा॥ पवंतनपांणीसंगतसाथा॥ कहै कबीर विचारिकरि
 ताकेआथिनताहि॥ सोसाहिबकिंनसेईये॥ जाकेधूपनबो
 हि॥ ८॥ तासाहिबकेलागडसाथा॥ डयसुपमेटरह्योवोहनथा
 नांसरथघरिओतरिआवा॥ नांलंकाकारवसेतावा॥ देवा
 कीकृषिनओतरिआवा॥ नांसवेलेगीदबिलावा॥ बावंनही
 इनहीबलिबलिया॥ धरणीदेतलेनउधरिया॥ गंडुकसातिग
 रंमनकोला॥ मंबकंबकेजलांहनडोला॥ घारमंतीसरीरनबा
 ड्रा॥ जंगनाथलेपिंडनागाआ॥ नांननिगोवरधंसकरधरिया॥
 नांवोहकारनिकेसंगिफिरिया॥ बडीबैसिनध्यानधरवा॥ प्र
 सरंमकेषत्रीनसेतावा॥ कहै कबीर विचारिकरि॥ येवैला
 बोहार॥ याहीथेजेअंगमहे॥ सोबरतिरह्यासंसार॥ ९॥ नांत
 हिंसबदनस्वादनसोहा॥ नांतहिमाइनहीताहीमोहा॥ नांतहिंसा
 ससुसरतहांसारा॥ नांतहिंरोजनरोवणहारा॥ नांतहिंस्रुतिपा
 नांतहिंसाइनदेवनयापिगा॥ नांतहिंविधिवधा
 वाबाजे॥ नांतहिंगीतनादनहीसाजे॥ नांतहिंजातिपांतिकुलती
 का॥ नांतहिंछोतिपवित्रनसीचा॥ कहै कबीर विचारिकरि॥
 वोहैपदत्रिबानसतिलैमवतहारायिये॥ जहांनहूजाआन॥
 १०॥ नांसोआवेनांसोजाइ॥ ताकेबंधपितानहीमाइ॥ चारवि
 चारकबुनहिंवाके॥ ऊंनमंनिलागिरहीजेताके॥ कोहैआदिक
 वनकाकहिये॥ कवनरहणीवाकाकेरहिये॥ कहै कबीर वि

हगलनीर इंद्रास्वारथिसवकीया वांधात्तमसरार शोके
पवंतरेकहीपांन करीरसौईनारीजानी मीठीसूलेमाटीपे
ती कहेकहांधौलागीबोती धरतीलीपिपवित्रसुकीनी
बोतीउपाइलीकविचिदीनी याकाहंमसूंकहोविचार
क्यूतोतिरिहोअहिआचारा करिआचारअरजीवसंतावा
नावविनांसंतौषनपावा सालिगरंमसिलाकरिपूजा तरसी
तोरिउणेनरपूजा रोपाषंडजीवकेनरमां मांनिअमांनिजीव
केकरंमां साचांसीलकाचौकाभीजे तावउगातिकरिसेवा
कीजे भावउगातिकीसेवासांते सतरउरकहेप्रगटनहीबोने
अनसेउपजीनममहराई परकीरतिमिलिमनिनसंमाई
जबला तावउगातिनहीकरिहो तावलासवसागरनहिति
रिहो तावउगातिविसवायविनि कटेनसंसेसूला कहेकबीर
हरिउगातिविनि मुक्तिनहीरेमूति ॥४॥ ६॥ यथयकलाहगर
लियता हसकलगहगरा सफसफादिलदारदीदारतिरी
कुदरतिकिनहंतजांनो पीरमुरीदकाजीमुसलमांतीदेई
देवाणगंधप बह्माइंद्रमहेसा तेरीगातितिनहंतजांनी
काजीसोजीकायाविचारे तेलदीपविनिवांतीजारेतेलदी
पमेंवातीरहो जोतिचीन्हिकबूकाजीकहो ॥२॥ मुलंतांवादेई
खरजांनी आपमुसलावेवेतांनो अपनमेंजोकरेनिवांजा
सोमुलनांसरवंतरिगाजा ॥३॥ सेषसहजमेंमहलउगावा ॥
चंद्रसूरबिचितारीलावा अरधउरधविचिअंनिउतार
योईसेषतिहूलोकपियारा ॥४॥ जंगमजोतिविचारेअहंसा
जीवसीवदेउरेकेवंकेवां जिचितचेतनिकरिपूजातावा
तेतौजंगमनांवकहावा ॥५॥ जोगीनसंमकरैसैसारी सहेती

गहैविचारिविचारी॥अननेघटप्रचासूबोले॥सोजोगीनिहंच
 लकदेनडोले॥६॥जैतजीवकाकरोऊविचारा॥कौएजीवका
 खउधारा॥कहांबसेचौरासीकादेवा॥लहेसुक्तिजोजाएते
 ७॥नगतातिरणमतेसंसार॥तिरणततकौलेऊविचारी॥
 प्रीतिजांनिरांमजोकहै॥दासनांमसोभगतालहै॥८॥पंडित
 चारिवेदगुणगावा॥आदिअंतिकापूतकहावा॥उतपति
 प्रलेकहैविचारी॥संसाधालेसबेनिवारी॥९॥अरधकउर
 कयेस्यांन्यासी॥तेसबलागिरहेअविनासी॥अजरंवरकौ
 ठकरिगहै॥सोईअकहपुरिसकौलहै॥१०॥जहिंधरचालर
 बसंडा॥प्रिथमीमारिकरीनोषंडा॥अबगतिकीगति
 जाईदासकबीरअगहरंमंस्यो॥रहेरंमत्योलाई॥११॥७॥
 कबीरजीकासप्तवारगंधलिष्यंते॥बारबारहरिकागनगावे॥ग
 रंगभितेदसहरकापोवे॥टेका॥आदितकरैभगतिआरंभक्यासं
 दिरमनसायत॥अषंडअहिनिमिसुरख्योजाया॥अनददवेनिस
 जमेंबाइ॥१२॥सोमवारससिअमृतऊरोचाषतवेतिसबेदिसतेरे
 बाणारेकौरहैघारमनमतिवालापीवनहरा॥शांभुगलवा
 लेमांहीतिपंचलोककीबाउऊरोति॥घरबोडैजिंतिबाह
 या॥नहिंतौषरोरिसावेराया॥अबुधवारकरिबुधिप्रकासाहि
 दाकंवलमेंहरिकौवास॥गुरगंमिंदोउयेकसंमिकरोअरध
 कतैसूधाधरो॥अबिसपतिविषयादेयवहाशातीनि
 संगिलाइ॥तीनिनंदीतहात्रिकुटीमांहा॥कुसमलधोवैअ
 निसिन्हंदि॥१५॥सुकसूधालेअहिब्रतचढै॥अहिंनिसिआ
 आपसूलहै॥सुरषापंचरावियेसबे॥तोइजादिष्टिनयेसेकवे
 १६॥धावरधिरिकरिघरमेंसोइ॥जोतिदीवटीमेल्हीजोया॥

चोरे। पांचूजातिरामल्यो लावे। सो जनजा निपसपदपावे। १७। त
 पबलवकुत अरुलेवोटा। पकुचिनसक्यां विहीलता साधन
 साधतबटै अहंकारा। भौसागरे विचिरुले हिंधारा। १८। बूडे
 बकुतपराये सारे। रामविनां को पारउतारे। अंधअचेतकूप
 पडि मूवा। विषे विसारिनसदा गतिरुवा। १९। सदागति साध
 सारविणिनाही। जहिंधिररामबसे घटमाही। मांही बसतहो
 यगजियारा। अमक्रमका दूटै हितारा। २०। तालात्तुटै हितवेस
 चहोई। अकलपरहत विघंतनहां कोई। धीरजधरे प्रेमल्यो
 लावे। रामरंमै सो रामसंमावे। २१। हरिकै नाय प्रीति जे लागी। आ
 वागं वणमिटे तौ लागी। मनका विषे विकारनजांही। स्वारथसो
 गधरे कबुनांही। २२। नाटकचेटक सांगकहाया। हरिविनिम
 कलकालिबलिषाया। जंत्रमंत्रपटिदोषदिमूला। उद्वउपावक
 रे हरिमूला। २३। पायासकलबहसकी माया। कर्मकरतहरिधि
 तिनही आया। ऐसीसकतिसवे वसिकीया। स्यौसकरबसा
 वसिकीया। २४। देषिसरुसमोहनीबाया। त्रिभुवनपतिआदि
 माया। जीवतजीवनबंचाकोई। आसापासिवंधि
 २५। उबसाकोई दसनिरासा। ताकाचितहरिवर
 हंसजीवंतकी कौणचलावै। जूंजलमोहिबुदबु
 दादिषावै। २६। विनसतवेगिनलावै वारा। सजेतरामकरै अ
 हिंकार। थोरसी आवभजननही कीया। तनधरिकहां
 कीयो धिगाजीया। २७। नाडीही एपही तनषीनां। रामकथा
 सुमिरणनही कीन्ह। ऐसारांमनां मततसारा। तातजिअंमि
 पडासंसार। २८। अबलगभगतिमुकतिकी आसा। तबलग
 हरिसुनां हिंवेसाया। पूजापातीदेई देवा। रामविनां सबकुवी
 सेवा। २९। येकघटकमपाकआचारी। हरिविनिबहोतवि

मुचेनारी पारब्रह्मकातजिविसवासा मूवापुंनिजातकीअ
 सा ॥२०॥ आपणमैरैऔरजिवोवै ॥ विनित्रोषदिवडेवेदकहं
 वै ॥ करणीकथणीपांनआचारांरामजातिपदऊंनस्युंन्य
 रा ॥२१॥ अबसाडवधास्युंजनन्यार ॥ जिनिजांनिकेवलराम
 संहारा ॥ त्रैसारंमअकलअसेवा ॥ ताकीकरिजांनैकोईजन
 सेवा ॥ २२ ॥ सेवरासोजसहजिहरिसेवै ॥ मनकूपकडियेमरासिने
 वै ॥ निसदिनेअपनैजीयाधारे ॥ जनजीवंनअपनोंनविसारे ॥ २३
 खेसनौसौजेप्रमविसवासी ॥ रहेनिरसपरैनहोयासी ॥ धनि
 सोईसाधजयाचौसाधे ॥ जंजंसेसोतजिअबगतिआराधे ॥ २४
 धापंडितसेजोपददिविचारे ॥ अहिंनिसिब्रह्मअग्निप्रजा
 रे ॥ बकतावेदनेदजोसोधे ॥ निगंमविचारिअगंमआरोधे
 २५ ॥ ताकीप्रीतितहिंबंनिआई ॥ जहिंघरिस्वरतितहीघ
 रिजाई ॥ जगतंमस्युंन्यारहोई ॥ पारब्रह्मगातिजांनैसोई
 २६ ॥ जबलगअपनाघटनहीसोधे ॥ तबलगजातिमुक्ति
 कोषेजे ॥ जबलगघरतजिबहुरिजाई ॥ तबलगदासनरां
 सहिपाई ॥ २७ ॥ जबलगत्रकसुराकीआशा ॥ जबलगहरि
 स्युंनोहिंवेसासा ॥ जबलगरागदोषजीमअंनै ॥ तबलगजन
 नहीरंमपिबानै ॥ २८ ॥ रांमरमैसौरंमसमावै ॥ आपनोआप
 आपदिषतावै ॥ आसाअकलसकलप्रमाया ॥ अपनांतेदन
 देयरेनाया ॥ २९ ॥ अंतरिआपनिरंतरिबाया ॥ इतउतकहैत
 नकिंनहूनपाया ॥ जहिंजतिरंमआसतजिगायो ॥ ताकीदि
 छिप्रंमपदआये ॥ ३० ॥ निजजतनांवेनिरससंमहारे ॥ लील
 पदनिबाणविचारे ॥ तासादिवकाप्रगटपसारा ॥ बोदेवल
 तनमिलेअपारा ॥ ३१ ॥ अबधाधरे

स रोस

बदस्यतिकरिजांनै॥ धंति सोई साधजुरं मगपासी॥ हरिसूंमि
 लिज्जुगसाधउदासी॥ ४२॥ ताकै चरंनिसरंनिजोरहेये॥ तोअ
 नैअमोलिकहरिफलपईये॥ जबलगसाधसमांगमनाही॥
 करमगपायकरेकबुमांही॥ ४३॥ साधसबदस्यूतालाषू
 टै॥ आवागं वणनरंमसबबुंटे॥ आवागं वणमिंटेसचपावै
 गरनवासिफिरिबडूरिनअवे॥ ४४॥ अिसारंमअलष।
 अविनांसी॥ ताकोदासपरैक्युपांसी॥ हरिदरियामेंमुक
 ताऊले॥ रंमसुमरिदुबध्याअधपेले॥ ४५॥ डबध्याधरेसं
 रंमनपावै॥ योंहाफिरिफिरिजनमंगंमावै॥ काहूकेमनि
 केसीअई॥ मोहिप्रमगुरिइहेवताई॥ परमातमजुत
 तविचारै॥ कहेकबीरताके॥ बलिहारे॥ ४६॥ १०॥ अंध
 जोपदाइसरीलियते॥ जांमणमरणमहाडुषतारी॥ हरिसूंमि
 रणयेमिंटेविकारी॥ साधसंगतिजैयकुंमनलावै॥ ताकुं व
 डूरिनविषेसंतावै॥ १॥ साधसंगतिकीकुंचीकला॥ बलवि
 नसेकैतिरला॥ निरबलकाबलकध्यानजाई॥ प्रबलका
 लवाकुंनहीषाई॥ २॥ कामकष्टतिनिही प्रजास्या॥ जिनि
 हिरदैहरितां वविचास्या॥ नां वविचारअमोलहै॥ सुणैसं
 तचितलाइ॥ जांणिअजांणिजोहरिसंजै॥ निफलकदेना
 जाय॥ ३॥ १॥ जोजबहरिकीसेवालागो॥ डुषमिंटेअमसब
 हीनासो॥ जां वंप्रतीतिधरेमनमांही॥ तेनरकबडुंनअवे
 जांही॥ ४॥ रंमनांमऊंचानीसां एण॥ हरिकुंजाणोसंतसया
 एण॥ क्रियेणवां कुंकदेनदेये॥ लागिरह्यामायाकैलेये॥ ५॥
 मायालेदीन्हांहैजाई॥ अंमिचूलेजांमैमरिजाई॥ जांमैमरै
 महाडुषपावै॥ मूरिषअजहूनरंमैधावै॥ ३॥ सूरिषअज

तेहिं सदा अबू रूपांत ॥ लोभमाहक बसि क
बाडा अभिमान ॥ ४ ॥ २ ॥ ये अभिमान सदा डष संवे
या स्पूक बड न होइ न लाई ॥ ये प्रहरि जे हरि स्पूलागे
होतै ये संसा मोगे ॥ १ ॥ हरि द्वै दीन बंध सुष दाई ॥ माता पि
कोई गौं न चाई ॥ पुत्र दारा वा के क बुनाही ॥ प्रेम मर
वा के मन मांही ॥ असा चा संत की सेवा मानै ॥ राम क दे रा
ता क जां नो ॥ षती बां न ए क बुन लेषो ॥ हरि सु मि रे हरि
ग क देषो ॥ ३ ॥ हरि अंग म अगा ध है ॥ नि ए कार है सो द्रा सा
म न के संगि रहै ॥ न्यारा क बड न होय ॥ ४ ॥ ३ ॥ ऐ सो हरि की प्र
बल माया ॥ जो जग न या सुं उं न हा षाया ॥ जि नि सि र ज्या ता क
जां नो नो ही ॥ नू लि र ह्या ज हां का त हीं ही ॥ सा या बंध न ले स व ल
गो ॥ स्त ते स दा क ब ड न हीं जो गो ॥ ५ ॥ सा ध मि ले ज व णां न ब षां नो
हं म ऊं चे म नि अै सो अौं ॥ ऐ सानो च यं र म जु ग मां हीं ॥ अ प
ण ग ति कूं जां नो नो हीं ॥ २ ॥ ऊं च नी च व धो सं सा र ॥ हरि ज न
हरि के प्रा ण अ धा रा ॥ जं त अ पु त्र घ रि स प ति आ ई अै से मे रे सं
त सु ष दा ई ॥ ३ ॥ ऊं च नी च स व उ ध रे ॥ जे ला गे हरि नां मि ॥ क वी
र मू रि ष म र म न जां नो हीं ॥ नू लि र ह दे वे कां मि ॥ ४ ॥ ४ ॥ १ ॥ ॥
॥ अ गा ध बो ध ति षं ते ॥ औ धू अै सा णां न क थो रे ॥ जा कौं बू नै वि
र ला को ई ॥ ब ह्या वि ष कुं मे र पु लिं ड ॥ ई स न जां नो सो ई ॥ ५ ॥ ५ ॥ त
र दि ष ण पू र व प षिं मा ॥ च्य रि च क के रो से ला ॥ चो दा लो क जी
उ र ग मि तौ ॥ करौं ब हू स्म मे ला ॥ २ ॥ पे सि य या लि से स कूं ना य
द स वा रा परि मे लौं ॥ वै कूं टां स्पू ग र ह ह का लो ॥ अै सा रं म ति ष
॥ ३ ॥ रा जा परि जां जु ग स्पू का ठो ॥ सु र ते ती सों सा रो ॥ चं द अ र
र सा त सि पे लो ॥ क र वि नि अ व र फा डो ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३ ॥ च्य रि

चारिआवतजि। नोस्यनेहनबांधो। नोगावलीपरिपान
 धारो। सुरतिगिगनिकुंसांधो। ५। सीघलदीपचलाउंमं
 तरा। आणिकसैबासं। नोनाथचौरासीसिधा। तिनतै
 आगमनिवासं। ६। कांजीमुलापीरअवलिया। मुनियरके
 टिअग्रासी। कोहघरसुनिसकलतैन्यारा। अकलपुरिस
 अमिनासी। ७। निराकारकेपरचेषैलो। अविहडपदआ
 राधो। देवदेऊराताहूतैविवर्जिता। असीसेवासाधो। ८। सा।
 यरसातहजिहासोषो। मेरसिषरकूटाहो। कालीऊनधोइ
 विनिपांनी। ९। सविधिरंगचंढाऊं। ए। आरिवेदव्याकरण
 सासत्र। अष्टादसपुराणा। चौदाविद्यासुनिसबदमें। अग्रह
 आणिसंसाणा। १०। नोसैनदीकूपमेंबासो। वौद्विजोगाण्डो
 हो। निरमलनीरजुगतिकरिणयो। बांबंनबीरदियांऊं। ११
 बहदसंण। आणवैपाषंड। कोईनजोएमरमां। सहजसुना
 इरंमगुणरंमतां। आयवौवोताघरमां। १२। संगजनालिउपा
 डोंजडतै। आणअनलमेंरेयो। दासकबीरविचारेअसीअ
 हिंविधिप्राणसमोषो। १३। १३। अचरंमैणीकबीरजीकीध
 सूराणा। अंथा। १४। १४। रंमनिरंजनाउरगोविंदा। अविनांशीहरि
 जंनंदा। श्रीनिरंजनायन्मा। सबदीगोरबनायजोकीलिम
 तो। बस्तीनसुंमंसुंन्यंतवस्ती। आगमअगोचरअसा। रागनि
 सिषरमहिंवालि कबोले। ताकानांबंधरौगेकैसा। १५। अदेषि
 देषिबादेषिविचारिवा। अदिष्टिणषिवाचीयां। पातालकीभा
 बहंडचगथवा। तहांविंमलजलपीया। १६। यहहीआठेय
 हांहीअलोप। यहांहीरचिलेतानित्रिलोक। आबेसगोरहै
 जुवा। ताकारोणअंततसिधाजोगेस्वरऊवा। १७। वेदकतेव

स

प्रबन्धीकीतलिआणी ॥ गिगनिसिषरचडिस
 । हां वृजो अलषविनांणी ॥ धां अलषविनांणी
 लो। तीनि सं वं न एक जीती ॥ तास विचारत वि
 यो सांणिक मोती ॥ पा। विदेन सास्त्रिक तेवेन कु
 ष्यान जाई तेप द जां एत विरला जोगी ॥ और
 ॥ हसि बाषेलि वार ह वार गा ॥ कां म कौ धन क
 बाषेलि बागा इवागीता ॥ दिडिकरि राषि वा अ
 सि बाषेलि बा धरि बा धां ना ॥ अहिं नि सि क थि

पाष ह्या गायाना ॥ हे सैषे लेन करे मन मंगा ॥ ते नि श्रु लर है सि ध वै
 संग ॥ का मन मुषि जा ता गुर मुषि ले का ॥ लो हां सां स अ रि मुषि
 दे का ॥ सा त पि ता की मे टे धा ता ॥ अे सा हो इ बु ला वे ना थ ॥ ए ॥ ना
 थ क हं तां सब जुग नां थ्या ॥ गोर थ क हं तां गी ई ॥ क ल मां कां मु
 महं मं द हो ता ॥ पहि ला मू वा सो ई ॥ १० ॥ स दै सा री स दै जि ला ई
 अे सा मं हं मं द पी र ॥ ता के सरं मि न चू लै का जी ॥ सो व ल न ही सं
 री रा ॥ ११ ॥ मं हं मं द मं हं मं द न करि का जी ॥ मं हं मं द का वि षं म वि
 चारं ॥ मं हं मं द हा थि कर द जु हो ती ॥ लो हा ग डी न सा रं ॥ १२ ॥
 सा रं म सा रं ग हर गं ती रं ॥ गि ग नि र्ठे लियाना दे सां णि क पा या
 फेरि लु का या ॥ फु त्वा वा द वि वा दं ॥ १३ ॥ को ई बा री को ई वि वा द
 जो गी कौ वा द न कर णं ॥ अ व स वि ती र थ सं मं दि सां वौ ॥ यो जो गी
 कूं गुर मुषि ज र णं ॥ १४ ॥ अ त म ति हिं दू ज र णं जो गी ॥ अ क लि पी
 र मु स ल मां नी त्रे रा ह ची न्हो हो का जी मं लां ॥ जे व ह्या वि ल मं हे
 स्वर नें जां णी ॥ १५ ॥ मां न्यां सब द चु का या दुं दां ॥ नि श्चै रा जा सर
 शा ॥ अ चै गो पी चं दा ॥ नि श्चै न र वै न ये नि दं दा ॥ अ चै जो गी अ सां न
 द ॥ १६ ॥ अ हि नि सि म न ले उं न मं नि र हो गं म

ध

कहै आसा बोढेरहे निरासा॥ ब्रह्मा कहैहौं ताको दासा॥ १७॥ अ
 रधैजाताउरधैधरै॥ कामदाधजेजोगीकरै॥ तजेअलिंण
 कोटेसाया॥ ताकाबिस्रपषालैपाया॥ १८॥ अजपाजपैसुनिं
 मनधरै॥ पांचोईदीनियहकरै॥ ब्रह्मअग्निमहिहोसैकाया
 तासमहादेवबंदैपाया॥ १९॥ धनजोबनकीकरैनआसा॥
 चितनराषैकामेणियासा॥ नादबिंदजाकेघटिजरे॥ ताकी
 सेवापारबतीकरै॥ २०॥ बलैजोबनिजेनरजती॥ कालइकाल
 तेनरसती॥ फुरतैजो जनिअलपन्नहारी॥ गोरषकहैसोका
 याहमारी॥ २१॥ पूरणपेटतबहोकैसती॥ जोतिमुयेकहोवे
 जती॥ धनबिनसेवैरागीत्यागी॥ नाथकहैतेबडाअडोसागी॥ २२॥
 सबदहीतालासबदहीकूची॥ सबदहीसबूजाया॥ सबद
 हीसबदजबप्रचाहुवा॥ तबसहृहासहसमाया॥ २३॥ सबद
 बंदैरेअवधूसबदबंदै॥ ध्यानमोनसबधंधा॥ बंदतगोरष
 नाथआत्माबिचारी॥ जूंजलमध्येचंद॥ २४॥ सबदबंदैरेअ
 वधूसबूबंदै॥ सबदैसीरुंतकाया॥ निन्यणवैकोडिराजराज
 तजीला॥ प्रजाकाअंततपाया॥ २५॥ पंधविंनिपुलिवा॥ अ
 ग्निविंनिजलिवा॥ अनीलत्रिषाजअहंटिया॥ मयंमवेदश्री॥
 रषनाथकथिया॥ बूकिल्योपंडितपठिया॥ २६॥ गगनिमंडलमै
 धाकूंवा॥ तहांअमृतकावासा॥ सगरहोइसुनरितरिपीवै
 निंगुरामरैपीयासा॥ २७॥ गगनेनीसंततैजेनसौषंत॥ पवंतेने
 लंतबार्शमहीनारेननाजंत॥ उदकेनबूबंत॥ कहुंतोकोपति
 यार्श॥ २८॥ वाससहेतासबजुगवास्या॥ स्यादसहेतामीवा॥ साच
 कहौतौसतपुरमानै॥ रूपसहेतादीवा॥ २९॥ मरेरेजोगीसरंतोहै
 मावा॥ जिमसमरिजिसमरणामरैतिसगोरषदीवा॥ जीवताम
 रिबामरिकैजीवा॥ अमीमहारसतबनरिपीवा॥ ३०॥ पा

वाइवापाइवाधापिबानांहा॥ चालिवाधाइवाधाकिबानांहा॥ ले
 टिवापलोडिबसोइतंहा॥ दसिंवाधेलिवावेडिबानांहा॥ १॥
 हवकेनवौलिवा॥ प्रवकेनचालिवा॥ धीरैधारिवापात्रं गर
 वनकरिवासहजैरहिवा॥ यौंत्तणतगोरषरांवा॥ ३२॥ नरिया
 तेथीरत्फलकंततेआधा॥ सिधेसिधमित्यात्रवधू॥ वोल्यात्र
 रलाधा॥ नाथकहैप्रतषिप्रवांणी॥ पारिषपुरिषदिदिमुषिके
 णी॥ ३३॥ नाथकहैसुरेरेत्रवधू॥ दिठकरिराषोचीयां॥ कांसके
 धअंहकारनिवारो॥ तौसवेदिसंतरकीया॥ ३४॥ स्वामीबंदपंडि
 जांऊंतोषुधाभ्योपे॥ नंगरीअंऊंतोमाया॥ नरितरिषाऊंतोति
 ।द्राव्यापे॥ वंसीऊंतजब्यंबकीकया॥ ३५॥ धोपतघाइवाधूप
 नमरिवा॥ ईणिविधिलेवावसअमिकसेवं॥ हसनकरिवाप
 डेनरहिवा॥ यौंवेल्पागोरषदेवं॥ ३६॥ योडाकेलेचोडमाइ
 ताघटिपवनारहेसमाअरागनिमंडलमेंअंतदवाजे॥ प्यडपडे
 तौसगरलाजे॥ ३७॥ अत्रधूअहारतौडौनिद्रामिडौ॥ क्वकं
 नहोयबोरोगी॥ नागवंगवनासपत्ता॥ यैकोइविरलाजोगी॥
 ३८॥ अत्रधूअहारकोतोडिवा॥ पवंतकूपलटिवा॥ यैकबहो
 इगारोगी॥ वैवैमोसेकायापलठेचि॥ नागवंगवनासपत्ताजे
 गी॥ ३९॥ देवकतोतैसजामिरहिवा॥ ततकवाअहरं॥ मनपुत्र
 नांलेऊनमनिरहिवा॥ तेजोगीततसारे॥ ४०॥ अत्रधूनिद्राके
 घरिकालजंजाल॥ अहारकेघरिचारे॥ मेइयूनकेघरिजुग
 वियापे॥ ४१॥ अत्रधूअहारकेघरिचारे॥ अत्रधूनिद्राकेघरिजुग
 नांसेग्यांनसेयूनचिचधरे॥ आवेनिद्राजपेकाला॥ तके
 दिसदाजंजाल॥ ४२॥ अहारनिद्राजपेकाल॥ कैसैकरि

करिजोडौ॥४३॥ स्वरजेषाइवाचंदेसोइवा॥ उतैनयायवापां
 ण॥ जीवंचाकेभलिम्वानविद्याइवा॥ यौबोल्यागोरषवाणी
 ॥४४॥ जीवताविद्याइवामूवावोडिवा॥ कबऊनहोइमारोगी
 वरसंवेदिनिकायापलटे॥ तेकोईकोईविरलाजोगी॥४५॥
 जलकेसंजमिअटलआकास॥ अन्नकेसंजमिंजोतिहोप्रक
 स॥ पवनकेसंजमिलागोबंध॥ विदकेसंजमिथिरिहोवेकंध
 ॥४६॥ अन्नकामांसअनिलकाहाड॥ ततकाबंधचालतचाड
 फेरिवावाइसाधिवाजोगा॥ बंदतंगोरषनाथरेअषेसोगा॥४७॥
 आसणदिठअहारदिठ॥ जोनिंदादिठहोइ॥ गोरषकहो
 सुंणोरेश्रवधू॥ मरेनबूबाहोइ॥४८॥ तवजाणिवाअन्नहद
 काबंध॥ नपडै॥ त्रिचुवननपडै॥ कंधरातअस्सेतअगथेन
 हाबूटे॥ तोजोगीकहंतांहिवडानफटे॥४९॥ जबलगेपेटपूठि
 नहीबीअहंटे॥ जबलगरकरेतनहिसहंटे॥ चितचेतनि
 करिकरमनकाटे॥ तोजोगीकहंतांहिवडानफाटे॥५०॥
 बडेबडेकुलेटूटेपेट॥ नाहींसूतागुरूस्यूसेट॥ षडषडकया
 त्रिमलनेत॥ जबजाणिवागुरूकाहेत॥५१॥ मोटेपेटपंडुअ
 स्थूल॥ जोगीजुगतिनजाणेमूल॥ पायासातफुलायापेट॥ ना
 स्थूल॥ ५२॥ मिलियासतगुरदीनीदिष्या॥ उति
 णीमांगोसिष्या॥ नाथकहैतुंमसुंणोरवाला॥ अणतैअ
 नहदषूटेताला॥५३॥ सिष्याहंमारीकांमधेनिबोलिये॥ संसा
 रहंमारीबारी॥ गुरप्रसादेंसिष्याषाइवा॥ अंतिकालिनहोइगी
 मारी॥५४॥ षात्रैवऊतचलावैबोटा॥ जोगीनांउपंथकाषोठ
 अलपहारीपात्रपूर॥ नाथकहैतेपंथकासूर॥५५॥ स्वांगका
 पूरणानकार्कर॥ पेटकाटूटाडिंसकासूर॥ बंदतंगोरष॥

नाथनपायजोगा॥ करियाषंडरिऊयलोगा॥ ५६॥ पेटकीअग्नि
विवर्जिता॥ दिष्टिकीअग्निषाया॥ प्रपानगुरकाअग्निहीहीता
तेविरलेअवधूयाया॥ ५७॥ बडुनषियेकेदीजेबाडि॥ कतौगुरु
जीयकुविधिमाडि॥ यायेहंमरियेअणयायेहीमरिये॥ गोर
षकहेपूतासंजमिंहतिरिये॥ ५८॥ थोडायाइतोकलपेऊल
पे॥ घाणघाइतोरोग॥ दकुपयाकीसंधिविचारे॥ सोकोईवि
रलाजोगा॥ ५९॥ दावेनमारिबाषालीनघांषिवा॥ जांणिबात्र
सअग्निकातेवा॥ बूढेहीथेगुरवांणीहोइगी॥ सत्यसत्यनाथ
तथीगोरषदेवं॥ ६०॥ जिस्यास्वारथिततनषौजे॥ हेलाकरे
रवाचा॥ अग्निविक्रंणबंधनलोगे॥ डलिकिजाइरसकाचा
॥ ६१॥ तरिनरिषाइडलिडलिजाइजोगानहीरेपूतावाडीबांल
इसंजमिरहेसोवेनजागे॥ जादविंदअस्थिरकालकर्मनोगे
॥ ६२॥ इंडीकालडबडाजिस्याकाफूहसा॥ गोरषबोलेतेप्रवषिचू
हडा॥ काबकाजतीमुषिअम्रतवाणी॥ सोसतिगुरिषागतिम
जाणी॥ ६३॥ अवधूमनचंगातोकवोटीहीगागा॥ बांधापेल्हा
तौजगत्रवेला॥ नाथकहेजबदयाआइगयादोषतबमुक्ति
नाई॥ ६४॥ किरियाहंणसबदकास्सरा॥ कारिजसिधितप्र
वर्तपूरा॥ सीषीसाधिविसाह्याबरा॥ नाथकहेपूताषोठानष
रा॥ ६५॥ पारैषिरंतषाटेऊरंता॥ मीवैअपजंतरोगा॥ गोरषकहे
सुणारेअवधूअनपांणीहोइजोगा॥ ६६॥ आलसनिंद्राढीक
जंताई॥ उदगारअपांनअरूंआंनसंमाडी॥ गोरषकहेअधा
तंमयेहासाधंतजोगीदेहबदेहा॥ ६७॥ अजरीकरताअम
रीरषे॥ अमरीकरताबाई॥ नोगकरताजोविंदरषे॥ तोगोर
षकअमरनाई॥ ६८॥ सगामुषिविदअगनिमुषिपार॥ जोरषे

सोमगुरुहंमारा गोरषकहैसुणोरेयता नादविंदलेअहिनि
 ता ६५ अवधूईसुरहंमाराचेलातणीजे मंडिद्वबोलियेनाती
 शृष्टी मरिमरिजाती अहेउलटासिष्टिकरिथापी ७० सा
 कासबदसोनांकीरिषा निगुराकौ चाणिक सुगराकौऊपदे
 नाथकहैसतिनहांनाती जातिप्रवाणैलागेनाती ७१ रोस्
 लास्तारोगी नृषानिषिकतोलाभोगी गोरषकहैसरयवासं
 इंनमेंनिपजेनांहाजोगी ७२ घटिघटिगोरषवाहैक्यारीजे
 पजेसोहोइहंमारी घटिघटिगोरषकहैकिंईशी काचेतां
 हैतपाणी ७३ घटिघटिगोरषफिरैनिस्तता कोघटजोगेके
 ठस्तता घटिघटिगोरषघटिघटिसीना आयाप्रचेगुरमुषि
 चीन्ह ७४ केताआंवेकेताजांहिं केतासांगेकेतायांहिं के
 रूपवृषतलिरहै गोरषअणैकेकास्येकहै ७५ अवधूव
 ऊणतचूलणनाही नषीजंतअज्ञांती सहाषीजीजीवैवा
 दीमरेऊपाधाकापंडपडे ७६ प्रथमिरेतीबाडिबाअवधू
 कैसनेसअरुदेस सायांसितामीहफुनि ताजिबासामर
 कैउपदेस ७७ कोईनिदेकोविदे कोईकरेहंमाअआसा
 गोरषकहैसुणोरेअवधू यऊपंथपरऊदासा ७८ जोगी
 इप्रनिंदाफषै मदमांसअरुतांगिनषेरेकोत्रसोयरिया
 रकहिजाय सत्यसत्यताषंतआगोरषराय ७९ अवधूसं
 समषंतदयाधंसकोनास मदपीवंततहंप्राणनिरास तांगि
 नषंतज्ञानध्यानषीवंत तेप्राणीजसदाररोवंत ८० सूकेकं
 वअरुनूषवियापे देहं विसरजननिंदाब्यापे बुधिविणिव
 केविकलकैजाइ तांथेगोरषसागिनषाइ ८१ चढतीअरेऊ
 तरतीबाई तांतेविजियासिधौंनषाई नाथकहैरेअमल

प्रवांणी॥ जोगी जोग अध्यांतमवांणी॥ ८२॥ यां वडियां प्राफिस
 लै अं वधू॥ लोहै बीजे काया॥ नागा मूनी हृधा धारी॥ ऐता जोगान
 पाया॥ ८३॥ हृधा धारी प्रघरि चिता नागाल कडी चाहे निति
 मूनी करे सित्रकी आसा॥ विनांग दडी नहं॥ विसवासा॥ ८४॥ दि
 वंण जोगी रंग चंगा॥ पूरबी जोगी बादा॥ पछिमी जोगी बला तो
 ला॥ पसिध जोगी उतराधी॥ ८५॥ अत्रवधू पूरब दिसा व्याधिकारे
 गा॥ पछिम दिसा मृत्तिका सोगा॥ दक्षिण दिसा माया का सोगा॥
 उत्तर दिसा सिधां का जोगा॥ ८६॥ जोगी सो जोग मन जोग वै॥ विणि वि
 ला घति राज जोग वै॥ कंनिक का मणी त्यागो दोषा॥ सो जोगे स्व
 र तिने होइ॥ ८७॥ संन्यासी सोई कर्म सरवनासा॥ गानि मंडल मे
 सोई आसा॥ अंन हृदस्य मन के न मंतिर हे॥ सो संन्यासी अंगम
 की कहै॥ ८८॥ दरवेस सोई जो दरकी जांणें॥ यां चूप वंन अष्टव
 तांणें॥ सदा सुचे तर है दिन रता॥ सो दरवेस अलेह की जाती॥
 ८९॥ डंडा सो जो आ पा डंडे आवत जाती मन साषंडे॥ यां चोई इंद्र की
 सर दे माना॥ सो डंडी कहिये तत समाना॥ ९०॥ पाषंडी सोई जु काय
 पषाले॥ उलटा पंवन अग्नि प्रजाले॥ विंदन देई सुपिनै जाना॥ सो
 पाषंडी कहिये तत समाना॥ ९१॥ धूतार ते जो धूते आये॥ नि
 ष्या सो जे मन ही संताप॥ अरु वपटण में निष्या करे॥ ते धूतार थि
 वपुरी संचरे॥ ९२॥ घर बारी सो घर की जांणें॥ बाहरि जांता नी
 तरि आंणें॥ अब निरंतरि काठे माया॥ सो घर बारी निरंजन क
 काया॥ ९३॥ यही सो जोग है काया॥ अति अंतर की त्यागो मा
 या॥ सहज सील का धरे सरीरा॥ सो ग्रह चरनों कानीरा॥ ९४॥
 अत्रधू अमरा त्रिमल पाप न पुंनि॥ स्तर जतं विवर्जित सुनि
 सो हंसा संभरे विधि॥ तिहि प्रमारण सनंत सिंध्या॥ ९५॥ म

सोमगुरुहंमारा गोरषकहैसुणोरेयता नादविंदलेअहिनि
 ता ॥६॥ अवधूर्धस्वुरहंमाराचेलातणजे मंडिद्वकोलियेनाती
 शिष्टी मरिमरिजाती अहेउलटीसिष्टिकरिथायी ॥७॥ सा
 कासबदसोनांकीरेष निंगुराकौचाणिका सुगराकौऊपदे
 गायकहैसतिनहीचांती जातिप्रवाणैलागेनांती ॥७१॥ रोस्त
 तास्तारोगी नृषानिषिकतोलाभोगी गोरषकहैसरयवासे
 नमेंनिपजैनांहीजोगी ॥७२॥ घटिघटिगोरषवाहेक्यारीजे
 जैसोहोइहंमारी घटिघटिगोरषकहैकिंहीं ॥ काचेतांते
 तयांणी ॥७३॥ घटिघटिगोरषफिरैनिस्त ॥ कोघटजोगेको
 टस्ता घटिघटिगोरषघटिघटिसीन ॥ आयाप्रचेगुरसुमि
 चीन्ह ॥७४॥ केताअंवेकेताजाहिं केतासांगेकेतायाहिं केत
 रूसवृषतलिरहै गोरषअणसेकास्येकहै ॥७५॥ अवधूर्ध
 मणांतनूलाणांनही नवीजंतअचांती सहीषोजीजीवैवा
 दीमरेऊपाधीकायंडपडे ॥७६॥ प्रथमिरेतीबाडिबाअवधूर्ध
 केसनेसअरुदेस सायाससितामीहफुनि ताजिबासमर
 केउपदेस ॥७७॥ कोईनिंदैकोविदै कोईकरेहंमाश्रीआया
 गोरषकहैसुणोरेअवधूर्ध यऊपंथषराऊदासा ॥७८॥ जोगी
 होइप्रनिंदाकषे मदमांसअरुतांगिनषे रेकोत्रसौपरिया
 नरकहिजाय सत्यसत्यनाषतआ गोरषराय ॥७९॥ अवधूर्धसा
 समषतदयाअंसकोनास मदपीतंतहं प्राणनिरास तांगि
 नषतज्ञानध्यानषोवंत तेप्राणीजमघाररोवंत ॥८०॥ सूकेकं
 वअरुनूषवियाये देहं बिसरजननिंदाव्याये बुधिविणिव
 केविकलकै जाइ तांथेगोरष नागिनषाइ ॥८१॥ चढतीबरेऊ
 तरतीबाई तातेंविजियासिधौनषाई नाथकहैरेअमल

प्रवाणी ॥ जोगी जोग अध्यांते मवाणी ॥ ८२ ॥ सां वडियां पगफिस
 ले अत्र धू ॥ लोहे बीजे काया ॥ नागामुं नीह धा धारी ॥ ऐता जोगान
 पाया ॥ ८३ ॥ इ धा धारी प्रघरि चिता नागाल कडी चोहे निरि
 मुं नी करे सिंक्र की आसा ॥ विनांग दडी नही विसवास ॥ ८४ ॥ ए
 षण जोगी रंगा चंगा ॥ त्रबी जोगी वादी ॥ पठिमी जोगी बहाती
 ला ॥ सिध जोगी उत्तराधी ॥ ८५ ॥ अत्र धूपूर बदि साव्या धिकारो
 गाय विंम दिसा मृत्तिका सोगा ॥ दधिण दिसा माया का तोगा ॥
 उत्र दिसा सिधां का जोगा ॥ ८६ ॥ जोगी सौ जोग मन जोगी वे ॥ विंणिंति
 लाघति राज तो गवै ॥ कंनिक कां मणी त्यां रों दोष ॥ सो जोगी र
 र विने ही ॥ ८७ ॥ संन्यासी सोई कर्म सरवनासा ॥ गानि मंडलां
 सोडे आसा ॥ अन हृदस्यं मन ऊं नमंति र हो ॥ सो संन्यासी अंगम
 की कहै ॥ ८८ ॥ हर वेस सोई जो दर की जांणें ॥ यांचुं पत्रं न अत्र व
 तांणें ॥ सदा सचे तर है दिन राती ॥ सो दर वेस अंते हकी जाता ॥
 ८९ ॥ डंडा सो जो आ पा डंडे आवत जाती मन सायें हो ॥ पांचो डंडा प
 सर दे माना ॥ सो डंडा कहिये तत समाना ॥ ९० ॥ पाप डी सो डंडा का
 पयावे ॥ अटा पवन अग्नि प्रजाले ॥ विंदन दे वं सपि नं जान ये
 पाप डी कहिये तत समाना ॥ ९१ ॥ शूतार ते जो धूतें आं पें स
 म्या तो जे नही संताप ॥ अडव पटणं गं निप्या करे ॥ तें दृत्तार ग
 वपुरी संचरे ॥ ९२ ॥ घर वारी सो घर की जांणें ॥ वार्ही रजाता ना
 तरि आंणें ॥ अब निरंतरि कोठे माया संघर वारी ॥ निरंज नकी
 काया ॥ ९३ ॥ यही सो जोग दे काया ॥ अग्नि अंतर की त्यां रों म
 या ॥ सहज सावका धं रं सर री ग सी प्रदी ॥ वरं नो का
 अत्र धू आर नि सत्त पाप न प्रं नि ॥ सर ग
 सो हं हं स विं वि वि ति दि प्र सर अ प्र सं रं

ध्यान अग्नि विंदन जाई ॥ १४७ ॥ उलटिया पवन वट चक्र बे
 या ताते लो है सो षिया पांणी चंद्र सुर दो उ नि ज घ रि रा षे
 अ ल ष वि तां णी ॥ १४८ ॥ उ ल टी स क्ति च ठे ब ह्म ड न ष च ष प व
 र म् स र ब अ ड उ ल टी स क्ति रा ह कौ ग है सि ध सं के त श्री गोर ष
 है ॥ १४९ ॥ सूर मां ही चंद्र चंद्र मां ही सूर पंच चेत निते क ड वा
 ले त्तरा तां णं त गो षे ना थ ऐ य द प्प र ॥ ना जं त च्छं ह सा धं त सूर ॥
 ५० ॥ ष र त र प वं न नि रं त रि व है बी जे का या पिं ज र र है स न
 वं न चं च ल जि नि ग्र हिया बी ले ना थ नि रं त रि र हिया ॥ ५१ ॥
 ई क टी वि कु टी त्रि कु टी सं धि पं षिं स द्वा रै प वं नां धं धि दू टै ते
 न बु के दी वा बी ले ना थ नि रं त रि की वा ॥ ५२ ॥ ना द वि द व जा
 ले दो ऊ प्प रि ले अ न ह द वा जा इ कं त का वा सा सो धि ले च र
 री क है गोर ष मं षिं द्र का दा सा ॥ ५३ ॥ ना द ना द स व को ई क
 ना द हिले को ई वि र लार है ना द वि द है फी की सि ला जिं
 ध्या ते सि धां मि ल्या ॥ ५४ ॥ ना द हं मा रे वा वै कौ न ना द व जा य
 टै पौ न अ न ह द ना द वा ज तार है सि ध सं के त ज ती गोर ष क
 ॥ ५५ ॥ प वं न ही जो ग प वं न ही नो ग प वं न ही ह रै चो स वि रोग
 या प वं नां का को ई जां णे ने व सो अ प्पे कर ता अ प्पे दे व ॥ ५६ ॥
 अग्नि ही जो ग अग्नि ह नो ग अग्नि ही ह रै चो स वि रोग या अ
 का को ई जां णे ने व सो अ प्पे कर ता अ प्पे दे व ॥ ५७ ॥ विं द ही
 ग विं द ही नो ग विं द ही ह रै चो स वि रोग या विं द का को ई
 ने व सो अ प्पे कर ता अ प्पे दे व ॥ ५८ ॥ लाल वी लं व अ म्
 त रिया मू ड र है उ र वा रं थि ति वि कृ णं म्हा जो ग ॥
 र त पा रं ॥ ५९ ॥ प डि दे षि पं डि तार हि दे षि सारं आ प णं
 उ त रि वा पा रं व दं त गोर ष ना थ क हि धौ सा षी घ टि घ टि दी

मणियसूनदेवैआंवी॥१६॥आमअगोचरहेनिहंकोमासं
गुफामांदिबिसरंमाज्जगतिमज्जोभंजोगीरतिअनकाहके
आवेहाथि॥१६॥मनमुषजोगीसीबडअंहकारीसतिक
भवदउवेदैकायाकेवलअपसरवोलेअंतरिततकसूदे
१६॥सुसदेहाएवेधिलेअवधुजिहाकरिलेदकसालाजो
गुणमधेगुणकरिलेतोचलासकलसंसारं॥१६॥गोरयकहे
सुणारेअवधुजुगमेंअसैरहंणं॥आंघ्यादेषिवाकांनंअण
बापणिसुसतैकबूनकहिणं॥१६॥गोरयकहेसुणारेअवधु
सुसयालंतेंडरियोलेमुदगरकीसिरमेंमेहैतवविणंदीषूद
सरियो॥१६॥सरियसमानवेसिवारेअवधुपडितसूनकरि
बाबादंरजासंयामेअनकरिबाहेलेनषोडवानांदा॥१६॥
अंतीसुअंतसरियसूंसुनिबादविवादबीजतयोजजहांजे
सातहोतेसागोरयवोलेअवधुपांनअसा॥१६॥मनमहिरहण
नेदनकहंणं॥बोलिवाअंअतवाणी॥आगिलाअबिहीइबाहे

प्रवांणी॥यैसिधासोतंतसुधिवुधिकीवांणी॥१६॥विरलाज
एंतनेदंनमेदं॥विरलाजांणंतदोइयअबेदं॥विरलाजाणत
अकथकहाणी॥विरलाजांणंतसुधिवुधिकीवांणी॥१७॥
सरिया॥नीअरअरतारहिया॥आंडातेगुर
१७॥यंडेहीयतोय
नव्यसारं॥१७॥कहणिसुहेलीर
हणिकहेली॥कहणिरहणिविणियोथी॥पढागुणंस्ववा
१७॥कथणी

दबूकि आसणपवनउपद्रहकरे निसदिनिआरतपचिय
चमरे २०१ सुस्तकपढेनपढितहोइबा पवनेनसोक्तव
या विंदरयेतेजतीनजांनिवा जबलगप्रमततनहापाया
२०२ उनमनिजोगीदसवैद्वार नादविंदलेधूधूकारदसवै
द्वारेदेइकपाठ गोरषषोजाओरैवाट २०३ विंणियचैहा
जोगवषांनै पवनसाधिप्रमारथसांनै प्रमततकाहोइना
रमी गोरषकहै सोमहाअधमी २०४ उनमन्यरहिवासेदत
कहिवा पीवानीरैरुपाणी लंकाबाडिप्रलंकाजाइबा तब
ग्रमुषिलेबावाणी २०५ आरंभेजोगीकथीलाएकसार विं
णियजोगकरेसरीरविचार तलबलब्यंदधरीबाइकतोलै तब
जांणिबाजोगीआरंभकाबोलै २०६ घटिहारहिवामननजा
इबाहरिअहिंनिसिजोगीपीवैवाणीसुरास्वादविस्वादबाइ
कातषिण तबजांणिबाअवधूघटकालषिण २०७ प्रवैजो
गीउनमंनिकलाअहिंनिसिईबांदेवतांमिलाषिणषिण
जोगीनांनारूप तबजांणिबाजोगीप्रचैसूरूप २०८ निस्य
पतीजोगीजांणिबकैसाअग्निपाणीलोहनसांनैजेसा राजाप
जासंभिकरिदेयो तबजांणिबाजोगीनिस्यपतीकातेष २०
दिष्टिअग्नेदिष्टिलुकाइबा सुरतिलुकाइबाकांननासि
अग्नेपवनलुकायबा तबरहिगयापदत्रिवाण २१० उ
र्मधूमज्वालाजोति सूरिजकलानखिपैबोतिकंचनकम
लकिरणियसरय जलमलदुगंधसबसोष्याजाइ २११ नीरु
ररुणंअंभोरसपीवणं षटदलवैध्याजाइ चंद विडंणं
दिणं तहांदेव्यागोरषराय २१२ अरधउरधविचिधरीगवा
यमधिसुनिमहिबैवाजाय मंतिवालाकीसंगतिआइ कष
तगोरषनाथप्रमगतिपाई २१३ यायालोभलयायालो अ

आंनसहेतीधित्ती॥रूपसहेतीदीसंणलागा॥तवप्यंडनईप्र
 ।ती॥२१॥अवधूमनसाहेमारीगेदबोलिऐ॥सुरतिबोलिऐचे
 ।न॥अंतहृदसबदलेषेलणलागा॥तवगगानिनयामेंदानं॥२१
 अवधूकासाहेमारीनालिबोलिये॥दासूबोलिपेयवंत॥अनि
 तीताअनहृदगरजे॥बिंदगोलाउडियागानं॥२१॥सुणिगुण
 ।तासुणिबुधिवंता॥अनंतसिधांकीबांणी॥सीसनवावतसत
 उरमिलिया॥जागतैरेनिबिहोणी॥२१॥घटिघटिसुणियाप
 ।नहिहोप्रबनिबनिचंदनसूषनकोप्रारत्तरिधिकंवण
 ।रुदिहोप्रैरततवूकेविरलाकोप्र॥२१॥गोरषकहेसुणैरे
 अवधू॥यहकलिआईयोटी॥द्विदाकाभावहाथादेषिये
 करवैहोप्रसनिकसेटांटी॥२१॥दिषीपूताकलिकोसाध
 निष्यालीजालिदेयावा॥सतकामोजनअनषडुषावैगतेले
 पावप्रमोधांतंआवे॥२१॥अणवंब्याअमृतसबदकापा॥
 ण॥षेदाषेदागत्रकरिजांणी॥नाथकहेयऊगानअन्यदे
 षतद्विष्टिनपडियेकूपा॥२१॥उगतस्तरपत्रपूर॥काल
 कजायहरं॥नाथकान्तडारसरपूरं॥जतीसतीसेवगास्तरं
 ॥२१॥यायजरेवाचाफुरे॥औरंकीचिंताश्रीअलेषसुरिस
 कोरेरहेतिगसनकरईआसा॥सूबदंतगोरषनाथमधि
 द्वकादासा॥२१॥आंनमानगुरपांनबोधोनीबोधसिधापा
 रयंम॥आंसकौंगंसनसुदेषिबादेसं॥अचिंतनाथकोक
 वाआदेस॥२१॥जहांसुषडुषनाहीहरिषनसोगं॥अंसोव
 णंनजाणं॥सूषनसोगं॥आंवणंनजाणं॥अबोलनक
 णं॥नाथकहेतहारेकरसरहंणं॥॥तीप्रीजो२१
 नाथजीकांसबदीसंपुरण॥॥

ॐ॥ अहंकारे बीनी पृथमी यद्गुपेयीनां नौरा॥ सतिसति
 नाषंतराजा नरथरी॥ पिंडका वैरी जौरा॥ १॥ इषिया रेवंत
 सुषिया हसंत॥ श्रीलकरंतवरकां मणी॥ सूराम्भुंत मूढ
 नाजंति॥ सतिसति नाषंति राजा नरथरी॥ २॥ इषी राजा
 षीपरिजा इषी वां संत वां नियां॥ सदा सुषी राजा नरथरी॥ जि
 निगुरका सबद प्रवां णियां॥ ३॥ कागर वां नी गुजरी॥ देषिपद
 डियां॥ सीलाहसै मं सतियां॥ मुकि धरिही दतियां॥ ४॥ वने दि
 र्वा सुफल फलंते॥ मुदि वैवतै गयं द॥ ते विरवा सजडागा
 या॥ चमदेष तो नरं द॥ प॥ चडै गा सुपडै गा॥ नपडै गा तत वि
 वारी॥ धवंत लो ग बी जै गा॥ ते रका जा इ गा नरथरी निषारी
 द॥ राजा नरथरी अमिन भूला॥ तलिक रिडी बी उपरि चूं
 करि चूल्हा॥ वै वै वै ल करी जुगति स्पूजारी जौगी नरथरी॥
 जी वै जुग चारी॥ ७॥ अ व धुं जं ल विं न क व ल क व ल वि नि
 म धु कर॥ को इ ल बी ले क व वि नां॥ थ ल विं नि म्र घ मृ घ विं नि
 पार धी॥ ये क सरि वे धे पं च ज नां॥ ८॥ म व धारे ज डि ले क पा द
 द स वै दारै सि व ध रि वा ट॥ दो इ ल ष चं दायै क ल ष चं नां॥ वै
 मृ घ ग ग नि अ स थां त॥ वै ध्या मृ घ न वा डै पा स॥ त नं त
 नरथरी गौरष का दा स॥ ९॥ त न नि रा स म न मां डै मा या॥ मुं ड
 मुं डा इ न स डं सि का या॥ म न नि रा स स क ल र स नो गी॥ कहै न
 रथरी ते न र जौ गी॥ १०॥ पं च षं डा अ धि क व लि वं डा॥ म न र श
 मै सं त गा जै॥ कर डी ल ह रि कं द्र प की उ वै॥ त व को मू जै को सा
 जै॥ ११॥ वै रा गी जौ गी वै रा ग न क र नां॥ म न म न सा क रि वं दी॥ अ
 गं म अ गो च र सि ध का वा सा॥ त हं अ या सा त्रि स्तां षं डी॥ १२॥ अ
 सा षं डी म न सा षं डी॥ म न प वं न दौ य ऊ जी र॥ स तिस ति ना षं ति जौ

गीतरथरी॥ तबमनहोइबाथीरं॥ १॥ अरजगयेकोराजागरे॥
 वेदगयेकोरीगी॥ रूपगयेकोकांमणिगरे॥ बिंदगयेकोजोगी
 ॥ १॥ बीजनहीअं कूरनही॥ नहीरूपरेषअहंकारतहां॥ गेदे
 अस्तजहांकप्यानजाई॥ तहांतरथरीरह्यासंमाई॥ १॥ ॥ ॥
 रहेंकासंसांनही॥ नहीजीवनकीआसासतिसतिनाषति
 जोगीतरथरी॥ हेमकुंनितिहीसोगबिलासा॥ १॥ निरंधन
 कंयाबहुबिस्तारकथोनिरंजनरहीआकार॥ सुखंतवि
 क्रंमबांननबीरकवंनप्रचैरहिबाथीरा॥ १॥ सुनिहोविक्रं
 मबहुगियांनदेहीविवर्जितधरंधियांन॥ उदेअस्तजहांक
 प्यानजाई॥ तहांतरथरीरह्यासंमाई॥ १॥ ॥ आगोंबहिनापीं
 नोननिरतिसरतिविद्यतलिध्यांनकथोनिरंजनरहीउदा
 सा॥ अजऊंनबुटेआसापासा॥ १॥ ॥ सायसतरनीनंकरिगरवं
 नहीधनजोवनराजहोइसरवं॥ कनंककांमनीसोगबिला
 सा॥ कहैतरथरीकंधविनाथा॥ १॥ साधिवातोयेकपवंनआ
 रंनसाधिवा॥ बाडिवातोसकलविकारंरहियातीनिहंसव
 दकीबायासेईवातोनिरंजननिराकारं॥ १॥ नग्रस्यकांठ
 नग्रस्यबनचरा॥ ननस्यजीवजलचरा॥ अजकंकाचीन्हि
 सिहोनरा॥ नहांप्रसिधिजोगेस्वरु॥ २०॥ अत्यस्यपुत्रीकुलवं
 तीनारी॥ धनिस्पदंपतित्रत्ता॥ धनिस्पदेसस्यदेवा॥ अहं
 पदेसमूरिषजेगितां॥ २१॥ तिनोवसज्यावतोवकसी॥ अग्रि
 अंवरबाया॥ तरथरीमननिष्कलं॥ धारिधोरिवरधिहोइइ
 केरया॥ २२॥ नस्यमात्तावस्यरता॥ जस्यपुत्रंतावस्यदंदा॥
 हेहेरेनोकपुरचारी॥ वैराणीहोइकिंनजइता॥ २३॥ जस्य
 मायावस्यज्या॥ तसिसूकूं

रेनका

हीनहस्ती घोर सतिसतिनाषंतिमातामेंणवती। पूताकलि
 मेंजीवंनथोडा। ५। मातासौलाहसेरानीबाराहसेकंन्यो। अरु
 बंगालदेसबडत्तोगी। बाराहवरसेराजकरणदेमाता। पीछे
 होंगाजोगी। ६। पूताराजनहीरेपाठनहीरे नदीयकुजलवि
 ब्रकीकाया। सतिसतिनाषंतिमातामेंणवती। अमिभूलो
 रेसाया। ७। माताकंकुमेंणवती। अरुबंगालेदेसबडत्तो
 गी। बाराहवरसेराजकरणदेमाता। पीछेहोंगाजोगी। ८। पू
 ताआजआजकरंतारे। काल्हिकाल्हिकरंता। कायामरेज्यु
 कलालकीसावीरतंतौरिपरैगोरैबाला। येकुजलिव
 लिहोद्रीससांनकीमांटी। ९। मातातराजाकेघरिगंनोहे
 ती। हमारेहंसार्द्रसतषनेचौबारेरहती। मातायकुपांन
 कहांतैल्यार्द्र। १०। पूतागुरुहंमारेगोरषकहिये। चरपट
 हैगुरनार्द्र। ऐकसबवगुरुगोरषनाथकहिया। सोसां
 नल्योमेंणवतीमार्द्र। ११। मरकुमरिजाकुमिससांनहो
 हंगेफिरिबारां कबुरेकप्रमत्ततचीन्होंहोरजागोपीचं
 दज्युउतरोसंसारनोपार। १२। माताकोनहंसकुंतातउ
 वे। कौनपषालेपार्द्र। कहांसुमेरैमैडासंदिर। कहांसुमे
 वतीमार्द्र। १३। पूताअलषछमहोंनेनातपुरवे। गोगपषा
 लेपार्द्र। सुषबिषतेरैमैडासंदिर। घरिघरिमेंणवतीमार्द्र। १
 ४। मनराजामनप्रजा। मनसकलकाबंध। मनकुंचीन्हियार
 यांमीनये। राजगोपीचंद। १५। माताकेउपदेसकरि। तजीला
 देसबंगाल। गोपीचंदगुरुकेसरणी। तेटतनागाकाल। १६।
 बाड्रा राजपाटपरि बाडा। बाड्रादेसबंगाले। गोपीचंदधो
 लागरसबही। बाडिगयाबनवास। १७। रणीसकलकंन्य

सुतसबही॥ हाहाकारसईला॥ रावतरेतितुरीगाजालबल
राजागोपीचंदकहांगईला॥ १५॥ जलंध्रीपावहाधिदेडीवी
गोपीचंदघंदाया॥ मंदिरमहलयौलिजहांतीतरितहां॥
जाईअलेषजगाया॥ १६॥ माइबंहेनकहिनिष्यामांगी॥ पूसा
सीगीनांदांसांनलिस्वादमिलीसवरंगी॥ आइकीयासंमा
दा॥ १७॥ श्रीरामजीसति॥ श्रीचरपटनाथजीकीसखीलिबते
॥ अंगगलितंपलितंमुंडं॥ जातदसानबिहीनतंडा॥ बिधी
जातिग्रिहाबडंडं॥ तदिपिनमुच्यत्संसाप्यंडं॥ काया
तरधरमांकडचित्ता॥ डालेपातेनरसेनिति॥ कलपैकलपे
दंडुदिसिजाइ॥ तिसिकारणिकोईसिधनयाइ॥ शहीलक
बोटीमनसंगफिरे॥ धरिधरिनैनपसारकरो॥ घायाजरेन
बाचाफुरै॥ ताकारनिहंहुंरिमुंरिमरे॥ शःसनचंचलप
वंनचंचल॥ चंचलबाइकीधारा॥ अंहिघटमधेतीमूंके
चल॥ कूरुषिरेरंताब्यंदकादारा॥ धा॥ नाथकहांवैसेके
मनाथि॥ चेलापांचचलांवेसाथि॥ मांगीनिष्यासरिसरियां
हि॥ नाथकहांवैसरिसरिजांदि॥ दा॥ दरसनंपहरेनाथकहा
वै॥ सुषिवेलेचखराई॥ आलेवासेजुंघुंणलोगी॥ डालमूल
घडिषाइ॥ घाटीकाटांमांमकली॥ बोलंतसुधरीवीणी
कहैचरपटसुंणहौनागाअरजना॥ यास्यौरांकीसहिनांण
॥ १८॥ रंगाचंगाबडुदीदारी॥ जैसीघोटीसुहरमुलमांधारी॥ च
रपटकहैसुंणैकरैलोड़ी॥ येपाषंडहैपरिजोगनहोइ॥ ट
येकसेतपटयेकनीलपटा॥ येकटसरकटीकालोबज
टायेकपंथबाडिमनउबटबोटा॥ चरपटकहैयेपेटन
टा॥ १९॥ रावीकंधारापटरोल॥ पंगोपावडीमुषांतबोला॥ पा

जैपजैकीजैनीग चरपटकहैविगोवैजोग ॥ १० ॥ पहिर
 मंदडीकंकनहाथिनकटीबूचीजोगनिसाथिअवतवै
 वतकाकुणकार ॥ तजिनसक्यामायाजार ॥ ११ ॥ जंजालआ
 गेंजंजालपाठें ॥ जंजालकुंनारकैसांढै ॥ सोजंजालतजिजे
 गीकुवा ॥ सोजंजालफिरिसांढै ॥ १२ ॥ वाकरकुकरकंगर
 हाथिबालीनीलीतरांगीसाथिदिनकरिनिष्पारास्य
 नोग ॥ चरपटकहैविगोवैजोग ॥ १३ ॥ गंधविगंधामुंता
 र्बडा ॥ पसवापडिपडितोडैसडा ॥ वाचिनसक्याअंमुला
 चारि ॥ चरपटकहैतसांथैमारि ॥ १४ ॥ जलकीनीतिपकन
 काथेनादेवलदेधिसयाअचनबाहरिनीतरिगंधवि
 गंधा ॥ कोहेतूलेपसवाअंधा ॥ १५ ॥ आधिकीटगटगीना
 ककीडोडी ॥ चरमकीचंदरियारुधस्यंसडी ॥ मलप्रसे
 दसरतिजहांसुहां ॥ अहारकीकोथलीनरककीकुंडी ॥ १६ ॥
 मनकाबासातहांसांसकालचा ॥ सिंशटिकाघारतहंके
 सकाकूचा ॥ गंधविगंधातहांजारविजारी ॥ चरपटचास्या
 मातजुहारी ॥ १७ ॥ चामकीकोथलीचामकासूत्रा ॥ तासकी
 प्रातिकरिजगतसबसूत्रा ॥ देवगंधवसुंनिसांनवंजेता ॥
 अवस्यायेककोषरुसुंविचेता ॥ १८ ॥ फोकटफाकटकथो
 गियांन ॥ कुंठैचंसडीधरैधियांन ॥ सिधपुरसस्युकरैउपा
 धि ॥ चरपटकहैतेव्याधिअसाधि ॥ १९ ॥ सिधकहंवेत्ता
 तैनाग ॥ ताकाकालामुषनीतापग ॥ कुंठैचंसडीधरैधियां
 न ॥ तापकंसुत्रामैकहंगियांन ॥ २० ॥ चरपटकहैसुंणैरेत्र
 वधूकामणिसगतकीजे ॥ ज्यदव्यंदनौनाडीसोवै ॥ दिनदि
 निकायाबीजे ॥ २१ ॥ जतनकरंतजायसुजाव ॥ तगदेधिजि

निघालोघावै॥ कौटिबरसलों बोहे आवा॥ सतिसतिनाये श्री चर
पटराव॥ २५॥ चिरकटचौरचक्रमनिकंधा॥ चितचमाउकर
णा॥ असी करणी करौरे अवधु जुब ऊडिन होई सरणा॥
२६॥ दिठकरिमनवांधिरिकरिचिता॥ कायापवंतपयालो
निंति॥ असरासरो जूंथिरकवे कध॥ ऊडेन हे सालागे बंध
२७॥ अवधुसूलदारे ही जेवध॥ बाईपेले चौसतिसधि॥ जुरा
पलटैषंडे रोग॥ बौले चरपटधनिधनिजोग २८॥ धधिसिबंधि
विषमकरिबंधा॥ तलिकरि रविकुपरिकरिचद॥ रेनिदिवस
रसचरपटयाया॥ सुटैतेलनबुकेदीया २९॥ जोतुरावलष
रासयांना॥ कसिकिन बांधे टाटी॥ बाराह आयुलेयेसिगईहे
तवसोलाह आंउलफाटी॥ ३०॥ पवंताकंधा अनलेवास पि
सांएनकौई आवेपास॥ मनस्पूमतौसकिणानवकृत चर
पटकहैधनिअवधुत॥ ३१॥ निनैनिसंकतेतववेता॥ मन
सांनविवर्जितइंद्रीजिता॥ सेतफटकमनम्यानरता चरप
टकहैरोसिधमंता॥ ३२॥ साधे नूषरुमारेनिद स्वपिनैऊरिवा
देइनव्यंदापडे नप्यंडनऊपैरोग॥ चरपटबौलेधनिजोग ३०
नरथरचरपटगोपीचंद॥ विदोपूरनप्रमानद॥ धारपाडनधि
तछाडैनेगा॥ राखी आत्मसाधोजोग॥ ३१॥ ताबातंबायेदीइसू
चा॥ राजाहीथेजोगीकंचा॥ तांबादूबेद्वबार्तिरे॥ जीवैजेपारी
जामरै॥ ३२॥ उजलकंधा बगडीवास॥ कांसाणि अगनमेलपा
सा॥ दिठिकरि राषेयांचूइद्रा॥ चरपटबौलेतेजोगपदी ३३
करपरिनिष्याबिठतलिवास॥ दोइजनअगनमेल्लेपास
बंनषंडिरेहेमसाणां॥ सूत चरपटबौलेतेअवधुत ३४॥ रू
षिबिषिगिरकंदलिवास॥ अहिनिसिरहिवाजोगअस्या
सा॥ पलटैकायाकांडैरोग॥ चरपटबौ ५ ॥ ३५॥

विसकाकरु विचारं ॥ ६२ ॥ पूजिवातो आत्मादेव पूजिवा ॥
 चढाइवा अनादिपाती चरपटक है कऊं तट किन मरणा ॥
 घटिही तीरथ जाती ॥ ६३ ॥ सुरमंदिर तरमूल निवास ॥ सिष्या
 तो जनर है उदास ॥ सकल प्रग्रह तो गतियाग ॥ तो क्यून सु
 ष करंत बैराग ॥ ६४ ॥ वैसिनर हिवा दौडिन जाइवा ॥ फदे है
 वापावं ॥ आत्मा प्रमाण सिष्या षाइवा ॥ देखिवा जती सतीका
 ताव ॥ ६५ ॥ गिरही होइ करिक थै गियां न ॥ अंबली होइ कर
 रिधरे धियां न बैरागी ॥ होइ अर आसापस ॥ चरपटक है
 तेषासा फास ॥ ६६ ॥ मान अति मांभें लां है फिरे ॥ गुरु न षो जे
 सूरिष मरे ॥ डंडक मंडल मगवां तेस ॥ पाथर पूजा बड अय देस
 ॥ ६७ ॥ जीव है ते अरु पूजा करे ॥ जत्र मंत्र ले मत में धरे ॥ तीरथ
 जाइ करे सनां न ॥ बोले चरपटक षंडित मान ॥ ६८ ॥ न्यां वैधो
 वैयया लें अंगा ॥ तीतरि में लावा हरि चंगा ॥ होम जाय अ
 गारी करे ॥ पारब्रह्म कूं सुध न धरे ॥ ६९ ॥ दिन दिन हत्या करे
 अपार ॥ स्तुति गपाति गके ले नार ॥ ब्रह्म रूप वग्ना संसार चर
 पटक है यक धृत विचार ॥ ७० ॥ दया धं मसत निति न वैसे ॥
 अतीत देखि निद्या मनि हसे ॥ कथे पां न अरु फोक ट रहनि
 पटक है कलका चिहंन ॥ ७१ ॥ जिसका कामति सहक
 बाजे ॥ और करे तो डगा बाजे ॥ चरपटक है यक अचिर जद
 ष कंनिक कामनीषाया शेष ॥ ७२ ॥ नाथ कहां वैस के तना
 थि चैला पांचवला वैसा थि ॥ मांगे सिष्यां तरि तरि खां हि ॥ नथ
 कहां वै मरि मरि जां हि ॥ ७३ ॥ किसका बैठा किसकी बड ॥ आप
 सवार थि मिलिया सक ॥ जेता पूला तेती माल ॥ चरपटक है ऐ
 सबे जंजाल ॥ ७४ ॥ हेती चरपटक वापजी की सब ॥ पं पुराणार

देवीपारवतीकीसबदीलियते॥जलमलतरियानल॥अग्निनबले
 नाभिकैतलि॥अग्निनबलेनपसरेकिरेण॥ताकारेनियारती॥
 जगतकामरण॥१॥अक्रवहाथकंधरी॥जलमलपरी॥नासिका
 कायधननषेवेनाभिकीतली॥सलेटेपवंनांगगनिसंसाइ॥
 ताकारनिपारवतीयेपसुवामरिमरिजाइ॥२॥सुखिषगिरकं
 दलिबासा॥निरधनकंधारहेउदास॥निष्यासोजनसहजेमें
 फुरे॥ताकीसेवापारवतीकरे॥३॥कागद्विष्टिबोधीं॥वा
 लअवस्थाचुंवंगमअहारी॥सोअवधूतवेरागीपारवती॥इ
 जाअवसेषधारी॥४॥धनजोवनकीकरेनआसा॥चितनरोषे
 कामेणियासा॥नादबिंदजाकेघटिजेये॥ताकीसेवापारवतीक
 रे॥५॥निरधनकंधाबहुबिसतारा॥जगतिनिरतरिरहणिअ
 पारा॥नादबिंदजाकेघटिजेये॥ताकीसेवापारवतीकरे॥६॥
 निसप्रेहीनिखादी॥कामदगधीदिनेदिने॥तासभिन्हादेदेवी
 पारवती॥सोछिसुंक्तिततबिने॥७॥जलंधीपावजीकीसबदीलि
 यते॥संनिमंडलमेंमनकावासा॥जहांप्रसजोतिप्रकासा॥आपे
 पूबेआपेकहे॥सतगुरमिलेतौप्रमपदलहे॥८॥येकअचंता॥
 ऐसाऊवागागरिमहिंउसास्याकूवा॥दोहीलेजडेरिपकुंचेन
 हिं॥लोगपियास्यामरिमरिजाहिं॥९॥आसापासाहरिकरि॥पस
 रतीनिवारि॥सिधसाधिकस्पृसंगकरि॥सतगुरपांनविधारि॥
 १०॥धरतीआकासपवंनअरूपांनी॥चंदसूरजषटदरसंएज
 नी॥वोर्ककारकापावेमंता॥ऐसासिधाअलषअनंत॥११॥गोपीच
 दकहेहोस्वामी॥पूबोदोषेअंतरजांमी॥बस्तीरकुंतोकंदपव्य
 पे॥जंगलिरकुंतोषुध्यासंतापे॥आसंतिरकुंतोलागेमाया॥यंथि
 चलोतौबीजेकाया॥

साधों जोग ५ सां नलि अत्र धृत तत्र विचारं ये निज सकल सिरौम
 निसार संजम अहार कं द्रपन ही व्यापै वाई आरं तसु ध्यान सं
 तापै सिध अंणि न हिलो गो माया नाद पयां णे न छिजे काया
 जि आत्मा दन की जे जोग मन पवं न ले साधो जोग ६ सरदने
 के सस्थां निले अत्र धू पवं ने स्यां निले काया अत्र से जुरा सं
 ण स्यां निले विचारित्या गिले माया ७ सत्ये सिधामत्ये पार
 नं मरे जोगी न ले अवतार सु निसं मा वै वा वै वी नां अलेष परि
 सतहां ल्यो ली नां ८ जोग न जोग्या जोग न तो गण अहिला गया
 जम वारं यं मे ग दहा जंग ले सु करं फि रि फि रिले अवतारं
 ए यं कुं सं सार कुं व क की वारी जब लग सर धा सक तिसां न
 री बोलिये हलां सो पाई ये ष लो अंब बोई ये ते आगे फले १०
 पहिले की या सु अत्र च्छु ग ता वै जो अत्र करे सु आगे पावे जे
 सा ही जे ते साली जे ता ते त न धरि नी के की जे ११ अज पा ज पा
 तां त प विं नित प नां धु नि ग हि ध रि वा ध्यां तां जोग सहारं प
 प प्रहारं अत्रे सा अद नु त पां नं १२ श्री जे री ना य जी की स
 श्री मूल सी चो रे अत्र धू मूल सी चो अंतर वर मे लुं त डालं अ
 दे चो रंगी मूल सी चिया थो अं णे ने उ तरिया पारं १३ साली लो
 नाई साली लो सी चे सह जि कियारी उं न म नी क ला ये क प क
 प नि पा या जो मं द्र आ वा ग वं ण नि वारी १४ मारि वा तो मन त
 स्त मारि वा लु टि वा प व व सं डारं सा धि वा तो पं च त त सा धि
 वा से ई वा तो नि रं जन नि रा कारं १५ आ नि से ती अ नि जा लि
 वा पां णी से ती सो धि वा पां णी वा ई से ती वा ई फे रि वा त व अ
 का स मु षि बो लि वा कौ णी १६ ॥ क हे री पा न जी की स व रू लि य
 तो ॥ स गौ न ही सं सारि चि त्त न ही आवै वै र त्रि नै हो इ नि सं क

हरिषमेंहस्याकंणेरी॥१॥हस्योकंणेरीहरषमेंयेकलडोआ
रणि॥जुराबिबोहीजोमरणस्थं॥मरंनबिबोह्यामना॥मनत्र
मेराबीजबिजोवै॥पवंताबाडिलगाई॥चेततिरावलपहिरै
बै॥मिरघाषेतनघाई॥आजोगोपसवाजोमतिहांता॥ज्याहं
नपायानेवं॥कालबिकालेटाकरमारे॥सौवेकंणेरीदेवा॥ध्या॥
अकलकंणेरीसकलबंधा॥बिणिप्रचैजोगवयांणेअंधा॥बि
णिप्रचैजोगनहो॥द्वरावला॥सकूटांकूनिसेचावला॥
पा॥द्योंसघंदाएस्सुरा॥गिगनिमंडलमेंबाजेंदरासतिक
सबदकंणेरीकहै॥प्रमहंसधिरिकाहेनरहै॥धकहांसौ
केंगेआथवै॥कहांसोरैनिबिहाइ॥पूबैकंणेरीसुणिहेना
गाअरजन॥पिंडबोडिप्राणकहासमाइ॥सहजेंआंवं
नांसहजेंगवंना॥सहजेंसहजबहैपवंना॥सहजेंसहजेंफिरै
बाई॥सहजेंसहजेंचिरंकाया॥७॥हालीपावजीकीसबदी
लिष्यते॥अजपाजपौरैअवधूअजपाजयो॥सुजोनिरजन
घांता॥गविमंडलमेंजोतिलघाईदेधिधरेबाघांता॥१॥ल्योकी
आधिचेतनिकीपांषि॥दिविरहैद्विष्टिसुनिकोंकांकि॥अगंम
अगोचरतहांगुरुकूलहोएततदेधिसिधहालीपावकहै॥
१॥बोठानमोटाचोडानअकला॥हालीपावबौलंतपांणीज्यु
पतला॥सुनिंस्सुपीपवंनजेंसैसलवा॥जोवौजोवौअवधूपू
लतेंसैहलवा॥३॥अधरहोताधरिकरिआया॥धरिर्हिकीया
बिचरांनिरतरधुनिस्सुनिहचानया॥हरिनिरालंबनिजसा
१॥धहंसाबरनोपहलीहोता॥सुधमधरेनैआया॥पिंडधरेनै
गुरुकोजाण॥तबआवगावंणमितया॥५॥हरिदेधिआ
रधतोकरतेआसउमेहांनेडाहीसिवपाईया॥जबलाधार

रमुषिनेहं ह मनसातो मेरे माता कहिये ॥ पिता निरंजन निरा
कार ॥ गुरुहं मारे गोरुष कहिये ॥ अतीत सब दसये पार ॥ ७ ॥
॥ नीडकी पावनीकी सदी ॥ पिंड चलता सबको देखे ॥ प्राण च
लतां विरला ॥ प्राण चलतो जे नर देखे ॥ तास गुरु में चेला ॥ १ ॥
कहां बसे गुरु कहां बसे चेला ॥ कौण सुषेत्र कौण सुमेला ॥ अ
सा पांन कथो मेरा नार्ड ॥ गुरसिषकी कौण बोलवाई ॥ २ ॥ अ
धेवसे गुरु सधेवसे चेला ॥ त्रिकुटीषेत्र उलटितहां मेला ॥
अनहद सब दसई उलवाई ॥ गुरुसुषिजोति निरंजन पाई ॥
३ ॥ कथा कंचन मन किसदरी ॥ सोले गुरकूं दीजे ॥ अषं अ
डलमें मदी बवाईवा ॥ जुरमरण नही बीजे ॥ ४ ॥ पहले पह
रे सबको ईजारी ॥ द्वजेपहरे जोगी ॥ तीजेपहरे तसकरजोगी ॥
बोधैपहरे जोगी ॥ ५ ॥ सिधागड बड बडा डिदे ॥ अनहद पाला
केलि ॥ बूंदसंमानी संमंदमें ॥ सो बूंदलेषेलि ॥ ६ ॥ पीरसंडारै प्र
षिये ॥ मनमे लहरंमतां ॥ जतीसतीकी पारिष्याला नेथिरिरहं
ता ॥ ७ ॥ रासिगई अधरासिगई ॥ बालकये कसुकोरे हेकोई
नगरमें सुखियां ॥ बालकका दुषनिवारे ॥ ८ ॥ श्रीधुंधली
मलजीकी सबदी लिखते ॥ दोरसी पाटए ॥ ओंधापड्याति
एंधसधेकी सबदी ॥ आइसजी आबो ॥ बाबा आवत जातव
कृतजुगदीवा ॥ तब कबुन आयाही थं ॥ अबका आंवां सुफ
लसया ॥ पाया निरंजनसिधका साथ ॥ ९ ॥ आइसजी जावो ॥ बा
बाजे जायते जाइरहेगा ॥ तामें कैसाहासा ॥ बिबुरनबेलां मरण ॥
उहेलां ॥ कोजांने कितवासा ॥ १० ॥ आइसजीवेतो ॥ बाबावेतागमी
उवावेता ॥ वेतिउविजुगदीवा ॥ धरिधरिखलनिष्यामोगी ॥ अमी
महारससीवा ॥ ११ ॥ आइसजीउता ॥ बाबाजेउतातेइकटाग

नास्यं नसंमाधिलगादी ऊभारहेकों एफा इदा जेमन न्रमें
नाई ॥ ५ ॥ आइसजी आजा वावाजे आडातिनिगहसं वगात
नोदरवाजोताली ॥ जोगजुगति करिसं नमुधिलागा ॥ पंचपंच
सौवाली ॥ ५ ॥ आइसजीसौधौ ॥ जिरवावाजेसूतातेषरविगुत
जन्माया अरुहास्या ॥ कायाहिरणी काल अहेडी ॥ हंसदेष्ट
जुगमास्या ॥ ६ ॥ आइसजीजागो ॥ वावाजेजागेतेजुगिजुगि
जागे ॥ कहांसुएपां सोकेसा ॥ गगनिमंडलमेंतालीलागी ॥ जो
गपंधहेत्रैसा ॥ ७ ॥ आइसजीमरो ॥ वावाहंसतीमरणं ॥ च्म
तीमरणं ॥ मरणं संवसंसारं ॥ सुरनराणां धर्मपतीमरणं ॥
कोई बिरलाउतरेपोरं ॥ ८ ॥ आइसजीजीवो ॥ वावाजेजीया
तेनितिहीजाया ॥ मास्यातेसबमूवा ॥ जोगजुगति करिपवंना
साध्या ॥ सोअजरं वरकुवा ॥ ९ ॥ आइसजीगो ॥ वावागिया
तेतीमनवेंगिया ॥ श्रीरगियाजंसकालं ॥ हंसतो जोगीनिरंत
रिरहिया ॥ तजीयामायाजालं ॥ १० ॥ आइसजीफेरीदो ॥ वावाजि
फेरैतो मनकैफेरै ॥ दसदरवाजाधेरै ॥ अरधउरधविचिता
लीलावै ॥ नोविधिअवसिधिमैरै ॥ ११ ॥ आइसजीधंधेलागी ॥ वा
वापोरधंधेअहिनि सिद्धकमंवि ॥ जोगजुगतिस्फुंजारी ॥ काअ
ब्यालकाभैहंसदेष्ट्या ॥ तातेनाथनिस्जविलारी ॥ १२ ॥ आइसजी
देवो ॥ वावाहंसतीदीगाउहांतीदीगा ॥ दीवासकलयसारंउल
टिपलटिनिजततचोन्हिवा ॥ मनसंकरिवाविचारं ॥ १३ ॥
चूंणकताथजीकीसबदी ॥ काकडीकरंमकरंताअवधु ॥ वाई
चलेअससलं ॥ सुनेदेवलिचोरपईसे ॥ चेतोरेचेतनहारं ॥ १४ ॥ सा
धीसुधीकैपुरमैरै ॥ वाईस्वविंदगिगनिमैफेरै ॥ मनकावाकुलचु
णियावैलोसाधाउपरिकूंमनडोलै ॥ १५ ॥ वाईबंध्यासयलजुगावा

ईकिंनकुंनबंध बाइविऊंणंइहिपडे जौरेकोईनषध३
 नीचेषोज्यानीचायाणीं ऊंवेकातिसमूवा सद्धविचारेवेव
 डकहिये दिनकाबडानरुवा ॥४॥ २॥ देवलनाथजीका
 ॥३॥ देवलनयेदिसंतरी सबज्यादेष्वाजोइ नादीवेदी
 बऊसिले परिचेदीसिलेतकोइ ॥ देवलनिहंकेवलनया ॥
 सुर्तित्तिलेबोली गानरंतनकीकोथली काहंपारिषत्र
 रोयोली ॥ देवलजिस्याबंधदे बऊबोलणंनिकारि सिधा
 साधिकस्यूसंगकरि सतगुरगानविचारि ॥ ३ पाखिनरत
 हापठंतरे सबदांमोलनठोल देवलदेधिबिचारिकरितो
 बोलीजेबोल ॥४॥ ४॥ पृथीनाथजीकीतदीहियेते ॥ हंसचवा
 साइरतिरुं संघचवावनसाहि हस्तीयाघरमेखिकरि म्म
 स्मरुंणजाहिं ॥ सोऊंतोहाथिनआवरे जागोंतोता
 जाय मनहीसेतीकुरुणं ॥ अंधुणकावहिसाइ ॥ २ राजाया
 येराजमें अरुपंडितकीटिअनंत मनकाजीत्यावाहिर
 सबज्यादेष्वाजंत ॥ ३ पृथीनाथजिनिसतअपणंबसिकीय
 तातेबडानकोइ अवसतितीरथकोटिजिप जाकेदरसंण
 फलहोइ ॥ ४ लोहाकीकींमंतिनहं जोकंचंतकंचाहे गीहं
 काजितपकरेकाटिगांडरकूंणहे ॥ ५ निसपतीकूंघरतजे
 डितकरिदरसंणपेसे ॥ ६ रुंरुंपुरहापलि ॥ कूदिआगेहोइ
 वेसे ॥ ६ पृथीनाथविचारविणि सबधोषेहीबूडंत सद्धअ
 सधनविदही ताकूंकूंनेटेसावत ॥ ७ कंसलद्वादसतरे
 अग्निबऊप्रजले रविससिगतततनाणजारी रणिपहर
 पडे कालसेतीनिडे ॥ पंडकूंठोडिप्राणकबहुंनसागे ॥ ८
 असीधरणीधरे सहजिलेनिसतरे वाकबकवाठथेदेहब

जे। सुख साधी कहे सिध सोई गहे। इणिविधि बाण जी वंति जा।
 जे। १०। सुनि महिरि बसे। मितिकाल ही डसे। उलटि बां बडे
 प्रपयाया। पूजिरे सो जगो देव आगोष जा रहं सिरहं सि देउ
 रे नाद बाया। १०। नाग आसण करे सो पुरी संचरो। सुनि में धु
 नित हां नाद बाजे। अषंड दीपक जेरो। ब्रह्म गोष्टिके रो पंच
 जने बेगये क बाजे। ११। पंचदल मोडि बाकाया गट तोडि बा
 अंहिं सारू कि बा मारि मीरां आपकूं मे टि बा ब्रह्म कूं ते टि बा।
 गगति आसण करि होय थीरां। १२। प्रिथी नाथ पारस अरु
 घटा। घट ही तीतरि लोहा। विष्णु नाति क्यू उपजे। जिनि हि
 विषे कामे हा। १३। पृथी नाथ घर कादं देसे। आपग वांयां।
 जां हि। लादा हार चलि गया। अंणिरहा घर मा ही। १४। प्रि
 थी नाथ रंडी के बाधे मरं हि। बाडिन सक ही साथ प्रालि बां
 दर के जैवडा। अंबवा जागर के हथिया। १५। जे संमजे ते जिं सतरे
 अण संमजे बहि जंत। अवसति तीरथ को टि जिग्या जहां बिल
 बहि संता। १६। चंद्र नाथ जी की सब दी। धरणि नवर सि अ
 कासन ती जे। बंचै त काल काया गट बीजे। मूल बंध देरो के
 बाडा। ता जोगी कूं काल नषा। १७। चालो अवधू न प्रिकी वा
 टा। मूल कं बल को रो को घाटा। रो न्हं हंस ये क के रा सि। ती नंप
 डे सिध काल की या सि। १८। जब लग बाइन चढे आकास। तब
 लग सिध न हो प्रकास। तब लग नाद बिंदकी हांणि। १९। तौ ले सी
 काल सिध कूं जांणि। २०। अवधू सो जोगी अंहं कारि न बीजे
 राधे बाई धरान ही बीजे। बाई बीज ले गगनि संमो वै सो
 था सोई फि रि होई वै। २१। अवधू ब्रह्म अग्नि में हे में पंच
 नाथ

जोगोस्वरसाधे ॥ पा सं ज म र है बा द्धि र थो पे ॥ लिपे त ही त हि
पुं नि न यो पे ॥ अ षं ड मंड ल मे वा जे ना द ॥ करे को ण स पू जोगी बा
द ॥ ६ ॥ अ व धू व रि षे अ ग्नि अ षं डित धार ॥ नि प जे हरी अ व
ए ह नार न ही त हां काल क र्म काले स ॥ जोगी त हां अ ध्या त
दे स ॥ ७ ॥ अ व धू का या मां ही कं च न दे ह ॥ ता मु षि ब्र ह्म सां व
नां रे ह ॥ प ल टि जी व ब्र ह्म त हां हो इ ॥ चं द न्ना थ त हां काल न
को इ ॥ ८ ॥ प वं न ही प्पा ला प वं न अ हार ॥ प वं न बंध जोगी अ
चार ॥ रो के मूल अ ग्नि चं सं के ॥ तो ती नि बंध काले सूर स षे ॥
ए ॥ ती नि बंध का उ ते स वां गं ॥ सो षे र क्त पी त अ रू आं गं सो षे
ती नि त ला षं षाल ॥ ज ल वा ई ले करे प षाल ॥ १० ॥ ज व वा ई ले
करे जं जाला ॥ मूल बा द्ध का तो डे ताला ॥ ती नि षि ट्ट ले ऊं प रि ज
डे ॥ तो मूल बा द्ध आ का स हि प डे ॥ ११ ॥ जं वं ए प वं न सं ति कूं
च रे ॥ मूल कं व ल म ट्टु की मे ध रे ॥ तो म द अ ग्नि की बू टे बा द्ध
धि रि द्वे जोगी काल न षा द्ध ॥ १२ ॥ मूल कं व ल ऊं प रि दी य ॥
बा द्ध नी ची जा द्ध न उ प रि आ द्ध ॥ ति हि आ डो ज ल म ल को
जाल ॥ सो षे वा ई तो वं चै काल ॥ १३ ॥ जिं हि की षि से न बा च
वा ई ॥ ऊं न म नि ताली गि ग नि सं सा द्ध ॥ गि ग नि सां हि जोगी
च डे ॥ तो चारि वै द वि नि दे ष्यां प डे ॥ १४ ॥ आ त्त जोगी प वं न
अ न्या स ॥ चारि च क धि रि ने ले स्वा स ॥ चारि च क की षं ते वा
द ॥ चं द न्ना थ तो काल न षा द्ध ॥ १५ ॥ फू ठी बा द्ध न आ वै जोगी
हो इ अ ता त ह सा वै लो ग ॥ द्र सं ए प ह स्यो ङं द र सां हि ॥ जोगी
नि हं च ल रे क ङ्क नां हि ॥ १६ ॥ जोगी स द्म मु क्ति की रा सि ॥ अ
काल की का ठी पा सि ॥ अ क ल प ती ष वि सा स अ धार ॥ सूर ति
स मा धी र हं णि हं मारी ॥ १७ ॥ ना वै करे को टि जि ग द्वां न ॥ करे के

तीरथसनां। सिधेवितांतहांधेसाहैरै। सिधमनिषदेवता
 रै। १७। कायासोनोंसिधसुतार। अरुअंतिजावणह
 ताहिअमिकेलागोपास। अग्निजाईचकसंकस्वासा
 १८॥ अथनृपमनृवाणजागययतिष्यतं॥ चौडैरहेतव।
 स्त्रीआवे। चिंताकरेनचिंतामावे। तूषारहेतधायासेवे।।
 कांमणिकेरेनकांमंहिषोवे।। रवेवाहेतदिसंतरिडोले। मू
 निगवेअनवाहरिबोले। सायातजेनमाया। लो। पोडैसोच
 नसंसो। २॥ त्रिगुणरहेनश्रुगणचाले। त्योरोनाहिन
 हाथहिघाले। नचवेरागनहीप्रहनेला। सबसूहरिसवति।
 स्युमेला। नतोदिनकूदिनकरिदेधे। नतोरातिनहीतसंपे
 धोतकहैसरनहीतहांचदा। नतोडषीनकरेआनदा। ४। क
 रेओजमातितडाडेचेला। नतोतीडनरहेअकेला। दयाक
 रेनअदयाआवे। देउपदेसनसबदिडुआवे। ६। नतोपापनप
 निविचारै। नतोजीवतिनहीसोहारे। नकेधुमीनडषदेका
 ७। नतोसावनकरेअताऊ। निमलरहेनकरसलावा। ती
 रथतजेनतीरथिआवे। ७॥ पषकूंतजेनपषकूधोरे। आगे
 चलेनआवे। लोरो। नतोलोसनहीनिलोना। सोतासुधीनड
 षीअसोसा। ७। जमकेजाइनसुरासनेहा। अदिष्टिरहेनघ
 रेदेहा। सोवेमूलबमूलहिराषे। कुबचनकहेनसुबचत
 ताषे। ९। नतोहीहतरककहावे। अलहकहेनरामसम
 वि। सारैसरनगाऊबिरोधे। नतोबोधनहीअनबोधे। १०।
 खबोरहेनसारकवावे। नतोरोजनहासीसावे। नतोसिधि
 हीआचार। बूडैसुक्तिनपारनउलेवारु। ११। मूक्तारहे
 धणिवीधा

अजोगी नसो जोग नही सो जोगी ॥२॥ देवी तजे न देवी पूजे
रिामें जाइ तरि ए विणिं गूजे ॥ कै असवारन पालो चाले स
वकुं हते न घां वै हा घाले ॥३॥ सो जोगी ईसुर की काया बंधे
घांम न वेसे छाया ॥ ऐसे पुरिष निरंतरि वासी न तो धरानही
आकासो ॥४॥ अवधू अहि विधिर हं एि हं मारी हलका
न ही न ही हं मारी ॥ न हं म असरन काल पासे न हं म
रि न ही हं म पासे ॥५॥ ऐसी रं हं एि पुरिस जे जाणो चंद्रना
थ सो नाथ बघाणो ॥ ऐसा पांत हं मारा भाई न हं म संधन
हं हं म भाई ॥६॥ मुकंद तारपी जी की सब दो लिप्यते ॥ कहं
ससि कहं क मो दनी ॥ कहं र विक हं क मुल ॥ कहि मुकंद ह
रि न सं काला पाण अमुल ॥ जे वेधे ते चंद्रन तये ॥ अने व
धे तये मुवंग ॥ कहै मुकंद ते न रनि विष तये ॥ जिनि पाया
सातल संग ॥७॥ ले लागी निमल संया ॥ मल विष राले धोइ
कहै मुकंद गुर गान स्पू ॥ कोई कोइ उजल ही ॥ अंतरि
मिले स्रमि रि मिले ॥ अन मिलते न मिलां हि ॥ कहै मुकंद म
न मध कर तया ॥ अन बंबित फल पां हि ॥८॥ जे सजन अवा
णो सुणे ॥ सुने नो देषे आइ ॥ कहै मुकंद आनंद तये ॥ सो म
ती विनिते ल ॥ चंड लो इ ए उदित तया ॥ धनि मुकंद य कृषे ल
॥९॥ जे मुन्यं ड अदबुद कथा ॥ सुवेद पुरा नां हरि मिले मु
माया काटि करि ॥ रहे सकल संर पुरि ॥ काची गच को देइ
रो ॥ विनि अंधित को देव ॥ कहै मुकंद अग न मिथं देव स
अलष असे व ॥ कंत जु चले जिहा ज चटि ॥ साइ रये ल पा
र ॥ कहै मुकंद सोई पाइ है ॥ जे विधनां लिप्या लिता र ॥ ए म

नसमृद्धमनसालहरिः॥ब्रूडेवकुतश्चवेता॥कहैमुकंदतहांलि
 पऊंमंतौजहांडवध्याकैहेता॥१०॥येडुवध्याजाकैमनिबसोदि
 तश्रीरैमनिश्रीरा॥अंजनमंजनबाडिकशि॥घरिघरिमोगी
 कोर॥११॥कोरजुमोगीबापुरे॥होटेबाटेघांदि॥कहिमुन्यं
 पुरक्रियातौ॥तैईदंतरतिरंदि॥१२॥कहिमुकंदजुगाचाल
 णी॥कंतकंतरालेबांनि॥सुसंतुसरषेसैतिकशि॥ताथेंततकी
 हानि॥१३॥सादरषारोकीनगुनि॥राप्रिनसकोरतना॥कहिमु
 कंदतेनरमलो॥चलैजतनिजतनि॥१४॥सतसुवटैसैबलर
 च्यो॥देखिबडेवडेफूला॥कहैमुकंदगुरगणनविणि॥सुकतेफि
 रैअमूला॥१५॥सुवासयांनपसवरा॥पट्टिगुणिप्रबसिहोशक
 हैमुकंदरंगामला॥पंजरिपडेनकोश॥१६॥कथनीहोतेसुक
 थिगये॥सुनिलीज्योसबकोश॥कहैमुकंदकरणीबिना॥क
 थणीसिधिनहोश॥१७॥कहैमुकंदकलिकेदरसणी॥मोटेमो
 टेधीगाकेवलपांनवतावंतां॥फिरिफिरिमांडेसीगा॥१८॥
 रागरमकली॥बाऊडेनेबांडेगोपीचंदरजा॥बहोबाऊ
 डिधोलागरिआवैजी॥अंघ्यानैतौजनमनचंप्याराजा॥ता
 वतातिस्पृपावैजी॥टेकमालकिनिदनावैरेराणी॥सुरैरैम
 निराजनतावैजी॥जोगजगतिनौराजअंमुरै॥अवेचल
 कंधूयावैजी॥१९॥अगरचंदएनीमंडीबंधाऊं॥सोनांनानंद
 मंनैदंबाजी॥कहौतोरूपानांपत्रघडऊं॥सोतांतीसीगी
 नांदजी॥अगनिमंडलमेंमंडीअंमुरी॥वंदसूरनांदबा
 जी॥सहजसीलनांपत्रहंमारौ॥अनहदसीगीनांदजी॥२०॥
 कूरकपरतुमेजीमताहोरजा॥तारडीकिंमयास्योजी॥उप
 रियांनानाबीडाआ

अजोगी नसो जोग नही सो जोगी ॥ १२ ॥ देवी तजे न देवी पूजे
 रिणमें जाइ तरिण विणिं ॥ १३ ॥ कै असवारनपालो चाले
 बकुं हते न घावे हा घाले ॥ १४ ॥ सो जोगी ईश्वर की काया बं
 घांम न वेसै छाया ॥ १५ ॥ असें पुरिष निरंतरि वासी न तो धरा नह
 आकासी ॥ १६ ॥ अत्र धू अंहि विधिरा हंणि हंमारी हलक
 नही नही हंमारी ॥ १७ ॥ अहंम असरंन कालयोसे नाहंम
 रि नही हंमपासे ॥ १८ ॥ असीरं हंणि पुरिस जे जांणो चंद्रना
 यसे नाथ वषांणो ॥ १९ ॥ असापां न हंमारा नार्त्ता हंमस्यंघन
 हं हंमगार्त्ता ॥ २० ॥ मुकंद न रथी जीकी सबदी लिख्यो ॥ कहां
 ससिकहां कसोदनी ॥ कहां रविकहां कसुल ॥ कहि मुकंद ह
 रि नां वं काला गा प्राण अमुल ॥ २१ ॥ जे वेधे ते चंद्रन तये ॥ अने व
 धे तये मुवंग ॥ कहै मुकंद ते न रनि विष तये ॥ जिनि पाया
 सीतल संग ॥ २२ ॥ लै लागी निमल तया ॥ मल विष राले धोइ
 कहै मुकंद गुर ग्यान स्पुं ॥ कोई कोइ उजल ही ॥ २३ ॥ अंतरि
 मिले सक्ति रि मिले ॥ अन मिलते न मिलाहि ॥ कहै मुकंद स
 नमध करतया ॥ अन बंछित फल पांहि ॥ २४ ॥ जे सजन अवं
 णो सणो ॥ सुने नो देषे आइ ॥ कहै मुकंद आनंद तये सोमा
 मां कही न जाइ ॥ २५ ॥ दीप कये क अटल संसार ॥ विनिं वा
 ती विनिं तेल ॥ चंड लोइ ए उदित तया ॥ धनि मुकंद्य कुपे
 ॥ २६ ॥ जे मुन्यं अद बुद कथा ॥ सुवेद पुरा ना हरि ॥ मिले सु
 माया काटि करि ॥ रहे सकल सर पूरि ॥ कावी गच को दे
 रो ॥ विनिं अंधिन को देव ॥ कहै मुकंद सुगान्नि सियुं देव स
 अलष असेव ॥ २७ ॥ कंत जु चले जिहाज चढि ॥ साइ रेये लाप
 र ॥ कहै मुकंद सोई पाइ है ॥ जो विधनां लिष्या लितार ॥ २८ ॥

नसमंद्मनसालहरि। बूडेवऊतअचेता। कहैमुकंदतहांलि
पऊसंतै। जहांडवधाकेहेता। १७। येडवधाजाकेमतिबसे। वि
तऔरैमनिओरा। अंजनमंजनबाडिकरि। यरिघरिमागै।
कोर। १८। कोरजुमागैबापुरे। होटेबाटेयांहां। कहिसुन्यद
पुरक्रियातै। तैईहंतरतिरांदि। १९। कहिसुकंदजुगचाल
णी। कंनकंनरोलेबांनि। सुसत्तुसरोषेसैतिकरि। ताथेंतनकी
हांति। २०। सादरपारोकोनसुनि। राषिनसकोरतना। कहिसु
कंदतेनरतलो। चलैजतनिजतनि। २१। मनसुवटैसंबलर
चो। देखिबडेबडेफूला। कहैमुकंदगुरपानविणि। सुकतेफि
रैअभूला। २२। सुवासयांनपसषाई। पटिपुणिप्रबसिहोशक
हैमुकंदरगा। मला। पजरिपडेनकोश। २३। कथनीहोतेसुक
धिगये सुनिलीज्योसबकोश। कहैमुकंदकरणीविना। क
थणीसिधिनहोश। २४। कहैमुकंदकलिकेदरसणी। मोटेमै
टेधीगाकेवलपानवतावंतां। फिरिफिरिमांडेसीगा। २५।
रागरमकली। बाऊडेनेवांडेगोपीचंदराजा। बहोबाऊ
डिधेलागरिआवैजी। अंब्यानेंनौजनमनचंप्याराजा। ता
वतागतिस्पयावैजी। टेकामालकिनिद्वानावैराणी। स्होरेम
निरजनतावैजी। जोगजुगतिनोराजअंशुरे। अवेचल
कंधूयावैजी। २६। अरारचंदएनीमठीबंधाऊं। सोनांतां
संनेदंबाजी। कहौतोरूपानांपत्रघडाऊं। सोतांतीसीगी
नांदजी। अगगनिमंडलमेंमंठीअंशुरी। चंदसूरनांदंबा
जी। सहजसीलतांपत्रहंमारी। अनेहदसीगीनांदजी। २७।
कूरकपूरतुम्हेजीमताहोरजा। तारड। किंसयास्योजी। उप
रिफानीनाबीडाआरोगता। बिलीतांपानकिंसयास्योजी। २८।

कृष्णरुहोरेसासउसासं कुरकटअमृतप्यालाजी पांन
 ध्याननांपानअंमहोरे सुबुधिषिसईयापालंजी ॥ ५ ॥ सोडि
 तुलाईतमहोपोटताहोरजा साथरडै किंससोस्योजी ॥ १ ॥ द
 उसीसेनैसबदिसिसेवा ॥ साथरडै किंसषास्योजी ॥ ६ ॥ साथ
 रिसौस्योतैरणषापरिषास्यं ॥ ईदउसीसेदेस्यंजी ॥ सोडितुला
 ईमहोरेसतगुरवांणी ॥ सोसीसिज्याकरिस्यंजी ॥ ७ ॥ कौणत
 म्हारराजाचरणपयालिसी ॥ कौणकरैततवातंजी ॥ कौण
 तमहारीसेजपथरिसी ॥ कौणपुरविसीनांतजी ॥ ८ ॥ गण
 दमाराणीचरणपयालिसी ॥ मनसाकरैततवातंजी ॥ कं
 थाअमहारीसेजपथरिसी ॥ अलषपुरविस्येनांतजी ॥ एसे
 लासेराणीनैबागसेकन्यं ॥ तेहोनिसासडोपडिज्योजी ॥
 जेहैमहाराजानौराजबुडायो ॥ सोजोगीमरिजाज्योजी ॥ ९ ॥
 जलंध्रीप्रसादेराजागोपीचंदबोल्या ॥ म्हारगुरनैंगालितदी
 ज्योजी ॥ सतगुरमहारमस्तकऊपरि ॥ औरतलेरडोकीज्योजी
 ॥ १० ॥ साधसुषीहोरजाचरथरी ॥ महाडषीसंसार ॥ प्रआरी
 हरिकासाधवा ॥ प्रडषकाटणहार ॥ टेक ॥ कौणडषांस्पूहोर
 थेनीसस्या ॥ अनधनतस्याहोतदार ॥ मांतामंगलहीद
 ता ॥ लिखिमिंदैदेकार ॥ १ ॥ रांणीथोरेपिंगुला ॥ हीरांमांटीयोसि
 सोनेंढोत्योथोरेपालिगो ॥ चडुंदिसिपवनरुकोलि ॥ २ ॥ रांणी
 म्होरेसुषमनां ॥ हीराकायाकिरीडि ॥ सुरकासबदांबेधिया
 हरिजीस्यंसंगतिजोडि ॥ ३ ॥ रांणीजाणीसूलीसारकी ॥ त्रस्य
 हीनहीजाइ ॥ ताताथंनलगाइबो ॥ रह्यौरांमत्योलाइ ॥ ४ ॥
 चातातेजनराजाजीतुमजीमता ॥ करताचंदणषोलिषासा
 मुलमुलयहरता ॥ करंमूषडांलालतंमोल ॥ प्रकरसेंडीबी

गलमें गूदडी ॥ कीया सिधारी काने का नांव निरंजन कारौ ॥
 गरु गोखनाथ दीयो उपदेस ॥ धाशये कर सांफिरि आवोर
 जान रथरी ॥ नाथ उजीणी देषा ॥ सरसंग्रामें रांणी कूंफिरां सिरप
 रिलाजेनाथ अलेषाटेक ॥ धाह दे दे रो वैधोल हया ॥ प्रगट पुकोरे
 लेगा कर मों डै रांणी बीने कें थोने कौ ॥ सिया यो जो गा ॥ अत्रप
 णां सवार थिरांणी सब कहैं ॥ मेरा सगात को द्र ॥ संगी सिरज न ह
 रहे ॥ तातें फिर ए न हो ॥ शोधोष अवासां रांणी सात से से जडी
 संवारे रं ड्र के सरिकि सत्तरी चो वाच दना ॥ वोल गडी चंवर क
 रा ॥ धाशये अवासां रांणी गिर किं दरा ॥ से जडी सिला सुहा ॥
 नो से वित चंदन लीयो ॥ वोल गडी अंत व सुसा ॥ धाशो न्हाता
 जी अब लष बंधिया ॥ मो वर किल कें लाष ॥ ही वां ए न सो हेरा जा जी
 सुहं विना ॥ धी धडिया सतलाष ॥ पावे तनिता जी रांणी हंस च
 टि चल्या ॥ मो वर रांणी गज हाथा ॥ ही वां ए विराजे रांणी म्हा रो सं नि
 में ॥ धी धडिया बडसा धि ॥ धनौ वति न बाजे रा जा जी दर कर मे
 नौ हटां चो बीसां हटताला ॥ व्योपारी विं ए जे न ही ॥ रुरे वैसां रुं
 कारा ॥ नौ वति निरंतर रांणी वाजतर हैं ॥ चो हटां चो बीसां
 व्योपारा सां रुं कारां ही रा विं ए जिया ॥ सिरसां टे व्यो हारा ॥ न सं
 दरि संधा सणि रा जा जी त्मु वै सता ॥ गां यं ए ग ध्र प पुर ए पाट
 रिनां चै रं ग अला पिजे ॥ वेणि बजा वत है सुजां ए ॥ ए गिर व वि
 सिष रांणी म्हा रो वैसां ॥ गां ड्र ए यां च प ची स मो रा नां चै कौ ड
 ल सु र करौ ॥ वेणि रुं म कें नौ बीसा ॥ ए सब अंग स पूर ए रा जा न
 रथरी ॥ लाणी वेम संसा धि ॥ सब मिलि ए जा रांणी यों क हैं ॥ धरां प
 ॥ १८५ ॥ न्मा वं त न्नां ए रांणी म्हा र की यो ॥ सेवा सि

हंसतुम्हूरतिराजायेकथी॥ जीवयेकघटदोय॥ कहैनेक
हाधिचारियो॥ बातकहोतुम्हजो॥ १३॥ अणजाणेंविषया
ईयो॥ जाणिरकियोउयालि॥ फिरिपछेपछिताईये॥ पाण
पहलीपासि॥ १४॥ अतिअनिमानेराजाजीतुम्हबोलिया
बहकिनकीजेवात॥ सुंदरिसोहैनोजोवनी॥ अगिअगि
अमीचवात॥ १५॥ नगवेतनरीसैराणीहंसबोलिया॥ नरि
त्रककीषांती॥ जंसकीपासीसलीसारकी॥ त्रैसीकहीहं
सजाणि॥ १६॥ होइनिराससबबाऊडी॥ नुरखेहोदुषयाइ
ब्रह्मपितातुम्हभावली॥ निष्याद्योहघरिजाइ॥ १७॥ ज्मा
तिजोसोखरराजानरथरी॥ गोरषदयादतपाय॥ मूरणब्र
ह्मप्रकतिया॥ तहारद्वालोलाइ॥ १८॥ ३॥ नलोमूलोहो
सिधचैरौजीगी॥ चित्रनीपूतलीबलियाजी॥ टेकवारह
वरसतुम्हसएबोलो॥ सुधामिताईत्रिषानंसाईजी॥ जो
गतएतुम्हसबसिधिपाई॥ नैणांनोदनआईजी॥ १९॥ काली
नैरिहखरखोवली॥ चलतीनांचचलचेलोजी॥ जोगबा
उदमरावखिलेज्या॥ जांसणमरणविगोईलाजी॥ २०॥ वनषंदि
रहंतलाथखोकेत॥ अजषरुनीआसाजी॥ नणंतगोर
षनाथनखिलेनइत॥

१३:४५ अथ
नग्रीअलेषद
दारजीनिव

२०१
२
३
४

वसेगठकाया॥३॥रहणहमारीतषतसणंजे॥मनपवना
दोउघोडा॥सबदहंमारापरतरषांडा॥जिनिजंमसूकीया
निवेडा॥४॥गगनिहंमाराबाजाबाजे॥मूलमंत्रदोयह
थी॥संसाकाबलपुरमुषितोडा॥पचपुरिषमेरेसाथी॥प
जुगतिहंमारीबत्रसिंघासनामहासक्तिरिणवासं॥कहैप्रथ
नाथतेप्ररुषविचषण॥जिनिमंदिररच्याअकासं॥६॥
बडामेवासाकासाजीती॥मनसंकरिहंधियारा॥कहैप्रथी
नाथमेरीतहोकटकरी॥जिनिमसियासकलसंसारं॥७
गणगंध्रपजिनिसंबेसिंघारीदलबलकेअधिकारी॥सोह
दरहंमबसिकरिलीया॥जिनिजीत्याबलनारी॥८॥मनजी
त्याजिनित्रितुवनजीत्या॥जीतासुदरकाया॥गलेपावदेजे
राजीत्या॥जीतीअप्रबलमाया॥९॥वतपतिबलेदोउजी
त्या॥कहैप्रथीनाथयेनारी॥निषमऊऊकरिपुरिषप
ऊंता॥तिसघरिरहेणहंमारी॥१०॥जोपदकथ्याजोगवासि
एघरि॥यहरामाअवतारा॥तिनतीआयरगुरकीया॥तिरि
बेकंसंसारं॥११॥संहंसनांसंकरिकथ्या॥क्याबोल्याहं
बहाणंसुषदेवा॥कलहोयगीताकथी॥नरातिसजनके
सेवा॥१२॥बेदेहोयब्रह्माकथ्या॥नारदकथ्यासुंकांयं॥जि
नउपदेसोंधूतया॥सोअगदासबजुगसांहि॥१३॥प्रथीना
थनांसदेवकदिकाकथ्या॥क्याबोल्याहंएवंत॥जिसकं
रणीधेंपदतया॥धिनमेंपकंतालंका॥१४॥राजाजनकस
याजिनिकाकथ्या॥क्याप्रह्लादकबीरा॥सोपदकाहेन
षोजियो॥जिहिउधरेसरीरा॥१५॥मारकंडेमुनिकाकथ्या
क्यापदगौरवनाथ्या॥जिसकरणीधरंणतया॥ताथेंतन

हंसतुम्हूरतिराजायेकथी॥ जीवयेकघटदोय॥ कहैनेक
हाविचारियो॥ वातकहोतुम्होजे॥ १३॥ अणजाणेविषया
ईयो॥ जाणिरकियोग्यालि॥ फिरियाछेपठिताईये॥ पाण
पहलीपालि॥ १४॥ अतिअनिमानेराजाजीतुम्हबेलिया
बहकिनकीजेवात॥ सुंदरिसोहैनौजेवनी॥ अगिअगि
अमीचवात॥ १५॥ नगवंततरोसैराणीहंसबेलिया॥ नरि
त्रककीषांती॥ जंसकीपासीसुलीसारकी॥ त्रैसीकहीहं
सजाणि॥ १६॥ होइनिराससबबाऊडी॥ गुरनेहोदुषयाइ
ब्रह्मपितातुम्हमावली॥ तिष्याद्योहघरिजाइ॥ १७॥ ज्मा
तिजोगेस्वरराजानरधरी॥ गोरषदयादतपाय॥ मूरणब
सप्रकासिया॥ तहारद्यालोलाइ॥ १८॥ ३॥ नलोमूलोहो
सिधचौरंगीजोगी॥ वित्रनीपूतलीबलियाजीटेक॥ बारह
वरसतुम्हआसंएबोले॥ सुधामिताईत्रिषानसाईजीजो
गतणीतुमसबसिधिपाई॥ नैणानीदनआईजी॥ १९॥ काली
नेगोरीसुंदरिसावली॥ चलतीनांचचलचेलानी॥ जोगबा
उतुम्हराजविलंब्या॥ जोमएमरणविगोईलाजी॥ २०॥ वनषंडि
रहतासाथरिसोवंता॥ अलषगुरुनीआसाजी॥ नणतगोर

अमेगुरुनादासाजी॥ ३॥ ४॥ अथ

सधम॥ जोगयंचलिष्यता॥ स्यांनवितिनंगीअलेषद
रवाजा॥ सतसंतोषउजीरां॥ पंचचौरगहिपडदारजीतिव
तेजोगीबलवीरं॥ १॥ विचारमंत्रीवंबेकपायक॥ चितवे
तनिकुटवालं॥ नवलषघाटीमनलेरुंधिवा॥ तबजी
तिलियाजंसकालं॥ २॥ विषेकलपनांपगदेचंपी॥
बंधिवहाया॥ कहैपधीनाथतवअदलितणी

२५
 मनआयाहाय ॥१६॥ यहैतगतिनागवंतवसि ॥ सुरिषम
 सबपार प्रथीनाथअनंतमुनि ॥ यंतमेंकिनधौक
 संगार ॥१७॥ जिसकरणथेंबूडिये ॥ यहमततनथें
 ग ॥ कहिधौगोविंदकबकिया ॥ प्रनारीस्योसंग ॥१८॥
 तंगपाजमनादर्श ॥ जाकीबहैअप्रबलधार ॥ यहैतग
 करिमांनिये ॥ जोघरिघरिकथेंसंगार ॥१९॥ बुझ्यासद
 प्राटकीया ॥ सुतासरयजाया ॥ यंतवाततजतसतवे
 रहै ॥ सुपिनैहाडिगिजाया ॥२०॥ आष्याकाअंधाजुधात
 हीनप्रथे ॥ कानांकाबहराजोसबदहीनदरसे ॥ द्वि
 काअंधाजोसुरिषहीनमांनै ॥ जिक्काकागुंगाजोस्वा
 दहीनजांनै ॥२१॥ बाहकाऊटादांनकरिषूटा ॥ पांवा
 कालूलाजिनिसंतनदूहा ॥ सगतिकाहीनजिनिरांमन
 पाया ॥ जत्सबृथासंसारमेंआया ॥२२॥ प्रथीनाथतेथेह
 गये ॥ जिनिहिनपायातेव ॥ जैसंमज्यातेनिस्तस्या ॥ ऊवा
 निरंजनदेव ॥२३॥ चैलाइथीतोमुरपीरलाजा ॥ बांहुकाम
 वानसेईयेराजा ॥ सबदहीनब्यंदेतीपटिवाकाघोटा ॥
 गविषेविनसकेतो ॥ किसकांसेमोटा ॥२४॥ जैपरिसरि
 वा ॥ तोजरिजाऊमाया ॥ आपनसंमज्यानहींतोवृथा
 या ॥२५॥ प्रथीनाथतेकतसेईये ॥ जिनिकेपा
 सिगयेंसचनांहि ॥ ज्यूपंथीवालापडे ॥ उजडुनंगीमांहि
 ॥२६॥ जैयऊब्रह्मअषडितपद ॥ तोसरिमरिकाहेजांहि
 जैयहव्यापकसरबमें ॥ तोक्यातपतीरथमांहि ॥२७॥ व
 निवनिहांडेमुक्तिदे ॥ तोपसुपंषीसेंवार ॥ मायामेंजेब
 डिये ॥ तोजांनकत्तयाकूपार ॥२८॥ प्रथीनाथयतनीब

तनबंदहो॥ तिनकोंकाउपदेसा॥ काप्रिसांकीनारिजूं॥ घ
 रहीभांहिबदेसा॥ २१॥ मलमुत्रतैयहतननया॥ तनमन
 हरिसैसो॥ जबहायहफिरिउजलकरिलीजे॥ तबहावसे
 राहोया॥ २०॥ मनबसिहोयतौहरिस्पूमेला॥ हरिसैठेतावं
 ता॥ जिनयतमावस्तविचारीनांही॥ आयवृथाजेजंताव
 जैसेंतिहमेंतेलवस्तहैं॥ काष्ठमध्येआगिदहूंमयनकरि
 दीपककीया॥ तबकबूसूऊंनलागि॥ २२॥ प्रथीनाथकहै
 तेविरलाजेनिजजपें॥ समांनं॥ मनमनसाजबयेककरे
 गा॥ तबहरिनहींतावांन॥ २३॥ प्रथीकागुणदेहा॥ प्राण
 पुंणस्वरो॥ आईकागुणस्वासा॥ रहतिमनमूलां॥ २४॥ प्रनी
 लकागोला॥ ताहिपाचततलागी॥ तिनहीबसिकीया॥ जे
 गुरमुख्यजोगे॥ २५॥ कंधंतप्राप्रथीनाथा॥ प्रकप्रकथ
 कहां॥ २६॥ प्रकप्रुनिनहीपाईयो॥ जिनियहमेदतजां॥ २७॥
 २८॥ यहमनजीतिहंयहमनधरिहं॥ धोषाउपरिचित
 नकरिहं॥ जूंजूंआवेसूंसूंलेहैं॥ इंद्रिजीएप्रिसकोंजं
 एनदेहैं॥ २९॥ प्रथीनाथकहैसबसंता॥ यहविधिप्रिया
 सिवप्रुजंता॥ ३०॥ जनमनहीअकूरविना॥ सड्रासजोसै
 नांही॥ तेकजांसहिबापडा॥ जिनकेसदाकल्पतांसां
 हि॥ ३१॥ जतनरहैतौनेडानिपजे॥ स्तुनरनस्वासयेतां॥ प्र
 थीनाथतेमरिओतरे॥ जेअसरसदासवेतां॥ ३२॥ मनपवन
 सबजातकथतहै॥ ततकथेसबकोई॥ प्रेपांचूंआत्मा
 पांचैपै॥ जेयनकाकहांबैरहोई॥ ३३॥ अहगाबैकथें
 सकलरसोगी॥ बोलतहैघटवैस्य॥

तीरथके न्याये। यतनोत्ततफलहोया। साधको दरसंणपाये
॥८५॥ साधुबेहिय अनेपदा। दरसनदेवेपारा। प्रथीनाथ
दुलंनहै। उनसाधोकादीद्वारा। ८६ साधपुरिषके मिले।
नरमकी संकाटहै। साधपुरिषके मिले। ताहितसकरके
लहै। ८७ साधपुरिषके मिले। दिष्टिवाहरिनही आ
ए। साधपुरिषके मिले। आपआयापहिचाए। ८८ सा
धपुरिषके मिले। दुषदरता नगो। साधपुरिषके मिले।
नरमकी स्तलन लागे। ८९ साधपुरिषके मिले। कृष्णाति
कदेवैसी। साधपुरिषके मिले। कहौ दुबधामतिके सी। ए
प्रथीनाथसांगतिफिस्या। विप्रांम्यायहचिता। अधकारध
यामिद्या। तनमन सयापवित्र। ए१ प्रथीनाथसाधपुरिष
कोतेकाजाए। धोषामं हिंमिलिरहै। औरके बिसवासन
मनीं। ए२ क्वाबऊ विद्यापठे। कहांउपदेसहिदीन्है। येस
बमिथ्याजांनि। बिनासाधके चीन्है। ए३ सबजगकलप
तफिरे। पुरिसकाचितनडोले। संसेस्तलनरहै। जवेमुषअ
मृत्बोले। ए४ सांचतहीफलदेय। कृषहोयतजेनछाया।
तिसगंयसाधुरमें। जहांवाचासतिपाया। ए५ दरसनते
पदपाईये। जैयहसाधुहोता। तिसगंयमनलेमेलकं। ज
हांजुगरहतउदेता। ए६ यत्तउतकी देयमेलि। साधके
बचनहायंडै। साधपुरिषकहौ क्यकरै। वैआपआपनपौ
नडै। ए७ साधमिलेंतैंसाधहोया। उतिकरितागोंसगा। जेस
मऊतौदीपक। प्रषविनिपरेपंतगा। ए८ देउपजाबिता
साधकोकैसैजोबहिं। मनकूंजीतिसकें। सबेपिछलेदि
नरोबहिं। ए९ प्रथीनाथदरसननहीं। अंनिसां

न गुरुगोरषचीन्हांनही तेसब तयेपषांन ॥१००॥ पह
 लेंसंमकिनपडे ॥ धकालागैतैजांनें ॥ बिगरीउपरिसवे
 तांहिईसुरकरिमानें ॥१०१॥ येहेगतिसबसंसार ॥ पुरिष
 कामरमनयांवहिं ॥ जैहरिसंमज्वाहोय ॥ तोबहाक्यूब
 छाचुरांवहिं ॥१०२॥ साधसदाहीमिलें ॥ मुग्ध ॥ कुं क्यासंम
 जावें ॥ तबमहिमांअतिकरें ॥ जबहीबीप्रीतिदिखावें ॥१०३॥
 कलहकल्पनांपापतिधि ॥ साधसंतायेकेप ॥ चांपेतेंआ
 गेषडा ॥ जौपदरहतअलोप ॥१०४॥ बक्ताचनवेपांनीस
 रतामोषिलसंते ॥ बक्तासुरतानजांनांमि ॥ वृथातस्पजी
 वन ॥१०५॥ इतीपअनयसुनयेमंजनसुडतेंएरिष
 यमजधधध्राइंयजेरायाहसंयुकेमजिहो ॥ १०॥
 रागधमाश्री ॥ आजनगरमेंएकजोगीदेख्यो ॥ बीरागोपीचंदरैउ
 णिहारैरेलो ॥ टेक ॥ इसडाजोगीनैजाएनदीज्यो ॥ आगणिस
 ठीबधाकरैलौ ॥ सोनारूयाकीश्रंत्यडाऊं ॥ मोतीइनयो
 लितराकरैलो ॥ १ ॥ मोतीमाणिकबाईघरकाबा ॥ हीरा
 अनंतअपारैरेलो ॥ हसतीघोडांम्हारेआणितहोता ॥
 रबाडामायारैलौ ॥ २ ॥ कौंनडुषारैजोगीकांनफडाया
 डुषारैजोगीमुद्रापहरैरेलो ॥ कौंनडुषारैजोगीराज
 त्यागो ॥ कुंणडुषांसौनारैरेलो ॥ ३ ॥ सतगुरुसबदांकांन
 डाया ॥ दसनमुद्रापहरैरेलो ॥ मातारांसबदांदेसडुलीत्या
 यो ॥ अमरकुंणकुंनारैरेलो ॥ ४ ॥ कुंणतुमारेपितातणीजे
 कुंणतुमारेमाईरेलो ॥ कुंनदेसरोराजकरंता ॥ कुंनबहन
 रनाईरेलो ॥ ५ ॥ राजबहलोचनपिताहमारे ॥ ओरसें
 तीमाईरेलो ॥ देसबंगालकोराजकरंता ॥ तूमहीबहन
 रनाईरेलो ॥ ६ ॥

गीजीसुखसारी॥ न्हारोवीरोजोपाकिमहोसा
 एवतीरेवुत्रअकेलो॥ औरनबंधुकोइले
 ररेहससीघोडा॥ चितरगअनंतअपाररेको
 न्यासेवो॥ निसदिनिदोलेबालेरेलो॥ एकवी
 जगाको॥ विकलमईमेरीकायारेलो॥ देसब
 रमगावो॥ एकजोगीदेगयोधाहारेलो॥ एरा
 यपकुंता॥ थोलागरविलषानोरेलो॥ तरना
 डोले॥ मातारेसनहरषारेलो॥ १५॥ दरशाप
 रेआयो॥ सदसाणिनहिजाएयो॥ रीधीरगोप

चदरइषघोरो॥ लंहिंकोलेजाइरेलो॥ १६॥ वनीराणीक
 रेविस्तरणहथलेवोकिमजोडोरेलो॥ गोपीचंदनेजल
 धरीमिलिया॥ बांधानेहकिमतोडोले॥ १७॥ थप्राजिर
 जलायनोनमः श्रीदयालजीसतिले॥ सावो
 ॥४१॥ साया॥ प्रचाकोअराकीलिषत॥ जनहरीदास
 सुषअंगमहै॥ सोधिलहैतेसंत॥ अरसपसआनंद
 सदा॥ वराहमांसवसंत॥ १॥ रंमतहांसोधोसहजा॥
 बाजैरागअनंत॥ चंदनपङ्कपगुलाललेषिलेसंतव
 संत॥ २॥ जनहरीदासवसंतरूति॥ फूल्यासबही
 बाग॥ विरजमांहाकोतिगनया॥ हरिजनसेले॥
 फाग॥ ३॥ जनहरीदासतहांजाइरे॥ जहांबाराह
 मांसवसंत॥ पांतपङ्कजहांकातहां॥ षलेसंत
 वसंत॥ ४॥ जनहरीदासवसंतरूति॥ षलेगोपी॥
 ज्वलाहरिसनसुषजहांकातहां॥ करियङ्कपुन
 कीमाल॥ ५॥ जनहरीदासवसंतरूति॥ प्रगटेरा
 मअगाध॥ प्रेमपीतिकापङ्कपले॥ षलेचरचैसा
 ध॥ ६॥ जनहरीदासप्रचापषे॥ कोडीकाचीसा

न गुरुगोरषचीन्हांनही॥ तेसबतयेपषांत॥ १००॥ पह
 लैसंमफिनपडे॥ धकालागैतैजांने॥ बिगरीउपरिसवे
 तांहिईसुरकरिमाने॥ १०१॥ येहेगति सबसंसार॥ पुरिष
 कामरमनयांवहिं॥ जैहरिसंमज्जहोय॥ तौबहाक्यूब
 ब्राचुरांवहिं॥ १०२॥ साधसदाहाभिलै॥ सुगंध॥ कुंक्यासं
 जावें॥ तबमहिमांअतिकरें॥ जबहीवीप्रीतिदिषावें॥ १०३
 कलहकलपतांपापतिधि॥ साधसंतायेकेप॥ वांपेतेंआ
 गेषडा॥ जौपदरहतअलोप॥ १०४॥ बकाचतवेपांतीस
 रतामौषिलसंते॥ बकासुरतानजांनांमि॥ वृथातस्यज
 वने॥ १०५॥ इतीषयंनयापुनअरे॥ तमसुडरेंएरिष
 लससाध॥ जडाअंनजोगराय॥ संपुणैतजाजिडा॥ ॥
 रागधनाश्री॥ आजनगरमेंएकजोगादेश्यो॥ बीरागोपीचंदरेंउ
 णिहारैरेलो॥ टेक॥ इसडाजोगीनैजाएनदीज्यो॥ आंगणिस
 दीबधाकरैलौ॥ मोनारूयाकीश्रंतपडाऊं॥ मोतीइनयो
 लिचराकरैलो॥ १॥ मोतीसाणिकबाईघरकाबा॥ हीरा
 अंततअपारैरेलो॥ हसतीघोडांम्हारेआणितहोता॥
 समकिरबाडीमायारेलौ॥ २॥ कौनडुषारेजोगीकांनफडाया
 कनडुषारेजोगीमुद्रापहरैरेलो॥ कौनडुषारेजोगीराज
 डलीत्यागो॥ कूंणडुषासौनारैरेलो॥ ३॥ सतगुरुसबदांकांन
 फडाया॥ दसनमुद्रापहरैरेलो॥ मातारांसबदांदेसडलीत्या
 यो॥ अमरकुंणकूंनारैरेलो॥ ४॥ कूंणकुंणारेपितातणजे
 कूंणकुंणारेमाईरेलो॥ कूंनदेसरोराजकरंता॥ कूंनबहन
 रनाईरेलो॥ ५॥ राजबहलोचनपिताहमारे॥ औरसे
 तीमाईरेलो॥ देसबंगालकोराजकरंता॥ तमहीबहन
 रनाईरेलो॥ ६॥

कांठुवाठुं जोगी जी सच सांरी ॥ न्हारी वीरीं जोगी किम हो सी
रे लो ॥ सात भैणा व तीरे प्रवत्रके लो ॥ और नबंधको इले
॥ १ ॥ गहारा वीरं रेह सरी धांदा ॥ चितरंग अरंत अघार रे लो ॥
देस देसरी कन्या संघे ॥ निरदिनि ठोले वा लो र लो ॥ २ ॥ कठो
नद सी रा व जगा वे ॥ तिदल लत ई भरी का प्रार लो ॥ देस ल
गालारी व बरि मा वे ॥ ऐक जंगी द गंधा धा हार ले लो ॥ ५ ॥ रा
व चंद्रा वत जाय प कुंता ॥ थोला गर विखषा नो रे लो ॥ नर ना
री सब विलषा डो लो ॥ सात रे सज हर वार ले लो ॥ १२ ॥ दर स ए प
हस्यो ह म घरि आयो ॥ मद न म गि न हि जा ए पो रे ॥ धी र गो प
चंद रो इ व घणे रो ॥ लुं हिं वा ले जा ई रे लो ॥ १३ ॥ व ती रं गी क
रे विसर एण ॥ ह थ ले वो कि म जो डो रे लो ॥ गो पी चंद नें जलं
धरी मिलिया ॥ बांधा जे ह कि म तो डो ले ॥ १४ ॥ थ प्रा नि र
ज ना य न्सा न म ॥ आ द्या ल जी स ति ले ॥ सा वी
॥ ४ ॥ सा घा ॥ प्र चा को अ ग की लिष ते ॥ जन हरी दा स
सुष अंगं म है ॥ सो धिल है ते सं ता ॥ अ र ल प स आ नंद
सदा ॥ व रा ह मां सब सं ता ॥ रां सं त हां सो धो स ह ज ॥
वा जै रा ग अ नं ता ॥ च द न प क य गु ला ल ले ॥ वे ले सं त व
सं ता ॥ २ ॥ जन हरी दा स व सं त रू ति ॥ फु ल्या स व ह
वा ग ॥ वि र ज मां हा को ति ग न या ॥ हरि ज न भे ले ॥
फा ग ॥ ३ ॥ जन हरी दा स त हां जा ई रे ॥ ज हां वा रा ह
मां सब सं ता ॥ पा न य क्य ज हां का त हां ॥ वे ले सं त
व सं ता ॥ ४ ॥ जन हरी दा स व सं त रू ति ॥ वे ले गो पी ॥
ज्वा ला हरि स न सुष ज हां का त हां ॥ करि य क्य पु न
की मा ला ॥ ५ ॥ जन हरी दा स व सं त रू ति ॥ अ ग टे रा
म अ गा ध ॥ प्रे म जी ति का प क पू ले ॥ वे ले च र चै सा
ध ॥ ६ ॥ जन हरी दा स प्र चा प

रि॥ उवपद्मं बुटेतदा कानैलीजेमंरि॥ ७॥ धरि
आईतिरनेनदी॥ उवपद्मं येहोइ॥ जनहरीदा
सत्तासारकं॥ पासालगेनकोइ॥ ८॥ प्रमजोतिपु
टेनहा॥ कोटिकरेजेकोइ॥ लोहाकूपारसमिले
सिरकंचनहोइ॥ ९॥ जनहरीदासअंतरिअगदि
दीपकएकअनूप॥ जोतिउजालेपेतीये॥ तहांबा
हडीनधूप॥ १०॥ विविधियकूपसवाविविधिमा
धिमोतीयनकीमाला॥ जनहरीदासपेलीतहां॥ जहां
गोपीगायनगाल॥ ११॥ आखोइएकवीरका॥ अंगम
वारनहीपार॥ हरीदासजनमिलिरहा॥ गहिगुर
फानबिचार॥ १२॥ जनहरीदासअंतरिअगदि॥ प्र
जोतिपुकासा॥ अंगसतोइअनंदसदा॥ मनकीतहा
निवास॥ १३॥ तिरतातिरतातहांगया॥ जहांअचंताअ
रचितकपटीपकचेनही॥ तहांसाधांकीवीर॥ १४
नेनागानिरनेनया॥ हरिसकलबियापीएक॥ हरीदा
सजनयोकहै॥ तामुषियकतापरिषअनेक॥ १५॥ ५५
५५॥ ५५॥ ५५॥ आदिअंतिगोविंदसगा॥ इजा
सगानकोइ॥ जनहरीदासइजासगा॥ सोफिरिबैरीहै
इ॥ १॥ जनहरीदाससंकटियइजा॥ सगानसूजेकोइ॥
मसगासोपरहस्या॥ कुंसलकहांतेहोइ॥ २॥ घटबु
काटेतिमर॥ मनधरिसकेनधीर॥ जनहरीदासते
बहरिसगा॥ रषेबिसारेवीर॥ ३॥ ऐकरातिकासेवण
जीवणऐसाजाणि॥ जनहरीदासहरिसजनबिणि
ताहूंमाहीहांणि॥ ४॥ मरणहैजीवणनही॥ जीवतम
रेनकोइ॥ जनहरीदासजावतमरे॥ सोअबिनासीहो
इ॥ ५॥ जामुषिरामनउचरे॥ आनकथासुषिचोल

श्यामपारषपधै विणजतहैसबकोइ फिरीपी।
 छेपबिताहिना जबनाणां देयाषोइ ॥१९॥ जनह
 रीदासऊचाअधिक त्रियाजपहरे स्वीर तेसी।
 अगनिजलाइसी सोनां संवांसरीर ॥२०॥ जनह
 रीदाससंसारस्युं प्रीतिकरैजनकोइ कालघोर
 चुकेनही इषसुषव्यापे दोइ ॥२१॥ जबही करि
 काठालगे तबही धूजेमन हरीदासजनयों कहे
 ज्योकिरणकाधन ॥२२॥ राजारंमबिसा
 रिकरि जीवरसातलिजाइ जबहरीदासचो
 रासीतरमंतफिरे फिरीफिरीबोठाषाइ ॥२३॥
 जनहरीदासगोविंदसजो देहडरणीवीर क
 होकहांलौराषीये काचैसांडैनीर ॥२४॥ अतिता
 सीसोंआतये तरककुंडिसोंहेत जनहरीदासअ
 वसरनलो चूकाभलाअचैत ॥२५॥ रामसंमदस्य
 रारहा पावापडाजंजीर जनहरीदासवरचूला
 फिरे मनधरिसकेतधीर ॥२६॥ ८२॥
 फूटेकुंतनजलरहे बहताकहैनरामजबहरी
 सगोविंदसजो जाकेसतिविश्राम ॥१॥ जनहरी
 दासमनसावता जहांवसैहरिनीर कनककटो
 रैठाहरे बाघणिवपकाषीर ॥२॥ सीसअसोलिक।
 अजबथा दीन्यसोधीठोइ जनहरीदासमनस
 कर मनकीउलटीदोइ ॥३॥ मनहीकुंमनफेस्कि
 रि मनकातजेविकार तबजनहरीदासपैडक
 टे बाकीरहेनलार ॥४॥ मनसाकोबैरीतही मनसा

मगानकोश जनह
 कवनहोश प म
 तोरमादरीदास
 ६ जाकेनषसष
 सिकानाहिअस
 ७ मेरामास्यान
 बकरूपकरि
 मारिरेयाकीठे
 रिअमनमत
 सकहाग्यानर
 मायामिलेनमे
 जावगयाजेजा
 नदीयामुकल
 सुवधिचिला
 मनमेवासीभा
 फेरिचहामन
 तहातगोटीर
 मरविदामणा
 तहीअलेष
 टयजेआइ
 अलाइ १५
 १५ जनह
 १६ अरानिजलाइ
 १७ सीपेकोए

१
 २
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७



बाहरी कहो मुकति क्यो जाइ २३ काया मय
 महे साचन जाणी वीर जन हरी दास कहिका
 तारा त्रिधा ॥ १ ॥ मृग त्रिसता कानीर २४ ॥ २५ ॥
 न गिनत कौ बंध ॥ कारत त्याका चै सते जपे तके
 बल रास ॥ जहां तहां ना च च फिरे माया बंधे न मन
 १ ॥ चोटी उपरि चोट के लागी किला गिरी राहर
 की वोट ते नरतिर ते जगिरी २ ॥ सा लासन कल
 कर ॥ चोटी उपरि चोटी जन हरी दास तिर ते सते ३
 हो राम की वोट ३ ॥ इतीयां सो दिल दे सिले सा धर
 उरि ओर ॥ हरी दास जनयो कहै पङ्क चोरो किम
 वार ४ ॥ आपत जन कू आपल सी और कू दे अप
 जन हरी दास ते हरि सो विमुख पसुप जे होषा
 ५ ॥ जन हरी दास सुष अंग सहे सथि का ठे ते संत
 जल थोडा अधी घाणा ॥ असा पांन अतंन ६ ॥ सो
 हि अंतर विद्या बोलै मति ता ५ ॥ जन हरी दास नि
 गुरात को ॥ तिह चै निरका जाइ ७ ॥ गुण पौषे नि
 एक धा ॥ सरति तलागी साचि ॥ जन हरी दास का क
 ते ॥ बडुत गया यो नाचि ॥ ८ ॥ पांन ध्यांन पोष्यं लि
 हिर दे सक्या न राषि ॥ जन हरी दास तासाध की हि
 च द सुणे न साषि ॥ ९ ॥ चाल्या थापणि बाहु उरा हे
 राबे गहरि ॥ जन हरी दास कौ डीरता ॥ ताका सासि
 वारि १० ॥ जोरी करि चोरी करे वैसि पांन की बाह
 हरी दास जनयो कहै ताकी कृषी कीह ११ ॥ आप
 की आवटी पडी ॥ इष सुष व्यापे दोइ ॥ जन हरी दास

चौथी दसा ॥ चत्रनपुंड्रवेकोइ ॥ १२ ॥ जहां आयो तद
आंतरौ ॥ करणं सागर हरि ॥ जनहरीदास आयो
व्यां ॥ हे हरि सदा हरि ॥ १३ ॥ ये ड एक आघाचले ॥
दसपूवाजां हि ॥ जनहरीदास कहैण कहा ॥ रजमां
णीमाहि ॥ १४ ॥ मनसा काबादलनया ॥ कामक्रोध
लजोरा ॥ जनहरीदास कहण सरसा ॥ रहण बिडाकं
रा ॥ १५ ॥ आपे चटिक चासया ॥ कोटिक रमलेसाथि
दोड्राथा हरि हे मक ॥ कोडी आई हाथि ॥ १६ ॥ सिंघ
सदा बनमें बसे ॥ गौद उग्रजे आशा एक दिहाडे ध
पकी ॥ सहजे सिरमें घाइ ॥ १७ ॥ जनहरीदास कहै
ग्रजा ॥ जब कलहे न जाण ॥ जब के हरि के हरि मिले ॥
तब ग्रजा परवाण ॥ १८ ॥ मोडामाथामानई ॥ ताल
जावे तोडि ॥ जनहरीदास जनकी संगति ॥ नाप कुंच
वेकोडि ॥ १९ ॥ अरथ करे अतरथ नही बुटे ॥ ताते
फिरि फिरि नां डाफूटे ॥ हरीदास जन असी कहै ॥ कोई
अलटाषेलिषमपदलुटे ॥ २० ॥ मोनी बाहंणि जोतिक
राऊपरि बैवासाह ॥ जनहरीदास याबिणजमै ॥
गोटाघणाकलाह ॥ २१ ॥ भूषहुषसंकटसहै ॥ सहै
बुडाणांभार ॥ जनहरीदासमोनीबलधकासो
करे सुकार ॥ २२ ॥ अलटीने सुलटीकहै ॥ ऊधीनेस
॥ जनहरीदाससांसेडसी ॥ इनीयां चकचुध ॥ २३
रेते बुवालागीपवन ॥ उद्याउद्याजात ॥ २४ ॥ एक
गाधाकीया ॥ मनकीमिटीनरेष ॥ जनहरीदासतर

सुतजलयायेसंगतिकागुणदेवि॥२५॥पांनअगनि
 मुषिकबरे॥गोलाताताहोइ॥जनहरीदाससाचीसं
 गति॥जलतनदेव्याकोइ॥२६॥हेमअगनिमुषिजा
 लीरे॥धातांसगिमिलाइ॥जनहरीदासकंचनतकै
 विकैलोहकेसाइ॥२७॥लोहाजलसुंधोईये॥तबल
 गकांटीषाइ॥जनहरीदासपारसमित्यां॥महोमो
 लिबिकाइ॥२८॥२५६॥नरुअविशोसकौं॥
 ओंमूरतितिहासिलारंभवसेसवमांहि॥जनहरीदा
 सपूरणब्रह्म॥घाटिबाधिकहंताहि॥१॥माणस
 रमेसुरकीया॥सोतौकरतानाहि॥जनहरीदासक
 रतापुरिष॥व्यापिरहासवमांहि॥२॥नहीदेवलसो
 बेरता॥नहीदेवलसोंप्रीति॥कृतमनजिगोविंदस
 जो॥याहसाधांकीरीति॥३॥लोकदियावामतिकरै
 हरिदेवैज्येदेवि॥जनहरीदासहरिअगंमहे॥पूर
 णब्रह्मअलेष॥४॥जनहरीदाससाचीकहै॥साहि
 ब्रजीकीसोह॥याहंणकूंकरताकहै॥ताकाकाला
 मोह॥५॥जेनधरममायोसरूप॥परस्यांलागोपाप
 जनहरीदासनिरसेसतै॥जपोनिरंजनजाय॥६॥
 साचीकथासुणवतां॥सतकोईमांनौरीस॥अल
 षनिरंजनछाडिकरि॥मजेनरमचौइस॥७॥जेन
 धरमसबतेबुरा॥तलाकहैसोकोण॥जनहरीदा
 ससुनाघरमेंसरपहै॥तहंनकीजेगोण॥८॥जेन
 धरमसोधासबै॥पांनसूपलेहाथि॥जनहरीदा
 सफटकफटकफटकूंकहा॥कोईकुणकालगेन
 हाथि॥९॥

विषय लोकेन ही पारजात के पात ॥ १०७ ॥ साधकौ धी ॥
 १०८ ॥ तेल कड़ा हा जल त है ॥ कलि विणि कन बुजा ॥ ज
 न हरी दास सीतल सया ॥ तब चंदन पडंता आ ॥ १०९ ॥ का
 म क्रोध तिस नांत जो ॥ त्रिविधि ताप कना सरां मनां म
 हिर दे सदा ॥ जन हरी दास यो दास ॥ ११० ॥ रूडी यो आ छै सं
 ते ॥ न जे विरंजन रा ॥ जन हरी दास ता साधकी ॥ महिमा
 कही न जा ॥ १११ ॥ चित मांहा वित ले र घा ॥ सम रथ सि
 रें न हार ॥ जन हरी दास ता साधका ॥ मिलिकी जे दी दा
 र ॥ ११२ ॥ पात्र पल क छा डे न हा ॥ हिर द्य ते हरि ना व ॥ ज
 हरी दास ता साधकी ॥ में बलि हारी जां व ॥ ११३ ॥ रां म स जन
 विणि मां न र्द ॥ बा दि गं मा वे दे ह ॥ न ही का हूं सो बे
 रता मोहन बांधे साध ॥ जन हरी दास आठो पहर ॥ स
 जिये राम आ गध ॥ भा व जग ति गो विं द न जन ॥ जा के
 हिर दे हो ॥ जन हरी दास ता साधकूं ॥ गं जि न स के को
 ॥ ११४ ॥ भा व जग ति गो विं द न जन ॥ द या दि ट प ए दा धि
 जन हरी दास गुर गं न ग हि ॥ ऐ सा थि सं गि र धि ॥ ए प्र
 म सं जे ही राम है ॥ कै राम च्छु म्हा रे सं त ॥ जन हरी दास हरि
 न जन विणि ॥ पा सी अ व र अ नंत ॥ ११५ ॥ अ ल ष नि रं ज न
 ना थ स ति ॥ स ति रं म का सा ध ॥ जन हरी दास व र गोक
 हा ॥ या ह तो वा त आ ग ध ॥ ११६ ॥ म न उ ल टा च ड़ा अ का
 स कूं ॥ प व न सु र ति ले हा थि ॥ जन हरी दास ता साध के
 सदा निरंजन साथि ॥ ११७ ॥ चां धो का लो गे न हा ॥ न जी य
 के व ल रं म ॥ जन हरी दास ता साधका ॥ नि र सै प द वि
 स्रं म ॥ ११८ ॥ न र क सर ग सब पर द ह्या ॥ ग हि गुर गं न

बिचार॥ जनहरी दासतासाधस्यु॥ मनसुषिसिरजनह
रा॥१४॥ जनहरी दाससोईजनमला॥ तजेअषडितरंम
रागदीषमेंतैनहा॥ जोपमूलसौकाम॥१५॥ अजबदू
एरहणीअजब॥ अजबवातसोहेता॥ जनहरी दास
धेलेतहं॥ कोईकोईसाधसुचेता॥ अदडीयोअहिमते
चालेउलठीचाल॥ जनहरी दासताकीसंगति॥ जवत
वकरेनिहाल॥१॥१७३॥ सधिकोअंग॥ बैरागीचि
हवनतजे॥ सधिकेपैडेजाइ॥ जनहरी दासआपारह
ता॥ सुषमेरहेसमाइ॥१॥१७४॥ उपदेसकोअंग॥ सी
षत्रीषकीवातडी॥ सांत्तलिमनवावी॥ सीषतसीष
तहीपबै॥ होइसमंदासीरा॥ ब्रातकवृत्तपैडाथके॥ च
लताहोइसहोइ॥ जनहरी दासहरिधांसतहं॥ यहुंचे
विरलाकोइ॥२॥ अजबसाधिसाचासवद॥ घरमेरहे
नसोइ॥ जनहरी दासगोविंदतजे॥ पलानपकडेको
इ॥ अस्तवराचितवनिघाडेदे॥ मनसापरेलमणरे॥ ज
नहरी दासहीराजनम॥ कोडीसटेनहारि॥१॥१७५॥ जनह
री दासलाजेनहा॥ कंचनबदलेकांज॥ जोकुछिगाय
सजाणदेहा॥ तरहितासूरच॥१॥१७६॥ अहंतांरंमतांरंमहे
इजाकोईनाहि॥ जनहरी दासयूंजाणिकरि मनरा
ष्यातामाहि॥१॥१७७॥ आगपामागोअंगमकी॥ अंगससुगोम
योहोइ॥ हरी दासजनयोकरहे॥ मूलियडे॥ मतिकोइ
॥१॥१७८॥ बिचारकोअंग॥ जनहरी दासकहाये
कहां॥ देव्यासोबिबिबाशि॥ फुवसुषसोलागिकरि॥
दृष्टिसुषबाल्याहारि॥१॥१७९॥ विसवासकोअंग॥

पूरणहारपूरिहे। जनहरीदासहरिरात्र जलथलिकी।
 टपतरालीं जहांतहार द्यासमाइ ॥ १ ॥ साईसबकौदेत
 है। बकरिकबहनहालेत। हरीदासजनयोंकहेव
 कैदेवेहीसोहेत ॥ २ ॥ जनहरीदासदातादर्द। इजाकी
 ईनांदि। सबकुचिकरिसवतेश्रगम। व्यापिरसा
 सबमांदि ॥ ३ ॥ त्रैसाकौई एकदेवीसतीसतीनांदि।
 आतसिलागामनसुधिरि। निरभेनिजपदमांदि ॥
 ४ ॥ आतसलागामनचले। मागिरभिष्याषाइ। जन
 हरीदासकउदिमअजब ॥ नजेनिरंजनराइ ॥ ५ ॥
 इजगरउदिमकरतहे ॥ आतसलागादीई। जनह
 रीदासबैरागधिरति। तहांकुचिउदिमनहोइ ॥
 ६ ॥ इहेउदिमअवगातिमजे। गंगजमनमधिवास
 जनहरीदासतवदेयीये। प्रमजोतिप्रकास ॥ ७ ॥
 रापरैपूरणब्रह्म। जहांमनरदासमांइ। जनहरीदा
 सत्रैसाउदिम ॥ औरउदिमकौषांइ ॥ ८ ॥ तनकाउदि
 मकहाकरै। जबमनपिंगुलहोइ। जनहरीदासमृ
 तगपगां। चलतनदेयाकोइ ॥ ९ ॥ जैकबहमृतगव
 ॥ तोबीचिविदंबकोईऔर। जनहरीदासमूवाप
 ॥ नहीकुटंबमेतौर ॥ १० ॥ सतरजतमषटउरमांमै
 तैमौहजातमुषगोइ। जनहरीदासविषंनविरति
 तहांउदिमनहोइ ॥ ११ ॥ पहिवरवाकोइगगां ॥
 सेवगहाजरिचाहाये ॥ साहिवसदाहजुहि। पून्येष्ट
 एचंदज्यो ॥ जहांतहांसरिपूरि ॥ १२ ॥ वारपारमतिगा
 तिअगम ॥ आदिअंतिमधिनांदि ॥ जनहरीदासअं

नंदसदा ॥ प्राणवसेतामं हि ॥ श ब्रह्मपां नवरत्ननी
दत्ता ॥ भलानकहैसीकोइ ॥ जनहरीदास एकछाडि
दूजाप्रजे ॥ जेदूजासतिहोइ ॥ श पूजापूजाकालकी
पकडिकाललेजोइ ॥ जनहरीदास रामबाडिदूजास
जो ॥ तासों मिलेबलाइ ॥ ४ ॥ जनहरीदास पाहकति
न ॥ सबकोचाहेसांचा ॥ कहिधोकैसैमानोये ॥ बीद
विहंणीजान ॥ पा ॥ बीदअसरवखिबरणतजि ॥ सुख
मेसुरतिनिवास ॥ पतिबरतापतिकोमिले ॥ कैनि
सिदिरहेउदास ॥ ६ ॥ विरकताइकोअग ॥ बेरा
गमायातजै ॥ रामतजवसोंप्रीति ॥ जनहरीदासये
लोकहं ॥ देहीकारुणजीति ॥ १ ॥ हाटाबाटाहारदे
भजेनिरंजननाथ ॥ आनकपामोनेनही ॥ हरि
गताकौसाथा ॥ २ ॥ समरथाइकोअग ॥ आगे
बैरंमजी ॥ पूरणब्रह्मअगाध ॥ हरिदासजनयो
तासुबिलागिरहेसबसाधा ॥ ४ ॥ रामदयासनमु
सदाजैहरिजनसमसुखिहोइ ॥ कालजालल
हा ॥ पाडालगेनकोइ ॥ २ ॥ मरुतलनसिंशुग
डारूपसवारहै ॥ हीरारूपसयाशिलेगाकोइ
रीमेलेसीसउतारी ॥ ५ ॥ अगविदेहेइमपाई
धिबलकबुनवसाशायी ॥ ऊचासोंगिरियडो ॥
षसहबलाइ ॥ ३ ॥ तनतटोकुटकाऊईरतीन
संकषितिषरेमनाथारहीरेदोहणीजिसव
नसुखिहोइसरवणांसुणी ॥ तेंअपणसुबा
किसिमंविंसांरेदोहणीदयालि ॥ ४ ॥

साधसुपेह ॥ ब्रह्मनिजघरताकि ॥ जनहरीदासयो
जाणीये ॥ ब्रह्मदिनचटिसीचाकि ॥ परमसजैनिर
प्रेथकी ॥ तकीनकाईवोट ॥ लागीपणसमीनही ॥
शिपाहणकीचोट ॥ भागाकासौकोनहा ॥ जेमनम
डेधीर ॥ परवतसुतसुवागिकरि ॥ नीकांराष्योनीर
७ ॥ लिषमसुतांअरगिरसुतां ॥ आजमंडीनारय
पिसाणांमांहापैसिकरि ॥ मलादिषायाहथ ॥ ८ ॥ सु
रतहांधीरजसदा ॥ मनआचुरतानाहि ॥ हेदलगेदल
देषिकरि ॥ कीकेजाऊमांहि ॥ ९ ॥ सूरवीरसाधैमंतै
नजेसनेहीसंम ॥ जनहरीदासतासाधका ॥ सरैसही
सोकंम ॥ १० ॥ कैसारेकैमरिमिटै ॥ सिरदेलेनिजतोर ॥
जनहरीदाससूरगतको ॥ कायरकामतञ्चोर ॥ ११ ॥ का
यरदलिकानेचले ॥ डरतारहैडरा ॥ जनहरीदासता
पतितका ॥ दरसनकरैबलाइ ॥ १२ ॥ सीसदेणकीवोट
है ॥ तत्रपणांसिरदेह ॥ जनहरीदाससिरकैसटेरा
मरतनधनलेह ॥ १३ ॥ जनहरीदासमसतगरद्या ॥
हरिसंख्यांजाणि ॥ इजामाथाधिरियड्रा ॥ तलीषंवा
॥ १४ ॥ जनहरीदासहरिमिलनकं ॥ अंतरिकी
विचार ॥ सिरसोव्यांजेहरिमिले ॥ तौसिरसोयो
सोबार ॥ १५ ॥ सिरतेरात्सिरधणी ॥ सुऊसिरसोका
काम ॥ सिरहेविषकात्तबडा ॥ त्सुषकासागररा
म ॥ १६ ॥ जोगयंथप्रगमतधरो ॥ धरैतौसीसउतारि
हरीदासजनयो कहै ॥ योहअरथविचारि ॥ १७ ॥
अगमसिंघासंणअगनिसमि ॥ काचाटिकैनकोइ

जनहरीदासबैद्यतहो॥दिनदिनआनंदहोश॥२०॥जन
नहरीदासमेंदोनमै॥खेलतहैगोडासिकौ॥उग्रामधे
ऐकको॥लीजैयैतैमारि॥२१॥सिंघमथोबिसहरउ
सो॥संविऊडोसुजाश॥जनहरीदासगोविंदजो॥
तनतैसुरतिचुकाइ॥२०॥काइरसोंकायरमिले॥
सूरमिलेसतिसूर॥जनहरीदासआनंदददा॥बाजे
अवहदसूर॥२१॥मेरउतटिदसुधानधी॥परबल
प्रवतनाहि॥विणिपायांऊचाचुग्रा॥बसेअका
सामाहि॥२२॥मेरअडिगउलटांगगा॥आयेरल्या
सूर॥जनहरीदासतबदेषीयेनेनामाहीनूरा॥२३॥
यांचूइदीफेरिकरि॥राममजनकरिसूर॥जनहरी
दासकाइरघरां॥कालबजावेसूर॥२४॥जनहरी
दासपीवप्रसीये॥याचप्रलटिल्योलाशा॥डादोक
मसत्साधरो॥सूरसनअसुषजाइ॥२५॥लीसउता॥
स्यासुरिके॥छाडीवनकीआसा॥अंतरिरताएकसों
परमजोतिप्रकास॥२६॥कालकोअंग॥रामदया
नारीरहा॥राषणहारकेडि॥जनहरीदासताजीव
कौ॥कालगद्वैकंवतोडि॥१०॥रामनामवृत्तिबाडिक
रि॥जहोतहांजीवजाइ॥जनहरीदासताजीवकौ॥
कालतहांहीषाइ॥२०॥जनहरीदासगोविंदअजो॥ग
हिगुरमंनविचारि॥करिकवाणकेवरैलीयो॥
कालषडादरवारि॥३॥देहपेहहोइजाइगी॥मूडि
पडेगीमारा॥जनहरीदासगोविंदअजो॥गहिगुर
ग्यानविचार॥४॥हरिसुष परहस्या॥कीच

रद्यालपटाइ ॥ जनहरीदासताजीवकूं हिलायोहाओ
 षाइ ॥ ५ ॥ आसाकेघरिजमवसे ॥ डावपडे तवषाइ ह
 रीदासजनयो कहै ॥ हरिजनतहांनजाइ ॥ ६ ॥ पैलेज
 लिपकृतानही ॥ उलीजलकीआस ॥ जनहरीदास
 सुरगुणकथा ॥ तहांकालकीयास ॥ ७ ॥ जनहरीदा
 समोटीविद्या ॥ करमकालजीवमांदि ॥ रामसजेसो
 उबरे ॥ इजाबुटेनांदि ॥ ८ ॥ कालदहेदिसिदेषीये ॥ ज
 हांतहां भरिपूर ॥ जनहरीदासगोविंदनजे ॥ सोका
 लजालस्पृहरि ॥ ९ ॥ एकदिहाडे इंडकूं ॥ पकडिप
 छोडे काल ॥ हरीदासजनयो कहै ॥ गोपीरहेनगघाल
 १० ॥ सजीवजिकेअंग ॥ औषदिअजबअनूपहै ॥ ज
 रेतौजुरानयाइ ॥ जनहरीदासतूटेविद्या ॥ सुषमेरहैस
 माइ ॥ ११ ॥ गंगाकूं वीषदिदई ॥ घायरकीयोवघाल ॥ ज
 नहरीदासताजीवका ॥ चकानहीजंजाल ॥ १२ ॥ वीष
 दिजरैतौमनमरे ॥ षाइरकरेउघाल ॥ जनहरीदास
 ताजीवकौ ॥ अतिग्रासेकाल ॥ १३ ॥ दयातिरजेरसाके
 अंग ॥ चीटीमाटीहोइरही ॥ रतीनमनिंसंक ॥ पगांतले
 दीमरे ॥ माधेचढेकलंक ॥ १४ ॥ साधसहिमांकेअंग ॥
 जनहरीदासआनंदइहै ॥ मनअपणांपरमोधि ॥ क
 रदापेथकबीरका ॥ सोहमलीसोधि ॥ १५ ॥ पीठिदईसं
 सारकूं ॥ प्रमेसुरसुंप्रीति ॥ जनहरीदासकबीरकी
 याहकुबिउलतीरीति ॥ १६ ॥ उलटैयेडैपरमसुष ॥ परम
 साधतहांजाहि ॥ हरीजंदासजनयो कहै ॥ निगुराप
 ऊंचेनांदि ॥ १७ ॥ अगिननंजालेजलिबूडैतही ॥ ऊडिऊडि

यदैं जंजीरा जनहरी दास निरसे मते ॥ गोविंद न जै कबीर संध
 सारि सारिका जी करै ॥ कुंजर बदे पावा ॥ जनहरी दास कबी
 र कूं ॥ लगन तांती वावा ॥ पाराषण हारा एक त्त ॥ मारण ह
 कोडि ॥ जनहरी दास कबीर का ॥ कोई मत्ता सव्या न मो
 डि ॥ ६ ॥ कंरुण को अग ॥ एति अधारी सर प्रडरा सषत्
 सजन धरि ॥ जनहरी दास हरि अंग म हो ॥ करण कीया ॥
 हृज्वरि ॥ १ ॥ कामी सर को अंग ॥ कर्म कडा ही काम
 कलामि तै लुकटी मां हि ॥ जनहरी दास जी वजल त है जा
 ए को ई तां हि ॥ १ ॥ राम नाम न्यार र ह्य ॥ नारण नारी साथि
 जनहरी दास ता सुष की सति मति अंग म ॥ सो सुष नाया
 हाथि ॥ १ ॥ साचा जो डार म जी ॥ ६ ॥ जो डार म जी ॥ ६ ॥ जो
 डार म जी ॥ काची देह क वृ ॥ शार म रत न न्यार र ह्य
 को डी लीया मारि ॥ जनहरी दास नर नारी यां ॥ नरा बिलंबा
 नारि ॥ १ ॥ गुं ग र ते प सु वं त रे सारणि दो डे ॥ आद्रा ॥ जनहरी दा
 स नारी मते ॥ मिले स जो टा वा वा ॥ पातन म न दे सर ब स ली
 या ॥ नृषि त्त मणि वा वा ॥ जनहरी दास नारी नर का ॥ बां ह य
 क डि ॥ ले जा द्रा धा ॥ जो ग णि ले जु ई कु डी ॥ नो ग करण सो ते द
 सा हि व सो पा वा फि रे ॥ तहां कंध का छे द ॥ १ ॥ जनहरी दास
 पर नारी यां ॥ रो ये न जरि गं वा व ॥ मि ग नि च टा धर मे ध से ॥
 बू ड काली धार ॥ १ ॥ जनहरी दास नारी संग ति ॥ साध करै
 मत को द्र ॥ नारी घट सं कर वया ॥ कु स ल क हां ते हो ॥ १ ॥
 जनहरी दास गो विं द स जो ॥ सु र ति स हृ ज ध रि धा थि ॥ ना
 री हरि स जि ह रि मिले ॥ शो ती संग नि वा रि ॥ १ ॥ मन उ न म
 नि ला गा र है ॥ ना ही आ न उ पा वा ॥

स नारी संग ति

॥१॥ साकं भका घावा ॥ १॥ हरिसे सु रति उत्तारिक रि
 ॥ २॥ पू वा वै सै आश्र जन हरी दास या हा क वि न महा मि
 ही हो इ या ॥ २॥ जन हरी दास पर कां मणी ॥ ने ए वें ए त
 रिया ॥ स त गुर स व द सं सा लिक रि ॥ दो रे बां ए चु का इ
 ॥ ३॥ साध पारिके ॥ ज हं ज ल त हं ज्वा लान ही ॥ हरि स
 हं मे ते ना हि ॥ जन हरी दास के हरि कुरंग ॥ ए के व नि न व सां
 हि ॥ ४॥ स्यां म व रण दो न्मू ड रि स ॥ ऐ क अ ज व अ ए रा ग ॥
 जन हरी दास बो ल्यां वि ग ति ॥ क हां को इ ल क हां का ग
 ॥ २॥ जन हरी दास उ द बु द क या ॥ दो न्मू उ ज ल ना इ ॥ हे
 स अ ज व मो ती चु रो ॥ ब्रू ला म षी या इ ॥ ३॥ ज हां बु ग
 ला त हां हं स अ र त ॥ जन हरी दास ड ष दौ इ ॥ बा सां ता
 रि सर न रि लो ॥ चो रे व्यो र हो इ ॥ ४॥ सी त ल दृ टि च को
 र की ॥ चं द व सै ता मा हि ॥ जन हरी दास ज्वा गं ला चु रो
 दे व्यो दा के ना हि ॥ ५॥ उ द रि स मा इ स च्छु णि ले ॥ रहे नि र त
 रि ला गि ॥ जे क ब हूं सां चा करे ॥ तो जाले ज ल ती आ गि ॥ ६॥
 उ द रि स मा इ स च्छु णि ले ॥ अं त रि र हे उ दा स ॥ जे क ब हूं सां
 चा करे ॥ तो या षं हो इ वि ण म ॥ ७॥ साध स र ति के अं
 ७॥ साध सं ग ति नि र म ल द सा ॥ जे स न हो वै मे ल ॥ जन हरी
 दास तिल तेल का ॥ के सें न या फु ले ल ॥ ८॥ तिल कि रि ष ल्य
 प हो प सो ॥ अ र स पर स र स रूप ॥ जन हरी दास स गं ति स
 र स ॥ के सा न या अ नूप ॥ २॥ जन हरी दास चं द न स ग ति
 व से स चं द न हो इ ॥ बां स बा स ते दे न ही ॥ स क्या न आ या
 षो इ ॥ ३॥ बां स स दा हा व स त है ॥ चं द न की ज ड मा हि ॥
 जन हरी दास नि र बां स यो ॥ ती त र ते या ना हि ॥ ४॥ नि

सिवासुरिगोविंदमजे। कनकं विसरेनां हि। जनहरीदास
 तासाधकी। भैंबलिहारीजावां॥५॥ जनहरीदासकाचीसं
 गति। साराकूटेमनाजोशिप्रकासनकरियेके। जंभपंण
 मां हिरतन॥६॥ जनहरीजलसोंकाहीये॥ तवहाकरेप्रका
 स॥ जनहरीदाससाचीसंगति॥ सोधिकरेसोदास॥७॥
 हैतजीतिकोअंग॥ स्तरजबंसिकंवलका॥ जनहरीदा
 समतजोवा॥ रिबिद्विगस्यांविगोसेमलां॥ असतरहेमुष्णो
 द्र॥८॥ जनहरीदासकमोदनी॥ इएकविलवासा॥ सिस
 विसास्यांविगोसेमलां॥ नहितरहेउदास॥९॥ जनहरी
 दाससुतहेसका॥ कलपिनकरेअकाज॥ भूषसहेके
 मोतीचुगो॥ कुलअपणांकीलाज॥१०॥ निधाकोअंग
 षतनिदान्यानीपजे॥ सरतामोटाहोद्र॥ जनहरीदास
 निदासली॥ ऐकरिजाणेकोद्रा॥ जनहरीदासकहीयेक
 हांमूगधमानेमूशि॥ अगमअरकआकासिरथाषजि
 षिजिडारेधुवि॥ अकेवांवेकेदांहीऐकेग्यानहाणराशि
 लारा॥ जनहरीदासगोविंदमजे॥ यिदहदिसककेरेमुक
 रा॥११॥ नैसकोअंग॥ नैचरकीउलटीपडी॥ वीषदिलगेन
 काद्रा॥ जनहरीदासनीनेरुलाजिनयसषरहेसमाद्र
 ॥१२॥ केसबदकोअंग॥ ऊटकवचनकोडीकसर॥ कलि
 मतराषेकीद्र॥ जनहरीदासयोजाणयियाकाडांहीस
 षहोष॥१३॥ निधाकोअंग॥ आबईमकिसमिसकि
 दांमा॥ योहररसनालेरा॥ जनहरीदासजलएकहै॥ कुचि
 कुणकेकाफेरा॥१४॥ जाणएककुणकाकरमापापमुनिदि

जेसाधकी जास्यो राम दयाल अरसपरस आतंद सदा गाई
 जेगोपाल गाई जेगोपाल प्राणपति प्राणपिबाणे धस्यो धस्य
 कोंठडि अधर अति अंतर जाणे जनहरी दास सह रिप
 सता पलानपकडे काल संगतिकी जेसाधकी जास्यो
 म दयाल २ साधमित्या सुषपाईये मजियेके वलरंम
 नरनारागोविंद विमुष तहां नही साधका काम तहां
 नही साधका काम धस्यां उंडा जलमां ही वणिजे संघ
 सराफ हाटि ही रंकी नाही जनहरी दास हरि प्रसको
 लोचन दोइ सकांम साधमित्या सुषपाईये मजियेके
 वलरंम ३ रंम सनेही साधका बडा वैद जुगमां हि स
 ता जीव जगाइ करि और देस ले जां हि और देस ले जां
 हि सब दर पे ज्यो र हिये सब दक हे त्युं करे सब दक
 सणी सरि स हिये जनहरी दास ता मुलकमें जुग काल
 से नां हि रंम सनेही साधका बडा वैद जुगमां हि ४ सा
 धसदा से लार है कब हूं हरिन जां हि जिनकी जड अंड
 गडी ब्रह्म तो मिता मां हि ब्रह्म तो मिक मां हि सुरति नि
 ज जाइ समाई दर से पर से प्रेम प्रमनिधि अंतरि पाई ज
 तहां अरंम फल हिलिया हरि जन वां ई हि
 धसदा से लार है कब हूं हरिन जां हि ५ को ई आवो
 प्रतिले को ई आवो अरि नाइ साधदंड को पोष दे वो
 वाका फल पाइ वो वाका फल पाइ सुष ते सा फल द्रसे
 आंधी के सुषि धूलि घंटा सुषियां णि वरसे जनहरी दा
 स आर्षे मते सुष मे र हौ समाइ को ई आवो प्रतिले को
 ई आवो अरि नाइ ६ आठ पहर की उन मनी आवपत

रकी प्रीति ॥ आठपहरसनसुविषडा ॥ साहसाधांकीरीति ॥
 याहसाधांकीरीति ॥ एकरसलागाजीवै ॥ अरामपयालाह
 थि ॥ रामरसपावैपीवै ॥ जनहरीदासगोविंदसजे ॥ अराम
 असुरअरिजीति ॥ आठपहरकीठनमनी ॥ आठपहरकी
 प्रीति ॥ ॥ ॥ सुतिरणकौश्रगा ॥ हरिसजिसेदविचारि ॥
 हरिसतिवालो लोई ॥ एकैसाथीसाथिअवरसाथीनहाके
 ई ॥ औरसाथीनहाकीई ॥ जाणियाजीवमेंसाची ॥ रसनारंमर
 दरि रवेमतिथोपेकाची ॥ जनहरीदासगोविंदविमुषासो
 जस्यहसदगतिषोई ॥ हरिसजिसेदविचारि ॥ हरिसतिवा
 लेलोई ॥ ॥ कहादिवावेओरको ॥ अलटिआपकोदेवि करि
 लिषणिससिकादेकहा ॥ लिषिएतहाअलेष ॥ लिषिएतहाअ
 लेष ॥ सुतोलिषिकीहादीजे ॥ दिलकागदकरियाकसु
 तोनिरमलकरिलोजे ॥ जनहरीदासहरिसुमरता ॥ संव
 ररहेतसेमा ॥ कहादिवावेओरको ॥ अलटिआपकोदेवि ॥ ॥
 गुरुजीविंदगोविंदसजन ॥ गोविंदही ॥ सुंप्रीति ॥ हरिदास
 जनयो कहें ॥ आसाधांकीरीति ॥ यासाधांकीरीति ॥ अराम
 सुस्नामितैपाया ॥ निरामूलनिरसंध ॥ कालतेजालेनका
 या ॥ जनहरीदासतहां एकसुषा ॥ नहीहरिनहजीति ॥
 रुगोविंदगोविंदसजन ॥ गोविंदही ॥ सुंप्रीति ॥ ॥ निसदि
 रोमसंनलिजागिनिरसेपदलहेये ॥ जहांतहोमनलाइ
 प्राणप्रदुषकोसहिये ॥ प्राणप्रदुषकोसहिये ॥ सिरिजु

साधकी जास्यो रंग म दयाल अरस परस आनंद सदा गाई
पापल गाई जै गोपाल प्राण प्रति प्राण पिबाए धस्यो धस
छाडि अर अत्रि अंतर जांए ज न हरी दास सहरि प्र
तां पलान पकड़े काल संगतिकी जै साधकी जास्यो
दयाल साधमिल्या सुष पाईये नजिये के बल रंग
पर न्यार गोविंद विमुष तहां नही साधका कांम तहां
तही साधका कांम धस्यां उंडा जलमां ही बलि जै संष
सराफ हटि ही रंग की नाही ज न हरी दास हरि प्रसवे
लेवन दोइ सकांम साधमिल्या सुष पाईये नजिये के
बल रंग रंग म सनेही साधवा बडा वैद जुगमां हि स
त जीव जगाइ करि और दे सले जां हि और दे सले जां
हि सब दर गये ज्योर हिये सब दक हेतू करे सब दक
सण सरि सहिये ज न हरी दास तामुलक में जुरा काल
सेनां हि रंग म सनेही साधवा बडा वैद जुगमां हि धसा
धसदा से लार है कब हूं हरिन जां हि जिनकी जड ओं
गडी ब्रह्म तोमिता मां हि ब्रह्म तोमिका मां हि स्रतिनि
जजाइ समाई दरसे परसे प्रेम प्रमनिधि अंतरि पाई ज
न हरी दास तहां अंगम फल हिलि का हरि जन पां ई हि
साधसदा से लार है कब हूं हरिन जां हि पां को ई आवो
प्रातिले को ई आवो अरि नाइ साधदक को पोष दे
वाका फल पाइ वो वाका फल पाइ सुष ते सा फल द
आंधी के मुषि धूलि घंटा मुषियां एि वरसे ज न हरी
स आठै मते सुष मै र हो समाइ को ई आवो प्रातिले
ई आवो अरि नाइ द आठ पर हर की उनमनी आव

रकी प्रीति ॥ आवपहरसतसुखिषडा ॥ याहसाधांकीरीति ॥
 याहसाधांकीरीति ॥ एकरसलागाजीवै ॥ अरामपयालाह
 थिरांमरसपावैपावै ॥ जनहरीदासगोविंदसजे ॥ अन
 असुरअरिजीति ॥ आवपहरकीउममनी ॥ आवपहरकी
 प्रीति ॥ ॥ १ ॥ सुखिरणकौश्रंग ॥ हरिसजिसेदविचारि ॥
 हरिसतिवालोलीई ॥ एकैसाधीसाधिअवरसाधीनहीकी
 ईओरसाधीनहीकीई ॥ जाणियाजीवमेंसाची ॥ रसनांमर
 हरि रवेमतिथोपेकाबी ॥ जनहरीदासगोविंदविमुषासो
 जस्यहसदगतिषोई ॥ हरिसजिसेदविचारि ॥ हरिसतिव
 लेलोइ ॥ ॥ कहादिमावैओरकौ ॥ उलटिआपकौदेधि करि
 लेषणिसिकादेकहां ॥ लिखिएतहांअलेष ॥ लिखिएतहांअ
 लेष ॥ सुतोसिषिकीहीदीजे ॥ दिलकागदकरियाकसु
 तोनिरमलकरिलीजे ॥ जनहरीदासहरिसुमरतां ॥ संच
 ररहेनसेष ॥ कहादिमावैओरकौ ॥ उलटिआपकौदेधि ॥ ॥
 गुरुगोविंदगोविंदनजन ॥ गोविंदहीस्युंप्रीति ॥ हरिदास
 जनयो कहैं ॥ यासाधांकीरीति ॥ यासाधांकीरीति ॥ अराम
 गुरुगामितैपाया ॥ निरामूलनिरसंध ॥ कालतेजातेनका
 या ॥ जनहरीदासतहांएकसुषा ॥ नहीहरिनहीजीति ॥ गुरु
 गोविंदगोविंदनजन ॥ गोविंदहीस्युंप्रीति ॥ ॥ निसदिन
 रामसंतलिजागिनिरनेपदलहेये ॥ जहांतहांमनलाइ
 प्राणप्रदुषकौसहिये ॥ प्राणप्रदुषकौसहिये ॥ सिरिजु
 राजमचोटनसूकै ॥ देहदेषतांआज्ञाजीवअपणीकरिवूके
 जनहरीदासअवगतिअराम ॥ फेरिमनतासुखिरहिये
 निसदितरामसंतलिजागिनिरनेपदलहिण ॥ ॥ ॥ ॥

बिरहको संग ॥ सतीहोएकीहोसधरि ॥ तनजालन
कौंजांदि ॥ लोकताजलेजलतहे ॥ असलिसतीसोनाहि
असलिसतीसोनाहि ॥ पीवकीषबरिनलाधी ॥ धारजध
स्यानलो ॥ बलीकुलकेपषिबांधी ॥ जनहरीदासअ
साबिरह ॥ जहांतहंजुगमांदि ॥ सतीफूणकीहोसधरि
तनजालनकौंजांदि ॥ ११ ॥ १२ ॥ ज्ञानबिरहकोअंग ॥
बातसुणेसुणिपीवकी ॥ सिरतेंडास्याचीर ॥ लीयासिंदो
राहाथसो ॥ येडैलागीबीर ॥ देहसुतबितसबमूली ॥ जीव
यातहोपीव ॥ पैसिदावानलिकूली ॥ जनहरीदाससंसा
रकी ॥ लगीनकाईसीर ॥ बातसुणेसुणिपीवकी ॥ सिरतें
डास्याचीर ॥ १३ ॥ बिरहमटीमेंपैसिकरि ॥ दहदिसिदीन्हीअ
गि ॥ जीवलणपणपीवके ॥ रहीनिरंतरिलागि ॥ रहीनिर
तरिलागि ॥ आंनचितओठनधारी ॥ प्रगटजलीमेंदानि
लोकलज्यासबहारी ॥ जनहरीदासपीवकाबिरह ॥ त
हंबसेधसिजागि ॥ बिरहमटीमेंपैसिकरि ॥ दहदिसि
दीन्हीअगि ॥ १४ ॥ असलिसतीआकरकहा ॥ अरआल
सतीनांदि ॥ धीरैधीरैउठिचली ॥ एकरेषमनमांदि ॥ एक
रेषमनमांदि ॥ अवरडनियांसबधारी ॥ जीवगयातहं
व ॥ देहधेहमेंलेडारी ॥ जनहरीदासअसाबिरह ॥ ध
स्याबाडिकहांजांदि ॥ असलिसतीआकरकहा ॥ अ
रआलसतीनांदि ॥ १५ ॥ १६ ॥ अंतोवणीकीवांता ॥ अह
संघासणबैसता ॥ दसिहसिकरतावांता ॥ सुतावनित
परिवारसुउठिगयाकरिघात ॥ उठिगयाकरिघात ॥ मा
तसंगितातनमाया ॥ ताईसंगिनभोमि ॥ अंतिसाघीव

काया॥ कंकालचोटचूकेनही॥ जनहरीदासतिल
 माता॥ आइसंघासएवेसता॥ हसिहसिकरतावाता॥
 चौवाचंदनलाइतनि॥ करताबहुतस्यंगार॥ जनहरी
 दासतेमानई॥ जलबलिकूवाछार॥ जलबलिकूवाछा
 रा॥ आरअपणें॥ सिरधास्या॥ पारसनंकेस्वादि॥ जीवनांत
 विधिमास्या॥ बकुडि॥ बकुडि॥ जामेंमरे॥ सुरकालनेला
 रा॥ चौवाचंदनलाइतनि॥ करताबहुतस्यंगार॥ २॥ मा
 लमुलकहैगैघाणा॥ छत्रछांहमनिष्ठाका॥ केमास्याके॥
 मारिसी॥ कालकरतहेताक॥ कालकरतहेताक॥ अति
 केईबूटेनही॥ सुरनरअसुरअनेता॥ सबलोकजस
 कामुषसांही॥ जनहरीदासगोब्येदसजो॥ अवरसवे
 सुषयाक॥ मालमुलकहैगैघाणा॥ छत्रछांहमनिष्ठा
 का॥ अतनधरिधरिमरिमरिगया॥ हरिहरिसज्यान
 नेदा॥ स
 दगतिस्वपजाणेंनही॥ तहांकंधकाबेदा॥ तहांकंधकाबे
 द॥ आनतरवोटनबूटे॥ दसदरवाजारीलि॥ कालकाया
 गटलेटे॥ जनहरीदासअवगातिअगमाफूतीअवर
 उमेकतनधरिधरिमरिमरिगया॥ हरिहरिसज्यान
 नेदा॥ ४॥ जगोरसोवोकहा॥ अवधिघटेघटिवीरक
 होकहंलोराखिये॥ फूवेनाडेनीरा॥ फूवेनाडेनीरा॥ एक
 गाफिलमसोवै॥ सजेनही॥ नगवंता॥ बकुडि॥ मलसोमल
 धीवै॥ जनहरीदाससुरनरअसुर॥ सबसंखलीजस
 कीरा॥ जगोरसोवोकहा॥ अवधिघटेघटिवीरा॥ पा॥ ज
 नहरीदासनिसादिनिघटा॥ वाजेवाकूं॥ वारा॥ घटतघ
 टतस्वदिनघटा॥ मरणंसहीतयार॥ मरणंसहीत

॥ विरह को अंग ॥ सती हो एकी हो सधरि ॥ तन जालन
 कों जांदि ॥ लोक लाज ले जल त हो ॥ असलिसती सो नाहि
 असलिसती सो नाहि ॥ पीव की षवरिन लाधी ॥ धार जध
 स्यान लोका ॥ बली कुल कै पषि बांधी ॥ जन हरी दास अ
 सा विरह ॥ जहां तहां जुग मां हि ॥ सती फूँ एकी हो सधरि
 तन जालन कों जांदि ॥ १॥ १६ ॥ अंग विरह को अंग ॥
 वात सुणे सुणि पीव की ॥ सिर तें दास्या चीर ॥ लीया सिंदो
 रा हाथ में ॥ पै डै लागी बीर ॥ देह सुत बित सब मूली ॥ जीव
 गयात हो पीव ॥ पै सिदा वान छि कूली ॥ जन हरी दास संसा
 र की ॥ लगी न का र्व सीर ॥ वात सुणे सुणि पीव की ॥ सिर तें
 दास्या चीर ॥ १ ॥ विरह मर्दा में पै सिकरि ॥ दह दिसि दीन्ही अ
 गि ॥ जीव लण पणि पीव के ॥ रहा निरंतरि लागि ॥ रही निर
 तरि लागि ॥ आन चित ओट न धारी ॥ प्रगट जली में दानि
 लोक लज्या सब धारी ॥ जन हरी दास पीव का विरह ॥ त
 हं बसे धु सि जागि ॥ विरह मर्दा में पै सिकरि ॥ दह दिसि
 दीन्ही अगि ॥ २ ॥ असलिसती आठर कहा ॥ अर आल
 सती नाहि ॥ धीरै धीरै उठि चली ॥ एकरे ष मून मां हि ॥ एक
 रेष मन मां हि ॥ अवर दुनियां सब धारी ॥ जीव गयात हं
 व ॥ देह षे ह में ले डारी ॥ जन हरी दास असा विरह ॥ ध
 स्या बाडिक हं जांदि ॥ असलिसती आठर कहा ॥ अ
 र आल सती नाहि ॥ ३ ॥ १७ ॥ अंग विरह को अंग ॥ अ
 संघासण बैसता ॥ हसि हसि कर ता वंता ॥ सुता वनिता
 परिवार सु उठि गया करि घात ॥ उठि गया करि घात ॥ मा
 त संगिता तन माया ॥ नाई संगिन मो मि ॥ अति साघी वर

काया॥ कङ्कालचोटबूकेनही॥ जनहरीदासतिल
माता॥ आइसंघसएवैसता॥ हसिहसिकरताबाता॥
चौवाचंदनलाइतनि॥ करताबहुतस्यंगार॥ जनहरी
दासतेमानई॥ जलिवलिकूवाबारा॥ जलिवलिकूवाबा
रा॥ आरअपणैसिरधास्या॥ आरसनाकेस्वादि॥ जीवनांत
विधिमास्या॥ बकुडि॥ बकुडि॥ जामैमरे॥ अरकालनेला
रा॥ चौवाचंदनलाइतनि॥ करताबहुतस्यंगार॥ २॥ मा
लमुलकहैगैघाणा॥ छत्रछांहमनिष्ठाका॥ कैमास्याके॥
मारिसी॥ कालकरतहेताका॥ कालकरतहेताका॥ अंति
केईबूटेनाही॥ सुरनरअसुरअंनता॥ सबलोकजस
कामुषमांही॥ जनहरीदासगोब्यदसजो॥ अवरसबे
सुषथाका॥ मालमुलकहैगैघाणा॥ छत्रछांहमनिष्ठा
का॥ ३॥ तनधरिधरिमरिमरिगया॥ हरिहरिनज्यातनेदा॥ स
दगतिस्वजाणैनही॥ तहांकंधकाबेदा॥ तहांकंधकाबे
दा॥ आनतरकोटनबूटे॥ दसदरवाजोरौलि॥ कालकाय
गठलेटे॥ जनहरीदासअवगतिअगमा॥ फूठीअवर
उमेवा॥ तनधरिधरिमरिमरिगया॥ हरिहरिनज्यात
नेदा॥ ४॥ जगोरैसोकहा॥ अवधिघटेघटिवीरा॥ क
होकहांलौराविये॥ फूवैनांडेनीरा॥ फूवैनांडेनीरा॥ अ
गाफिलनरसोवै॥ अजैनही॥ नगवंता॥ बकुडि॥ मलसोम
धोवै॥ जनहरीदाससुरनरअसुर॥ सबसंछलीजस
कीरा॥ जगोरैसोकहा॥ अवधिघटेघटिवीरा॥ पा॥ ज
नहरीदासनिसदिनिघडा॥ बाजैवाकूंवारा॥ घटतघ
टतसबदिनघटा॥ मरणसहीतयार॥ मरणसहीत

॥ बिरह कौ संग ॥ सती होएकी होस धरि ॥ तन जालन
कौ जांहि ॥ लोक लाज ले जल तहे ॥ असलिसती सो नाहि ॥
असलिसती सो नाहि ॥ पीवकी षवरिन लाधी ॥ धारजध
स्यान लोधा ॥ बली कुलके पषि बांधी ॥ जनहरी दास अ
सा बिरह ॥ जहां तहां जुग मांहि ॥ सती फूणकी होस धरि
तन जालन कौ जांहि ॥ १॥ १६ ॥ शान बिरह कौ संग ॥
बात सुणे सुणि पीवकी ॥ सिरतें डास्या चीर ॥ लीया सिंदो
र हाथ सौ ॥ पै डै लागी बीर ॥ देह सुत बित सब मूली ॥ जीव
यात हो पीव ॥ पै सिदावान लि कुली ॥ जनहरी दास संसा
रकी ॥ लगी नका र्द्ध सीर ॥ बात सुणे सुणि पीवकी ॥ सिरतें
डास्या चीर ॥ १ ॥ बिरह मटी में पैसिकरि ॥ दहदिसि दीन्ही अ
गि ॥ जीवल ग्णपणि पीवके ॥ रही निरंतरि लागि ॥ रही निर
तरि लागि ॥ आनचित ओटन धारी ॥ प्रगट जली में दानि
लोक लज्या सब हारी ॥ जनहरी दास पीवका बिरह ॥ त
हंबसे धसि जागि ॥ बिरह मटी में पैसिकरि ॥ दहदिसि
दीन्ही अगि ॥ २ ॥ असलिसती आदर कहा ॥ अर आल
सती नांहि ॥ धीरै धीरै उविचली ॥ एकरे षमन मांहि ॥ एक
रेषमन मांहि ॥ अवर डुनियां सब धारी ॥ जीव गयात ह
हमें ले डारी ॥ जनहरी दास असा बिरह ॥ ध
स्या बाडिकहां जांहि ॥ असलिसती आदर कहा ॥ अ
र आलसती नांहि ॥ ३ ॥ १७ ॥ अंतो वणी कौ संग ॥ अ
संघासण बैसता ॥ हसि हसिकर ता बांत ॥ सुता वनिता
परिवार सुं उविगया करि घात ॥ उविगया करि घात ॥ मा
त संगिता तन माया ॥ भाई संगिन भोमि ॥ अंतिसा धी वही

काया॥ कङ्कालचोटबूकेनही॥ जनहरीदाससिल
 माता॥ आइस्यंघसंएवैसता॥ हसिहसिकरताबाता॥
 चौवाचंदनलाइतनि॥ करताबहुतस्यंगार॥ जनहरी
 दासतेमानर्द्रा॥ जलिवलिकूवाबारा॥ जलिवलिकूवाबा
 रा॥ नरअपणेंसिरधास्या॥ पारसनांकेस्वादि॥ जीवनांत
 विधिमास्या॥ बकुडिबकुडि॥ जामैमरे॥ पुरकालसेला
 रा॥ चौवाचंदनलाइतनि॥ करताबहुतस्यंगार॥ २॥ मा
 लमुलकहैगैघाणा॥ छत्रछांदमनिष्ठाका॥ कैमास्याकै॥
 मारिसी॥ कालकरतहैताका॥ कालकरतहैताका॥ अति
 कैईबूटैनाही॥ सुरनरअसुरअंतता॥ सबलोकजम
 कामुषसांही॥ जनहरीदासगोब्येदसजो॥ अवरसबै
 सुषथाका॥ मालमुलकहैगैघाणा॥ छत्रछांदमनिष्ठा
 का॥ अतनधरिधरिमरिमरिगया॥ हरिहरिनज्याननेदा॥ सु
 दगतिस्वषजाणेंनही॥ तहांकंधकाबेदा॥ तहांकंधकाबे
 द॥ आनतरबोटनबूटै॥ दसहरवाजोरोलि॥ कालकाया
 गटलैते॥ जनहरीदासअवगतिअगमा॥ फूवीअवर
 उमेवातनधरिधरिमरिमरिगया॥ हरिहरिनज्यान
 नेद॥ ४॥ जगोरेसोवोकहा॥ अवधिघटेघटिवीरा॥ क
 होकहांलोराबिये॥ फूवैसांडेनीरा॥ फूवैसांडेनीरा॥ अक
 गाफिलतरसोवै॥ सजेनहीसावंता॥ बकुडि॥ मलसोमल
 धीवै॥ जनहरीदाससुरनरअसुर॥ सबसंछलीजम
 कीरजगोरेसोवोकहा॥ अवधिघटेघटिवीरा॥ ५॥ ज
 नहरीदासनिसादिनिघडा॥ वाजेंवारुवारा॥ घटतघ
 टतसबदिनघटा॥ मरणंसहीतयारा॥ मरणंसहीत

यारा न्यायनिधुः कतर सोवै मोह दोह बकि बका
 मूलमायामधिवोवै जनहरी मन्त्रमोलिक जात है ए
 नितिकरै प्रकार जनहरी दास निसदिनिघड ॥ बजे
 वारुं वारा ६ ॥ राजारं मनवौ लगे ॥ नारं ए निरसिंध
 जनहरी दास तेमां नई ॥ जाहि अधोगति अंध ॥ जाहि
 अधोगति अंध ॥ आनं आलस उरि लागा ॥ त्रिविधि अं
 धारै वैसि ॥ आं नवौ ठण नही नागा ॥ आं नध्यां नगुर
 ग्यां नविणि ॥ अवर अणै रबंध ॥ राजारं मनवौ लगे ॥ न
 रं ए निरसंध ॥ ७ ॥ २६ ॥ प्रचाको अंग ॥ विणि बादलि
 वरिषासदा ॥ बह रूति वारुह मांस ॥ आत्म अंतरि देवि
 ये ॥ प्रमजोति प्रकास ॥ प्रमजोति प्रकास ॥ प्राणसागर
 में ग्ले ॥ अं नहद सब दउ चार ॥ सुरति निज सा चन चूले
 जनहरी दास आनंद नया ॥ अरथिसमांणी आस ॥ वि
 णि बादलि वरिषासदा ॥ बह रूति वारुह मांस ॥ १ ॥ ग्यां
 पत्रमनसा सुगति ॥ निसदिन वै वाया ॥ आसारं पेश
 लषमें ॥ तरमत फिरे वला ॥ तरमत फिरे वला ॥ स्पं
 घत वमह लिप धारे ॥ मूसौ ग्रासे सेस ॥ सुसौ सुण हां को
 रे ॥ जनहरी दास अदनुद कथा ॥ तहां मनर ह्यासमा
 ॥ ग्यां पत्रमनसा सुगति ॥ निसदिन वै वाया ॥ २ ॥ ष
 गउडा आकासको ॥ बीटी परं समा ॥ जहां चीटी की
 गमन थी ॥ तहां षग वै वाया ॥ तहां षग वै वाया ॥ सु
 लकवो ह अवरे नार्श ॥ सीतधूपर सरहत ॥ एकर सि
 सूतौ सुषदा ॥ जनहरी दास चीटी तको ॥ उलटिन पू
 वी जाइ ॥ षगउडा आकासको ॥ बीटी परं समा ॥ ३ ॥

ग्यांनगुफामैपैसिकशि।बैवातालीलाई।सुषयायासत
 गुसुमिस्था॥सूतीलीयाजगाइ॥सूतालीयाजगाईह
 रिआपकौंआपवतावै॥घटघूंघटपटवैलि॥साध
 तहांदरसंणपावै॥जनहरीदासआनंदइहा॥तहांम
 नरहासमाइ॥ग्यांनगुफामैपैसिकशि।बैवाताली
 लाइ॥धापरापरेपूरणब्रह्म॥प्रमजोतिप्रकास।सक
 लवियापीसंगिसदा॥सबतैरहैउदास।सबतैरहैउ
 दास।वारनहीलाभेपारा॥निजतरवरनिरस्यंथा॥जाए
 तहांबसैहमारे॥जनहरीदासअंतरिअगहा।सनका
 तहांनिवास॥परापरेपूरणब्रह्म।प्रमजोतिप्रकास
 ॥पा॥सबकोसरबसदेतहै॥अपणीअपणीप्रीति॥
 साहिवकौंसरबसदीया॥आकुब्जउलटीरीति॥याकु
 ब्जउलटीरीति॥जीतिगुणगोविंदगावै॥सूंनिमंडलमें
 पैसि॥साचस्योसुखतिलगावै॥जनहरीदासआनंद
 नया॥बूटीसबैअनीति॥सबकोसरबसदेतहै॥अप
 णीअपणीप्रीति॥धासहरअधरपैडाअधराकसर
 करमनहीकोर॥धरमअधररहणीअधर॥अधरसब
 दकीघोराअधरसबदकीघोराअधरवरियाघणअ
 या॥जहांतहांनरपूरी॥अधरगुरगमितेपाया॥जनह
 रीदासनिरसैनगर॥तहांजमकरिसकैनजोर॥सह
 रअधरपैडाअधराकसरकरमनहीकोर॥अनिगम
 अगमसनतहांबसै॥जहांसाधांकीवैर॥प्रमानंदप
 तियरसता॥बूटिगयानरमओर॥बूटिगयातरम
 रा।रंमनिरसैसुषयाया॥रूपरेषरसरह

लनकाया॥ जनहरीदासचरित्रग्रह॥ पङ्कचएका
 पंथश्रीर॥ निगमग्राममनतहंबसे॥ जहांसाधंकीते
 र॥ टी॥ सौवतसौवतसौदरहा॥ जागिजागिकहांजाइ
 सोवणजाणएतैअगम॥ तहांमनरहासमाइ॥ तहांम
 नरहासमाइ॥ प्रथमअपणेंघरिआया॥ निरामूलनि
 रसंध॥ अगमगुरगमतेपाया॥ जनहरीदासअवगति
 अगम॥ तहांमनरहासमाइ॥ सौवतसौवतसौदरहा
 जागिजागिकहांइ॥ ए॥ मनचंचलनिहचलनया
 त्रिवेणीतटिवास॥ अघिअजवजेअजनपहरा॥ प्रम
 जोतिप्रकास॥ प्रमजोतिप्रकास॥ अगहिअघबिणि
 अघजारण॥ सीतधूपरसरहत॥ करमभैसरमनिवा
 रण॥ जनहरीदासपतिप्रसता॥ कामक्रोधकानस॥
 मनचंचलनिहचलनया॥ त्रिवेणीतटिवास॥ १०॥ धु
 निमांहीमुनिमवरच्या॥ दहदिसिवाजेत्तर॥ जनहरी
 दासआनंदनया॥ सहजिप्रकास्यासूर॥ सहजिप्रका
 स्यासूर॥ अजरनिरभैनिरधारं॥ तहांमनरहासमा
 इ॥ वारनहिलानैपारं॥ जनहरीदासआनंदइहा॥ जहांत
 मरपूर॥ धुनिमांहीमुनिमवरच्या॥ दहदिसिवाजे
 ॥ ११॥ मनचंचलनिहचलनया॥ मनकोईचूत
 पहलीकापेंडाथका॥ उलटिचल्याअवधूत॥ उलटि
 चल्याअवधूत॥ निरषिनिरभैपदलागा॥ कामक्रोध
 अनिमान॥ आनअनरथअरितागा॥ जनहरीदास
 आनंदनया॥ उलकिसलूधासूत॥ मनचंचलनिहच
 लनया॥ सरमनकोईचूत॥ १२॥ ३०॥ मनकोअंग॥

अधरनीर आकासमें। एषै विरलाकोइ॥ मनपाणी सुधि
सबदकै। राख्यं ही धिरहोय। राख्यं ही धिरहोइ॥ कहि
नाममनके मधिधारे। ब्रह्म अभिप्रजले॥ मनपारयो।
मारे। नीरपलटियावकतबै। गतजनहरीदासपठदे
इ॥ अधरनीर आकासमें। एषै विरलाकोइ॥ १॥ मच।
कैमतेसबजीवहै। मनवसिकरैसकोइ। जनहरीदा
समनराजहै। तहारजविराजीहोइ। तहारजविराजी
होइ। नाचमनबहोतनचावै। तबहायुसीउबाह॥ ब
दुरितवहादुषपावै। रामसजनकासेनही। धेडातजे
नहीइ। मनकेमतेसबजीवहै। मनवसिकरैसकोइ
॥ १॥ मनविसहरमुखपांच॥ अधिव्रगिणंतमासा॥
मोहादसडसएषटजीसासोहबंनईतहांवासा। मोह
बंबईतहांवासा। पूबगहिचिंताताए। इंकतरैतहां
जरंहराजुगतिकीइजोगीजाणें। जनहरीदासगुरपा
नजडी। गहिमुखिकीलेआसा। मनविसहरमुखपा
ंच॥ अधिव्रगिणंतमासा॥ ३॥ पांचोइंदीप्रपमना।
चंताजहरमुखलौइ। कील्यातबनिरविषमया। ड
कनपिसकेनकोइ। जुगतिजाणेंतबजगो। नागदव
एहारेनांवा। रहेमनकेमुखआगे। जनहरीदासमन
उनमनिलागारहे। पवनसुरतिसंगिदोइ। पांचोइंदी
प्रपमना। चंताजहरमुखिलोइ। ४॥ जनहरीदासकहि
येकहो। रूपगोत्रोमनधारे। कायावनमेंचरे। डरेनहि
डहकिनहारे। डरेनहिडहकिनहारे। बलेअधणीग
गोडै। सुरनरअसुरअनेता। सुतोतिण

लनकाया॥ जनहरीदासअंतरिअगह॥ पङ्कचएका
पंथऔर॥ निगमअगममनतहांबसे॥ जहांसाधांकीवे
र॥ टी॥ सौवतसौवतसोइरहा॥ जागिजागिकहांजाइ
सोवएजागएतैंअगम॥ तहांमनरहासमाइ॥ तहांम
नरहासमाइ॥ प्रथमअपणेंघरिआया॥ निरामूलनि
रसंध॥ अगमगुरगमतेपाया॥ जनहरीदासअवगति
अगम॥ तहांमनरहासमाइ॥ सौवतसौवतसोइरहा
जागिजागिकहांइ॥ ए॥ मनचंचलनिहचलनया
त्रिवेणीतटिवास॥ अघिअजबजेअजनपहरा॥ प्रम
जोतिप्रकास॥ प्रमजोतिप्रकास॥ अगहिअघविणि
अघजारण॥ सोतधूपरसरहत॥ करमभेसरमनिवा
रण॥ जनहरीदासपतिप्रसतां॥ कामक्रोधकानस॥
मनचंचलनिहचलनया॥ त्रिवेणीतटिवास॥ १०॥ धु
निमांहीमुनिमवरच्या॥ दहदिसिवाजेत्तर॥ जनहरी
दासआनंदनया॥ सहजिप्रकास्यासूर॥ सहजिप्रका
स्यासूर॥ अजरनिरभेनिरधारं॥ तहांमनरहासमा
इ॥ वारनहिलाभेपारं॥ जनहरीदासआनंदइह॥ जहांत
मरपूर॥ धुनिमांहीमुनिमवरच्या॥ दहदिसिवाजे
त्तर॥ ११॥ मनचंचलनिहचलनया॥ मनकोईचूत
पहलीकापेंडाथक्या॥ उलटिचल्याअवधूत॥ उलटि
चल्याअवधूत॥ निरषिनिरभेपदलागा॥ कामक्रोध
अभिमान॥ आनअनरथअरितागा॥ जनहरीदास
आनंदनया॥ उलकिसलूधासूत॥ मनचंचलनिहच
लनया॥ सरमनकोईचूत॥ १२॥ ३८॥ मनकोअंश॥

अधरनीरआकासमें। शयैविरलाकोइ॥ मनपाणी सुषि
सबदके। राव्यांही थिरिहोया। राव्यांही थिरिहोइ॥ ह
नाममनके मधिधारे। बहअधिप्रजले। मनपाणयौ।
मारे। नीरपलटियादकतवै। गतजनहरीदासययदे
इ॥ अधरनीरआकासमें। शयैविरलाकोइ॥ १॥ मन
कैमतेसबजीवहै। मनबसिकरेसकोइ। जनहरीदा
समनराजहै। तहाराजबिराजीहोइ। तहाराजबिराजी
होइ। नाचमनबहोतनचावै। तबहीषुसाउबाहा। ब
कुरितबहाडुषपावै। शंमनजनकासेनही। थिंडातजे
नहोइ। मनकैमतेसबजीवहै। मनबसिकरेसकोइ
॥ २॥ मनबिसहरमुखपांच॥ आधिअगिणततमासा॥
मोघादसडसएषटजीता। मोहबंबईतहांबासा। मोह
बंबईतहांबासा। पूबगहिचिंताताए। डंकतरैतहां
जरंहराजुगतिकीईजोगीजाए। जनहरीदासगुरग्यं
नजडी। गहिसुषिकीलेआसा। मनबिसहरमुखपांच
चा। आधिअगिणततमासा॥ ३॥ पांचौंइंद्रीप्रपमना॥
च्यंताजहरमुखलोइ। कील्यातबनिरविषनया। डं
कनरिसकैनकोई। जुगतिजाएतबजगो। नागदव
एहरिनांवा। रहैमनकैमुखआगे। जनहरीदासमन
उनमनिलागारहै। पवनसुरतिसंगिदोइ। पांचौंइंद्री
प्रपमनाच्यंताजहरमुखलोइ। ४॥ जनहरीदासकहि
येकहां। सुपगो ज्योमनधारे। कायावनमेंचरे। डरैनहि
डहकिनहारे। डरैनहिडहकिनहारे। चलेअधणीगं
गोडै। अनरअसुरअनता। सुतोतिणकाज्योतोडे।

विविधितां तधरिचरि सुतोसवसिष्टिसंघारे जन
 हरीदासकहियेकहो रूपरो ज्योमनधारे ॥ ५ ॥ मनपं
 यीकायासुवन ॥ डारिडारीचाव ॥ अंधिअंततहि
 तमुषअंतत ॥ विविधियंयबहुपाव ॥ विविधि
 पंयबहुपाव ॥ सुतोसतिसवदननाये हरितरवर
 सुषअगम ॥ जनहरीदासचंचलचपल ॥ फूलनरम
 तहांनाव ॥ मनपंयीकायासुवन ॥ डारीडारीचाव ॥
 ६ ॥ ज्योमनफेरैत्योफिरै ॥ मनकोफेरैनांहि ॥ निवाला
 पूजातको ॥ व्याहवाहरोजांहि ॥ व्याहवाहरोजांहि ॥
 हिअरुविरकितगावै ॥ डीबीसांहादिष्टि ॥ ऐसिधिरूप
 कहावै ॥ जनहरीदासअेसाजती ॥ हमदेव्याजुगसां
 हि ॥ ज्योमनफेरैत्योफिरै ॥ मनकोफेरैनांहि ॥ ७ ॥ नांव
 चम्हारोमंजी ॥ लेतांलगोनदंम ॥ मननिकमौवैतोरहे
 करैअवरहीकांम ॥ करैअवरहीकांम ॥ गंतगरिअंतरि
 नाही ॥ हरिसुषसागरबाढि ॥ वसेविषकाबतसाही
 जनहरीदासजामैमरे ॥ हरिसौंद्रहहरोम ॥ नांवतम
 रोमंजी ॥ लेतांलगोनदंम ॥ ८ ॥ १० ॥ मायाको ॥
 ॥ एकबीजताकाविरष ॥ अनंतरूपबहुताइ ॥ ता
 फूलमै ॥ सबकोरहासमाइ ॥ सबकोरहा
 समाइ ॥ बहूततूषाबहुधाया ॥ ताहीमैउपजेषये ॥
 आपहीआपबंधाया ॥ जनहरीदासहरिसुषअगम
 तहांसाधएककोइंजाइ ॥ एकबीजताकाविरष ॥ अ
 नंतरूपबहुताइ ॥ १ ॥ मायादरयतजहरफल ॥ अ
 मवारनहिपार ॥ चारिषांतिकाजीवसब ॥ एकफर

कविसतार। एक फरक कविसतार। सुसाधे लेंता मोह
जनहरीदासहरितरवरसुखअराम। तहांतेपुंजे
नाही। षट्सणुडिउहिथक्या। विविधिपेधगरा
नार। मायादरषतजहरफला। अगमवारनदीपार
॥२॥ याअंजनसों प्रातिहैं। तहांनिरंजनद्वारि। अंजन
संजनहोइगा। अरकालनेपुरि। अरकालनेपुरि। ज
नमअसाकेोंहारो। श्रीकौडीस्योदेवा। हाथसैंदाराउ
रौ। जनहरीदासगोविंदनजौ। तजिमांसिबडाईधूरि
याअंजनसों प्रातिहैं। तहांनिरंजनद्वारि। सकल
बियापीसंगिबसे। डरंगदेहकीकोटा। हजाअधगए।
कोनही। याअंजनकायोतायाहअंजनयोटा। जागि
जोगीजुधकीजै। ग्यानबडगलेहाथि। रणजीतिका
यागठलाजै। जनहरीदासहरिसुषतहं। जमकरिम
केनचोटा। सकलबियापीसंगिबसे। डरंगदेहकीको
टा। धामाताकेसेवाकरोदेहपलटिकेनाथि। पितोपन
टिमोपूतहैं। देव्यासोचिदिचाशि। देव्यासोचिदिचा
रा। वातयाकसोंकहिये। आपआपसुंजां। आप
तौन्यारहिये। जनहरीदासहरिसुसरतां। गंरक
रिलगैना। शिमाताकेसेवाकरोदेहपलटिकेनाथि।
॥५॥ ५॥ बाणिकोअं। चकचकत। चकचकत। चकचकत।
चलचलतगयाहाथि। चकचकत। चकचकत। चकचकत।
मनकोसक्यानमागि। मनकोसक्यानमागि। चकचकत।
रसयडषदारण। जनहरीदासहरिसुसरतां। गंरक
मनसक्यानमागि। चकचकत। चकचकत। चकचकत।
पारबससुषद्वारि। रसाल। अकाकारण

चलतगयाहारि ॥ १ ॥ पठतपठतपठिपठिअपठ ॥ अरथ
 करततयेअंध ॥ हरिप्रहरिचाल्याकुपह ॥ गलिमेंतैदो
 इफंध ॥ गलिमेंतैदोयफंध ॥ नावनरहरिनहीलीया ॥
 पारबह्यपतिबादि ॥ अवरतानारसपीया ॥ जनहरीदास
 नरतांनजे ॥ नारायणनिरसंध ॥ पठतपठतपठिपठि
 अपठ ॥ अरथकरततयेअंध ॥ २ ॥ सुणतसुणतसुणि
 सुणिअसुण ॥ कथतकथतगायाकोडि ॥ रहतरहतरदि
 रहिवह्ला ॥ पालिगयामनफोडि ॥ पालिगयामनफोडि
 रंमनजिपारनकीया ॥ कांसक्रोधअतिमांत ॥ मोह
 मायामदपीया ॥ जनहरीदासहरिसुषअगसतहांस
 नसकानजोडि ॥ सुणतसुणतसुणिसुणिअसुण ॥ कथ
 तकथतायाकोडि ॥ ३ ॥ एकादसगीतापटी ॥ अणत्तैअ
 रथअनेक ॥ पैडादोइदोइकरतहै ॥ वातकहेतहैएकवा
 तकहेतहैएक ॥ पुरतितहांलागीनांही ॥ परपरैपतिबा
 डि ॥ धस्याउंडजलमांही ॥ जनहरीदासनरबोलेदुरसि
 बाणीविविधिविवेक ॥ एकादसगीतापटी ॥ अणत्तैअ
 रथअनेक ॥ ४ ॥ वैतइलंसपठिआरबी ॥ सबकाकरैवै
 न ॥ नीफिरिडुनीयांसोमिले ॥ इहवडाहरांन ॥ इहरांसु
 रांन ॥ प्रमसुषिपडंतानाही ॥ आपाकेअस्यानि ॥ बसे
 विषकावनमांही ॥ जनहरीदासनिरविषनहा ॥ चि
 तमांही ॥ वितआन ॥ वैइलंसपठिआरबी ॥ सबकाक
 रेवयो न ॥ ५ ॥ चारिवेदचास्योपट्या ॥ इलंसआरबी
 आधि ॥ मनचंचलनिहचलनही ॥ तोकबूनआ
 याहाथि ॥ कबूनआयाहाथि ॥ वातकहेवैरदीय

हरिसमप्रथविचित्रोत्तर॥ जनहरदंभित्तकरियाया॥ जनह
रीदासकहियेकहा॥ नरमनसक्याननाथि॥ चारिवेद
चास्योपद्या॥ इलमअरबीआधि॥ ६॥ पाठपद्यासुमि
त्तसबे॥ इलमअरबीआधि॥ कहियेस्योरहियेनही
लोकबूनआवेहाथि॥ लोकबूनआवेहाथि॥ अलष
गतिलषेनकोई॥ पारबलपतिबाडि॥ अवधियरजे
नरषोई॥ जनहरीदासकहियेकहा॥ मनबसेविडोंके
साथि॥ पाठपद्यासुमित्तसबे॥ इलमअरबीआधि
॥ ७॥ सबसुमित्तअवणंसुएण॥ सबदेव्याअवगाहि॥ न
रथरसतकेसबदका॥ अरथकरेवकुताइ॥ अरथ
करेवकुताइ॥ अरथअणनेसबजाणे॥ अरथकरेव
अंगमअंगमदृष्टांत॥ कथामेंपसंगआणें॥ जनहरीदा
सअवगुणइहा॥ विविधिताषततितहि॥ सबसुमित्तअ
वणंसुएण॥ सबदेव्याअवगादि॥ ८॥ स्वामीतीवेवास
ही॥ मांनिबांनिकीबांहा॥ मांनिबांनिउडिजाइरी॥ जब
जमपकडीबांहा॥ जबजमपकडीबांहा॥ पकडिधरती
स्येमांरे॥ जनहरीदासगोविंदा॥ विमुखांनरकोणदरवा
रिपुकोरे॥ मायावगिगिषावहे॥ त्तमतिजाणेंबांहा॥
स्वामीतीवेवासहि॥ मांनिबांनिकीबांहा॥ ९॥ जनहरी
दाससबकेसुधी॥ रागदोषरसहाथि॥ अरसपरसके
मिलिरहा॥ गुणइंद्राकेसाथि॥ गुणइंद्राकेसाथि॥ ज
हरदंभित्तकरियायो॥ साधंवरजीवाता॥ तहांही॥
जीवै॥ कोईजनजापासेजाणोसी॥ रामतांम
जनहरीदाससबकेसुधी॥ राग

नैषपहरिनाडीकरी॥हारिजातिस्योहेत॥अरसपरस॥
 वाद्रकजहर॥योलाडुकरिलेत॥योलाडुकरिलेत॥हेत
 रसबाँटेनारी॥अधिकप्रीतिप्रवेश॥मितैज्मूस्वानसं॥
 जारी॥जनहरीदासकहियेकहा॥चेतेनहीअचेतासे
 षपहरिनाडीकरी॥हारिजातिस्योहेत॥११॥लोगांसे॥
 तीप्रीति॥साधदेव्यांइषयवे॥विक्रतदीसेदूरियह
 मोहिअचिरजआवे॥यहमोहिअचिरजआवे॥ज
 हरदाराणइषदाये॥नीसांणाकीबात॥मूठिडुबधामे
 गये॥जनहरीदासअवगुणयह॥आपकाअवगुणबा
 वे॥लोगांसेतीप्रीति॥साधदेव्यांइषयवे॥१२॥तांमसगुण
 रसबैरता॥राजसगुणअनिमान॥स्वांतिगगुणरसलुड
 षडीतहांजीवतोडे॥तांन॥तहांजीवतोडे॥तांन॥घरसवो
 थानहीपुया॥नेषधस्योधरिष्ठिया॥जीवजीवांकीबा
 या॥जनहरीदासकहियेकहां॥कहिकौंएनपूजेअंन
 तांमसगुणरसबैरता॥राजसगुणअनिमान॥१३॥स्वा
 दीस्योस्वादीमिते॥जहांसमकितहांसाच॥सांनिअसांनि
 स्वादनचावेतं॥पाच

जनहरीदासहरिस्वादतजि॥ स्वा
 दीस्योस्वादीमिते॥जहांसमकितहांसाच॥१४॥अपरवाडे
 सेरियां॥कहैयोवस्यो॥प्रीति॥यांहवांतासाहपरसिक॥
 रि॥कूणगयाजगजीति॥कूणगयाजगजीति॥रंमसुष
 लहैनक्योही॥साधीसबदअरघ॥कहैकहिज्योकास्यो
 ही॥जनहरीदासअवगुणइहरजाअंनरसरीति॥अप

रवाड़े सेरियां॥ कहै यी वस्यो प्रीति॥ १५॥ यथापथी सबको
 मिले॥ जहरन स्या मुखनाग॥ जनहरी दास ब्रौ ल्या विग
 ति॥ कहांकोई लकहांकाग॥ कहांकोई लकहांकाग॥
 तथिनी ब्यो रतारी॥ वा अचवे रस आंवा॥ काग करं कां वि
 तचारी॥ वरण बाडि अवरण सजे॥ ताके मस तरि तारा
 यथापथी सबको मिले॥ जहरन स्या मुखनाग॥ १६॥ तलि
 गया तांडी करी॥ प्रमसने हीरंम॥ जहांतहां तेजी वसब
 न्यायसहै सिरि घांम॥ न्यायसहै सिरि घांम॥ नां वनिरसे
 नही पाया॥ सूक विरषस्यो प्रीति॥ अगम हरित रवर
 या॥ जनहरी दास गोविंद विमुषा॥ कदे नरनिह कांम॥ त
 लियाया तांडी करी॥ प्रमसने हीरंम॥ १७॥ ६८॥ कांमी न
 रको अंग॥ कांमराइंद ग रजत फिरो॥ पवन धजा फहराइ
 जाजा घटिसंवर करे॥ सो कांम रूप कै जाइ॥ सो कांम रूप
 कै जाइ॥ संक का ककी नही माने॥ वसती मां हिन जा डि
 को सदादसकी जाने॥ जनहरी दास गाति सति हें ये सुधि
 बलक बून वसाइ॥ कांमराइंद ग रजत फिरो॥ पवन धजा
 फहराइ॥ १८॥ गपानत धर्तै तै गत स्या॥ ऊका ऊरोषे आइ॥
 देषमगन मन मोहनी॥ पीठे लागा धाइ॥ पीठे लागा ला
 धाइ॥ चोरि चंचल बितलीया॥ संकरे ते कोई सबला कां
 जनहरी दास कै हिये कहां॥ वकृत

॥ १९॥ घटत घटत सब यो घटा॥ ज्यो कियो ए कालो ह॥ ज

मिरण उरिधारि ॥ आन उरिदृष्टन आणी ॥ जनहरीदास
हरिस्य अगम ॥ फेरितहं मनलाइ ॥ अवधिघंटे यसे
जुरा ॥ कालपडुता आइ ॥ १ ॥ मनसजन एकवात ॥ घा
तया तुमस्यौ कहिये ॥ तजिकाम क्रोध अतिमान रा
मरायेत हार हिये ॥ रामरायेत हार हिये ॥ सिरजुराज
स चोटन लागे ॥ आ ॥ त्सके अस्यानि ॥ जोगजरणां ले
जागे ॥ जनहरीदास निरसे बसत ॥ अगहि अति अंत
रिल हिये ॥ मनसजन येक वात ॥ घातया तुमस्यौ कहि
ये ॥ २ ॥ प्रबद्धाडि गोविंद नजो ॥ मूलिपडो मतिकोइ ॥ जन
हरीदास हरिसी बसत ॥ मूलो नली नहोइ ॥ मूलो नली
नहोइ ॥ फुनिगमणि विणिके जोवे ॥ अहरपयालाक
हर ॥ हाथि अयोगे नरपीवे ॥ उरि अंतरिकांटा अऊं ॥
ग्याननजिरलेषोइ ॥ प्रबद्धाडि गोविंद नजो ॥ मूलिपडो
मतिकोइ ॥ ३ ॥ आप आपको सारिकरि ॥ आप आपको
षाइ ॥ आप आपको बाडिकरि ॥ आप आपतहां जा
इ ॥ आप आपतहां जाइ ॥ नां वनिरंते सुषजाणे ॥ तास
विरहे समाइ ॥ आन उरिदृष्टन आणे ॥ ताजनहरीदास
ब्यंदनजो ॥ मैतै मोह चुकाइ ॥ आप आपको सारि
रि ॥ आप आपको षाइ ॥ ४ ॥ जनहरीदास सिरकै सटे
ई सोदा ल्योह ॥ सिरस्यो प्या संसारको ॥ यासाहि बको
दोह ॥ यासाहि बको दोह ॥ मूलयो ही मंतसाचा ॥ म
नमोह मैतै तजो ॥ एक मलामंतयोह ॥ जनहरीदास शि
रकै सटे ॥ कोई सोदा ल्योह ॥ ५ ॥ जनहरीदासरचिमां
वरधि ॥ नां वनिरंजन लेह ॥ जास्यो तू अपणी कहै ॥ सो
राम अघंडितगाइ ॥ गहो सतपुरुकी वाचा ॥ ३

तो हज्जा देह ॥ सो तो हज्जा देह ॥ ऊठ स्यो नहन कीजे ॥ गला
 टागीता मारि ॥ अगम अन्न हदर सपीजे ॥ पांच ततत
 मिले ॥ इरे देष तां रोह ॥ जनहरी दास रवि मां विरचि
 नां व निरंजन लेह ॥ ६ ॥ जे देखे हे मुज कौं ॥ तो आंन
 न धरि उरि नावै ॥ मै मा स्यो मै मिलो गा ॥ मै न्यारी धरि
 आरि मै न्यारी धरि आवै ॥ जा गि देखे तहि लोई ॥ अर
 स प्रसर स एक ॥ अवर संचर नही को द्वी ॥ जनहरी
 गोविंद न जो ॥ ऐ पासाय कुडावा ॥ जे देखे हे मुज
 तो आंन न धरि उरि नावै ॥ ७ ॥ आंन औठुता अज्ज ॥ स
 कहत पड दाडालि ॥ त्त्र अम संघो साहिब के पड दान
 हा ॥ त्त्र आपणां दोड संतालि ॥ त्त्र अपणां दोड संतालि
 जा गिन रजा गिन सोई ॥ नर नारायण देह ॥ राम विणि
 बादि नयोई ॥ जनहरी दास अंतरि अगह ॥ अगम व
 सत संतालि ॥ आंन औठुता अज्ज ॥ सक कहत पड दा
 डालि ॥ ८ ॥ जहां जीवत हां जोर है ॥ जोर जीव के साथि ॥
 सह रमां हिवाजी मंडी ॥ पाधली पासा हाथि ॥ पाली पा
 सा हाथि ॥ साथि सब घोटा साथि ॥ काम क्रोध अति न
 ना मोह मदि बहता हाथि ॥ जनहरी दास गोविंद न जो
 हरि निरंमै न जं अथि ॥ जहां जीवत हां जोर है ॥ जोर जी
 व के साथि ॥ ९ ॥ बैर विरष हिर देव से ॥ दिन दिन बध तो
 जाइ ॥ या वेदन कौ हरि जडी ॥ ताइ सक कह तो लाइ ॥ ला
 इ सक कह तो लाइ ॥ रोग को ईर हणन पावे ॥ जनहरी दास ॥
 तजि आन राम तजि राम दा गावे ॥ रितर वरसी त
 तको जहर फल घाश बैर विरष हिर देव

घासंगाबाडि. मूलसज्यमेंसोवै. जनहरीदास
 गंम. डषसदारणडषदाषे. चंदनविरषउप
 खरजडराये॥२॥१०८॥ हेराजकोअंग॥ क
 कहिकहिअकहि। सुणतसुणतसुषसा
 तलहिलहिअलह। अंगंमवारनहीपार। न
 पार। नावकुबुधस्यानजाई। निराकारनि
 प्रमेंसुषदाई। जनहरीदासअरिचित्तअरत। हासम
 रंमंथसिंजनहार। कहतकहतकहिकहिअकह। स
 एतसुणतसुषसार॥१॥२०॥ हेतपीतिकेअंग॥ मे।
 एमनहरिसौलगा। हरिमेरामनमांहिमेंहरिकोंबाडों
 नही। हरिमोहिबाडेनाहि। हरिमोहिबाडेनाहि। हरिअ
 पकोंआपवतावै। निराकारनिरलेप। साधकोंपैडैला
 वै। जनहरीदासहरिसुमिरतां। जुराकालसैनांहिमेरा
 मनहरिसौलगा। हरिमेरामनमांहि॥१॥१२०॥ दयानिरदे
 रताकोअंग॥ चींठीकोंदीजेधका। तबहीअनरथहो
 तमंतकाजापजपि। बुराकरोमतिकेइ। बुराकरो
 जीवंपेलाडषपावै। सबदजगांवैबीरा। बीर
 मयिआवै। जनहरीदाससाहिवसहितबैरपा
 डपंतहैदोइ। चींठीकोंदीजेधका। तबहीअनरथहोइ।
 ॥१॥११॥ कूंइत्यासंपूर्ण॥ अंग२५॥ श्रीदयालजीसतिहै
 सकलसाधसतिहै। श्रीदयालजीहरीपुरयजीकाचंद्रायए
 लिप्यहै। गुरुदेवकोअंग॥ गुरुसमरथसिरजनहार
 संनेहीरामहै। सजिकरणनिधिकरतारसजनसोंकां

महै॥ विलम्बन की जीबी रौंनिका जाम है॥ हरिहां जनहरी
दास निरमल अंग अंतग अजब विप्राम है॥ १॥ सुमिरण
को अंग॥ चंद सररथ अटकि निरंजन पाईये॥ लटाप
ष संवारितहां मन लाईये॥ तजि घट अघ घट घाट अंग
तहां जाईये॥ हरिहां जनहरी दास गिगनि गुफा में वैसि
प्रक गुण गाईये॥ १०॥ सील संतोष विचार सपांत जगाईये
उलटापंष संवारि अंग तहां जाईये॥ निगम अंग सरस
एक तहां संव छाईये॥ हरिहां जनहरी दास हरित रवर
मै बास अंग फल छाईये॥ २॥ ग्यान चक्र ले हाथि सब न
घंड घेलिये॥ प्रम जोति विप्राम तहां मन मे लिये॥ विषा
धार हमांस तहां अमी रस के लिये॥ हरिहां जनहरी दास
आन धरम सब गूठ पाव सोये लिये॥ अंग मंमंम व्रत धारि
विषे विष डारिये॥ सुष मन पतंन संवाहि त्रि विधिर सटा
रिये॥ पिंडा करणं वीर देषि पाव धारिये॥ हरिहां जनहरी
दास उलटाप वन निरोधि सपार मारीये॥ ५॥ राजा संम वि
सासि जन मन हारिये॥ मोटा वैरी मोह महा रिप मारिये॥
काम क्रोध अस्मिमान अंग निमुषि जा रिये॥ हरिहां जनह
री दास तजि संम संकाम संवारिये॥ ५॥ पार ब्रह्म सांप्रीति स
रति विचारिये॥ हजारी ति अनी ति हाथें डारिये॥ काम
क्रोध मन मैल अंग निमुषि जा रिये॥ हरिहां जनहरी दा
स असास अलष उरि धारिये॥ ६॥ अब तो एक अनुप
लटि प्रधरत है॥ सूनि संडल में वैसि स आरंभ करत है॥ स
जि अलष निरंजन नाथ अमष मष जरत है॥ हरिहां ज
निरंभे नया नि संक साधन हाइ रत है॥ ७॥

जातिप्रमसुषपाईये॥२॥ जोगयथमेंपैसिसपूविन
 फेरिरे॥ ग्यानषडगलेहाथिसबलघटघेरिरे॥ ल्पोडोर
 करिसाथितहांमनजेरिरे॥ हरिहांजनहरीदासअलष
 निरंजननाथनिरंजनहेरिरे॥३॥५५॥ सजीवनिकेनां
 रा॥ हरिप्रराणब्रह्मआगाधअषडितरामहै॥ साधबसेता
 देसमुलकनिहकांमहै॥ जुरकालतैनाहिसीतनहिघा
 महै॥ हरिहांजनहरीदासपरापरेपतिरेकअजबविप्रां
 महै॥१॥५६॥ पतिवरताकेअगा॥ राजाबहारीरामकहौ
 मैत्योंकरुं॥ मनगाहियवनसेवाहिअटकिउलटाधरो॥
 ब्रह्मआनिमैपैसिअतषअजराजरो॥ हरिहांजनहरी
 दासरामनांमब्रतधारिनआनब्रतउरधरो॥१॥५७॥ जी
 वकाजीवननिरंजनराइहै॥ उपजितविनसेमूलिनआने
 जाइहै॥ प्रमप्ररिषप्रकाससाधमनलाइहै॥ हरिहांजनह
 रीदासप्रगतघटमांहीरेककोपाइहै॥२॥५८॥ सा
 धकेअगा॥ बौबाकरैरुमांनसाधकैनांहीरे॥ नाइंवर
 सैमैहनदीघररंहीरे॥ दीयाउकलैनांहिसांमांहिसमांहि
 हरिहांजनहरीदासयोंसाधदेषिजुगसांहेरे॥१॥राम
 नेहासाधमडेमैदानमें॥ यहस्यासीलसनाहप्रकगुरु
 ग्यानमें॥ बाजेअनहदतरबसेधसिराममें॥ हरिहांजन
 हरीदासधुनिध्यानसदाविप्रांमैमें॥२॥ जहांजीवतहां
 साबरेककेजांणिहै॥ मनकोपूवाफेरिसहजिघरिआ
 णिहै॥ जोगमूलकीबातसघातपिबाणिहै॥ हरिहांजन
 हरीदासमजिप्रराण

धसुतो
 चरि

३

॥६॥ मनकोअगा॥

हरका रूप हृदयि रिया दगा ॥ जडी सजीव
 नवसा दगा ॥ हरि हां जन हरी दास हरि रा द
 गा ॥ १ ॥ ६३ ॥ संमथाई को अंग ॥ हरि ज
 पाल हमारी करत है ॥ हरि आप आयणां ध्या
 दे धरत है ॥ सब बल कर म सुब छा डि अंग
 हरि हां जन हरी दास मन बल टा च द्या अ
 नही मरत है ॥ ६३ ॥ कुं बधी नर को अंग ॥

॥ ४ ॥ मां हि सदा ही धडत है ॥ कंचन हरि दा म
 हिका चले जडत है ॥ अकड चत्या जां हि स आ अ डि प ड
 त है ॥ हरि हां जन हरी दास सब बल क दि वां नी दे मि क हां
 को ष ड त है ॥ १ ॥ वा द वि वा द नि वा रि ब ड रि प चि ता हि
 गा ॥ हरि सौ नां ही हे तर सा त लि जा हि गा ॥ म द न मो ह गु ए
 मां हि ग र क ल प टां हि गा ॥ हरि हां जन हरी दास रा जा री
 म वि सारि स यो टां हि गा ॥ २ ॥ ६५ ॥ च डायणां संपूर स
 अंग ॥ ६५ ॥ रा मा य न्ता ॥ नि रं ज ना य न्ता अ र स्यो त म ॥ वा ॥
 वा जी द या ल जी क रे य ता लि य्य ते ॥ स ई यां अ ल टि दे षि ह ॥
 अ रि शो अ द मे मो अ द मी रां क हा यो जे इ रि टि का ॥ नि क
 टि नि ज नि धि त्तर ए ता रण ॥ नि ज स र ति त हां अं रि शि लि
 मां हि म का इ ह मु थ रा ॥ यां च प्र ब ल चू रि ॥ १ ॥ मां हि म र ति
 ग र द गा फि ल ॥ सा हि का सु लि तां ना ॥ हर दं म हू अ रि स ता
 लि नि स दि ना ॥ च र च स्यों दी वां ना ॥ २ ॥ अ स त च स मां व र ध अं
 त रि षा र व ग स त नि वा रि ॥ दे स हा ज रि अ ग म या र ॥ आ नि
 कां दी दा र ॥ ३ ॥ हर वा रि हो जि ग य क र म रा ॥ म नी मा रे
 मी रा मे हरि का म क स्त द ये

॥ ४ ॥ हि स

स्थाणालिकदूरि॥२॥५॥ बंदेबंदगी कसियार॥जे व
 रिमीजेरहोइगा॥बकतयाहिगामार॥डेक भू॥गाते
 फूलिवेवा॥जहांसतहांजमत्रास॥कालनटकेहाथि
 डोरी॥कंठिवंध्योकपिज्योपास॥१॥पालेंटेपुरिपिसं
 एपंकुता॥गुणयासिगोविंदगाइ॥हरिनांवलेंनरखा
 डिमेंतैं॥जनमजूवाजाइ॥२॥सोरदहदसिजोरिलागी
 त्तिहैगठदेहा॥जनहरीदासजोगीजागिजुधकरि
 रंगमत्रावधलेह॥३॥८॥रियतासंपूरण॥दियालजीहरी
 लसजीकाकलितालियसैं॥गुरुदीरघज्योमेरसमदज्ये
 थाहनकोई॥मतिगंभीरज्योगिगनिचंदज्योसीतलसे
 ई॥सदिष्टीज्योस्वरपवनज्योलियेनलोई॥बसुधाज्यो
 मनधीरप्रमसंगीगुरुसोई॥जनहरीदासगुरुगामत्रंग
 मकहतनआवेक्याकहौ॥गुरगोविंदचरणारविंदना
 इब्यंठिलागारहौ॥१॥तुम्हसतीरथतुम्हसबत॥तुम्ह
 सपोरप्रसबलाई॥तुम्हसबंधूतुम्हबाहा॥आनचित
 अटैनकाई॥तुम्हसमातपितापरिवार॥तुम्हसजनसु
 ई॥तुम्हसगोनतुम्हध्यान॥रंगमजीरंगमदुहाई॥अ
 बसतअंतरिअगह॥कलिविषकादणतापजी
 नहरीदासकेएकत्त॥आननजाचौवा
 नअेसाजाचौनही॥समदिवांतसत्रोरहै
 लितानांहि॥पवनगिरप्रथमीना
 ठ॥विघनकोतुहलनांहि॥बपघ
 ममैभरमेंनीही॥रिबसिसदिवंस
 एनांहि॥ब्यापेसीतंधूपगिगनिब

सबतें अंगमातासंगिकोई विरलाल है। दि
साजावों नही। समदियानसओ रहे। आवाप
गतिको ल है। को एगो ए इ र मां प्रै। को ए मे र को तो लि
पनां उ ल टी था प्रै। को ए स सं द ज ल ति रे। को ए गुर या
म ति ओ प्रै। ब्रह्म अगनि मे वै सि। को ए सि ध अंतरि ता
॥ जन हरी दा स पू र ण ब्र ह्म ॥ न ही ने ड ज न ही इ रि। की म
ते क हि क हि अ क हा। हरि ज हां त हां न र पू रि ॥ ४ ॥ जो ग
ज ग अ सु कि दि ॥ सी स ग हि र्द स व ठा वै ॥ पांच अ ग नि त प
सि ला क रे उ ना त प नां वै ॥ अंब वि व रि त नि सी त ॥ सु तो स
व ती र थ न्हां वै ॥ का सी डा डे दे ह ॥ हे म व सि हा ड ग मां वै ॥
बि वि धि ध र म त म स्या वि वि धि ॥ फ ल मु ग ते प्र ड व स है ज
न हरी दा स हरि नां व नि ए ॥ न र क हि को ए वोट नि र से
र है ॥ ५ ॥ अ ग म ती र थ गुर ग मि सु ग मा ॥ अ ग म त प स्या जि
ग जो ग वि चारो ॥ यि का द सी अ ग मा ॥ अ ग म न र नां व हरि
न वि स रो ॥ स त सू रा त न अ ग मा ॥ अ ग म गुरु पां न र थ
रो गां ग ज म न म धि पे सि क रि ॥ अ ग म व स त अंतरि ल हो
जन हरी दा स नि र से मं तै ॥ त हां उ न म नि ला गार हो ॥ ६ ॥
लोक ला ज प व ने ष त हां मि लि ज न म न हारो ॥ रां म ना म ज रि
धरो पा य ज लि प्र न प सारो ॥ न व सा ग र वार म धि ना हि ॥ घ ट
घा ट त जि अ घ ट वि चारो ॥ प्र म पां न प्र म ध्यां वा ॥ हरि ति ज
ना थ न र नि म व न वि सारो ॥ जन हरी दा स दू डी अ ट कि
पि सं ए प ल टि प्र म ग ति ल हो ॥ त हां उ न म नि ला गार हो ॥ ७ ॥
प्र म पां न प्र म ध्यां ना ॥ प्र म गुर ग मि तै गा वौ ॥ कां स क्रो ध क
सि मां न ॥ कृ प हि कां टां म ति ला वौ ॥

त्रिधं

मरोहमरिमौतचुकावौ॥जनहरीदासमनगाहियवन
ब्रह्मअग्निविषवनदहौ॥आगभवसतअंतरिआ
ह॥तहांउनमनिलागारहौ॥८॥पूतकलितपरिवा
र॥मालबहौमुलकबडाई॥कंचामहैलआकाससि
लसजनसुषदाई॥बौहसौधौबहौपांन॥सेऊषासाद
रयाई॥करधरिसुंबसरोटि॥कहैमेरीजडहार्शहरि
सुमरणहिरदेनही॥दहदसिमायाधेरि॥जनहरीदास
यौजाणिये॥याहसिलसुषदुषअसमेर॥९॥जहांजी
वतहांसीवविचिमायाकासरवर॥गिरवरअजंगउ
तंग॥बिबिधिविषकावनतरवर॥अपस्यघजवजु
रा॥जीवधरिसकेनतहांधर॥नदीबहैमैमंतमंबमर
णामधिप्रहडर॥जनहरीदासहरितहांचलो॥पांतप्र
रितजिघर॥जहांजीवतहांसीववीचिमायाकासरव
र॥१०॥गहरबागरंगराग॥तहांध्यानधरिजोगीबैवा॥
जबकिमासास्यघ॥सूरसिसहरअंगबैवा॥गयापाप
प्रदेसि॥यकुमतजिधूतरधेवा॥गंगचढीबहसुडि॥अ
वकरताहेवा॥अरसंप्रसरसप्रमगति॥प्रमत्ते
निरसैजया॥त्रिविधितिमरगतप्रवगत॥जनहरी
दासप्रतगुरदया॥११॥नाअमबंदूदेषिदेधिगोरषगु
रणरता॥रहाधणीसौलागि॥बाडिसवजलकामता॥
गोपीचंदनीजाणिये॥जोगध्यानअसैगहा॥हैगैमैगैबा
डिकरि॥मायासैन्यारहा॥सुषदेवसीमायातजी
वासबाडिवनमैवस्या॥जनहरीदासतेउबस्या॥ऊगस
गलामायाडस्या॥१२॥नाथनिरंजनदेधिअंसिसंगीसु

षदाश्रीगोरखगोपीचंदेसहजसिधिनवनिधियाश्रीनामें
दासकबीररामनजतांरसपीयाप्ययेजनरेदासब
डेठकिलाहालीया॥अणसेसबदसंतालिकरि॥ज
नहरीदासलागातही॥रामविमुखदुबधाकरै॥तेनि
रबसपकुंचैनीही॥१३॥हैंवरौवरगावराठायोजफ
रहरबकुंयाईका॥बहैजोधादरवारि॥षसैंआश्रुसैं
षाइका॥सैतरवास्यांतनतौलि॥चढैअणियांमुहिला
इका॥प्रितिमालीकरिधरिविबरिवकैसुखविक्रत
बाइका॥लोहबाकगोलीगिले॥प्रदलजीतैप्रपुग॥त
उजनहरीदासहरिनांनब्रिणि॥नरविकटरूपदीसैं
बुरा॥१४॥बीरघंटाघरहरैजुदेगौरिणमैगाजै॥पडेले
हबौबाड॥षडगषसतांरिणबोजै॥करवरकरस्यु
तौलिपिसणंतनिपिसणअवाजै॥सूरबीरसनमुखि
चढै॥षेततजिकाइरनाजै॥सूरबीरसनमुखिचढैषे
ततजिकाइरनाजै॥नीरउतस्योबीरनांनषत्रीपणि
लाजै॥दोनौयषनिरसैरतना॥स्यांसधरमअठैण॥ह म
रीदासजनयोंकहै॥बालिनिसाणोंमाण॥१५॥तजिक
रणनिधिकरसाशनांननाराइंणलजै॥तजिनिराम
लमिरस्यंधाकांमआरंनयकुकीजे॥तजिन्रलष
निरंजननाथा॥बाडिविषइंसितपीजे॥नजिप्रमउ
दारअपारा॥ग्यांनगदिधांनधरीजे॥जनहरीदास
वारपारकीसतिनही॥रामनांममोटीरतना॥उरिमंड
णउरिधाशि॥प्रेमप्रीतिदीजेजतन॥१६॥दयारतजीव
काकवितसंपूरण॥श्रीरामायन्सा॥निरंजनयन्सा॥श्री

एक दिन तो यों ही गया ॥ सज्ञान कब हूँ सस्यान को ई
 कांम वै ॥ अनिद्या करि मैं बड़ा ॥ सज्ञान कब हूँ मं वै
 सज्ञान कब हूँ म अहिं छ कि ॥ माया के छ कि मिलि
 रह्या ॥ हरि प्रसंगति प्रवांण प्रहरि शमी च जलिनी वा ब
 ह्या ॥ जहर फल जुगि आद्रया धा ॥ जीव सब प्रबसित या
 हरि प्राण नाथ सति कटि न्यारा ॥ एक दिन तो यों ही ग
 या ॥ १३ ॥ अयणें अयणें मन मंते ॥ बाल त है सब लो इ
 वै ॥ मरण है जीवण नही ॥ जीवत मरे न को ई वै ॥ जीवत
 मरे न को इ प्रबसि ॥ मरण ह्य शिर परि घण ॥ मरे ह
 जीगी मरण मीठा ॥ मरि स जो साहिब आपण ॥ संसार
 में को ई अमर ना ही ॥ अमर हरि न जिगुण गते ॥ हरि प्रस
 संगी जंणि नूला ॥ अयणें अयणें मन मंते ॥ १४ ॥ आडा
 डंगर बन घण ॥ नंदी यां उंडा नी रवो ॥ हरि दि सा व रि वा
 तण ॥ मन धरि स के न धी रवो ॥ मन धरि स के न धी र य क
 ड्य ॥ सुषम ना फूठी ब है ॥ जै सा बा है तु ऐ तै सा ॥ नफ
 तोटा सिरि स है ॥ अवर को य क दो स ना ही ॥ की या प
 वै आपण ॥ जन हरी दा स डर न य स दारण ॥ आडा डंग
 र बन घण ॥ १५ ॥ मन रे त् स्या णं न ही अयां णं रै थो
 डी र ति ब हो त क्या सो वै ॥ जा गि र देखि दिवानां ॥ टे क
 माया देखि क ह्य मन फू ल्या ॥ दि ह्य देखि म स तानां ॥ क
 वी काया क्वी माया ॥ क्वे वै हे ति बंधानां ॥ १६ ॥ हट वा ड
 आवे जो बिबु डे ॥ सम कि देखि गे वां नारे ॥ आजि न ही
 तो का लि न रह्या ॥ मरण न दी ब हि जा णं ॥ १७ ॥ सो प
 ति ब हो त क ले माया में ॥ मी र मु लिक सु ल तानां ॥ जन

॥ कांमविसहरसंगिडसे ॥ कालकेकरिकेसतिसदि
 ननगरअबिवांतहांनरबसे ॥ १ ॥ मोहमहलमेंमन
 सोइवे ॥ व्यंतासोडिबिबाइवे ॥ सोसेकोसिज्यातरीसब
 साजहांतहांजाइवे ॥ मनसाजहांतहांजाइदहदि
 सि ॥ त्रिविधआवधसंगिथया ॥ सुषसीलयायीसा
 थनांही ॥ कुबधिकंठागरिअया ॥ हरितांवनिरमल
 नीरन्याए ॥ करिमसिलगीमसिस्यूससिधोवे ॥ अणन
 अस्यलिपांवरसबसि ॥ मोहमहलमेंमनसेवे ॥ ये ॥ सव
 सागरसूत्ररतस्या ॥ तहांतुसाएबासवे ॥ बोहियहरि
 जीकातांवहै ॥ तजीऊवीआसवे ॥ इजीऊवीआसहरि
 बिणि ॥ तहांकेयोमठबाइरे ॥ रामसजिमवराप्रिनिहव
 लापरितरिजाइरे ॥ अगहगहिएअकहिए ॥ अमरत
 जिअजांराजस्या ॥ जनहरीदासहरिबिणपारनांही ॥ त
 वसागरसूत्ररतस्या ॥ १० ॥ जुगमेंअसासाजीवणां ॥ सुप
 नेंकासाकांमवे ॥ जावधणीकोंहीणां ॥ सज्यानकबकुं
 मइकलसारेकरसिलागारहै ॥ संसारदुषसुषयाइवे
 ॥ क्यहकुसंगतिकेवहै ॥ गोव्यंदागात्रोगबचाडो ॥
 स्तपावणां ॥ तबसंगितातमातनसाबेधु
 गमेंअसासाजीवणां ॥ ११ ॥ यासुषकादुषअनंतहै
 गिणितीग्याननकोइवे ॥ सोसुषपदुलीबाइणां ॥ पला
 नपकडेकोइवे ॥ पलानपकडेकोइतेरा ॥ इहअरथवि
 वारिये ॥ जागियंथीकहासोवे ॥ सोयांसरबसहारिरे
 लयपंथसंतालिपंथी ॥ सतिसबदसतगुरुकहै ॥ विवि
 धिविषवनसांहिविसहर ॥ यासुषकादुषअनंतहै ॥ १२

एक दिन तो यों ही गया। सज्ञान कब हूँ सस्यान कोई
 काम वै। पनिया करि भैवडा। सज्ञान कब हूँ मरे
 सज्ञान कब हूँ म अहिं चकि। माया के चकि मिलि
 रक्षा। हरि प्रसंगति प्रवाण प्रहरि नी चजलि नावाव
 ह्या। जहर फल जुगि आइ बाधा। जीव सब प्रवसित या
 हरि प्राण नाथ सति कटिन्या रा। एक दिन तो यों ही ग
 या। था अपणे अपणे मनि मते। चालते हे सब लोड
 वै। मरण हे जीवण नही। जीवत मरे नको इवे जीवत
 मरे नको इ प्रवसि मरणा दुय सिर परिषण। मरु ह
 जीगी मरण सीवा मरि स जो सा हिव आयण संसार
 मरे कोई अमर नाही। अमर हरि न जिगुण गते हरि प्रस
 संगी जोणि भूला। अपणे अपणे मन मते १४ आडा
 डंगर वन घण। नदी या उडानी रं व हरि टिमा वरि वा
 लीण। मन धरि सके न धीरे वे मन धरि सके न धीरे यक
 दुष। सुष मनां फु वी वहे जे सा वा हे त्रुणे जे सा नफ
 तोटा सिरि सहे अवर को यक दोस नादी की या प
 वै आयण। जन हरी दास हर प्रथम हर। आडा डंग
 र वन घण। १५ नंतर कल्याण रं ह। अयाण रं यो
 डी राति व होत क्या सोय ना। उं दयिं दवा ना देक
 माया देखि कदा न न कला। देहा देखि न यता ना क
 वी काया कर्वा। माया जे वने निव कला। हटवाडा
 आवे नै बिबुं दे मनी ज देखि गवा तान आजि नही
 तोका हिन रं हला। तरु टट दा व हे नाण। २० प्र
 ति व होत कले माया मे मीर मुनि क सु ल च ना जम

हरिदासविरलाजनकोश उलटीपंथउदाना ॥ ३ ॥ १६ ॥
सजनसनेहरावै ॥ ४ ॥ आणहरिगुणगाइटेक ॥ भवंरज्यो
मनफिरेदहदसि ॥ कालदहदसिहेतही ॥ जहांलोगत
हांकांठा ॥ निजनां वविणिनिरभैनही ॥ १ ॥ अजडंजी
वडाकहांसोवै ॥ जगतिजांणिनजागिही ॥ आकजा
डक्यूद्धधैसीवै ॥ अंतिअंसनलागही ॥ २ ॥ जांणिअ
सैनजोगोविंद ॥ प्रसिहरिरसपीजिए ॥ जनहरिदा
सहरिगुणगाइतिसदिन ॥ आणहरिजीकोदीजिए
॥ ३ ॥ १७ ॥ सोईदितआवेगा ॥ अपणंरंमसंतालिवै ॥ अ
नेकरवणसेणिजोधा ॥ मरिमंकातेगया ॥ कालकलमे
सकलआया ॥ ततसदावातिलिदह्या ॥ ४ ॥ असुरसुर
यसिपडुमउपरि ॥ षडगकराहितोलता ॥ ५ ॥ रासंध
बलिकहांविक्रम ॥ बोलअबलाबोलता ॥ ६ ॥ पांवपा
डोंकहांकैरुं ॥ एकगोलेसबबह्या ॥ सिसपालसेत्यांकहां
जाहूं ॥ कहेजेकोईरह्या ॥ ७ ॥ हिरणांकुसहिरणाधिमु
चकंद ॥ करणसेदानीतया ॥ कहांछलबलकहांमाया
अतिसबयालीगया ॥ ८ ॥ धस्वाधूवांसकलविनसे ॥ का
लकांठालागिहै ॥ अधंवसतअनूपअंतरि ॥ कोईसाध
गुरगमिजागिहै ॥ ९ ॥ पातिसाहजोपतिकहांसुरयति
जालसबपरिद्वारिहै ॥ १० ॥ जनहरिदाससुखिमहोइज
लज्यो ॥ कोईचोठहरिजनटारिहै ॥ ११ ॥ जीवडाजा
इकहांतरहिसीवै ॥ करणहारकरतारनज्जाणा ॥ स
लिलमोहसंगिवहसीवै ॥ टेक ॥ काचीप्रथसरफीषी
टी ॥ तातैप्रदुषसहिसीवै ॥ रंमनांमनिजसेदनज्जाणा

कालवटातैंगहिसीवै॥१॥हरिपीतमसोंप्रातनबांधी॥
 ऊवतहांजाइवहसीवै॥जबजंमआयाऊवबिलाया
 रसनांतालवैफहसीवै॥२॥जबइतिजीवडैकीयाप
 याएण॥बऊरिनयकुतनलहिसीवै॥जनहरीदासमा
 याअपराधणि॥बहोतमांशिकरिदहसीवै॥३॥१॥१॥
 समजिदेखिकुबनाहीरे॥तनाहीनाहीसूंलागा॥सा
 चनसूकैमांहीरेटेका॥प्रमसनेहीबाडिआपणा॥वि
 षइंमिंतकरियाजेरे॥सूकरस्वांनस्यालकऊवगति
 कालसदासिरगाजेरे॥१॥हंसबटाउप्रघरिबासा॥अ
 बतसमजिसयांणारे॥याचसातदिनऐकअधमें॥उति
 अकेलाजाणारे॥२॥कालकदरकीचोसकसिरिके
 सास्याकेमारैरे॥जनहरीदासजिरामसनेही॥सरोणै
 रामउबारैरो॥३॥२॥तबहरिहमकौजाणैगो॥जाणैहरो
 हरिजाणैगो॥टेका॥सातमातपरिवारसकलतजि॥सब
 स्पोंउलटीताणैगो॥हरिहैसाचअवशसबऊवा॥वाह
 रिसोंबाणैकबाणैगो॥१॥आनदिसासूंजबमनयाक
 करंमनरंमसंगिनाणैगो॥रामरसाइणकामतिकाला
 आइपीतिपिह्याणैगो॥२॥सोंकणिउलडिसयीजबऊ
 हिगी॥उलटीनंदीचलाणैगो॥पाराबाधिप्रेमरसयीया॥
 रोमिरोमिरूंचिमांणैगो॥३॥जनहरीदाससांसासबना
 गा॥रामरसाइणयीवैगो॥आंनसकलसुखाविषनरिदे
 व्या॥हरिसंमरथनजिजीवैगो॥४॥२॥तबहमहरिम
 एगावैगो॥गावैगो॥गुणगावैगो॥टेका॥कोमकौधरंसासब
 जीत्या॥मोहमंतामुरकावैगो॥पां

लेंहगे॥ बंकनालिरसपावेंगे॥ १॥ डयसुषबाडिसह
 जघरिषेलें॥ कुबधिसुबधिस्योपावेंगे॥ २॥ कडबाडिस
 लदिमनउलटा॥ येकदिसाकौलावेंगे॥ ३॥ सतगुरसब
 दचानिणांमेरे॥ अगमतहांहमजावेंगे॥ तेजयुजप्र
 गटप्रसुरण॥ सुनिमंडलमेंपावेंगे॥ ४॥ घटिघटिअ
 घटघटतहरिनांहा॥ सौर्द्रमतागंमरमांवेगे॥ जन
 हरीदासदासहरिमजिमजि॥ हरिहामांहिसमांवे
 गे॥ ५॥ २२॥ समकिदेधिमनमेरे॥ याजुगसांहिजा
 गिहंसवेध्या॥ सगानकोईतेरे॥ टेक॥ तातमातबंनि
 तासुंतबंधू॥ जतनजीवतहांकरिहारे॥ मूवांजालि
 बालिघरिआवे॥ तामडहठतेंडरिहारे॥ १॥ रंमबिसा॥
 रिहरिमतिचालो॥ कहिसमऊअंलोईरे॥ मायासां
 चिसंगिलेजांता॥ देव्यासुएपांनकोईरे॥ २॥ जांमेंमेरे
 मेरेकुचिजांमें॥ मितिलोकमेंआवेरे॥ जनहरीदास
 देधिमतिमदा॥ गोविंदकाहेनगावेरे॥ ३॥ २३॥ मेरेगुर
 गमिदीयोवताइ॥ रंमनहिविसरंरे॥ टेक॥ ज्योंत
 एनिरनेधकी॥ बरतेंलागीजाइ॥ इतवतचित्तडोले
 नही॥ चितब्रतैरहासमाइ॥ १॥ मरजीवासमदाध
 से॥ तनमनसुरतिसंबाहि॥ बीचिकहौअटकेनही
 निजसीपसंभालेजाइ॥ २॥ गुरजितालिगोलाबहै॥
 धणकवाणसरसुर॥ स्यांमकाजसनमुषिलडै॥ उल
 टिनयेलेंसूर॥ ३॥ ज्योचात्रिगघणकौरंटे॥ पावपीवक
 रतबिहाइ॥ जनहरीदासहरिनांवेमें॥ मनसहजार
 हासमाइ॥ ४॥ २४॥ हाबलवंतीमाया॥ लीयांषडगस

कलसिरियेले। आणमतेतेवायाटेक। मायापुरियन
 रिफुनिमाया। मायाआनसगाई मायास्वामीमायासे
 वग। बहोतनांतिकरिआई। १। जोगीसगिजोग।
 णिकेवाली। नगतिणि। नगतमनाया। सोफीसगिसो
 फणिकेवाली। माथेमुकटबणया। २। सीगीरुष
 सुधिमकेसोव्या। नारदरूपफिरया। सकरकामन
 माहीयेवी। नांनानातिनचाया ३। अतिरूपकेमेते
 धंडे। प्रसिप्रसिप्रचावे। जनहरीदासविरलाजनको
 ई। उलटिप्रमपदपावे ४। २५ जीवडाजागितदेवे
 लाईवे। जमजागतहेत्क्यासोवे। रामसुमरिमेरना
 ईवे। टेक। निसदिनआवघटेतनबीजे ज्योअचुरी।
 कायाणीवे। तजिअलसाकअलयहेजीवणा स
 मकिदेविअसिमांनीवे। १। मातपितासुतबनिता
 नारी। संगिनचालेकोईवे। तासेलागिबिकटमतिबो
 रामनियजवमनिधियोईवे। २। बांसेवाहरछिय्याज
 हीबूटे। देहीज्वराबुहाणीवे। यडरकेसहाथनेणापरि
 कालधजाफहिराणीवे। ३। अवघटघाटबिचालेदरी
 या। सेरानांमुररीवे। तहालागितेंपारनकीया प्र
 देसीअहंकारीवे। ४। जहाउदेनअसतकालनहीका
 या। सोईप्रमसंनैहातेरावे। हरीदासजनठेरिकहेत
 है। तहांचलोजीवमेरावे। ५। २६। रामअसाठासाई
 हो। राथोवोटधोवकोलगे। समकिपडेकुहनाही
 हो। टेक। पांचयचीससदासंगिबेली। आबिरकरेअ
 घाईहो। तुम्हअटकोतौबड

बूनबसाईहो ॥ १ ॥ तारणतिरणप्रमसुषदाता य
कुडुप्रकासौकहियेहो ॥ करंमबियाकविघनहो
इलागा ॥ तसुरयोतोहियेहो ॥ २ ॥ समदअथाह
अगमकसूणमें गोडिकेरेनितिगजेहो ॥ तामेंम
बेकालसाषेले ॥ मंकिडुरेसोवाजेहो ॥ ३ ॥ अथअघरूप
अनंतमोहिजारे ॥ अंधकूपमेंघेरहो ॥ जनहरीदास
कोंआसनहूजी ॥ रंमजरोसातेरहो ॥ ४ ॥ २७ ॥ समकि
सुषपाईयाइरे ॥ तसुषमैरहासमाइ ॥ टेक ॥ समकिस
वाइतबपडी ॥ जबसतगुरनेयेसहाइ ॥ गुरुक्रियाते
हरिनज्या ॥ गुरेदीयासाचांबताइ ॥ १ ॥ अगमययाला
रुचिपीया ॥ तिष्मांतपतिबुजाइ ॥ घुरेगुरुवितबोदि
या ॥ सूरहोइसयाइ ॥ २ ॥ निसतूलादिनसमकिहो ॥ दि
निभूलासमकेनांदि ॥ ततांकासंगठाडिदे ॥ काहेतव
जलिजांदि ॥ ३ ॥ जगसगलानवजलपीवे ॥ हरिजनपीवे
नांदि ॥ जनहरीदासज्यांहहरिनज्या ॥ तेघोटाअनंतन
घांदि ॥ ४ ॥ २८ ॥ गाकिलनादनकरिऐरे ॥ जीवणनहीम
रणसिरवपरि ॥ तामरणसूंडरिऐरे ॥ टेकरजनीमोह
नीदसरिसूता ॥ प्रमनेदनहायायारे ॥ अतिअतिमान
बदतनहीकाइ ॥ हीरसाजनमगमायारे ॥ १ ॥ गहिगु
रणानजागीजीवजोगी ॥ कूवेसरमिभुलाणारे ॥ हरिसूं
विमुषनांविनांविधि ॥ वाडिचलेसुलताणारे ॥ २ ॥
आयाथातसाचासोदे ॥ कूवेलागानाईरे ॥ दटवाडाह
मविषुडहदेष्यो ॥ जागोरंमडुहाइरे ॥ ३ ॥ अबतसस
किदेशिनिसबीती ॥ येडाकरणलोईरे ॥ तसकरबहोत

हरिघरतेरा साधी मंगिनकी ईरे ॥ १ ॥ जनहरिताम
 ममजिताई ॥ देखिंदियपराधरणारे ॥ २ ॥ दरवारजव
 नही संवे ॥ तिलतिललयातरणारे ॥ ५ ॥ २ ॥ मतोमा
 निमरोडामारेरे ॥ टिककमाडाकणिचुणियाया ॥ के
 ईमिरतगपड्यापुकारेरे ॥ टेक ॥ माधाकोननारासान
 हरिसोनीतोपोले ॥ आपचव्याचटागटकाव ॥ पावक
 केजजालेरे ॥ ॥ जनमानेठवडकोनाता ॥ आदीपद ॥ दे
 रोधेरे ॥ ॥ जासबदेवरकारिव्या ॥ रमनाआगान्नायेर ॥
 आविरकरैसकलजगउपर ॥ घटघटमादीजागर ॥
 जनहरीदासमिरठाद्याखल ॥ ताकात्रणानारा ॥ ३ ॥
 ॥ २० ॥ निद्रामाहेथकासमाम ॥ वादिचटी ॥ मरुपरंधन
 लाधीवरतणियोसाटेक ॥ यदनीनागवणनगर ॥
 चेतनघरांचुकांवा ॥ यावपडा ॥ दाम्पफादी ॥ कांडकल
 छिटकावे ॥ ॥ आविरकरैअकलकांचड ॥ आडन
 त्योआवे ॥ ताआगकोईजागी ॥ उधकर ॥ जाग ॥ नलटा
 तालीलावे ॥ ॥ आगमपयानातरितरिथ ॥ ॥ तिरतना
 दवजावे ॥ जनहरीदासनिदाअपराध ॥ गरातर
 गदियावे ॥ ॥ ३१ ॥ रमनजनदि रटनदांदन नका
 तहोअपणामनदेतोटेक ॥ मोरुदेदमायामदिमा
 वावेयोजीवजहरफलयाता ॥ ॥ हरिजातिकया
 साहाधि ॥ नरकिचलडरमतिलमाथि ॥ २ ॥ जवतग
 जीवपंचकाचेरा ॥ तवतगकालनछांडकेरा ॥ ३ ॥ जन
 हरीदासनरनिदानजागी ॥ साचकहाकाटासातांग
 ॥ ३२ ॥ संतोमइसेययाण

यं न तस्य

यहनाहीरे बाहरिसाकरकारकहोवे ॥ गांठीबोडासां
 हीरे ॥ टेक ॥ हीसेस्यंघस्यालतेंकाय ॥ जबलगजोगन
 लाधा ॥ सांसेपकडि ॥ आपबसिकीया ॥ कबधिकंमणी
 घांघा ॥ १ ॥ पहरिसनाहसांगिनहीसाही ॥ बटवाडांघर
 रुंधा ॥ साहिवबाडिघेतयिसिचाले ॥ नूंएहरंमीसूधा
 ॥ २ ॥ सांवेततकौसूरसतिसौई ॥ जिनिमेंवासासंठकीया
 जिनिंमजनहरीदाससोईसतिवाला ॥ जिनिंमर
 सांद्रणपीया ॥ ३ ॥ ३ ॥ आयेसाधनयाउदमोद ॥ जिनके
 नहीबिधेरसबाद ॥ टेक ॥ उंतकाक्यावरणोविसता
 र ॥ रामसंनेहामेंरेप्राणअधार ॥ सीतलकोमलसंत
 सधीर ॥ जनमजनमकीमेठीमेरीपीर ॥ जनहरीदा
 सआनंदजसहोइ ॥ साधमित्याविषडास्याधोइ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 रंमनजनबिनिजनमजुवारी ॥ चलतहेअपणांभव
 हारी ॥ टेकरेमेंतिहीएसमकिनरलोई ॥ हरिबिणिस
 गानसूकेकोई ॥ १ ॥ उनमनिलागिगिगनिरसपीवे ॥
 अपणजनमसुफलकरिजीवे ॥ २ ॥ जनहरीदासगो
 विंदगुणगावे ॥ सहजसमाधिप्रमपदपावे ॥ ३ ॥ ३ ॥
 पांडेकेसाभजनबुझार ॥ मनकोंपकडिसहजधा
 रिधेलो ॥ मायाघटगडुधार ॥ टेक ॥ मेंसंतिपूबूतुमस
 तिकहियो ॥ राबोकहाडरया ॥ मनहैएककहोलावो
 रो ॥ ऐकबहसूजीमाया ॥ १ ॥ कंबनबाडिकांचसोषेलो
 तबलगकाचीसारी ॥ मायागहोब्रह्माकेबैवा ॥ यऊतो
 अचिरजसारी ॥ २ ॥ अरथकरैअनरथवरिअंतरि ॥ प्र
 मनेदनहीपाया ॥ जनहरीदासत्रैसाअपराधी ॥ स्वामी

यहनाहीरे॥ बाहरिसाऊरकारकहोवे॥ गांठीछोडासां
हीरे॥ टेक॥ हीसेयंघस्यालतेंकायरा॥ जबलगजोगन
लाधा॥ सांसेपकडि॥ आपबसिकीया॥ कबधिकंमणी
घांधा॥ १॥ पहरिसनाहसांगिनहीसाही॥ बटवाइंघर
रुंधा॥ साहिवबाडिघेतबिसिवाले॥ लूणहरंमीसुधा
॥ २॥ सांवेततकौसूरसतिसौई॥ जिनिमेंवासासंतकीया
जिनिरंमजनहरीदाससोईसतिवाला॥ जिनिरंमर
सांद्रंणपीया॥ ३॥ ३॥ आयेसाधतयाउदमोद॥ जिनके
नहीबिषेरसबाद॥ टेक॥ उंनकाक्यावरणोबिसता
र॥ रामसंनेहामेंरेप्राणअधार॥ सीतलकोमलसंत
सधीर॥ जनमजनमकीमेठीमेरीपीर॥ ४॥ जनहरीदा
सआनंदजसहोइ॥ साधमित्याविषडास्याधोइ॥ ५॥ ५॥
रंमनजनविनिजनमजुवारी॥ चालतहैअपणांसब
हारी॥ टेकरेसंतिहीणसमकिनरलोई॥ हरिविणिस
गनसूकेकोई॥ ६॥ उनमनिलागिगिगनिरसपीवै॥
अपणजनमसुफलकरिजीवै॥ ७॥ जनहरीदासगो
विंदगुणगावै॥ सहजसमाधिप्रमपदपावै॥ ८॥ ८॥
पांडेकेसांमजनतुम्हार॥ मनकौपकडिसहजघा
रिमेलो॥ मायाघटगडुधार॥ टेक॥ मेंसंतिपूबंतुमस
तिकहियो॥ रायोकहाडराया॥ मनहैएककहीलावी
गे॥ एकबहसूजीमाया॥ ९॥ कंबनबाडिकाचसोषेलो
तबलगकाचीसारी॥ मायागहोब्रह्माईवैवा॥ यऊतो
अचिरजतारी॥ १०॥ अरथकरैअतरथवरिअंतरि॥ प्र
मत्तेदनहीपाया॥ जनहरीदासत्रैसाअपराधी॥ स्वांमी

दहरि तज्या ॥ त्वां हसगा मवचार ॥ ४ ॥ २ ॥ रां पर सत्रे स
रे अंबली विणि पीया न जाय टिक ॥ सोफी कौप विन ही कु
पछि पड्गा सब कोइ ॥ आरति सौं अंमली पीवै रे पीय संति
वाला होइ ॥ १ ॥ सोफी सब न लटा पड्गारे ॥ अंमली रहा ल
ताय ॥ संवैर गुफा का घाट में अंमलियो मन लाय ॥ २ ॥
अंमली सब संसार है रे रहा विषे मन लाय ॥ जनहरी
दास हरि रस पीया ॥ इजा कबुन सुहाइ ॥ ३ ॥ ४ ॥ कंम
नरम का कीया क वलवा ॥ संसा जल ज्यो पीया ॥ ताती
सीली सह जिस सांणी ॥ हंम तो उलटै पै डै जीया टिक ॥ स
धारा हस कल जुग चाँले ॥ पस वात हं बिलाया ॥ रसन स्वा
दिस हत यो बूडा वीह निरगुन नाहन पाया ॥ १ ॥ निरम
ल कथा प्रम पदनेहा ॥ अधर अमर निज सोले ॥ सुलटी
सुरति अगम रस पीवै ॥ अगट पासा राते ॥ २ ॥ सेली चन्दा
सा वैरंगिरता ॥ काचौरंगि मनिना ही ॥ जनहरी दास अ
सा जन कौरी ॥ बास करै हरि सांही ॥ ३ ॥ ४ ॥ राग सीली
डो ॥ असा परा परै प्रम तेव ॥ गुरु बिना को देवै ॥ मसत म
परिहस्तां रोषे ॥ अपणां करि लेवै टिक ॥ अजब धन अ
जब मन अजब सुय होवै ॥ अजब तेज अजब रूप ॥ त
रसित रसि जोवै ॥ १ ॥ अगंम गति अगम संति ॥ अगम निधि
पावै ॥ अगम अगम तोर ॥ सत गुर लेलावै ॥ २ ॥ अनंत सर नि
कटि न्दर जोति जोति लावै ॥ जनहरी दास निकटि बास
दास द्वै सयोवै ॥ ३ ॥ १ ॥ सकल व्यापी हो निरजना त्वसने
ही साचा ॥ अवर सकल जागि देखे ॥ कहं जावों कावा
ठेक ॥ जागि जागि प्रेम प्रीति ॥ आनरीति नांही ॥ मन पवं

नअगमगवना प्रेमसंधमांही ॥१॥ अगमप्यानअगमध्या
नअगमअरथबाया ॥ अगमजोगअगमसोग ॥ अगम
अगमपाया ॥ २ ॥ प्रमतेजप्रमजोति प्रमतेदत्रेसे जन
हरीदासअरसप्रस पीरनीरजेसो ॥ ३ ॥ ३ ॥ गगगम
ग्री ॥ कांईरमनत्प्रधरिजाहि ॥ हरिजीसोसुषदाईके
ईनाहि ॥ टेकाहरिहीराविणजेक्योनाहि ॥ अजवषानि
तेराघटमांही ॥ २ ॥ इहसुवधिविंतामणिमईकोडीकु
वधिसहजिहीगई ॥ २ ॥ जनहरीदाससुषसागरराम
नितिसास्यासाधांकाम ॥ ३ ॥ ३ ॥ आवहमारेआगणे ग्रिह
त्रिनवणराश ॥ तुम्हविणिमैविलषीफिरै अवरक्षोनजा
इटेक ॥ कुलकरणीसगलीतजी ॥ हरिआनदमाहि न
नतजिवेकीवेरहे ॥ मिलिएक्योनाहि ॥ १ ॥ आरतिउणार
तिघणीमिरामनमांही इसप्रसकीवेरहे यतिबाडौना
हि ॥ २ ॥ सतीपिबाणोसावाको ॥ मनिनाणेहान मनआ
त्सएकेमते ॥ तमस्योलेपोलीन ॥ ३ ॥ जनहरीदासहरिमो
कहै ॥ तुमविणितनबाजो ॥ प्रेमपयालापादकरि अप
णकरिलोजे ॥ ४ ॥ ४ ॥ बाजीगरबाजीस्वी ॥ मायाविस
तारा ॥ बाजीसौबाजीरमे ॥ बाजीग्रन्याराटेक ॥ कामकौ
धांअनिमानका ॥ लेडेरूबाया जलिथलिजीवजहान
॥ १ ॥ बाजीप्रमः ॥ ॥ ॥ ॥ बासिममिताचटी नवडोर
यसारी ॥ माहटालबाजंलद ॥ नोचैनरनारी ॥ २ ॥ इहसुष
गोटाउठलै ॥ मायामदपीया ब्रह्माविलमहेसला बाजी
वसिकीया ॥ ३ ॥ मनचचलनिहचलनया ॥ निरंनधरिआ
या ॥ जनहरीदासबाजीतज्या ॥ बाजी ॥ ४ ॥

मरिषस्यै मरिषमिले मिलिबादवधारे समग्रा हरि
सुमिरणकरै आपासबडारे टेक कामक्रोधतिलां
जे संगतिसुषयावे तवसागरद्वतरतिरे गेबिंदमए
गावे ॥ संगतिकीजेसाधकी सतिसाचवतावे मूल
स्योमतिके मिले मूलोत्तरमावे ॥ २ ॥ सांगाकाबिमाया
मडी हरिविचिनवतारी जनहरी दासमायातजे सा
कीबलिहारी ॥ ३ ॥ ४७ ॥ जागोरे अबनीदनकीजे थोडीर
तिमसोवो कोडिकोडिलीणी दाहीरा कोडीसटेनषे
वो टेक वेतनिरहोरये मतिचूको कामक्रोधतरम
जारी तारणहारयथेकोतिरस्यो मोटीजनमनह
रो ॥ १ ॥ प्राणीकांद्रकालने आये ॥ दिनदिननेडोआ
वे ॥ ज्मबालकनेहाथावाटी हाडै आइबिनावे ॥
॥ २ ॥ जनहरीदासकालकरउपरि मेह्दितिलांज्योजे
वे ॥ हरितैविमुषदाटतलिदरडे मूलमधिमतीयो
वे ॥ ३ ॥ ४८ ॥ हीद्वतरकएककलताईरांमरहीमदोद्र
नहीसाईटेक इहांबंनणांउहांमुलणां वेदक
तेबंकथेंबिष्णोसंरामसेनालिद्वरिकरिमेंतै आ
षरिएकअलाहसोंकामा ॥ ४ ॥ काजीबंदेजोरनकर
णां सावासबदसुणोंसतिकानि करदसेबाहिग
लाकूकोटो कब्तोडरसाहिवकामानि ॥ १ ॥ ऐस
वजीवउपायेसाहिव ताकेमारिपडैकोद्वरि ॥
जनहरीसस्यकुअरथविचारै तास्योवालिकस
दाहज्वरि ॥ ३ ॥ ४९ ॥ संतोरांमरांजामेंरहिये मनदेश
एसीसदेसदाति रंमरांमयोंकहिये टेक गिह

समानतजैअभिनासी।

॥साईकेमानतावे॥सूरण

।तसु

।चतमें॥तासमिअोरनकोई॥३॥जन

॥४॥५०॥

एकहरि एक हरि एक हरि साचा॥अलषतजिअल
षतजिसुफलकरिवाचा॥टिका॥अभिनासीसूरण
अलतहामनदीजे॥रामसजिरामसजिषमगति
जे॥१॥गोपालसतिसुसरमतरंमा॥काललागे
नहीसरैसबकांमा॥२॥एकसुएकनिरतैमतेरहि
रे॥जनहरीदासगुरुग्यांतगहिअगहियोगहिये॥
३॥प्र॥अवगुणमोहिअनंतकरणंमैकांमकौध
रसभावे॥तारसिलागिनीदतरिस्तता॥तुम्हविणिके
एजगावेमाधो॥टिका॥दारणदसमांसडधितग्रसअ
बला॥जलमलसौजनकीया॥बहतामुलमुत्रना
सकाउपरि॥उरधसासमेंलीयामेंधो॥१॥तपकरिक

रियास्या॥अहथिआंणविकायांमा

मरे काल कहर की छाया जनहरी दास अणक
 रिरायो यति तसरणि आया माधो ॥ ४ ॥ वावा इह
 गरीबी कृती मन अरुप वन दोऊ ऐफुवा मनसाफि
 रेन पूवी टेक त्रिविधितापकी कथा पहिरी मनी
 टोप सिरजाके रग दोषकी कांनानुदा कहाग
 रीबीताके ॥ १ ॥ पहिस्यानेषरेष ज्योकी लो मोहमं
 ठी बसि जीवै ॥ तिनके तेषरं मनहरीके ॥ विषदं
 मिरत करियोवै ॥ २ ॥ पांचवौर प्रदेसिय कुंता मि
 लिषे लैता मांही ॥ मनमें जौर मुखि गह गरीबी ॥
 असलि गरीबी नांही ॥ ३ ॥ जनहरी दास आंनत जि
 अनरथ ॥ मंनिरं मनां मबरत धारे ॥ रग दोषका
 कसों नांही ॥ याह असलि गरीबी तारे ॥ ४ ॥ १० ॥ ५३
 रग आसा लिष्यते ॥ अब धूत्रे सागान विचार है ह
 रिअकल वसकल विसव्यापी ॥ रहै सकलसे नारा
 टेक ॥ ल्योमें अलष आहि अतिनासी ॥ सुरतिसुप
 ह मंति जागी ॥ गोरष गोपि प्रसिनिधि निरने ॥ अन
 हद सीगी बागी ॥ ५ ॥ निजपुरिया एबसे निति निहव
 ल पवन सुरतिसतिमाला ॥ बसबो लिमें कूलेषे
 यीवै अगमपयाला ॥ ६ ॥ निकटिनाथ निजरूप निर
 तरि नां व निरंजन राया ॥ जनहरी दास निदोको
 बंदो ॥ मनफिरि मनहीस मांया ॥ ७ ॥ १ ॥ संतीसो जो
 गानिस तारे ॥ उलठी चलसहार सपीवै ॥ उलटा नैद
 विचारै टेक ॥ तब लगे मांनि गान सबसाचा ॥ रंम
 रंम कहि जीवै ॥ उलटपलट काये मययाला ॥ ज्यो ज
 गेत्यो पीवै ॥ १ ॥

सोमंतिवाला जगि जगि जीवै ॥ सहजि मिरं रमतीया
बाक्या फिरै सदा ही रावला ॥ गुरि पाया गेनि पीया ॥ २ ॥
पीया पीया अत्र धुनया दिवांतां ॥ निज स्व रूप मो जान्यां
जनहरी दास हरिकारस बिलसे ॥ सो जोगी मति मान्य
॥ ३ ॥ २ ॥ अवधूमे मे राम न संमजाया ॥ मन जायथाया
ए जाणत दीया ॥ फेरि सहज धरिलाया ॥ टेक ॥ केवप
धरि वेकुं व विचारे ॥ मिरत लोक कामास्या ॥ जो वेकुं
ठधस्या सो बिनसे ॥ हंम कुं अंगम विचास्या ॥ नरक
स्वर्ग दोउ हंम तो त्या ॥ प्यां न तरा न्नु मां ही ॥ दोन्यो विधा
वरा वरि दीसो ॥ इनमें घटे वधे को नाही ॥ २ ॥ तीरथ वर
त जोग जिगत पस्या ॥ वडी विथा जुगमा ही ॥ जनहरी
दास ये मल करि देया ॥ इनको प्रसो नाही ॥ ३ ॥ ३ ॥ संतो
हे को ई जोग जुगति गम जाणो ॥ वदती नदी प्यां नके
पारे ॥ बांधि अष्टवी आणो ॥ टेक ॥ ए जसता मस स्वाति
गयासे ॥ सेस नाम को पीवै ॥ अलख अधारी आसाए
ये ॥ जैसा जोगी जीवै ॥ ४ ॥ स्वयिम गली निजरि मे रंधे
पांच चरण तलि चूरे ॥ प्रम जोतिके प्रचेखेले ॥ अ
नहद सो गी पूरे ॥ २ ॥ सुरति संवाहिस सह धरि धारे
निरमल तेह निवास ॥ जनहरी दास जैसा जनको
ई देषे अगम तमासा ॥ ३ ॥ ४ ॥ मनरि सो साचा बैरा
गी ॥ त्रिकुटके टग परित त आसण ॥ सुरति निरं
जन लागी ॥ टेक ॥ प्यां न षड गलेवन मे पैसे ॥ चेत्यां
च विवोरो ॥ वसत गोपिस त गुरु सो प्रागटा ॥ प्रमसूं
निरस तोरो ॥ १ ॥ सागर सपत अष्ट मंडल मे ॥ नदी नवा

सेताणें उतमनिरहै एक रसितागा ॥ जोगमूलबंधज
णें ॥ २ ॥ अरथकरै करि अरथे प्रसे ॥ निजविश्रामन
सुले ॥ मुरगंम अवघटघाटी लांघे ॥ त्रिवेणी संगि जंके
॥ ३ ॥ मनको पकडि सहजघरिषेले ॥ सुरतिसहजघ
रिधारे ॥ जनहरीदास अहरणिघणकसणी ॥ तब
हरिहाथयसारे ॥ ४ ॥ ५ ॥ मनरेसोसावाजूवारी ॥ अ
वैषेलिप्रमनिधिप्रसे ॥ बडुडिनरोपेसारी ॥ टेकपद
लीयेतिबहुतदिनहास्या ॥ सतगुरसमंकिनआई
अबवैडावचरणतलिचूस्या ॥ उलटीसारिचलाई
॥ ४ ॥ तीनियांचनवडावनषेले ॥ चलिदसवैघरिआई
अबयाहसारिपडे ॥ नहीकाची ॥ गेड ॥ अमोलिकपा
ई ॥ २ ॥ डससुषडावचालचौरसी ॥ त्रिविधिरूपता
जयासा ॥ सारी प्राणप्रेमघरिगेयी ॥ अरुषिअलुधी
आसा ॥ ३ ॥ चितचौपडि ॥ चेतनघरिचौथे ॥ दीकमे
लिजुगहूवा ॥ षेलेसदासुरतिकेनाके ॥ फटिनवा
लेजूवा ॥ ४ ॥ ऊनमनिरहै निरंतरिनिसदिन ॥ निज
तरवरकीबाया ॥ जनहरीदाससतगुरुकेसरेणें
करमनआपेकाया ॥ ५ ॥ ६ ॥ पांडेअपणीअगनिबु
जावौ ॥ हमतौआपणैराहचलतहै ॥ तुमकाहेड
प्रपावौ ॥ टेक ॥ पातुमकोएकहातैआया ॥ अनं
तलोकफिरिमाई ॥ अबतौतुमबाहणकेबैवा ॥
प्रौरसीबिसराई ॥ १ ॥ अतवासिकंधेमुखिरहता ॥
पतधातरसयीया ॥ अबतौतुमचौकादेजामौ ॥
हांचौकाकिनदीया ॥ २ ॥ कुलअतिमानआंन

वयसूजा ॥ इह विधा कर्ता ॥ त्रयोदश तित
पाडे। तौ सुषुदेवक्या त्पागी ३ रामविधा विहा
मंति चालौ आधिअन्यनघादा कोमविधा त्त
रासगियलौ ताको सुतान्यादो ४ फलनस्तक
सकलयसार प्राणतदादयको ५ जनदरीदास
बाह्यणमतिमोड नलदाद्विभयमां ५ १ गम
मरिजनजलातया प्रामसन्ती श्यापणा अधिना
या टेक सकलनयोदयकलेतयार मवदनां
वसेचितार १ सकलनवाकोयातयोस क्या
सूजालेदासमंतोष २ जनदरीदासप्रयावहनि
शसा जीवसाधसंगिकेवासा ३ त
जुरेमनविलसनेकी ४ राद. न. न. ५ ॥ १ ॥ १ ॥
जे टेक ॥ जहा नदा नान नदा नान ॥ १ ॥ १ ॥
सागरशरणि उत्वार १ इयराधनदी वददी ५ भा
तामैरामविमुषकले अधिकारी २ जनदरीदा
सओसरतलपाया ममितामटिनजोरामराथा
३ ॥ ए सोसुषसुणियसतविनाणी वीनत्वसस
केवावलगाजे चदगाअप्रवाणाणे टेक गोगाग
रतीनरितीडे. वायद्विअंगसवतावे आमएळीदि
आगनिमैयैवे उलटीतालीलांवे १ गगजमनसाध
वननिरोधे द्विषतजिवमतपिबाण गिणिगिण
अकलस्योमावे निरगुणकागुणजाण २ ३
सहसइकीसोधागा आगमत्तहालेजोड निर
निरंजनप्रये तिलत्तरतारतौड ३ ५

हेसविष्णुगहिब्रह्मा॥काटिकाटिकसलावे॥नरि
नरिअगमपयालापीवे॥नाठीचौकिचकावे॥ध॥
मंठीअयंडितमाहीवे॥जोगीएकविराजे॥जरणा
जडीजटामेंजागे॥सुषमेंसीगीबाजे॥५॥विणि
हविंवांमालरिवाजाबाजे॥विणिहीदेवलदेवा
सुनिमंडलमेंध्यानहमारा॥विणिहीमूरतिसेवा
६॥जनहरीदासअधरउठिचाले॥ताकापलान
कोईतांणो॥विणिधरनीवसहरएकदेव्या॥विर
ताकोईजाणो॥७॥१०॥अवधूसांणिकचौकिमहा
निधिलाधी॥कहांनकोपतियावे॥जाकामौलती
लमापकबनाही॥सिरसोयेसोयावे॥टेकअध
रसधरनिरमलनिहकांमी॥नांनिरंजनराया॥
धरेअधरसोपचाकीया॥सोफिरितहांसमाया
१॥अवरंणवरणसकलसंगिरहता॥पतितरता
पतिबाजे॥भातसधारअधारहमारै॥चौकीचम
विराजे॥२॥अरधउरधमधिअगमअधारी॥निज
ततनेडाइसे॥मनमंतिवाला॥नरिनरिपीवे॥घटा
विनांघणवरसे॥३॥उलटीनंदीगुणासौन्यारी॥म
हनिरिअंविमीवा॥सेकांराजारंमपथाया॥महवि
उजालादीगा॥४॥मेडांनियटनजाणोकोई॥करंमक
टवकलागा॥जनहरीदाससुधिसागरियेवा॥भवस
गरनवमागा॥५॥१॥जोगियाअलषअनेवारे॥आ
रंनकूंणकहांतेराअसंण॥करूं॥किसीविधिसेवा
१॥टेक॥सकलरूपरसरूपबिबरजत सकलरूप

पकरिसबतेन्यारा साधावै। मयदीया १ व्यततना
 हिप्रीतिनहीषघर मकलनिरतरिन्नाग अगदि
 अरूपअथाहअयंदिता अगमवारनहायाग -
 मेमेरावनमांनविवासा करसकूपतजिताया ।
 उलटीसुरतिगिगनिमैग्रंज तहाकृत्तअलसनाका
 या ३ थाहरिसदाप्रदाहरिरदमी उपानतावन
 सेनाई जनहरीदायअवगातिगतिअमी मित्त
 षेल्यासुषदाई ४ १२ सुणिलेरेसाहसदंसा माह
 कहाइचौरसगिगःसो जावतरागकमा २० तिस
 नोएकरहेघटनीतर लिजददअटकनाई। कवती
 वकीमायायावै सोपद७माईमाहा मनावा
 तचौरचितपेवा षडयइकरिवाय अतिअमि।
 मांनकाभवसिकावा करमकथाकाणाय ।
 सोईसाहसाहसेगिबिले मनकवाइउठंय अकन।
 लिइमरतरसयीवै १महीमाहिसमांवे ३ यवाइ ।
 तरजूमनकौंतांत हरिईमरतरसयीवै जनहरी
 दाससाहसतिमोई योसावाकरिजीव ४ १३ इरिइ
 णिजांसिबोटायात रामनीस्योप्रीतिनाहा उचिट
 हदिसिजात टंक नजिनिरननसरमतनन दाइ
 अरिगंजननाथ आषणाकरिआयरांय सोमप
 रिभरिहाय १ कालकाभवधनकांय जायअजया
 आपआपैउठमतिअस्यानिइमोदाताअवरनाइ
 अनेआपैदांन २ नरककाभैकुडपान काभवेर
 नवकुडिसाले जराग्रांसेनाहिमीमदेताई।

ये नरहरि बसत है सब मां हि ३ नरमजल से पार लहि
ये ॥ ये लिउत दा अग हा हि ये ॥ हरि पूरण ब्रह्म अगाध
जन हरी दास निरसे ध्यान निरमल ॥ तहां बसत है स
बसाध ॥ ४ ॥ १४ ॥ संतो सहणों के सुख लाधा ॥ महतो
पक दि आप बसि कीयो ॥ सत गुर सब दां बांधा ॥ टेक
महतो रो क्या उपरि महती ॥ किलो करै कलि नारी क
हो कारू को माने नां ही ॥ तब गलि गो तो दे मारी ॥ १०
राज बला ही मते आपणों ॥ फिरि फिरि करे बु रार्द्र ॥
ता को सिर जर बां सो कूं द्यो ॥ यो ना गो बड ताई ॥ ११
गां व सुहा गणि मार गिरो को ॥ आ डी आ डी आवै ॥
जन हरी दास सोई तत बेता ॥ जो या ते ये लो बु डावे
३ ॥ १५ ॥ अब धू वेली आं धि उं काणी ॥ ये ली आं धि सह
ज मै वू ली ॥ या सत गुर की सह नांणी ॥ टेक ॥ पा द्रक
पांच यो लि में अट क्या ॥ पांत गुर फा में आया ॥ गि गनि
मंड लि आ स ए रे अब धू ॥ धु नि में ध्यान लाया ॥ १६
धा कं वल सु लटि करि सुधा ॥ अत ह द सब दख वा ए
गंग ज मन वि चि रि व सि स मे ला ॥ सह जि त या सं ति
वा ला ॥ १७ ॥ म में अग म अग म में ग म हे ॥ म न फिरि म
न ही स मां तां ॥ जन हरी दास कू च क ह त त आ मे ॥
अब हं म तां या दि वा नां ॥ ३ ॥ १८ ॥ म न रे सो सत गुर मे
वे ला ॥ आं न द स ह त अ ग म घ रि ये लें ॥ प्र म जो ति ॥
स्यो मे ला ॥ टेक ॥ म न ग हि प वं न ग वं न गुर ग म तें ॥ प
न्नि म दे स प थं जा णें ॥ सुर ति सं वा हि सं स द मे ये से
ब स त अ मो लि क आ णें ॥ १ ॥ स्वार थ सी र अ ट कि अ रि

अथ ध्या॥ प्रसिधमनिधिदेवो येन वनाथ हाथमैराधे॥
 तव हिन लो लेये ॥२॥ पादकपांचये करसिरोके ॥
 गौरवकडीसल्लके ॥ जराणं जडी जोग जत जाणे ॥
 सोया अरथ द्विबूके ॥ ३ ॥ सुनिमंडलमे वैशिशिरंत
 दिव्य एवो ल्या निशिगवे ॥ जनहरी दास सोई गुरो
 रा ॥ जोया अरथिसमावे ॥ ४ ॥ १७ ॥ जागिन चेषो रेहर
 नेरा ॥ तजिब कुंरुय धूपनही व्याये ॥ सुषमे सहजिब
 सेरा ॥ टेकारं मताराम प्रम सुषदाता ॥ सकल लोक
 ताबाया ॥ ता सुषिला गिसाध अग्निनासी ॥ प्रमर लोक
 फलयाया ॥ १ ॥ आनंद अनंत अनंत अघ जाण ॥ अ
 नंत चंदते सेला ॥ अनंत माण प्रकास प्रमयदा ॥ अ
 नंत जौतिका मैला ॥ २ ॥ आनंदरूप अगहि अग्निना
 सी ॥ अगम तहांगमकीया ॥ जनहरी दास निधिदे
 विनिजरि मरि ॥ जनम सुफल करिलीया ॥ ३ ॥ १८
 निद्रामोरे मसत दिवोनी ॥ रावरं कऊ मराव चुंणि मास्य
 असी है गैवांती ॥ टेका जोगी जती सिवडा सोफा ॥ तिनते
 रहै नबांती ॥ आप निरे जन जुगमें थापी ॥ कालतणी
 निसाणी ॥ १ ॥ जुग सो वैगौरव जन जाणे ॥ असा प्रमनि
 धांती ॥ जीव जंत सब ही बसिकीया ॥ सब हिनके मनि
 मांती ॥ २ ॥ जोग जुगति गम जाणें नांही ॥ निद्राके बसिक
 वा ॥ जनहरी दास तेतान नारी ॥ माया मांही मत्ता ॥ ३
 ॥ १७ ॥ संतौ एक अचंता असा देव्या ॥ दिव्यो तें सुषयाया
 उलटी नदी विरय मैयेवी ॥ इला मूल समाया ॥ टेका
 रतैवा किब कुत सुषयाया ॥ पक ड्राते

पासालसंघवनडाडा ॥ सुसेविलाईघाधी ॥ जाणेंत
 कोकहांसुषमांने ॥ समकिवितासुषनांही ॥ मठरिमा
 डकेंसंगलमासा ॥ योंकृल्लावनमांही ॥ महकीवे
 तीमहाविरोखे ॥ मेरमंथाणेंकीया ॥ निरतिनेतदेतीर
 णलागी ॥ योंनिजततमंथिलीया ॥ ३ ॥ आंमिलकरत
 चोथेचढिबेगा ॥ तसकरमारिमनाया ॥ जनहरीदास
 एकअचिरजदेव्या ॥ उलटाआंविरआया ॥ ४ ॥ २० ॥
 आदयालजीतति ॥ ३ ॥ रागशौरतीलियति ॥ पलपल
 जाइरेमनजाद्रा ॥ करंमिलागोत्तरमिचूले ॥ रह्योकाल
 लुताइ ॥ टेकाएकसुवठेउलटिबेवो ॥ विरषमांहीआ
 दासोई ॥ विरषवौबोअसुरमीनी ॥ घातलाधांयांइ ॥
 कलससुंदरिनीरतरिया ॥ नांपावेपणिहारि ॥ सोई
 कंसफूठेबाडिचाली ॥ बडौअवसरहारि ॥ ३ ॥ यहरचा
 स्योसहजिबीता ॥ तयोमूलगमाइ ॥ गयोवासुरिरेनिआ
 ई ॥ चलोयोठायाइ ॥ ३ ॥ कालआयजबफिसोदोले
 समकिनयडईकाय ॥ जनहरीदासहरिकासजन
 विणि ॥ नररह्योजमपुरिवाया ॥ ४ ॥ ॥ मनतोस्योकली
 मनहोबाहुंवारसुणाय ॥ अंधतजिअतिमानआपो
 गहितहरिगुणागाइ ॥ टेकायारप्रहरिसारसतिगाहि
 अगमअरथविचारि ॥ हरिनांविणिनिवाहनोही
 रयेचालेहारि ॥ १ ॥ पांनदा ॥ उधगालिआरिअघ ॥ सह
 जसबसिधिहोय ॥ सपतधातसुधातबसिकरि ॥ सु
 तिनिजनगयोइ ॥ ३ ॥ प्रमनिधिहरिबाडिनिसदिनि
 विषेफलरूचिआंहि ॥ तरंमजलपसूजाणियावे ॥ यक

दिनदिनि जाहि ३ ॥ आण मंगी प्रसिपराट जेस प्रः
 तिलगाइ जनहरी दास रमना रामरी टंही नगना
 रेयाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ नजिमन अकल देव मुररि तावगां हंरता
 वाहि ॥ हरिलेश्वर तारेवार टंक निकडिना लीन
 पवडनिधि ॥ स्वयं स्वधवार नकार तास्य ध्याय्यं
 हमा ॥ चुंगी मोती चार १ ॥ अगम अफार अगाध नरद
 रि ॥ निरखर दिलमाहि दास निजत दास दास नगोप
 हिल्या ही रायाहि २ ॥ नहांगां वन गां वदरा नहाव
 डी ॥ मनपक दिरे निधि जोइ जनहरी दास रमना राम
 रटंही ॥ सदा संगी माइ ३ ३ ॥ रामगड मांगी ॥ ३ ॥
 मांति तुमारी सो नाधि अवितायंत न्यारी ॥ ३ ॥
 धिन मांगी सिधिन मांगी मुकति न मांगी टंही ॥ आदि
 अंति तुमसो मालियतं ॥ पड आरत य म्भंभ्या ॥
 निरमल पांन धं ॥ १ ॥ धन निरमल प्रसन्नान प्रकाश
 आसण अचल न हासन निहवल न मक करं गदासा
 ॥ २ ॥ संजम सील न सति सांभरण पति माजी निम
 ऐरी ॥ जनहरी दासको आसन दूनी ॥ आस अनाह दंत
 रो ॥ ४ ॥ माधं य व नितजल न मर्षी ॥ सुकल व्यापी दो
 संनेही ॥ करे कनि विषदरि टंक जोगल जाय तंसा
 वंन य डि रहोता लीलाय ॥ दसतासन गां वं ज्यो दता
 धरिले जाय १ ॥ यवन गां हले गां गां न रायो ॥ मरद दिन
 दाइ ॥ नाथ तुम विनि इह पददा ॥ हरि पदिये नाय
 ॥ २ ॥ वोट हरि विगाओ रतां ही काल ग्रांम आय जन
 हरी दास कदा मतांत आनक ह न सुहाइ ॥ ३ ॥ ५

देवाती कौं विडद किसे देगा कं जुग चारि वेदां बां विं
जे ये लो पार न पा कं टेक अंग म अ पार पार न हि को ई
पार न का रू पा या । त हे रोक मांड सब तेरी सुणो निर
जन रा या ॥ १ ॥ स्वरि ज ते पे स ते ज च्छु म्हा रे । घु रें द्र द घ रि
बा जा । य ऊ प्र ता प च्छु मा रे स्यां मी । त म जौ गी त्पु म र ज
२ सा त स मं द इ लि मू लि न लो ये । त हां कि त पा ज बं
धा ई जै लो ये म र जा द तु म्हा रे । ती नी र धू लि के जा ई ३
ये लो आ प स क ल घ टि नी त रि । स ब स्यो र हौ उ दा सा ज
न हरी दा स नें च र णा रा थो । मे टो ज म की त्रा सा ॥ ४ ॥
म न रे ग्ग वा आ सा पा सा रा । स ब त जि न जि सि र ज न ह
रा टे का । ध न जौ ब न सु त मा या । या ह बा द ल की सी
हा या । ज हां बै सि सु ष पा वे । ता कौं फि रि धू प ज ला
वे ॥ १ ॥ ह स ती घौ ड घ ट पा या । अ प णां क रि मु ल क ब
सा या । चाल्या त ब दी या रे ई । वा के सं गि न चाल्या के
२ सा हू बै द सु ल तां नां । मे मे रे मां हि नु ता नां ३
का ल का फ धा । जी व जा गि न दे षे अ धा ३ । या ह ह ट वा
डा की बा जी । जि नि वी मि अ मु नि का जी । अ ट दू स ण
व रि था या । बा जी का म र म न पा या ॥ ४ ॥ मा त पि त सु त
ना ई स ब स्वा र थि मि ली स गार् ई । त हां ला गि जी व लो ई
विं ता म नि क र तें थो ई ५ । तेल कु ले ल सि रि डो रे । नां नां
वि धि दे ह स वारे । कि सा कां म की का या । बु स्या के आ
नि ज ला या ६ । वं वा म ह ल अ वा सा । नां नां वि धि ली ल
बि ला सा ॥ त्रि वि धि ता प अ हं का रे । मू लो रे न र बा जी हा
री ७ । स त मु र मि लि सा च व ता वे । ज न हरी दा स ह रि नी

का॥ हरिसकलधरं मसिरीठीका॥ ८॥ १०॥ मनं
दसहजघरिनाया॥ तबलगावादिबक्याबोर
नातिकंवलमेपवंतनिरंधो॥ तोसतगुर्काचे
मनगहियवंनअगमघरिंयलो॥ करुअगमस्य
॥ १॥ उलटायेलिगिगनिमेपेस्व॥ सरतिसहजघरि
रु॥ प्रमजोतिस्यो॥ हिलिमिलियलो॥ ब्रसाअरथदि
रो॥ २॥ जनहरीदासनिरभैतिधिप्रसा॥ प्रमस्यधमे
न्याकं॥ जवरअगनिमंप्राणनहाम्॥ आवागवाणु
काकं॥ ३॥ ए॥ अरवमोहिदरसदियाइमाधव॥ यक
वसरलाभैनही॥ दिनदिनिघटताजाइमाधवें प्री
घटैतोजिनिमित्तो॥ तुमप्रमसनेहीगयमाधवें मज
नवांधोप्रातिस्यो॥ टेक॥ एकअदसोह्मारेमनिबसे
सोहंसविसरैनाहिमाधवें॥ निकटवमोन्पारहं
एकैमदिरमांदिमाधव॥ कैमिलिहांकैतनतजो अ
रमोहिजीवणनाहिमाधवें॥ प्राणनधारणतुमासलो
॥ ४॥ अरवलामनिब्याकलभंड॥ तुमकेोरहरिसाइमा
धवें॥ तुममिलिदोतौमिलिरहो॥ नहीनरामत्योतजा
यमाधवें॥ अंसरजामीअंतरो॥ जनमसिगाणाजाय
माधवें॥ प्रमसनेहीतुममित्तो॥ ५॥ याचसयीमन
मुषिभई॥ सुषमनिसहजसमाइमाधव॥ मनपव
नामेलातया॥ तुमकवरमित्तो॥ आइमाधवें॥ आत्म
अंघरिआईये॥ जनहरीदासबलिजाइमाधवें॥ दरस
नदेहीदयातजी॥ ६॥ १०॥ आइबादेरयाइबादेर
मांहीलामनोरथयोइबादे॥ टेक॥ निरगणतात

आया तातै जीव डै डय पाया अब पाव विलं मन
 कीजे जन डयिया कों सुष दीजे नैन पलक
 रि जो इवादे ॥ १ ॥ बिरह निकों सुष दीजे पीय
 अपणी करि राषीजे ये सपया ला पावो मेरा तन
 की तपति बुजावो अर सपसमित्य सो इवादे ॥ २ ॥
 निपट निरंतरि नेरा नव जे जन संत सधीरा जन
 हरीदास सुष पाया सुष सागर मां हि समाया ही
 रे ही रायो इवादे ॥ ३ ॥ दर सण दे हो देव दर सण दे
 नैन पलक नरिष संण दे टिक आव घटे तन बीजे
 तुमह हौ तेसी कीजे नव सागर वार नपारा मेरे तु
 मही राषण हारा ॥ ४ ॥ देवा बिलं मन कीजे बिरह
 णि कों सुष दीजे तुमह बिणि पार न जाणे न को ई पा
 वप ड दै प्रीति न होई ॥ ५ ॥ साहिब मेरा पुरा जाके
 बाजे अनहद तरा जो सेवे सो पावे तातै बिरह णि
 बिलं मन लावे ॥ ६ ॥ बिरह संतार्ई सांई में अब लाव
 मही तार्ई ज्यो घण कों तर से मोरा यो हरीदास ज
 न तोरा ॥ ७ ॥ १२ ॥ आयो उलटि जाऊं तोहि दया लहे
 क्रिया लसाधो मन मडो चरणं मां हि टिका संसार
 नार अपार प्रबल तहो का चारंग आप थापी महा
 पापी भगति पाडे संग ॥ १ ॥ नरं मजल में कल्या के ता
 अजहं कलिकलि जां हि राम बिणि मेरे धणी नां ही न
 ही वसो कलि विष मां हि ॥ २ ॥ वास जुग में वास जंम की
 अलप जीवति मोहि जन हरीदास कों विस वास तेरा
 नही बाडे तोहि ॥ ३ ॥ १३ ॥ संतौ ऊब धिका लसो डरिये

नवसागरतिरिबेकेताईद्विदिदेविषगधरिणोटेका। ल
यांषडगद्वारिजंमठाहो॥ घातपडेतवमारो॥ हरि
काजनकोईसंकनमाने॥ हरिद्विधियारसंजिथि
॥१॥ सुणिसूरिजसुतसबदहंमारो॥ असेकदेतहे
ई। गोविंदकाजनजंमकेदारो॥ जांतनदेव्याकोई
शांमैमेराडरसंगिकरिलीया॥ बालिउहांजहांमा
ईसाचालेहरिचरणाराव्या॥ सज्याऊठकोंद्याई। र
निसबाखरिनिरसेगुणावो॥ कहिकहिशंमपुका
॥जनहरिदासप्रगतप्रमेसुरा। ताकाकाजसंवारो॥
॥४॥ १४॥ मनपंथियांमैतजाणैरोनाई। जलटेबेलियम
निधिपाई। टेका। अंगमअगहिअंतरिअनितासी। मन
चलकायातनकासी॥ १॥ अवरणवरणकरंमना
यां। सुधिमबिखसोसीतलबाया॥ २॥ जनहरि
सतिरंमैमैतांही॥ म्हारोप्राणबसेहरितरवरमांही। ३॥
॥४॥ अबमैजाणैकोजाणैणो। गोविंदोमहारेमनिब
। टेका। अकलसेवाकरोअहिबिधि। मनहीमनस
ईया॥ नाहनिरगुणसेऊआया॥ प्रसिसौपतिपा
या॥ १॥ साचगहिसदगतिसदासंनमुठि। सवीसबसे
वाकरै। निकटिनिसदिसवेमवरिये॥ तहांचितचरण
धरै॥ २॥ आत्मांअस्यांनिआंतदसबदअनाददवाजि
॥कोटिसूरजितेजदरसे॥ कोटिचंदबिरजिया॥ ३॥
अंगमथासोइहांपाईया॥ प्राणयोवसंगिलाईया॥ ज
हरीदासआसाअरथिलागी॥ मनहीमगतमठबाई
॥४॥ १४॥ देवनजाणैतेरासेव॥ तुमकेसैसतिमां

नौसेवटेक सतगुरिमिलिसाचबताया अगंमपु
 षताकीयाहमाया ताहिमेदजाणैकोईनाहि सेक
 सेकयोदेजलमांही १॥ जलहीमेंजलहोइसमाया ॥
 अगंमजोगकासेदनपाया मेदलहैसोईगुरमेरा ॥
 जनमिजनमिहुंताकाचेरा २॥ इहविचारपारन
 हिंकोई साखिगरंमसरंमनहोई साखिगरंमस
 हजकादेवा मनमानैत्योंकीजेसेवा ३॥ मसतगि
 धरैगलामेंराये फूवोसदाऊवयड ~~इह~~ बिबनाही
 हीनाये ४॥ धरैमेहेआलामांही फूवाऊवयडसाहिव
 नांही ५॥ अबत्संसमकिचेतिजीवमैरा हरिविणि
 अवरकोणहैतेरा हरिनिरबंधबंधणिनहीआवे सं
 पटिजडासोहरिनकहावे ६॥ हरिप्रबसिपडैनवे
 प्रसंगिआवे सबहिनतैन्यारेनिरदावे हरियवम
 हिसकलहरिमांही तासाहिवकोंचीन्हैनाहा ६॥
 निराकारनिरंजनप्राय जनहरीदासताकरगुणा
 योहअभिनासीबिनेसेनांही ७॥ इजाबितसेआवे
 जोहि ८॥ १०॥ मनसंमजायलैरे मनगहिगुरपा
 नविचार आनंदरूपअगहि अभिनासी अगंमवा
 रनहिपारटेक आलसआवेसाचनभावै १॥ बिषका
 पीवणहारा आसाबसिपडाडस्याअपराधी जागेन
 हीलगार १॥ हरिनजिनोवनहीउरिअंतरि संमके
 नहीगंवार केतेगियजाहिग सलिलमोहकीधार २॥
 यऊसंसारघारमोहैदीसे तामेंदोकेजीवअपार ॥
 जीवतबकेथकेनिजमारागि मेतैमोहकिंवार ३॥ त

अतिमान अतिमानतजिसेवा॥ नाननेहनिवाया॥ हरीदास
 जनहरिगुणगाथे॥ जाकेरामअधारा॥ धारा॥ रामविसा
 मारेप्राण॥ कृबधिप्रहरिसुमरिहरिहरि॥ सुमरति
 धनिधानाटिकाउदरअबलाजवरकलमें॥ तहांती
 राबि॥ पायहरिअतिमानतजिनरा॥ अतिमानसबदनसाधि
 ॥ १॥ स्पंघस्यलपतगकुंजरा॥ अपकीटीस्याजा॥ मंठकंठ
 होयजलांहडोले॥ तोकोअजकुंनआईलाजा॥ रामानिया
 अवतारबडनिधि॥ पाईयेकहंकालि॥ जनहरीदाससंम
 क्तिविवारिसदगति॥ रामतांमसंभारि॥ १॥ १॥ जुगियोलाधे
 प्रीतिपबेवरौ॥ तातेंमलतही आवेनेरौ॥ टिका॥ चंचसरसमि
 कीया॥ सतगुरुसावणदीया॥ ब्रह्मतजनकरिधोवै॥ ताते
 ब्रह्मडिन्तमेंताहोवै॥ १॥ वादसआंगलबाई॥ पाहिसुखमनिस
 हजिसमाई॥ तरसिअगसरसवाये॥ संमितासोमेलनराये
 ॥ २॥ जनहरीदासहरिनेरा॥ तहांप्राणविलंबामेरा॥ हरिप्री
 तिपछेवरदीया॥ ताकोहंसवीठतजीया॥ ३॥ २०॥ गोव्यंदा
 कसोअप्रगणमांहि॥ सुयनांवसागरछाडिहरिको॥ डूबीच
 ल्याजमप्ररिजांहा॥ टिका॥ कहतेजोगीरहतिरोगी॥ रोगकीघ
 र्यांनि॥ सोरोगदिनिदिनिडालमेहे॥ बूडिगयाअतिमानि
 ॥ १॥ पहरिसुदामगनहंवा॥ रहतिनाईहाथि॥ पछेरावल
 बाडिकावलावल्याजमकेसाथि॥ २॥ पांचरात्रिनयेमयी
 या॥ दसोंदसाकेजांहा॥ देविअवधुअकलिअंधा॥ अजकुं
 चेतेंनांहि॥ ३॥ हरिनांवनिरमलनिकटितांहि॥ विकटयेले
 बाया॥ जनहरीदासजोगीछाडिआसंए॥ जेमलोकिआवे
 जाया॥ ४॥ २१॥ मन्त्रेजगतनूलोजोया॥ अलख

नौसेव। टेक। सतगुरिमिलिसाचबताया॥ अगंमपु
पताकीयाहमाया॥ ताहिमेदजाणैकोईनाहि॥ सेऊ
सेऊयेदेजलमांही॥ १॥ जलहीमेंजलहोइसमाया॥
अगंमजोगकासेदनपाया॥ मेदलहेसोईगुरमेरा॥
जनमिजनमिहुंताकाचेरा॥ २॥ इहबिचारयारन
हिंकोई॥ सालिगरंमसरंमनहोई॥ सालिगरंमस
हजकादेवा॥ मनमानैत्पोंकीजेसेवा॥ ३॥ मसतगि
धरेगलामेंगये॥ फूवोसदाऊवयंडहंकिबनाही
हीनाये॥ धरेमेलेआलामांही॥ फूवाऊवयंडसाहिव
नाही॥ ४॥ अबत्संसमकिचेतिजीवमेरा॥ हरिविणि
अवरकोंणहेतेरा॥ हरिनिरबंधबंधणिनहीआवे॥ स
पटेजडासेहरिनकहावे॥ ५॥ हरिप्रबसिपडेनख
प्रसंगिआवे॥ सबहिनेतैत्यारेनिरहावे॥ हरिसवम
हिसकलहरिमांही॥ तासाहिवकोंचीन्हेंनाही॥ ६॥
निराकारनिरंजनाय॥ जनहरीदासताकाउणा
या॥ वोहअभिनासीबिनसेनांही॥ इजाबिनसेआवे
जांहे॥ ७॥ १०॥ मनसंमजायलेरे॥ मनगहिगुरपा
नबिचार॥ आनंदरूपअगहिअभिनासी॥ अगंमवा
रनहिपार॥ टेक॥ आलसआवेसाचननावे॥ बिषका
पीवणहार॥ आसावसिपडाडस्याअपराधी॥ जागेन
हीलगार॥ १॥ हरिनजिनांवनहीउरिअंतरि॥ संमके
नहीगंवार॥ केतेगियजांहीगे॥ मलिलमोहकीधार॥ २॥
यऊसंसारमारमोहेदीसे॥ तामेंदोकेजीवअपार॥
जीवतबकेधकेनिजमारगि॥ मेतैमोहकिंदार॥ ३॥ व

जिअनिमानतजिसेवा॥नानानेहनिवायाहरीदास
 जनहरिगुणगवै॥जाकेरामअधारा॥धा॥१॥रांमविम
 रिमारेखां॥कवधिप्रहरिसुमरिहरिहरि॥सुमरति
 सिंधनिधांनाटेकाउदरअवलाजतरऊलमे॥तहाली
 योराधि॥पायहरिअनिमानतजिनर॥आंनसबदनमाधि
 ॥१॥स्पंघस्यालपतेगकुंजर॥अपकीटीस्याज॥मबकब
 होयजलांहडोले॥तोकोअजकनआईलाज॥२॥मानिया
 अवतारबडनिधि॥पाईयेकहूकालि॥जतहरीदाससम
 जिबिचारिसदाति॥रामतामसभारि॥३॥१॥जुगियोलधे
 प्रीतिपबेवरी॥तातेमलतहीअधेनेरी॥टेका॥बदसरसमि
 कीया॥सतगुरुसाबणदीया॥बहुतजतनकरिधोवै॥ताते
 बकुंडिनमेंताहोवै॥१॥वादसआगलबाई॥गहिसुयमनिम
 हजिसमाई॥तरसिअगसरमचाये॥समितासोमेलनरांअ
 ॥२॥जतहरीदासहरिनेरा॥तहाप्राणविलव्यामेरा॥हरिप्री
 तियखेवरादीया॥ताकोहमधोठतजीया॥३॥२०॥गोव्यदा
 कसोअवरगामांहि॥सुयनावसागरछाडिहरिको॥डूधीच
 ल्याजमपुरिजाहि॥टेका॥कहतेजोगीरहतिरोगी॥रोगकीघा
 र्याधि॥सोरोगदिनिदिनिडालमेहे॥बूडिगयाअनिमानि
 ॥१॥पहरिसुडासगनरुवा॥रहतिनाईहाथि॥पछेरावल
 छाडिकावला॥चल्याजमकेसाथि॥२॥याचराअनपसयी
 या॥दसोदसाकोजाहि॥देअअवधुअकलिअधा॥अजक
 चेतनांहि॥३॥हरिनांवनिरमलनिकटिताही॥बिकटंभले
 बाया॥जनहरीदासजोगीछाडिआसेण॥जमलोकिआवे
 जाया॥४॥२॥मनेरेजगतहूलेजोया॥अलखकीगतिलयेनांअ

ही। निस। नगतिन होय। टेक। तीर। ए। वरत। सब। मांड। वे। ली।
 तहां। च। ल्या। जा। हि। ॥ १ ॥ उत। स्यो। सं। सार। र। जी। ॥ सा। च। दे। ये। नां। हि।
 ॥ २ ॥ नं। दी। उ। ल। ती। ब। हे। नि। सि। दि। नि। ॥ सं। म। दि। ला। गी। जा। द्र। ता।
 सं। म। द। का। कु। ब। ने। दे। दू। जा। ॥ त्व। तं। हां। ता। ली। ला। ॥ २ ॥ सो। सं। म। द।
 अं। ति। सु। य। ड। य। न। व्या। पे। ॥ ज। न। धा। ह। पा। वै। नां। हि। ॥ ता। सं। म। द। मां।
 ही। व। से। हं। सा। ॥ हि। ल्या। ही। रं। यां। हि। ॥ ३ ॥ न। रं। स। ज। ल। ज। ब। जां। णि।
 पा। वै। ॥ त। व। पा। र। पा। वै। नां। हि। ॥ ज। न। ह। री। दा। स। क। लि। ज। ग। ब। हे। जौ।
 रे। ॥ ता। मै। व। ह्या। स्वां। मी। जां। हि। ॥ ४ ॥ २२ ॥ अ। ब। हुं। ह। रि। वि। णि।
 अं। न। न। जा। चै। ॥ न। जि। न। ग। वं। त। म। ग। न। हो। इ। ना। चै। ॥ टे। क। ॥ ह। रि।
 भे। रा। क। र। ता। हुं। ह। रि। की। या। ॥ भे। मे। र। म। न। ह। रि। कौं। दी। या। ॥ १ ॥ ग्पां।
 न। ध्यां। न। प्रे। म। ह। म। पा। या। ॥ त। व। पा। या। ज। ब। आ। पा। रं। मा। या। ॥ २ ॥
 ह। रि। रं। म। नां। म। ब। र। त। हि। रं। दे। धां। हुं। ॥ प्र। म। उ। दा। र। नि। म। य। न। वि।
 सा। रौं। ॥ ३ ॥ ह। रि। गा। इ। गा। इ। गा। वै। धा। गा। या। ॥ स। न। न। या। सैं। त। गि। गा।
 न। सं। व। षा। या। ॥ ४ ॥ ज। न। ह। री। दा। स। आ। स। त। जि। पा। स। ॥ ह। रि। नि। रं। युं।
 णि। नि। ज। प्र। रि। नि। वा। स। ॥ ५ ॥ २३ ॥ सौं। ईं। दे। वा। सौं। ईं। सि। र। ज। न। ह। र।
 जां। कै। जौ। ग। ध्यां। न। का। ब। हुं। वि। स। तार। ॥ टे। क। ॥ ना। य। नि। रं। ज। न। वा।
 र। न। पा। र। ॥ नि। रा। का। र। नि। रं। म। ल। त। त। सार। ॥ ता। हि। ते। दू। जां। ऐं। न। हीं।
 कौं। ईं। ॥ से। दीं। ह। रि। सौं। न्या। र। न। हौं। ईं। ॥ २ ॥ जा। की। आ। ग्पां। प। वं। त। व।
 ले। दि। न। र। ति। ॥ मां। ईं। बा। प। त। स। नां। हीं। जा। ति। ॥ सो। नां। क। हां। क। हीं।
 जे। जा। कीं। ॥ स। क। ल। मां। ड। यां। ह। दीं। से। ता। कीं। ॥ २ ॥ जां। कैं। कुं। क। मिं। इं।
 इं। मे। घ। वर। सो। वै। ॥ जी। वं। जंत। स। क। ल। सु। य। पा। वै। ॥ क। रि। अ। ति। मां। त।
 इं। दू। अ। ल। सां। वै। ॥ तो। वां। कौं। मे। दि। अ। वरं। कौं। षो। पे। ॥ ३ ॥ जां। भे। का। ल।
 स। क। ल। ज्जु। ग। या। य। ॥ नि। सि। बा। सु। रि। दो। ड। तां। वि। हा। इं। ॥ ज। ब। हीं।
 करे। का। ल। वि। स। वा। स। ॥ तं। व। हीं। दे। षि। का। ल। कां। नां। स। ॥ ४ ॥

सागरसयतषुसीस्येंधीरा। उलटिनचोलेतिनकानीरा। उलटिन
 रबरतेतिनिमांछि। हरिआपत्तगमेटेनांछि। ५॥ गिरयख
 तमीरहिस्पेनांछि। अनलपयिज्येंउड्राजांछि। व्याप्याजहि
 उडावैसोश्रीवाजोगीविणिजुगतिनहोई॥ ६॥ भारअठ
 राकेसंरहे। दावानलउनहोंकोदहै। यावकषलोबर
 तैमांछि॥ सातोंसंमदसूकताजांछि॥ ७॥ तारामंडलऊठ
 विसवास॥ निराकारनिरपेनिजदासा। जोदोसेसौरहत
 नांछि। हरिजनरलिमिलिस्येंहरिमांछि॥ ८॥ देवोधरतीक
 हाआकासा। रिवसिसङ्काकैगानासा। उलटिसुनिफि।
 रिसुनिसंबाहि॥ अंबरधरबूडेजलमांछि॥ ९॥ प्रलेबहा।
 इडअनेकासुरतेतीसोंप्रलेदेया। जोआकारसविनस्य
 जाव॥ निरपेएकनिरंजनराइ॥ १०॥ अनवासकालकी
 यासों। विणिहरिनजनऊठविसवास॥ जनहरीदासन
 जिरंमंतराम॥ आदिअतिहरिहास्येंकाम॥ ११॥ २४॥ ह
 रिशंभरतरसपायाहै॥ वामीठस्येंमनतायाहै। टेका। डब
 ध्यानहीसदारसयवि। रामजनविनिक्केसैंजीवै। डबधा
 तोमायाकोदासा। रामजनपणिकुलकीआसा। कांटादे
 ऊरालेयोइ॥ तोसहजैहीआनंदहोइ॥ १॥ नरंमअधाररा
 येनांछि। इपणज्येंदेषेघटमांछि। नरंसहीकुबवरतेअ
 वरा। निसवासुरिमननाहीठोड। इपणसुरचारड्रायाइ
 तातेंदरसणकीयानजाइ॥ अऊडचलेनपेडैजाइ। सूआ
 रहैनधापिनषाइ। जोऊडतोपूजैआन। जोपैडातीकुल
 सेमान।

३। जो न्यायो हरि सो हेत। जो धाय तोर है सुचेत। जो गीच
 चले ऐसे नाइ। संनि सहर की तिष्या आइ। तन मव तो लि
 अका सां च है। सो जो गी सरि बै न ही डरे ॥ ४ ॥ नां गिर हक
 है न वन में रहे। पावों कर म सह जिहा च है। जो गिर ही ते
 चिंता उदार। वै रगी तो मत कौ मार। हो न्ये चले ऐसे नाइ
 तिन कौं काल त पर से आइ। य। मे ला रहे न उजल होइ। आ
 या दो ऊर डै योइ ॥ जो में ला तो व्यापे कां म ॥ जो निर म ल तो
 इजा रं म। ताते रहिये मिर तग होइ। ताकी बात न बूझै को
 इ ॥ ६ ॥ नां ड्र ग है त सुष कौं जाइ ॥ ऐसे बैले सह ज स ता
 इ सुष जे वै इ प्र अनंत अपार। ताते स जिये सि स जन हार
 रं म नां म कहिता ली ला वै। त व क ब नै द म हू ल का पा वै ॥ ७ ॥
 पाप पुनिकी आसा नां हि। रं म र ट ए र भै घ ट मां हि। माया
 दिसा रहै जन सोइ। रं म स जन का आनंद होइ। जन हरी
 दा स त व प्र र्श पि छं ए ॥ जब सि टि ग र्द्र क ट व की कां गी ॥ ८ ॥
 ॥ २५ ॥ जु गिये ला धी प्री ति वि चारे। ताते गर डि च डौ रिय मारे
 टे क। इ ह सक ली सि धि सा धी ॥ अब ग ति कौं आ र धी ॥ निर म
 ल जिन ग पं न वि चारं ॥ नि रा कार नि र धारं ॥ अ रं म वा स्व ही
 यारं ॥ तहां पा ती पां च उ तारं ॥ १ ॥ इ ह स हु ज त प कर एं ॥ ताते
 व कं डि न जां म ए म र एं ॥ इ ति मा रि ग अ ए म र एं ॥ दे षि दे षि य
 ग ध र एं ॥ ल्यो ला गा जन जी वै ॥ तहां ता र अ वा रा य वै ॥ इ ह
 सक ल सु ष धारं ॥ उ ल टि आ य कौं मारं ॥ नि ज त त नि ज ग पं न
 वि चारं ॥ व रि यार स इ मिर त धारं ॥ तहां प्र सों प्रां ए ऊ धारं ॥ ३ ॥
 इ ह सक ल दि ट सै यं ॥ उ ल टि अ रं म कौं दे यं ॥ करि अब ग ति स

सीरां मां वरिचकों तीरां गजमनविचिहीरां तहां परसि
निरजनपीरां ॥ ४ ॥ हरीदासजनसोई जाके त्रिविधतापंती
नहोई ॥ पीवके पेर लागे ॥ सदा निरंतरि जागे प्रगडियां
हृगिगनिचढावै ॥ सुखसागरमां हि समावै ॥ ५ ॥ २६ ॥ एणि
राग नैरूं लियंते ॥ नावदेनां वदेना वदे देवा ॥ हरिनां वके
आसि रैतां वकी सेवा ॥ टेक ॥ नां व विप्रामदो नां वकी ब
या ॥ नां व निरवाणै रमजीपाया ॥ १ ॥ नै न लौ न जनदो
नय हरितेरी ॥ वीनतीसां न लो वापजीमिरी ॥ २ ॥ कालि
क्रिया लहूं बहो व विधियाया ॥ डस्य डरि दीन के आसि
रे आया ॥ ३ ॥ सकल संसार का स्वाद सब कूडा ॥ जनहरी
दास का नागं मे नां व हीरूं डा ॥ ४ ॥ १ ॥ नां व देना व देनां व
देराया ॥ नां व देना थं मे नां व सुणि आया ॥ टेक ॥ ग्यान दे ध्या
न दे न जनदो देवा ॥ त्यो क रोराम ज्यो मे क रूं सेवा ॥ १ ॥
प्रेम स्यो प्रीति द्यो न जनदो मां ही ॥ सी स दे स्यो जीति द्यो
पणि मे लि स्युं नां ही ॥ २ ॥ जनहरी दास की वीनतीसां न
लौ स्वां सी ॥ जागते सोइ मां जागि हरिनां सी ॥ ३ ॥ २ ॥ रां म
न जै तो आनंद होइ ॥ हीनां नाथ दया ल दया निधि चि
ताहरण सकल विधि सोइ ॥ टेक ॥ प्रमउदार अपार अ
षडिता ॥ पूरण ब्रह्म न जन करि लोइ ॥ अवसरइ सो व क
रि न ही पावै ॥ हरि विणिक बहूं न लान होइ ॥ १ ॥ आन
द रू प अथिल अमिता सी ॥ करण हार करतार सजां ए
नहां तन धरै तहां ही साथी ॥ प्रेम प्रीति करिता हि पिवां
ए ॥ २ ॥ नाराइण निस्वांण निरखि निता ॥ गरवहरण गो

हरितेरा ॥ जाकचेराताकेसारे ॥ दयलश्रवरकानाही ॥ जित
महमारोमारितिवजो ॥ तीवितचरणमांही ॥ २ ॥ महसाहिव
मेंमुलांजादा ॥ चौटीकटातुमारा ॥ घरजायाकीलाजव
हीजे ॥ अत्रगुणकिताहमारा ॥ ३ ॥ कीजेआसआसंगाके
सा ॥ करेजकेमेंनितोवे ॥ जनहरीदासचरणकेसरणे
मोजमेहरिसुषपावे ॥ ४ ॥ ॥ जागिमनबालकागंनगति
सूता ॥ कालकामुषमेंनिडरहोइसूता ॥ टेका ॥ जोरतजि
जोरतयौरामतजिनाई ॥ जुरासंन्यासहतसीसपरिआई
॥ १ ॥ केसपलदासुतीसेतजहाकांतहो ॥ कालसतमुषिष
डोबियंछूटेकहां ॥ २ ॥ जनहरीदासनावंततजिनीवध
रिलीजे ॥ अवरआरंभकहांकामुझकीजे ॥ ३ ॥ हरि
हीरहरदेवसे ॥ गोविंदगुणांवे ॥ आदिअतिसंगीसदा
तासंमनलावे ॥ टेका ॥ अनलपयिआकासमें ऊंतीनहीआ
वे ॥ आंनदमेंकंचीदसा ॥ अपणांतययावे ॥ १ ॥ जगरिकेस
वाकिसा ॥ काहुंहीएतजोषे ॥ ताहिविसतरदेतहे अप
णावरतराये ॥ २ ॥ लयचोरसीजीवहें ॥ सबकोदेसाई हरि
जनकेसांसाकिसा ॥ मनहरिपदमांही ॥ ३ ॥ रामविसाम्यां
विघंतहै ॥ जेमग्रासेनाई ॥ जनहरीदासगोविंदतजा त
जिआंसगाई ॥ ४ ॥ ए ॥ योंहमबाआजावोहार सुषया
डाडुषअंतअपाराटेका ॥ मातावतापितानहीकोइ ॥ स्वा
रथआइमिल्यपयदेइ ॥ विबुरणइ ॥ एहंमिलएनही ॥
आंगो ॥ तातेमोहिवाजीसीलागे ॥ १ ॥ सासूससरनहीकोसा
रा ॥ सऊसवदीसेमोहपसारा ॥ कामहेतिजलतहैजोई ॥ त
कोऊसगानतेराकोई ॥ २ ॥ मनसा

होडगा

हिमरुगानवसेतिजौड॥ जनहरीदासगोबंदमुण्णा
 ५॥ सकलव्यापीरामसहा५॥ ३॥ १०॥ काहेकोंअनिमानक
 रजे॥ निसदिनआवैघटेतनहीजे॥ टेक॥ सिलावैसिसां
 वणतपकरे॥ सियालैपाणीमेंमै॥ पांचअगनिउन्हाले
 या५॥ फललगतेभीतरकांजा५॥ १॥ तीरथवरतकरैस
 मिना५॥ तंतमंतसीषेमनला५॥ तुलावैसिकंचनदेका
 टि॥ सिहचैविकेबिराणेहाटि॥ २॥ जैसाविरयहेसाफलहे
 ५॥ पापप्रतिप्रतधिफलदो५॥ यऊफलबाडिअंगमफला
 हे॥ सौपंथीनिरनेकैरहे॥ ३॥ जनहरीदासैमंतकाकांम
 निरनेहो५॥ नजेनहीराम॥ आंन५॥ संकटवरतकरे॥ नट
 ज्योनाचिनाचिघटधरे॥ ४॥ १॥ लगहिनस्थानसोइरे॥ कु
 छगानदिष्टेलेजोइरे॥ टेक॥ अबतुचेतिअचेतरे॥ योति
 गानकानेतरै॥ हरिजीकेसुमिरणलागिरे॥ अकलिअंध
 योजागिरे॥ १॥ करंमहीएऊऊजागिरे॥ पांचोउलटातांणि
 रे॥ पेमपयालापीवरे॥ हरिमजिअसैजीवरे॥ २॥ हरिहीरा
 कंभिराधरे॥ सुणिसाधांकीसाधरे॥ जनहरीदासयोजा
 णिरे॥ अंतरिअलयपिडांणिरे॥ ३॥ १२॥ अबगतिआंसक
 हरगतिवाजी॥ निद्राआइघंटाज्योगाजी॥ टेक॥ हेतप्रतिदे
 आंविरकरे॥ निद्रासंगिजीवतहीमरे॥ १॥ घटघटमांहीडा
 कणिवेसे॥ संघरूपकेजीवतडंसे॥ २॥ जनहरीदासनिद्रा
 स्पेनेह॥ अंतिकालिमोंहपडिसीषेह॥ ३॥ १३॥ हरिजनज
 गतिविचारैजागे॥ डरेनसोवैसांपणिलगे॥ टेक॥ लोचनती
 नितरलतनिधारे॥ घटदरसांदांठांलिमारै॥ १॥ सांसोम
 थकेलायांआवै॥ सकलप्रवंनलैताल्लोवै॥ २॥ सुरनरअ

सुरअंधारेलाधा॥ चिंतासापणचुणचुणियाधा॥ ३॥ कां
 मक्रोधडसंणिधरिचोषे॥ तालचउदतहातराये॥ ४॥ ज
 नहरीदासरामनजिनाई॥ तसापणिकेसंगिनजाई॥ ५॥
 ॥ १॥ हरिनजिहरिनजिहरिनजिनया॥ हरिबाणजन
 मअविरथागया॥ टेक॥ साचपिबाणिअनतजिअनरथ
 जंमजागतहेजागिरे॥ आदिअंतिहरिसदासनेही॥ तत्त
 केसुमिरणिलामिरे॥ १॥ इदीपांचराधिरसोके॥ गणेशी
 बिंदकागाइरे॥ दीनदयालदेवकरणांमे हरिसकलभवं
 णपतिरायरे॥ २॥ जनहरीदासहरिप्रमसनेही॥ पांननि
 जरिनरिदेशिरे॥ सुनिमदलमेसकलखियापी॥ हरिपूर
 णब्रह्मअलेषरे॥ ३॥ १५॥ रामसुमरिनरहरिनजो॥ कांम
 क्रोधविषयाविषतजो॥ टेक॥ तजिअतिमानतनौक्यून
 संत॥ नवसागरतिरणनावसगधंत॥ १॥ काटोकोनकाल
 काजाला॥ सुमरिसुमरिगोबिंदगोपाल॥ जैसेअगतिकाएमे
 रेहो॥ काटीकेटेनकावेदहे॥ २॥ जनहरीदासअबअसीत
 ई॥ नजतांरंमविद्यासवगई॥ ३॥ १६॥ नेडाब्बाडिहरिक
 हाजांअं॥ पेडाअगमसुगंमसाधासो॥ गोकलनग्रविसंनर
 नांके॥ टेका॥ सेवगजहांतहांही॥ स्वामी॥ सबदविचारिबस्य
 निजवोड॥ चोंधीअंधिचपलमतिखटी॥ चितवततासमि
 टीसबदोड॥ १॥ कयाकुंनप्राणजलपूरिक॥ घटिघा
 टअलयलुकाया॥ अबगतिअगंमनिरंतरिन्यारा॥ जं
 दरपणमेबाया॥ २॥ साचपिबाणियरसिप्रवरण॥ वार
 पारकुबनोह
 हासबमोही॥ ३॥ १७॥

मन्त्रसन्धीसागी निधिबेडीपणियापणकृतौ उलटिअ
गंमनहीथाघाटेक। प्यासवहोतअंतरमेंलागी। रोगी
कहेनजवे। कुपबिपडौओषदिनहीनेडी। सरणनं
दीजलपीवे। १०। कौडीविणजिभुसीद्वैवेको। नेडोसाचन
लीयो। हरिहारेघरमांहीनूलो। करजवहोतसिरकीयो।
१। चंदनवासविकटक रिदीवी। सीधजडीमनिसांनी।
जनहरीदासतेजसकेघरे। महाप्रियवडगंती। ३।
१०। चोकादेवेचितहोहावे। रसनांकेरसिलूधा। लागवे
टमरंममायाकी। अरथतत्रावेसूधा। टेक। यासीपसूत्रा
पणीतांणी। मोटीमीचनजोवे। होत्योंअधिअरथकीफूठी
नेणवेणकरिधोवे। १। कौईउलटैये। लियरमपदपसेपे।
डेचल्योवजीवे। ताकीकहांकुसलताकहिये। सरणनं
दीजलपीवे। २। जाकोकहंसमीकोमारे। मायाकेमदिसां
ता। जनहरीदासतिनकीगतिजांणी। दीसेजंसयुरिजांता
३। १। कहेणीसरसनिरसनररहणी। मायामतो नजाई
कबिवांणीसांहीमेवासे। हरिसोंकरेवगाई। टेक। हीसे
कौमलबिलकौचागां। सांहीसूलसवादी। साधनहीको
ईउपरधी। बीकातीदबिलाई। १। कालिसांतस्योसजन
कवकरिये। कवहंनिरमलनांही। यतरीबंधकसणीके
संघेहे। यडेहोतासनमांही। २। मोतीनहीनीवसोघारे।
जापेरंमरसांइणताही। जनहरीदासअसाअपरधी। वू
डिरहापीसांही। ३। २०। कहेणीहंसकागकीरहणी। कु
बधिकोंकरेकविधरे। एकचिणगारयडेदावानल। केतेव
नबलिस्वककरे। टेक। चापातिलकसोंजसंगिलयो। सांम

हं बौजोर करे ॥ सुणि सुणि वेद वाद को तोडे ॥ कीं को तो पू
 जि सी खरे ॥ १ ॥ को ही डारि सा हि रे ही रो ॥ करं म ही ण ॥ कां ड
 अ स त न बो लि ॥ का व ल बा डि रां म न जि के व ल ॥ कं व न
 स्यो कां करे न तो लि ॥ २ ॥ करण हा र कर तार स मे ल्यो ॥ वा
 ऊ र क रि क रि धा पि यो ध्या प ॥ जन हरी दा स हरि सी चो ॥
 री करे ॥ को ई पू र व त णो प कुं तो पा य ॥ ३ ॥ २ ॥ ना गि म न
 मो ह त जि न ज न हरि की जे ॥ बा डि वि ष ध्यां न ध रि रां म र
 स र्प जि ॥ टे क ॥ काल वां सं ब द हे नुरा नै ही से ॥ रां म र्पे वि मृ ष
 न र जं म कं ण घ र ट ज्यो पी से ॥ १ ॥ कां म त जि क्रो ध त जि लो र
 त जि मा या ॥ फे रि म न अ ल व न जि जी ति ग ह का या ॥ २ ॥ जन
 हरी दा स सा चै म ते जा ति न ही हा रे ॥ सो रं च क चू रि क रि
 काल नै सो रे ॥ ३ ॥ ३ ॥ पद ॥ २ ॥ रागा ॥ मना ॥ १ ॥ आ धा नी
 व द्य मा गी या ॥ स के कु व न ही ॥ नि सि दि नि बा घ णि या त हे
 फू ल्या म न मां ही ॥ टे क ॥ रो म रो म र मि र ही ॥ स्व धिं म के पी
 वे ॥ सा प णि स र व स ले त हे ॥ ता दे ध्यां जी वे ॥ १ ॥ रां म र गां सो
 पर ह स्या ॥ कु व न नुर की डारी ॥ डा क णि ड सि ड मि या त हे ॥ श्री
 ती रे यारी ॥ २ ॥ जन हरी दा स क हि ये क हां ॥ कु व न क ह त न
 आ वे ॥ वि ष की डा वि ष ही षु सी ॥ इ मि र त न ही तां वे ॥ ३ ॥
 हरि जन बा घ णि दे वि ड रे ॥ सि वा करे प्रा ण त न सो ठो ॥ स्व धि
 म अ ग नि च रो ॥ टे क ॥ अ व ल क हे प णि स व ला या वे ॥ ना णे
 को ई नां ही ॥ न य स य सू धा मू ल उ पा दे ॥ सी वी दे हे मां ही ॥
 त्रि या क हे प णि त्व र त या से ॥ स्व धिं म बी र च ला वे ॥ का ची
 को ट चो ट स्यो तो डे ॥ पह ली चो ट सि कां वे ॥ २ ॥ जन हरी दा

सज्यां ह हरि रसपीया ॥ तिमतिवाला माता ॥ तिनके बाघ-
णिकटिन आवे ॥ प्रमते न रंगिरात्ता ॥ ३ ॥ २ ॥ रंमसंनेह
साधांवा ॥ तिज निरषत जीवै ॥ अगंमपया लाये सका ॥ अ-
नहदरसपीवै ॥ टेक ॥ असबौ लिअैसी बहै ॥ गणदेह बिसा
री ॥ सेवगचंद्रचकौरज्यो ॥ निज सरति नटारे ॥ १ ॥ रंमसरी
याके रहै ॥ विअंमन मेहै ॥ मगनहं वा हरि रसपीया ॥
ल्योला गाये लै ॥ २ ॥ मनउनमनिला गारहै ॥ चरणं चित रांये
जनहरी दास सोई जनतला ॥ कु छ आंनन नाये ॥ ३ ॥ ३ ॥
संसदनी रमां छली विरोले ॥ सुधिं मसी रंगीवै ॥ पेली कथा
प्रमपद सुणता ॥ मन मीडकान जीवै ॥ टेक ॥ जबही सुणै
तबे डषयावै ॥ सुषते स्वादिषुकारे ॥ सायाको बाया मै वैठै
उला अरथ विचारे ॥ १ ॥ निरनेक है रहे मै मांही ॥ सरति सु
पहनही जागी ॥ नां व निरूपनिकटिन ही न्यारा ॥ करमना
लिकंठिला गी ॥ २ ॥ अंतरिने ततहां हरिने रा ॥ वैनिज आं
षिउजाणी ॥ जनहरी दासतांका संगपर हरि ॥ लेबूडे वि
णियाणी ॥ ३ ॥ ४ ॥ गुरुका सबद साचकरिय कडे ॥ नैकाम
स्या जागैरै ॥ तिनका चितसाधांका चरणं ॥ दिनदिनिह
णां लीगैरै ॥ टेक ॥ मजनने दलीयाते जीया ॥ नौगरी गदें ला
गारे ॥ आंगेनी केई नौगी बूडा ॥ तातें सुयदेवना गारे ॥ १ ॥ नि
रमलनही तके निति बूडा ॥ ताका धोटा हेरै ॥ अवरसक
लनवसागरे बूडा ॥ नां मां बीयातेरै ॥ २ ॥ दासक वीरसक
लज्जमपरगट ॥ पीये प्रचायायारे ॥ नौसागरको नैरा बोधां
नगतां नैदवतायारे ॥ ३ ॥ जनहरी दासनी चकुलिनुंवा ॥

ताकोंतीनिलोकसबजाणैरे॥जनहरीदासवेनिरभैदेयां
 तातैउलतीताणैरे॥४॥ ५॥ घटिघटिगोपीघटिघटिकांनह
 आंतदंसकलघटिरंसटेक॥घटिघटिनारदघटिघटिसे
 सोघटिघटिब्रह्माविष्णुमहेस॥घटिघटिधूदेयैधरिध्यां
 ना॥घटिघटिनीवसरथननमांजा॥१॥घटिघटिममिता
 घटिघटिमौह॥घटिघटिकंचनघटिघटिलोह॥घटिघ
 टिआवेघटिघटिजाइ॥घटिघटियेलेघटिघटियाइ २॥
 घटिघटिरांवाणलंकडवार॥घटिघटिकैरुंसेनिद्याप
 रा॥सूतागोरछलीयाजगाय॥जनहरीदासताकीबलि
 जाइ॥३॥घामैरेमनकीचौरियां॥मैजाणैरेताईसुयिस
 होयघरसैचले॥विसहरहोययाईटेक॥विषियाकेव
 निमंतबसे॥सोकैसैजीवे॥कामघटागरजैसहा॥नानार
 सपीवै॥१॥बकूछाजायलेसुसी॥बकूसुनिहारे॥रमनां
 कैरसिउतरे॥जाणैत्योमारे॥२॥अवणांसुयलेनांदकाघ
 मलसुयनासा॥कुवाधकखालीकांसनां॥तहायैलेपाया
 ॥३॥जनहरीदासविषयातजे॥गोविंदगुणगांवे॥जांजे
 वैसैगानके॥तबहसुययावै॥४॥७॥जोलागीतोजागिरे
 सूतौकूंहारे॥सतगुरकेसरिवेधिया॥कहिक्वैंनपुकारे
 टेका॥सबदतीरतातावर॥लागीतौमारे॥कोइरामधेरेक
 को॥तनिचौटसहारे॥१॥अनिअंतरिनलकारह्या॥सत
 गुरुकालाया॥नयसयलौंसांलेनही॥तोयालीबाह्या
 ॥३॥करंमकहीकाठीजइ॥मंमिताकेधोगे॥जनहरी
 दासजताजीवके॥तनिचौटनलारे॥३॥८॥जबलामन

सज्यांह हरिरसपीया ॥ तिमतिवाला माता ॥ तिनके बाघ
णिनिकटिन आवे ॥ प्रमतेजरंगिरात्ता ॥ ३ ॥ २ ॥ रामसंने
साधांवा ॥ तिज निरसत जीवै ॥ अगंमयया लाये मका ॥
नहदरसपीवै ॥ टेक ॥ अहबौ लिअैसी बहे ॥ गुणदेह बिस
री ॥ सेषगचंदचकौरज्यो ॥ निजसरतिनटारे ॥ १ ॥ रामसर
याके रहै ॥ विआंमन मेहे ॥ मगनहुं वाहरिरसपीया ॥
त्योला गायेलै ॥ २ ॥ मनउनमनिला गारेहे ॥ चरणं चितरो
जनहरीदाससौई जननला ॥ कु छत्रानननाये ॥ ३ ॥ ३ ॥
संसदनीरमांछला विरोले ॥ स्वयंमसीरंगीवै ॥ पेलीकया
प्रमपदसुएता ॥ मनमीडकानजीवै ॥ टेक ॥ जबहीसुणो
तबेडययावै ॥ सुयतेस्वादिपुकारे ॥ सायाकेबाया मैवैवै
उलाअरथविचारे ॥ १ ॥ निरसैकहेरहे नैमांही ॥ सरतिम
पहनहीजागी ॥ नां वनिरूपनिकटिनहीन्यारा ॥ करमना
लिकंठिलागो ॥ २ ॥ अंतरिनेततहां हरिनेरा ॥ वैनिनआं
षिउकांणी ॥ जनहरीदासतांका संगपरहरि ॥ लेबूडेवि
णियांणी ॥ ३ ॥ ४ ॥ गुरुकासबदसाचकरियकडे ॥ नैकाम
स्याजागैरे ॥ तिनकाचितसाधांकाचरणं ॥ दिनदिनिह
णांलागैरे ॥ टेक ॥ मजननेवलीयातेजीया ॥ नौगरोगकेला
गारे ॥ अगोनीकेईनौगीबूडा ॥ तातैसुयदेवतागारे ॥ १ ॥
रमलनहीतकेनितिबूडा ॥ ताकावीटाहेरुरे ॥ अब
तनवसागरेबूडा ॥ नांमांघीयातेरुरे ॥ २ ॥ दासकवीरस
लज्जगपरगट ॥ पीयेप्रचायायारे ॥ नौसागरकौनेराबो
नगतांनेदबतायारे ॥ ३ ॥ जनहरीदासनीचकुलिअंवा ॥

॥कोंतीतिलोक सबजाणैरे॥ जनहरीदासवेनिरभेदेयां
 नातेउलटीताणैरे॥४॥ ५॥ घटिघटिगोपीघटिघटिकान्ह
 आतदसकलघटिरंम टेक॥ घटिघटिनारदघटिघटिसं
 सोघटिघटिब्रह्माविष्णुमहेसा॥ घटिघटिधूदेधेधरिध्यां
 ना॥ घटिघटिनीवनरथननमाना॥१॥ घटिघटिसंमिता
 घटिघटिमौह॥ घटिघटिकवनघटिघटिलोह॥ घटिघ
 टिआवेघटिघटिजाइ॥ घटिघटियेलेघटिघटियाइ २॥
 घटिघटिरंवेणदंकडवार॥ घटिघटिकैरुंसेनिद्यापा
 र॥ सूतागोरश्लियाजगाया॥ जनहरीदासताकीबलि
 जाइ२॥ धामैरेमनकीचिरियां॥ भिजाणैरेताइ॥ स्वयंस
 होयघरहेवले॥ विसहरहोययाइ३॥ टेक॥ विधियांकेव
 निमंतवसे॥ सोकैसेजीवै॥ कामघटागरजेसदा॥ नानार
 सपीवै॥१॥ बडबजांयेलेषुसी॥ बडरूपनिहारे॥ रसनां
 कैरसिउतरे॥ जाणैह्योमांरे॥२॥ अघणांसुयलेनांदका॥ अ
 मलसुयनासा॥ कुबधिकलालीकांसनां॥ तहांयेलेपासा
 ॥३॥ जनहरीदासविषयातजे॥ गोविंदगुणगावै॥ बाजे
 ॥ त्रैसेपांनके॥ तबहुसुययावै॥४॥ ७॥ जोलागीतोजागिरे
 ततोकांहोरे॥ सतगुरकेसरिबेधिया॥ कहिकेोंनपुकारे
 टेका॥ सबदतीरतातावर॥ लागीतौमांरे॥ कोडांमधेरेक
 की॥ तनिचौठसहारे॥१॥ अतिअंतरिनलकारह्या॥ सत
 गुरुकालाया॥ नयसयलेंसालेनही॥ तोयालीबाह्या॥
 ॥३॥ करेसकहीकाठीजडी॥ संमिताकेधोगे॥ जनहरी
 दासजताजीधके॥ तनिचौठनलारे॥३॥ ८॥ जबलगामन

वाहरिकिरे। मायाकीकाया। तबलगततदरसेनही। सति
साचनपाया। टेक। बातकहैरुचिअंगमकी। बेलोंम
मांही। उलटीसंविपतालको। सूकेकबनाही। १॥ अय
मारगकीआपदा। घुलगांविनघोले। लोगलाजिलाल
चिपड्यो। निरययहोय। बीले। २॥ जनहरीदासआसामु
था। जीयाअणजायां। हरिसुषसागरप्रहस्या। मायाम।
दपीया। ३॥ ७॥ रूपैरेषघणोंनहीथोडै। धरणिगिगनि
फुनिनाही। अकलसकलसंगरहै। निरतरि। ज्योबंद
जलमांही। टेक। आसअथाहथाहनही। कोर्। याहन
कोर्। यावैरे। जेसासजनतिसासबकोर्। मनउनमानि
बतावे। १॥ सागरमेंकूंकूंतमांही। जलहै। निरकारवि
जअेसारे। सकललोकअेसैहरिमांही। वाकारूपकहो
धोकैसारे। २॥ अचलअघटसबसुषकीसागर। घटधर
सबवामांही। जनहरीदासअग्निनासीअेसा। कहेति
साहरिनांही। ३॥ १०॥ मीठालागैरंगमजी। पूजासबधारा।
प्रथिनिरंतरियेलिये। संमज्यासोसार। टेक। पबिसदसाम
नफिरिचल्या। पूर्वदिसिआया। सहजिसदाऊइहोतहै
मनमनहासमाया। १॥ सुनिसुधारसपीजिये। पतिप्राण
अधर। किलिमिलिकिलिमिलिहोतहै। बरियाबकूधार
२॥ गंगचलीफिरिगिगनिको। गिखरगतवाया। जनह
रीदासआनंदनया। तनेतातपाया। ३॥ ११॥ जितिजिनि
जितिहरिनांयगहो। उलटाबेलिचल्यासुषसागरे। इ
परगीगातिअदरिगहो। टेक। धरिविसवासकरमक

स्यो॥ तजिसंसारधारते
॥१॥ सरतिसंबाहि

प्रमनिधिप्रसे। एकैत्योलेलागिरहो॥ सहजिसमाधिग
वणवेगंमप्रशिकालंगपुरडवहरिदहो॥ २॥ यवगुंम
नचरणतलिचूस्या॥ गरिचंत्ररिनिजिनां वधस्यो॥ जन
हरीदाससुखसागरियेवा॥ अघअजरायलचंसकिडस्यो॥
॥३॥ १२॥ अलघतिरंजननिरगुणां॥ मिरामनमांही॥ ज्ज्वा
सुखसंसारका॥ योटाकुबनांही॥ टेका॥ जीवजीवकेआ
सिरे॥ आसाधरिआवे॥ अंतियासपूजेनहा॥ पाछेपछिता
वे॥ १॥ प्राणनाथपतिबाडिकरि॥ मायाजलिज्जले॥ अंतिया
कलबाडेनही॥ काहेकोफूले॥ २॥ जनहरीदासत्रेसीक
या॥ जाणेसोजीवो॥ स्तनिमंडलमेपैसिकरि॥ निरत्नेरसयी
वे॥ ३॥ १३॥ तबलगकहासुणंकुबनांही॥ जीवतलफि
अघजरतारे॥ तंनपतिकीगतिकवहूनजानी॥ लोगकहे
पतिबरतारे॥ टेका॥ रांमरसांद्रणबृंहनयीया॥ सांसेसूलन
चकीरो॥ अरसपरसहोयसेजनबेली॥ तबलगसुपनेंस्
तारे॥ १॥ मनमेंयीवअपणोंकरिबेवी॥ सकतिसहागत
दीयारे॥ तिनतैंअजकुंपरमयवअलगो॥ अचैपेमनपी
यारे॥ २॥ त्रिविधितापतजिनिरप्रियमपद॥ उलटितहां
हीरहियेरे॥ जनहरीदासतबलगसबळ्णी॥ कहीकंवन
स्योकहियेरे॥ ३॥ १४॥ रागरुज्जरी॥ सखीरीअबपीवकेमं
निभाई॥ उडिगडिजायपतंगरंगवपडो॥ हरिरंमचढो न
जाडीटेका॥ १॥ तकरि
सागरई॥ सौकणिसकलघेरती

1 रूपदरममोयै कृष्णनाही तर्निमिणागरनव
सोसाइदंरुतिदिनिव्यायं यीवक्यांआपादीया २ ज
दशदाससासासवनागा तवयीवत्रचरेलाई बाह्य
कदिहरिअतरलांगय जंमकीमिटीइहाई
अमेंरंमरायनाणीला पांचोनलटाताणीला टक
अवघटघाटीपाईला हरिभजिअमेंजोईला २ त्रिक
ठीकायद धोईला तवंगुफामेंसोईला २ जोतिसरूपी
जाईला हरिभजिहरिसाहीईला ३ दीनदयालपिबाणी
ला जनहरिदासतेघाणीला
रामसंनेहीजीवणमेंरी तरेचरणकंवतपरिवारीफेरी
टेक हरिजनकेसदरिहरिआवो भेंव्याकलतुसदरसा
दिधावो १ वेदानविरहविधातनमाही घटदावीलिमि
लोव्यानाही २ जनहरिदासको आसतुम्हारी बिलस
कदापतिदेवमरागरी तहबिणिमिद
तननाणीयार धनकधारनांधासंगिमेंरे भेनासीबलबीर
टेक भेराकरममूलकालाह तकापरीतानमीर वेदी
कठिनकहाव्याजीव कलमरजादजजीर १ आरमण
बहीतमजननहीकीया मनकामताअधीर तवजलव
पारकृष्णनाही क्योकरिपकडौतीर २ हेहरिअकल
तविसव्यापी मकांचकरवैनीर जनहरिदासचरण
चरो मरणराधिरुघबीर ३ १ तहहरिवसोमदिर
जनलिसदिजिऊरतनीऊर प्राणवीवबिणिजाय हे
आत्माअस्यानिआतर विरहविसदरयाइ मन
आकृतकवमितोरी सकलव्यापीराइ १ हरिमाघ

हं॥ आनं पंथ न सुहाय्य पीड पीड डय हरिकीजे ॥

रसदिवाश ॥ २ ॥ तमृ जाणते ही क हों का सं ॥ कहत न

आवे का श्री जनहरी दास कों दी दार ही जे ॥ प्रेम प्रीति वषा ॥

॥ २ ॥ न जिम नरं म स जी व नि सूरि ॥ प्रेम प्रीति अंतरि लो ला

॥ हरि सकल र हे न र पुरि ॥ टे क ॥ नृ ग स्यो प्रीति क हों लो की

जे ॥ सकल काल की चौटा ॥ उलटो बेलि अनल का सुत न्यो ॥ य

॥ डि रं मं की दौटा ॥ १ ॥ हे हरि अकल सकल विस व्यापी ॥ न्या

॥ व सो हू क हू रि ॥ जनहरी दास निजरूप न जाणे ॥ ताप स

॥ न्म वि धू रि ॥ २ ॥ ॥ अ ब हं म रं म न जन सुष या या ॥ काम

॥ कें वा ही ज डी ज त न स्यो ॥ मो ह मं ता मुर जा या ॥ टे क ॥ वि ग स

॥ त कं क ल स व द स ति सु णि ये ॥ सू नि मं ड ल में सा रा ॥ व र से ध र

॥ णि गि र नि र स नी जे ॥ स दा अं वं डित धारा ॥ १ ॥ चं द सूर ये के र

॥ थि वे ता ॥ पं वं त वि रो लै बा शी ॥ गं ग ज म न म धि ही रा द र से ॥ सु ॥

॥ य म नि स ह जि य मं डी ॥ २ ॥ स्यो घ रि स क ति स क ति स्यो मे ला ॥ त

॥ र म ग या न व प्रा गा ॥ गि ग नि मं ड ल में व से उ ज्या ग रा ॥ चं च आ रं

॥ न ला गा ॥ ३ ॥ नि रा का र नि र ले प नि रं त रि ॥ म ह लि मि ले व न

॥ मा ही ॥ सु ष मे सी र अ विल अ नि ना सी ॥ प्र म जी ति स्यो ता ली

॥ ४ ॥ घ टि घ टि अ घ ट अ ग हि अ ति ना सी ॥ वं क ना लि र स यी या ॥

॥ यो नो थ कि त ह क्यार स ये लै ॥ आ नं द अ र थि स मा या ॥ ५ ॥ न व

॥ गु ण घं टा ग र क गु ण ती न्यो ॥ रां म र तं न ध न ने रा ॥ तू रं मे ह य ह म

॥ रू ति प लं टे ॥ सु ष मे स ह जि व से रा ॥ ६ ॥ हे हरि अकल सकल

॥ सो ना ॥ जा गि ल हे सो जी वै ॥ जनहरी दास तां तै रा व लिया

॥ अ गं म य या ला र्पा वै ॥ ७ ॥ ४ ॥ ज व म न मे तै मो ह चु का वै ॥ ७ ॥ न

गमिहीयावताशे॥ आनंदरूपअखिलअभिनासी॥ स
हजं सुरतिसमांणी॥ जनहरीदीसनिधिसिजरिभरि॥
घटिघटिअघटबिनांणी॥ ३॥ ४॥ अबलापीवबिणि
नांकेयरहे॥ निसदिनतलफितलफिजीवजाइ॥ टेका॥
स्वांतिबूंदसहजांपीवे॥ नापीवेनाडारोनीरा॥ विरहअ
गनितनजारीयो॥ जिह्ंवापेसोजांणीपीरा॥ येसप
यालाचितेचढ्या॥ अबपीवहोमोहिमपिलार्योरोमिरो ये
मिहरिरसपीया॥ तनबिबरेतोपेसनजाइ॥ २॥ पतिवरता
बिनचारणी॥ दोऊअनंतनवेमेंएकेसाथि॥ फटकम
णितबलगनली॥ जबलाहीरानआवेहाथि॥ ३॥ अनं
तपुरीआगेवसी॥ रामभजनबिणिबलेहैवगाय॥ उतिम
पुरीआविरभयो॥ अबपीयापेसमगानरसयाइ॥ ४॥ या
रेहोअधिकदरदकास्योकहैं॥ व्यापठहैमेरामनमांदि
जनहरीदासतनमनसज्या॥ अबपीयाहसिबोलेक्यो
नांहि॥ ५॥ ५॥ मनतनजाइलोरे॥ सुधिरहियेकोणअ
धारि॥ अजरजिहाजनांवहरितेरो॥ बेलीबांहपयारि
अबतजिभरंमसरंमगाहिहरितजि॥ साचतहांसुय
यायादेका॥ अबैकलणिकल्योअपराधी॥ अकलसु
रियकेसैगायहोरे॥ सकलतवणपतिराइसकलसु
या॥ अगमअपारबिचारप्रमतताहरितजिलीजेप्रेम
बधायहोरे॥ १॥ समकिसमजिनिजततनिजसनधरि
अरधंतरधतजिनजिनिसबासुरि॥ अत्रिपणोनिजा
ततनेमबिचारि॥ जनहरीराससासधिरगहरिबिणि
कोडीसदेनहारि॥ २॥ ६॥ १५२॥ रागबसंतानिया

वे

लहसजो निरजनजनमजाय कुं एनीदसूतेअघाय
 टेक कालबाणगदितकततौहि जीवलागिरेहस
 वमदनमोहि रामजनविनिकोणवात जहांतहां
 जसंकरतघात ॥ १ ॥ रातिदिसतनहोतबीन जेसैवो
 छेपाणीमगनमीन कालकीरनितिषरचयाइ ॥ १ ॥
 मसंमदतहांकोनजाइ ॥ २ ॥ प्राणनाथस्पृशीतिधारि
 गुरग्यांनसबदहिरदेविचारि हरिअगाधनजितजि
 अंजाल जनहरीदासतहांकायानकाल ॥ ३ ॥ १ ॥ मन
 मतिवालाराधितौर ॥ पलकपलकहरिनिकटिबौर
 टेक इतवतचितकगईविहाइ ॥ हरिहजरिमन
 तहांलाय ॥ प्रेमप्रतिकारदेहबंध ॥ ज्योउलटिनयेलेम
 नअंकंध ॥ १ ॥ नासिकंवलनिजसुरतिलाइ ॥ तहांब
 सतहैरंमराइ ॥ हरिसकलवियापीप्रमदेव ॥ नाकुंब
 होतसातिवतहांसेव ॥ २ ॥ जागिजागिरेजागिजाचि
 आंगमअंगमलहाराचि ॥ जनहरीदासहरिसकलसा
 च ॥ हरिनिकटिनिकटिमनविकटबाच ॥ ३ ॥ २ ॥ मति
 वालीमालणिनांहिदूरि ॥ हरिप्रमसंनेहीहैहजरि ॥
 टेक अरधउरधमधिकंवलमूल ॥ आत्मनिजफूले
 बहसफूल ॥ अजबबासकबुकहीनूजाय ॥ तहांमनसा
 मालणिरहीलुजाय ॥ १ ॥ रिबसिसमेलापंछिमधूरि ॥
 तहांनदीनवासेवहैयूरि ॥ भरिभरिपीवैअवारसार
 तहांबसुधाभीजेअंधंधधार ॥ २ ॥ सकलवियापीसह
 जजाय ॥ मथुरायतिमहलांबसैहैआइ ॥ जनहरीदा
 सतहांचरणलागि ॥ जहांगोपिवातणीरमेफागि ॥ ३ ॥

त

तहांचलोसयी जहां रां प्रणय रंमनां म विणिर होन
जाय देक यक आलसकहाला गो तोहि बातस
यी आहकहौ मोहि जनम श्रमो लिक च ल्यो जात
ना कंतर वरिलगो फिरित् टियात १ एक सहर मे
बिबिधिराज हसती पाइक हे म बाज काल बाण
ले फिरत मोहि तहां व स्यां कृ ब वै न नां हि २ प्रम
उदार आं नंद अ ठेह सुत तात मात जी वे न देह जन
हरी दास मन तहां लीन संमद्य बिबे हे म रे मी न ३ ९
तुम्ह च लो सयी करि व संतराग जि स ख नि व नि मो
ह तरं म त फाग देक यां व सयी सब सौं ज हा थि मि लि
पेल न चाली पी व सा थि तु म अ गा ध मे न क्यो जी व
रू ति व सं तरं ग र मों ह यी व १ ज्यो च क र्द म नि र है
उदा स अ से आ त्स फु ली ले सु बा स प क प बा स मे
र ही लु सा द अ से वा ग ब स्यो पी व र म क अ द २ जन
हरी दा स मे नि अं ति उ मंग अ से ला गा पे म रंग पे म
प या ला घ ट त नां हि हरि अ गा ध जन पी व त जां हि ३
जि नि हं म पे गे र बु डो वौ अब ह म स्यो अ से म न रा ये
अं तरि जी ति ज गा वौ देक त न स्यो त न म न स्यो म न
मे ला अं तरि अं तरि मे ला अ व र स क ल सु ष वि ष म
रि ला गै त तु म्हा ला ग त ही से ला १ नै त न मे नै न वै न
बे न न मे सं म कि सं म कि सु ष दी जे तु म्हा वि नि यो ष
चा त्रि ग की नां ही त ल फि त ल फि त न बी जे २ तु म्हा

भरविनिधिनरैयेयासुविअठकिअलटिनहीआव
१॥ जूंदरिसुतअनलगिनिकोंअलेटे॥ ग्यांनप्रकास
पेतापषजोवे॥ योंफिरिजीवसीवसंगिषेले॥ जनमज
नमकाकलिविषधोवे॥ २॥ सलितागोडिकरेतवसा
१॥ संमदिसंमाइसंमदिसंमहोवे॥ जनहरीदासयो
अरसपरसमिति॥ हरिजनहरिमैंप्राणसंमोवे॥ ३॥
साजिनिवाजिप्रमपदआपे॥ संमदयालअमरकरिष
ये॥ टेक॥ करताकरणसदासंगिजाके॥ चितवंगिक
कहांधोंताके॥ १॥ करंमऊगरविधाहरिकाये॥ जनह
रीदासनरहरिनरजाये॥ २॥ ७॥ ६॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥
३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥
अतो॥ जगजागिनजोयारे॥ नरदेहीहरिनांनजा॥ योंही
तनधीयारे॥ टेक॥ स्वारथकासबकोसगा॥ बादलकी
बांहीरे॥ सुपनेकासुषबाडिदे॥ जोगेक्योंनांहीरे॥ १॥
ऊगसुषसंसारका॥ साचाकरिलीयारे॥ मोहनदीमेंब
हिगया॥ मायामदपीयारे॥ २॥ मरिषकोसंमऊईये॥
वगुणकरिबूकेरे॥ आपाकीआंटीपडी॥ सतिसाच
सूकेरे॥ ३॥ प्रमसंनैहरंमजी॥ साचासुषदाईरे॥
हरीदासगोबंदतजो॥ नरमोमतिनाईरे॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥
हीरजनमनहारीरे॥ बारबारतोसूंकहो॥ तयोही
नबिचारीरे॥ टेक॥ जागिजागिसोवैकहां॥ हरिसा
णसाहीरे॥ अतिआसपूजेनही॥ त्कालरिबीजन
हीरे॥ १॥ नुषनताजेनैतजे॥ जमकीमितेनत्रास
रोयेआपकी॥ अधआपनेपास॥ २॥ जोजापातोसे

जोसूताजोजागि॥जनमअमोलिकजातहै॥तंत्र
आरेभिलागि॥अःस्वरनरघरपावेनही॥पंडितलहै
जाण॥जहांआपोतहोआतरो॥अजरावरकीआण
॥धारांमजननसुषुपहरे॥मायातहोमनजाय॥जाघ
दिसुबधिनसेचरो॥मोहरयालयटाय॥५॥तातमातव
धूसया॥सुतबनितासुषुलो॥५॥सबकोस्वारथकासा
घटबूटांसगानको॥५॥५॥मसनेहीरामहै॥अवरसगा
दिनिचारि॥जनहरीदासदुजातज्या॥तजिलीआरामसं
नारि॥१॥शबेलीलौततबेलीलौ॥काठीबेलिबधेली॥
लौ॥देक॥अंदस्वरदोऊसभिकरि॥राग्या॥सासएबदसंग
तायालौ॥गंगासुलतहंसरउलेते॥बेलितकोरसयाया
गो॥शनिजनिरसंधअगहिअनिअंतरि॥बरणबिब
रजितबाणीलौ॥इलापिंगलासुठमनिमेली॥तासुयिबे
लिसमाणीलौ॥शतरवरअंगमअणीतहोलागी॥बेलि
कीयाबिसतारलौ॥काठीबेलिअसरफललागा॥बि
णिकाठीफलघारलौ॥३॥बासविकठकौईयांननम
है॥मिरघबसेतासाहीलौ॥याइकयांचपहरकाराखा
॥३॥सुलमंतामेंआयालौ॥जनहरीदासआत्सकेअ
रि॥सतगुरिसाचवतायालौ॥५॥३॥जीवइजन्म
रायोरे॥सौवत्सौवतसोइगयो॥तनीदनधायोर
का॥जनमअमोलिकजातहै॥द्विअयारसमाहारे
॥लौपास्यो॥जुरा॥जागेकौनाहारे॥५

शुभ्या अपण करि लीयारे इतमै तेरा को नही तूले वि
पीयारे २॥ सुतां सरब सजात है जाणे सो जोगे ॥ ज
हरीदास आबे मते हरि स्थो मन लागे ॥ ३॥ धरेणि
दि दिन जाय सघामें क्या करूं हरि विनिक बुनसुह
प्रबिबो है मैं डरो टेक जल विणिमीन कही कौजी
जे जाके जीवणि पाणी ॥ २॥ सेहम हरि विणि प्रयाय
तल फतरै विहाणी ॥ २॥ पीवपीव करत विरहत न
जास्यो चात्रि गघण कोटे ॥ २॥ यो मम प्राण छित हरि
बम विणि मन सामरिग है ॥ २॥ जनके संवणि गं व
ए हरिकीजे बिलम कहा लम आवो ॥ २॥ मता राम स
कल बिस आपी हो हरि दरस दिखावो ॥ ३॥ या हव
डविथाराम नल जाणे विरह बसे तन मांही जनह
रीदास हरि महलिय धारो के अब जीवणि नांही ॥ ध
प सेऊ सनेही आव आवो ही देवनर हरी ॥ विकल
नई मन मांही कौं ही पीव प्रहरी ॥ टेक सुरति संबा
हि मांघ निति है रो चित चेत ॥
तल फित न जाइ सुरकी मैय
सनिज अंत वि बल चो
पंथ है रो ह ए प्रव
णि विरह हा करी ॥ ३
डारि गयो का मोहि

ना आगेरे ॥ १ ॥ प्रमसेनेही पीतमां ॥ प्रांननेतेपाररे ॥
महलियधारेमाधवे ॥ सारासविसाररे ॥ २ ॥ विरहनि
करसरेकहा ॥ हजासबज्वालारे ॥ हरीदासजनवीन
वै ॥ गिरहआधोवालारे ॥ ३ ॥ रामरमयीयारा ॥ छ
कवलीसुधिविसरी ॥ सिरिसोदाकीयारे ॥ टेका ॥ अ
पयालापेमका ॥ सहजिपीयाधविध्यान ॥ इतवतधि
तवंगिमिटिगई ॥ अबबिबुडणमरणसमाज ॥ १ ॥ जि
नियीयासोजाणहै ॥ अवरनजोणकौय ॥ रमियारस
ममिलिरहा ॥ अबटलेनइजाहोइ ॥ २ ॥ कदाकरेअ
सीनई ॥ पद्मादरीवैजाइ ॥ जनहरीदासमंतिवालसे
मनहरिलीयाचुराइ ॥ ३ ॥ टापीवमतिवालांरंमपी
मंतिवालारे ॥ स्वरतिसमांणीसाचमे ॥ पीयाअगस
यालारे ॥ टेकागोलीचाटीपानकी ॥ ममिताकसदीया
शिकांमकौधवालणिवल्या ॥ गसहीगुडकीयार ॥ १ ॥ गि
गनिमंडलनाठीचिगो ॥ अवेवकुधारांसाचसयीसनम
मिसदा ॥ मरयांवेणहाररे ॥ २ ॥ रामरसायाणरतिहे ॥
सांधाकौनोवैथ ॥ जोपीवैसोईबकै ॥ बकिमाहिसेमाव
राइ ॥ पेमयीयातबजाणियो ॥ तनमेंमननावरे ॥ जनह
रीदासआबेमते ॥ कुबुआननभावेरे ॥
हेकागोबिंदोजोजाणेत्योगाया ॥ जनमअसात्तिकजा
तहै ॥ तहरिय्योहेतलगाया ॥ टेका ॥ अलमतिरजननवि
मै ॥ रामनांमनिजसेदारांमविसास्यंहातहै ॥ म
कंधकावेदा ॥ १ ॥ रिवसिसमिलेन
पीयातिनहोइ ॥ करमकाट

अपणं करि लीयारे ॥ इनमै तेरा को नही ॥ तू ले वि
याये ॥ २ ॥ सुतां सरबस जातहे ॥ जाणे सो जोगे ॥ ज
हरीदास आबे मते ॥ हरि स्यो मन लागे ॥ ३ ॥ धरेणि
दिन जाय ॥ सघामे क्या करे ॥ हरि विनि कबुन सुह
बिबो है मै डरो टेक ॥ नल विणि मीन कहे क्यो जी
जाके जीवणि पाणे ॥ ३ ॥ सेहम हरि विणि प्रयाय
तल फतरेणि विहाणे ॥ ४ ॥ पीवपीव करत विरहत न
जास्यो ॥ चात्रिाघण कोटेरे ॥ यो मम घाण्ड प्रित हरि
लम विणि मन सामरिग हैरे ॥ २ ॥ जनके संवणि गं व
ए हरिकीजे ॥ बिलम कहा लम आवो ॥ रमतार मस
कल बिस व्यापी ॥ है हरि दरस दिवावो ॥ ३ ॥ याह व
ड विधारा मन लजाणे ॥ विरह बसे तन मां ही ॥ जनह
रीदास हरि महलिय धारो ॥ कै अब जीवणि नां ही ॥ ४ ॥
प ॥ सेऊ संतेही आव आवो है देवन रहरी ॥ विकल
नई मन मां हि क्यो है पीव प्रहरी ॥ टेक ॥ सुरति संबा
हि मां घनि ति हैरो ॥ चितचेतनि चोकी चढी ॥ तलफित
लफित न जाइ ॥ सुरकी नै पडा ॥ १ ॥ यऊ बिसवास आ
सनि जअंतरि ॥ अबला चो बोरेषडी ॥ मस्तगि दे देहाए
पंथ हैरो हरी ॥ २ ॥ जाण प्रबीण प्रम सुषदाता ॥ विरह
णि विरह प्रजरी ॥ जनहरी दास बलि जाय बिलम क
हा करी ॥ ३ ॥ ६ ॥ बालम विरह विवोगीरे ॥ लुरकी मोप
डारि गयो ॥ जम मांडण जोगीरे ॥ टेक ॥ सारा सुष संसा
का ॥ मोहि घार लागे ॥ लमेरे जीवणि जीवकी रहे ॥

ता आगे रे ॥ प्रमसेने ही धीतमा ॥ प्रांननेते प्यारे ॥
महलिय धारो माधवे ॥ सारा सरिसारे ॥ २ ॥ विरहनि
केस एकत ॥ ज्ञा सब ज्वालारे ॥ हरी दास जनवीन
वै ॥ गिरह आधो बालारे ॥ ३ ॥ ॥ रामरस पीयारे ॥
कचरी सुधि विसरी ॥ सिरि सोदा की धारे ॥ टेक ॥ अगं
मपया लाये मका ॥ सहजि पीया धरि ध्यान ॥ इतवत चि
तवंगि मिटि गरी ॥ अब विबुड ए मरण समाज ॥ १ ॥ जि
नि पीया सो जाणि है ॥ अवरन जाणे कौय ॥ रसियारस
में मिलिरहा ॥ अब टले न दू जा होइ ॥ २ ॥ कहा करे अ
सी नई ॥ पद्मादरी वै जाइ ॥ जनहरी दास मतिवा लमें
मन हरि लीयो चुराइ ॥ ३ ॥ ॥ पीवमतिवा लारे रे मे पी
वमतिवा लारे ॥ स्वरतिस मांणी साच मे ॥ पीया अगम
पया लारे ॥ टेक ॥ गोली चाटी ग्यानकी ॥ मसिता कसदीया
री कां मकौ धवाल णि बल्या ॥ गमही गुड की धारे ॥ १ ॥ ग
गनि मडल नागी चिरो ॥ अवे बकु धारारे ॥ पाचस थी सनमु
षिसदा ॥ मुरयां वण हारारे ॥ २ ॥ रामरसाया एरी ति है ॥
सांधा कौं नावे रे ॥ जो पीवे सोई बके ॥ बकि माहि समावे
रा ॥ पे मयी या तव जाणियो ॥ तनमें मन नावे रे ॥ जनह
री दास आछे मते ॥ कुबु आनन नावे रे ॥ ३ ॥ ॥
टेक ॥ गोविंदो ज्यो जाणे त्यो गाय ॥ जनम अमोलिक जा
त है ॥ लहरि स्यो हेतल गाय ॥ टेक ॥ अलष निरजन गरि
बसे ॥ रामनां मनि जनेदा ॥ राम बिसा स्यां ही त है ॥ सरु
कंधका चेदा ॥ १ ॥ रिवसिस मिले न मुकति फला ॥ प्रति
स्यो प्राति न होइ ॥ करम काट मुर चा गइरा ॥ कनां

तिप्रकासवरणः अगोमवारनपाराजनहरीदाससोसुव
रायिनैना॥ निरश्रिबाहूँ बारा॥ अ॥ मनरेगोविदागुण
गा॥ प्रबकजबकतबउठिचलेगो॥ कहतहोसंमज
शाटेकाअरकिअरिहरिधांनधरिमनासुरतिहरि
सौला॥ नजसिभावंतभरमभंजनासंतकरास
हा॥ तरलतिघोत्रिविधिरसबशि॥ गलतगतहं
वंदजाइजोबनजुराग्रासो॥ जागिरेमतिमंदा॥ असोह
मनरिपग्राहमेंहो॥ गहरजलगुणदेहा॥ जनहरीदासा
आजिसकाल्हनाही॥ हरिमजनकरिलेहा॥ शाशाजा
गोरेअबनीदनकीजे॥ निसदिनआवघटेतनबीजे
टेकाबहुतदिनातेयकुठकपाया॥ सोतोकोडीसटा
माया॥ हीरथापंणिहाथिनआया॥ शकोमकौधमाया
मदिमांता॥ निसदिनकालनदेयेयांता॥ रामनजोहरि
संमरयदाता॥ शांणप्रकासनजरिनिलेही॥ हरि
हेतननरहेयादेही॥ जनहरीदासनजिरामसंनेही॥
॥ शां॥ १८२॥ रागविहागदो॥ रातडियांजातसिराणी
रोपीवविणितरसितलफतहे॥ जोमठलीविणियाणी
रोटेकाअंतरिचोटरिहरकीलागी॥ नमसयचोटरस
माणी॥ विकलसईअजऊनआये॥ हरिजाएतहेमें
जाणी॥ रांणप्रवीणप्रमसुयदाता॥ निरगुणनाह
बिताणी॥ प्रीतिविचारिमिलोप्रमानंद॥ अबलानही
बिताणी॥ २॥ कहा
रहतनुनाणी॥ जनहरी
अतिसुवजाणी॥

स्पोंबोलिये प्रीव स्पोंप्रनाहि अतरषोलियेरे टेक
 रैनिसवाईबहिगई तनमनबैवीयोइ हंबकुकवि
 लकुदरसणी सकतिसुहागनहोइ ॥ १ ॥ प्रीवकेपा
 तवरताघणी तहारहेमनलाइ कंतरसंबोलैनही
 अकंडुषकहोसमाइ ॥ २ ॥ अबलाकोबलकोनही
 प्रीतमरहेरिसाइ सदासंगातीरंमयां मोहियेसप
 याजापाइ ॥ ३ ॥ अंतरजोमीतुमहविनां इजाकबून
 सुहाइ जनहरीदासहरिविणिमित्यां जन्मअमो
 लिकजाइ ॥ ४ ॥ १८४ ॥ जोदयाहजोसति ॥ एगधन
 जोलियते ॥ रंमसंनेहरा हरिविणिइजाअलयस
 नेह इजादेशतजांहिलारे अंधूवंरिकाभेह टेक त
 नधनजोबननारहे इबधाइइसंएनहोइ चौरसीबे
 चोपडिमंडा तामेंचोटनबंचैकोइ ॥ १ ॥ अतकलितपरिवार
 में सकलरसाउरजाय ॥ सबकोस्वारथकासगा ॥
 अंतिअकेलोजाय ॥ २ ॥ समफिपडीसतपुरमित्याये
 डादीयाबताइ जनहरीदासआनंदनया तासुयमें
 रसासमाइ ॥ ३ ॥ १ ॥ प्रीतप्राणीयां रंमसंनेहीजोइ रं
 मसंनेहीविणिनज्यां तोकुकबहुनत्रियतिहोइ टेक
 जिनिजलतैपेंदाकीया सागलीसौजबुनांइ सीस
 दासंगातीगोबिंदौ ॥ वृतासौंतालीलाइ ॥ १ ॥ ज्योबादल
 मिलिवीबुडे आयआयकोंजांहि दिनदसकामेला
 नया निहचैरहणांनांहि ॥ २ ॥ बकरिबकरितानैनही
 मनियजनमअवतार अबकेनरहरिनानज्यो तोतो
 कूंवास्वपौर ॥ ३ ॥ चडिमंतिबुडेवापडा सतिलमोहकी

धारा जनहरी दास हरि गायत्री ना जिकें वना सर
राधा शत्रु वधु अंग पया ला पा जो हारि गायत्री
रेतौ जी जै पसर देसौ वाकी जो टिका। सतर जन सर
पांवर हरि रसा तार सस्य मजना गा। ५ प्रिरन कं रा गा
रमयो है १ मन रा हिय वं न म द म द य म गा। २ ग यं ॥ २
न गानारा। एके डोरि ग कर मिला गा। ३ ग र गा म यो ना न्य
री ॥ ४ न ग सत क वल प्र म त त द र म न प्र म यो ना न्य
या। ५ जन हरी दास सध कर म न यो ना न्य क ना नि र म
या। ६ शा श वा दे स सं ने द ग जे दान न अ य न य ॥ ७ ॥ ८ ॥
अरु प यार स व या ग। ९ अ द वं म न भा द। १० ॥ ११ ॥ १२ ॥
त यी त रं ग र ह ता अ ग म वा र न द्रा या ग। १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥
हो त हों दि खे। १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

२१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कमनिरेकेंतार पंथनिहारे पावकों। तिलिये सिरजन
 हार। १। विरहणिविरहविवेगणी। दरसणकारणियीव
 विकवत्तर्विलंबेकहा। तालबैलीजीव। २। आसगं
 वणगंसकोनहा। चितवत्तैरे निविहाय। सुषदिसलवैगी
 विदा। जनहरीदासबलिजाइ। ३। १५। असतविराणीरे।
 जीवडाहरिसगो। हरिसुमरेक्योंनाहि। टेक। नरपतिमोप
 तिरेषडा। तालधजाफहिराहि। अत्रधिवशीतीसंगीकी
 नहा। अतिअकेलौरेजाहि। ४। हेदलगेदसंगिचले। प्रद
 लजीतैराडि। मालमुलकज्योकात्योरहे। अतिचलेक
 रजाडि। ५। सिरिबत्रसिंघासणवेसणा। कंचाकंचामह
 लअवास। योसुषिहरिसुषविसस्यो। तातेतैरे। जमपु
 रवास। ६। प्रमसनेहीपीतंसआपणो। जीवतिजगतअ
 धार। जनहरीदासहरिगाइले। हरिसकलसुषोसिरिसा
 र। ७। १६। एतडीसवाईहोरंमजीवहिगई। पलपलखी
 जेगात। करणंसुणिकरणंसई। महलियधारोहैनाथ।
 टेक। सबमंतिवालाहोरंमजीसबबक्यानीदडीनअसे
 मोहि। मेरीवेदनरंमजीजाणिहै। कैजिसवेदनिहोइ। १।
 यऊतनअसेहोरंमजीजातहै। हंसबलकछुनबसाय।
 प्रमसनेहीहोरंमजीहममिलो। हरिसकलसतवण्यति
 राइ। २। चरणवौकीहोरंमजीचितधरं। आत्मसेकसे
 वारिनैनलनाणाहोरंमजीपीतिस्यो। दरसोदेवसुर
 रि। ३। जनहरीदासहोरंमजीयोवीनवै। मेरानैनषडेहो
 धार। दरसदियावौहोरंमजीआपणो। हरिसमरथसिर
 जनहार। ४। १७। आरतीजाजीवनदेवा। आत्मअगरि

वा। देका। चित्तौ की हरिचरणधरिहो। आ
 सिंघासाणकरिहो। रा। दीपगगनसबदउजि
 चोपकपसुरतिकीमाला॥२॥ प्रीतिप्रसिल्योचं
 प्रेमकलसलेकलसबदाके॥३॥ सौंधोसावगण
 गरी। बक्रविधिचरचोदेवसुरारी। ४। निरमल
 रकरिजनके। गिगनिमंडलमेजालरिऊणके। प
 दासनयामनमंजन॥ आत्मआरतीकरोहोनि
 ३॥१८॥ पदे॥ २०७॥ दयालजीकापदसंपूर

ए॥ श्रीदयालजीसातादयानजीदरीतासनीका
 कडयालियते॥ रागसांगति॥ बासुरजाइरेनिसआइ
 पकंती॥ निहरोरहोनिरदोवै॥ हरिनजिसेणबेणसुणि
 बकताखलेनयकबकआवेदेक। तनितिणरूपयिजे
 काईसडचर। प्रहरिविखेसगाई। घटबूटांडससहिसी
 फीटा। रामसुमरिसुखदाई। शेरिणिमोडफिरैकाईरू
 गो। रूतांकेोरगरहिसी। अबकाइकरजनआपेकाल्हा
 बलेजयकडसदहिसी॥२॥ आईसायषरचिमांयोटा। कं
 एकांकाईविडावै। यांचयचीसप्राणमनमनसा॥ देले
 काइंनघरिआवै। ३। सीलसंतोषसतिदयासबूरी। इंणि
 औसरिइंमकीजै। जनहरीदाससतिमनसावाचारहा
 नांरंमरटीजै। ४॥१॥ रामसीधू। ग्पाबबडराजमनसा
 हसाचैमते। सुमरिहरिनिडरनिजनांवयाया। ग्रासिमु
 एग्राहनजिरंमजरणांजडी। सोइंमांयासिहेकालका
 या। देका। ग्राइगोपालक्रिपालकरणांमई। अ

त्रैलोक्ये दशमोऽक्षरः ॥ १ ॥ सावन्तसूडडसूरस।
 तिसनमुषि संमतणां नलिगाणां आवधमारोपसिरी
 सुमिरण कांकडिआइसंडाणां टेकापेलीकोजघटाघ
 एघरहर अरिआवरतलहेडा साधनलारंमत्तजितंजे
 विकविकिटिकें जयोडा ॥ १ ॥ यंचयचीसमोहदलमाया
 कामक्रीधदलशूरा यदकेंसेलमडावडिअसतां बाजे
 अंतहदतरा ॥ २ ॥ सरजिनालिगोलासरबूटें कंसधनयाडै
 थाणां सांगिधिवेज्यो आसेदांमणि काइरकटकउडाणां
 ॥ ३ ॥ मनाहियवंनपलटियहिरये आबाअंमलचहोडे
 जनहरीदासमानिसंमितातजि योमेंवासातोडे ॥ ४ ॥ १२
 गोरवनाचतुहारीगतिमति कोईसुरतरमुनिनहीजां
 ऐं जाणेंसिधसाधिकें केंअलयनिरंजन गोरवसुनिसुध
 रसमाणें टिका जीत्याकरंमनरंमकरिकानें गिगनिवटो
 रसपीवें जासांहीमिलिवांटोडांले सोमिरतगसतिजीवें ॥
 जोणेंजोगनोगनहीजाणें नाथदस्यीविधिवेले जनहरी
 दासगोरवसतिसनमुषि अंमीमहारसकेले ॥ २ ॥ १३ ॥ क
 दलससूरण ॥ श्रीप्रसाक्तनेसा ॥ श्रीगुरभोजसा ॥ श्रीनि
 रेवनाससा ॥ श्रीदयालजीसतिडोंरांमायन्सा ॥ बाबाजी
 हरीदासजीकायदेवताकडंजाप्रवसेदूरा ॥ दोदुसे
 ईसा ॥ ३ ॥ १४ ॥ गगवोईत ॥ श्रीप्रसाक्तनेसा ॥ कवीरजी
 गोरवनाचजीनरथी गोपीचंद्रजीदयालजीहेरवांन
 जीअवद्याधरतिवें ॥ दयालजीकायंयलियथे ॥ प्रथमे
 वसहूतिलिपते ॥ ॥ गंमनधांतअबीहअजाय अक्त
 अरतनिमाईनवाय जगदीसअरसतिकंपनिधात ॥ ॥

कुंतोजकुंतोजबिसंत्तरताता ॥१॥ अमरीदअपीर अहेतअ
 हाथाअडयअसुषनिरेजननाथा ॥२॥ अहमेवनठवअसे
 वअदेवा ॥ अवातअघातअस्यप्रअमेव ॥३॥ निरलेपनि
 साजनिहचोमनिहसोन निहकामनिजामनिरसमिरलो
 ना ॥४॥ निरमूलनिस्तलनिरसधनिरधध ॥ अजीतअतातअ
 धधअकंध ॥५॥ निवोहनिदोहनिमोहनिसासा ॥ निर्दक
 निसंकनिडेकनिरवास ॥ निरकतितकनिरवटीन
 तासा ॥ अनंतसनेतअ हाप्रकास ॥६॥ अमानअथातअरु
 तिअवाताअचिंतअनतअथतिअघात निदायनियो
 यअरेहअथाटागोपालगवालअमितअपाट दयान
 अकालअजालविराटा ॥ अतानअयातअताननिराट
 सालूमसालूमलतीफगुजा ॥ दकीमफटीमयतार नवार
 ॥१॥ वेचगुनिवेचूंनिलहाकरीम ॥ वेआदिबटा दयुदा
 शरहीम ॥२॥ वेसबहवेतिवदवेनिगहंदताव वानमनि
 वेहंनियांनानषराव ॥३॥ रवकुहअरुअमडंनज ।
 नायेदनांकैदयुदिनअवाज ॥ दज्जानडरितिरनि
 मारा ॥ वालिकमालिकअथाहअवार ॥ दः ॥ रनः ॥
 रिसदहयाति ॥ ओजूदजददनजध्वतजाति ॥ दः ॥ द
 रिसनजेरगुमाना ॥ मिरजनहारद्विरधितज्जद ॥ दः ॥
 सालूमसवेसुलितान ॥ मालिकमामिदअजदंनर
 जाहिरमाहिरसदइयवमीर ॥ अतईदुवेलदददद
 पीर ॥१॥ प्रवदिगारतिरविका ॥ ३ ॥ नः ॥
 हिबकुंनानफेनीदा ॥ २० ॥ रः ॥

जान अमान अर्षिदितनर ॥२०॥ राजान सजातततोषन
त्रास हवहारिनजातिअसासनतास ॥२१॥ वेरजानवे
रांनहेरांनमुकांम कलांमनतांमनसीतनघांम ॥२२॥
उदारअपारअजारअरुय ॥अयारअलारअसारअधूप
॥२३॥ अहंपअदेहअघरअडर ॥अधिरअतिरअवेह
अमर ॥२४॥ अरेयअदेयअनेयनिजोग ॥अलेषअरीक
अवीजिनतौग ॥२५॥ अवीजअनाथअवाधनिरोग ॥अ
लयअनयअजयअलोग ॥२६॥ अदयअपयअचयअले
ठअमूलअमालअडोलअचोट ॥२७॥ अजंगअरंगअसा
यअसंग ॥अजेरअजोरअफेरअजंग ॥२८॥ असौरअकौ
रअमिलअमोड ॥हरिनटसनेदिअनंतअयोड ॥२९॥
असोचअपोचअतोलतांमीर ॥अवधिनसिधधराधरयी
र ॥३०॥ असौसअदोयअलियअगाधा ॥तौहिकारनपारन
अचौरअसाधा ॥३१॥ अहीनअदीनअनूयअयांन ॥विसं
तरनाथअनाथअदंन ॥३२॥ अहरअपरअचरनिधाह
अमरअधरअजरअथाहर ॥३३॥ अचडअपडपुरिषन
नारि ॥अऊरअनारअधारविचारि ॥३४॥ अयेरअनेरा
नवेरनियंड ॥नितोजनितोजरअौबसंडि ॥३५॥ सरवं
गसमहवयंमविथार ॥जहांसतहांमुकतादरवार ॥
३६॥ इलाअंबतेजनवाइ ॥अकासनवासज्वरानहित
हि ॥३७॥ अवीहडअजडअपडअघट ॥अघडअनडअ
नडअजड ॥३८॥ विनांणप्रवांणवयनांननेह ॥अगि
एतनिहारउवाहअवेहा ॥३९॥ अकाजनराजअवगवि

अंगमत्ररूति। बीजअं कूरनही आया ॥ पंचततमहीये
 वा ॥ फूलफलडालनद्या ॥ १३ ॥ निरालबतिरलेप ॥ निडरनि
 रनैनिहकांमी ॥ निरामूलनिहकरंमः सुतोहरिअंतरना
 मी ॥ १४ ॥ अहविचारअपारअजीत ॥ अरिलगोननरहरि ॥
 अमिलअतिरचिरसुधिरा ॥ गयाजजतांमौ धरहरि ॥ १५ ॥
 अगटपमगतिप्रमपति ॥ प्रमनाथप्रयोया ॥ प्रमसनेहीप्रम
 सुषा ॥ अलहेअगहेनिरदोष ॥ १६ ॥ अघिरअपरवेहदिसुधि
 रा ॥ अजरअमरनिजनाथ ॥ अधरसुधरमीवामधुस ॥ चिता
 हतमंनकरिहाथ ॥ १७ ॥ अचलअमलअनहितअटला ॥ अ
 कलसकलबसिजात्रासिखकविसखतैअगसा ॥ अकडिअ
 करतानाव ॥ १८ ॥ अधरगहरविसंनरअकरातंनधनसुत
 बनितानहीप्रीति ॥ अजिडकलसएकअनेकगता ॥ राजात
 हारसरीति ॥ १९ ॥ अलोपिअधिपजहातहांछिप्या ॥ आयापडे
 नखोहा ॥ सकलसवणपतिसतिसदा ॥ निरामोहनिरदोह
 ॥ २० ॥ अहितअमंतअवगतिअजत ॥ अनंतसमंतसुराहि ॥
 चितानंदअरिचितअरत ॥ चितमांहीचितधारी ॥ २१ ॥ असतो
 गजोगीतही ॥ निरादेहनिरवास ॥ बरणतिब्रजतकहिअ
 कहि ॥ उदरअवरनहीसास ॥ २२ ॥ अघटसनटनहीकरमपन
 सरमनकोईनेया ॥ घटधरिघट्यानअवघटे ॥ अपरपारअले
 य ॥ २३ ॥ प्राणनाथअकरणा ॥ तंवतधरणीधर ॥ हरिहरिगां ग
 नांसंगीबंदनजौ ॥ प्रपंचययप्रहरि ॥ २४ ॥ मूलमंत्रसतस
 रदीया ॥ इयसुयदोयइस्याप्राप ॥ आवयहेरकीउनमनी
 अंतरिअजपाजाय ॥ २५ ॥ रणानथानयकदोना ॥ नांवउनमा

निस्सुलजे ॥ गबबाडिगोविंदनजे ॥ नजिदमिरतरसया
 जे ॥ २६ ॥ नाबंधसुंतोमैडसुं बजडि नजनतहां नां व ॥ ज
 नहरीवासकीबीसती ॥ वापरंमबलिजांव ॥ २७ ॥ बेकीम
 तिकीमतिकहां ॥ नजिनागवंतप्रषतजिदोइ ॥ जनहरी
 दासहरिसुमिरतां ॥ कांठालीनकोई ॥ २८ ॥ २९ ॥ अथ
 जांवसाव ॥ लिप्यते ॥ नजिकरणंनिधिकरतार ॥ करमते
 नरंमतिवारण ॥ समरथसिरजनहार ॥ विविधिजंमका
 फंदजारण ॥ १ ॥ केसोरंमतांरंम ॥ हाथजनकेसिरिधारण
 नांरंइंणगोपाल ॥ संतराषणरियमारण ॥ २ ॥ प्रमसंनेही
 नाथ ॥ त्रिविधियुगहरमुदारण ॥ अविनासीहरिअ
 थिख ॥ करणनिरविषेनोविषडुषदारण ॥ ३ ॥ इंनकाक
 रोषहाररघुनाथनिजआधिउधारण ॥ गौबलकरिगो
 विंदं ॥ चिंताअरिविरमभ्यारण ॥ ४ ॥ अयरंपारअपार
 पारनैसिंधउतारण ॥ लमनरहरिनिरंबस ॥ बंसतीहि
 साधसुषकारण ॥ ५ ॥ निरसंसेसुंपीति ॥ तादिसंसाकेयं
 ग्रंसे ॥ जहांअजपातहांबैसि ॥ वातअणंनैअसांसे ॥ धि
 नरनिरनैनिरनेय ॥ अरीऊहरिरीकेनांही ॥ निरमलनि
 हअनिअंतरमांही ॥ ७ ॥ प्रमरीतपरप
 परमनिधिआपणस्वामी ॥ जराकोलनैहरण ॥ कर
 निरनैनिजनामी ॥ ८ ॥ परंमयुशिमप्रकास ॥ लहेकोईमुर
 रा ॥

९ ॥ परमतेजपरजेति ॥ प्रमडषसंजनसौई ॥ परंमसंनिप्र
 देव ॥ जीवजागिसुमिरैनहिलोई ॥ १० ॥ परमग्यानपरध्यान ॥

हरिपरमसुखसाचवतोऽपरमजोगपरनोग हरिप्रसा
विलेपकचोवे ॥ निरास्वनिर्लेप अचलचरणान्वितथा
२॥ हरिविरंगुणनिरद्वेद वास्तुद्विज्ञानेपार ॥ अकल्प
नेदअद्वेद विरूपधिरंनघरपाया निराकारनिश्व
प्राणमनतहाममाया ॥ अवातिअगतअलेख ताद्वि
ईविरवापये अजोनीअस्थिर अचिनअतिअतरिटरं
॥१॥ अदिष्टअधिअरूप अचादतिरसोहमस्यार ॥ अ
लनिरधार निकुलनिरपयतिजमार ॥ परमततप
दासकलज्जाभंडणजागं पारवृत्तहरिअथिल रम्य
रसतांनहितायां ॥ अधरअजरममिताइ जीवमवने
थलियोये अकहिनिबलसंवे माधसुसिंरमनिचो
॥१॥ अहतअर्द्धजअस्तु निगमनिर्गंतमुखमार अक
मअरतअलोक अरिकारयइमिरनधार ॥ गकंसक
हरि ॥ हरितैहिकहं कंनरा निजतंत्ररनिगमिध प्राण
हायंयमिरा ॥ अयदयदविरहमद सकनेमसाच
काया ॥ जनहरिदामदअवत अथिगुरगामेनपाया ॥
॥१०॥ जहहरिरोयेकहामरदो हरिपतंत्रनदाजाव नर
रीदासकांनतं हननदकादोहरिनाव ॥ ११॥ न
तालाजातचतनरा ॥ अरुदयप्रतपयलिया ॥
॥ नवनिरुपयकल्य जेद्विनाकाः ननदरीदामतक
सेजो तवदं अलंदेह ॥ अगपंरपरणवत्य फारिनद
मनसाइ गरवदइगोत्रिदतना जनमयमायिकजाइ
॥ सचमुदमिर्नपादंय हरिपरममंनदीजान वहादि
वहोदिलानेह्यु योअमरगयान ॥ अकारनिर्भनने

निस्सूलीने॥ प्रबवाडिगोविंदनने॥ नजिदमिरतरसपी
 ने॥ २६॥ नाबंधरुंतोमेंडरुं॥ बऊडिभजनतहांनां॥ ज
 नहरीवासकीबीसती॥ वापरंमबलिजांव॥ २७॥ बेकी
 तिकीमतिकहां॥ मजिभावंतपषतजिदोश॥ जनहरी
 दासहरिसुमिरतां॥ कांटातंगोनकोई॥ २८॥ ३॥ अथ
 जांवसावा॥ निर्यंते॥ नजिकरणनिधिकरतारा॥ करमत्ते
 नरमनिवारण॥ समरथसिरजनहार
 फंदजारण॥ १॥ केसोरंमतारंमा॥ हाथजनकेसिरिधार
 नारंद्रंणगोपाल॥ संतराषणरियमारण॥ ३॥
 नाथ॥ त्रिविधियुगगहरगुदारण॥ अविनासीहरित्र
 यिहा॥ करणनिरविषेनोवियडषदारण॥ ३॥
 रोषहारारघुनाथनिजआधिउधारण॥ गोबलक
 विंदं॥ चिंताअरिविरयभ्यारण॥ ३॥ अथ
 पारत्तैसिंधउतारण॥ लमनरहरिनिरंबंसा॥ बंस
 साधसुषकारण॥ ४॥ निरसंसेसुंधीति॥ ता
 ग्रोसे॥ जहांअजपातहांबैसि॥ वातअणंनेअमासे
 नटनिरत्तैनिरत्तैय॥ अरीऊहरिरीकेनांही॥ निरमत्ता
 हजूरि॥ अगहअनिअंतरमांही॥ ७॥ प्रमरीतप
 परमनिधिआपणस्वामी॥ जराकोलत्तैहरण
 नामी॥ ८॥ परंमयुरिषप्रकास॥ लहेकोई
 सोयबहसचाराचर॥ सकलविसव्यापीय
 परमत्तेजपरजोति॥ प्रमडषत्तंजनसौरी॥ परंमसं
 ॥ जीवजागिसुमिरेनहितोई॥ १०॥ परमग्यानपरधं

हरिपरमसुखसाचवतावै परमजोगपरतोग हरिपरमः
तिलेयकचोवै ॥११॥ निरालवनिरलेय अचलचरणान्वितधी
रहरिविरगुणनिरबेह वारनदिलानेपार अकलअ
नेदअबेद निरूपनिरतेघरपाया निराकारनिरवाण
प्राणमनतहांसमाया ॥ अलगतिअगमअलेष ताहिंका
ईविरलाप्रसे अजोनीअस्थिर अचितअतिअतरिदरसे
॥१२॥ अदिष्टअधिरअरूप अघाहनिरमोहसन्धारं निराभू
लनिरधार निकुलनिरपअनिजसार परमततपरने
दासकलज्जगमडणजीगी पारब्रह्महरिअखिल रसवाग
रसतांनदिनीगी ॥१६॥ अधरअजरसमिनाइ जीवसबजलि
थलियोथै अकहिनिबंजनदेव साधसुमिरेमनिचौथै
१७॥ अहतअबीजअनेक निरासनिबंतेसुखसार अकर
मअरतअलोक बरिषारसइमिरतधार एकमेकतर
षरि ॥ हरितौहिकहोकनेश निजतंवरनिरसिंध प्राणत
हापंथीमिरा ॥१८॥ अखंडखडविरहमड सकलमेसाचलु
काया ॥ जनहरीदासहरिअघट आधिगुरगमतेपाया ।
॥१९॥ जहाहरिरोषेतहांमेरही हरियठवेतहाजांबाज
रीदासकीबीनती हरिनहीबाडोहरिनाव ॥२०॥ इती
ताला नोग यथम २१ ॥ ११-१२ यथादिब
॥ नावनिरूपपरमसुख जोगविरलाकोइ जनहरीदासक
तेजो तवहीआनंदहोइ परापरैपूरणब्रह्म
मनलाइ गरबबाडिगोविंदतजो जनमअमोलिक
॥ सतगुरुमिलेतांयाईय हरिपरममनेहीतात व
वहोडि लातेनही ॥ योओसरयाघात ३ ॥ नखाडोनिरेन

निस्सूक्ष्मजे प्रबद्धादिगोविन्दतजो नजिदमिरतरसया
 जे ॥२६॥ नाबंधरूतोमेंदसु बद्धिभजनतहांनांवा ज
 नहरीवासकीबीसती वापरंमबलिजांवा ॥२७॥ बेकीम
 तिकीमतिकहां नजिभगवंतपषतजिदोश जनहरी
 दासहरिसुमिरतां कांतालगेनकोई ॥२८॥ २५ ॥ हाथ
 जांवाजा विप्यंत ॥ नजिकरणनिधिकरतार करमसे
 नरमनिवारण समरथसिरजनहारा विविधिजंमका
 फंदजारण ॥ १ ॥ केसोरंमतांरंम हाथजनकेसिरिधारण
 नारंइणगोपाल संतराषणरिपमारण ॥ २ ॥ प्रमसंनेही
 नाथ ॥ त्रिविधिगुणगहरगुदारण ॥ अविनासीहरिअ
 थिष ॥ करणनिरविषेनोविषडुषदारण ॥ ३ ॥ इनकाक
 रोषहाररघुनाथनिजआधिउधारण ॥ गोवलकरिगो
 विंदं ॥ चिंताअरिविरअभ्यारण ॥ ४ ॥ अपरंपारअपार
 पारसैसिंधउतारण ॥ छमनरहरिनिरंवंस ॥ वंसतोहि
 साधसुषकारण ॥ ५ ॥ निरसंसेसुधीति ॥ ताद्रिसंसाक्यो
 ग्रोसे ॥ जहांअजपातहांबैसि ॥ वातअणंनेअसांसे ॥ ६ ॥
 निरनेया ॥ अरीऊहरिरीकेनाही ॥ निरमलनि
 राअगहअभिअंतरमांही ॥ ७ ॥ प्रमरीतपरप
 परमनिधिआपणस्वामी ॥ जुरकालसेहरण ॥ कर
 रनेनिजनामी ॥ ८ ॥ परंमयुरिषप्रकास ॥ लहेकोईगुर
 सूर ॥ सोयंबहसचाराचर ॥ सकलविसव्यापीपूर ॥
 ९ ॥ परमतेजपरजोति ॥ प्रमडवसंजनसोई ॥ परमसंनिप्र
 देव ॥ जीवजागिसुमिरेनहिलोई ॥ १० ॥ परमग्यानपरध्यान ॥

हरिपरमसुखसाचवतावै॥परमजोगपरमो॥हरिप्रसंग
तिलियऊंचोवै॥११॥निरालंबनिरलेय॥अचलचरणान्वितध
रं॥हरिविरंगुणनिरबोह॥वारनदिलानेयार॥१२॥अकलअ
नेदअबेदा॥निरूपनिरनेघरयाया॥निराकारनिरवांण॥
प्राणमनतहांसमाया॥१३॥अवगतिअगमअलेषा॥ताहिके
ईविरलाप्रसे॥अजोनीअस्थिरा॥अचितअतिअंतरिदरसे
॥१४॥अदिष्टअधिरअरूप॥अथाहतिरमोहसन्प्राणनिराम
लनिरधारानिकुलनिरयमनिजसारं॥१५॥परममतपरसे
दा॥सकलजगमंडणजोगी॥यारब्रह्महरिअखिलारसदोग
रसतानदिनोगी॥१६॥अधरअजरसमिताशनीदसबजलि
थलियोथे॥अकहिनिहंजनदेव॥साधसुमिरेमनिचौथे॥
१७॥अहतअबीजअनैक॥निरासनिरनेसुखमारं॥अकर
मअरतअलोकावरिखारसइमिरतधारं॥१८॥ऐकमेकतर
वारि॥हरितौहिकहौंकनैरा॥निजतंत्रनिरसिंधा॥प्राणत
हांपथमिरा॥१९॥अयंडवडविरहमडा॥सकलमैसाचलु
काया॥जनहरीदासहरिअघटा॥आधिगुरगामतेजाया॥
॥२०॥जहांहरिरायेतहांमेरही॥हरियतवेतहाजोव॥जनह
रीदासकीबीनती॥हरिनहीबाडोहरिनाड॥२१॥इतीनाव
तालाजोगअथंसंपूरण॥अथजावनिरूपनाराअथलिखंत
॥नावनिरूपपरमसुखा॥जाणैविरलाकेइजनहरीदासताळ
सेजो॥तबहीआनंदहोइ॥॥परापरैपूरणब्रह्मा॥फेरितहा
मनलाइ॥गरबबाडिगोविंदतजो॥जनमअमौलिकजाइ
॥२२॥सतगुरुमिलेतेयाईये॥हरिपरमसंनेहीताता॥बहो
बहोडिलाभेनहा॥योओसरयाघात॥३॥नेबाडोनिरनेसजो

गणरहतगोपाल ॥ अगमवैड ॥ आनंदसदा ॥ जुराजनमन
 हीकाल ॥ ७ ॥ जोगारंभकामूलहै ॥ हरिअवगतिअपरंपार ॥
 सुषसागरसमरथधणी ॥ सबकासिरजनहार ॥ ५ ॥ निर
 नेयदनरकरिचट्या ॥ मनिअजनममलदेह ॥ निराकार
 निसदिनमजो ॥ हरिअगिणंतअनंतअछेह ॥ ६ ॥ मनिअज
 नमयरघोरयो ॥ हरिविणिद्वजीवोर ॥ सासउसासांतांव
 ले ॥ नरदोरिसकैतोदोरि ॥ ७ ॥ जागिजीवयोवैकहा ॥ पथ
 ममोहतजिमाण ॥ साधमुलकतहांवासकरि ॥ जंमलेस
 केनहांण ॥ ८ ॥ अगतिकरैअगवंतकी ॥ मनदीन्हांसिधिहे
 द्र ॥ मनखिणिदीन्हांमनलुड ॥ यायांतथायाकौद्र ॥ ९ ॥ यप
 पुनिदोनोंबिरय ॥ तहांकरैमनयांन ॥ मनयेदोनोंतरव
 रतजै ॥ तोयावैअगवांन ॥ १० ॥ अरमबाडिनिरनैमते ॥ निरनै
 बसतविचारि ॥ अरअथिरकरिवांणधरि ॥ मोहमहारिय ॥
 मारि ॥ ११ ॥ करिधारणकैसोभजो ॥ समकिनकीजैसोच ॥ य
 कअवसरचलिजाइगा ॥ बडुडिनलांनेयोच ॥ १२ ॥ अंमंन
 जोविषयातजो ॥ घरमांहीघरएक ॥ ताघरसूंलागारहो
 बाडौद्वारअनेक ॥ १३ ॥ हरिसुमिरणहिरंदेधरो ॥ विथान
 कुंवेबीर ॥ कायरटलिकानैचल्या ॥ लम्पानसुषकीसीर
 १४ ॥ परमपुरिषनैरियभजो ॥ लतानलागेलोड ॥ अवधिघ
 टेयासेजुरा ॥ हरिभजतांहोइसहोइ ॥ १५ ॥ नावबिसंनरना
 थजी ॥ लखचौरासीपतियाल ॥ सबकादूकीकरतहो ॥ ता
 तेगमदयाल ॥ १६ ॥ मनसजनतोस्योकहो ॥ मानोसाचहद
 स ॥ कालजालागेनही ॥ सुमिरताजगदीस ॥ १७ ॥ कुंचनी
 चनिरनैमते ॥ कोईभजोसुरारि ॥ सबसागरतिरिबौकवि

नहरिनां वृत्तारै यारि ॥११॥ सुधरतें वाजीरची ॥ वाजीमांही
कतांमा ॥ अट्टसणयोजतफिरो ॥ यथावेयी विसरंम ॥१२॥
कालहरणकरतारेपुरिसा ॥ सुमिरतांगुणयेहा ॥ चितमांही
वितलेरहो ॥ ज्योवकंडिनधरियेदेहा ॥ २० ॥ वनमालीतजत
नलां ॥ अटकजुराजेमतोहि ॥ मेंनहीबाडोंरंमको ॥ रामन
बाडोमोहि ॥ २१ ॥ वातहाथिरघुनाथको ॥ सदासाधकेसाधि
येलेअंगिबाडेनहा ॥ जाकोयकडेहाथि ॥ २२ ॥ नारायणका
नांकी ॥ मेंबलिहारीजावां ॥ तंजीकाटपतंगज्यो ॥ इरेइस
रानं ॥ २३ ॥ परमानंदकेआसिरो ॥ जाइयेहेजबजीवा ॥ हरि
मेंहरिनिजरिदेयेजेवे ॥ तबैजीवस्योसीवा ॥ २४ ॥ सकलवि
यापीसंगिवसे ॥ हरिसमरथसिरजंतहारा ॥ साहिवहीतैया
ईये ॥ साहिवकादीदारा ॥ २५ ॥ अविनांसीआसंणअमराअज
राकरनगरेका ॥ रामदयातैयाईये ॥ हरिसुमरणभवविवेक
॥ २६ ॥ इलमपडेपटिआरबी ॥ चारियेदेमुखिवेदासदाति ॥
सुखसबतैअंगमा ॥ सबकोकरेंगमेदा ॥ २७ ॥ अखिलतुमारीवं
दा ॥ बकुतकरेंबकुनाश ॥ आलाहकिसनअरिहंतकहें
कोईकहेंसुदाश ॥ २८ ॥ सबकोईवाहेंतुजको ॥ ततोसब
होमांही ॥ तैमहीतैतुमयाईये ॥ वंदेतैकुबनांहा ॥ २९ ॥ पर
बस्यपरइषहरण ॥ आणतंहांमनलाइजेदसहतनेरिय
मजो ॥ हरिगाईजेत्योगाश ॥ ३० ॥ मिहरिकहोमीरंकहो ॥ की
ईकहोअनंत ॥ निराधारनिरगुणकहो ॥ तथाकहोसग
वंता ॥ ३१ ॥ निरामूलनिरयथकहो ॥ कहोनिरंभरनांवा ॥ नि
रमोहनिरदंभकहो ॥ वाअरिचितकीबलिजांवा ॥ ३२ ॥ अल
यअगमअवगतिकहो ॥ कहोनिरंजननांमा ॥ अरतकहो

अलमअरपर बलनहीअबलनमेमारं परमउदार
 अयारअयंहित रटिरसनारटिरंकार ॥२॥ अण अगह
 अकहैउरतेअघजारण ॥ सूनिमंडलमेंसहजप्रका
 सं जनहरीदासपतिप्रसिप्रमसुष ॥ अरिदलजीतअ
 नेपुरिवांस ॥३०॥ ७॥ जोगसंगी ॥ जोगमेधलियते ॥ १ ॥
 जोगी म्यानषडगकरिधारे ॥ मनसाजीतिमनोरथमारे ॥
 आसंएबाडिअनेतनहीजाइ ॥ तासंगिरमेंनिरंजनराइ
 ॥१॥ दीरघरोगविवोगनिवारे ॥ कोडीसटेनहीराहारे ॥ प्र
 धनहरेडरेनहीलोई ॥ आयाहारेहोयोहोई ॥ २ ॥ धियया
 तजोनजेहरिवीर ॥ सूनिमंडलमेंनिरंनेनीर कुंचनी
 चसबस्योसर्वमिताइ ॥ मनबचकरमतहंमनलाइ ॥
 ॥३॥ निरंनेनिरवांएप्रमसुषसार ॥ आदिअनांदिवा
 रनहीपार ॥ जुरानब्यापैकालनयाइ ॥ हमकोसतग
 रिदीयावताइ ॥ ३ ॥ अलमअनेदगहरगुणग्रामी ॥ प्रो
 एनाथनाथहरिअतरजामी ॥ कोईग्यांतालहैग्यान
 मरओर ॥ थीरनीरज्योसबहीठोर ॥ ४ ॥ नजिनगवंतअ
 खरअरिमारि ॥ सूनिमंडलमेंमंडीसंवारि ॥ तालीलागीवै
 वामांहि ॥ गंगजमनेजलयीवैनांहि ॥ ५ ॥ मोहदीहमेंतेक
 रिहरि ॥ रमतारांमरह्यामरहरि ॥ व्याकअगनिबसेता
 मांहि ॥ मरविणिगेलातांनेनांहि ॥ ६ ॥ अप्रणवांएनि
 धअगंमविचारे ॥ आयातिरेसाथिसंगितारे ॥ यवंनयया
 लाउलटाधरे ॥ नरिनरियावैअजरजरे ॥ ७ ॥ नाथनिरं
 जननिरंनेजोगी ॥ जुरजनंमत्तोगीनहीरोगी ॥ वरवाघ
 टेनदीयाजाइ ॥ मोईवितचितमेंरहासमाइ ॥ ८ ॥ धर

प्रयतिपाण॥ डरनषयदे नजंमलेदाण॥ काल
 ननहीनाइ॥ नटज्यो घटधरैबघतिधरिआइ
 वेरागनविरदबिनीगी॥ पायपुनिप्रवेसन
 टीसुरतिमुनिमेंधरि॥ तबजाइ दरसैदे
 धरनहीअधिरअरूपअबाया॥ निरगुण
 रंतरियाया॥ यजेगिगनिमगनमनलोई
 महारिसमिहोई॥ १२॥ धिहनहीअधिरसरम

नहीसीग॥ बयनहीविषावेदनहीरोग॥ जहांप्रगटे
 हाअसीकरे॥ अवरणाअगनिविषावनवरै॥ १३॥ आसव
 वासमोहनहीमाया॥ ग्यानविग्यानधूपनहीबाया॥
 मकिंवाडीकलस्योयोडाहैतोसहीलहैजोकोडा॥ १४॥
 सेकटनहीसरंमतरमनहीतेद॥ जवरानहीजुराकंध
 नहीबेदा॥ सकलवियापीसबतैहरि॥ अवरगतिजहां
 नरधरि॥ १५॥ बलनहीअबलच्यंतनहीचंदि॥ घटपट
 अघटनरमनहीताहि॥ तजिअनिमानअगहैयोगहण
 जागिलागिसनउतमनिरहण॥ १६॥ डरनहीनिडरनि
 रगुणनिजरूप॥ उदेनअसतसीतनहीधूया॥ धरनहीअ
 धरयुरियनहीनारि॥ परयंचप्रीतिजीतिनहीहारि॥ १
 ७॥ नरहरिनरनजनअहैनिसिकैरे॥ ताहिजालेअगनि
 समास्यामैरे॥ सेकटियडांसाथिरुघनाथा॥ जहांतहां
 जनकैसिरिहाष॥ १८॥ जलटापेलिअपूठाआवाजेसीच
 यतिसानरिजाव॥ निरंनैनिजनांनिरंतरिरहण॥ साय
 णिटसेनप्रलेनबहणां॥ १९॥ अनरथअनततहांजीव
 इ ताकौप्रपसदासंगिवाडा॥ जहरदाठकंठिलागीदोडा

रामनज्जांतरनिरविषहोइ ॥२०॥ वेसिनिरंतरिअल
जागै ॥ आसणअसरअगमघरियावे ॥ न्यारहेनधा
नयाइ ॥ मनसाचलेनप्रघरिजाइ ॥२१॥ ब्रह्मअगनिमै
कायादेहे ॥ मनचंचलनिहचलहोइरहे ॥ कामक्रोध
काऊडै ॥ जेजीर ॥ प्रमसंधतहां जालनकीर ॥२२॥ नार
रनहीअगमअवेह ॥ धरतीवरसेअसरतेह ॥ तिमल
रअपारअनंत ॥ तासुधिलागिरहेसबसंत ॥२३॥ निगा
आगमगरगमिगंसहोइ ॥ पत्रंतनीरलेअमरधोइ ॥ रंमत
रंमनिरंजनगाइ ॥ राधीवसतसाहकौयाइ ॥२४॥ प्रमज
दारअनंत ॥ अवरणवरणअगहसगवंत ॥ उलटीगं
गजमनमैआणि ॥ तोहिपिबांऐंतांहिपिबाणि ॥२५॥
ग्रहवननहीतहांमठबाइ ॥ बंकनालिइंसिरतयाइ ॥
ग्यानगुफामैआसणकरै ॥ जोगीजीविजोरामरै ॥२६॥ नव
सागरडरअनंतअपार ॥ तातिरवेकौंइहेविचारैमन
विषबाडिविसंनरनजौ ॥ कामक्रोधविषयाविषतजौ
॥२७॥ प्रमानंदप्रमसुखसार ॥ ताहिनजौसजितजौविकार
जामणमरणजुरोनेडरणां ॥ अबमरिसाहिवमारगिसि
रधरणां ॥२८॥ काहंसूरबीरकाकाम ॥ कायरकदेकहै
नहीरंम ॥ मंडिसंग्रामघावघटिसहे ॥ पदलजीतिप्रम
गतिलहै ॥२९॥ जुगमैइहजोगसंग्राम ॥ कौईकरैआयां
कामऐयासाचौयडिऐसारि ॥ अबकैजीतिजाइजावे
हांरि ॥३०॥ जनहरीदासकहैमंतएह ॥ बडनिधिहाथिव
दीनरदेह ॥ गोबंदनजोरंमकीआण ॥ बडडिनलोगेजं
मकावांण ॥३१॥ ॥८॥ अष्टपदीजोगेग्रंथलिख्यते ॥ हंसहैरं

वअनंता जटानजूरयांचनहीतता सकलसमीप
 अकलनिजनामी प्राणउधारगहरगुणग्रामी आदि
 अंतिहरिकाहरिजाणै स्तनिरूपबहोबाणिकबाणै
 आदिनअंतिलहेकोईसेवा सुरतिसंबाहिप्रमसुष
 लेवा अगंसअथाहथाहकोपावा तारुसंसदतिरण
 बतधरिहै वारनपारकहांलोतिरहै धंधीउलटिगि
 गनिकौधावे उंचाअगंसकोणगमयावे वेलापांचमि
 लांबणिमेला सोप्रमजोगकाघरमेंषेला अगंसनेद
 आगालगु हरिप्रमसंनेहीसीइ अबमनतहांबिलं
 बियास उलटिनपूवाहोइ बतसनांबनिरंजनअंब
 गतिराया प्रमउदारप्रमसुषबाया तरवरअकल
 अकंसफलरूवा वंचाबेखरहैतहांस्वका कांमीका
 गउहंनही आवै आसाकीचउलटितहांजावै सकल
 समीपअकलनिजयावा अवरणवरणनिनिनहीता
 वा सबसूएकरंककहांराणा दुषयावैतेकरमबंधा
 णा करमबंधाइबहोतदुषयावै चत्यादिसाकरिषी
 टायोवै षोटायाइमूलमतिहारे रखेनबूडिसेकुलके
 गारे कुलकरत्तिकहलोकंकरिहो जांमिजांमिजांमो
 फुनिभरिहो प्रंधंपंचप्रीतिमोहनहीदोहा सरणिउ
 दारप्रमसुषसोहा हरिसफसफागहगरागंतीरे न
 हीसोषीरनहीसोनीरं निरंमैनिरगुणनिराकारंमी
 वानहीनहीसोषारं तसपरिवारपितानहीमाया नाग
 हकरेनकाइजाया आदिअंतिथाउपजिनआया जो
 उपज्यासोसहजिबिलाया सहजिबिलाइतहांसतिना

ब्रह्मेसममिदेषिमनमाही॥ नही आवेनही जाइगा॥
आवेजाइसओर॥ दोहनिराकारनिजरूपहैस॥ व्यापिर
हासबतोर॥ धा॥ तहांसीतनधूपगामनहीगंमं॥ प्रमसेने
हीमनविप्रांमं॥ दिष्टिअदिष्टिनेदअनेदं॥ तरवरमूलडा
लनहीबैदं॥ अजरअरीऊआसनहीयांसं॥ उतपतिषयति
नांवनहीनांसं॥ व्यापकब्रह्ममोहनहीमाया॥ वेहदियड्रां
नेदनलपाया॥ अगटगुपतगुपतगोपालं॥ संकरइएक
लकाकालं॥ अगंमअरूपसंसोवहीसोगं॥ नावनिरंयर
नोगनरोगं॥ हीरहेमवारनहीयारं॥ संमदनगिगनवेद
विचारं॥ मूलअमूलकरमनहाकाया॥ अंतरिअगोहपरम
सुषयाया॥ सकलसमीपसकलसुषा॥ सकलनवणपति
राइ॥ अबमनतहांबिलंबिया॥ तासुअमैरहासमाइ॥
॥ ५॥ याओसरिहरिकाहोइरहिये॥ तं वणरच्यासोचूधर
कहिये॥ नांवबिसंभरबिसयतिरावा॥ पूरणब्रह्मपति
पतिपावा॥ करताकरणचरणचित्तधारं॥ क्षंमणिदिष्टं
जेतिउजारा॥ निजनिरलेपनिकटिनिराकारं॥ अगंमअ
षंडितअगंमविचारं॥ सिसप्रकास्यातिमरविलाया॥ म
ननयागनपरमसुषयाया॥ देवारिदेवतहांमनधरिहे
हरिनिरसंधनिकुलनिरधारं॥ अंतरिनिरंतरिनिकटिन
नारं॥ निधियाईनिरभैनया॥ निधिप्रमसनेहीगंमं॥ पांणी
मांहपिसिकरि॥ मनयायाविप्रांमं॥ दागहिमनगोनअ
गमकौंधावे॥ ऊंचाअगंमकौणगमियावे॥ घटिघटिअघ
तसकलघटिसौई॥ अगंमितासलहेजनकोई॥ उलटाये
सिसहजिघरिआवे॥ धुनिभैंधांनतहांमनलावे॥ अबगति

प्रमत्तप्रमणानप्रमथानाप्रमतेजप्रमजौतिप्रमधाम
 प्रमविश्राम॥अधरअमरअहलअजर॥अतिरअथिरअ
 शिरअपरअपारअधरमीगामुधर॥अरंगअअंगनिअंग
 निमोहनिबोह॥निमैगानिजोगनिरुतिनिबोग॥संजो
 गविबोगसंसांनहीसोग॥रूकानहोसीनआवेनआया
 नाजनमेंनजीवेनमायानबायान॥जागेनसौवेनतूआ
 नधायान॥उठेनबैसेनरीकेनक्रोधन॥जपहीनतयही
 नधामेंनबोधन॥इंडीनततहीनगोतेनधातेन॥बनि
 तानसुतहीनजनमेंनतातेन॥अलक्षपुरिषकीआवी
 बहर॥करेबंदनांकोइ॥जनहरीदासकालबाणलारो
 ही॥हरिनजिनिरमलहोशामनउनमंनिलागारहे॥
 हांसज्याकहाप्राता॥जनहरीदासतासाधकौ॥जंमक
 रिसेकेनघाता॥सिधसाधिकबंदनाकरे॥ग्योनध्यानध
 रिदेया॥जनहरीदासरोकअमरफलकरिचया॥हरिअ
 परंपारअलेया॥१॥बोटीबंदनाजोगग्रंथलिख्यते॥॥
 निरंजनायंनिमोनिराकारकीबंदना॥नमोनमोप्रब्रह्म
 प्रमगुरआत्मांआंस्यास॥प्रमात्मांआलोकना॥आनेद
 प्रमानेदा॥सकलसिधसाधिकान्सकार॥नमोनमोनमंतां
 रमा॥नाराइणनिरसिधसकलनिरंतरिनरहरिनिरबो
 एनिरविग्रहा॥नमोनमोनिरांमैनिरविकार॥स्वयंब्रह्मस
 कलबियापीनिरंजननिराकार॥जनहरीदासबंदने
 कंकार॥अतिनासीअपरंपारउदार॥१०॥निरयया॥
 तजोगग्रंथलिख्यते॥॥

काम १ जन्मसुखसमाहका कलहकासारग
 हीडीयदत्तक तोमनीवपतंग २ काहकाप्रद
 दे हरियेडगाजाइ मनयाजनमअनयदे मन
 दतदरिगुगाइ ३ कामकोधतिमनातजा त्रिदि
 तापगुगावद साइकाममरणकरा प्रमसयाणापा
 ४ मनअपाणास्पकदतड, अपणां ज्ञानविचार
 विदतजिसरंमकहा धसिमतिवृद्धेधार ५ विषय
 ६ वडमिरतकह कनककठारामाहि यांमरणकीमे
 जेदे यांविमजीवनाहि ६ तिमबासगियांजुरा म
 सांयकहागवार तानवतजिमंतमनी तजिमना
 ततसार ७ पांचोददीफरिकरि सुगतिसहजघरि
 धारि अनतसाधआंगचत्या मोईगदसतारि ८ मो
 हदोदकीअगानमुचि दाकतहेजीवजाइ जलतजल
 ततरमतफिरत यादीगयाविलाइ १० सूतामस्वम
 जातहे जाणारकराविचार हरियमसजहीप्रमसुख
 अगमवारनहीपार १० जोणीजोगेजुगसांवे मोहम
 हतमेजाइ मोदमदतमेअरपहे जबसांवतवयाइ
 ११ मोवाणकामुअआरहे जागाणकामुअओरजव
 जाणातबाएकर्मसु तहांसाधाकीठार १२ जीवजोगी
 जांगसदा कबहुसाइतजाइ अहिआरतिलागारहे
 धुनिंमेध्यानतगाइ १३ सायाकेरशिरियकहे बाता
 कहेतददोइ गमरसाइणअजबहे पांवेअरसिया
 हीइ १४ कडेस्वामीकडुमेवाणी सायादापरिमृति।
 लडतजुडतयोहीकरत गयाकिताहीमृति १५ सर

कटकाकरकवगला॥ मूविदर्शकंधमांदि॥ मूठीठाडा
 बूटिहे॥ घरिघरिनोवेनांदि॥ १६॥ कुंजरकेसैसैडरो॥ सोड
 रसहानजाडा॥ कांमहेतियरवसियह्या॥ वेडीलागीपाघ
 ॥१७॥ काकुंकेरसरहत्तिका॥ काकुंकेरसकांमा॥ काकुंके
 रसजोगका॥ हरिजनकेरसरंगमा॥ १८॥ काकुंकेरसग्यांन
 का॥ काकुंकेरसनांदकाकुंकेरसभांमणी॥ काकुंकेरसव
 द॥ १९॥ काकुंकेरसभांनिका॥ काकुंकेरसनेया॥ काकुंके
 रसबैरता॥ सदातिरंतरिरेय॥ २०॥ कैलाजलिकालासया
 बकुंडिकसोटीयाहि॥ अग्निदीयांतेंप्रजले॥ कसररक्षिकु
 षमांदि॥ २१॥ कसरमनिजहातहाबसे॥ जाणेविरलाकोइ
 सोघाआटेलोणजे॥ केसैन्यारीहोइ॥ २२॥ जिनिस्वोहरि
 क्रियाकरी॥ अयणेंअंगिलगाजातिनेकेअंतरिहरिवसेहरि
 विणिकबुनसुहाइ॥ २३॥ तनमांहीतीरथनता॥ तद्वाम
 ननिरसवहोइ॥ यांवेडुंडीकेरिकरिपूर्वतेविरलाकोइ
 ॥२४॥ कायामांहीकेवलदल॥ तहांवसेकरतारअवरण
 वरणअगहअकह॥ अगसवास्नहीपार॥ २५॥ कायामांही
 कंकलदल॥ तहांवसेनगवंता॥ जनहरीदासयलेतहां॥
 कोर्बकोईविस्वासता॥ २६॥ पत्रंनयलटिनिरंतनया॥ गिमा
 निपडंताजाइ॥ कालवोटचूकेनही॥ अतिपडेनयाइ
 ॥२७॥ भरमनेमतीरथवरत॥ अटपटपूजाअंन॥ जापजि
 गतपस्यातुला॥ ऐजनकेजहरसमांन॥ २८॥ दिनिमार्द
 सेजको॥ एकसबदविसतर॥ कुंवरंतचअवरवरण॥ नो
 र्थोहविकार॥ २९॥ ककुंइमिरतककुंइजहर॥ ककुं
 ककुंइगाघ॥ ककुंमारेककुंमारिये॥ ककुंमारे

३० कऊं ही हकऊं घटितरक बाल विरधकऊं के रद
 कऊं नारी कऊं घटियुरिय कऊं रोगी कऊं वेद ३१ कऊं
 सूकर कऊं स्वान गति मोर मिरा उरग काग कऊं जो
 गी कऊं भोगीया कऊं रोवै कऊं राग ३२ सुद्वेसषत्री
 विप्र कऊं मंडली कऊं तीर कऊं निरनै निरखेरता ॥
 कऊं जाली कऊं कीर ३३ है वरषर कुंजर गहर कऊं
 कायर कऊं सूर कऊं राजा होइ राणै मंडा ॥ दहदि सि
 वाजे तर ३४ सीत गल बरिया कऊं जब चेतन बऊं ज
 ति कऊं दिन कर अमर अरक कऊं सि सहर कऊं राति
 ३५ करामा ति देले कऊं पिकं बर कऊं पीर गुपत प्र
 टविचरत फिरत कश्चीर घसुल फसरीर ३६ अर
 सिधितो निधिसुन असुन कऊं कंचन कऊं काच कऊं
 धार जहरि धाने मै ॥ कऊं विकलय विटवाच ३७ अरथ
 गरथ अगम सुगम सिधसाधे गहितोड ॥ रोमन जन सुष
 अगम है ऐ सबवैली दोड ३८ धर अंबर तारा ति मर ॥
 प्रिसरस मंद अथाह कऊं दांता कऊं यो मिले कऊं टोला
 कऊं लाह ३९ सबद सबद पै नै चले सबद सबद कौ या
 द ॥ सहसह कौ यो षदे सहेसह समाद ॥ ४० दोइ सहदी
 सेंडर सि ऐकक है सो कौण ॥ अथिर सबद अवाति मिले
 सि यरद सौं दिस गौण ॥ ४१ वेद सबद का नैद है ब्रह्मस
 वद सुष और ॥ ब्रह्मसवद पै वेदकी क हो कहां ली दोड
 ४२ वेद सबदकी मूर्ति मत्त जहां तहां चलि जाइ अगम
 सबद स्पूमन मिले ॥ तौ अटपटक बून सुहाइ ॥ ४३ सप
 तपुरी नर मंत फिरे ॥ नो कयर नर मं और ॥ राधार सगोपी

चिरता ॥ इह वेदकी दोड़ ॥ ४४ ॥ अघटक है त है घटधस्या
 घटि धरि अघटन होइ ॥ वेदकथा सवसंमकि मना इष्टक
 है त है दोड़ ॥ ४५ ॥ इव आदिलकी इरि करि ॥ इह जोणिजी
 वसाहि ॥ मयाकारंग अनंत है ॥ प्रमेसुर दोड़नां हि ॥ ४६ ॥
 साधसुमरिस दगाति नया ॥ प्रापरेयति एक ॥ प्रमेसुर दोड़
 कहै त है सा ॥ मन अयणी कीटिका ॥ ४७ ॥ मनसजनतौ स्यौक
 हो ॥ समकिरकरो विचार ॥ सऊऊबउखुद देखिये ॥ दोय
 कहै करतार ॥ ४८ ॥ नातिहेति हरिवयधस्या ॥ तरंमकर
 एको इरि ॥ तोकरता सबलक तरंमधौ ॥ तरंमएसा तरं
 रि ॥ ४९ ॥ इह देतडुनियां इहै ॥ मारेयोसेयां हि ॥ समरथ
 कीबाजीरची ॥ घटेवधैऊछतां हि ॥ ५० ॥ बाजीसुं बाजीर
 मों ॥ करिकरिनां तां रूप ॥ कऊं ग्रासेकऊं ग्राशिए ॥ सहर
 साहकऊं नूय ॥ ५१ ॥ नहीहीइ स्येबिरता ॥ नहीमुसलमां
 नसोप्रीति ॥ सबऊबकरिसबते अगमा ॥ यासाहिवकीरी ॥
 ति ॥ ५२ ॥ तरकक है मंकातला ॥ जहांसाहिवकीठोरा ॥ हीइ
 जाइसुषराबस्या ॥ इहदऊंकीदोड़ ॥ ५३ ॥ हीइ थापेदेऊंरा
 मुसलमांनमसीति ॥ पयापयीजुगपवतहै ॥ इहदऊंकीरी
 ति ॥ ५४ ॥ मुसलमांनरोजाकरे ॥ हीइ ग्यारसिआन ॥ मेंबडमें
 बहहोतहै ॥ इहबडाहैरंन ॥ ५५ ॥ हीइ चाल्याचीरथा ॥ तर
 कयीरतहांजां हि ॥ दिलमांहीदीदारथा ॥ गोतामांस्थानां
 हि ॥ ५६ ॥ जिवहकीयां वकरीनिस्ति ॥ लिखीकतेवांसां हि
 तोअपणांगलाकटाइकरि ॥ निस्तिबसोक्योनां हि ॥ ५७ ॥
 अपणोकरिकांठाचुने ॥ तबकावांहीसुयहोशायो
 नसोवेरंनहै ॥ वातकहैतहैदोड़ ॥ ५८ ॥

रै तब काजी के उरियीर यों प्रमे सुर सब का पिता । न
न मां नै बीर । पण गाद्र निस्ति सुर गी निस्ति । जिव हव
या जीव और ऐ दी जिग में डुरत है । नही निस्ति में वोर ।
६० । मनिय मरै तब जालिरे । जालिर न्हा वण जाहि ।
ही डूकी करणी कहां । मारि मडा कौं यां हि । ६१ । मै रू अ
गे व कर । नैसा मोरै जाइ । वां व ड चं ता डफणी । मां ही
वै ती याइ । ६२ । पया पयी मन बाडि दे । निरय य के सुष दे
य । निरय य सूं निरय य मिले । तो परण ब्रह्म अलेष । ६३ ।
पया पयी मन बाडि दे । निरय य मिल्या न जाइ । जो क व
ड निरय य मिले । तो निरय य य कौं याइ । ६४ । नही
उप जे नही य ये गा । नही आवे नही जाइ । सब क क करि
सब ते अंगम । जहां तहां रहा समाइ । ६५ । मन सब का अ
सवार है । ये डा करे अनेक । मन उरि असवार है । विं
रला कौं ई ये क । ६६ । जन हरी दास में दान में । मन अप
ण दो डाइ । दसों दिसा सूं फेरि करि । अंगम तहां लेलाइ ।
६७ । जन हरी दास मन मां बली । माया का जल मां हि । ज
बही बिबुरे तब मरै । ताते बिबुरे नां हि । ६८ । जो हुवा
सीर है । था सीर हा समाइ । जन हरी दास आवे मते । त
हां र हो लोलाइ । ६९ । ११ । प्राण प सि धि व मां त्सा जो गयं
य लि यते । अवधु जो गी जु गते नारा । घंटे न बधे सदा ज्यो
का त्यो । रहे सकल ते नारा । पहली हुवान पां धे विन
से जा गित हां मिलि रहि रे । जामण मरण जु र भै जम डं
ड का है कौं सिर सहि रे । ७० । तर वर संसार विविधि फल ला
गा । जीव तहां सब जीवें । उप जे य धे व से ता ही में । मगन ह्सा

प्रथमै॥३॥ कहिये काहिको एयाह मानै॥ यऊरस सबको
 ॥ वै॥ एक आध सापणिका सुत ज्यो॥ अदिष्ट होइ सुखया
 ॥ ४॥ यऊ सुख तजेन दासुयिलोरो॥ जागत जाइत जोणी
 ॥ कुं वै कहं हरि वेगं मपुरि॥ बी विगहर मणायोणी॥ ५॥ स
 ॥ द सुणें सुणि साच पिबांणै॥ जोग मूल गाहि जागै॥ उलटा
 ॥ लिय म सुयिय कुं वै॥ माया बांण न लागै॥ ६॥ निरय अ
 ॥ वसत निजरि मंगये॥ यय दोम्यो प्रयो वै॥ सरम सिला अ
 ॥ रिउर तैये से॥ अबला उदरि न सो वै॥ ७॥ काया कर म नरम
 ॥ करि कं नै॥ निज विप्रामून लहिपै॥ आत्म के अस्थानि न प
 ॥ कुं वै॥ तब लग प्रते बहिऐ॥ ८॥ यय कीया सिप चत है सध
 ॥ को॥ सत पुरियां स्योइ जा॥ बाहरि भेष दसा तनि मिर तरि
 ॥ नर आदर की पूजा॥ ९॥ नर ओ तार जात है हरि विणि॥
 ॥ संती सेऊ न सोई॥ आह बांतां कोई पारि न यकुं ता॥ साध
 ॥ कहै सब कोई॥ १०॥ यऊ सुख बाहिये र सुख आगै॥ वात
 ॥ अगं म की कहिये॥ है हरि अगम निगं म तें न्यार॥ गुरि गम
 ॥ किं तो लहिपै॥ ११॥ जे से कहै र है नीते से॥ चित ते सर सन आ
 ॥ णै॥ ये डा करे म रे न हा मा स्या॥ यं ध पुर त्त ज्योणी॥ १२॥ यऊ
 ॥ वै धि थान बिय बनि ये से॥ वय त जिव सत विचार॥ निर
 ॥ भे ना ष न जि न जि निर ते॥ वा जी स्प ये लिन हारे॥ १३॥ वसि
 ॥ दर वारि म रि सि मां ह व करि॥ अगं स त हां स न र्द जि रं मा
 ॥ बि सारि सोई मां हरि न जि॥ अवधि वेटे त न बी जि॥ १४॥ अ
 ॥ तरि ओ र क है कुं ब ख्ये री॥ अर य अर य ही वृ के॥ सब द क
 ॥ है ता हि रां दिन को ले॥ सा च सब द न हि स रं १५
 ॥ आ दे न स व को सो धे॥ अग म अर य न रि धो र

सोनमोहतजिमैतै कांमकौधरियमारे ॥ १६ ॥ सतगुरस
वद आधिसंगिसा ॥ १७ ॥ कवे नरंमिनलागे नवषंडपड
मयलटिमनउनमनउनमनितो वनिरंडरलेजयो ॥ १८ ॥
निरत्तेवसतसकलविसव्यायी ॥ घटतजिअघटविच
रे जोगीमरेतजोगीजीवे ॥ हीएजनमनहारे ॥ १९ ॥ आ
सणअचलमेरगिरउपरि ॥ मनहसतीगहिवांधा ॥ २० ॥
लटाचत्यासकोडि ॥ पडता येडेयारिनलाधा ॥ २१ ॥ स
सउसासिअगमअरिजीत्या ॥ जागिप्रमगुरयाया ॥ अ
धरअरेयअथाहअंभंडित ॥ नावनिरंजनराया ॥ २० ॥ व
सधाजीतिबांसहेमकीया ॥ ववरियलककीजाणी ॥
अरयविचारिआंकसरिउलटा ॥ सुयमेंसुरतिसमां
णी ॥ २१ ॥ जोगीजागिनसोवेनिसदिना ॥ ग्यांनगुफामेअ
या ॥ नेरूकीलिकसरसवकाटी ॥ सूताबीरजगाया ॥ २२ ॥
ग्यांनगुदडीसहजिनिरलंन ॥ पिसंणयवंनगहिवांधा
गंगजमनमधिआसंणअवधु ॥ चेलैसतगुरलाधा ॥ २३ ॥
अधिलअबैहनिरूपनिडरघरा ॥ फेरितहांमनलाया
नलनीकांकासूत्राकीनांई ॥ आपहाआयबंधाया ॥ २४ ॥
ध ॥ नांविषगहेनइंमिरतबाडे ॥ यापयुनिदोददजा ॥
साधधरमिसंचरनहीयाडे ॥ तीअबगतिकीयूजा ॥ २५ ॥
प ॥ आलसकरेनआरंनिलोगी ॥ ताकौंजमआइनहीमारे
अजराजरेअरीकरिकावे ॥ जीतणकौंययेनहारे ॥ २६ ॥
निरत्तेनयागयाडरडरता ॥ साचसबदंमेयाया ॥ चिता
लेनाथगुफामेवेवा ॥ तहांकुबअलवलययाया ॥ २७ ॥
चंदसूरसंमिसुरतिसहजिघरि ॥ अरथिअलुधीआन

सा प्रमजोतिप्रकासप्रमसुखातहांहंमारावासा॥२८॥म
 ननिहंचलनिरनैस्त्रियेलागा॥रहैसकलतैन्पारागांगाम
 लअमूलअधरघरा॥तहांपडिरसाविचारा॥२९॥जह
 जहांवरणतहांबहुबंधण॥कालकहरकीबाया॥अ
 वरणअगमसंगमजबसमंज्या॥तनहीमेंततपाया॥३०॥
 सतरजतंमगुणरजारहितरसा॥तहांबिलंब्याचीया
 चेलायांचयसरताघाका॥रसहीमेंरसपीयां॥३१॥कह
 णखणणसुखतैसुखअरी॥अगमसहरहैलोई॥तहांब
 सेताहिदाणनलगी॥पुंकेवैबिरलाकोई॥३२॥यामनतै
 मनओरअगमहै॥सकलवियापीसारा॥प्रमसुंनिय
 वांणनकोई॥निजविश्रामहमारा॥३३॥साथसवाहि
 सहजघरिराये॥बंकनालिरसपीवै॥इलापिगलासुखम
 निसंमिकरि॥प्रचैलागाजीवै॥३४॥रंमदयालदेवकरण
 में॥प्रमततयतिपूरा॥अरसयरसआनंदअतिअतरि॥
 बाजैअनहंदतरा॥३५॥प्रमजोतिप्रकासप्रमसुख॥१
 आत्मअतरिलहिये॥कंमकयाटनरंमकरिकाने॥अ
 गमतहांमिलिरहिये॥३६॥आसणबाडिपांविणिउडा
 अलषविरयघरयाया॥रसफलयाद्रबहुडि॥मतरसिया
 सहीमांहिसमांया॥३७॥उलटापवनअकासिपुंता॥
 अकरसहाकरहीया॥प्रमनुदारअपारअषंडिता॥बास
 तहांहमकीयां॥३८॥आसामैठिनिरासनिरतरि॥गुरगं
 मिलीगेलालाधा॥बादलविणिबीजबोममैचिमके॥घ
 णवरयाबनदाधा॥३९॥इंदीमनपाणअरथके
 आंमतहांफिरलागा॥धुनिमेंध्यानप्रसिपद

मगया नौजागा ॥ ४० ॥ मननिहचलनिरधारितिरंत
मंडमूलाविणियाणी ॥ यद्यदोर्णोपरलामेंबूडा ॥ धुनि
धजासमाणी ॥ ४१ ॥ आसयाअवंतफिरैथाफेसा ॥ रावे
सोगया ॥ यास्यप्रसिनयानिहकंवन ॥ निजविप्रोमेस
साया ॥ ४२ ॥ जोगनसोगजुराभैजीत्या ॥ त्त्वलिपद्राभैना
सूनिमंडलमेंसकलवियायी ॥ प्राणवसेतासाही ॥ ४३ ॥
कटनहीसरमकरेसनहीअकरेस ॥ धरेअधरघस्या
तासुयिलागिसहजमनसूती ॥ बोलेनहीबुलाया ॥
म्यानतध्यानजोगनहीजोगी ॥ सहीतहंभारूनवेला ॥
टेनबधैसदाज्योकात्तो ॥ अरघअनाथअकेला ॥ ४४ ॥
रणब्रह्मअलयहरिअरिवित ॥ रूपअरूपअवायाव
रतीरज्योसकलनिरंतरि ॥ नोतसकालतकाया ॥ ४५ ॥
रागदोषरसमेंतैनाही ॥ जीवजनमनहीजोगी ॥ अंग
संगतनिरंगनिरंघर ॥ नासहोवेदनरोगी ॥ ४६ ॥ अरक
अथाहउज्यागरअरिरिय ॥ सतसुरिसाचबतावा ॥
नसाचलेदयक्रमनबाडे ॥ प्राणनाथपतिपाया ॥ ४७ ॥
धपतनहीबिधावरणतहीअवरण ॥ म्यानध्यानतही
हजा ॥ नाअनिरंजवतिरसेजोगी ॥ तहांदुसारीसुजा ॥
गोनविचारबिबेकअगमाति ॥ वारपरनहीलहिये
हरिहरियासुषदेविदसोदिसि ॥ तहांगमासारहिपे
॥ ४८ ॥ जलिअलिजहांतहांकरणांमें ॥ रद्वैसकलतेना
राजनहरीदासमनिउतमनिलागा ॥ सुरगमिअगमवि
वारा ॥ ४९ ॥ सबदेवांसिरदेवदयानिधि ॥ द्वियेनकाहूब
या ॥ जनहरीदासमनतासुयिलागा ॥ सतसुरिसाचबता

॥५२॥ १२॥ जोगसमाधि नोग गथ लिप्यते ॥ श्री धृजोगी
जुगतै न्यारा ॥ यदनिरवाण निरंतरि वैवा ॥ चिताका करि
चारा ॥ १॥ सबद विचारि सहज धरि वैले ॥ नाव निरंतरि ज
गो ॥ मनसा डाकणि मारती मारे ॥ तो नगरी चोर न लारी ॥ २
इडी कसे धसे मन दह दिसि ॥ मनको अटक न राखे तन
पाटण तहां मन मै वासी ॥ नाना विधिर सचाये ॥ ३ ॥ चिताको
विता फि रियासे ॥ अगनि अगनि को सोखे ॥ जल विणि नहा
रि निरंतरि वैले ॥ तब मन पडे न धोये ॥ ४ ॥ तन जीते ताको तन
इसे ॥ ततर हे गणाते जूवा ॥ जाणो गाको ईजो रोस्वर जाघा
टिप चाकवा ॥ ५ ॥ अधर अगमको ई बिरला प कुंचे ॥ सतगु
रिसा चबताया ॥ जा सुषको हम न्यारा कहता ॥ सो सुषने
डायाया ॥ ६ ॥ दांणी मारि दांणी मे दीया ॥ अयण मूल न हारो
पूजी रहै बिपाजे त्यो बिण जो पेडा अगम अयारो ॥ ७ ॥ नंग
ह करौ न बन बसि नरमो ॥ घर माही घर पाया ॥ सो घर सक
तघरो तै न्यारा ॥ ता धरि प्राण समाया ॥ ८ ॥ पगटी सब धिक
धिकं गा यूटा ॥ सरं म गया ते हारो ॥ अजन साहि निरजन द
रो ॥ अणैक था विचारी ॥ ९ ॥ नीच कर म न्यारा हम न्यारा
या अचं चा नारी ॥ ये डे चलो न का टालारो ॥ उलटी पय सवा
॥ १० ॥ गणगत गया मिल्या मोहि निरगुण ॥ निरगुण मय
रन पारा ॥ सहज समाधि पवन गहिया वै ॥ हम दकु ययां
न्यारा ॥ ११ ॥ मै मेरा मन अकलि उजाले ॥ अगम तहा लेला
बलटा चटां अनल का सुत ज्यो ॥ सहजे स्तनिसमाया ॥ १२
वले सपारि प कुंचे ॥ वे सिरहे सो हारो ॥ अरथ कीयां अ
य सब बूटो ॥ डोसा अरथ विचारे ॥ १३ ॥ सील संतो यद

म गया तो जागा ॥ ५० ॥ मननिहचलनिरधारिनिरंता
मंभमूलाविणियाणी ॥ यद्यदोर्णोपरलाभेवूडा ॥ धुनि
धजासमाणी ॥ ५१ ॥ आसंणअवंतफिरेथाफेस्या गा
सौगाया ॥ पारसप्रसिन्नयानिहकंचन ॥ निजविश्रारे
साया ॥ ५२ ॥ जोगन जोग जुराभेजीत्या ॥ तूलियद्गा
सूनिमंडलमेसकलवियायी ॥ प्राणवसेतामांही
कटनहीसरमकरंमनहीअकरंम ॥ धरेअधर
तासुयिलागिसहजमनमूनी ॥ विलेनहीबु
ग्याननध्यानजोगनही जोगी ॥ सहीतहोगर
टेनबधेसदाज्योकात्यो ॥ अरथअनाथ
रणब्रह्मअलयहरिअरिचित ॥ रूप
रतीरज्योसकलनिरंतरि ॥ नांत
रागदोषरसमेंतैनांहा ॥ जीवज
संगननिरंगनिरंषर ॥ नांत
अथाहउज्जागरअरिरि
नसाचलेनयकमनवा
वपननहीविषावर
हजा ॥ नाथनिरंज
ग्यानविचार
हरिहरिया
॥ ५० ॥ ज
राज
वारा
या ॥ जनहरीदासम

दमोतीफिर सोव्या ॥ मंठ मूवा विणियांणी ॥ गोपीतजिका
यापिठोणी ॥ २७

नेकलकेतोआधा ॥ २८

लोचनलाधा ॥ तरवरपातफूलफलडाल
॥ धुंजेधणकवलदिसरलागा ॥ लोरा ॥

नंबकिस्यंघजगाया ॥ कुंजरमं ॥

॥ श्री सुसाहंमारे ॥

॥ मांनिअमांनिअगानि ॥

॥ स्वरनरअस्वरसंघास्यां ॥ जोमारराजीतणके ॥

॥ न्हानउहानिकटिनही ॥

॥ सोईतिरसेनिजनाथस ॥

॥ २७ ॥ उपजिनबिनसेजुरानव्या ॥

॥ सोईतिरसु ॥

हमारे ॥ २८ ॥ नांतसमोहदोहपणिनाही ॥

नाही नं ॥

छाया ३॥ जोगनसोगनिकदिनहीन्यारा ॥ उदै असत्त
 इनाही ॥ मैतैतजैतजैगासोई ॥ व्यापिरहासबसांही ॥ १
 घणांककतोकहणांनवे ॥ थोडाकहौसयारा ॥ घटेनव
 धेसदाज्योकात्तो ॥ रहैसकलतैन्यारा ॥ ४१ ॥ जनहरीदा
 सयतिप्रसिप्रमसुय ॥ ऊडांसहजमैताला ॥ जोगसमा
 धजुरानहीव्याये ॥ जाघटिअगंमउजाला ॥ ४२ ॥ जुरान
 व्यायेजोगियां ॥ चिंताकालनयाइ ॥ करंमभरंमधूर्इकी
 या ॥ तासुयमैरहासमाइ ॥ ४३ ॥ सुयअगाधसबतैअगं
 म ॥ यऊंचैविरलाकोइ ॥ जनहरीदासतहांथेलिये
 तबहीआनंदहोइ ॥ ४४ ॥ जोगभैयसतगरिदीया ॥ आ
 त्तकौनयदेस ॥ जनहरीदासमनतहांबसे ॥ जहांसं
 तनकाप्रवेश ॥ ४५ ॥ जोगसमाधिअगाधवरत ॥ पारब
 हस्योप्रीति ॥ जनहरीदासतहांथेलिये ॥ तनमनतिस
 नांजीति ॥ ४६ ॥ १३ ॥ जोगध्यानजोगप्रेथलियेता ॥ हरि
 देसतहांसोदाभैरा ॥ सतगरिआइजगाया ॥ येडैचलौन
 काराकागो उलटाराहवताया ॥ १ ॥ मनघरियांणप्राण
 घरिमनसा ॥ बंकनालिमेंबाई ॥ अगमअरथसोईकथा
 कहैतहौं ॥ सतगरिबसतबताई ॥ २ ॥ तनयाटणातहां
 वासहमारा ॥ नोडवारजडाया ॥ स्तनिमंडलमेंजोतिवि
 मके ॥ उलटायवंनचटाया ॥ ३ ॥ आवधबिणि संग्रामकरंम
 बिणि आरंभ ॥ त्रिगुणसखीसुतयाया ॥ जटायंधियांणीभैये
 ती ॥ मीनस्तेनिघरयाया ॥ ४ ॥ राजासयोरैतिरेतिनई राजा
 उपरिआसणकीया ॥ रूतियलयांरसफीकालागै ॥ ऐके
 रसवसिजीया ॥ ५ ॥ मीठाजहांतहांमनलागा ॥ फलकरि

कंनयारा ॥ घटिघटिचैनराजरसरेको ॥ त्रिनेनग्रहंमार
 ॥ विपुंणनिजनेदसकलतेन्यारा ॥ सकलनिरंतरिद
 ॥ घटिघटिअघटकरंमयटलागा ॥ विरलाकोईप्रसे
 ॥ कंनिणंआइआकासयास्या ॥ विणिवरियारूतिआ
 ॥ तारूतिसायसहजमेंनियजे ॥ अितीवियबावनलागे
 काई ॥ ६ ॥ काटीऊडे ॥ प्राणकंणनियजे ॥ विणिप्रवेकंण
 बीजे ॥ बूडेगदि किंनअयिग्रासे ॥ अिसाआरंभकीजे ॥ ७ ॥
 गिखरमेधातधातमेंपित्त ॥ गिखरिधातनयाया ॥ तेषत
 गेसेमतिकोईरूलो ॥ जबलगयऊमंतनआया ॥ १० ॥ चो
 सादोइचात्रिगयास्या ॥ निरययनिजरिसमाया ॥ सात
 भदमोतीमेंबास्या ॥ मरजीवालेआया ॥ ११ ॥ नोघंणघट
 बसतीष्ठांकी ॥ नारआंठारायाई ॥ चिंतायिंनणिगाजत
 कयो ॥ बसधागिगनिसमाई ॥ १२ ॥ गगरिकायांणीकूवा
 ॥ नयाअचंनाररी ॥ अलठीलेजअंगमस्योलागी ॥ यदि
 फगीयणिहारी ॥ १३ ॥ मेरडंडवाईचढिबेद्या ॥ जलमलअगति
 स्या ॥ मिटियायात्रिवधितिमरयातनते ॥ प्रमसंनिप्रका
 ॥ १४ ॥ सीमूतासगलाजुगसंति ॥ यडदायरहानहोई
 दिकंबलतहांअगनिबलतहे ॥ जागिनदेअेकोई ॥ १५ ॥ स
 प्रजतमगणकांमकोधमदा ॥ मोहदोहकसदीया ॥ याणी
 अैअगनिजलसोये ॥ अिसाआरंभकीया ॥ १६ ॥ मुद्रासब
 दसुबधिकंठिसीगी ॥ ग्यांनचक्रकरिधारं ॥ वेलायांचज
 दाभैरजराणां ॥ आसंणस्निहमारं ॥ १७ ॥ येडाअधरअंमर
 अंतरि ॥ उदबुदकथाअनेदं ॥ यिसांघटगलेअेसेयेलो
 अंममरणासिरबेदां ॥ १८ ॥ अजयाजायमंत्रमेंसी

चलहरिसबकाडं ॥ कालीनागण्डसंएनयावे ॥ गिणि
गिणिडाउयाडे ॥ १९ ॥ यांएमेयेसिनप्रसोंयांणी ॥ अ
गनिबसिअगतिगसों ॥ गुणांयेसिनिरगुणहोइतिक
सों ॥ आसाबसिरहोंनिरसों ॥ २० ॥ आरंत्तकरोंकरिरहों
निरारंत्तजीतणकोंयदोंनहारों ॥ बाडोंसाधनसाथी
राथों ॥ नामेंमरोंनमारों ॥ २१ ॥ अटकाअवोंनआएपाअ
कं ॥ चालोंनहीचलाया ॥ सोकंसहजिनहठकरिजागों ॥
द्वयारहोंनधाया ॥ २२ ॥ जोंआकाससहजगुणग्रासे ॥
गुणकोव्यायेनांही ॥ औधुत्तनमनअसेराथे ॥ जोंचंदाज
लमांही ॥ २३ ॥ साहिबअघटसाधसबघटधर ॥ कीमतिक
दत्तनआवे ॥ वारयारकोईमधिनजागों ॥ सबकोअगसब
तावे ॥ २४ ॥ प्रमपुरियप्रसॉनप्रमसुय ॥ परायरेयतिया
या ॥ जनहरीदासमनिउनमनिलागा ॥ सहजैसूनिसमा
या ॥ २५ ॥ यारब्रह्मयतिप्रमसंनेही ॥ समंदरूपसबमांही
जनहरीदाससाधसुधिलागा ॥ वारयारकृबनांही ॥ २६ ॥
॥ २७ ॥ ज्ञाणमात्रजेताप्रबलियादे ॥ ऊंघ्राणमात्रासुणो
होसाधो ॥ हरिनजनकासेद ॥ कामक्रोधकाकरिबाबैद
ऐकयहिरायिबायांचसाथी ॥ मतमेंमंतमारिबाहाथी
॥ २८ ॥ मेतैमोहदलजीतिबाजोगी ॥ जुरसैसेटिबायचंनरस
नोगी ॥ सबदकीगदहीसाससबधारा ॥ अचाहिकीसुई
लेसीवणैलागा ॥ २९ ॥ निरामेंमुद्रासीलसंतोषसंतिचेला ॥
आंनकीधूंइतहोसिधांकासेला ॥ ३० ॥ दयाधीरजडंडसाचक
रिगहिबा ॥ विचारकैआसणउनमनीरहिबा ॥ ३१ ॥ सुबधि
कीसीगीसहजकीमाला ॥ जतकीकीपीनतहाजोगका
नावा ॥ ॥

निस्सोहमटीनिहचलवासा॥जरणांकीजटासिरिदेषि
 वातमासा॥६॥निरासउड्राणीआकासकीछाया॥अधरउ
 ठिचलिवातजिकोमक्रीधकाया॥७॥नेदसिरिदोपीतन
 वाधेवर॥निरगुणजोगोटासुंनिवसतीतनधर॥८॥या
 तालकायांणीआकासकौंवडाइबा॥कलयनांप्रयणीय
 वेचमुयियाइबा॥९॥सतगुरसबदअगहअगमगरिधा
 रिबा॥ज्ञातकाचक्रलेकालकौंमारिबा॥१०॥बाराहसोला
 हकलाएकघरिआणिबा॥जोगकामूलसुडजुगतिसबजा
 णिबा॥११॥गुरकासबदलेनौरजगाइबा॥प्रयवेवईतजि
 अगमतहंजाइबा॥१२॥देखियावधारिबादयापेथकरि
 बा॥उदरतरिनसोइबाधातकरितधारिबा॥१३॥रहतास
 नाईबहेसबहणा॥अवधुगलटागोतामारिआकासमेर
 हणा॥१४॥अरथकीअधारीमिथ्याननायिबा॥निरजन
 मंत्राजतनस्यौरायिबा॥१५॥डीवीसबूरीऔरकौनवेबा॥
 आकासकीनिथ्यानावस्योलेइबा॥१६॥बाईनकलकेतर
 मसबबाड्रा॥प्रमतनप्रसतांमेरमधिगाड्रा॥१७॥बेसिनि
 रंतरिआरनकरिबा॥कायाकमंडलअमीरसतरिबा॥
 विंताडाकणिफिरिगईलाजे॥अनहदसीगागिगनिसुरिब
 तामेरेसजुगेजुगिजीवै॥अगमकापयालाठ
 अकलतर

वरतहांबसेप्राणनाथजोगा॥२०॥जनूहरीदाससतगुर
 सबदकहे

॥२१॥साधसबहीबसेतहांमेताही॥जनह

प्राणबसेतामाही॥२२॥

गोवे ॥ सोमे ससोवे ॥ जगो सपावे ॥ २४ ॥ २५ ॥ अस्ता ॥
नाम जोगुं यलियते ॥ वो मन ही वस धान ही ॥ पवं
न जल ते जन लोई ॥ अगं म वो ड कर संणं ॥ तहां चोर करव
गे न कोई ॥ १ ॥ पांणी विणियांणी अतिर ॥ हाथं विणिति
रणं ॥ वारि न रहणं ॥ था कियारि जाइ व ऊडिन फिरणं
॥ २ ॥ ऐके साथी साथि गया साथी गत पूजा ॥ देव लि देव लि
ये सिय सरि मन करे न पूजा ॥ ३ ॥ हारि जीति दोइ देस ॥
तहां सब जीव का बासा ॥ देयित मा साड स्या ॥ व ऊडि
मोहि आवे हासा ॥ ४ ॥ व्याता की लगे न चोर ॥ कोट सत गुर
की आया ॥ सत गुर सा गह सधीर ॥ सुतो सत गुर ते पाया
॥ पांण संघा संणि वेसि ॥ ऐक आरे स हं म की या ॥ ब्रह्म
अगनि प्रजले ॥ पवं न सुधि प्रवतयी या ॥ ६ ॥ गया पाय प्रवं
द ॥ त्रिविधि में ते न र म नागा ॥ उलटा गेता मारि प्राण निर
ने सुधिलागा ॥ ७ ॥ पां व सयी ले साथि प्र म सुधिसा गरि क
ल्या ॥ विविधि वेलि फल ऊड्या ॥ कंवल विणियांणी कृत्यो
॥ ८ ॥ डालि समाया मूलि ॥ कामय ऊसत गुरि की या ॥ त्रिवे
णी अस्थानि ॥ जडी ते पा व क दी या ॥ ९ ॥ गोग ज मन मधि
बास ॥ चंद घरि स्वर समाया ॥ प्रम जोति प्रकास ॥ अगम
गुर ग मि ते पा या ॥ १० ॥ धे नि धां म प्रह स्या ॥ पसरियांणी न
हायी वे ॥ प्रम सू नि घरि ध से ॥ कु ये ह के र ड न जी वे ॥ ११ ॥
अरि वित अरत अ सं ग ॥ नाथ निर भे नि ज ने दे ॥ जहां
तहां न र दूरि ॥ सूरि ले आ स ग मे दे ॥ १२ ॥ वारि यार मधि
नाहि ॥ विपे न का हू बा या ॥ अदि ष अ धिर अ रूप ॥ अ
गहि अनि अंतरि पा या ॥ १३ ॥ तहां सापणि न ही संचरे ॥

हकिदोइडंकनधारे॥प्रथिमचठेनजहर॥मंत्रगारडन
सारे॥१४॥नेरौनेलगेनसोग॥सीसचौपीनहीतोलो॥देव
लविणदेवअनेव॥तहोऊलफकोईजडेनयोले॥१५॥
अर्धबाडिउरधेवट्या॥शगविणदेवरागनिवाजे॥ब्र
ह्मअगनिआभरण॥संबदविणिसीगीवाजे॥१६॥त
लानहीतहोचला॥विआविणिवेदयांढया॥जिगवि
नांअसहोम॥पुनिविणपुनिसमाया॥१७॥आरंभवि
णिआरंभ॥करंभविणिकरंभसकीजे॥विणितयस्या
तयतहो॥यादविणियादयहीजे॥१८॥ईधणविणिईध
ण॥अगनिविणिअगनिसजारे॥विणिहीनिद्वानोद॥
नूषविणिनूषसंतारे॥१९॥नऊनाथलेसाथिसिचटि
आसणधास्या॥ओगारंभविणिजोग॥सोगविणिसोगवि
वास्या॥२०॥नीरनऊलकेयारामास्या॥यऊआरंभहंम
कीया॥वगताजकेसुतोवगवावा॥यकडिअगनिमु
धिदीया॥२१॥जनहरीदाससतगरकाचला॥इरेनसो
वेजसो॥उतमनिरहेनिरंतरिनिसदिनि॥नगरीचौरन
लागे॥२२॥१६॥उतप्रतिहेतजोगप्रथलियते॥बोमन
हीवसधानही॥यवंनजलतेजनयांणी॥द्योंसनहीजदि
राति॥तदिकहिक्वोणविनांणी॥१७॥सात्तसमदमरजाद
नहीगिरतारअठारा॥चौरसीलयजाति॥नहीजदिमं
दितारा॥२१॥आदिसकतिस्योसेस॥विसनब्रह्मानहीअ
या॥जनमजुरानहीमीता॥जीवनहीकालनकाया॥३॥
युरिषनारिरसयांच॥हाटयाटणनयसारा॥दामणि
गतिनगाज॥नहीवरियाघंणधार॥४॥गरड

नाग मंत्रगारडूनगहरं डसंणनही अहिडंकि नही
मिरतनही जहरं पाबीरवि दोषनयोय त्ततडाकणि
नहीनेदं चैरो जोगततोगार सरोगरसनो नही कंधन
बेद ॥ ६ ॥ सातबाररूतितीनि ॥ घडी मऊरूतिनही लोर्ष
पहरदिनपयमांस ॥ वरसजुगवरणनको ई ७ ॥ यु
भात्रियानननीद ॥ सैऊ सुयसोतनघरही ॥ नही बैरीन
ही मंत्र नही निरसै नही डरही ॥ ८ ॥ सुइवै सषत्री विप्र
विद्या विसतारनबादं ॥ नही ही इनही तरक ॥ सरानन
ही सबदनखादं ॥ ९ ॥ नही चंदनही सर ॥ हारि हवजीति
नमनही ॥ मुकतिसिधिनवनिधि ॥ चितनचाहिनधनही
१० ॥ सिधसाधिकजोगजती ॥ पीरनही येकवर ॥ नही
कुटंबनही गोस ॥ दतनही देवडिगावर ॥ ११ ॥ नही तप
स्याजिगजाय ॥ नही करतानही कीया ॥ नही जोरनही
जेर ॥ जोगगौरषनही लीया ॥ १२ ॥ नही सरनही गाद्र ॥
जिवहतनजोगतत्तया ॥ नही हेतमुषहाय ॥ तदिस्वा
दककंलीयानबूटा ॥ १३ ॥ नही पायनही पुनि ॥ दयानि
रदेनही माया ॥ नही मोहनही दोह ॥ इतडसहनही ड
षसुषबाया ॥ १४ ॥ नही सीलसंतोष ॥ गहरमंतिगरून
चैला ॥ नही ग्याननही ध्यान ॥ आयतदिअलषअकेला
१५ ॥ नही विरहवैराग ॥ नही सेवगनही स्वामी ॥ बटड
संणपवनही ॥ तदिआदिअरिचितवऊनामी ॥ १६ ॥ मह
लदरगहसैऊसुय ॥ नही वऊनारी छेदा ॥ नही जोरजर
कंवर ॥ नही गंगोडिकरंदा ॥ १७ ॥ नही पाइकनही फोज
चूकनही चालनधरही ॥ स गदातार

रही ॥ १७ ॥ रति नही राजानही ॥ देत नही देवाइ र
 त्री नही षडग ॥ स्वर रिण तरन काइ र ॥ १८ ॥ नही
 भी सांण ॥ देन बहु तागै बाबल ॥ नही सां वत नही स्त
 ब रिण हाकन कावल ॥ १९ ॥ तदि स अयं डित रं मा ॥
 थ अ व सा थो सोई ॥ सब जीवा का जीव ॥ तास ग तिल वै
 सोई ॥ २० ॥ जहां त हंगो पाल ॥ गोपि सब मै गोपालिक ॥
 जो ग न ही ज्वाना न ही बूढा न ही बालिक ॥ २१ ॥ सिर
 न हार अ पार ॥ नां व नि रां ड ए ली जे ॥ निर मूल निर स्य
 त हं फि रि स र व स दी जे ॥ २२ ॥ ऐ सब करि सब ते अ ग
 ॥ हरि हरी दास निर भे नि ड र ॥ प्राण ह स मी ती चु गौ मां
 म स र व र मं कि घ र ॥ २३ ॥ जन हरी दास उ द्बु द क था ॥ २
 म ग ति ग र ग मि तें ल हि रे ॥ घर व नं गि र त र कि द रं रं
 र वै त हं र हि ये ॥ २४ ॥ १७ ॥ सब द प्र ब्रा जा ग य था न
 य तै ॥ न ग त जं ग म जी गी ज ती ॥ सो फी क हा स्या न्या सा मा या
 की ब्वा या ब क्वा ॥ निर भे वो ड नि रा य ॥ १८ ॥ वा द की यां बि त ॥
 त त है ॥ अ प त पर म द त जा इ ॥ म नै ष ज न म ध रि ह रि त जे
 न फि रि म न ही स मां इ ॥ २१ ॥ र ग दौ ष मै तें म नी ज हा त हं
 न दे ता प्रा ण नां थ प वि बा डि क रि ॥ नार स गे सि रि ले त ॥
 ॥ २२ ॥ न आ थि मा या सु दि ता जा गि स कै तो जा गि ॥ अ प ण
 प ला बु डा इ क रि ॥ प ति त प्र म सु य ला गि ॥ २३ ॥ वि प्र वे द क
 जी इ ल म ॥ द ऊं य यां दो इ ता ता ॥ बी चि स म द उ ता इ था ॥ क
 हे त हं की बा ता ॥ २४ ॥ जे न ध रं म कां टा करं म ॥ न र म करि स
 कि न इ रि ॥ चि दानं द स व ते अ ग मा ॥ ज हां त हं त र पू रि

नाग मंत्रगारडूनगहरं डसंणनही अहिडंकि नही
मिरतनही जहरं पवीरविदोषनयोष त्ततडाकणि
नहीनेदं तैरौ जोगतमोगार सरोगरसनां नही कंधन
छेद ॥ ६ ॥ सातवाररूतितीनि ॥ घडी मऊरतिनही लो
पहरदिनपयमांसावरसजगवरणनकोई ॥ ७ ॥ यु
धात्रियानननीद सैऊसुयसोतनधरही ॥ नहीबैर
हीमंत्र नहीनिरत्तेनही डरही ॥ ८ ॥ सुडबैसषत्रीविष
विद्याविसतारनबादं नहीहीइनहीतुरक सरानन
हीसबदनस्वादं ॥ ९ ॥ नहीचंदनहीसुराहारिहृवजीति
नमनही मुकतिसिधिनवनिधि चितनचाहिनधनही
॥ १० ॥ सिधसाधिकजोगजती ॥ योरनहीयेकवर नही
कुटंबनहीगोस ॥ दतनहीदेवडिगावर ॥ ११ ॥ नहीतय
स्याजिगजाय ॥ नहीकरतानहीकीया ॥ नहीजोरनही
जेर ॥ जोगगौरषनहीलीया ॥ १२ ॥ नहीसरनहीगाइ ॥
जिवहतनजैगनत्तता ॥ नहीहेतमुखहाथ तदिस्वा
दककंलीयानबूटा ॥ १३ ॥ नहीपायनहीशुनि दयानि
रेदेनहीमाया ॥ नहीमोहनहीदोहा इतडसहनहीड
यसुषचाया ॥ १४ ॥ नहीसीवसेतोष गहरमंतिगरून
चैला ॥ नहीग्याननहीधांन ॥ आयतदिअलषअकेला
॥ १५ ॥ नहीविरहवैराग ॥ नहीसेत्रगनहीस्वामी ॥ षट्
संणपयनही ॥ तदिआदिअरिचितबऊनामी ॥ १६ ॥ मह
लदरगहसैऊसुय नहीबकनारीछेदा ॥ नहीजोरजर
कंवर ॥ नहीगंगोडिकरंदा ॥ १७ ॥ नहीपाइकनहीफोज
चूकनहीचालनधरही ॥ स्मजाचिगदातार नहीकोडा

करही ॥ १७ ॥ तिनही राजानही ॥ देतानही देवाइ र
पत्री नही षडग ॥ स्वर रिण तरनका इर ॥ १८ ॥ नही
नी साण ॥ देन बहता गौ बावला ॥ नही सावत नही स्व
॥ बरिण हाकनका वल ॥ २० ॥ तदिस अयं डितराम ॥
थे अबसाथी सोई ॥ सब जीवांका जीव ॥ तासगतिलवे
सोई ॥ २१ ॥ जहांत हंगोपाल ॥ गोपिसबमैगोपालिक ॥
ही जोगनही ज्वाना नही बूटानही बालिक ॥ २२ ॥ सिर
नहार अपार ॥ नां वनि रां इं लीजे ॥ निरमूल निरस्य
॥ तहां फिरि सब सदीजे ॥ २३ ॥ ऐसब करिसबतें अंग
॥ हरिहरिदास निरसे निडरा ॥ प्राण हंसमोती चुगोमां
बसरोवरमंजिघर ॥ २४ ॥ जनहरीदास उदबुदकथा ॥ प्र
मातिगरामितें लहिये ॥ घरबनेगिरतरकिंदरां राम
गवेतहारहिये ॥ २५ ॥ १७ ॥ सबदप्रब्रजोगाग्रंथलि
यते ॥ नगतजंगमजोगीजती ॥ सोफीकहांस्यान्यासांमाया
तीव्हायाबक्या ॥ निरसेवोडनिरास ॥ २६ ॥ वादकीयांबिता
घटतहै ॥ अपतपरमदतजाइ ॥ मनेषजनमधरिहरितजे
मनफिरिमनहीसमांइ ॥ २७ ॥ रागदोषमैतेंमनी ॥ जहांतहां
मनदेता ॥ प्राणनाथपविबाडिकरि ॥ नारसंगेसिरिलेता ॥
॥ २८ ॥ मयांनआधिमायासुदित ॥ जगिसकैतौजागि ॥ अपणा
पलाबुडाइकरि ॥ पतितप्रमसुयलागि ॥ २९ ॥ विप्रवेदक
॥ इलंम ॥ दंडययां दोइताता ॥ बीचिसमदउताइया ॥ क
हेतहांकीबाता ॥ ३० ॥ जेंनधरंमकांटाकरंम ॥ नरंमकरिस
कैनहरि ॥ विदानंदसबतेंअंगम ॥ जहांतहांतरपूरि
॥ ३१ ॥ चारिबरणकामूलकहां ॥ प्रमसनेहीपोवा ॥ हा

जीति नरकी यद्दी ॥ तहां अल्लुधा जीव ॥ ७ ॥ षट्दरसं
 सौ ध्यासवै ॥ सुतो ओरहीरीति ॥ उलामाला जहांस तहां ॥
 ययाययी वियरीति ॥ ८ ॥ गां वं ए स्यो रो वं ए नला रो वं ए
 व ए मां हि ॥ राम विवो गी पी व के विवो गी ॥ तै ल फि त ल पि
 म रि जां हि ॥ ए ॥ ला ष ग्रं थ का अ र थ हे ॥ को टि प् दा ष द से
 मि ॥ सा हि व तौ स न मु षि स दा ॥ त्स न मु षि हो इ दै षि
 ॥ १० ॥ अ न त सा धि सा धां क ही ॥ मां हि र त न य ति रां म ॥
 उ ल टा गो ता मा रि क रि ॥ क रौ आ प णां कां म ॥ ११ ॥ त नि सु ष
 चो वा चं द नं ॥ सौ धो स वे अं गि ही रं हे म उ जा स ॥ सु तो सिं
 गार को ई ओ र हे ॥ ज हां मि टै का ल की त्रा स ॥ १२ ॥ सि ला वे
 सि त प स्या क रै ॥ कं द मू ल यं णि या इ ॥ वा ह त प स्या कौ ई
 ओ र हे ॥ ज हां त्रि वि धि ता प स व जा इ ॥ १३ ॥ व डु वि धि तो ॥
 ज न ले त हे ॥ इ स्या दे ह की चो ट ॥ वी ह नौ ज न को ई ओ र हे
 ज हां मि टै का ल की चो ट ॥ १४ ॥ ध र म ने म ती र थ व र त प्री
 ति हे ति म न मां हि ॥ सु तो ती र थ को ई ओ र हे ॥ ज हां स वे ष
 प क डि जां हि ॥ १५ ॥ चार त ले दे ही दै डै ॥ अ न अ वि ल क रि
 या त ॥ सु तो चार त को ई ओ र हे ॥ ज हां वि वि धि यो ता प स व
 जा त ॥ १६ ॥ या व अ ग्नि सा धै सु तो ॥ फ ल ता के त हां जा इ ॥ ब्रा
 ह्म अ ग्नि प्र ग ती न ही स ॥ डाल मु ल स व या इ ॥ १७ ॥ दे ह्ये ह नि
 र गु ण द सा ॥ अ न फा स नि र गु ण ले त ॥ नि र से य दि य डं ता न ही
 ल षा कौ ण सू हे त ॥ १८ ॥ वि वि धि ध र म त प स्या वि वि धि ॥ व ल
 त दे ह के ना ई ॥ सु तो प थ को ई ओ र हे ॥ ज ॥ सा त स मं द ल धि जा
 इ ॥ १९ ॥ स त ग र स व दां म न घ ड्रा ॥ घा टि उ ता स्या आ थि ॥
 इ जा ला डू ड रि ग या ॥ ऐ के ला डू हा थि ॥ २० ॥ चि ता म णि द र ई

वहां सुतोसबै सुयलेत ॥ वाहचिंतामणिकोई और है ॥
 प्राटप्रमपददेत ॥ २१ ॥ धाहअगनिमुयिपजेले ॥ ताबाली
 याताइ ॥ सुतोतांबाकंचनतया ॥ पारसप्रस्याजाइ ॥ २२ ॥
 साहलालजरदासुपेद ॥ गिरवरखतहाधिहा ॥ जूरि ॥ लोह
 पलटिकंचनकरे ॥ सोपारसकऊंइरि ॥ २३ ॥ हीराकीसोता
 कहा ॥ सुतोचोरलेजाइ ॥ वोहहीरकोई और है ॥ जलटि
 चोरकोंयाइ ॥ २४ ॥ मानिअमानिगतगुबगत ॥ प्राटप्रम
 पदहाधि ॥ कामधेनिसुरहीसबै ॥ सुतोकोमधेनितहांसा
 थि ॥ २५ ॥ मनमरजीवातनसंसदा ॥ उलटागीतायाइ ॥ हीरा
 लेन्यारारहा ॥ थाराजलनसुहाइ ॥ २६ ॥ चंदनतरवरकी
 स्यात्ति ॥ बसेसचंदनहोइ ॥ अरसप्रसगतिगोकहे ॥ नोर्वेध
 रणकोदोइ ॥ २७ ॥ चंदनतरवरविविधिवन ॥ चंदनमिले
 नकाकुरंगि ॥ औरविरयचंदनया ॥ मिलिचंदनकेसंगि
 ॥ २८ ॥ कलयविरयसबतैअगम ॥ सतगुरिदीयाबताइ ॥
 जाप्रस्यादोजिगडरे ॥ कामक्रोधतरमजाइ ॥ २९ ॥ दतअ
 पेदालिदगमें ॥ मनकाठोठकूरि ॥ सुतोदातसबतैअग
 म ॥ जहांतहांतरपूरि ॥ ३० ॥ जातलगीजोगीवग्या ॥ मनजन
 करतसबसाध ॥ सबदेवांसिरिदेवदे ॥ हरिअपरपारअ
 गाधा ॥ ३१ ॥ स्वयसीतलइंसिरतसुधा ॥ मनकरतपेमधरिया
 न ॥ सुतोचंदकोई और है ॥ प्राटहैअतिमाना ॥ ३२ ॥ कंत
 लबिगासिप्राटीकिरणि ॥ घटमेंअघटउजासा ॥ पठिमदे
 सग्याअरका ॥ नयसयननप्रकासा ॥ ३३ ॥ उ हरइंसि
 रतसुधा ॥ अरसप्रसरसऐक ॥ सुतोइं
 जाइअनेक ॥ ३४ ॥ जनमजुराघ

नगाज सुतौराजा कौई और है। जाका सब परिणाम
 २५। सब देवों सिर देव है। सब साहों सिर साह। सब
 लतानों सिर सुतान है। हरि पुराण ब्रह्म अथाह ३
 ६। जीव चौरा सी लय जहां सतहां। सरतिनां नो विधि
 दी दार। ऐ सब करि सब ते अगम। अनंत जोग बिसत
 र। २७। वसे कहां नो ही कहां। कौ ए सके अत्र गाहि वा
 र पार की मति नही। नो वं धरत है ताहि ३८। नो वं धर
 तो में डरौं। हरि अ प र पार अ व है। सुतता त मां व नि
 तान ही। गा व दे स न ही देह ३९। जन हरी दा स प तिका
 व र त। अ प र पार दे धारि। प्रयाणी लो गे न ही। उ ल टी य म
 से वारि ४०। प्र म संध प्र वां ए क हं। ब ऊ की म ति क रि गे
 हारि। जन हरी दा स नि र नै म से। हरि नि र नै ब स त वि च
 रि ४१। ४२। ती र र स री ग जे त मं थ लि य है। का
 क हे ये क हि णी क हं। र ज मां र ह णी मां हि। सो सा हि ब के
 हा धि है। दे तो अ चि र ज नां हि ४३। रह णी तो जे हरि त जे
 रहे नि रं त रि ला गि। ब ल ता बु जे अ गार स व। ब ऊ डि न ऊ ल
 के अ गि ४४। को च र नै को बं दि जा इ। को नि दे ग हि वार ये
 ले सा ध स मा धि में। क ल पे ना हि ल गार ४५। जे क ल पे तो क स
 रहे। कू ब कि र ची म न मां हि। अ ग म त हां प ड दा इ ह नि ज
 त त प र स्या नां हि ४६। ज्यो ह म दे ये त्यों क हे। उ ची क रि क रि
 बां ह। ऊ रं ग संध वे से न ही। ऐ क वि र ब की बां ह ४७। इ ति
 यां स्यों बां र्द र्द र्द। प्र मे स र स्यो प्रा ति। सा धां का सु य अ ग मे हे
 या ह ऊ ब उ ल टी री ति ४८। क र म क ठि न र ह णी क ठि न ४९।
 क ठि न सा ध की टे क। ज्यो ह बां ता यां र्द मि ले। सो कौ र्द क ठि

विरह चोट लागी नही ॥ साध सब दसुष दूरि
 काम क्रोध मै तै मनी ॥ यग देस क्या न चूरि ॥ जया वैद निक
 टिबो कठिन जोणें विरल कोइ ॥ दया तहां आरंभ नही ॥
 आरंभ दया न होइ ॥ ११ ॥ दया देस तहां बांस करि ॥ निरंते
 पद नजिरांम ॥ धार जमें धन मिलेगा ॥ अहिं औ सरिय कक
 म ॥ १० ॥ मन चंचल निरुचल तया ॥ गडग्राण की पालि ॥
 जग्गा सो सरमें नही ॥ सूता पड जंजालि ॥ ११ ॥ याणी मां हीये ॥
 सिकरि ॥ धरै निरंतरि श्राना ॥ मन मं बली चित वतर है ॥ बड
 विपति यक ग्यांन ॥ १२ ॥ अगमत हां पकृतान ही ॥ सुएंद्र ॥
 द्वाका प्रतिपाला ॥ अरकी रंवर सिय मां बली ॥ तकि तकि मे
 ले जाल ॥ १३ ॥ साध तहां सुर नय सदा ॥ हरि खमि रण स्पे
 हेत ॥ व्यालिय ड्रायर था त है ॥ जाका सूना येत ॥ १४ ॥ प्राण
 सने ही सोइ मां ॥ सुमरि सने ही रंम ॥ अलय आव आल स
 कह ॥ सुपना का सा काम ॥ १५ ॥ बार बार ती स्यो क है ॥ क
 रित अयण काज ॥ गो विंद तजि जी त्रण दसा ॥ जि सा वी ल
 कारज ॥ १६ ॥ काल कहर चित वतर है ॥ तकि तकि री के
 डोण ॥ डावप ड्रांक हि क्या करे ॥ अज्या स्पं घ स्यो मां ॥ १७ ॥
 गोरु बाल हि बाडिकरि ॥ येत विराणां वाइ ॥ मार सहे स
 कटि पडे ॥ संकटि पडि पबिताइ ॥ १८ ॥ आप सर है आप को
 बाहे मां नि सुहाग ॥ साहिब साधन आदरे ॥ यो ही बडा अ
 जाग ॥ १९ ॥ साध तहां निरंवेरता ॥ जहां वेरत हां प्रेत ॥ प्र
 मे सरपति बाडिकरि ॥ नर कि जां ए स्यो हेत ॥ २० ॥ मन सरक
 अति बाडे नही ॥ कूर ममति सोइ री ॥ कलं आधि अवीय
 री तो दोसक हाक हि स्वर ॥ २१ ॥ चिंता की डाली नई ॥

निर्गोधश्रियाश्रया तयावर्जना
नोदिसा आइयडवर्जव
कितकिमारेतीर २३ मोहप
सबसंसार मिरयतहापासा
रि २४ रां वं ए स्यो मनमतिमै
द्रसाकाबरवाडिदे संकरकाव
केएकीवासकी जीवं एअसा
दसरमन सुरतिसहजघरिआणि
सोकलकडे सोफलविषही होइ
कोटिकेहीकोइ २९ लपदवाडि
करकठिनठिनवात रंमकलवाडि
मिरावरकायात ३० निमयेही निवतते ॥

उलटायेलि नमै
लोकारजनही
देजातहे इह
हिरसितहाडि
३१ रां मर
कोहरिज
न्यारने
साहिसाहिसांही
हीरमना
सवरादि

गसाकांजीवकों। कालविधूसैआइ। २६॥ मायादीपगदेषे
 येरामनस्वकेपीव। आपअंधारेआपके। पडियडि। दाके
 जीव। २७॥ धरमनेमतीरथवरत्त। सुलातुलतहेजाइ।
 बाजवजावेडोकरी। कंटयेतकोयाइ। २८॥ राजाकीचोरी
 करे। डरेरंककीवोट। रंकवोटकदिक्योतले। कहस्काल
 कीवोट। २९॥ घांटगाइकरिबारों। सुधीनदेव्याकोइ।
 लातमारिचलिजातहे। संजनकासंगहोइ। ३०॥ जलमाया
 जीवमांखली। खुसीबसेतामांहि। कालकीरबांसेबहै। निह
 चेबाडेनाहि। ३१॥ लोकलाजसिरदेतहे। दिहनलावेवा
 रसिरसाहिवकोसोपता। त्क्योंकरैविचार। ३२॥ सतीज
 लेस्वामरे। कविनबातपलकाम। निसप्रेहीनिरंजसाध
 के। एतियोससंगम। ३३॥ अजबवातपेडाअगम। जीव।
 जागिसकेहतोजागि। मनसजनतोस्योकहौं। यऊबीररसंवे
 रण। ३४॥ कजलीवनरेवांनदी। गहेरायेमनमांहि। ऐसेंहरि
 स्योमनमिले। तोफिरिबिबरेनाहि। ३५॥ पेडेमरैतोप्रमस
 य। पकंताहरिसमिहोइ। जनहरीदासहरिनजनकी।।
 घाठीलहेतकोइ। ३६॥ जनहरीदासकदिक्योंडरे। रामन
 जनरसरीति। नृकुटीमांहीदेधिये। जाकेजैसीप्रीति। ३७॥
 ॥ १९॥ समविधोसजोगयथलिप्यते। आलंसयलकउपरेधा
 लिकाकरताकरणवरणबिसतार। बसधातुयाअग्निता
 तबाई। रिबसिससोतानारआंगर। ३८॥ चोदानत्रंणगवण
 गुणगीमी। तारामंडलरचण। त्रियलोक। ३९॥
 शिरप्रवत। नदीनवासेबहैअलीप। ४०॥

विधिवाणी ॥ घटि घटि अहं संज्ञा एणं मेर ॥ ३ ॥ सुरवर अरु
 रथसे आषुने ॥ साया चडी समसिता जेर ॥ यै लिय स्यावे
 अज कुंषे लिये ॥ साया घटेन समसिता फेर ॥ ४ ॥ ब्रह्मा कै क
 सि अने तजु गा बीचें ॥ सोई ज सा डे रे विघन वय काल ॥
 वी आव अ ए र ओ ठा रे मू वे सु वि क्वा तो पा ल ॥ ५ ॥ वा
 णी क वि न क व धि क रि को ती ॥ सुर ति सु म रि अंतरि नि ज
 सार नि ज पु रि नि र यि नि र यि नि ज ने रो ॥ ज च ह री दा स
 रि प्र स उ दा र ॥ ६ ॥ हे व रे गे व र गा व रा ड ॥ सह ल म रा न र स
 र ज ॥ छ त्र सिं घा सं ण ये क सु य ॥ वा जो र ह री गा ज ॥ ७ ॥ न
 र प ति तो य ति द रि ष ड ॥ सि ज दा त न तो लं त ॥ जा दि सि दे
 ये सो न जे के का रे वी लं त ॥ ८ ॥ त य ति य ड को डी सु सी र त
 का चै रं चि ॥ अ र क अ ग नि मे उ ज ला ॥ वी ह ह रि ह री न ह
 सं गि ॥ ए सा ल मू ल क पुं ग ड प ड म ॥ य ग प ति व र त न
 रि क रं जे ह री अ रो य डी ॥ अ र स प्र स यी दा र ॥ १० ॥ रा ग क
 लो वं त क ड क णी ॥ का जी सि प्र व वे क ॥ अ ग म न र क अंत
 रि न ही वेली क था अ ने क ॥ ११ ॥ ब ड वि धि वा गा व ड स
 या व ड सो धो व ड यो न ॥ ब ड वि धि सो ज न व ड र त रं
 ही सं ज ड त फ लो ण ॥ १२ ॥ हे म ज ड त ह थि सं क ला ॥ ग लि
 तो ती ड न की मा त ॥ या ज ल मे वू हा थं ण ॥ उं डो अ ने त अ त
 ल ॥ १३ ॥ ह रि ति जि प्र की र ति र ता ॥ सा च न मा ने की ड के
 धा के दा फि से ॥ या दी वा की लो ड ॥ १४ ॥ पांच क डी क ड के
 स द ॥ त्रि वि धि ता य का ज ल ॥ के सा स्या के सा रि सी ॥ को षे
 सो काल ॥ १५ ॥ लं का प ति रां वं ण क हं ॥ कू त क र ण क हं
 वं स ॥ हि र ण कु स हि र ण यि क हं ॥ सहि का सु र क हं कं

जुरासंधसिसपालकहो॥हसासणकचोनीव॥केरुवलप
 डोकहो॥अगोपडतीसीव॥१७॥बचकवेमुचकंदकहो॥
 कहांबिकरंमकहांसोजा॥सोवतप्रिथीचोहोणकहो॥क
 हाश्रकवरनोरोज॥१८॥रोतीमनतोसो॥कहो॥स्त्रुणिसति
 सीसाकांनि॥मेंतैतजित्तरांसभजि॥कहो॥हमारोमानि॥१९॥
 योवेवाक्याकरे॥करिकुबवेगिउपाइ॥अलययुरिषके
 प्रासिरो॥चोहे॥मडेनआइ॥२०॥इयदारणइरमतिहरण
 तैहरणगुमान॥त्रिविधितापतिसनाहरण॥सजित्त्तध
 सागतान॥२१॥ग्रवगंतीरआपोहरण॥तारणतिरणमुरा
 सेवोबीमनपरोकरण॥हरिसजित्तेदविचार॥२२॥काम
 क्रोधपांचोपिसण॥इयसुवनदीविकारा॥रोदीरघवोब
 करण॥सजित्तोत्तंजनहार॥२३॥साचकडंतोमेंडरो॥क
 रिसोरसानजाइ॥रामसंतोय्यांसकलसुय॥इनियारहे
 ॥२४॥रामरिसकहरिरससुसी॥आनरिसकरिसां
 हरीदासजनयो॥कहो॥मेंहरिबाडोनाहि॥२५॥रामव
 तीमेंडरो॥कडेधसेवसेबलाइ॥पतिवरतापतिकोत
 तबहीयोटायाइ॥२६॥प्यासाजबहीजलपीवे॥तबही
 नदहोइ॥बियकीकिरचीमेल्हिकरि॥पीपानजीवेके
 ॥२७॥आलबालकरताफिरे॥साधहोणकीसोसापेले
 वेधेपतिता॥सनअपणकीयोम॥२८॥जनहरीदास
 सांतरकि॥रामसजनकीठेक॥लागिरहातेउबस्या
 ॥ओरअनेक॥२९॥जनहरीदासइनियारकि॥वि
 लयबियजालासाचकहो॥तोलडिपडे॥मिलिये तो
 ॥३०॥३०॥३०॥चित्तानुणीअपदेसजोगंध॥

आनधानमुरगानविणि। त्वत्तदेहकेनाइ। अपणाघोत
हायरा। करियोठोघोटायाइ। १। मनमंजलीकरिकीरके
गिणांनरतहेसास। लोत्तजालियागारहे। विपतिनदी
मैवास। २। अपरिअधिरयरकरतहे। चिरसुयपलनस
हात। प्रतवृत्तचितवृत्तविधिरस। अलपसुयछिनस
त। ३। बालककोलेनाडेरें। देतप्रपमुयिहाय। केचाल्या
केचलेगा। नरिअनरथउरिवाय। ४। बायाछविकाया
गुदे। देहदीकासाहोप्रजाव। बडाहूकादीवाबुज्या। विप
तिबडाईवात। ५। ऊठकिपठकिआसाअठकि। सठकि
धरतउरकाच। त्रिविधितायमेंसोइरहा। समकिनदेये।
साच। ६। चंचलचपलचितजमचौतभसिरि। ७। स्यादेहकी
वोट। आवपहरअचवतजहर। कहिकौणजनमकाये
त। ७। षटमदबकउदमादबक। बकसायाबकआन
पावधरतबायातकत। पयहवतजतनयांन। ८। डित
स्यंनइडीअठकि। चालोलहोगाहिलोत्त। लहोगाहोगाहि
मिधिरहौ। हेहरिसवसंतनकीसोत्त। ९। तंमकिधंमकि
ततातिपतिच। कालउगतवगतौहि। मोहमंठीमेंसोइ
रहा। इहअचंतांमोहि। १०। अयाअकलिकहियेकहां
सुतोकोणउपदेस। मबियजनमनगप्रसदत्त। कुपहिक
रतकेयोंपैस। ११। चंबीतजिसतिगतिगजत। लजतबजत
लघलोत्त। तिरततकतविधिहीथक्या। अयाचउतहेसो
न। १२। चंमकिचैतिचिकृततया। जहांतहांजलपूरि।
आसावसिचिंताइस्या। सुतोघाठकहोंहरि। १३। हरिकरो
दयाहोहमिहरयर। उरिधरिकुंडोंआज। पीवजीवमरिजा

हिगा। सुएतसमदकीगाज॥१४॥ विविधिअवधिगतिम
 तिग्रीहैवाकीतीजाता। चिंताचिंतचितमेवसे। चिंत
 मेंतीचिताकीजाता॥१५॥ गगतगतकगवगिगया॥
 बुगभजलेवेवाश्राइ। गतजोवनजीतीजुरा। चलतदे
 हबबिबाइ॥१६॥ तनजीरणधूजतडरता। मस्तमृदि-
 तअनिमान। लोकलाजसुधिवुधिगईधयसरिकरतय
 षयांत॥१७॥ धमकिनधरपावधरिसके। नैणकरतधुनि
 सीसा। करंकयेप्रवर्णांअसुण। अजकुंतजतनहीईस
 १८ वारोडविवाइहै। बोलेतोमृषिबारा। कुटकबच
 नसबसिरिसहे। बहामोहकीधार॥१९॥ सबदकह
 तरसनांअवता। नटतघटतनहीघाट। लुटकिलुटतल
 टिलुटिअवत। तकतटौहृतयात॥२०॥ जीवहलवल
 धरतीधस्या। मरतकुटंबस्योहेत। योकरियोयोमतिक
 रोसीयअजकुंयादेत॥२१॥ यहविरतिसबजीवकी। दि
 तकाचसंसिहेम। जीवकायातरवरतजियंषीचल्या
 बकुडिकुटंबस्योयेम॥२२॥ आनध्यानगोविंदविमुष

ईबाह॥२३॥ जाणिवूकिवोरनया। देतसिलातलिहाय
 अनहरीदासनिरेसैमेंते॥ मजो निरंजननाथ॥२४॥
 ॥२५॥ मनचिरतजोगग्रंथलिप्यते॥ राम॥ मरकीजेकुब
 स्यानको। सतगरग्यातबांताइ। कहिविधिनिरेसेआत्मा
 निजततप्रसेजाइ॥१॥ सतगरचरणसिरधरो। मेंसति।
 पूबोतीहि। प्रमसैनेहीकहं
 ॥२॥ कोमुरीदमालाकह

एकहागाईरे सतगुरसेदबताइ ३ मनसुरीदमाला
मती सुरतिसहजघरिलाइ ४ आत्मकेअस्थानिरहो
अणबोल्याऊबगाइ ५ मनहीचिरतमनसालहरि
केतालीयातुडाइ ६ मनऊंडेलेअणसरे सतगुरसेद
बताइ ७ मनकोंपालिबाअगमकोंचालिबाअगम
केअसिरेप्राणलावे रूपविणिराचिबामंदविणिमा
चिबा तोकालकीचोटमेंकोणआवे ८ मनहेसफू
वेसांडेकानीरहे फूसकीआगिहे स्वानरूपीरूपक
रताफटकमणिज्योफूटिजावे मनकेमतेनधेलिवार
अवधु मनकेमतेथैलेसघोटाघावे ९ सतिकासब
दविचारिबास्वामीजी फूटेसांडेकानीरतेकोणमन
बोलिये फूसकीआगितेकोणमनबोलिये कूंणमन
फटकमणिज्योफूटिजावे स्वानरूपीकोणमनबोलिये
कूंणमनवांअसेदीनोसेदयावे १० अवधुफूटेसांडेका
नीरबोलियेजयांचचूरचरेफूसकीआगिबोलियेजद
सोदसाफिरे स्वानरूपीरूपकरताप्रमजाइयडे फ
टकमणिज्योफूटिजावे उलटेगामनमनकोंबेधेगा ११
तबयोहीमनहीराकहावे १२ स्वामीजीमनकेकोण
राहकोणचाल कूंणमूलकूंणडाल प्रमसेदतेकोण
मनलहे सतगुरहोइसपूब्याकहे १३ अवधुमन
केमनसाराह अनंतचालधीरजमूलमोहडाल उलटा
येलिमनमनकोंगहे तोमनकेअगरिप्रमनिधिलहे
१४ स्वामीजीमनकेकोणरूपकोणचाल कोणरंग
कोणकाल कोणअस्थानिमनउनमनिरहे कोणअस

कर

थांनिमनअगहागहै॥१२॥अवधुमनकेबहतरिरु
 पवेइचाल॥तीनिरंगसहजकाल॥गिगनिअस्यांति
 मनउनमनिरहै॥नासिअस्यांतिमनअगहागहै॥१३
 स्वांमीजीकौणसमेंगलकौणसतोई॥कौणमहावत
 कौणसबोईबेडीकौणप्रसिमनजीवै॥बासाकहांमन
 पवि॥१४॥अवधुमनसमेंगलधोरजतोई॥ग्यांनमहावत
 थांनसबोईबेडीप्रमप्रसिमनजीवै॥बासाप्रमसूनि
 स्यांवे॥१५॥स्वांमीजीकौणकौराधिवाकूंसाकौंयाशि
 वाकूंएकरिबानवषंड॥कूंएसबदलेनिरंतरिखेलिवा
 कूंएसबदलेमिलिबारिबचंद॥१६॥अवधुमनकौराधि
 वाप्रमसायाशिवा॥त्रिविधिकरिबानवषंड॥सतगरस
 बदलेनिरंतरिखेलिवा॥ग्यांनवडगलेमिलिबारिबचंद॥१
 ७॥स्वांमीजीकौणकूंमारिवाकूंएघरिआणिवा॥कूंएवि
 धिराधिवाबारी॥कूंएकेपहिरैजागिवा॥कूंएअस्यांतिमि
 लियेलिवासारी॥१८॥अवधुमनकौंमारिवासहजघरिआ
 रोवा॥कायावनराधिवाबारी॥सीस्तसंतोषलेपहिरैजा
 गिवा॥गिगनिअस्यांतिमिलियेलिवासारी॥१९॥स्वांमी
 जीकूंएकूंयकडिवाकूंएकौंचूरिवा॥कूंएकामेटिवा
 सारा॥कूंएसबदलेनिरंसेयेलिवा॥कूंएसबदलेगहि
 बंधिबारी॥२०॥अवधुमनकौंयकडिवासेसकौंचूरिवा
 कौंमेटिवापांसागवोहनिरयअसबदलेनिरंसेये
 रिवा॥सतयवनगहिबंधिवापारा॥२१॥स्वांमीजीकूंएगया
 रिवा॥कूंएजांतरायणां॥उलटीसुरतिकूंएर
 रसपीवैणसजीवैगा॥कूंएरूपलेणांकूं

रिखाडणास इमिरत्तकरिनपीवणा २३ अवधुम
 ग्यासगयाजांतास्यणा उलटी सुरतिअगमरसवा
 एण पीवेगासजीवेगात्तरूपलेणा यांवेण्डरीरस
 षकरिखाडिबास इमिरत्तकरिनपीवणा २३ स्वां
 जीविषरूपीतेकोणबोलिऐ अगनिरूपीतेकोणबा
 सुयरूपीतेकोणबोलिऐ प्रमत्तेदत्तेकूणबोलिऐ तहां
 यानमाया २४ अवधुविषरूपी ग्यंननदगधी आति
 रूपीतेकांमछाया सुयरूपीतेप्रमसंगी प्रमत्तेदत्तेनि
 जनराया २५ स्वांमीजीकोणततपलटिबा कूणघरि
 आणिबा कोणपुरियलेबापाली कोणअस्यांनिउतम
 नीरहिबा कूणअस्यांनिलाइवाताली २६ अवधुपं
 ततपलटिबा सहजघरिआणिबा प्राणपुरसलेबाप
 ली अरधअस्यांनिलमदीरहिबा प्रमअस्यांनिलाइ
 ताली २७ अवधुत्तरंमकातांडातांजिबा त्रिविधिता
 मेटिबा इलापिंगला रायिबानारी लोसल्लूटालिबा
 कनालिबालिबा तहांदेयिबाकिलिमिलिजोतिउजाल
 २८ स्वांमीजीत्तरंमकातांडातेकोणबोलिऐ त्रिविधि
 तापतेकोणबोलिऐ कोणबोलिऐइलापिंगलानारी
 लोसल्लूकोणबोलिऐवंकनालिकोणबोलिऐ जहांदेयि
 बाकिलिमिलिजोत्तिउजाली २९ अवधुत्तरंमकातांडा
 तेचकबोलिऐ त्रिविधितापतीनिगणबोलिऐ मत्तपवं
 बोलिऐइलापिमलानारी लोसल्लूकंनककांमणीबोलिऐ
 वंकनालिमुयमनांबोलिऐ उलटैगीसुयमनाप्रमस्यंध
 तेदैगी तहांदेयिबाकिलिमिलिजोत्तिउजाली ३० अवधु

इयस्यमेदिबासंतोषघरिरहिबा॥सहजिसमादनाते
 जोगी॥हंससंप्रमहंसमिताइबा॥तहांलागिकाटिबा
 कालरोगा॥३१॥स्वामीजीइयस्यकाघरकौणबोलिऐ
 संतोषकाघरकूंणबोलिऐ॥सहजिसमादनातेजोगी॥प्र
 महंसतेकूंणबोलिऐ॥तहोलागिकाटिनाकालरोगा॥३२॥
 अत्रधुइयस्यकाघरअंमेवबोलिऐ॥संतोषकाघरसंग
 ताबोलिऐ॥सहजिसमादनाप्रमजोगी॥प्रमहंसपारखरस
 बोलिऐ॥तहांलागिकाटिनाकालरोगा॥३३॥स्वामीजीपान
 इंद्रीपसप्रकृति॥कूंणअस्यानिराथिवा॥कूंणअस्यानिरा
 थिबाबाई॥कूंणअस्यानिमनकौराथिवा॥कूंणअस्यानिरा
 र्हिबासमाइ॥३४॥ज्योक्लंजजलसौंसत्याजलमाइ॥धन्या
 अंतरिनिरंतरिनीरनाया॥थौंसरंमिचूलाप्रमानवपाअन
 ही॥सकलव्यापीकहेरामराया॥३५॥स्वामीजीकूंणफुनि
 फुनिथिरे॥कूंणनरंमताफिरे॥कूंणकेआयंरकोयव
 पावै॥सतिकासबदविचारेस्वामीजी॥कालकीचंनमंरं
 वंणआवै॥३६॥अत्रधुकायाफुनिफुनिथिरस्यनरमता
 फिरे॥हंसिप्रमहंसनहीयाया॥हंसप्रमहंसपावैण॥तत्र
 नतरंमंजवसाचआया॥३७॥स्वामीजी॥तंजसंरंरंरं
 वाहंअजरसबदविकारं॥मायासं॥हंसं॥अत्रप्रबदव
 है॥कहांलागिततरिवापारं॥३८॥अत्रधुइयस्यकाघर
 यघरिरहिबा॥अजरसबदकरिइइइ॥अत्रधुइयस्यकाघर
 थिवा॥अनमंनीलागिततरिवापारं॥३९॥अत्रधुइयस्यकाघर
 म्हारीजातिबोलिऐ॥कूंणअस्यानिराथिवा॥कूंणअस्यानिरा
 सेनमाउदस्य॥कूंणअस्यानिराथिवा॥कूंणअस्यानिराथिवा॥

सकावासं ॥ ४० ॥ अवधुअनीलपुरिसहमारीजातिकोलिरे
करत्ततिक्रलबोलिरे ब्रह्मापानले जयाउदासं दयादे
सरोकदसा प्रमसुनितहंहंमारप्राणपुरिसकावासं
४१ स्वांमीजीकूंएतरवरकूंएबाया ॥ त्मेकहंकेय
यीकहांआया कूंएउडाणिकहांसमाया ॥ ४२ अवधु
अकलतरवरसकलबाया ॥ हेमप्रमसुनिकेपंयीअध
रसुनिआया ॥ उलटेउडाणिप्रमसुनिसमाया ॥ ४३ स्वां
मीजीकूंएअधेडितकूंएअरूप ॥ कूंएसीतलकूंएधूप
कूंएकलपेकूंएबहे ॥ कूंएबिनसेकूंएरहे ॥ कूंएअस्थ
निमनउलटाजाइ ॥ कूंएअस्थानिमनरहेसमाइ ॥ ४४
अवधुब्रह्मअधेडितमनअरूप ॥ मनसीतलपवंतधूप
केतकलपेमनसाबहे ॥ दिष्टिबिनसेअदिष्टिरहे ॥ प्राण
निअस्थानिमनउलटाजाइ ॥ सहजसुनिमनरहेसमाइ
४५ स्वांमीजीकूंएअंधारकूंएउजास ॥ कूंएअस्थां
ननिजकिरणप्रकास ॥ कूंएअस्थांनिमनरहेसमाइ
कूंएअस्थांनिमनरूयाजाइ ॥ ४६ अवधुत्रिविधित्रंभ
रापानउजास ॥ नातिकवलिनियजकिरणप्रकास ॥ ताअस
थांनिमनरहेसमाइ ॥ इंदस्यांअस्थांनिमनरूयाजाइ ॥
४७ कूंएसतरवरकूंएपासबाया ॥ पंयीप्राणकहांबिलंबा
या ॥ पंयीतकूंएफलवाइ ॥ सत्तिसत्तिसवांमीजीकहैस
सकाइ ॥ ४८ अवधुअकलतरवरसकलबाया ॥ पंयी
प्राणकहांबिलंबाया ॥ पंयीतकूंएअगंसफलगहे ॥ सत्त
गुरसबदांनिरंतेरहे ॥ ४९ स्वांमीजीतुमेअगंसभेदक
वारयारं ॥ अगमअरथकंधानधारं ॥ दयादरगहेकतुमे

हरिदसंता। विज्ञानयेवेकगणं नगुष्टं॥ जुराजीतीकदस
घरं उरधफूटाकजडातालं॥ ५०॥ अबधुहमेअनंत
नेदंअजबस्वादां। प्रसदिष्टिअगंसनांदां॥ दयावरगहमे
हरिदसंता। विज्ञानयेवेगणं नगुष्टं॥ जुराजीतीदसंघ
रां उरधफूटाकजांतालं॥ ५१॥ स्वामीजीतुमेकोणग्राह
कहांसीधा। कूंएमोतीकहांबीधा। कूंएउलटियेल्पाकूं
वणपीया। सेसकेमुषिकोणदीया। कूंएमेलाकहां
वेग। यांचजोगीकहांयेग। ५२॥ अबधुहमेसारग्राहीस
बदसीधा। मनमोतीनिजअरथिवीधा। मनउलटियेल्पा
पतनपीया। सेसकेमुषिसंघदीया। रिक्सिसमेलाचोक्क
वेग। यांचजोगीउफायेग। मोनाथनिहंवेदेयितार्श। गंग
असठीगिगनिआई। ५३॥ स्वामीजीकोणधागाकहालमा
कोणनिहेचेधरमसाग। कोणजोगीअवधुतवाला। को
णसांणकोणमिरगबाला। ५४॥ अबधुसुरतिधागसह
केसागा। नेदपायातरमसाग। प्राणजोगीअवधुतवाला
कोणनिआसंणमनमिरगबाला। ५५॥ स्वामीजीकोणटे
कोणकंथा। कोणचेलाकोणयंथा। कोणकोलाको
णसिध्या। कोणडीवीकोणसिध्या। कोणजायकोणसा
जोगीकोणपयाला। ५६॥ अबधुततदोपायवरिकं
यांचचेलाअंमयंथा। उरधजालसवदसिया। मा
नीअजरसिध्या। अजपाजयमनमाला। प्राणदेप्य
पयाला। ५७॥ स्वामीजीकोणधुईकोणपट्टाकेकु
निकोणवलीता। कोणचोपडि। कोणसरी। कं
वधारी। ५८॥ अबधुधुनिधुईपेसपसता। ५

सकावासं ॥ ४० ॥ अत्रधुअनालपुरिसहमारीजातिकेलिए
 करत्तितिकलबोलिरे ॥ असापांनलेनयाउदासं दयादे
 सरेकदसा ॥ प्रमसुनितहं हंमाराप्राणपुरिसकावस
 ॥ ४१ ॥ स्वांमीजीकूंणतरवरकूंणबाया ॥ तमेकहंकेय
 यीकहंआया ॥ कूंणउडाणिकहंसमाया ॥ ४२ ॥ अत्रधु
 अकलतरवरसकलबाया ॥ हमेप्रमसुनिकेयंभीअध
 रसुनिसमाया ॥ उलदेउडाणिकप्रमसुनिसमाया ॥ ४३ ॥ स्वां
 मीजीकूंणअथडितकूंणअरूप ॥ कूंणसीतलकूंणधूप
 कूंणकलयेकूंणबहै ॥ कूंणबिनसेकूंणरहै ॥ कूंणअस्य
 निमनउलटाजाइ ॥ कूंणअस्थानिमनरहैसमाइ ॥ ४४ ॥
 अत्रधुअस्यअथडितमनअरूप ॥ मनसीतलयवनधूप
 केतकलयेमनसाबहै ॥ दिष्टिबिनसेअदिष्टिरहै ॥ प्रा
 निअस्थानिमनउलटाजाइ ॥ सहजसुनिमनरहैसमाइ
 ॥ ४५ ॥ स्वांमीजीकूंणअंधारकूंणउजास ॥ कूंणअस्थान
 निजकिरीणप्रकास ॥ कूंणअस्थानिमनरहैसमाइ
 कूंणअस्थानिमननूयाजाइ ॥ ४६ ॥ अत्रधुत्रिविधिसंध
 रापांनउजास ॥ नासिकंवल्लिनिजकिरीणप्रकास ॥ ताअस
 थानिमनरहैसमाइ ॥ इंदस्यांअस्थानिमननूयाजाइ ॥
 ४७ ॥ कूंणसतरवरकूंणसबाया ॥ पंथीप्राणकहोबिलंबा
 या ॥ पंथीतकोकूंणफलवाइ ॥ सतिसत्तिस्वांमीजी ॥ ४८ ॥
 सकाइ ॥ ४८ ॥ अत्रधुअकलतरवरसकलर
 प्राणकहोबिलंबाया ॥ पंथीतकोअगंमफ
 गुरसबदांनिरंनेरहै ॥ ४९ ॥ स्वांमीजीत्वसे
 वारयारे ॥ अगमअरथकथांनधारंदया

येद्वैबलेनकांटा लो गो॥ धूर्द्धं ध्यानगणनकी छाया॥ मुद्रा सब
 दनिरंतरियाया ॥११॥ पांचततकी मंती संवारे॥ सतगुरकहे
 ससूके॥ मिरतग होद्र कालकौं मारै॥ अंगमगा द्रघरि इके॥
 ॥१२॥ अवधनिरंजन साधी मेरे॥ प्रमजोगयदपूरा॥ काइ
 रउलटि जात जहां कातहां॥ पं ऊं वै कौं ईसूरा॥ ॥१३॥ प्रपांन
 गदलि मनकौं मारै॥ बल अगनिले लंका जा रे॥ ही मजिग
 अंतरि धुनि होइ॥ यापयुनितहां लकडी दोइ॥ ॥१४॥ अब तो
 एके एक स्पौ लणा॥ जब लाणा तब मनिसनवगणा॥ दीन दया
 लसतगुरकी छाया॥ सहज समाधि प्रमय दयाया॥ ॥१५॥ ये
 डा अधर उलटिय र धरे॥ नदी घाटी कंठक कहा करे॥ तारा
 मंडल चंद्र अरसूर तजि उंचा जाइ॥ प्रमजोति मेरे हे समाइ
 ॥१६॥ लूलि लूलि मिमंता सब गद्दी॥ अब तो वात ओर ही मर्द
 प्रमउदार अब गतिकी दया॥ करतारा जेरे तिसो तया॥ ॥१७॥
 जोगमूलका जाणै नेदा॥ जनमजुरा कंधतही बिंद॥ छिपी वा
 त अति अंतरिल है॥ सबद बिचारि उन मनी रहे॥ ॥१८॥ मनग
 हिय वंन मेरी गर बूरे॥ तंवर गुफा में आसण पूरे॥ सिसहर
 कै धरि आणै स्तर॥ सबद अनाहद वाजे तर॥ ॥१९॥ मनसया
 मान प्रमसुख मां हि॥ ग्यान गुफा गमि बा डै नां हि॥ अरसय
 रस आनंद सरेक॥ हारि जीतिकी रही नरेक॥ ॥२०॥ त्रिवे
 णी तटिता ली लागी॥ मन थिरिय वंन सुषमनां जागी॥ दस
 वै चारि बस्या मन जाइ॥ बंकना लिइ मिरतर सखाइ॥ ॥२१॥
 सनिमंडल में सी गी बजे॥ मानो घटा दसौ दिसि गाजे॥ स
 हजिययाला सरितरियावै॥ मनसतिवाला जोगी जीवै॥ ॥२२॥
 बल अगनि सबही वंन दहा॥ तरवर एक अयंडितर हा

कांमक्रोधवलीता ॥ चित्तचौपट्टिपत्रीससारी ॥ प्राणवेले
 ध्यानधारी ॥ ५ ॥ मनचिरतनिजगणनहे ॥ सतगुरदीया
 वताइ ॥ जनहरीवासहरिअघटहेस ॥ घटिघटिरसा
 समाइ ॥ ६ ॥ २ ॥ मनमहविधौलजोगगंधलियते ॥ सत
 गुरेकहासआरंभकरिकं ॥ अलषनिजनहिरदेधरि
 हरिषसोगचिंतासबजाइ ॥ मिरधीपकडिसंघकोषाइ
 ॥ मनसाधंगयाहजलपूरि ॥ जेलायांचअगनिमुषि
 चूरि ॥ पाणीजलेमीनमरे ॥ त्रैसाआरंभजोगीकरे ॥ २ ॥ आ
 सांनदीअपूरीबहे ॥ इम्रितकरेगिरानिरसरहे ॥ नोसेन
 दीनिवासीनिहचलतई ॥ आसातिह्मांक्षुषीगई ॥ ३ ॥ आ
 संणअधरपवनमनहाथि ॥ सुरतिजोगणीजोगेसाथि ॥
 प्रसजोगआनंदअन्यास ॥ निरतेतयाकालकानोस ॥ ४ ॥
 आसाकेघरिचिंताबसे ॥ कालरूपणीजीवहीडसे ॥ गोज
 मनमधिबेसजाइ ॥ तवजोगचिंताकोषाइ ॥ ५ ॥ सतरज
 तिमरमोहतजिमाया ॥ मननिहचलनिरतेघरिआया ॥ ६ ॥
 नाफिस्याहाडिघटघाट ॥ पांनधांनगटिलणाकयाट ॥ ६ ॥
 त्रिकुटकेटमेंआसंणमांडे ॥ राजतीनिडंडदेवांडे ॥ योलि
 कयाटघाटघटिलहे ॥ प्रहरिडालमूलनिजगहे ॥ ७ ॥ इंदीया
 चपयंचकरिघेरै ॥ जोगमूलकेधोरैजेरै ॥ जुगतिविचारै
 अजरजरै ॥ गुरगमिधांननिरंतरिधरै ॥ ८ ॥ असलिगारीब
 आयाडारै ॥ मारणहारकहालेमारै ॥ स्तनैघरिविसहस्क
 हायाइ ॥ मनहजेघरिरहासमाइ ॥ हरिजीतिकायासाह
 स्या ॥ वाजीजीतीडावविचास्या ॥ खेलनहारगयामुषिगोष
 ताकापलानपकडे ॥ कोइ ॥ १० ॥ जोगमूलगाहिजोगीजोगी

ये है चलेन कांटा लो गो ॥ धूर्द्ध धान पा न की छाया ॥ मुद्रा सब
द निरंतरिया या ॥ ११ ॥ पा चतत की मंती संवारै ॥ सत्तगुर कहे
सहजे ॥ मिरतग होइ काल कों मारै ॥ अंग मगाइ धरिइ जे ॥
॥ १२ ॥ अब धनि रंजन साधी मेरे ॥ प्रमजोग यद पूरा ॥ काइ
र उलटि जात जहां का तहो ॥ यं कुंवे कौ ईसूरा ॥ १३ ॥ प्रपा न

अंतरि धुनि होइ ॥ या यद्युनि तहां लकडी दोइ ॥ १४ ॥ अब तो
एक एक स्यो लखा ॥ अब लाया तब मनि मन वगा ॥ दी न दया
ल सत्तगुर की छाया ॥ सहज समाधि प्रमय दया या ॥ १५ ॥ ये
डा अ धर उलटि पर धरे ॥ नदी घाटी कटक कहा करे ॥ तारा
मंडल चंद्र अर सूर तजि उंचा जाइ ॥ प्रमजोति में रहे समाइ
॥ १६ ॥ नूति नूति मिमंता सब गरी ॥ अब तो बात और ही नई
प्रमउदार अब गतिकी दया ॥ करतारा जेरे तिसो तया ॥ १७ ॥
जोग मूल का जाणै नेदा ॥ जनम जुरा कंधन ही छेदा ॥ छिपी वा
त अति अंतरि लहे ॥ सब द बिचारि उन मनी रहै ॥ १८ ॥ मन ग
हिय वं न मेरी र चूरे ॥ तंत्र र गुफा में आसं ए पूरे ॥ सिस हरे
के धरि छाणै सूर ॥ सब द अनाह दवा जे तुर ॥ १९ ॥ मन नया
अर सय

र स आनंद सरेक ॥ हारि जीत की रही नरेक ॥ २० ॥ त्रि वे
णी तटिता ली लागी ॥ मन थिरि य वं न सुष मनां जागी ॥ दस
वे चारि बस्या मन जाइ ॥ बंक ना लिइ मिरतर सवाइ ॥ २१ ॥
मंनि मंडल मै सी गी बाजे ॥ मानों घटा दसो दिसि गाजे ॥ स
हजियया ला नरि तरिया वै ॥ मन मतिवाला जोगी जी वै ॥ २२ ॥

तात्पर्यमें मेरा वासा मज्जोतिहरणप्रकाशा २३ ता
 का मन क्रोध जोगन ही तो ग मांनिअ मांनिहरयन ह
 सो ग राजनरीतिअंगन ही संग गिरह परिवार सुतव
 नितान ही संग २४ अलयनिरंजननिरभैनाथ रागदो
 हेतन ही हाथ तादरवारिलेयक को रहे दिलमालिक
 सबदिलकी लहे २५ सबमें बसे सबकी लहे मुयते
 फेरिजावन ही कहे वारपासन ही अगम अगाध तहारे
 कआधको द्रय कुंचे साध २६ रसना मुयसी सहायन
 पाव घटन ही अघटवेरन ही नावे रूप अरूप भेषन
 जहो माया अगनि नव्यायेत हो २७ कालनजुरा देह
 ही दीन जीव जनम पुष्टन ही बीन ताकी कीमतिको
 ईके सैल है कहत कहत बौरा होइ रहे २८ जनहरी
 दास कालन ही जाल पूरण ब्रह्म अनेत प्रतिपाल रम
 तारो मनिरंजन राइ अब तो मन तहारे हासमाइ २९
 दिलमालिक कालिक साहिव मेरा जनहरी दास घरि
 जाया चेर पकडि हाथ जिनि बाडे मेरा पडार हो
 चरणों तै मेरा काल जाल ले करे न केरा ३० ३१ जन
 ह जोग ग्रंथ लिख्ये बाण पकडि उचारया मनफिस्त्रि
 गाऊति नीसाणा न्याररहा मंडी और ही मूति ३२ सावस
 वदमो नैन ही ऊवत हां वलिजाइ मन साबावा करम
 गनिका को बरतताहि ३३ मनहम स्यों घडि कूल ज्यो
 रिषे दिधा वै बेह बार्डका गुण बाडि दे बसधाका गुण
 लेह ३४ अगम तहां यकुं तान ही रही तरम की रेव मन
 कामाच्या मरेगा करिकरिनां तं भेष ३५ मायाका कादौ

अगमसबदसुयदेवसुधाणां संकरे कहासुणाइ
तनदीयाराथासबद योंमनहवतेंधरजाइ २० इंदुलो
कतेंउतरी रनाकरतसिंगार तबसुयदेवपाररसा
धस्थानबहंतीधार २१ जनकजनकसबकोकहै आ
रलोकस्योबाध जनकमताकुबञ्चौरथा इयसुयरहत
अवाष २२ यावअगनिमुधितवरे जनककहवैसो
इ इहांदाधाउहोदाकिहै इहनरोसामोहि २३ जाइत
बिइपदिरसा मायातरकीछाह गौरयकुबनोलात
था जिनिपरकात्पाराहिबाह २४ राजपारतजिनर
धरी कीयाअपणाकाज जोपाध्यातरजालहै तैवै
क्योंबाडैराज २५ हसतीघोडागंवगत सुतबिनतपा
रिवार कहेमातामेंणावती तजिगोयीचंदयऊधार २
६ यऊसुयबिषसंमिदैषिये लाधिसौजनहारि आ
वसतअंतरिवसै उलतगोतामारि २७ बलबाडानिर
बलसया गोपीचंदगहिषान सनिमंडलमेंरमिरसा अ
गंसवोरअस्थान २८ बत्रसिंघासणबाडिगया औसीब
यीआइ मायासंगिसाईमिलै तोबलयबाडिक्योंजाइ २
९ सेकतुलाईगीदवा इहरंककेईद यथरतलैबिब
इकरि साईनजाफरीद ३० रतनपारयुमनहवकी
या योज्यासबहीनेय तवकाकोगौरयमित्या ऐमनह
कागुणदेधि ३१ यंघनांमनहवसतो मनकेमनहवके
इ एकैमनहविहरिमिलै एकैयडदाहोइ ३२ कामने
धमैतैमनी परदेसक्यानचूरि यामनहविसनबुडिये
हरिसौंपडिरेहरि ३३ उएजीतैगोविंदतजे निरतैनिज

प्ररिजादा यामनहृदिमननापजेः ऊर्ध्वयदेनकाः ३४ ॥
 कालकहरगरजतफिरेः दिनिदिनिव्यापेरंग जनह
 रीदासहरिभजनविनिः जहातहां विपत्तिविवेग ३५
 जनहरीदासडरभयतहां ॥ जहां नहरिस्पों देता तेनर
 हरिलागानहवी ॥ जंमद्वारेडददेतः ३६ जनहरीदासगो
 विंदभजे ॥ नूला मली नहोः अबनूलातेफिरेहगाः ३
 ऊडः येडा दोष्ट ॥ ३७ ॥ २४ ॥ मन रमग नागगप्यातस्य
 ते ॥ मतप्रसंगसुणो होसाधोः त्वमस्यांकडंसुणाः कव
 ककमनविषयातजे ॥ कवकविषयफलयाः ३८ मनसाका
 लाहकरे ॥ कचुनआवेहाथि मननूवोतरमंतफिरेः सु
 एइदेस्यांकेसाथि ॥ २ ॥ यामनकीयाहीतिहे ॥ जहांतहां
 चधिजादा ॥ कवकलौटेबारेमे ॥ कवकमलिमलिन्हाः ३
 ॥ ३ ॥ यकमनपुरिखनारिसुतमात यकमनबंधुयकमो
 मनताता ॥ यकमनमूरिययकमनदेव यामनकालहे
 नतेव ॥ ४ ॥ यकमनसक्तिरूपकेजाः ॥ यकमनभजेनि
 रजनराः ॥ तुलाबैसिकंचनदेकाटि ॥ यहमनविकेबिरा
 णोहादि ॥ ५ ॥ यकमनदाताहोइदेतकरे ॥ यकमननूवोमा
 गोमेरे ॥ आरंभकरैरहेनिरदद यकमनमुक्तायकमनवं
 द ॥ ६ ॥ यकमनघदसयेडाकरे ॥ यमृजोयेतविराणाचरेः
 रोपेआपआपकोयास यकमनकरेआपकानास ॥ ७ ॥ ये
 कंमनसांहेवेदा लयचौरासीघटयकमनधरे ॥ यलकप
 लकमेंजामेंमरे ॥ कवकनूयाकवकधया ॥ मनहीकोम
 नचेटकलाया ॥ ८ ॥ यकमनसाहवेदठगराज ॥ सूक
 नसिंधोवाज ॥ स्याहलालपीलीमधिरेय ॥ यक

क्रिकटाभेय ॥ १ ॥ यकमनतरवरयकमनंबाया यक
मनविरकतय ॥ २ ॥ यकमनमाया रातिदिवंसमनरहेउदस
यकमनकरेगुफामेंबास ॥ १० ॥ यकमनसुरनरअसुर
अतीत जरषरीछमिरघाभैतीत सतगरकहेसयक
मनकरे बोडैकूपहसुपहपगधरै ॥ ११ ॥ साधसबदमा
नेसुषसार यामनकाकूबअगमविचार यकमनर
नबनयकमनसहर ॥ यकमनप्रमिरतयकमनजहर
॥ १२ ॥ तीरथवरतकरैसंमिताइ यकमनअगमतहाच
लिजाइ यकमनअंबरीबजरीजरे सबदफुरणकौया
विधिकरै ॥ १३ ॥ येंडाअनंतनअवेवौड कहोकहांलौदी
जेजोड जोगध्यांतधुनियकमनधरै यकमनतेषबहत
रिकरै ॥ १४ ॥ जनहरीदासकेयाहरीति अरसपरसहरि
होसौप्रीति जनहरीदासयामनसौंदरै रातिदिवंसहरि
सुमिरसाकरै ॥ १५ ॥ १५ ॥ मनसहो जोगयलियते ॥
फिटिफिटिरेमनविकट बहोतनाटिककहांनाचै कबड
दाताहोइ देइ कबडजाविगहोइजावे ॥ १६ ॥ मनजोगीज
गमसेष मनबडभेषबणावे इधाधारी होइ फिरेसरमें
दुषयावे ॥ १७ ॥ मनगहिबेसेमूनि निजसूनिकीषबस्तिम
वे मायामुंबमुडाइ बायाबहोतिलकबणावे ॥ १८ ॥ चोका
देवेचाहि रसनाके हाथिबंधावे मनविषयासंगारमें ॥
मनमायास्योलागे मनसुरतणसबल मनमुषिमोडिक
रिनागे ॥ १९ ॥ मनबहोजोधाबलिवंत मनहीरंगविरंगा म
नरूपदेषिप्रजले दीपज्यो जलेपतणा ॥ २० ॥ मनगिरवरम
नकूप मनगंतीरमनगंदा मनआधाघोरअंधार मनसो

तलमनवंदा ॥६॥ मनन क्यो मन नीच । मन फले मन कले ।
 मन फिरि मरे पियाया । मन प्रम सुयसागरि जूले । ७ म
 नतारे मन तिरे । मन लेया रिउतारे । मन चो रायीकाजी
 वा । फेरि उंडे दहि मारे । ८. मन जब क मन शिरक कनवा
 को रूपवणावे । मन सूकर मन स्वान महा परं ले बदि
 जावे ॥ ९ ॥ मन पाणी मन लाड । मन को डी मन दार मन
 कवत मन काच ॥ मन मुरीद मन पीर १० मन मंला
 मन निरमलो । मन साचो मन सूचो । मन न क्यो मन नीच
 मन उतिम मन ऊंचो । ११ मन मोता । मन पीय । मन दददी
 पदियावे । मन सीलता मन स्थथ । मन फिरि मन दाय मारे
 ॥ १२ ॥ सुयमनि उलटी फेरि याचमना न कटि वनाये व
 कनालि विप्राम । फेरि नाना म्यानावे १३ पाणी साहाय
 सि । अगम काही उलावे । मन फिरि ग्राम काम को धकावा
 उगावे । १४ । मैतें गुवगुमान निमयनदार दणनयावे ।
 गिरानि मंडले संवडाइ अगम म्या सुवर्तन गावे १५ आग
 आणै सीर । गिरानि रमन लटायावे जनदरी दाय मना वि
 कटहे । बहो वरूप करि जाइ । एकटी जेता परम सुय १६
 लोखी डांयाइ १६ ॥ १७ ॥ मन उपरम जो मग १८ ॥ क
 वड फाडे कवड जाडे । कवड सीये कवड तांटे १ कवड
 मोले कवड जागे । कवड जोरा ध्यान स्यालागे २ कवड अ
 ग्रहारी घोडायाइ । कवड काले प्रधाइ ३ कवड अ
 गति अणराणी । कवड सुवर्तन निरंग गतागी ४ कवड च
 नाके यरि वंदे । कवड अरकि थारार ५ कवड न्या
 पात उरि धारे । कवड उलटि आंति गांरी ६ कवड जरा

अजराजरे कबडूसबदकसांधिजिमरे ७ कबडुयां
 चौंइरीदत्ते कबडुमेरतेरलेवंचातवे ८ कबडुमोहवि
 रयफलयाइ कबडुसाधसंगतिचलिजाइ ९ कबडुनि
 विधितापमैबसे कबडुंबस्यअगनिमैधसे १० कबडु
 हरितरवतहांजाइ कबडुबैसेयुवाआइ ११ कबडुल्ये
 कैयेडेजीवे कबडुअगमपयालापीवे १२ कबडुहार
 जीतिरसरीति कबडुरंगमभजनस्यौंप्रीति १३ कबडु
 कायाकामणिकसे कबडुकायास्यौंमिलियेलेहसे १४
 कबडुचंदसूरसंभिकरे कबडुध्यानअलयेकाधरे १५
 कबडुत्रिवेणीसंगिन्हावे गुरगमिबसतअगोचरयवे
 १६ उलटाथेलिकायासबसोधे सुनिमंडलमेंपवननि
 रोधे १७ हवकरिमरेनबैसेहारि अगमध्यानधरिसहजि
 विचारि १८ अटचक्रमैऐकैडोरि सतगुरसबदगयाम
 नचोरि १९ ऐकमेकअंतरकबनाहि हरणब्रह्मबसेम
 नमांहि २० बंकनालिइमिरतरसयाइ मनमायाबाया
 बसेनजाइ २१ मेरडंडमधिडौरीलहे ब्रह्मअगनिकाया
 बनदहे २२ दसवैवारिबसेमनराजा सबदअनाहदबा
 वैबाजा २३ जनहरीदासमनबसिनया गयाभरंसब
 गोर ऐकऐकस्यौंमिलिरह्या तबयाईनिरभेकोर २४
 ॥ग्रंथ २॥ वाहलैजोगप्रथलियते ॥ दियएदेससहरकुं
 दनपुर पंवंणिबतीससुय्यारी राजातलोलीगनिरभेकै
 न्यारजकंवारी १ राणीकहैसुणोंराजाजी बिलंमनकी
 जेकाई बाईबडीबडौबरहेरो आइआदिसगाई २ नि
 जाधुरिनंगारिबसेकंवुलापति सकलसरोवंणिस्वामी ब

रवेन्द्रविद्यननहीवेगंम॥ घटिघटिअंतरजांमी ३ घटे
 नवधैसदाज्योकोत्तौ॥ बिरचिनबुरोल्यावे रोमनरता
 रप्रसस्यदाता॥ सोमहारेमनितावे ४ सकलमवाणकर
 ताकरणमें॥ विषानैआपेकाई॥ राजाकहैसुणोरुक
 मईया॥ तहांदीजैरेबाई॥ ५ रुकमईयोकाईकाहोनमा
 ने॥ आनसगाईहैरे॥ राजाकहैदेविबरबरस्या अटक
 अपूवाकैरे॥ ६ चंदेरीसिसपालअमुरअरि लगनतहा
 लिखिदीया॥ हैवरगैवरयाइकपाला वहीजोधोसंगली
 या॥ ७ केहरिकहोघासकेचरिहै॥ आणोअमुरबुलाई
 जीवणनहीमरणसिरअपरि जीतयाअविषयाई ८
 सोसोसिसपालचंदेरीचिता सोबरतहावसीजे रावय
 मोनदैतवकुतेरा॥ मिमताकेरसयाजे ९ प्रममनेही
 प्राणनाथहरिसदगतिसदासगाई अलखपुरिसअव
 गतिवरसिरपरि॥ कितमवस्योनजाई १० कितमतको
 सकलसत्तिविनसे॥ अतिनासीमहासोमाई आदिअति
 हरिसदासनेही॥ प्राणवसेतामाही ११ बिषबुलाइअ
 बलायाइलागी॥ रोमतहांचलिजाई नीवतलोकाईदाम
 नहीज्यो॥ रुकमईयोइयदाई १२ अबहरियेनाथतवा
 डो॥ पतिमहारकुंधारी॥ आकुलनईसाधनितिरु दर
 सोदेवमुरारी॥ १३ वांझाणबिरहनीवनेमहारे कहातका
 सनितावे॥ रुकमईयोरोसकहोनमाने॥ नंदोतरमनवावे
 ॥ १४ यडीमकरतआदिस्त्रुदिनिदिनि॥ पतिवरतायोसाये
 चीरीलियीविप्रनेदीन्ही॥ रयेविप्रविचिराये १५ मनमध
 विप्रगायावेगेमपुरि॥ लिथ्यासीलेयकुंचाया॥ देयिदीयह

रिक्कारादवांच्या वलोविप्रमहे आया ॥१६॥ साचासवर
 रथिसिरउपरि आनंदअंगिनमावे वांमूणहरिसुष
 हेरिबधाईमांगीनेडीजानवतावे ॥१७॥ अनंतकोटि
 वरसुमंडसौजसव इंडकुंमेरघणोरा ब्रह्माअनंतमद
 देवअगिणित चंदसरबकुतेरा ॥१८॥ ऐनीनाथसि
 धवोरसी सुरतेतीससवाया नारदमुनिजनसाधस
 कलसंगि इसाभेदसौआया ॥१९॥ सीलसंतोषसतिद
 यासवूरी करमक पूरउडाय्या ॥ असेकतिसौहेलेदी
 ड्या ॥ पवनतुरीचिटकाया ॥२०॥ आरतीकरिकरिच
 राणयलोटे केचरचेकेगावे पेमप्रीतिचंदनघसिअ
 हिंविधि प्रसिप्रसिसुषपावे ॥२१॥ साथिसयीलेयेलए
 कैमिसि निजवरहेरणआई बडकंवरिहरिदेषिन
 जिरिनरि नयसवरसासमाई ॥२२॥ बडविप्रामतह
 हरिउतरे आत्मअंतरिनेरा सयीसहेलीमंगलगावे म
 नसाचांदरिफेरा ॥२३॥ नैणारंभवसेहरिबैणं सकलस
 यांसुयलाधा सुरतेतीसघेरिघरिआया सतगुरुडोरा
 बांधा ॥२४॥ अरधेउरधेचौरीचरधे तहांहयलेवादीया
 अतिउच्चाहअबलासंनिआनंद हरिसंगिफेरलीया ॥
 ॥२५॥ रलीरंगरगनानांविधि सुनिमंडलकेबाजे पति
 स्पेंप्रीतिजीतिगुणदूजा वेणुगिगनिभैबाजे ॥२६॥ गणन
 गुलाककेसरिवकुकरणं अरथअबीरथिंडाय्या आजि
 सयीहरिमहेलियधास्या तलमहारेमनिनाया ॥२७॥ सुंद
 रसेकसाचउरिअतार संमितासोडि विच्चाई रामराइ
 तहांआइविराज्या सोसुषकस्यानजाई ॥२८॥ गातगुण

मंगमकरिरावोंसेऊसनेहीआया॥विण्णदीयकदऊंदि
 सिउजियाला॥आंगणिचौकिपुराया॥२॥घरिघरिसंग
 लचारसदासुख॥वरवारूबनमाली॥सुखमेंसीरअधिल
 अनितासी॥प्रमजोतिसोताली॥३॥प्रणिसिहरिसंगि
 करिलीन्ही॥यत्तिकोयलोनमैल्लेहो॥जनहरीदासनिसिदि
 निअंतिआनंद॥ताआनंदमेंबैली॥३॥तोडरमल॥अन
 हदबेणबजाइ॥तोडरमलजीतो॥हरिनजिततरोयारा॥
 तोडरमलजीतो॥४॥मनगहियवनअंगमंगमकीया॥प्र
 मसनेहीयाया॥योचसयीमिलिमंगलगवों॥आंगणिचौ
 कपुराया॥२॥चित्तचौकीहरिचरणाराव्या॥कवलसि
 घासणदीसैया॥प्रलायिंगलाकरेआरती॥प्रिमकलसठ
 रिलीया॥३॥गिरानिमंडलमेरचोंमांडहो॥यांचतणील्यो
 तोणी॥आत्मप्रमात्मदृष्टलेवो॥पीवसगियेवैप्राणी॥४॥ज
 नहरीदासहरिअरसप्रसहोइ॥मैणानेहवधाया॥जाकी
 षीसोमहलियधस्या॥मेरेरामसनेहीआया॥५॥२८॥
 इमिरहाफलजोगग्रंथलिख्यंते॥असलितावजबअंतरि
 आवें॥म्यानविचारबिबेकबतावें॥१॥दयासबूरीजरणा
 जोग॥त्रिविधितायकालगेनरोग॥२॥सीलसंतोषकु
 निअजपाजाया॥प्रहरिघरगयापुरात्मयाप॥३॥सतअ
 रसहजयवनमनहाथि॥मनसायाचोंचैलासाथि॥४॥
 इतवतकोईसकेनकृति॥मूलगयाममिताकादृति॥५॥
 सुमितासुबधिविद्यामनसाथि॥नगतिजोगदेइलाइ
 हाथि॥६॥कोमहंगईहचौटीफिरिधैस्या॥पकडिसील
 सकलसौजेस्या॥७॥निरभेनेयानगरमेराजातीतरकै

मुषिरेष्यावाज ॥ ८ ॥ पवनययालाद्रंमिरतपांन एकाह
 सीअथडितध्यान ॥ ९ ॥ हेतनावयेमकाबंधमनकाबू
 टिगयासबदुजाधंध ॥ १० ॥ सतगुरिरेकअमरफलदी
 यासोहंमहेतप्रीतिस्योधीया ॥ ११ ॥ मीवाअजबअकल
 संमिनाइ ताकीफंकविथासबजाइ ॥ १२ ॥ यडइमिस्त
 फलजापेहीइ ताकापलानपकडैकोइ ॥ १३ ॥ पेडाअधर
 असुवीचालअबकेसतगुरिकीयानिहाल ॥ १४ ॥ हारि
 जीतिकापासागया उजलनिरमलनिरमैतया ॥ १५ ॥ ज
 णिबूकजागैसौजीवे सहजिसमाधिसदारसपीवे ॥ १६ ॥
 अजयाजायनजनबलिजांन ऊकडगयावस्याफिरिगा
 व ॥ १७ ॥ सोइमिरतफलहिरदैधास्या हिरदैधारिकालमे
 मास्या ॥ १८ ॥ मायादीन्हांमोलिनलहिए सरवसचेताका
 हीइरहिए ॥ १९ ॥ यासैजुगअवधितनबीजे तनमनदेला
 तेलीजीजे ॥ २० ॥ रूपरेषवारनहीयार याफलकाकुच
 अगंमविचार ॥ २१ ॥ तरवरडालफलफलनाहि सापीच
 तवसेसबमांहि ॥ २२ ॥ मातपितागांवनहिगांन अलथनि
 रेजनताकानांन ॥ २३ ॥ विद्यानगरिवसेसबलोग मन
 काबूटिगयासबसेसैसाग ॥ २४ ॥ जनहरीदासअबअसे
 नई मनसादौडिअगंमत्तहांगई ॥ २५ ॥ लोकीडोरिसुर
 तिमधिधागा मननिहचलनिरमैसुसेलागा ॥ २६ ॥ गुंथा
 ॥ २७ ॥ गंजनउपदेसजोगंयलिथरौ पांचततगुणतीनि
 घाततहांसात्समोई जागितसुषपतिसुपन पांचमानई
 दीपवीसप्रकतिलोई ॥ हेतअहेतअलसाक निडाकि
 चंचलनिहचलनाही पांचकमैदी डमसुषमनप्राणव

समनसातामांही ॥ शरगदोषअनिमांता ॥ दिनपायंडअ
 हंकारा ॥ कामक्रोधभरममीह ॥ आसाहवलोत्तअमान
 अंधारा ॥ सीतउखसुधात्रिया ॥ मानिअसांतिपययोधे
 मंमितामनोरथसोचयोच ॥ सांगिसांसेसोये ॥ कुबधिअ
 विद्याकलयना ॥ चिततिहोतहंलहिए ॥ चारिअवसथा
 यदचक्रा ॥ घटसौअवघटयो कहिए ॥ घटमेगोरषण
 ना ॥ ब्रह्माविचार ॥ हंएवंतहेता ॥ विष्वक्भैकाभरथरीना
 वामहादेवमन ॥ जलंधरीपात्रजोग ॥ नारदनेहा ॥ लक्ष्मणांक
 कारलयणवतीस ॥ सुभदेवसंतोया ॥ गोयीचंदआनंद ॥ सी
 गीरिषसील ॥ चरयटचितायेमप्रह्लादप्रमगुरपकास ॥
 धूधुनि ॥ प्रजेपालअरथ ॥ जनकजाणयणो ॥ चौरंगीनाथवे
 थीदसा ॥ अमरीयअचाहिसतीकणोरीसाचा ॥ मनकसति
 नपाअरजनन्याव ॥ सनेदनसहजा ॥ हवतालीहताकंकार
 निहकरेमा ॥ हालीपावहोतिवा ॥ निहकंपकवीर ॥ मीडकीपा
 वषमोध ॥ नामदेवनिह ॥ धंधलीमलध्यान ॥ रहैतिरेदास ॥ अ
 वषड ॥ नाथअघटा ॥ पणयीयो ॥ दृष्टीनाथप्राण ॥ समकिसी
 जो ॥ रहणीरामचंद्र ॥ दत्तदया ॥ मगधजमंनि ॥ जडभरथ ॥
 नेहा ॥ गोरयसबघटमांहि ॥ सुतोसबघटकीदेये ॥ दयाकरे
 ताहिकहे ॥ औरकेपदे ॥ नलेये ॥ नाथपाकदे ॥ हाथा ॥ एक
 डिहरिचरणराये ॥ नजो निरंजननाथ ॥ सबदसतगुरये
 नाये ॥ पंडबिरहमंडदोइसिध ॥ ग्यानअरगोरयलहि
 रे ॥ जनहरीदासमंमबाडि ॥ ग्यानगोरयतहोरहिए ॥
 ॥ अंथ ३० ॥ बारजोगअंथलिष्यते ॥ बारवारमनकोप्रमो
 धी ॥ मनगहियचंनसहरसबसोधो ॥ आ अगंमग्यान

तसकरमारिमनावे आसंणअचलतहांसननिहचल।
 निरमेवसतवतावे १२ स्वामीजीदीरघघटांकूणमुषि
 सोषे वाचलविघनविडीहे सातसमदजलतिरणक
 तिनहे केसेपचाहोवे १३ मनसाघंटायवंनमुषि
 पीवे। मोहमनोरथमारो मनगहिपवंनरावंणवेगाम
 पुर सुरतिसहजघरिधारे १४ स्वामीजीकूणवसच
 करसंगहिडारे। प्राणकहांसुप्रपावे मनकूंकहांक
 सेकंचनज्यो सोलाहकलादियावे १५ अवधुयबमुसां
 नचरणतलिचूरे अरथअवीरमिंडावे मनकोब्रसत्र
 यनिमेंहोमें सुवधिसहागालावे १६ कूणघटैतवकू
 णप्रकासे मोधाजगतिनतावे सातलवोहसचारसपी
 वे। निरमेनिजघरिआवे १७ अवधुरजनीघटतउदेत
 आस्वर दोइदोइचरनइया येलेप्राणनिगामेंतेंआरो
 निजतरवरकीबाया १८ स्वामीजीजोगीकहो कूणर
 सबाडे कूणप्रयुलिजेवे कूणगुफामेंनिसदिनिवेले
 कूणपयालापीवे १९ अवधुनिरमेतोदरबारनजावे
 षिमांजडीलेजीवे ग्यानगुफामेंनिसदिनिषेले आग
 मययालापीवे २० मोजिगामांहीमंठीविरजे सुस्तेतीस
 पिआणो वांवंडकेसिरिचीटलगावे नैसाराये पाणो २१
 तोपाचूकाचारउतारै नैरुंका नैयारा अनहदसबदये
 करसिअंतरि आडिगया पूजारा २२ त्रिविधितापति
 त्कलतरकितजि मूलकंवलदलकूले ग्यानचक्रलेअ
 रिदसजीते त्रिवेणीसंगिकले २३ स्वामीजीकोणजोगा
 मेंमननिरमे रोगरवीतरतोडे आसंणकोणकहांसेवेत

स्वरतिकहाले जोडे ॥२४॥ अथ वधुमननिहचलनिजवसत
 वतावे रोगयलटिके जोगी ॥ १५ ॥ नतवतिबेवारसयति
 प्रमसंनिरसतो गी ॥ १५ ॥ स्वांमीजी आठरबाडिअंगमधरि
 येले अंतरिअलयलघावे ॥ ताकासूयकहो धोकेसासंम
 किबिनां सुयनावे ॥ १६ ॥ अथ वधुहरिप्रस्यातवहीमननि
 रनेकेहरिप्रस्यानांही ॥ तंतमनिलागिन्यामनहीरा
 वडुडिनव्यापेकांई ॥ १७ ॥ सतगुरसबदसाचकरिमां
 नेसतगुरसाचवताया ॥ अथजीवकाज्योहैमला ॥ त्योसत
 गुरिसंमजाया ॥ १८ ॥ जलमेंअगनिअगनिमेंजलेहो ॥ सब
 मेंहीसेयांणी ॥ पगतीजालअगनिजलसेया ॥ तबअ
 गनिअगनिअंसमांणी ॥ १९ ॥ स्वांमीजीयाहतोअजरक
 होकोजरणी ॥ अथाविनांकोनावे ॥ यांणीअगनिकिशीवि
 बिसोये ॥ मनप्रतीतिनआवे ॥ २० ॥ सतगुरसबदअगम
 कोपेडी ॥ ताचढिलांघेयारा ॥ कात्याकाष्ठअगनिमेंडा
 स्यातबजलिवलिज्याअगारा ॥ २१ ॥ स्वांमीजीसंजमकुं
 एकहांधसिज्जले ॥ धोतीकुंणमंगावे ॥ निरभैडोरिकहा
 लेराये ॥ कुंणकलसभरिआवे ॥ २२ ॥ अथ वधुसंजमसीलगान
 धसिज्जले ॥ धोतीधानलगावे ॥ सुयमनिडोरिगिनिलेराये
 धिमांकलसभरिआवे ॥ २३ ॥ स्वांमीजीकुंणवसतजासुं
 मनप्रसेकेसेचोकेदेवे ॥ कुंणवसतलेआगेअरये ॥ कुंण
 जतनस्योसेवे ॥ २४ ॥ अथ वधुआत्मपमात्मपतिप्रस्येमनसा
 वेकादेवे ॥ येमपीतिलेआगेअरये ॥ वडुतजतनसुंसेवे
 ॥ २५ ॥ स्वांमीजीदेवलकुंणकहांसोमूरतिसेवगकोसुय
 यावे ॥ वेकीकुंणकहालेराये ॥ यातीकुंणचढावे ॥ २६ ॥ अ

वधुं कंधा कंवल सुलटिकरि सुधा बटवैव संतसंताले वि
 तवौ की हरि चरणारये तन मन पाती चाहे २७ स्वामी
 जीपे डाकुं ए किसी विधि चलिबो निरयि निराय विचारे
 रूप किरचैन घरि घरि नांचे जुगं शी गणी हारे ३० पेडा
 अधर पगां विणि चलिबो आंषि अनूप उघारे आनंद
 सहत सदार सयीवै कर मक एका डारे ३१ स्वामी जी
 अबला कुं ए अगम घरि खैले पत परीषत जाया जनम
 तस वै सकल कुल मन मुषि प्रमसं निस्यो लाया ३२ अ
 वधु बांज नर्तक ब बेटा जाया बेटे बंन घंड जारा रसना
 पये परम सुष बिलसे प्रचे प्राण अधारा ३३ ती निलो
 क नां नार स बिलसे अतिक लिडुष दार्दी ती निलोक
 आगे सुष स्वामी सो सुष दो हवतार्दी ३४ दिष्टिन मुष्टि
 न शान नगा था रहै सकल तै न्यारा ती निलोक आगे अ
 सा सुष ता का वार नयारा ३५ सो सुष क हो किसी वि
 धि लासे कर मन व्याये काया जे न हरी दास सत गुर कौ
 वे सम जावो गुर राया ३६ अ वधु आत्म के अस्थानि
 लही जे मन थिर के तो पावै प्रसत स वां देहत न त्यागो पी
 वमै प्राण समावे ३७ आत्म का अस्थान कहां है जामै अ
 लष लुकाण मे स्वामी सत गुर सति पूवौ तुम्ह हो ब होत
 सयांण ३८ सब द जहां तै अवि चले उलटा पवं बस माद्र
 सौं ज सहत सुष मनां नदी तहां मिलै जो जाद ३९ मंन
 मंतिवा ला प्रेम का पावै ये म अघाद्र रोम रोम तन मन वि
 ले ऐक मेक सुष थाद्र ४० अंतर कुं छदी से नही ज्युं ज
 ल जल हि समाद्र तब हरि हरि जन ऐक है जन हरी दास
 ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

॥२२॥ सौलातिथिजोगर्ग्यलिष्यते ॥ ग्पानसबदसतिअ
 रथविचारे ॥ मानसमनकामेलवतारे ॥ सुरतिसंबाहिन
 सेनिरदावे ॥ साचनबाहेजूवनतावे ॥ भैतैसुरजामोटां
 ही ॥ तिलतिलकाटेरायेनांहा ॥ सौलाकलासंमकिधरि
 आवे ॥ अरधेंउरधेंताली लावे ॥ करमकलणिकानेकरे ॥
 वृहत्त्रागनिमेंजाशि ॥ जनहरीदासमानसवरताकोईक
 रसीसाधविचारि ॥ ॥ पडिवापलटिसुयदुयथजाणें ॥ म
 लमतामेंमनसाआणें ॥ अरमनतेदेमननडुलावे ॥ गुरय
 सादिपरमयद्यावे ॥ सतज्जगत्त्राजिजागिजंबजोवे ॥ य
 धननिरोधैअमंरधोवे ॥ अरानव्यापेजुगिजुगिजीवे ॥
 सहजिसंमाधिसदारसपीवे ॥ पडतापासावाडिदेवे
 सेअजरजिहाजा ॥ जनहरीदासपडिवासुपेहे ॥ सकल
 तिथ्यासिरिताज ॥ २ ॥ बीजविविधिविषकांणचुकावे ॥ म
 नगहियवंनगिगनिमवबावे ॥ यऊपणसाहियिसणय
 डिपेले ॥ अगंमउजासतहांमिलिषेले ॥ हरिसुषहेरिह
 ज्वरिबतावे ॥ आनंदमैगोविंदगणगावे ॥ कांमनऊलके
 कलयिनजाणें ॥ ऐनोनाथहाथमेंआणें ॥ बीजइसीविधि
 कीजिरे ॥ जूसतिमानेंसाहासाहिवसोमिलिषेदिणे ॥ अ
 गेंबसत्तअथाहं ॥ ३ ॥ तीजसतिष्ठांतिलतिलवांडे ॥ तीनगु
 णआगेंपगमांडे ॥ इलापिंगलासुषमनिमैले ॥ वेसिनिर
 तरिवेयडिषेले ॥ साधमंडलीसाधिविराजे ॥ अचनहद

वौषिजचास्यौचोठचुकावे। मेकिमुदेसिबसेसुयपावे
 करजनकाहेमूलनहारे। आंननजाचेरोमजुहारे। आ
 ईसायसमकिधरिआवे। यऊसुयसाहिसदासुयपावे
 करमकपाटकड्यासबताला। आत्मअंतरिजोतिउजा
 ला। वौषिजाचौपडिबेलिए। दोइदोइचोठचुकाइतीतडि
 सारीमेहिए। वौषाघरमेंजाइ। पांचेपांचयतटिपदि
 लावे। बैसिडलीचेलोगबुलावे। साजणसैणपिसणकौन
 ही। अरथअबीरपड्यासबमांही। पांनगुलालकैसरि
 बऊकरणा। अंगिचहाइचलोहरिचरण। सूकडिसमि
 ताअरिघसिलाईसयीसहेलीसाधिबुलाई। पांचेपीवप्र
 संणनया। मेदसहतमावंत। रासमडलमेंहोतहे। घरि
 घरिगावसंतद। बतिबक्वाबकिलाधानारी। महेदिय
 धारेदेवमुगरी। गंगाजलटिजमनमेंआणी। बाहरिनीतरि
 एकेपांणी। गिस्वरगारकगयातामांही। आगमअथाह
 थाइकुबनांही। रूपअरूपमोहनहीमाया। निजनिर
 लेपनिरंजनराया। चोदणिविआईसयी। मिदिगयामोह
 अंधार। अरसपरसमिलिबेलिए। अबयऊओसरयाबार
 ७। सातेंसंमकिपडीसुययाया। आनंदसहतअरथमें
 आया। निरमेसीरनीरनिजनेर। तासुबिलागिरह्यामनमे
 राबऊतदिनोतेंयारूतिआईबसतअथाहनजाइबिपा
 ईजांणिवूकिअेसाऊबकीया। अबहरिहंमअपणांकरि
 लीया। सातेंसाहंसंमिसदा। निजपुरिनगरनिदास। बिणि
 वादलेवरियासदा। बहरूतिवाराहमांस। ८। आवेंअध
 काठकरिकानें। बलबलबाडिइहरिमांने। जबकिस्वांत

संघदोइ मास्य हिरणी आगेची ताहा स्या ॥ सुसाकै मृषि
 चलीमेजारी ॥ तीतरबाजकरा विचिधारी ॥ पंथसेबाहि
 समदमें पैठी ॥ आला अतलतहां जांइवेवा ॥ आवै अरथ
 विचारिणे ॥ फुलीसववनरादा ॥ तंवरकंवलरसयातहै
 परदोइ दर्द उडाइ ॥ ए ॥ आजसर्वनिंतीदनआवै ॥ जागि
 नसोकंकतरिसावै ॥ बंकनालिमें गरजेबाई ॥ सेकसुहा
 मसलेसुषवाई ॥ बरसेधरणिगिगतिरसआवै ॥ रामत
 रहारतज्योमोहिनावै ॥ प्रमउदारसकलसुषरासी ॥ अ
 गमअलेयअगाहअबिनासी ॥ नौंघारामननांवहै ॥ द
 सेरहासमाइ ॥ जनहरीदासआचुरमिटीआनंदमें
 दितजाइ ॥ १० ॥ दसमीदेवदयाकरिआया ॥ सीतलनेण
 बैणसुभयाया ॥ जलमेंकुंतकुंतमेंयाणी ॥ सकलविया
 पीवैसतिजाणी ॥ अकलिउजालैमेरउडाया ॥ नौराकारस
 वेलीयाया ॥ पाननजिरनरिदेयो लोई ॥ सबघटिरामअव
 रनहीकौई ॥ दसमीहरिहरसंणदीया ॥ हरिपरमसंनेह
 पीवा ॥ सबसेकांसाईबसे ॥ जागिनदेयेजीवा ॥ ११ ॥ पारसि
 करतबहोतदिनबीता ॥ एकावसीनजानेरीता ॥ जबलगा
 निजततानजरिनआवै ॥ डबधाषेलिवहोतडुषयावै ॥ कंच
 म्बडिकावबसिकाचा ॥ यडचरथिमानहीसतिवाचा
 वासुधिअंतरतारी ॥ कहांदिनकरकहांरतिअं
 धारी ॥ अंतरिधुनिरेकादसी ॥ बंकनालिरसयाइ ॥ मनउ
 लमारहै ॥ नानानेहचुकाइ ॥ १२ ॥ वारसिदांनयु
 निक्योकीजे ॥ मनियजनमधरियकुसुषलजि ॥ यवगुमा
 नयरचितिरदोवै ॥ अगमअगाधसहजसुधिआवै ॥ स

तजतमगुणमोहपसार देतद्योहनरजागिसंवार
 पतसंधीतिजातिगुणद्वजा हाथपसारिकरोयोंयुजा
 हरिसुभिरणहिरदेसदा प्रायद्युनिद्योददंन बारसि
 जहांमिलियेखिरे जहांनदजीआन १२ तेरसितहां
 बसेमनमेर नहीसोहरिनहीसोनेर नोकोऊलहे
 नकाकूलाधा हीद्वतरकदोऊपषबाधा वेदकवेव
 कथेंरूचिसांनी यऊयणसाहिरहेअतिसांनी अप
 णेंअपणैरसिमतिवाला सबजुगबक्याविरधिकरू
 बाला तेरसिताहियिवाणिरे निकटिनिरंजनराइ ॥
 प्रमसंनेहीसंगिंबसे प्राणतहांमेठ बाइ ॥१४॥ चवदसि
 रंमचरणनहीबाडो ज्वारीजेतनमनवाडो इसेण
 देधिरैयतजिरई जहोपददातहांआनसगाई रत
 तारंमअत्याअरिहास्या मूवाजीयाजीवतमास्या म
 ननिहचलनिरमेनिधिसांही जहांतहांरंमहरिहरि
 नोही चवदसिचितवणिसबमिती अणबोल्याऊबगा
 ५ जनहरीदासचंचलगया निहचलरहासमाइ ॥१५॥
 स्वरतेतीसघेरिघरिआया दून्योमनफिरिमनहीसमा
 या सकलसमीपसकलतैनार प्ररणप्रमानंदपियार
 डरमेतिहरिहरिहरिनांही सबतैअगंभवसेसबसां
 ही प्रमसंधसुववारनयारा तासुभिलागाप्राणहंमा
 रा जनहरीदाससौलाहसुतिधि सदागतिमुपहलागाइ
 दून्योपीप्रसणनया अंतरजीमीआइ ॥१६॥ ३३ ॥
 तीतिथिजोगयं वलियते ॥ मावसमनउलटाचव्या क
 लासंवारेचंद फिरिलागाउनमनिस्पो बूटिगयासबद

पडिवापयप्रसवतजी॥ सुतौअनरहीबाटा॥ गिगनिमंड
 लिआसंणकीया॥ लाघ्याअवघटघात॥ २॥ बीजसबीज
 नथीईरै॥ रायोबीजअबीजा॥ जनहरीदासगरजैगिगनि
 तहोसहजिचिमंकेबीजा॥ आतीजत्रिगुणरसधोलिकरि
 ब्रह्मअगनिमेंजारि॥ दींलागीदरीयाजले॥ चरीयासेदवि
 चारि॥ ७॥ चोथिचाहिचिकित्तनया॥ उलटीतालीलाइ॥
 गंगजमनमधिपैसिकरि॥ मीनमगरगईयाइ॥ ५॥ पांचै
 पाचोंकेरिमना॥ सुरतिसहजिघरिधारि॥ मनतारामंडल
 छेदिगया॥ उलटीयंघसंचारि॥ ध्व॥ छठिअछियघटमैछिय
 पूरणप्रमानंदा॥ प्रसिप्रसियावंननया॥ जहांतहोआनं
 दा॥ सातैसरुसरनया॥ पकूमपलटिगतिनीर॥ मंठली
 बसैअकासमै॥ लगायेमकीसीर॥ ८॥ आवेंअरिप्रहरिगया
 असलिउदैनया॥ गं॥ ना॥ आवयहरइमिरतसुधा॥ वाजप
 यालेपात॥ ९॥ तौमीनवेंसमरीऐ॥ अनड॥ नमोदै॥ अग॥ मन
 फेसातनफैरतहै॥ मनिषजनमकासंग॥ १०॥ दसमीदेहड
 रंगगड॥ दहदिसिखरंगलगाइ॥ मेवासीकिरसाभया॥ मि
 ल्यारैतिकेआइ॥ ११॥ एकादसीअसंगहै॥ जहाडुवधातह
 दोइ॥ जनहरीदासअसाबरत्त॥ जोऐविरलाकोइ॥ १२॥
 दोइराजतजिदादसी॥ जोगीदेयाजागि॥ ब्रह्मअगनिमें
 घरकीया॥ रह्यानिरंतरिलागि॥ १३॥ तेरसित्तनमेंप्रमत्त
 पोचतततेओर॥ बसेकहांनाहीकहां॥ जहांतहोसबवा
 रा॥ १४॥ ववदसिमनचोधादसागया॥ लोगतजिलाज॥ वे
 वमिल्याआनंदस्यो॥ अनहदसबदअवाज॥ १५॥ पून्हूपयप्र
 राभया॥ सहजिसस्यासबकामं॥ जनहरीदासआत्मअंतरि

तबदेंताबलकीया॥ असुरबिधोंसिहरिबिप्रनिवाजा॥
 गतांकोसुखदीया॥१३॥ भगतमलाजोषीतिथिबांऐं॥ म
 नपरफूलितनांचे॥ हरिहीराहरदामैराये॥ कोदास्तथि
 तराचे॥१४॥ रामचंडिबांएजबलीया॥ सुरतेतीसबुड
 या॥ रांवेणमारिलंकागठतोड्या॥ राजवनीयणियाया
 ॥१५॥ रामतारामश्रीरहेनाई॥ संमकिदेविमनमांही॥ वृ
 ध्यातिरवारोगनव्याये॥ वारपारकुबनांही॥१६॥ हरिगो
 कलमेंवालनचाया॥ निरविमकीयाकाली॥ कंसकेस
 चाणूरपडाड्या॥ संथरांमेंवनमाली॥१७॥ नावनिबसेन
 सुंष्टुराश्रीवे॥ अखबलव्योनहीजाई॥ अवरणवरणकं
 चकरानीचा॥ प्रपूरणसबमांही॥१८॥ बुधअवतारिमहा
 बलकीया॥ अघासेनिदलमास्या॥ भगतिहरिअसेंआया॥
 भूकानारउतास्या॥१९॥ भूकंभारनजाण्यांकोश्रींजांऐंके

॥१॥ वैदकहैहरिसंतलिआवे॥ स्वरजसंकटनि

रआंध्रअसेंकरिदेयो॥ बांवेंदाहिणोयोवेंआगे
 ॥२॥ निराकारआकारएकही॥ इबंधाजाणीनांही॥ हरि
 थोडाकरिकेसेदेयो॥ हेसादिवसबमांही॥२३॥ उमहस
 श्री॥ निराकारकोसे

॥२४॥

सबजीवकहांसीराये॥२४॥ निरमलदेवसदानिहंकांमी

नावनिरंजनराया योंहीयावक योंहीयरली सबयाह
मांहीसमाया २५ साद्विबअधरधस्यासबइजा लियत
जाणोनांही हंमंकंकहोयतेसमकावो यासंकासनमा
ही २६ ववदालेकरच्याजिनिवाजी सौबाजीगरनह
पाया उतपतियावकप्रलोहोवै तबसागरिजाइसमा
या २७ प्रलोकहोकांहेस्वामी याहआसंकाक्योंमां
घटिघटिजवरअगनिकावासा घटघटमांहीजागे २८
घटतोपांचततकामेला रहताजाणोनांही जवरअग
निकावासाबोरा याहसंकासनमांही २९ जवरअग
नियोणामैराशी ऊबरजमांजुगमांही तारजमैसारा
जुगबीजे रहताजाणोनांही ३० बीजेजेसाउपजेतेसा
घटताजाणोनांही तुम्हअगाधवोबीमतिमैरी याह
सआसंकासनमांही ३१ मैसबमांहिसकलतेन्यारा जे
कोईसतगुरसरणोआवे आयोमांनितहांमैनांही मि
रताकैसयावे ३२ आयाबडाकतातुमस्वामी आपेक
पनेकीया बाजीसबैतमारीहीसे तुम्हहीआयादीया
३३ कहेंणसुणणकीयांविधिनांही कसासुणोंबणि
नावे पीरजतीअवतारअवलीया असारूपदियावे
३४ रूपकहोकेसाहेस्वामी हमतोदेष्यानाही अबवे
देकोरूपदियावो दरसंणद्योहगुसोई ३५ प्रहरिप
पजापजपिअजया नांअनिरंतरिलीजे त्रिवेणीतदि
तालीलावे ताआनंदमनिधीजे ३६ आनंदकहोकि
सीविधिलाते बडंडिनसांसासोषे बसअगतिमैवैसि
सहजिघरि आत्मतरवरयोये ३७ घटहीमांहीदर

अघट है। कोई गाफिल योटा याइ ॥४०॥३॥ चतुदापदा
 जोग गुण लियते ॥ सत्गुरका चरणं चित धरिहौ ॥ अंनि
 नत्ताति सोई मै करिहौ ॥ गुरु बिण गपं न नयावै कोई ॥ जो य
 वै तो निरमल न होई ॥ धारा धारा करि गुरु सुल जावै ॥ गुरु की
 सुलजि उलजि नही आवै ॥ घर क्रिया तैं हरि निधि पार्थ ॥ जिनि
 पार्थ तिनि बहोत बिपार्थ प्रगत करै सप्रगत ये डा ॥ प्रगत अ
 इय कुं वै नेरा ॥ पारिय कुं ता उलटा लावै ॥ महा पुरय ता तैं व
 न बावै रनि बनि रहै जगत तैं न्यारा ॥ राम न जै सारां शिरि
 नां हि वात्त
 वलावै सुरग की ॥ ये लै नर कां मां हि ॥ गुरु गं भित ही डनी
 नर यावै ॥ निज साहिब की धवरि नयावै ॥ आये चट्यां कर म

सकल काल की यासा ॥ करे मही ए अ

तेरुथ कित नया ता मां ही ॥ नोति नां तिक रिआ

एक समे स्यो जी इह काय

कैसे लागा दो डा आया ॥ माया का बल अंत है ॥ वंचण

रि मन को डो मति ग है ॥ य ऊ ही र रूप न होइ ॥

। कतौ हरि ही राजे ॥ हरी पिछाणे ॥ को डी रूप निकटि न ही

आणे ॥ राम रसां यण सब सू मी ॥ सो तो जु गि घार करि ही

या मां ही

माया मीठीनेडा आणें वां ह्यकडि नरकां कों ताणें रांसत
जन विणि विधिबो हारा तेती सकल कालकी मारा नर
बला सब लो हे माया धाई नही सकल चुणियाया रोग
धादा रूघणी लावे कौई नां हि ताते रोगी वायडा हस्त
नरकां जां हि ३ योही तो रोग कै आवे जेसा करे सतेसा
पावे आपे चढ्या अरथ नही आवे सोई मरे जको विषय
वे मूलमंत्र जाणें कुब नां ही विष हर ले मेहे गल मां ही
जेसा कृति गति सी हे माया जेसा या तै वडडि न आया मा
या कलणिक ल्या जग सारा हे कौई साच बला वण हारा ह
रिई मिर तर सबाडिक रि विष कों दोड्या जां हि कूवे
राता मीडका संमद समकि कुब नां हि ४ गुरां मि संम
कि असी परि आई जेसा अकल सकल पति रई नां वनि
रंजन अंतरि जां मी हरि निरमल परपूरण स्वामी तब स
त समद नही नार आं वारा तब था अब सोई सिर जन
हारा गिर प्रबत नही मंडलितारा संमकिन ही कुब वा
रन पारा निरकार आकार विणि अं नंत नवं न के राव
ताकूं नजिरे प्राणीयां डलं नइ सो ची डाल ५ जोग ध्यान
स्यो जब धुनिलाई तब हरि ऐक ऐक रे साई पवन नयां
णी धरणि अकासा चंदन सूर देवन हि दासा दिवं सनय
ति जाति नही कार्ई अब या जाति बो तिले आई बो ति बो
तिक रि जगत मुलाया ताते निज कं ए हा थिन आया पर
पविरा तो प्राणीयां हरि स्यो नां ही हेत परब सिप डो विष
चिसे अब दूचे ति अचेत ६ मन पंच करि ब होत न
या उलगा नार पारि नही याया एक ड्या गूत साच नही न
ले आप जलै अवरा कों जाले पारा हे कौई जन पूरा पूरण

रकसेवगसुरा सुरावनकी सौंजसंतारै। कामकौधतिस
नामनमारै। मनकीतरंगसकलचुणियावै। जलदेअर
हंतिजाडीयावै। ताबाडीमेंपरकासा। तहांसिजसेवक
रै। निजदासा। सौंजसंवारी। नजनकौं। अबकेसकआ
कार। कौडीगहिहरतजै। ताकौवारनपार। ॥ जबअ
कारनथाअवतारा। ब्रह्मानसिष्टिउपावंगहारा। स्पैस
नकादिकनारदनांही। समजिसमजिदेष्यामनसांही। ह
रिबिणिओरनदेईदेवा। साह्यारंगमनकोईसेवा। जलज
लाप्रवेसनकीया। बिह्नवेदपबैकरिलीया। ताबाजीग
रकीषवरिनयाद्री। सबबाजीमांहिरसाउरकाई। कन
वाकौंमोतीचुगों। हंसातजिकहांजाहि। मानसरीकरप्रम
सुखबैवाकेलिकरांही। ॥ तबइयसुखनथागुरूनचेल
पाचततकाऊवामेला। सीतनधूपरगरंगनांही। जामेंम
रेनआवैजांही। तबकोईबिप्रनथाबपरेला। तबवोहये
काएकीरमेंअकेला। वाकेनाहीरूपनरेया। अबकुबस
पतसासादेया। रूपरूपकौरसिरसियावै। रूपचल्यांताकी
सुधिनपावै। निराकारहरिनिरमला। नांवनिरंजनदेवा।
अबजिनिचूलेप्राणीयां। तरहताकौंसेवै। ए। मूलाबहो
तसमजिनहीकाई। उंचनीचकीबातचलाई। आंवेजांति
सऊंचकनीचा। तामेंलेलेडारेसीचा। आडादेदेवोकाटा
रेपसवापरोकौं। नसंतारै। कौंणऊंचकूंणहैसडा। जामेंम
रेसएकैउडा। अबवासमेंजबलेदीया। दीयासंकटिरूह
चियाया। पीयीरूहीरहादसमासा। अबकुबअसाकहै
समासा। कहणीसुणणीहरिकरि। अंतरियोटनराधि। ॥

माया मीची नेहा आणें वां ह प क डि न र कां कों तांणें रं मन
 जन विणि विधि व्योहार। ते तीस क ल का ल की मार। न र सि
 व ला सब लो हे माया धाई न ही सक ल चु णि या या। रोग व
 धा दा रू घ णी ला वे कौ ई नां हि। ता ते री गा वा य डा। ह स ता
 न र कां जां हि ३। यो ही नो ग रोग के आवे। जे सा करे स ते सा
 पावे। आपे च व्या अरथ रू ही आवे। सोई मरे ज को विषय
 वे। मूल मंत्र जोणे कुं व नां ही। वि स हर ले मे दे ग ल सां ही।
 जे सा कृ ति रा ति सी हे माया। जे या या ते व ड डि न आ या। मा
 या क ल णि क ल्या ज रा सार। हे को ई सा च व ता व ण हार। ह
 रि ई मि र तर स वा डि करि। विष कों दो ड्या जां हि। कू वे
 रा ता मी ड का। सं म द स म कि कुं व नां हि ४। ग र ग मि सं म
 कि अ सी परि आ ई। जे सा अ क ल स क ल प ति रा ई नां व नि
 रं जन अंतरि जां मी। हरि नि र म ल पर पू र ण स्वां मी। त व स
 व स म द न ही नार आं ग र। त व था अ व सो ई सि र जन
 दार। गिर प्र व त न ही मंड लि तार। सं म कि न ही कुं व वा
 र न पा र। नि र का र आ का र वि णि। अ नंत स वं न के र व।
 ता कूं न जि रे प्रां णी यां। डु लं न द सो नी डा व। ५। जो ग धां न
 स्यो ज व धु वि ला ई। त व हरि रे क ऐ करे ता ई। प वं न न यां
 णी ध र णि अ का सा। चं द न स्वर दे व न हि दा सा। दि वं स न य
 चि जा ति न ही का ई अ व या जा ति बो ति ले आ ई। बो ति बो
 ति करि ज रा त मु ला या। ता ते नि ज कं ण हा थि न आ या। पर
 प वि र तौ धां णी यां। हरि स्यो नां ही हे त। पर व सि प ड्यो वि स
 चि सै। अ व च्चे चि अ च्चे त द्द स न प्र पंच क रि व हो त कृ त
 या उ ल ग्या चार पारि न हु या या। प क ड्या मू त सा च न ही नृ
 दे। आप ज लै अ व र कों जा लै। पार रा हे को ई जन पू र। पू र य

रकासेवगसुरा सुरावनकीसोंजसंनारौ। कामकौधतिस
नामनमारौ। मनकीतरंगसकलचुणियावै। उलटेअर
हंठिजाडीयावै। ताबाडीमेंपरकासा। तहोसिजसेवक
रेंनजदासा। सोंजसंवारीनजनकौं। अबकैयकुआ
कार। कौडीगहिहीरातजै। ताकौंवारनपार। ७। जबअ
कारनथाअवतारा। ब्रह्मानसिष्टिगपावणहारा। स्योस
नकादिकनारदनाही। समकिसमकिदेव्यामनमांही। ह
रिबिणिओरनदेईदेवा। साह्यारामनकौईसेवा। जलज
लाप्रवेशनकीया। बिह्नवेदयबैकरिलीया। ताबाजीग
रकीषवरिनयाद्री। सबबाजीमांहिरसाउरकाई। कन
वाकौंमौतीचुगौं। हंसातजिकहांजाहि। मानसरीकरप्रम
सुअबैवकैलिकराहि। ८। तबडयसुअनथागरूनचला
पांचततकाकवामेला। सीतनधूपरागरंगनांही। जामेंस
रैनआवैजांही। तबकोईबिप्रनथाबपरेला। तबवोहरे
काएकीरमेंअकेला। वाकैनाहीरूपनरेया। अबकुबेरु
पतसांसादेया। रूपरूपकौरसिरसियावै। रूपचल्यांताकी
सुधिनपावै। निराकारहरिनिरमला। नांवनिरंजनदेव।
अबजिनिलेप्राणीयां। तरहताकौसेवै। ९। मूलाबहो
तसमकिनहीकाई। अंचनीचकीबातवलाई। आवेंजांति
सकुंचकनीचा। तामेंलेलेडोरेसीचा। आडादेदेवोकाता
रेपसकापरोकौंनसंनारौ। कौंणकुंचकूणहैसडा। जामेंस
रैसएकैउडा। अबवासमेंजबलेदीया। दीयासंकटिरुही
चियाया। पीपीरुहीरहादसमासा। अबकुबैसाकहै
तमासा। कहणीसुणाणीहरिकरि। अंतरियोटनरायि।

बहरिभजिरेप्राणीयां सुणिसंधाकीसाधि १० कहै
 सुणैपणिरहणीकृवा जमस्योरजूरंमस्योरूवा उधैम
 सिदसमांसकुलाया जजनवौटवेबाहिरआया कलि
 कीबावतषीसुययाया आवतसमेंषसमबिसराया
 वाचावेदेआयोनाई सोबाचाक्योंमूलेलाई जोरकरेम
 सकीनसंतावै जठरअगनिदिनचीतनआवै जबतप
 लेकीटपतंगा तबअङ्गबकहांयोगंदा गरबगुमा
 नसबइरि करि वा निजसाहिबकौंजाणि वा निजसा
 हिबकौंविणितज्या मनिषजनसकीहांणि ११ हाणि
 कहांकोईनपतीजै निहचेभिरघबधिककौंधीजै ज
 मनितिबधिकसदानरहिरणा चौरासीमेंदौआफिरण
 कबहुअरपसकीटपतंगा सोरभिरघगतिनांनारंगा
 कबहुसुकरस्वोनसियारा कबहुंकउवागतिविचा
 रा कबहुइजिगरियपीगोहो योंडुययावैहरिसोंदो
 हापलामांही आवैजावै आंधायसुबहोतडययावै
 रामतजैतौसकलसुय नहीतरसबडयसाधि योटीप
 टालियाईया वरानआयाहाधि १२ नाईसुबधिक
 बधिसौंकालसाधनहीकोईबिषकीज्वाला तजनने
 दजाणैकुबना कुबधिषडीयाकायामांही घायाति
 लकरमकीसूजा अंतरिकरमकातरीदूजा मनसा
 मनकैमतेचलाणै अंतरकीसाहिबसबजाणै अंतरि
 योठतहांहरिनांही तातेषूडाप्रलामांही करमसरम
 सबइरि करिरहंसिरहंसिगुणमाइ बहरिभजिरेप्राणी
 यां नहीतरकालअचूंकोयाइ १३ यासीकालसहीसोंन

कोइजनजाभासो जाहिं॥ सूताजाणें नांदि॥ ४१॥ ४१॥
 माया बंदजोगग्रंथलिय्यते॥ फुहडि धुहडि धावंती॥ डं
 कचरेतरियावंती॥ रामबिमुखतहांजावंती॥ मोहनंद
 मेंनांवंती॥ अयणें अंगिलगावंती॥ करणहारकरता
 रजगतगरादीनदयालसुलावंती॥ कबहुसांमणिक
 बहूमाता॥ अयणेंबोलेराधियिलावंती॥ कबहुसुसे
 कबहुतसेनेहमरदेगबजावंती॥ कबहुतातीकब
 हुसीली॥ जीवांजेरजांरंवंती॥ जोगणिहोइजगत्रउज
 ये॥ जहरययालायावंती॥ चंडेहोइडाकणिडेसी॥ मूल
 नेनमावती॥ कंचनीचसबसोमिलियेले॥ नांनोभैवब
 णंवंती॥ डाकणीयापणी॥ संखणीसापणी॥ जामणी जोग
 णिनेददेरगणी॥ जोगणीजागणी॥ सूतणीलागणी॥ त्त
 करीसुकरी॥ कागणी॥ कूकरी॥ आठणी॥ ताठणी॥ नरककी
 टोकणी॥ जरजरी॥ जहरणी॥ कालगतिकहरणी॥ त्रिवि
 धितनधारणी॥ हेतदेमारणी॥ आवंणीजावंणी॥ इहकि
 इहकावणी॥ साधनेपरहरेपगटमारीमरै॥ यांवपा
 बाधरे॥ अगनिमैयेसतांधसेयाबीपडे॥ जनहरीदास
 मायासतै॥ मिलेसमायाहोइ॥ हरिसावेसोसावामि
 ले॥ तोपलानपकडेकोइ॥ ग्रंथ॥ ४२॥ जोगमूलसुयजा
 गग्रंथलिय्यते॥ नीचेडालमूलतयाअपरि॥ अज्यासिंध
 सोऊकेमकडीकोमांथीनहीबाडे॥ आंधकोंस्के॥ १॥
 मूसेदोडिबिलाईयकडी॥ चिडेसिचाणांयाया॥ सास
 बडकेयागिलारो॥ समंदबुंदमेयाया॥ २॥ पिंगलेयागअ

रदावे महिषाकरे संगार घेतवरयोणनपावे २६ मूस
 केडरिसेस उलटिजलमांहीयेवा कुंजरचव्याअकासि
 मंडकूमाथलिबेवा २७ पिसणायापगडाडि मरम
 कातालाभागा तरवरऐकअनूप प्राणतहितरवरि
 लागा २८ बसधास्यौजडनांहि गोठतरवरनहीपाय
 इमिरतरसरूप महासुषसीतलबाया २९ तातर
 वरमेंवास मोहनहीव्यापैमाया निगलेबनिरलेप
 आंगमगुगमतेयाया ३० प्रसिनिरजनदेव तेदला
 धाभरमनागा आनंदअगमअथाह मनमनसातहा
 लागा ३१ प्रसग्नानप्रमधान आनरसप्रसिनयावे प्र
 मसुनिप्रदेव जागिलोगेसोजीवे ३२ प्रमतेजप्रमजो
 ति जौतिमेंजोतिनिवासा उलटाचव्याअकासि सुनि
 मंडलमेंकासा ३३ ब्रह्मबौलिमेंबक्या लोभकीलाइ
 उजाणी ब्रह्माविसनमहेस सेसनागा विणियाणी ३
 ४ नारदसेतीनेह पांनगोरखरजधानी आमंदसब
 दउचार सुरतिनिजसबदसमानी ३५ पांनौपांडुफे
 रि घेरिअपणौघरिआया वावडकैसिरचोट नेदने
 रूकापाया ३६ कैरुसेनिअपार अटकिअरिफौज
 उडाई चंदसूरसमिकीया ततस्यौतालीलाई ३७ न
 वसेजोगणिसथि कैरिजांतामनलीया अनंतसिघा
 सौंप्रीति सहजमेंस्योरसयीया ३८ तऊंनथनिजनी
 र अकलतरवरकीख्या पांनसिघासणिबैसि रं
 मरटतापतियाया ३९ जयंतिलोमेंतेल काष्टमेंअग
 तिनिवास जथाइधमेंधिरत यडूपमेंप्रमलवास ४०
 योजनहरीदासअवगतिअगम व्यापिरहासबमोहि

कोईजनजाभासो जाहि॥ सूताजाऐं नाहि॥ ४१॥ धधरां
 माया बंदजोगग्रंथ लिख्यते॥ कूहद्वि धूहडि धावती॥ डं
 कनरेतरियावंती॥ रामबिमुखतहां जावती॥ मोहनदी
 मेंहांवती॥ अयणैं अंगिलगावती॥ करणहारकरता
 रजातं गरादी नदया लज्जुलावंती॥ कबहु सांमणिक
 बहूमाता॥ अयणैं बोले राविषिलावंती॥ कबहु रूसे
 कबहु तसे॥ नेह मरदंगव जावती॥ कबहु ताती कब
 हूसीली॥ जीवां जेर जां रावती॥ जोगणि होइ जगत्रउडजा
 ये॥ जहरयया लायां वती॥ चूंडै म्हो द्वै डाकणि डोसी॥ नूला
 नै नमावती॥ कंचनी चसवसो मिलिषेले॥ नां नां शेषव
 णं वंती॥ डाकणीयापणी॥ संखणीसायणी॥ रामणी जोग
 णी नेददेरणी॥ जोगणी जागणी सूतणी लागणी॥ नूत
 करीसूकरी॥ कागणीसूकरी आबणी॥ त्राबणी॥ नरककी
 टोकणी॥ जरजरी जहरणी॥ कालगति कहरणी॥ त्रिवि
 धितनधारणी॥ हेतदेमारणी॥ आवंणी जावंणी॥ डहकि
 डहकावणी॥ साधनेयरहरेपगटमारी मरै॥ यां वपा
 बाधरै॥ अगनिमैपेसतांधसेयाबीयडे॥ जनहरीदास
 मायासत्तै॥ मिलेसमाया होइ॥ हरिसावेस्योसाचामि
 ले॥ तोपलानपकडैकोइ॥ ग्रंथ ४२॥ जोगमूलसुयजो
 गग्रंथ लिख्यते॥ नीचैडालमूलनयाउपरि॥ अज्यासिंध
 सौजूके॥ मकडीकोमांशीनहीबाडे॥ आंधाकोसूजो॥ १॥
 मूसेदोडि विलाईयकडी॥ चिहै॥ सिचांणांयाया॥ सास
 बडकैयागिलगो॥ समंदबूंदमैयाया॥ २॥ पिंगलेयागअ
 गमकालाधा॥ बहिरैसबकुचसणियां॥ मूरिययंडित

कीगतिपाई स्तुतिजुलाहाबुणियां ॥ १ ॥ मीनमगर
कौंवांवाणलागी ॥ दादरिउरगयचाया ॥ याणीमांही
अगतिप्रगती ॥ तिलमैमेरसमाया ॥ ४ ॥ सीचतवाडी
सबकुमिलावै ॥ काटतबहुफललागा ॥ चौरसाह
कैअदरियेवा ॥ साहगिरहतजितागा ॥ ५ ॥ घाटपुरि
षपरिसौवाणलागी ॥ हांडीअनमेरांधी ॥ मिरताजस
कौंदईसायनां ॥ गाइबाबडेबाधी ॥ ६ ॥ फूलकलीमै
यासमाई ॥ सौकबहुनहाफूले ॥ तनयाणीमेंनीजेनां
ही ॥ बिणियाणीनितिऊले ॥ ७ ॥ पचैमितिमेंतनलोउ
पायो ॥ बुरैपंथिनहीजांही ॥ निसदिनिगानगुफामै
पांचों ॥ बाहिरनिकसेनांही ॥ ८ ॥ सातोंसंमदसुषाया
चौडे ॥ जलकीवौहरयोई ॥ बैरीआइमित्याचाकर
कै ॥ गिरवरताहादोई ॥ ९ ॥ सतगुरथितिसंमकाईअं
तरि ॥ चातेनिसदिनिजागा ॥ तीनतापतनकीतब
जागी ॥ सीतलसुषजबलागा ॥ १० ॥ लेतादोणजाती
डेडां ॥ सबअपणैबसिकीया ॥ गहिगुरगोनध्यानधरि
अंतरि ॥ साहकौसर्वसदीया ॥ ११ ॥ सुकविरषतजिब
हुसुषयाया ॥ तरवरिअकलिबैसेरा ॥ सीतधूपदोऊन
हिब्याये ॥ पकड्रानिहचलनेरा ॥ १२ ॥ मोहअरुदोस
दऊंतेन्यांरा ॥ सुषमैजाइसमाया ॥ सतगुरिसराण
नलीमतिउपजी ॥ पांतासोईयाया ॥ १३ ॥ मनसाबाची
आरंसतजियो ॥ करमकरैनहिकाया ॥ सुमिरैअलष
अभिनासी ॥ प्रहरिबौटीबाया ॥ १४ ॥ उपजीअकलिबडा
ईत्यागी ॥ असलिगरीवीआई ॥ नजौंनिरंजनप्रहरिडय

सुखा बाडी आनसगाई ॥ १५ ॥ निरंजनसदासहा इहमारे ॥
 कामनजडे कोशे आसातिसनां चाडिमनो रथे ॥ मनकी
 दुबधाकोई ॥ १६ ॥ पाकयी रस्यो नेदाभैतजि ॥ तबसबकु
 बसमजाया ॥ असलिअकलिहिरदाभैमैलू ॥ साधसंग
 तिसुषयाया ॥ १७ ॥ पाकयाकमैजाइसमावे ॥ गिडमेल
 कोनाही ॥ मेलमेलकीजाइगायकुचे ॥ समकिदेधिमन
 मांही ॥ १८ ॥ मायांमेलसकलजुगमैला ॥ निरमलसाधू
 कोशे ॥ पांचस्वादतजिमजेनिरंजना ॥ सकलमेलतनि
 धोई ॥ १९ ॥ हिरदैमेलरतीनहारथे ॥ तजेसदाअसिना
 सी ॥ प्रनवासिसोकबहूनआवे ॥ पडेनजंमकीपासी ॥ २०
 ॥ तनमैकंखलतहांमनमेरा ॥ तलतिनबाहिरआवे ॥
 स्वादबसत्तकानारीलाधा ॥ निसदिनिइंभिरतयावे ॥ २१
 जेसैसायसंमदमैकंडै ॥ स्वादेतिबूंदलेपेवी ॥ यारोयांसा
 पीवैनांही ॥ सुमटिअपणेंपोबेवी ॥ २२ ॥ जेसैनिजरिचको
 रनयांडे ॥ सातलसुषकोलोडे ॥ आंगारचुगोपरचाकेनांही
 नजरिचवसो जोडे ॥ २३ ॥ चात्रिगनीरनीचनहीयोवे ॥
 कंचबुंदकोचाहै ॥ तनयोवैपणचाडेनही ॥ असीसदा
 निबाहै ॥ २४ ॥ हंसमुक्ताहलनिसदिनिचूगे ॥ करकका
 गतैसारा ॥ कागकुबधिसोनेहनबाधे ॥ असागदे
 ॥ २५ ॥ कीटीनिरंगगहिनेटीदे ॥ निरंगहोतनहिबाराका
 याकागुणसबदित्योगे ॥ तबजाइयकुंचेपारा ॥ २६
 रंगनादस्योसुरतिलागावे ॥ दिहविसरिसबजाई ॥ धीर
 जपकडिगदेंपणकांठी ॥ बाणबधिककायाई ॥ २७
 मरेयाणीजवत्यागे ॥ विणियाणीनहिजीवे ॥

वटहीमांहीचोंतरा॥घटहीमांहीदिवान
 मायादीपगनरयतंग॥सरमिसरमिमां
 तेईएकगुरग्यानेतौ॥एकआधउबरता
 प्रबज्जुगचमपायोंफिरै॥ज्यौंरामांकारोऊ
 क्रियासई॥तबयायाहरिकायोजा
 गवाभिल्या॥मिदिगयाआदेलीण॥जाति
 मिदिगया॥तबनांवधरेगाकोंण॥ण॥कबी
 गसीगुरमिल्या॥सौजिनबिसरिजाइज
 क्रियासई॥तबगुरमिलियाआइ॥१०॥क

बीरगुरगोबिंदतौएकहै॥हजासबआकार॥आप
 देहरिसजै॥तौयावैकरतार॥११॥कबीरथापण
 शपितसई॥सतगुरदीन्हीधीर॥कबीरेहीराबि
 मांससरोवरतीर॥१२॥कबीरथितियाईस
 नथिरिनया॥सतगुरसयासहाइ॥अनिन्यकथाजी
 वआचरी॥हिरदेरमताराइ॥१३॥कबीरचेतनिचो
 करि॥सतगुरदीन्हीधीर॥निरैसैहोइनिसेक
 नजि॥केवलकहैकबीर॥१४॥कबीरसासेयायासक
 लज्जुग॥सासाकिनऊनयधा॥जेबीधेगुरअधिरांसास
 चुण्णिचुण्णिषधा॥१५॥कबीरयाबैचाल्याजाइथा॥ले
 कबैदकीसाथि॥आगातेसतगुरमिल्या॥दीपगदी
 हाथि॥१६॥कबीरदीपगदीयातेलसरि॥वातीद
 अघटासुराकीयाबिसांहाण॥बहोडिनआवैह
 दा॥१७॥कबीरनिहंचलतंतमिलाइनिधि॥सतगुर
 सधीर॥नियजामें
 मांहिकबीर

१८॥ कबीरसतगुरहंमस्योरीकिकरि एककहाप्रस
 ग॥ बुवाबादलपेमका॥ तीजिगयासबंअंग॥ १९॥ क
 बीरचोपडिमांझचोहटे॥ सारीकीयात्रारीर॥ सतगु
 रडावबताईया॥ येलेदाशकबीर॥ २०॥ कबीरबूडेये
 पाणउबरै॥ गुरुकीलहरिचंमकि॥ तेरादेव्याजरज
 रा॥ तबउतरियड्याफरकि॥ २१॥ कबीरसतगुरकैस
 दकैगया॥ अपणीदिलकीसाच॥ कलिजुगहंमस्योलहि
 पड्या॥ मोहकममेरावाच॥ २२॥ कबीरबलिहारागुरअ
 पणै॥ घडीघड्याकेवारि॥ मनियनकोदेवताकीया॥ क
 रकनलाईबार॥ २३॥ कबीररंमनांमकेपटंतरे॥ देवै
 कोकुबुनाहि॥ कहालेगुरुसंतोयीए॥ होसरहामन
 मोहि॥ २४॥ कबीरमनदीयातिनसबदीया॥ मनकी
 गोलसरीर॥ अबदेवैकोकुबुनही॥ योंकहैदासकबी
 र॥ २५॥ कबीरसतगुरमेरासूरिवां॥ सबदजवाहा
 एक॥ लागतहीसैमिटिगया॥ पड्याकलेबेक॥ २६॥ क
 बीरसतगुरसबदकबांणवे॥ बांहणलागातीर॥ एकज
 वाहाप्रीतिस्यो॥ तीतररह्यासरीर॥ २७॥ कबीरसतगुर
 मास्याबांणनरि॥ धरिकरिसूधीमूठि॥ अगिउघाडैलागि
 गईडुवासूफूठि॥ २८॥ कबीरहसेनबौलेउनमनी॥
 लमेल्हामारि॥ कहैकबीरअंतरसिद्या॥ सतगु
 काहथियार॥ २९॥ कबीरगंगाकुवाबावरा॥ बहि
 हुवाकांनि॥ पावांतेपिगलाहुवा॥ सतगुरिमास्याब
 नि॥ ३०॥ कबीरलोसबडाईउरमी॥ याजुगकाब्योहा
 र॥ दासगरीबीबेदगी॥ यकसतगुरकाउपगार॥ ३१॥

कबीरदिलहीमेंदीदारहै॥वादिसेवेसंसार॥सतगुरयद
 दकामसकला॥संजिदियांवाणहार॥३३॥कबीरगुरतो
 जेसाकीजिरे॥जेसासिकलीग्रहो॥सबदमसकलाफे
 रिकरि॥दिलदरपणकरिसो॥३३॥कबीरदारकमेंय
 वकबसे॥तोघुणकाजरिकिनजा॥योहरिसंगिगुर
 विमुषते॥कालग्रास्यांथा॥३४॥कबीरसतगुरमेरासू
 रिवा॥जेद्यासकलशरीर॥वाणडुवासूफुछिगया॥क्यो
 जीवेदासकबीर॥३५॥कबीरसतगुरसाचासूरिवा॥नष
 सयमास्यापूरि॥वाहरिघावदीसई॥नीतरिचूरचूरि॥३
 ६॥कबीरजोदीसेसोबिनससी॥नांवधस्यासोजा॥कवी
 रसोईततगहि॥सतगुरदीयावता॥३७॥कबीरसत
 गुरमास्यावाणनरि॥निरथिनिरथिनजवोडु॥रामचके
 लारभिरहा॥चित्तनत्रौवेत्रोर॥३८॥कबीरकुवरतिया
 याषवरियो॥सतगुरदीयावता॥तवरबिलव्याकंव
 लस्यो॥अबकेसेउडिजा॥३९॥कबीररंमनांमबाडो
 नही॥सतगुरसीयदसो॥अविनासीकोंप्रसिकरि॥आ
 तस्यमरमई॥४०॥कबीरचोसविदीनाजोडकरि॥चोद
 सचंचामांहि॥तिसघटिकिसकाचांदिणां॥जाघटिगो
 विंदनांहि॥४१॥कबीरकोटिरेकचंदाउरिया॥सूरिज
 कोटिहजार॥तोहृत्तिमरननाजिसी॥गुरविनिधोरस
 धार॥४२॥कबीरगुरगोविंददीउषडांलाग॥किसपाइ॥
 बलिहारीगुरआयो॥जिनिगोविंददीयावता॥४३॥
 ॥गुरपारियकोअंग॥कबीरनांगुरमित्यानशिषमित्या
 लालचयेत्याडावा॥वेसोबूडाघारमें॥चटि
 ३॥१॥

ये जिरं मरमाइ ॥ तारमंडल छेदिकरि ॥ जहं कै सो तहं जा
 ॥ ८ ॥ कबीर लखि सके तो लखि ऐ ॥ राम नाम की लखि ॥ पा
 चै भाषिताइसी ॥ जब तन जासी वृत्ति ॥ कबीर असी
 बाणी बोलिऐ ॥ तन का आयायोइ ॥ और न कौ सी तलक
 रे ॥ आपण कौ स्वयं होइ ॥ १० ॥ कबीर निरभै राम जपि ॥ जब
 लग विवले बाति ॥ तेल घट्टावाती बुजी ॥ तब सो बोगे दिन
 राति ॥ ११ ॥ कबीर बंदा करि लै बंदगी ॥ ज्यो पावे दी दार ओ
 सर मनि या जन को ॥ बहोरिन बा रूं बार ॥ १२ ॥ कबीर पवि
 ता बोगे सही ॥ कहां न माना रोस ॥ जहि मारग साई मिले
 जहि चल्या नरे को कोस ॥ १३ ॥ कबीर हरिकाना वलै ॥ तजि
 माया बिषे चोज ॥ बडु डि बडु डि लासे नही ॥ मनि यजन मकी
 मोज ॥ १४ ॥ कबीर हरिकानो बनसिक दारी तजी ॥ बल्यो नि
 साण ॥ बजाइ ॥ सिर परिसे तसराइ चा ॥ दीया बुजो पै आइ ॥ १५ ॥
 कबीर जुरा आइ जौरो कीयो ॥ नो तन दी न्ही पीति ॥ आंघां
 परि आंगुली ॥ बीष तरे यणि नीव ॥ १६ ॥ १०० ॥ विरह को अ
 न ॥ कबीर आंघडियां काई पडा ॥ पंथ निहारि निहारि ॥ जी
 डीयां बाला पडा ॥ राम प्र कारि यु कारि ॥ कबीर नेण नी
 कर लाईया ॥ अरहं बहे निस जाम ॥ यपीसा ज्यो पीव पीव
 वकरे ॥ कबर मिले गोराम ॥ २ ॥ कबीर रा त्यो रूं नी विरह नी
 कबीर अंतर प्रजत्या ॥ प्रगत्या विरह
 पुज ॥ ३ ॥ कबीर विरह निउ मी पंथ सिरि ॥ पंथी बूजे आइ
 ऐक सबद कहो पीवका ॥ कबर मिले गे आइ ॥ ४ ॥ कबीर
 बहोत दिन नकी जोवती ॥ बाट छ महारांम ॥ जीवतर सेत
 कमिलनको ॥ मनां नहि बिश्राम ॥ ५ ॥ कबीर विरह निउ

वेत्तपडे॥ दरसणिकारणिराम॥ मूवांयोवैद्योहरो॥ सोदर
सणकहिकंम॥ ६॥ मूवांयोवैमतिमिलो॥ कहैकबीरारंम
लोहातोयाथरघस्या॥ यीवैयारसकोणिकंम॥ ७॥ कबीररू
विवंतीआरतिकरो॥ रामसनेहीअर्वो॥ सुरतिकीयांसांद्रसि
लो॥ तोविरहनिकाभावा॥ ८॥ कबीरअंदैमोनाताजिसी॥ मं
दिसोकहियांकेहरिआयांताजिसीकेहरियासियाया॥ ए
कबीरआइनसकौलुजये॥ सकौनलुजिबुलाइ॥ जीवडायों
हीख्योहरो॥ विरहत्तयाइत्तयाइ॥ १०॥ कबीरयोत्तनजारूं
मसिकरूं॥ धूवांजाइसुरीगो॥ मनिवैरंमदयाकरे॥ बरसि
बुजावैअगि॥ ११॥ कबीरयात्तनजारूंमसिकरूं॥ लियोरंम
कानांम॥ लियणिकरूंकरंककी॥ लिथिलिथिरंमपगंव॥
१२॥ कबीरपीरयरंवनी॥ पंजरियीरनजाइ॥ एकजयोरषी
तिकी॥ रहीकलेजेघाइ॥ १३॥ कबीरविरहत्तवंगमतनव
से॥ मंत्रनलागेकोश॥ विरहीजनजीवेना॥ जीवेतोबोरंम ही
॥ १४॥ कबीरविरहत्तवंगमेपैस्यकरि॥ कीयाकलेजेघा
व॥ विरहीअंगमोडेनहा॥ ज्योतावैत्यांवाव॥ १५॥ कबीर
विरहाआयादरदस्यो॥ कडवालागाकांम॥ कायालागीका
लके॥ सीवालारांम॥ १६॥ कबीरयात्तनकादीवाकरूं॥
वासीमेल्लेजीव॥ लोहीसीचोतेलज्यो॥ कबमुखदधोपीव
॥ १७॥ कबीरविरहाबुरामतिकहो॥ विरहाहेसुनितान
जाघटिविरहनिसंचरो॥ सोघटिसदामसाण॥ १८॥ कबीर
विरहारंमपगईया॥ कहोसाधोनेपमोधि॥ जाघटिता
लावेलीया॥ ताकोलाईसोधि॥ १९॥ कबीरआषडायोपेम

रोद्र तडीयां ॥२०॥ कबीर सोई आसुस जनां सोई लोगा
बिडां जे लोइए लोही चवे तो जाणें हेत हीया ॥२१॥ क
बीर हसणा हरिकरि रोवणस्यों करि चित विनरुं नाके
याईये प्रेमियारामित ॥२२॥ कबीर हसो तो डुब नहिबी
सरुं रोऊं तो बलिघटि जाइ मनही मां हि बिसूरणं जे
घुणका वहिषाइ ॥२३॥ कबीर की डैका वजुषाईया यांता
किनऊं नदीव ॥ २४॥ कबीर की डैका वजुषाईया यांता
व ॥२४॥ कबीर की वजु जं म्पा चूनका बेरी बिरहायध
बीबडीया ही सजणां बिदनि किनऊं नलध ॥२५॥ कबीर
हसिहसि किनऊं नपारुं या ॥ जिनियायाति निरोइ ॥
हासेइ जे हरिमिले तो कोण डहागणि होइ ॥२६॥ कबी
रहासे ये हे हरिमिले तो कोण सहे सुरसाण ॥ कामक्रीध
तिसनां सजे ताहि मिले सगवांन ॥२७॥ कबीर मोचितति
लाहनबीसरो ॥ ठमहरि हरिथया ॥ अहिं अंगि अत्रे लसा
गिसी ॥ जबतबतुम मिलियां ह ॥२८॥ कबीर नेणा अंतरि
आवतु ॥ निसदिन निरयो तोहि ॥ कबहरि दरसणयो ह
गे ॥ सोदिन आवे मोहि ॥२९॥ कबीर देखतदिन गया ॥ नि
सती निरयत जाइ ॥ बिरहनि पावने नही ॥ जीवडेत
रसे माइ ॥३०॥ कबीर मो बिरहनि कोमी चदे के आया ॥
दिषलाइ ॥ आवपहरका दाऊण ॥ मोये सहा न जाइ ॥३१॥
कबीर बिरहनिथी तो कोरही ॥ जली नपविकी लार ॥ ग
हली सुगधक बावला ॥ ये मनला जो मारि ॥३२॥ कबीर होइ
बिरहकी लकडी ॥ सिलगि सिलगि धूधाइ ॥ चूटियडोंइ स
बिरहते जे सारी ही जरि जाइ ॥३३॥ कबीर तन मनयो ज
स्य ॥ बिरह अगनि सो लागि ॥ मिरतगपीरन जोणीसी ॥ ज

एं वाग्गि॥३४॥ कबीरये मविनांधीरजनही॥ विरहविना
 बेरागा॥ नां वविनां याइसी नही॥ मनमनसा काया घा॥ ३५॥
 कबीरने नहमारै बावरो॥ छिन छिन लोडे॥ त्रुका॥ नात्तु मिले
 नमें सुयी॥ छेसी वेचनि मुका॥ इश कबीर प्रबति प्रबति मे
 फिरी॥ नैनगमाये रोइ॥ सो बूटी पाऊं नही॥ जो ते जीवनि
 होइ॥ ३६॥ कबीर गलौ त्रु म्हा रा नां वमें॥ जो पाए मेलूण
 असा विरहामे लि करि॥ निति दुषया वै कोण॥ ३७॥ कबी
 र छिनमे चढेर उत्तरे॥ सो तो ये मन होइ॥ अघट प्रेमपिज
 रिबसे॥ विरह कहां वै सोइ॥ ३८॥ कबीर आपाये मकल
 गया॥ देये था सब कोइ॥ पलमें रोवै पलहसे॥ सो तो ये म
 न होइ॥ ३९॥ कबीर विरह बंधा ऊ आइया॥ मुऊ विरहा
 की नूय॥ बाहन वै सोइ रयती॥ मति जलि उठै रूय॥ ४०॥
 कबीर मो विरह निकापी वमूवा॥ दाग नदी या जाइ॥ मांस
 गले गलिने पड्य॥ करं करही गलिलाइ॥ ४१॥ कबीर कऊ
 वै करं कटं लीया॥ मुठि ऐक याया हड॥ जायं जरि विरह
 बसे॥ मांस कहां ररड॥ ४२॥ कबीर हं मत्वमको दूटत फिरे
 मिलो पियारे राम॥ हिरदा माहि सो उठि मिलो॥ ऐस कल त
 मांस्कांम॥ ४३॥ कबीर तन मन जाल्या जिनका॥ विरह टं
 टौले बारा॥ मति कोइ कोइ ला उवरे॥ तो जालौ द्वजी वारा॥
 ४४॥ कबीर तन मन जो बन जरि करि॥ असम करी या देह
 उठि कबीर विरहनी॥ अजो टं टौले ये ह॥ ४५॥ कबीर विरहा
 से तीमति अडौ॥ रे मन मूढ अजाण॥ हाड मांस रगले तहें॥
 जीवत करे मसांण॥ ४६॥ कबीर सो दिन के साहोइ गा॥ राम
 गहिरो बाहा॥ अयाणं करि वेवां हियो॥ वरण कंवल की बाह

रोद्ररतडीयां ॥२०॥ कबीरसोई आस्तसजनं ॥ सोई लीगा ॥
बिडां जै लोइए लीही चवे ॥ तो जाणें हेत हीया ॥ २१ ॥ क
बीरहसणा इरिकरि ॥ रोवाणस्यो करिचित ॥ बिनरूनाको
याईये ॥ ये मयियारामित ॥ २२ ॥ कबीरहसो तो डयनहिबी
सरुं ॥ ऐकं तो बलिघटिजाइ ॥ मनहीमां हि बिसूराणां ॥ जे
घुणकावहिषाइ ॥ २३ ॥ कबीरकी डैकावजुयाईया ॥ यांत
किनऊनदीव ॥ बौतग्याडि रदेयीया ॥ भीतरजां म्पाची
व ॥ २४ ॥ कबीरची वजुजं म्पाचूंनका ॥ बैरी बिरहायध
बीबडीयाही सजणां ॥ वेदनिकिनऊतलध ॥ २५ ॥ कबीर
हसिहसिकिनऊनयाईया ॥ जिनियायाति निरोइ ॥
हासेहजे हरिमिले ॥ तो कौण इहागणिहोइ ॥ २६ ॥ कबी
रहासेयैले हरिमिले ॥ तो कौण सहेसुरसाण ॥ कामक्रीध
तिसनांतजे ॥ ताहि मिले तगवान ॥ २७ ॥ कबीरमोचितति
लाहनबीसरो ॥ तमहरिहरिथयां ॥ अहिअंगिअोलना
गिसी ॥ जबतवत्तुमभिलियांह ॥ २८ ॥ कबीरनेणाअंतरि
आवत्तु ॥ निसदिननिरयो तोहि ॥ कबहरिदरसंणद्योह
गे ॥ सोदिनअवेमोहि ॥ २९ ॥ कबीरदेयतदिनगया ॥ नि
सतीनिरयतजाइ ॥ बिरहनियावपावेनही ॥ जीवडेत
रसेमाइ ॥ ३० ॥ कबीरमो बिरहनिकोमीचदे ॥ केआपा
दिषलाइ ॥ आठपहरकादाऊणां ॥ मोयेसहानजाइ ॥ ३१
कबीरबिरहनिया तो क्योरही ॥ जलीनपविंकी लार ॥ ग
हलीमुगधकबावली ॥ येमनलाजोमारि ॥ ३२ ॥ कबीरहो
बिरहकीलकडी ॥ सिलगिसिलगिधूधाइ ॥ चूठियडोइ
बिरहते ॥ जेसारीहीजरिजाइ ॥ ३३ ॥ कबीरतनमनयो
स्य ॥ बिरहअगनिसोलागि ॥ मिरतगपीरनजाणोसी ॥ ज

कबीरजाजीजलिगई॥ धागारेक नदधा॥ घरसेसोपदिनास
 सा॥ पड्याकदूबैबंध॥ १०॥ कबीरमैधरजात्याआपणा॥ ११॥
 यामरीडाहापि॥ श्रीरंकाभीजालिस्यो॥ जोचनेदुसारेमा॥ १२॥
 ११॥ कबीरधरजात्याघरउत्तरे॥ घरराव्याघरजाइंगेक
 वंसामेसुणो॥ मडाकालकोयाइ॥ १२॥ मारगा॥ कबीरमग
 दांलागीलाइ॥ नदीयांजलिकोइलातई॥ देखिकबीरनाग
 मंघीतरवरेचटिगई॥ १३॥ माया॥ कबीरअगेअगेदाबने
 पोबेहरीयाहोइ॥ बलिहारीताविरबकी॥ नदकात्याफन
 होइ॥ १४॥ कबीरविरहहकुहाडीतनबहे॥ घावनसध
 रोइ॥ मरौकासंसा मिट्या॥ छटियापरमसोदा॥ पावकी
 रस्वपनैरैनिके॥ पड्याकलेबैके॥ जबसोकतबदोइजना
 जबजागंतबयेका॥ १५॥ कबीरसेरायायामरयसो॥ यांसा
 सागरमांहा॥ जेबाडीतौडूबसौं॥ गहोतौडुसिंहबाद १७
 कबीरपाणीमांहीप्रजली॥ ऊईअपरबलआगि॥ मत्तनाब
 हवीरहिाई॥ मीनरहीजलत्यागि॥ १८॥ कबीरब्रह्मअगान
 तनमनजत्या॥ लागिरहाततजीव॥ कवाजाणविरदनी॥
 केजहिनेट्यापीव॥ १९॥ कबीरयावकरूपीगमंद॥ सवर्ष
 रसासमाइ॥ चितचकमकचकुंठनही॥ धूवांदाइकाइजा
 इ॥ २०॥ कबीरकफकायाचितचकमका॥ जाडीवाइवार
 तीसबरधूवांहुवा॥ जोथापड्याअगार॥ २१॥ कबीरपद
 पेसवभाइकरि॥ मुक्तिनिरसीआइ॥ पंथितनमनचाथिन
 गीचंभकावाइ॥ २२॥ कबीरविरहाहमस्येयांकद॥ कना
 पकडमोहि॥ चरणकंदलकीसांजमे॥ १५५॥ यार
 ३॥ कबीरअगिवांणीआयासना॥ १५५॥ कपार

दिनरोमपधारिणी॥सगलीसौंजसहेत॥२४॥१८४॥जप्र
॥चाकोअंग॥कबीरतेजअनेतका॥मान्दउपासूरजे
नियतिसंगिजागीसुंदरी॥कोतिगदेव्यातेणि॥१॥कबीर
पारब्रह्मकेतेजका॥कहौकेसाउनमान॥कहिबेकीसोम
नह॥देव्याहीप्रवाण॥२॥कबीरअगमअंगोचरगमनह
तहोकिवसिलै॥जोति॥तहो॥कबीरबंदणी॥पापप्रतिनह
होति॥३॥कबीरमनमधकरनया॥कीयातिरंतरिवास
कवलजोफुलपानीरविनि॥कोनिरयेनिजदास॥४॥कबी
रसाइरनाहीसोपविनि॥स्वोतिबुंदसीनाहि॥कबीरमोती
नियजो॥सुनिसिषरगढसाहि॥५॥कबीरघटमेंओघट्या
ईया॥ओघटमाहीघाट॥कहैकबीराप्रचातया॥तबगर
दिघाईवाट॥६॥कबीरसूरसमानांचंदमें॥दहकीयाघर
एक॥मनकाचित्यातबतया॥कुबुपूरबललेष॥७॥कबी
रप्रमप्रकासीया॥अंतरितयाउजास॥मुबिकिसचरीम
हिमही॥तबबाणीफुटीवास॥८॥कबीरजकलप्राजो
गीहवा॥मिदिगईअैचाताणि॥उलटिसमानाआपमें॥९॥
वाब्रह्मसमानि॥१०॥कबीरदेयोकरमकबीरका॥कबूप
रबललेष॥जाकामहैलनमुनिलहे॥सोदीसतकीयाअ
लेष॥११॥कबीरमनलागाउनमनिसो॥गिरानियकुंताजो
इ॥देव्याचंदविक्रणचंद्रिणा॥तहो॥निरंजनराइ॥१२॥क
बीरमनलागाउनमनिसो॥उनमनेमनहिविलंग॥लूणावि
लेगापाणीया॥याणीलूणाविलंग॥१३॥कबीरयाणीहीतहै
मसया॥हैमकेगायाविलाइ॥कबीरजोचासोतया॥अबकु
बकहानजाइ॥१४॥कबीरजिसकारनिमेंजाइया॥सोती

मिलिया आइ ॥ साई तो सनमुख भया ॥ लागिक वीरया
 ॥ १४ ॥ कबीर जली तई जो तो पस्या ॥ गई दसा सब न
 लि ॥ पाला गलियांणी भया ॥ हलि मित्या उ सकलिया ॥ १५ ॥
 कबीर चिंता मणि पाई चो हटै ॥ हाडी मारत हथिया ॥ मी
 रामुज स्यो मै हरिकरी ॥ अब मिलौ न का कसा थिया ॥ १६ ॥
 कबीर आया था संसार में ॥ देया कौ रंग रूप ॥ कहै क
 बीर संत है ॥ पडि गया निजरि अनूप ॥ १७ ॥ कबीर यं
 थि उडाणी गिरा निकों ॥ पिंडर सा प्रदे सि ॥ पांणी पीया
 चं ब विणि ॥ नूलि गई व क देसा ॥ १८ ॥ कबीर सूचया या सु
 ष उपना ॥ दिल दरीया भर पुरि ॥ सकल पाप स है जै गया ॥
 तब साई मित्या ह जूरि ॥ १९ ॥ कबीर हरि संगि सीतल न
 या ॥ मिठी मोह त निताप ॥ नि स वा सरि सु य नि धिल ही
 तब अंतरि प्र ग टि आप ॥ २० ॥ कबीर तन ती तरि मन मां
 नाय ॥ बाहरि क ही न जाइ ॥ ज्वाला तै फिरि जल नया ॥ बुजी
 जल ती लाइ ॥ २१ ॥ कबीर ततया या तन बी स स्या ॥ मन धरि
 ध्या या धां ना ॥ तप ति मिठी सी तल नया ॥ तब सू न की या अ
 स नाना ॥ २२ ॥ कबीर या या ति नि सू ग ह ग ह्या ॥ र स नां ला गी
 स्वा दि ॥ र त न नि रा ला पा र्द्र या ॥ ज ग त ठं ठे लै वा दि ॥ २३ ॥
 कबीर दिल सावत नया ॥ फल या या सम र थ ॥ सा य र मा
 हितं डोल तां ॥ ही रा च डि गया हा थ ॥ २४ ॥ कबीर जब मै
 था तब हरि न ही ॥ अब हरि है मैं नां हि ॥ सवे अंधारा मि
 टि गया ॥ दीप ग देख्या मां हि ॥ २५ ॥ कबीर जा कारणि में जा
 इ था ॥ सो मै पा या वी र ॥

हता शौर

नजाइ॥ तेज पुंज प्रकाश धणी॥ नेणार सायमाइ॥ २७॥ कबीर
गिगनिग जिइं मिरत चवै॥ कदली कंवल प्रकास॥ तहां कबी
रा बंदगी॥ कै कौई निज दास॥ २८॥ कबीर हंम वासी उ स
देसका॥ जहां जाति बरण कुल नां हि॥ सब दीम लावा हो
इगा॥ देह मिता वानां हे॥ २९॥ कबीर हंम वासी उ स देसका
जहां बस काये ल॥ दीपग देष्यागे बका॥ विणिवाती विणि
तेल॥ ३०॥ कबीर हंम वासी उ स देसका॥ जहां बाराह मांस वि
लास॥ बस करै बिगसे कंवल॥ तेज पुंज प्रकास॥ ३१॥ कबीर
हंम वासी उ स देसका॥ जहां अविनासी की आन॥ दुष सुष
को बाये नहि॥ सब दनै एक समान॥ ३२॥ धरती पधे न गिग
नि नही होता॥ नही च्या नही तारा॥ तब हरि हरिका जन हो
ता॥ कहै कबीर विचारा॥ ३३॥ कबीर जबै कृत्त मान ही॥
नहोता हट नयाव॥ तदिका कबीर रांम जन॥ देखै अवघट
घाट॥ ३४॥ कबीर दिल दरीया नया॥ हरि दरगह बेवा आइ
जीव ब्रह्म मेला नया॥ अब जीव क हान जाइ॥ ३५॥ कबीर अं
तर प्रेम प्रकासीया॥ हरै लीया बिगास॥ चंद सूर की गंमिन
ही॥ तहां इसाण पावै दास॥ ३६॥ कबीर सुरतिय मांणी निरति
मै॥ निरति रही निरधार॥ निरति सुरतिय प्रचा नया॥ तब यूले
सिंभ डवार॥ ३७॥ कबीर जब दिल मिली दया लस्यो॥ तब कृष्ण
अंतर नाहि॥ पाला गलियानी नया॥ यो हरि जन हरि ही मां हि
३८॥ कबीर मिमता मेरी का करै॥ प्रेम उघाडी योति॥ इसाण
नया दया लका॥ स्तन नई सुषसौ डि॥ ३९॥ कबीर धरे अध
र पिछांणीयो॥ अधर धरे ही मां हि॥ धरे अधर मेला नया॥ तब
कछु अंतर नाहि॥ ४०॥ कबीर दीपग जूता पांन का पिष्या

अलखपरपरदेव॥ चारिवेदकीगमनही॥ तहांकबीरसे
 वा॥ ४१॥ कबीरजबहमगावता॥ तबहरिजांणानांही॥ अब
 हमदित्तमैपेयीया॥ गांवाणकौंकुचनंही॥ ४२॥ कबीरपीव
 स्योमिल्यारंगरहा॥ जगामांनगुमांन॥ हयलेकैहरिस्यो
 डो॥ विठरणमरणसंमांन॥ ४३॥ कबीररामसरोवरसुत्तरा
 जला॥ हंसाकेलिकरोहिया॥ मुक्ताहलमौतीचुरी॥ अबउदिक
 यतंतनजांही॥ ४४॥ सुरनरबंछेदेवता॥ ब्रह्माबिष्णुमहेश॥
 उंचमहेशकबीरका॥ तहांपारनपावैसेसा॥ ४५॥ नीवविजंण
 देकरा॥ देवविजंणदेव॥ तहांकबीराबंदगी॥ अलखपुरसकी
 सेवा॥ ४६॥ कबीरसंगीतौसौईकीया॥ जाकेदुयअदुयनांहीको
 द्रा॥ हिलिमिलिकैकरियेलिस्या॥ कदेनविबोहाहोद्रा॥ ४७॥ क
 बीरअनलयेधिकाचीटला॥ पडतोकीयाविचारा॥ सुरतिसां
 धिवेत्तननया॥ जाइमिल्याप्रवारा॥ ४८॥ कबीरकवलप्रकासी
 याब्रह्मबासतहांहोद्रा॥ मननवंरातहालुबधिया॥ जाणोगा
 जनकोद्रा॥ ४९॥ कबीरकवलप्रकासीया॥ जगानिरमलसूरा
 निमिअंधीयारा॥ मिटिगया॥ ब्रजेअनहदतरा॥ ५०॥ कबीरस्त
 निसरोवरमीनमनानीर॥ निरंजनदेवा॥ सदासाधुसुखविल
 साणां॥ कौईविस्वाजाणोसेवा॥ ५१॥ कबीरमैलागाउसएकस्ये
 एकनयासबमांही॥ सबमेरामैएकका॥ अबइजाकीद्रनांही
 ५२॥ कबीरअगहगहिअंकहिकहि॥ अमैदाभेदलहाअ
 एभैबाणीअगमकी॥ लेगईसंगिलगाइ॥ ५३॥ कबीरअणसैका
 शेरोगकौं॥ अनहदउपजैआइ॥ सेकाकाजलनिरमला॥ कौइ
 पविगारुधिलाइ॥ ५४॥ कबीरअनहदवाजेनीकरकरै॥ उपजे

कबीरताकायाणीहंसापीवै विरलाअदिविचारि आका
 सेमुविऊंधाकूवा पातालेपणिहारि ॥५६॥ कबीरयाणीमैसि
 घघरकरे मंचलीचढैविजूरि शिवशक्तिदसाकौजोवै
 पडिमउवैधूरि ॥५७॥ इमिरतवरसेहीरानियजे घंटापडै
 टकसाध तहांकबीरजुलाहापारशु अणत्तेउतस्यापार ॥
 ७॥ कबीरससाकरुंनतेइसुं सबडयदीयानिहारि सह
 जसंनिमैमिलिगया तवयायातेदमुरारि ॥५८॥ कबीरस्व
 एगल्यापाणीमिल्या बडूरिनतरसीगूणि हरिननहरिसौं
 मलिरसा कालचल्यासिरधूणि ॥६०॥ कबीरजाफरहरेसा
 निमै बाजैतबलनिसान तकीयातौइसतनका मनीहैमै
 दान ॥६१॥ कबीरजाहपावांसेकतरी होव्यादेसविदेसत्य
 हपावांधितियाकडा आंगणभयावदेस ॥६२॥ कबीरपूरासै
 प्रचातया डयसुयमैह्याहरि जुगसौंवाकीकठभया तव
 सांईमिल्याहजूरि ॥६३॥ कबीरगुणाइंडीसहजैगई सत्प
 रसैसहाइ घटितीतरिवस्यप्रकासीया बकिबकिमरेव
 लाइ ॥६४॥ कबीरकहिणांथासोक हिरसा अबकुंठक
 सानजाइ ऐकरहीसबहीगई तवपैवाहरीयासाहि ॥६
 ५॥ कबीरअगमअगौचरराभिया करिकरिवहोतजतव
 कबीरबानांकेयोरहे जाघटिंमरतन ॥६६॥ कबीरफाटे
 दींमैफिरुं मरीनिजरिनआवैकोइ जाघटिमैरासांईया
 तेक्योबानांहोइ ॥६७॥ रसकौअंग ॥६२०॥ ए ॥ कबीरप्याल
 पीयापेमका अंतरत्योलाइ रोमरोममैरभिरसा अकर
 अमलकहायाइ ॥ कबीरहरिरसयोपीया वाकीरहीन
 थाकि प्राकाकलसकुमारका बडुंडिचटिईचाकि २०

रामरसांश अजब है। पीबत अधिकर साल। कबीरयात्रा
डलने है। मांगे सीसकलाल। ३। कबीरसादीपेमकी। बहौत
कबेबेआइ। सिरसोपेसोईयनि। नातरपीयाजजाइ। ४।
कबीरहरिरसमहिगाजिनिपीयै। लिसीसीसकलालदिल
वैष्ठीघरदबला। बीचैगीबकूमर। ५। कबीरहरिरसमहि
गापीवस्य। बाडिजीककीबांणि। मांथासादेहरिमिलोतब
यासोधाजांणि। ६। कबीरमेमंताअबगातिरता। प्रकलय
आसाजीति। रामअमलमांतरहै। जीवनमुकतिथतीत। ७
कबीरसातगांठिकीपीनके। साधनमानैसंका। रामअमदि
मातरहै। गिणेंद्रसौरंका। ८। कबीरहरिरसपीयाक्योजां
णि। ९। तरेनद्विभुमार। सतिवालाधुमतफिरै। नाहीतन
कीसार। १०। कबीरमेमंतातिणानाचरै। सालैचिंतासंनेह
बांभावारिजपेमके। डारिरहासिरयेहा। ११। कबीरजास
रिधजनडबता। अबसंगलमलिमलिन्हांहि। देवलबूडा।
कलससो। पंथितिसाईजांहि। १२। कबीरसबेरसांश एहंम
कीसा। हरिसमिनाहंकीशारचैकतनमेसंचरै। तोसबतन
कंचनहोश। १३। कबीरबोडबाकीया। मांडापीयाधोश। फू
लपयासाजिनिपीया। रहेकलालासोइ। १४। कहतसुएत
सबनातहै। बियेनसूकेकाल। कबीरकहैरेप्राणीयां। बांणि
ब्रह्मसंभासि। १५। कबीररातीमातानावका। मदकामाता।
नाहि। मदकामाताजेफिरै। तेमतिवालानाहि। १६। कबीर
रातीमातानावका। पीयापेमअघाश। साधूमतिवालादीदर
का। प्रीमुकतिबलाइ। १७। कबीरमेमंताधुमतफिरैरोमि
रोमिसपूरि। बाडेयाससरीरकी। तबदेखैरामहजूरि। १८।
कबीरपिमपयालासरिपीया। जरणांकरोजतना।

कबीरताकायाणीहंसापीवै॥विरलाआदिविचारि॥आका
 सेमुयिकुंधाकूवा॥पातालेपणिहारि॥५६॥कबीरयाणीमैरि
 घघरकरै॥संभलीचठैविजूरि॥शिवशक्तिदसाकौजोवे॥
 पछिमउवैधूरि॥५७॥इंभिरतवरसैहरानियजे॥घंटापट्टे
 टकसारा॥तहांकबीरजुलाहापारसु॥अणसैउतस्यापार॥५८॥
 कबीरससाकरुंनसैडरुं॥सबडयदीयानिवारि॥सह
 जसंनिमैमिलिगया॥तबयायाभेदमुरारि॥५९॥कबीरस
 णगल्यापाणीमिल्या॥बडूरिततरसांगुणि॥हरिननहरिसौ॥
 मलिरह्या॥कालचल्यासिरधुणि॥६०॥कबीरजाफरहरेसा
 निमै॥बाजैतबलनिसान॥तकीयातौइसतनका॥मलीहैमै
 दान॥६१॥कबीरजाहपावांनैकतरि॥हांत्यादेसविदेसत्य
 हपावांथितियाकडा॥आंगणनयाबदेस॥६२॥कबीरपूरासै
 प्रचातया॥डयसुयमैह्याइरि॥जुगसौबाकीकटतया॥तब
 सांईमिल्याहजूरि॥६३॥कबीरगुराइंद्रीसहजैगई॥सत्प
 रतैसहाइ॥घटितीतरिब्रह्मप्रकासीया॥बकिबकिमरेव
 लाइ॥६४॥कबीरकहिणांथासोकहिरसा॥अबकुष्ठक
 हानजाइ॥ऐकरहीसबहीगई॥तबयैवादरीयासांहि॥६
 ५॥कबीरअगमअगौचरगयिया॥करिकरिबदोतजतन
 कबीरबानांकेयोरहे॥जाघटिगंमरतन॥६६॥कबीरफाटे
 दीदेमैफिरुं॥मैरीनिजरिनआवैकोइ॥जाघटिमैरासांईया
 तैकेयोंबानांहोइ॥६७॥रसकौअंग॥६८॥१॥कबीरप्याल
 पीयापेमका॥अंतरल्योलागाइ॥रोमरोममैरभिरसा॥अकर
 अमलकहायाइ॥१॥कबीरहरिरसयोंपीया॥बाकीरहीन
 थाकि॥पाकाकलसकुमारका॥बडुंडुचटिईचाकि॥२॥

जेजाणिसी॥ राकाघरंतरतना॥ १०॥ हरिसागिताहरतसा
 कोईतपीवैनीर॥ नागिवडैसोपावसी॥ नरितरिपीवैकबी
 र॥ ११॥ कबीरतोरैवाडीप्रहर॥ मेवैबिलंब्याजाइवावने
 घदनघरकीया॥ तबहलिगईवणराइ॥ २०॥ २५॥ १॥
 लांबिकोअंग॥ कबीरकायाकमडलनरिलीया॥ उजला
 निरमलनार॥ पीवतत्रियाननाजिसी॥ त्रियावंतकबीर
 ॥ कबीरमनउलाटादरीयामिह्या॥ लागामलिमलिह्या
 ॥ थाहत्तथाहनआंई॥ त्वपूरारहिमांण॥ २५॥ १॥ २०॥
 हेरांनकोअंग॥ कबीरपंडितसेतीकहिरसा॥ कसांन
 मानेकोइ॥ वीहअगाधऐकहंकहो॥ नारीअचिरजमोहि
 ॥ कबीरबसेअपिंडापिंडमो॥ तागतिलषेनकोइ॥ कहेकबी
 रसंतहो॥ बडाअचतामोहि॥ २॥ २५॥ १॥ १२॥ हेरतकोअंग
 ॥ कबीरहेरतहेरतहेरीया॥ हेरतरहेहिराइ॥ बूंदसमा
 नासमदमें॥ सोकितहेरीजाइ॥ १॥ हेरतहेरतहेसयीर
 साकबीरहिराइ॥ समदसेमानाबूंदमें॥ सोकितहेस्यज
 इ॥ २॥ २५३॥ १२॥ जरणकोअंग॥ कबीरतीरीकहोतोमें
 डरो॥ हलकाकहोतोज्ज्वमेंतोजाणोरंगको॥ नेणाअंतरि
 दीव॥ १॥ कबीरदीवाहेतौकाकहो॥ कसांनकोपतियाय॥
 हरिजेसाकातेसारहो॥ त्वहरथिहरथिगुणागाइ॥ २॥ क॥
 बीरअसीअदबुदजिनिकथे॥ सबस्योरथिडुराइ॥ वैदक
 तेवांनलिष्या॥ कसांनकोपतियाय॥ कबीरकृताकीय
 तिअंगमहे॥ त्वचलिअपणोउनमानि॥ धीरेधीरेयावदे॥ य
 ऊंचैगेप्रवांनि॥ ४॥ कबीरयकुंचैगे॥ तबकहेंगे॥ अमरकेंगे
 उसवाइ॥ अजऊंतेरासमदमें॥ बोलिबिगुंचैकांहि॥ ५॥ क
 बीरजाणिवूकिजडहोइरसा॥ बलतजिनिरबलहोइ॥ क

है कबीर तादास कौ॥ गंजिनसके कौ॥ ६॥ कबीर वाद वि
 वादां विषयणां॥ बोल्यो तो तत्रयाधि॥ मोंनिगयां हरिस्वम
 गीरे॥ जेकोई जाणोसाधि॥ ७॥ साधी॥ २६०॥ अंग १३॥ ल्योको
 अंग॥ कबीरस्वरतिटी कलीले जल्यो॥ मनविचिटी लणह
 राकेवल कूवांमै प्रेमरसपी वै वारंवार॥ १॥ कबीरगग
 जमनके अंतरे॥ सहजसुनि ल्योघाटा॥ तहां कबीरमव
 रच्या॥ मुनिजन जौवै बाटा॥ २॥ कबीरजहिं बनिसीहनसं
 चरोपंथी जडिनही जाइपमोटा भाग कबीरका॥ तहारहे
 ल्योलाइ॥ ३॥ कबीर ल्योलागी तबजाणिये॥ कबडू बूटि
 नजाइ॥ जीवत तो लागीरहे॥ मूवांमाहि समाहि॥ ४॥ कबी
 रजबलका कथणी॥ हमकथी॥ पूजिरही जगदीसा॥ ल्योला
 गीकलनापडे॥ अक्बोलणाहदीसा॥ ५॥ कबीर अरथमा
 हिगारथपाईया॥ अंथांमाही निजमूल॥ ल्योलागी निरम
 लनया॥ मिटिगईसंसेसूल॥ ६॥ २६६॥ १४॥ स्वरतनको
 अंगलियते कबीरसूरासोईजाणिये॥ लडे धणीकेहेत
 प्रजाप्रजाहोइपडे॥ तऊनबाडैयेत्ता॥ १॥ कबीरयेतन
 बाडैसूरिवां॥ फूकेदोइदलमाहि॥ आसाजीवणमरणकी
 मनमैराथेनाहि॥ २॥ कबीरकाइरकूवांनबूटिये॥ कबूसू
 रतनसाहि॥ भरमनलकाबाडिदे॥ सुमरणसेलसबा
 शि॥ कबीरसोईसूरिवां॥ मनस्योमांडेऊका॥ पांचपया
 दायकडिकरि॥ पूजिकरै सबइरि॥ ३॥ कबीरसूराकके
 पिरहस्यो॥ एकदिसस्वरनहोइ॥ योरबिऊणासूरिवां॥ न
 लनकहैसीकोइ॥ ४॥ कबीरआराणियेसिकरि॥

तरेतानिकसिनवाऊडे जेजुगजाइअनेत ॥ ६५ ॥ कबी
 रयांचअगनिसहणीसुगमसुगमसहणषडगधार ॥
 नेहनिबांहणैकरसि ॥ महाकविनव्योहार ॥ ६६ ॥ क
 बीरनेहनिबांहाहीवणे ॥ सोच्यावणैनआन ॥ तनदेस
 देसीसदे ॥ प्रेमनदीजेजाण ॥ ६७ ॥ कबीरभावमलकासु
 रतिसर ॥ धरधीरजकरितोणि ॥ मनकीमूवीजहामडी
 चोटतहांहीजाणि ॥ ६८ ॥ कबीरसूरालडेकमधहोइ ॥
 धडस्योसीसउतारि ॥ कहैकबीरमास्यामूवा ॥ कहैतज
 मारोहीमार ॥ ६९ ॥ कबीरविणिपावांकायंथहै ॥ मंजि
 सहरअसमान ॥ विषमघाअवघटघणां ॥ कीइपडुंवे
 संतसुजाण ॥ ७० ॥ कबीरयांचआसमनमेंलीयां ॥ जब
 रिणबाजैत्तर ॥ दिलमोड्रासिरउवस्या ॥ मुजरोस्वाम
 हजूरि ॥ ७१ ॥ कबीरशिणधसीयातेउवस्या ॥ आयानगर
 निवास ॥ घरांखधावाबाजीया ॥ औरउजेहकीआस ॥ ७२ ॥
 कबीरजबलगधडस्योसीसहै ॥ सूरकहावेसोइ ॥ माथो
 त्तसंधडलडे ॥ कमधकहावेसोइ ॥ ७३ ॥ कबीरषेलजम
 ड्रायिलारसो ॥ आनंदबहोअघाइ ॥ अबपासाक्योहीप
 डो ॥ येमबंथोजुगजाइ ॥ ७४ ॥ कबीरसूरनसैरीतकवेनेजे
 घालेघाव ॥ सबदलपाबांमोडिके ॥ मांकीसेतीचाव ॥ ७५ ॥
 कबीरसूरैतोसाचांपगा ॥ सहेसनमुषीधार ॥ गीदडअ
 चुकाइकरि ॥ पीवैकथेअपार ॥ ७६ ॥ कबीरतेलदमा
 मांगडाडी ॥ सहनाईअरत्तर ॥ तीन्योनिकसिनवाऊडे
 साधसतीअरसूर ॥ ७७ ॥ कबीरदेयादेयीसबचल्या ॥ बां
 नांयहरिअनेक ॥ साहिवअप ॥ रणो ॥ मरि ॥ बिरल
 रेक ॥ ७८ ॥ कबीरऐतीन्यो

साधसीतीअरसूरका॥दईनमोडेमौंह॥७॥कबीरका
इरकौकोतिगजला॥कहैकसेसनाह॥नीडपडांस
जांझिा॥पीबैकौएजबाहेवाह॥८॥कबीरसाधस
तीअरसूरिवां॥कदेनफैरैयीव॥तीमोनिक्
डे॥ताकामौहनदीवा॥९॥कबीरसाधसतीअरसूर
राखारहैनवोट॥माथोबांधिपतायसौ॥नेजेयाडे
॥१०॥नाजिकहंलौजाईगै॥मौंसांरीघरदूरि॥बाऊडिक
बीरायैतरड॥दलआऐनरसूरि॥११॥कबीरएकमरिबो
एकमारिबो॥याहीवियमीसधिनांककाइरलडैगै॥
॥१२॥करकसबंधि॥१३॥कबीरकाइरनागाकाल्हिका॥सूर
रहारिणमांहि॥पटालियायारंमका॥अराखजीनांयो
॥१४॥कबीररिणरहियाराताऊवा॥सजनयेत्या
बसावामाहिस्वा॥नाजगईतकचूरि॥१५॥कबीरज
बलगआससरीरकी॥निरनैरुवानजाइमायाकाया
मानितजि॥चौडैरहैबजाइ॥१६॥कबीरचौडैहीआनं
हैनांतधर्यारिणजीत॥साहिवसैतीभिलिरहा॥अं
गतिकीप्रीति॥१७॥कबीरसाधसतीअरसूरिवां॥इनसे
कौईनांहि॥अंगंमपंथकौंपगधरै॥गिरैतौकहांसंमांहि
॥१८॥कबीरसाधसतीअरसूरिवां॥इनकामसाअगा
आसाबाडैदेहकी॥तिनमेंअधिकासाधा॥१९॥सतीसूर
रावनैकपल॥सूरैसूराननपलचारि॥साधसूरानानि
तिमरण॥कहैकबीरविचारि॥२०॥कबीर राघोडाहीन
लक्ष्मणकरोयेयावै॥धंणांरुवाकिस
सबको॥२१॥कबीरसबको
धैके॥भागंपाखेबाऊडे

बारसातीयां वाजकुसतीयां जलैमडाकीलार सती
जसौईजांणिए बलैसंजालिसंजालि ॥४॥ कबीरसर
सनाहनपहरई जबरिणवाजेत्तर ॥ माथोकद्व्यांध
डलडे ॥ जबजाणीजेसूर ॥५॥ कबीरआसामेरीलाडर
पगांठहोलेनीर ॥ तिरणमतेडूबणडरे ॥ बांधिनसकेधी
र ॥६॥ कबीरकहांमुसलाकहोतसबी कहोहीरहा
कतेव ॥ कबीरमास्याबांणनरि ॥ त्रुटिगयासबजेव ॥७॥
१॥३६२॥ १५॥ पतिवरताकोअंगलियते ॥ कबीरपीतडी
तोतुजिसौं ॥ मेरेबडुगणयालेकंत ॥ जेहसिवेलोओरसो
तोनीलरगाईदेत ॥ १॥ कबीरनेणअंतरिआवत ॥ जोहो
नेणकंपेह ॥ नाहुदेयोअवरको ॥ नाहुदेवणदेहा ॥२॥
कबीरसाईमेरायेकहे ॥ औरनइजाकेह ॥ इजासा
ईजेकरूं ॥ जेसिरइजाहोह ॥३॥ कबीरबारबारकाअवि
ए ॥ मेरामनकीसोइ ॥ कलितोउथलजवतवहोतहे ॥ सा
ईअवरनहोइ ॥४॥ कबीरसंसिंहरकी ॥ कजरादीय
नजाइरेकरमईयारमिरहा ॥ इजाकहांसमाइ ॥५॥
कबीरसीपसंमदमे ॥ रूयेयासपीयास ॥ सकलसंम
दतिणकापडे ॥ तबस्वांतिबूंदकीआस ॥६॥ कबीर
दोजिगतोहंसअंगिया ॥ सुकुडरनाहामुकि ॥ तिसत
निमेरेचाहिरे ॥ वाजपियारेचुक ॥७॥ कबीरचित्तघो
उंल्योतूगडा ॥ सुधिबुधिसाथवरात ॥ प्रेममांडहोपी
तिको ॥ योतौरणबंदैतात ॥८॥ कबीरचित्तचौरीमन
मांडहो ॥ गातनादगणग्यांन ॥ हयलेवोहरिस्पोजुडो
जामणमरासमान ॥९॥ कबीरजिनिहरिऐकोजाणीय
जिनिजाणसबजाण ॥ एकेजाणाबाहिरा ॥ सबहीजां

ए॥३॥जां॥॥१॥कबीर एक न जाणीयां॥तो बहो जां एप
 का हो॥एकै तें सब होत है॥सब तें एक न होइ॥११॥
 कबीर आसा की जे राम की॥५॥जी आस निरासा पा॥
 ए॥मांही धर करै तो ती मरे ययासा॥१२॥कबीर आस
 एक अलख की॥५॥जी आस निरासि॥५॥जी आसा सा रि
 वा॥जो चोपडि की सा रि॥१३॥कबीर पति बरता है इल
 काली कुचिल करूप॥वाका ऐके रूप य रि॥वाकू को ति
 तो ए सिरि चूप॥१४॥कबीर पति बरता तो जां ए ऐ र ती
 नथ डै नै ए॥अंतर तो सूचीर है॥बोले इ मिरत बै ए॥१५॥
 कबीर पति बरता सो जां ए ऐ॥सदा न सु मरे एका मन
 मते बिचारा ए॥वाके यस म अनेक॥१६॥कबीर पति
 बरता के एक है॥बिचारा ए॥कै दो॥पति बरता बि
 चारा ए॥क्यों करि मला है इ॥१७॥कबीर तो ले नूली

गिा सब सोंक
 धरे सो धर कडी॥अ धर धरे सो नारि ए

॥सदा डहा गणि होइ॥२०॥कबीर मन दीय
 अंतर जो मी लियि गूया॥वाचक

जग पी सुंदरी॥सोई दीया सुहमा॥२१॥क
 यतरस

डैतेजोडा पतिव रता अरबैयनो ये जुगमें घोडा २५
 कबीर उंची जाति पपीहरी नवैन नीचे नार के जाचे स
 रपतिको के ड्यस है सरीर २६ कबीर में अबला पी
 पावक सं निरगुरण मे रायी के सुनिसने हीरा म बिनि
 अवरन देषों जीव २७ कबीर पतिव रता पतिको त
 जे पति तजि धरे विसास आनं दसा चित वै नही स
 जपी कके पास २८ कबीर पतिव रता को बिड हले
 नारिके रे बित्त चार अवरि पडा दाक पटका क्यों
 के नरतार २९ ३० ३१ ३२ चिंतावणी को अंग ३३ कबी
 र नौ बति आपणी दिन दस ले डब जा डूरे पुरय टाणी
 गली बहो रि न देषे आइ ३४ कबीर जिनके नौ बति ब
 जती मंगल बंधते बारि ऐके हरिकाना म बिणि ज
 मगये सब हारि ३५ कबीर जिन घरि नौ बति बाजती
 और छती सो राग ते मंदर्या ली पड्या बैसाण लोके का
 ३६ कबीर दो ल दसां माग डगडी सहनार्द्र संगि ते रि ओ
 सर चले बजा श्करि हे को द्र ल्या वै फेरि ३७ कबीर धे
 डी जीवणा मांडे मोत मंडाण सब ही उता बौडि गया
 एवरं क सुलतान ५ कबीर ये क दिन अरे सा होइ गा स
 बस्यो पडै बिबोह राजाराण ब्रजपति सावधान
 कन होइ ६ कबीर ऊज डये डै वी करी घडि घडि
 या कुम्हार रावण सरी आचलि गया लंका का सिं
 हार ७ कबीर उंचा मे दिर मालीया चूने कली बुलाइ
 एके हरिकाना म बिणि जदि तदि प्रले जाइ ८ कबी
 र कह्य गबीयो इंस जीवन की आस के सू फूल्या दिव
 सहोइ यं य रस ये पलास ९ कबीर का है गबीयो दे

हादेविशुराबीबडीयांमेलोनहि॥ ज्योकांचलीनवां
॥१०॥ कबीरजिसयतिप्रतिनप्रेमरसा॥ फुतिरसनां
हिराम॥ तेनरयासंसारमै॥ उपजिययेवेकाम॥ ११॥ क
बीरकहाप्रवीयो॥ चामलपेटेहडा॥ हसतीउपरिबु
यति॥ तेनीदेवायड॥ १२॥ कबीरयौअसासेसारहे॥ जे
सासेबलफूल॥ द्यौसचारिकापेयणां॥ फूतेरगनह
लि॥ १३॥ कबीरधूलिसकेलिकरि॥ सुडीजबोधीयेह
द्यौसचारिकापेयणां॥ अंतियेहकीयेह॥ १४॥ कबी
ररातिगमाईसोइकरि॥ द्यौसगमायोयाइ॥ हाराका
साजनमथा॥ कीडीबदलेजाइ॥ १५॥ कबीरमंदिरला
वका॥ जडीयाहीरोलाल॥ द्यौसचारिकापेयणां॥ विन
सिजाइगाकालि॥ १६॥ कबीरस्वपनेरैनिकेउघडि॥
आनेन॥ जीवपड्याबहोलेटिमें॥ जागोतेलेननदेन
॥ १७॥ कबीरआजिककालिकपंचदिन॥ जगलहोइगा
बस॥ उपरिउपरिफिरैइगो॥ डोरचरेइगोघासा॥ १८॥ क
बीरमरैगेमरिजाइगो॥ कोइनलेगानां॥ ककडीजाइ
बसाइगो॥ हाडिबसेतागावा॥ १९॥ कबीरहाडबलेज्यो
लकडो॥ केसबलेज्योघासा॥ सबजुगजलतादेधिकवि
नयाकबीरउदास॥ २०॥ कबीरकूकहारबाहिरो॥ चिडीसा
यायायोयेता॥ आधोप्रधोउबरे॥ चेतिसकेतोचेति॥ २१॥
कबीरज्याहहमजातेमुरे॥ हमनीचलणहार॥ हमनी
पीबेपुगडे॥ तिननीबांध्यात्तार॥ २२॥ कबीरमाइविडा
णीबापविड॥ हमनीलोगविडाहादरीयांकेरीनां॥ ज्यो
संजीगोमिलीयाह॥ २३॥ कबीरदेवलहाडका॥ माठीतणा
बंधाणा॥ यडहरीयायावेनही॥ देवलतणानीसाणा॥ २४॥

डैतेजोडा॥पतिवरताअरवेसनों॥येजुगमेंघोडा॥२५॥
 कबीरउंचीजातिपपीहरी॥नवैननीचैनार॥कैजाचेस
 रपतिकों॥कैडुयसहैसरीर॥२६॥कबीरमेंअबलापी
 पावकरुं॥निरगुरणमेरापीवै॥सुनिसंनेहारांमविणि
 अवरनदघोंजीव॥२७॥कबीरपतिवरतापतिकोंन
 जै॥पतिनजिधरेविसास॥आनंदसाचितवैनही॥सक
 जपीवकैपास॥२८॥कबीरपतिवरताकौबिडहले
 नारिकरैवित्तचार॥अंतरिपड॥दाकपटका॥क्यौर
 कैभरतार॥२९॥३०॥३१॥३२॥चित्तवणीकोअंग॥कबी
 रनौबतिअपणी॥दिनदसलेऊबजाइ॥ऐपुरयटणी
 गली॥बहैरिनवैयेआइ॥३३॥कबीरजिनकेनौबतिव
 जती॥मगलबंधतेबारि॥ऐकैहरिकानामविणि॥ज
 मगयेसबहारि॥३४॥कबीरजिनघरिनौबतिबाजती
 औरबतीसौराग॥तेमंदरयालीपड्या॥बैसाणलागैका
 ३५॥कबीरठोलवसांसागडगडी॥सहनार्द्रसंगितैरिबे
 सरचलेबजाइकरि॥हैकौद्रल्यवैफैरि॥३६॥कबीरधे
 डाजीवणा॥मांडैमौतमंडाण॥सबहीउताबौडिगया
 एवरंकसुखतान॥३७॥कबीरयेकदिनअेसाहोइगा॥स
 बस्योपडैबिबौहरा॥जाराणाब्रजपति॥सावधाना
 कनहोइ॥३८॥कबीरऊजडयैडैवीकरी॥घडिघडिग
 याकुम्हार॥रावणासरीआचलिगया॥लंकाकासिक
 दार॥३९॥कबीरउंचामेदिरमालीया॥चूनेंकलीबुलाइ
 एकैहरिकानामविणि॥जदितदिप्रलेजाइ॥४०॥
 रकहाग्रबीयो॥इसजौवनकीआस॥कैसूसूल्याद्वि
 सहोइ॥अंयरनयेपलास॥४१॥कबीरकाहैग्रबीयो॥

ही दीव्य सुरा वा बडिया मलानाह जाका चलानेवा
 १७०॥ कबीरजिस यतिप्रातिन प्रेमरस फुतिरसनांन
 हिराम॥ तिनरयासेसारमें उपजियंयं वकाम १७ क
 बीरकहा प्रवीयो॥ चामलपटेहड हमती उपरिखत्र
 पति॥ तेनी देवायड १२ कबीरयो अंसासे सारहे न
 सासे बलफूल॥ द्योस चारिकापेयणां ऊवें रंगनभू
 ति॥ १३ कबीर धूलिसके लि करि सुड़ी जवा धोयह
 द्योस चारिकापेयणां अंतियेहकीयह १४ कबी
 ररातिगमाई सोइ करि॥ द्योसगमायोयाइ हीरका
 साजनमथा॥ कोडी बरलेजाइ १५ कबीरमादरना
 यका॥ जडीयाहीरो लाल द्योस चारिकापेयणां विन
 सिजाइगाकाहि १६ कबीर स्वपने रनिके उघडि॥
 आरेनेन॥ जीवपड्याबहो लूटिमें जागो तोले ननुदन
 १७॥ कबीर आजिक काल्हिक पंचदिन जगलहीइगा
 वास उपरि उपरि फिरेहगे डोरचरेहगे घास १८ क
 बीरमरेगे मरिजाहिगे॥ कोइ नलेगानां व ऊऊडो जाहि
 वसां हिगे॥ छाडिबसंतागाव १९ कबीरहाडबलेजे
 लकडो॥ केसबलेजे घास सबजुगजलता देधिकरि
 मया कबीर उदास॥ २०॥ कबीरकूकं हारा बाहिरो चिडी म
 यां यायोयेता॥ आधो प्रधो उबरे चेतिसके तोचेति २१
 कबीरजाह हमजाऐसेमुरे हमनी चलाहार हमनी
 पावै पुगडे॥ तिननी बांध्यातार २२ कबीरमाडविडा
 णीवापविड॥ हमनी लोगविडाह दरीयां करी नाक्यो
 संजोगे मितियाह॥ २३॥ कबीर देवलहाडका माटीताण
 वंधाण॥ यडहडीयां पावै नही देवलतणानीमाण २४

कबीरदेवतदह्यपडा ॥ ईदमईसैवार कोईचेजारावु
णिगया सोमित्याचहूजीवार ॥ २५ ॥ कबीररंमपियारावा
डिकरि करेअंनकाजाप ॥ बेसांकेरापूतज्यो ॥ कहेको
सोबाप ॥ २६ ॥ कबीरजिनहरिकीचोरीकरी ॥ गोएरंमगु
णहलि ॥ तेविधनांवागतिरची ॥ रहेअरधमुषकलि ॥
२७ ॥ कबीररंमनांमजाएणंनही ॥ याल्याकटुंक्कडुंक्क
धंधाहीमैबहिगया ॥ बाहरऊईनहूव ॥ २८ ॥ कबीररंम
हिजपिले ॥ वाडिजीवकीवांणि ॥ याडोसीमेंवाचिाईसो
आपणमैजाणि ॥ २९ ॥ कबीररंमनांमजाएणंनही ॥ केहेव
हीतअकाज ॥ वूडेलेरेबापडा ॥ बडाबूलांकीलाज ॥ ३० ॥ क
बीररंमनांमजाएणंनही ॥ मेलेचिंताबिसारि ॥ तेनरहा
बालदी ॥ सदापरएवारि ॥ ३१ ॥ कबीरअहिंथ्योसरचेत्यो
नहि ॥ पसुज्योपांतीदेह ॥ रामनांमजाएणंनही ॥ अतिपडी
मुयिषेह ॥ ३२ ॥ कबीररंमनांमजाएणंनही ॥ बातविनवी
मूलिहरितोइहांहीथोईया ॥ पडतपडीमुषधूलि ॥ ३३ ॥
कबीररंमनांमजाएणंनही ॥ लागीमीटीघोडि ॥ कायाइहां
डीकाठकी ॥ नाऊंचहेवहोडि ॥ ३४ ॥ कबीरयासंसारमैघ
णंमनियमतिहीण ॥ रामनांमजाएणंनही ॥ अएटायादी
ण ॥ ३५ ॥ कबीरआयाअणआयाऊवा ॥ नेवऊरतासंसा
र ॥ परोचुलावीगाफिला ॥ गयाकुबधीहारि ॥ ३६ ॥ कबीर
कहाकीयोहेमआइकरि ॥ कहांकरेगैजाइ ॥ इतकेतईन
उतके ॥ चालेमूलगमाई ॥ ३७ ॥ कबीरजगतजूठिमैरचि
रहा ॥ कूवाजमकीलाज ॥ तनबूलांकुलविनससीरतो
रंमजिहाज ॥ ३८ ॥ कबीरहरिकीमगतिविन ॥ धृगजीव
णसंसार ॥ धूवांकेराधीलहर ॥ जातनलावेवार ॥ ३९ ॥ कबी

डकबमिले। वरियडगाजाश॥४०॥ कबीरतरवरसोव
सुणोपातोकेवाता॥ हमतुमयेहपठंतराशिकश्रावत
कजात॥४१॥ कबीरमनियजनमडलंनहै। बहोरिनब
रवारतरवरसोफलकडियडे॥ बहोरिनलागीडारा॥४२॥
कबीरयातनकाचाकुंनहै। चोटचऊंदिसयाश॥ शिकेह
रिकानावबिणि॥ जहितदियलेजाश॥४३॥ कबीरतनते
काचाकुंनहै। लीयाफिरेथासाथि। तबकालागाफुटि
या॥ कछुनआयाहाथि॥४४॥ कबीरयोतनकाचाकुंन
है। साहिकरमांकीयोवास। कबीरैनेणनिहारीया। नही
जीवणकीआस।४५॥ कबीरयाणीहोदका। दियतगया
बिनाश। योहीजीवडाजाहिगा। दिनदसठेरीलाश॥४६॥
कबीरयऊतनजातहै। सकहत्तौवीहरलाश॥ कैसेवर
रिसाधकी। कैयागोबिंदकागाश॥४७॥ कबीरयऊत
नजातहै। सकहत्तौलेऊबहोडि॥ नागापावांतेसुजा॥
जिनकेलायकिरोडि॥४८॥ कबीरवासरिखयनरेनिसुय
नासुयस्वप्नांमोहि। जिनरविबडेरांमते॥ नासुयधूपनबा
हि॥४९॥ कबीरस्तताक्याकरो। काहेनदेथेजागि। जाका
संगतैबीबुडरा। ताहीकैसंगिलागि॥५०॥ कबीरअंतरिक
नबुरलीया। गारजितस्यासबताल। जिनतैगोबिंदबीब
॥ तिनकाकोणहैवाल॥५१॥ कबीरचकईबिबडारेनि
॥ आपमिलीप्रमाति। जिनरविबडारंमस्यो। तेद्योसमि
नराति॥५२॥ कबीरदीनगायाहुनीस्यो। हुनीनचाली
या। पाइकुहाडामारीया। गाफिलअपणोहाथि॥५३॥
रवातनबतमया। करमजमयाकन

॥३॥ कबीर रीति बंध बंध कूटें बा

प्रयनमास्या जाइ ॥ मूरिष बंध बंध नाडखा ॥ प्रयस

॥४॥ कबीर सोमण ह धका ॥ टय के कीया

बिनासा ॥ ह धफाटिकां जीऊ वा ॥ नया धिरत कां नाय

॥५॥ कबीर रीति पडे बासरि घटे ॥ बनि अधियारा होइ

लागिर हे फलां फलां ॥ पथन काटे कौइ ॥ ६ ॥ ८७ ॥ २८

साधकौ अंग ॥ कबीर निरबेरी निहकां मता ॥ सोई सेती

नेहा ॥ विषयासौ न्यारा रहै ॥ साधुका गुण एहा ॥ १॥ कबीर

संतन छाडे संतगी ॥ तावै कोटेक मिलौ असंत ॥ चंदन संव

गां बिधाय ॥ ती फूसी तलतानत जंत ॥ २॥ कबीर साधक ज

रीक पडी ॥ तामें मलन घटाइ ॥ साधित कां लीको मली ॥ ३

जावै तहां बिद्याइ ॥ ३॥ कबीर हासायि लहरं मदै ॥ जेज

नरतारं म ॥ माया मंदर असतरी ॥ तहां नहासा धकका

म ॥ ४॥ कबीर माति नरोसै रंमके ॥ निधडक उंची दीति

जिनको कालन लागी ॥ रंमग ह्यानि जपीम ॥ ५॥ कबी

र हीन गरीबी दीनको ॥ बंदर कौं अभिमान ॥ बंदर ही जि

गजां हीग ॥ हीन गरीबी रंम ॥ ६॥ कबीर हरिजन ऐसा

चाहिये ॥ जाके हिदे ग्यान विचार विबेक ॥ बाहिर मिल

तासौ मिलै ॥ अंतरि सबसौ ऐक ॥ ७॥ कबीर हमसौ स्वामी

मतिकहै ॥ हमहैं जीव विचारा ॥ स्वामी कहिये तासके

जाका तीनि लोक बिसतारा ॥ ८॥ कबीर हरिजनके उ

रमतिइती ॥ जेती जलमें साटा ॥ पलक ऐक न्यारार

बैबोही घाटा ॥ ९ ॥ ८६ ॥ २९ ॥ देया देयी कौ अंग

र देया देयी जगति का ॥ कदेन चरई रंग ॥

योबाहिमी ॥ ज्योकां नदी नवंग ॥ १॥ क

रिजाणीए मारी यों सें संग ॥ चार लीर लोई थई
 बाँडै रंग ॥ २ ॥ कबीर यऊ मन हीजे ता सकों ॥ जो समर
 साधु ही ॥ सिर उपरि आरास है ॥ कदैन द्वु जा हो ॥ ३ ॥
 कबीर या हण टांक न तो लिय ॥ हाडन कीजे बेह माया
 राता मोन डै ॥ तासों किसा सनेह ॥ ४ ॥ कबीर जासों प्रीति
 करि ॥ जो निरबाहे कौ डि ॥ विनता विविधिन राची ॥
 देखत लागे घौ डि ॥ ५ ॥ कबीर देखा देखा पाकडी ॥ गई
 अप्रवे बूटि ॥ चाल्या था हरि मिलण कों ॥ बीच ही तीय
 लूटि ॥ ६ ॥ कबीर एक कनक अरका मनी ॥ ऐलबी तस्
 रि ॥ चाल्या था हरि मिलण कों ॥ बीच ही तीया मारि ॥ ७ ॥
 ८ ॥ २३ ॥ ३० ॥ साध सायी हूत कों आगा ॥ कबीर का जल करी
 वीवरी ॥ तेसा यह सें मार ॥ बलिहारी तादास की ॥ ये सिर
 निक सणहार ॥ १ ॥ कबीर का जल हाकी कौ टडी ॥ का
 जल ही का कौ ट ॥ बलिहारी तादास की ॥ जैर हे रंग मकी
 वीट ॥ २ ॥ कबीर यांच बल दिया फिर कंडी ॥ उजड उज
 ड जाहि ॥ बलिहारी तादास ॥ एक डि ज आणें ता ॥ ३ ॥
 ३ ॥ कबीर हरिका सांव ॥ दीसं
 नउन मनो ॥

जीणं
 साय

रे

र
दि

कीसेवानां हि तेघरमरदृष्टारिया त्तबसैतामां हि
 २ कबीरहे गैमैगैसघनघन बत्रधजाफहराइ तसु
 घतैसियाचली हस्सिमरतदिनजाइ ॥ ३ कबीरधनि
 मातासुदरी जिनिजायबिसनौ सुत वैरंमसुमरिसदा
 तिसया सवजगयाअकत ४ कबीरकुलतोसोईत
 ला जाकुलिवयजेदास जाकुलदासनउपजे सोकुल
 लकंयलास ५ कबीरसलीतईजो सोमिया हूँकु
 लकीलाज वैषवाहीहोइरहा वैवैरंमजिहाज ६
 कबीरहरिजीकेतगी संवरनैसवदास जहाजहा
 जगतिनिरमला तहांतहंरंमनिवाय ७ कबीरीक
 ऐकसोंआगला साधूजनअपार कबीराकूंजाप्रेमका
 बीलेवारंबार ८ कबीरस्वपनेहीबरदाइकरि तैरक
 हैंगारंम ताकायगकीयांनही भरातनकाचाम ९
 कबीररंमकहैतेसबसला अपणीअपणीतोर जिनि
 रियांचोवसिकीरे तेमाथाकेमौर १० कबीरसाधुसिंध
 गति मांहिरचनपतिरंइ मदसागीमूठीसरे कंकरक
 रचलिजाइ ११ कबीरसाधितबांसणमतिभिलौ बिस
 नोंभिलौचिंडाल सणि जाणिकभिले
 गोपाल १२ कब शिरहीकेवे
 शिहीदासात
 सा
 १४

कबी नांव बूलनकी अमरा साधांकी छपरी मली ना
बतका गांवा ॥ १७ ॥ कबीर साधांकी छपरी मली नांसा

नांसा ॥ १८ ॥ कबीर रोगों वर सघन घना ॥ छत्रपत्ती की ना
॥ हरिजन की पणिहारि ॥ १९ ॥ कबी

कबीर गणी होत

८६५ ॥ २२ ॥ मध्यको अंग ॥ कबीर मर्ध अ
लागार है ॥ तोतिरतन लगे वारा ॥ होउ अंगों सो लागिक
॥ सुदत है संसार ॥ २३ ॥ कबीर डब

कबीर अतल अकासांघरकी या ॥ मधिनिरवरिवास बस
बाबो मधिगतार है ॥ विणिवाहर बिसवास ॥ २४ ॥ कबीर
वास रिंग मनरे निंगमा ॥ नां स्वयनांतरिगमा ॥ कबीर तहा

मुस्कै प्रसादि घर एक बलकी मोजमें रहिंयां आरि तरि
आदि ॥ २५ ॥ कबीर हां कहे तो बडु डरो ॥ मुसलमान नीत
शिपोवततका पूतला ॥ कोई गौबी धेले मां हि ॥ २६ ॥ कबीर
हैं इस्वारा मकहि ॥ मुसलमान न्युदाइ ॥ कबीर सोइ ज
सुवाइ के संगित जाइ ॥ २७ ॥ कबीर हलदी पीवरी चून

वचनमें दानया। वैठिकबीराजीस। १०। कबीर

आकासविचि। दोइतबडीअबध।

इया। अरुचौरसीसिध। ११। कबीरनिरतिसुरतिदोइ

तंबडी। जामणामरणअबध। षटदरसं

जेसमग्नातेसिध। १२। कबीरघरबनदोऊरीति

रचिनयाकेरंग। कबीरनाइबिलमीया। रसा

दंग। १३। कबीरनगरीचैनतब। जबाकराजीहोष

डराजीडुषदंसे। सुसीनदेयाकोइ। १४। कबीर

नलारोएकसो। तोनिरवाल्याजाइ। दकुंमु

णा। व्याइतमाचायाइ। १५। ८८०। ३३। विचारको

कबीररामरामसबकोकहे। तामेवकुतविचार। सोई

रामसतीकहे। सोईकोतिगाहार। १। कबीररामरामस

बकोकहे। तामेवकुतबबेक। ऐकअनेका

ऐकांपस्याएक। २। कबीरआगिकसांदाकेनहि। याव

नदीजेमांहि। जिप्रसेदनजाणीयां। रामकसोतोकां।

हि। ३। कबीरसोधिबिचारीया। इजाकोईतांहि। आ

पाप्रजबसेटीया। उलटिसमांणामांहि। ४। कबीरयांण

केरासूतला। राध्यापवंनसंचारि। नांनोवांणीबोलता। ५।

तिधरीकरतार। ५। कबीरआधीसाधीसिरकहे। जेरबिचा

रीजाइ। मनप्रतीतिनउयजे। तावेरातियोंसतरिगाइ। ६।

कबीरएकसबदमेसबकहा। सबहीअरथबिचार। त

जिऐकेवलरामको। तजिऐवियैविकार। ७। कबीरसोई

अधिरसोईबयांण। जनजूवाज्जवाचवंत। कोईकमेदेवे

लवणि। अमीमहारसकुंत। ८। कबीरहलादंगामे। लोग

कहेमलहल। केसमजवेरामजी। नहातरहूबेहल। ९।

कबीरवैमणसुत्तलजियाः कबीरघरिघरिबशिः ज्यं
 हसुलजायां वापडां ॥ जिनिजाणीं नगतिमुरारिः ॥ १७ ॥ क
 बीररंमनजो मनवसिकरे ॥ सबकाइहअरथा कहे
 कोपटियचिमरो कोटिक ग्यानगुंथा ॥ १८ ॥ कबीरके
 तोकोरातिलतला ॥ के लीजे तेलकटाश ॥ बिचिकागहन
 रकबनही ॥ दंडबांतां सौंजाश ॥ १९ ॥ कबीरजीवणात्ता
 सका ॥ जामुषिनिकसैरंम ॥ पीथिसवउडिजाहिगो ॥ ती
 हर्हि सौंकांम ॥ २० ॥ ८ ॥ ३ ॥ २४ ॥ सारग्याहीको अंग ॥
 कबीरसाधितकोनही ॥ सबैबैसनों जांणि ॥ तातनिदया
 नरंममूथि ॥ तोहीतनकी हांणि ॥ १ ॥ कबीरवहांतोस
 बोकेहैं ॥ यडदादीयातेथ ॥ जरमकरमसबहरिकशि ॥
 सबहीमाहिअलेषा ॥ २ ॥ कबीरघटिबधिकऊनदेथिऐ
 ब्रह्मसकलभरपूरि ॥ जिनिजांणोंतिनिनिकटिहैं ॥ हरि
 कहेतेहरि ॥ ३ ॥ कबीरयारब्रह्मसुत्तरनस्या ॥ लहस्यांवा
 रनयार ॥ साधिकबिणियालीनही ॥ सुईजितासंचार ॥ ४ ॥
 ॥ ८ ॥ ७ ॥ ३ ॥ ५ ॥ पीठपिठांहाणके अंग ॥ कबीरसायट
 माहिसंमाईयां ॥ सोसाहिवनहीहीश ॥ सकलमांडमें
 रभिरथा ॥ साहिवकहिऐसोश ॥ १ ॥ कबीररहेभिरालाम
 डसो ॥ सकलमांडतामां हि ॥ कबीरसेवेतासकी ॥ पूजासे
 वेनाहि ॥ २ ॥ कबीरजाकेमौहमांथानहि ॥ नाहीरूपअ
 रूप ॥ यडुपवासतेपतला ॥ असाततअनूप ॥ ३ ॥ कबीर
 साहिवबैकही ॥ पूजानाहीआश ॥ पूजासाहिवजेकहे
 तोवारबिटंबाजाश ॥ ४ ॥ कबीरसाहिवकहिऐएकही
 पूजाकहिऐनांहि ॥ पूजासाहिवजेकफूं ॥ दोसा
 ररसोहि ॥ ५ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥ बिसवासको अंगलि

कबीरजिननरहरिषिदप्रगाटकाया सिरजप्रवाण
 शागतदीस जिस्वाजीवमुयतामदीया उरधपावत्र
 १ मीम १ कबीररुयाचूयाकाकरे कहारसुणाबैलो
 ३ मादीघादिजानिमुधदीया भारप्रणजोम २ कबी
 उरचणहारकोचीन्हकवि सांबकोकारेद्र दिला
 दरमयोमकारे नाणियद्येवदीसाद्र ३ कबीररामना
 मकारेबोहना बाहीवीजअघाद्र प्रबलाकस्तकाय
 दे तोद्रनामरुफलजाद्र ४ कबीरचिंतामणिचिंता
 बंध मोईचितमग्राणि विणिचितचित्ताकरे इहप
 चकावाणि ५ कबीरमंकाचित्तकं भराचित्यानदी
 ६ भराचित्ताहाइकरे मामकचित्तनहाद्र ६ कबी
 रकरमकरीमालियगया अवकबलिय्यानहाद्र मा
 साघटनतिलबंध जभिरकूटकोद्र ७ कबीरकरम
 करीमालियरहा नरासरनागअताग जेबकचित्ता
 वितने तोद्रआगुआग ८ कबीरचिंतावादिअकिं
 रहो मोईहसमरुय यमयथेरुजीवजात तिनकीणा
 गोकिसीगए ९ कबीरहारजनगाविवनबीधद्र उद्र
 ममानानेद्र आंगयविहरिषदा जलमोगंतवरेद्र १०
 कबीरअडापानकाचिबी विणिचंणलावेपोय योक
 रतामपककरे पालेतीनोलोक ११ कबीरपरुफारीप
 गडीरुवा नाणिनोवाज्जुणि मवकाद्रकोदेतदे चीच
 मयाणिचूणि १२ कबीररामनामसोवियमिली जम
 मापविगय मोहिनगसाद्रएका बंदानरकिनजा
 ६ १३ कबीरसबभोजलीमधूकरी नातिनातिकाना
 न दावाकिसरुकानही विनिचितानवदराज १४

हे कबीर अहला गया ॥
 भागण मरण समान है ॥ विरला बचे को ॥ कहै कबीर
 रामस्यो ॥ मतिर मगावे मोहि ॥ १६ ॥ कबीर कं कलपिजर
 मन न वरा ॥ अरथ अहं यम वास ॥ रामनां म अमी सी ॥
 चो ॥ फल लो गै बिस वास ॥ १७ ॥ कबीर यद गा वै लो ली
 न कै कटी न सं सैया सि ॥ सबे पि चो ड्रा थो थरा ॥ बिना
 ऐक विस वास ॥ १८ ॥ कबीर जके हिर दे हरि वसे सो
 जन कल पै का ॥ एके लहर सम दक ॥ उष दालि डस
 व जाहि ॥ १९ ॥ कबीर गा वण ही में रो वण ॥ रो वण ही में
 गा एका बन में धर की या ॥ ए क धरि ही में बै रा गा ॥ २० ॥
 कबीर गा या ति निया या न ही ॥ अण गा ये तै हरि ॥ ज्या ह हरि
 गा या बिस वास्यो ॥ ता स्यो रं म ह जूरि ॥ २१ ॥ कबीर आ गे या
 बहे हरि षडा ॥ आय सं मा हां नार ॥ जन को ड धी के रं क रे
 सा हि ब सिर ज हा हार ॥ २२ ॥ कबीर आ सा को र्द धण क
 रू ॥ मन सा करू व भूति ॥ जोगी फेरी फिल क रू यो ॥ वणि
 न वे सूसा ॥ २३ ॥ कबीर सब जग निर धना ॥ धन वं तान ह
 की ॥ धन वं ता सो ॥ जोगि ए ॥ जा के रं म प दार थ हो ॥
 ॥ २४ ॥ कबीर सो र्द दी यां सह ज में ॥ सो र्द रिज क ह लाल ॥ हे
 वास ब हरं म हे ॥ तजि सं से जी व साल ॥ २५ ॥ कबीर बिस व
 सो हो ॥ हरि न जे ॥ तो लो हा कं च न हो ॥ राम न जे अनु रा
 र स्य ॥ हो णि हर य को यो ॥ २६ ॥ कबीर डो र लगी तो मि
 त्या ॥ म निया या बि श्राम ॥ मन च कुं ट्या रं म सो ॥ यो हा के
 क ल पां ता ॥ २७ ॥ कबीर सो दा की जे रं म स्यो ॥ सरि ए गं णि ह

बारदाणां पाण्डुरां मका योषे सब संसार जिनि ए
पणां जंणीयां तिनि सिरि बंधा नार ॥ २ ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥
धीरजी को ज्य ॥ कबीर च्चका हे डरे सिरिय सिरि
जनहार हसती चढि करि डौ लिसे कूकर चुसौ ह
र ॥ कबीर भैरे बैसि करि मोचक मनाहन जोइ बूढ
एका ते बाडि दे कर ता करै सहोइ ॥ २ ॥ कबीर हसती
चढि जे नके सह जडुली चाडारि कूकर रूपी जा
त है चूकि जावौ ऊषमारि ॥ ३ ॥ कबीर धार होइ धंम
कसहि ज्यो अहरणिय रिघाव ये म प्रबत होइ र है
तो पी चै काले बनयाव ॥ ४ ॥ ॥ ३४ ॥ ३८ ॥ विरक ताई को
॥ पासि विनया कायडा क देन सुरंगा होइ ॥ क
बीरै त्यागी मूव करि कनक का मणी होइ ॥ १ ॥ कबीर
चित्त चितन में प्र कर है जागिन देखी मित्त कित कि
तकी सलिया डीये गल बल सह र अनंत ॥ २ ॥ कबी
र बाजा देव जंत डी कलि जंत डी न छेडि तुकि बि
णी काय डी त्त आयणी निवेडि ॥ ३ ॥ कबीर जाता है सो
जाण दे तेरी दसान जाइ दरीया केरी नाव ज्यो पा
णां मिले गा आइ ॥ ४ ॥ कबीर नीर पि लावत का करै
सायर घरि घरि बारि जो त्रिया वंत होइ ॥ ५ ॥ यो धै गा
षमारि ॥ ५ ॥ कबीर सब जग देयीया मंदल कं धि च
इ कोई का हूकान हा सब देष्या वो किब जाइ ॥ ६ ॥ क
बीर में डनीयां के कु ब नही डनियां मेरे अक थ सा
हि ब दरि देषो यडा डनीयां दो जिग जत ॥ ७ ॥ कबीर
नय स्यापणि बिस स्या नही तीनी सरणां का हि पह
लायाइ उया लिया सो फि रिषां णां नाहि ॥ ८ ॥ कबीर

राम बनावे काम है। बयन भोग विलास। कही इंद्र
 बेसोणी। कहां बेकुंवावास ॥ १७ ॥ कबीर मेरामन मेय
 डिगरी। त्रैसी एक दरारु। फाटा फटक यथा एज्यो। वि
 ल्यान पूजी वार ॥ १० ॥ कबीर मन फाटा बाइ कबुरा। वि
 टासा इसाक। जोये पूधीत वासका। उकटि फुवात्र
 का ॥ ११ ॥ कबीर चंदण नामो गुण करे। जैसे चोलीयान
 दोइ जन सागाना मिले। ऐक मोती अरमान ॥ १२ ॥ क
 बीर मोती सागो बीधता। कोई मन मेव स्या कबोल। ब
 हीत सयाणाय विगया। यडिगई गांठिन थालि ॥ १३ ॥
 कबीर चीटी चावल ले चली। विचिमें मिलिगई दारि ॥
 दोनो कदेन चालिसी। ऐके ले ऐक डारि ॥ १४ ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥ समर थारु को अंग ॥ कबीर नाक बकी यान कारस
 क्या ॥ ना करण जो गिसरीर ॥ जो कुबकी या सहरिकी या
 ताते स्या कबीर कबीर ॥ १७ ॥ कबीर की या कबून होत है
 अणकी या ही होइ ॥ जो कुबकी या होत है ॥ जाका कर
 ता औरै कोइ ॥ १८ ॥ कबीर जिसेन कोई तिसत् ॥ जिसत्
 तिस सबकोइ दरगह तैरी साईया ॥ नाम हरून हो
 ॥ १९ ॥ कबीर एक खडा हीनाल है। ऐक खडा ही बिल
 गइ ॥ समरथ मेरा साईया ॥ सूता देइ जगाइ ॥ ध क
 रीर अंबरुण धरती के कागद कस्तू। लैषण सब बण
 इ ॥ सात समंद की मसिकरू ॥ तो हरि गुण लिख्यान
 गइ ॥ २० ॥ कबीर अवरण को कहा वरणे
 गन जाइ ॥ अवरण वरणो बाहिरो ॥ करिक
 गइ ॥ २१ ॥ कबीर मुकमें इतनी क्या सकति
 पसारि ॥ बेदो नै इतनी घणीय

डिखवै असमान जहिं सरम डल नै दीया सो सरलागे
कांति ॥१०॥ कबीर लागी लागी क्या करे लागी नही लागी
र लागी जबही जांणिए नीसरि जाइ दुसार ॥११॥ ॐ ॐ ॐ
॥४३॥ करम कौ अंग ॥ कबीर करम कडी सजडी जड
पडि गई जां टअपार ॥ अनेक लुहराय विगया उर
नां हिलगार ॥ १ कबीर कै याये ती कियो एजीष ॥ याप
निदोइ बीवा बासो लुणजे आपणो ॥ कांइ कसु कै जी
वा ॥ २ कबीर देखै ती दिन कं मरा ॥ सुकत बीज सुफल
जही जहां कर काठे कीये ॥ तहां तहां रहि गई तल
कबीर मोह ऊटी मै जुग जडा ॥ करम किंवा डी बारि ॥
कोई ऐक हरि जन उवस्या ॥ बूटां राम पुकारि ॥ ४ ॥ १००
२ ॥ ४३ ॥ काव कौ अंग लिख्ये ॥ कबीर कहा प्रबीयो ॥ का
लाग्यो कर केस कहा जाणो ॥ कहां मारि सी ॥ कै घर के प्र
देसि ॥ १ कबीर गुवा सुय कौ सुय कहे ॥ माने हे मन मो
द ॥ जगत चबीणा काल का ॥ कबु सुय मै ऊब गोद ॥ २ क
बीर आज क कालि कयंच दिन ॥ मारग मालुंता ॥ काल
सिचाणो नर चिडे ॥ ओं कडु ओ चंता ॥ ३ कबीर काला
सचाणो नर चिडे ॥ तू जागियारि भिंत ॥ राम संतै ह
हिरी ॥ तू कौ सो वेन चिंत ॥ ४ कबीर सब जगस्तान
दसरि ॥ मुकिन अवे नीद ॥ काल घडा सिर उये ॥ जौ ती
रण उभा बीद ॥ ५ कबीर पाप पलक की सुधिन ही ॥ क
रे कालिह कासाज ॥ काल अचानक मारि सी ॥ ज्यो ती तर
कौ वाज ॥ ६ कबीर टगट गदेयता ॥ पलपल गई
जीव जं जाला पडि गया ॥ जम दीया दमो मा आइ ॥ ७ ॥
कबीर सूता क्या करे ॥ गण गोविंद कणाइ तैरे

नमयडा। अरचक देकाया ॥ ७ ॥ कबीर लूटिसके ताल
 टिरो। रामनाम मंत्र डार। कालकंठ तैंगहेगा। रोकेगा दसो
 दार। ८ ॥ कबीरमें अकेला वैशे दो जन। छेतीनां हाका ५
 जेजम अगोउबरु। तो जुराय कुंचै आ ॥ १० ॥ कबीर जु
 राकती जीवानसुसो। कालअहेडी लारअवके छिनमें
 पकडिहै। गारव्योकहांगवार। ११ ॥ कबीर कालहमा
 रेसंगारहै। किसी जीवणकी आसा। दिनदशरामसं
 नातिले। अबलगापिंजरिसास। १२ ॥ कबीर वारीवारी
 आपणी। चलेपियारेमिंत। तेरीवारी जीवडा। नैडाआ
 वेमिति। १३ ॥ कबीर आउपहरयोहागया। मोहकेआ
 जिलजंजलि। रामनामहिरदेनही। जीतिलोयाजंमका
 लि। १४ ॥ कबीर यंथीउनायंथसिरि। दुगचवांधायीव
 मरणमकुंआगेषडा। जीवणकासबकुं। १५ ॥ कबी
 रमालीआवंतदेधिकरि। कलीयां करीपुकार। झुली
 फूलीचुंणिलद्रा। कालिहमारीवार। १६ ॥ कबीर देधि
 कंबडा आवंता। तरवरडोलगालग। हंसपडियात्तौक
 वनही। पंघेरुंघरभंग। १७ ॥ कबीर फगणअवंतदेधि
 करि। वनरुंनौमनमांहि। कंचीडालीयात्तहे। दिनदि
 नपीलोयांहि। १८ ॥ कबीर निधइकबेगारंमविनि।
 धेतिरुकरोपुकार। यकुतनजलकाबुहडुदा। जात
 नसवैवार। १९ ॥ कबीरयांणीकेरुदुदुदा। तैसीहै
 मारीजाति। देषतहै। छियजोहिगू। जौंतीर।

चायापारधी। लेगयासबेउडा ॥ २० ॥ कबीर
 हिंजुकनी। दोवाकीसीजीवि

का तो घर की छोति ॥ २२ ॥ कबीर यद देर हृती पदम
 एणी करती कुलकी काणि ॥ छडी य ऊंती रं मकी ॥ तब
 आइ सई मैदां नि ॥ २३ ॥ कबीर कहा चिणा वै मालीया
 लांबी नीति उ सारि ॥ घर तो साटा ती निहा थ ॥ घणो तो
 पोणा आरि ॥ २४ ॥ कबीर यां च तत कायू तला ॥ माणस
 धरीया नां व ॥ दिनां दऊ के कारणों ॥ फिरि फिरि रै के त
 व ॥ २५ ॥ कबीर मं बली सह बूटे नही ॥ की वर म हारा का
 ल ॥ जहिं जहिं डा बरि घर क ह ॥ तहिं तहिं र लै जाल ॥ २६ ॥
 कबीर यांणी मां हली मं बली ॥ क्यो ते य क डी तीर ॥ की
 थु डकी कालकी ॥ आइ य ऊंता कीर ॥ २७ ॥ कबीर हे म रि
 हींणी मं बली ॥ कर यिन स की यरी र ॥ यो सर व स्ये यो
 नही ॥ जहं जाल न काल न कीर ॥ २८ ॥ दिन दिन बौ डी
 जात है ॥ तासों कि सा सं ने ह ॥ जन कबीर ड ह क्या घा
 गुण माया गं दी देह ॥ २९ ॥ कबीर मं बली त्म म रि जा हिं
 यांणी त ए प या लि ॥ बी धि य डै गा बा हिं ला ॥ सक ह तै स
 म द सं ता लि ॥ ३० ॥ कबीर इ ह अ ता गी मं बली ॥ बी ल र म
 डी आ लि ॥ डा बरी यां बूटे न ही ॥ सक ह तौरं म सं ता लि ॥
 ३१ ॥ कबीर मं बलि बि कं ता दे यी या ॥ की वर के दर बा रि
 आं थ डी यां र त नां ली यां ॥ तु म क्यो बंधी जा लि ॥ ३२ ॥ कबी
 र सू क ण ला गौ के व डो त्प टी अ र ह ट मा ल ॥ यांणी की क
 लि जा णि ता ॥ म ए ज सी च ण हार ॥ ३३ ॥ कबीर ध व णि ध
 वं ती र ह ग र्द ॥ ज व ग वि ग ड लु हार ॥
 क ड ग ॥ त ब वू जि ग ए अ गार ॥ ३४ ॥ कबीर
 इ ण ह रि या लै मा लै ॥ ला य अ ह डी एक जी व ॥ कि
 लों ता लि ॥ ३५ ॥ कबीर रं म क हा ति नि क हि ली या ॥

कबीरविश्यांबीतीबलघट्या॥ कैसयलटित
 याओरा॥ विगंडाकाजनसुधरे॥ करबूटांकिविवीर
 २७॥ कबीरहरिसौहेतिकरि॥ कूडाचितनलावा॥
 बांधाबारिकवीकके॥ त्यांहयसुकितेकआवा॥ ३८
 कबीरकाचीकायामनअथिरा॥ थिरथिरकांमकर
 ता॥ जिमजिमनरनिधडकफिरे॥ तिमतिमकालहंस
 ता॥ ३९॥ कबीरसबसुधरांमहे॥ अवरसबदुयकीरा॥
 सि॥ सुरनरमुनिजनअसुरअहि॥ सबेकालकीयास
 ४०॥ कबीरकाल्हिकरिताअजिकरि॥ आजिकरंता
 ताका॥ आजिकाल्हिकरंतडां॥ आइयकुंताकाल॥ ४१
 कबीरजालाहारेतीमुण॥ मुणजलोवणहाराहाहा
 करतेतेमुण॥ कास्योकरेपुकार॥ ४२॥ कबीरठाले
 दोहेदिनाया॥ ब्याजबधतोजाइनांहरितज्यानय
 सकत्या॥ जरपुकुंतीआइ॥ ४३॥ कबीरज्योकोलीबेजी
 बुणें॥ बुणतोआवेवोड॥ असाभरोसामीचका॥ जीव
 डादोडिसकेतीदोडि॥ ४४॥ कबीरपगडिदरिहे॥
 बीबिपडीहेरति॥ नांजाणोकाहोइगा॥ अंतैप्रसाति
 ४५॥ कबीरसूताक्याकरे॥ सूतांहोइअकाज॥ ब्रह्मा
 काअसणडिगा॥ सुणतकालकीगाज॥ ४६॥ कबीर
 मैजाणथायांऊंगा॥ भोतजिमीकामाल॥ जहंका
 थासहंहरहा॥ एकडिलेगायाकाल॥ ४७॥ कबीरम
 यासांभेसंगहकरे॥ वोहदिनजाणोनांहि॥ संहंसबर
 सकीसोजकरि॥ मरेसकुरतिमांहि॥ ४८॥ कबीरच
 ऊंदिशिवकाकोटथा॥ मंदरकोटमंजारी॥ ४९॥

कीषिडकीयाहसं॥ राजबेधेहरवारि॥ ४७॥ कबीरच
 होदिमिजोधाषड॥ हाथिलायां हथियार॥ जामेंइत
 नां देयतां॥ एकडिचेगयाकाल॥ ५०॥ कबीरदौकी
 धीलकडी॥ घटीकरेयुकार॥ मतिबसिपडौलुहर
 के॥ मोहिजालेइजीवार॥ ५१॥ कबीरमेराबीरबुहा
 रीया॥ तमतिजालेमोहि॥ ऐकदिनत्रैसाहोइगा॥ होपि
 रिजालौतौहि॥ ५२॥ कबीरकुलचीटीकानालज्यो॥
 पड्ग्राकैरीमोहि॥ कोईगुरक्रियायोंउबरै॥ ताकौका
 लनयाइ॥ ५३॥ १०५६॥ ४३॥ सजीवनितौअंग॥ जुर
 मीचब्यापेनहि॥ मूत्रानसुणिएकौइ॥ चलि कबीरउ
 सदेसडे॥ जहांबेदविधाताहोइ॥ कबीरचोयागते
 योरहे॥ जौजलतेंकदमनिगल॥ मनवांतहांलेरा॥
 यिए॥ जहांचुरांमीचनहिकल॥ २॥ कबीरजोगी॥
 वनिबस्या॥ येणियायाकंदमूल॥ नांजाणोंकिसज
 डितै॥ अमरतयाअस्थूल॥ ३॥ कबीरहरिचरणंचि
 तचऊंठीया॥ मायास्योमनटटि॥ गिगनिमंडलआस
 एकीया॥ कालचल्यासिरिकैटि॥ ४॥ कबीरमनती
 याकीया॥ बिरहलीयाशुरसोण॥ चितचरणंसौच
 ऊंठीया॥ तबनहीकालकायांण॥ ५॥ कबीरकाचीक
 रीमतिकरै॥ दिनिदिनिबधैबियाधि॥ रंमकबीरसुवि
 नई॥ याहीअोयधिसाधि॥ ६॥ कबीररंमनांमकीवोय
 दी॥ कोटिककटेविकार॥ बिषबाडीबिरकतरहे॥
 तोकायाकंचनसार॥ ७॥ कबीररंमनांमकीवोयदी॥
 सतगुरदर्खताइ॥ वोयदियाइरपिबिरहे॥ ताकबि
 दनिजाइ॥ ८॥ कबीरयावोयदिआगालरू॥ अनेकउ

ये

धरी देह को ईरेक फेर कय बका नही तर ओय दिहो
ह ॥७॥ कबीर बेद बुलाईया ॥ एक डि दियार् ईवां हावे
हनि बेदन जा एही ॥ करक कले जा मां हि ॥१०॥ कबीर
बेद जा ऊ घरि आपणै ॥ तेरा की आन होइ ॥ जिनया बे
द नितर मई ॥ जल करै गा सोइ ॥११॥ कबीर मनवां
प्रयादिसं तरी ॥ बोले बचन रसाले ॥ जासद सावर की
कहै ॥ जहां नही जंम काल ॥१२॥ कबीर असी तीयी
स्वरति है ॥ फो डि गई ब्रह्मंड ॥ अलख निरालाये यीया
सात दीपन वं ड ॥१३॥ कबीर सूली उपघर कीया ॥ वि
यका करूं अहार ॥ जंम विचार क्य करे ॥ आवपह स
सीयार ॥१४॥ १०७० ॥ ४४ ॥ सायी नूत को अंग ॥ कबीर
बैवे रंम को ॥ सकल नवं नयति राइ ॥ सब ही करि अल
गार हो ॥ सो विधि यै हवताइ ॥१॥ कबीर जहिं विरीयां
साई मिले ॥ तासनि जाणै ओर ॥ सब कूं सुयदे सब दक
रि ॥ अयणी अयणी ओर ॥२॥ कबीर पारस सूयी रंम है
तो हा रूयी जीव ॥ जब जाइ पारस तेटीया ॥ तब जाई हो
सी सीव ॥३॥ कबीर दया कौण परकी जिणे ॥ काये निरं दे
है ॥ हम तो सयात्त मास गीर ॥ नाटक बाजी जोइ ॥४॥
॥१०७४॥ ४५ ॥ चित कपटी को अंग ॥ कबीर जहां न जा
रे ॥ जहां कपट का हेत ॥ बालू कली कनीर की ॥ तन रत
मन सेत ॥१॥ कबीर नवाणी नयां तो का सया ॥ सूधा चि
चन त्यां ह ॥ पारधियां पूणी नवाणी ॥ मिर घाटूक तां ह
॥२॥ कबीर संसारी सायित नला ॥ कंवारी के सांश बेस
नो अरु किम चारणी ॥ हरि जनता के निकटिन जाइ
॥३॥ कबीर जहां न जाई रे ॥ जहां न चौया चित ॥ प्रपुग

अत्रगुणघणां मङ्गलाउपरिमिग ॥ ४ ॥ कबीरतहं
 जाईये ॥ जहांकपटकाहेत ॥ आगेतलेपीबेबुरा ॥ ति
 कात्यागसंग ॥ ५ ॥ कबीरतहंनजाईये ॥ जहांकप
 काहेत ॥ नौमणबीधेवौरीया ॥ सूकारहिगयावेत
 ॥ ६ ॥ कबीरजहांनजाईये ॥ तहंजनांनानाव ॥ लमो
 हीफलऊडिपडै ॥ बजेकोईकुबाव ॥ ७ ॥ १०८ ॥ ४६ ॥
 गुरसिधहेराकोहोगा ॥ कबीरअैसाकोईनामिलै ॥
 सौरहुरैलागि ॥ सबजुगदीसैदाऊता ॥ अयाणीअया
 आगि ॥ १ ॥ कबीरअैसाकोईनामिलै ॥ हंमकोंदेअपदे
 स ॥ सवसायमेंडवतां ॥ करगहकाठैकेस ॥ २ ॥ कबीरअै
 साकोईनामिलै ॥ रामतगसिकामीत ॥ तनमनसोपे
 मिरघज्यो ॥ सुणोबधिककागीत ॥ ३ ॥ कबीरअैसाकोई
 नांमिलै ॥ हंमकोंलेइपिबाणि ॥ अयाणाकरिकेयाकडे
 लेउतारैमंदांनि ॥ ४ ॥ कबीरअैसाकोईनांमिलै ॥ संममें
 सैणसुजाणा ॥ टोलांजागांनसुणो ॥ सुरतिविङ्गणाकंस
 ॥ ५ ॥ कबीरअैसाकोईनांमिलै ॥ अयाणाघरदेयजलाइ
 यांचौलडकापटकिकरि ॥ रहैरामत्योल्याइ ॥ ६ ॥ कबी
 रअैसाकोईनांमिलै ॥ जासोकाहोनिसेक ॥ जासोहिरदा
 कीकहै ॥ सोफिरिमांडैकंक ॥ ७ ॥ कबीरअैसाकोईनां
 ले ॥ सबविधिदेइवताइ ॥ सुनिमंडलमेंपुरसहै ॥ तहं
 रहैलोलाइ ॥ ८ ॥ कबीरतीनिसनेहीबडुमिलै ॥ चौथाभि
 लैनकोइ ॥ सबेपियारैरामके ॥ सबेपियारैरामके ॥ वैवे
 प्रबसिहोइ ॥ ९ ॥ कबीरजुगदेयतहंमजाहिगे ॥ हंम
 देयतजुगजाहि ॥ अैसाकोईनांमिलै ॥ पकडिबुडाके
 हि ॥ १० ॥ कबीरसारासूराबडुमिलै ॥ घाइलमिलैनक

॥ श्रीगुरुदेव... ॥
॥ कबीर प्रेम... ॥
॥ माको प्रेम... ॥
॥ कबीर प्रेम... ॥
॥ कोइनां मिलै... ॥

॥ आवे कूडा बैणा... ॥
॥ मिलै साई हंदासै... ॥
॥ तैसा मिलेन कोइ... ॥
॥ नकोइ... ॥
॥ कोइ तत बैता... ॥
॥ ११६॥ १०९॥ ४॥ ॥
॥ कामोदना... ॥
॥ ताही कै पास... ॥

॥ एरके सुत घड़ी... ॥
॥ हरि वंशने... ॥
॥ ४... ॥
॥ ५... ॥
॥ ६... ॥
॥ ७... ॥
॥ ८... ॥
॥ ९... ॥

॥ अमक... ॥
॥ जल... ॥
॥ इण... ॥
॥ ए... ॥

कबीर किस तूरी कुंडल बसे ॥ भिर घटं ठै बत माहि ॥
असंघटि घटि रंग मजी ॥ ५ ॥ नियां देखे नां हि ॥ १ ॥ कबीर
देखे कोई संत जन ॥ पांचों अके हाथि ॥ यों चौं जाके
बसिन ही ॥ ताहरि संगिन साथि ॥ २ ॥ कबीर सोई स
धज मूरिवा ॥ जिनियां चौं राया चूरि ॥ जिन कायां न
मोक ल्या ॥ तिन सो साहि ब पूरि ॥ ३ ॥ कबीर सो साहि
ब मन में बसे ॥ सर मन जाणें तास ॥ किस तू स्या का
रघ ज्यो ॥ फिरि फिरि सूं घे घास ॥ ४ ॥ कबीर ज्यो नै नां
पूतली ॥ त्यो या लिक घट मां हि ॥ मूरि य लो गन जां ए
ही ॥ बाहरि हुं टा जां हि ॥ ५ ॥ कबीर यो जी रा म का
या ज सिं घ ल दो प ॥ रां म तो घट मै र स्या ॥ जे म नि आवे प्र
तीति ॥ ६ ॥ कबीर में जाणें हरि पूरि हे ॥ हरि सकल र स
नर पूरि ॥ अया जाणें बाहिरा ॥ नै डाही तै हरि ॥ ७ ॥ क
बीर ब हो त न र मी यां ॥ मन में तो त बिरां म ॥ घूंट त नै त
जुग फिसा ॥ तन के कौ लें रां म ॥ ८ ॥ कबीर तन के कौ लें
रां म हे ॥ प्रबत मै रे नां ॥ सत पर मिलि प्रचा ड वा त
बया या घट ही मां हि ॥ ९ ॥ कबीर रां म नां म ति कुं लोक
में ॥ सकल र स्या नर पूरि ॥ जिन जाणें ति नि नि क टि हे
हरि क हे तै हरि ॥ १० ॥ कबीर मै रां म मुं क मै ॥ ज्यो फूल
न मै बास ॥ मूर घ लो क गन जां ए ही ॥ फिरि फिरि हुं टे घा
स ॥ ११ ॥ कबीर किस तूरी कुंडल बसे ॥ नां तिकं बल ह
रि नां व ॥ नर हुं टे पावे न ही ॥ मूर वि नि ता कुं तां व ॥ १२ ॥
कबीर जा कारे णि ज ग हं टिया ॥ सो तो घट ही मां हि ॥ प
ड दा ही या नर म का ॥ ता तै सू के नां हि ॥ १३ ॥ कबीर रां म
ते घट मै र स्या ॥ पड दा प ल क दि वा ॥ ते रां म मुं क मै

नंतकाहेकोजाइ॥१४॥१११ए॥४ए॥वीनतीको
 ॥१॥कबीरभूलिविगाडीया॥करिकरिमैलाचित
 ॥स्वप्रवाचाहीऐनफरविगाडेनिति॥१॥कबीरअ
 गुणकीयातोबक्रकीया॥कृतनमातीहारि॥जावेव
 ॥बाफसिऐ॥जावेगरदनिमारि॥१॥कबीरअंगुण
 हेकीया॥तुमहितकरनारोसा॥साहिवसमाईकाध
 ॥बंदीसंसबदोसा॥१॥कबीरसाईकेरवहीतगुण॥अ
 मगणकोईनाहि॥जेदिलयोजोआपणी॥तोसबअव
 एमुक्तिमाहि॥४॥कबीरअपरबीताअलपतन॥पाव
 ॥सापरदेसि॥कलंकउतारोरामजी॥जानीसरमअदे
 सा॥५॥कबीरकरनेवीनती॥नीसागरकेताश्रवदेगु
 रिजेरहीतहे॥जमकोवरजिगुसाई॥६॥कबीरतेरेज
 रतनुपमहे॥पेराहोइअकाज॥विडदत्तुमारोरामजी
 सरणिपद्मकीलाज॥७॥कबीरभेरासनहेतुजसो॥जे
 तिरामुजसोहे॥अहरणितातालोहजो॥संघिनलय
 ईकोश॥८॥कबीरमुक्तिअंगुणतुक्तिगुण॥तुक्तिगुणअ
 गुणमुक्त॥जेहंविस्मरंतुक्तिको॥तोतूनविसारीमुक्ति॥
 ९॥कबीरतुक्तिविसासक्योंबएण॥मकासरेणाईजाव
 सोबिरंचिमुनिनारदादि॥इनकेहिरदेनसंसावा॥१०॥
 कबीरनेनहमारेलोतीया॥द्विनिचिनिचाहंतुक्ति॥हे
 मसेवमकोवहीतहे॥तुमयेहंमकोकिति॥११॥कबीर
 हंमअपरधीजनमके॥नयसयसरविकारदयाकर
 उमरामजी॥तोहंमउत्तरेपार॥१२॥कबीरसाईमरसाव
 धानमेंहानऐअचेता॥मनवचक्रमनहरिसजा॥चांते
 निरफसयेत॥१३॥कबीरनाप्रतीचिनप्रसरस॥

चतुर्भुजं नां जाणौं उपपीवसौं क्यौं करि रहेंग
 १४ कबीर अंतर जांमी ऐकतु आत्मके आधार जे
 उमबा डोहायस्यो ॥ दो कौं एउत रै पार ॥ १५ कबीर
 जब समजात बसुल किया सुल किसमाण सां हि
 जब लग कबु कहं वंता तब लग समजा नां हि ॥ १६
 १२२५ ॥ ५० ॥ जीवत मृतक कौं अंग ॥ कबीर जीवत मृत
 ग करे है तजे जगत की आस ॥ संगि लागा सां ई फिरे
 मति दुषया वेदास ॥ १ कबीर स्वयं सोठी रांमकी ॥ ये
 टिके नको ॥ रांमक सोठी जो टिके ॥ जो मर जीव है
 २ मरता मरता सब मूवा ॥ ओसरि मूवान को ॥ दास
 कबीर यो मूवा ॥ ज्यो बड रिन मरण है ॥ ३ कबीर
 जीवण सो मरण चल ॥ जे मरि जाणो को ॥ मरण पद
 लीजे मरे ॥ तो कलि अजरा वर है ॥ ४ कबीर मन
 मनसा मूर्ख ॥ अकं गद सब दूटि ॥ गिग निमंडल आसण
 कीया ॥ काल चल्य सिर कूटि ॥ ५ कबीर आपा मै त्याह
 मिले ॥ हरि मै त्या सब जा ॥ अकथ कहोणी प्रेमकी ॥
 त्यानको पतियाय ॥ ६ कबीर जामरणो जगडरे
 सो मैरे आनंद ॥ कदि मरिहो कदि नेटिहो ॥ मरण प्र
 नंद ॥ ७ कबीर चैरा संतका ॥ दासां का प्रदास ॥ अब
 ऐसे होइ रहो ॥ ज्यो पावांत लिघास ॥ ८ कबीर नि
 सां वां बहि जाहि ॥ जाके थांती नांही को ॥ दीता
 बीबदगी ॥ करता है ॥ स होइ ॥ ९ कबीर जेर नवें सो
 पको ॥ प्रको नवें नको ॥ घालिन राजू तो लिये ॥ नवें
 नासा होइ ॥ १० कबीर नीचां कुंवा निरा नका ॥ नवें
 बिरला को ॥ हरि ही राहा जरि थका ॥ लहे सनी चा

३॥१॥ कबीर रोडा होइर हो वाटका ॥ तजिया बंड अ
जिमाना ॥ कांमूको धतिसनांतजे ॥ ताहि

॥ जिसी जिमा कीयेहा ॥१३॥

नया तो क्या नया ॥ ताता सीला होइ ॥ हरिजन असा च
हिए ॥ जैसा हरि ही होइ ॥१५॥ कबीर हरि नया तो क्या
नया ॥ हरि तें सब कुछ होइ ॥ हरि तें न असा चाहिए ॥ ह
रि न जि निरमल होइ ॥१६॥ कबीर मोती नीय जे ॥ सीय
संभरं मां हि ॥ कोइ मरजी वा का टिसी ॥ हुजां की गमनां
हि ॥१७॥ कबीर हरि हर क्योया ईये ॥ जीवण जीवकी ॥
आसा ॥ रीया मां सो का टिसी ॥ कोइ मरजी वा दास ॥१८॥
कबीर ऊंचा तरवर गिगनि फल ॥ विरलाय यीयाइ ॥ इ
सफल को सोई तये ॥ जीवत डामरि जाइ ॥१९॥ कबीर ज
बलगा आस सरीरकी ॥ निरनेरु वानजाइ ॥ काया माय
मां तजि ॥ धौ डेर है बजाइ ॥२०॥ कबीर मो मरणों का
चाव है ॥ मरूं तो रंमइ वारि ॥ मति हरि सुखे वातडी ॥ के
ईहास मूवा दरवारि ॥२१॥ कबीर मो मरणों का चाव है
मरूं तो रंमइ वारि ॥ केतन का कटका करूं ॥ केले उत
रूं पारि ॥२२॥ कबीर मूवा को क्यो ईये ॥ जो अपणें ध
रि जाइ ॥ बदिपडे को रोईये ॥ जो हाटों हाटि बिकाइ ॥
॥२३॥ कबीर सुनिस है जमैया ईये ॥ तहां मरजी वा मन
कबीर रा चुणि चुणि लगाया ॥ नीतरि रंमरतन ॥२४॥
कबीर मरि मडहट बासा कीया ॥ करूं न सुखी सार ॥

इमिरतसहस्रपारगाहिकविनांननीसरे माणक
 कनकऊठार ॥ कबीरहरिहीरामनमडहटाप
 टाणपाणसुघटगाहिकविनांनयोलीरे हीरंकेर
 हट ॥ १० ॥ कबीरएकबारप्रथमिनांऊठारबारबास्ते
 हकिरेकरिजेबाणेंसोबार ॥ ११ ॥ कबीररामरतनध
 कोथलीगाहिकविनांनयोलीजवरमिलेगापारव
 लेगामहिगेमौलि ॥ १२ ॥ कबीरहरिमोतिनकीमालसे
 योईकचेवागिजतनकरेकीटाघणां ॥ १३ ॥ कबीर
 लागि ॥ १४ ॥ कबीरहंसातोमहराणको ॥ १५ ॥ कबीर
 याहबुगलौकरिकरिमारीयो ॥ १६ ॥ कबीर
 ह ॥ १७ ॥ कबीरहंसबुगांकेयाऊंणा ॥ १८ ॥ कबीर
 रिबुगलाकहागरबीयो ॥ १९ ॥ कबीर
 ॥ २० ॥ कबीरनिदककोयोग ॥ २१ ॥ कबीरलोगविचारनिद
 है ॥ २२ ॥ कबीरनिदकनयायागपांनरांमनांमजाणेंनही ॥ २३ ॥ कबीर
 नहीआंनही ॥ २४ ॥ कबीरदोषपरयोदेषिकरिचलेह
 संतहसंत ॥ २५ ॥ कबीरअपणाचितनआवही ॥ २६ ॥ कबीर
 अंति ॥ २७ ॥ कबीरघासननीदरे ॥ २८ ॥ कबीर
 गडिरपडेगाआंमिमें ॥ २९ ॥ कबीर
 पणयोनसराहिये ॥ ३० ॥ कबीर
 हडा ॥ ३१ ॥ कबीरकहाजाणेंकहाहोइ ॥ ३२ ॥ कबीर
 सराहिये ॥ ३३ ॥ कबीरओरनकहोरंक ॥ ३४ ॥ कबीर
 लि ॥ ३५ ॥ कबीरकहाहोइकरंक ॥ ३६ ॥ कबीर
 नवगिऐकोइ ॥ ३७ ॥ कबीरआपवगपांसुघनयजे ॥ ३८ ॥ कबीर
 होइ ॥ ३९ ॥ कबीरबुराबुरासबकोकहे ॥ ४० ॥ कबीर
 ॥ ४१ ॥ कबीरअदिलयोजोआपणा ॥ ४२ ॥ कबीर
 ॥ ४३ ॥ कबीरसुऊसाबुरानकोइ ॥ ४४ ॥ कबीर

॥१००॥ प्रपाद गाजिरवरना का ॥ कबीरदरीया
 प्रजत्यां हांजलथलकाल बसना हां गीपालसा ॥
 दाकेरतन अमोला ॥ कबीरदाधकलापीसबडधी ॥
 सुयीनदेयाकोइ कोइतोंकोबधवां कोधतहाणहो
 इ ॥ कबीरदाधकलापीसबडधी ॥ सुयीनदेयाको
 इ ॥ जहांजहांसागतिगीपालकी ॥ तहांतकधीरजहोइ
 ॥ कबीरहोरोऊं संसारको ॥ मुऊनरोवैकोइ मीको

ईवादली ॥ बरसंएलगे अंगारा ॥ उक्किबीरदाहृदेदा
 कतहैसंसार ॥ ५ ॥ कबीरबागबिबूठेभिरघलो ॥ ति
 निमतिमारीकोइ ॥ आयेहीमरिजाहिगा डाजांडला
 होइ ॥ १२० ॥ ६ ॥ पदा ॥ ६३ ॥ दरीकोअगा ॥ कबीरसुदरि
 रोकेहै सुणिहोकेतसुजाए ॥ बेगिमिलोउमयाइ ॥

णिमबीकोजीवै ॥ पाणीहाकाजीव ॥ ३ ॥ कबीरजेका
 सुदरी ॥ जाणिकरेबितचार ॥ ताहिकहोकोआदरे
 प्रमप्रयभरतार ॥ ३ ॥ कबीरसुदरितोसाईनजे ॥ त
 जेप्राणकीआसा ॥ ताहिनकवरूपहरे ॥ पलकनछा
 डेयास ॥ ४ ॥ कबीरयामनकामेंदाकरूं ॥ नांनूंकारि
 करियास ॥ जबसुषयाधेसुदरी ॥ पदमऊलकेसीस
 ॥ ५ ॥ कबीरबढीअथाडे सुदरी ॥ पड्यापीवसोथेलि
 दीपाजूसाज्ञानकाकामजइजेतेल ॥ ६ ॥ कबीर
 सोरीसांकडा ॥ मातीचूरचूरि ॥ कारणवतीसुद
 री ॥ रहैधकासोंइरि ॥ ७ ॥ १२१ ॥ ७ ॥ उपजाकोअं
 ग ॥ कबीरनोवनजा

नेह स्वकाकाभनजाणही॥ कवकुकवृतामेह॥ क
वीरकिरिभिरिवरसीया॥ पाहणउपरिमेह॥ धरती
गलिमजलनरी॥ पाहणउपरिवेदहीतेह॥ कवी
रयारबलबृगमोतीयां॥ घडिबंधीसियरह म्नाप्र
सगरांचुणिलीया॥ चूकपट्टीनिगुराह ३ कर्वारह
रिसवरसीया॥ डरडुगारमिषरह नीरनिवाणा
गहरे॥ तांकेवापरडी॥ ४॥ कर्वारमूडकरसीया॥
नयसययावरज्याह॥ बाहणहाराक्याकर वाणन
लागेत्याह॥ ५॥ कवीरयसवासायातायदुग रकर ३
हीयामयीजि॥ उसरबोयोननीपजे तावेनतद्वि
॥ ६॥ कवीरजातोइहबडपणा॥ तावेपडिषिजि ॥ ७॥
हनकोईबीसवै॥ फललागेमोइरि १ कर्वारमव
कुलकेकारणो॥ वासबध्याअमगत गमनामजात्या
नही॥ जाल्येसवपरिवार ८ कर्वारचदनकेदि
नीवनीचंदनहाइ॥ वूडाब्यामबडाइया याजिति
वूडोकोइ॥ ९॥ कवीरसातिविचाराक्याकर जदि
रदाचयाककरा॥ नोतजायासीचंद नकुनतीजके
॥ १०॥ कवीरचदनबावना विषमहाजनक्य
वोचलेगुणआपणो॥ कहाकेग्यनमरा ११ कर्व
रलहरिसमंदकी॥ मानीविषम्यात्राइ च्वापन
रनजाणही॥ हसचुणचुणियाइ १२ कर्वारचदन
गारेकरा॥ रिकेंतालिचुणाहि गकटटेम तुडुव॥
एकमुकाहलयाहि॥ १३॥ कर्वारंगकमदलमवक
हा॥ गुरत्रियकोसमकाइ॥ समकायायल्लेद्वि
फेरिफेरिवूकेआइ॥ १४॥ वकापीकोमरिदरद्वे

नीवडा नाही तनकी हांनि मनमुसक कौं वृकिदिषि
 नीकी हांनि निदान ॥ १ ॥ कबीर खेडे दीसे ती करी मूक्षीप
 दीन जोइ बार बार रे प्रापणे चठि चठि गइ र सोइ ॥ कबी
 र मेरा मुक मे क छन ही जो क छ हे सो तेरा तेरा मुक के
 सोपता क्या लागे मेरा ॥ ४ ॥ कबीर चाकी चलती दिषिक
 रि ही चा कबीर रोइ दो क पाठा विवि आइ करि साव
 तगदान कोइ ॥ ५ ॥ कबीर कबधिक बाण चठी रहे वि
 विधिताप का तीर मनमाया सो मिलि रह्या क्यौर मि
 रघुबीर ॥ ६ ॥ कबीर आज सपोषा ही रह्या मनला गो
 वणेह ॥ जे सजन सुयने नही दिषता ते देष्या नेणेह ॥ ७ ॥
 कबीर आसा छुटे ममरे छुटे जग ज्योहार कहे कबी
 र तबजाणी दो बहलीयो अवतार ॥ ८ ॥ कबीर कदि
 या मै मै जाइगी कब आवेगी ज्योर कब ऐ सु छिम
 होइगा कब पावेगा तोर ॥ ९ ॥ कबीर साहब से ऊप
 क्षरीया बारी होती आज मंदना गणपड दरही ले
 वूडी कलताज ॥ १० ॥ कबीर यणी श्री पीहर ही नि
 जरि न देष्या नाह मोहि सुहगणि मत कहे लाजम
 रूं तो हिमाह ॥ ११ ॥ कबीर द्यले वो हो सालीयो मु
 कल पडी विछोणि ज बल गपी वप्र वानही सबल
 ग कवारी जाण ॥ १२ ॥ कबीर बलक मित्या वाली रा
 ह्या बहोस की या बक वाद बां क हला वे पा लणे
 ताम कौं न स्वाद ॥ १३ ॥ कबीर चुरी कठारी तरा स
 षडग अरु उय क क बाण ॥ अणी मित्यां मन उज
 तो बां ध्या प्रवाण ॥ १४ ॥ सोरवा ॥ कबीर गाली मि
 टा ग्या न हे ॥ ग्या न हे जे टुक उर ज रे कोर

जनसोईपगियडे ॥१५॥ प्राय ॥ कबीरसाईमेरासच
ज्वालखबेर ॥ स्वारथअपणाकारणो ॥ जणजणला
रा ॥१६॥ कबीरसीपसंमदमें ॥ वारामीवांनाहि ॥ वासी
समैबसै ॥ मनचितनस्योनाहि ॥१७॥ कबीरमाइत
हेमेरापूतहै ॥ बहैणाकहैमेराबीर ॥ इमअधियारीघ
में ॥ नहीकिसीकासीर ॥१८॥ कबीरअमृततवरस्याघ
॥ रघोशि ॥ तरीयाजलथलकोल ॥ अतिमांतीरीतारसा
जोप्रबतकाठोल ॥१९॥ कबीररोकपलकजंमनरहै ॥
नावनिरंजनपासि ॥ बिचिकाकृत्याबूबला ॥ कोनेरहि
॥२०॥ कबीरजेअबकेसाईमिले ॥ तोमबडय
अयोरोश ॥ चरणसीमनवाइकरि ॥ कहौजकहैणाहै
॥२१॥ कबीरसालामाठुमानिजे ॥ संमधामैतोप्राति ॥
रिजनदेव्याजलिमरे ॥ याबूडणकीरीति ॥२२॥ कबीर
गहैतला ॥ जेदिलसचाहोइ ॥ जलबेवेबुगअ का
रिजमेरेनकोइ ॥२३॥ कबीरसुखदेणाडयमटाण ॥ इ
स्किरणअपराध ॥ कहैकबीरवैकदिमिले ॥ प्रमैस्वर
कासाध ॥२४॥ कबीरमनवांतोचलुचलुकरे ॥ चितक
हैचलिजांव ॥ कोटिजगचलतांभया ॥ तीनियेडपरि
गां ॥२५॥ कबीरनिसअधियारीकारणो ॥ चौरासालख
चंद ॥ अंतिआउरनदेकीया ॥ तकदिष्टिजुमंद ॥२६॥ क
बीरहरिकानांनस्यो ॥ सरतिरहेयकतार ॥ तोमुखलें
पतीकहो ॥ हीराअनंतअपार ॥२७॥ कबीरकरकवां
सरसाधिकरि ॥ दोचिरमास्यामाहि ॥ तीतरिनिआ
मारकै ॥ जीवैकजीवैनाहि ॥२८॥
वैकरि ॥ तबमैयाइजाणि ॥ लामीजे

ईकले जो बाणि २५ कबीरदो अगसाय रजस्य म
षी वैठे दाधी देहनपाल है सतरु रगरे लगाइ २०
कबीरपंजरि अमप्रकासाया जागो जोगअंतत
ससा बूयसुषतया मित्यापियारा कंत ३१ कबीर
देवलसांही देडरी तिलजे डडे विसतार मांहायात
मांही जल मांहा पूजाएहार ३२ कबीरसिरदी न्हांजे
पाईरो तो देतनकी जबाणि सिरके सोटे पाईरो तब
गसोधा जाणि ३३ कबीरसुयकी जाइया आगे सिद्धि
उष जाइ सुयघरि आयो हंमजाणो अरु डय ३४ कबीर
रकलिजुग आइ करि कीया बहोतक मित जिनिम
बांधारो कसो ते सुयसो वे नचित ३५ कबीरकुतारां
का मोतीया मेरा नाव गलिसाहिबकी जेवडी जित
यांचे चित्तजाव ३६ कबीरकलकलकरे तोना डरु
डरि डरि करे तजाव ज्यो हरिगये त्योरहो जो हरि देस
घाव ३७ कबीरअपनो जीवते ऐदो इबातांधोर तो सब
ईकारते अहतामूलनयोइ ३८ कबीरडनियां तांडकि
बधिका तरी महां मुहितूय रामनांमजाणो नहि करु
कंणी कूषि ३९ कबीरमेरी मेरी जिनिकरे मेरी मूलवि
नास मेरी पाको ये बकुंडो मेरी गलको पास ४० कबीर
रबडा बडा सबको कहै बडा बडा मे फेर दीयाको बडा
कहै मंदरमांही अंधेर ४१ कबीरमननही मास्याम
नकरि सक्यानपचप्रहारि सीलयाचप्रधानही
याअजकुंउधारि ४२ कबीरकरताथाताको रहा अ
बकौ करि पिबताइ बौवे विरषबंबूलका आमकहा
तेयाइ ४३ कबीरससाजीवमें कौन कहै समजाइ

नानाबाणीबोलता। शोकितगयाविलाइ ॥४४॥ कव
यादासीसंतकी ॥३॥ प्रीदेशअसीसा ॥ विलसीअरत्ताता
उमरिसुमरिजगदीसा ॥४५॥ कबीरअहिसमारका
गयामोहाजहिघरिजिताबधावणा तिहघरिति
॥४६॥ कबीरयादोसीसोरुसणा ॥ तिलतिलसुख

हाणि ॥ यंडितनेएसरावगी ॥ याणीपीवेवाणि ॥४७॥ कबी
सातिकेरैभगवंतकी ॥ सबजगरह्यारिमाइ ॥ साइसतर
रसेईये ॥ ब्रामणाकाघरजाइ ॥४८॥ कबीरजानीतानिदर
या ॥ मानेनाहीसंका ॥ इंदीकेरेबसियडा ॥ सुगतेविये
संक ॥४९॥ कबीरजगतजहागमराचीया ॥ कठकलकी
नारअलखविसास्यानेथमे ॥ बूडाकार्ताधार ५०॥ क
॥ रमांभीगुडमेगडिमुई ॥ पथरहीलपटाइ ॥ हाथमरोडे
रधुनौ ॥ मीवेकीईमाइ ५१॥ कबीरकांमनिअंगअनर

तभया ॥ रतभयाहरिताइ ॥ तेनरगोरयनाघज्यो ॥ अमर
भयाकलिमांही ५२॥ कबीरजहिहिरदेहरिआइया ॥ सो
क्योबांनहोइ ॥ प्रगटतीन्यो लोकमे ॥ जवानउजालायेइ
॥५३॥ कबीरयालिकजागीया ॥ अवरनजोगेकोइ ॥ केजोगे
विषईविषभस्या ॥ केदासबंदगीहोइ ॥५४॥ कबीररामज
पतहालिदभलो ॥ दूठीघरकीबांनि ॥ ऊचामदरजालिदे
नहोनहीसारंगप्रोणि ॥५५॥ कबीरइथीयामूवाइखक
॥ सुयीयासुखकौंकरि ॥ सदाआनदीरामका ॥ जिनिइ
सुखमेत्याइरि ॥५६॥ सोरवा ॥ कबीरमननहीबांइवि
॥ विषेनबांइमनकौं ॥ इतकौइहसुभाव ॥ पूरेलारा
जनकौं ॥ यंडितमूलबिनास ॥
जलमेंप्रतिबिंब ॥ त्योंसकलरामहीजाणिजे

सोमनसोबिषे ॥ सोत्रिसवनपतिकहौकस कहै कबीर ॥
 दोरुनरा ॥ ज्यो जलपूसासकलरस ॥ ५७ ॥ कबीरकोईकर
 येसंतधन ॥ चेतनपहुरैजाणि ॥ बसतनबायाएतैकिसे
 चोरनसकईलागि ॥ ५८ ॥ कबीरमौतीयोवतविगस्या
 नोपाधरआईराइ ॥ साजनसेरीनिकल्या ॥ जाणिबटाज
 जाइ ॥ ५९ ॥ कबीरजदिकामाईजनमायां ॥ कडुनयाया
 सुय ॥ डालीडालीमैफिस्या ॥ पातंपात्तइय ॥ ६० ॥ कबीरजो
 हैजाकासावता ॥ जदितदिमिलिसीआइ ॥ जाकोतनस
 सोयाया ॥ जाकोबाडिनजाइ ॥ ६१ ॥ कबीरसिरसाहैहरि
 सेईरे ॥ बाडिजावकीबाणि ॥ जेसिरदीयांहरिमिलै ॥ तब
 लगहंणिनजाणि ॥ ६२ ॥ कबीरमुखप्रकासनाहैकरे ॥
 ज्योसुरादलमांहि ॥ आरणिऊताएकपग ॥ बालीऊकेतो
 हि ॥ ६३ ॥ कबीरजोऊपासोआधीया ॥ फूलैसोऊमला
 जोचिणीयांसोतहेपडे ॥ जोजायासोजाइ ॥ ६४ ॥ कबीर
 यऊजगऊबनही ॥ धिणयाराधिणमीव ॥ कादिजदेव
 मेंडायो ॥ आजिमसाणोहीव ॥ ६५ ॥ कबीरमंदरजापणे ॥
 बैठाकरताआलि ॥ मडहटदेव्याडरपता ॥ जोडेदीनां
 लि ॥ ६६ ॥ कबीरबिरीयांबीतीबलगाया ॥ अरुबुराकम
 काम ॥ हरिजनबाडोहाएतै ॥ दिननेडाआया ॥ ६७ ॥ कबी
 गाफिलक्याफिरै ॥ सोवैकहंनिचित ॥ ऐवडमाहंलेव
 ल्यो ॥ अज्यापकडिअचित ॥ ६८ ॥ कबीरबिषकेबनमें
 घरकीया ॥ जहांप्रपरहेलपटाइ ॥ तबतैजावडैडरा
 द्या ॥ जागतरेनिविहाइ ॥ ६९ ॥ कबीरतरवरतासबि
 लबीए ॥ बागमांसफलत ॥ सीतलबायागहरफल ॥ प
 केलिकरत ॥ ७० ॥ कबीरदातातवरदयाफल ॥ नपगार

पंथा चर्चा दसावरं ॥ बरया सुफलफलंता ॥ ७४ ॥
रघुगला हे समना इले ॥ नेडा थका वही डि ॥ ज्यां हे व
त्यां ह्यो यां चिन तो डि ॥ ७५ ॥ कवी र दर
रं हंडो लनी ॥ मे ल्या कंत मंचा द्रा सो इ नारि सुलय

मै ॥ सकल रं हा भर पुरि ॥ यड चत्तरा डं जा ड जलि ॥
तडो ले हरि ॥ ७६ ॥ १२४१ ॥ श्री संकला के अग्र ॥ कवी र
नख मं रं म कौ ॥ मे राम नरां महि थ्या हि ॥ मे राम नरां
सी सन वा क का हि ॥ कवी र नि ग या वां व
जा के थां ती नां ही को द्रा ॥ दी न गरी वी वं दरा ॥
तौ द्र स हो द्रा ॥ कवी दी न गरी वी दी न के द्र द स्के ॥ २

सत्पु रं मे रं सु र वां ॥ जो तां से लो ह लु हं र ॥ क स नी द
क की या ॥ ता इ ली या त्त सार ॥ ७७ ॥ कवी र गुर मे त्रा
ये तो च्या म्या या डं ग ॥ जि

यत्त
सति र क ब्यो ने य डे ॥ न वं त य लि च्छा
न क वां ण वि नि ॥ माम्हा
न य स य सां व सी य
त आं त दि वां त नां दि
के जां ति ॥ कवी र वि
ज ल ती ज लि ही र जां व ॥ क व द्वा मां ह
क वी र जा क र ति

रनागौदलमुडैः सुरंगलोगैसेल ॥४०॥ कबीरसोवननालि
जरकसी ॥ सतगुरकीयासार ॥ बागनमौडैसूरवा ॥ दलबक
असवार ॥४१॥ कबीरअसीविहाईसौमुई ॥ बीसासौरद
पेटि ॥ सगोसुसरपांवांयड्या ॥ जबनईसतगुरसौसेत ॥४२॥
कबीरगागरिउपरिगागरी ॥ चोलीउपरिहार ॥ सूलीउ
परिसाथरो ॥ तहांचुलावैयार ॥४३॥ कबीरपाणपयाणादे
गया ॥ मांटीधरीमसाणी ॥ जालाणहारदेधिकरि ॥ वेतेनही
अजाण ॥४४॥ कबीरसूरुचाहैसाथको ॥ सतीलगावैबा
र ॥ साधुडरपैलोकते ॥ सहीजभाजणहार ॥४५॥ कबीर
जरीतरीऊकौलिकरि ॥ नीरनहलाई ॥ पाणीउपरिपाके
आवातरिलाई ॥४६॥ कबीरसाहिबहाथउपारीया ॥ है
कौईजाचाणहार ॥ भागतिनौदाउघड्या ॥ जेमाडेदरवारि
॥४७॥ माईअैसापूतजणि ॥ जैसादासकबीर ॥ भागतिथंन
गोबिंदकहै ॥ डिग्पाबंधावैधीर ॥४८॥ नांवकाजितिलति
लभया ॥ बंडाजेधरिणमांहि ॥ याटीदासकबीरकी ॥ रोसब
साधुयांहि ॥४९॥ ॥१२९०॥ ॥ अंगद्वय ॥ सकेलाकेअंगर
पूरण ॥ इतिश्रीकबीरजीकायायीसंपूर्ण ॥ श्रीशभा
नमः ॥ श्रीप्रसात्सनेनमः ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीश्रीश्रीश्री

